









হল্লভভূদীধিভিঃ।



হরতত্ত্বদীধিতিঃ। 💆 న

িবধ-তন্ত্রাদিশান্ত্র-সমুদ্ধ্ জ-প্রমাণনিবছ-নিরুপিতা

আর্য্যাচার-বাবস্থা।

কাত এমহাসহাশিচার চুড়ামা প্রতিষ্ঠিতচবণনালিক বিয়ন্ত্রে পীরেণাছল প্রদেশকামন্দর কালসন্দোহাননি এখনোমধ্রকারণ

ক্রিক্রকুমার-দেবশস্থা-ঠাকুরেল

সঞ্চলিতা। '' 'ু ১৯ুর্থং সংস্কলণ্ম।

কলিকাতা রাজধায়াম্

াম-লেন্দ্র ৩৮ সংখ্যক-ভিত্ন ভিত্ন "ঘোষ-য**েল্ল"** শ্রীমন্ত্রপ্রনাথ-গোষেধ্য ম'বজা।

ইং ১৯০৭ বাস





নিৰ্ঘণ্ট-পত্ৰম

প্রথমকলাপ্রকাশঃ।

| £ | | | |
|--|-----------------------|------------|--------|
| বিষয় | | পৃ | مار |
| ম <i>ঙ্গল</i> াচরণম্ | ••• | 7 | 2 |
| গ্রন্থক্কতো জনক-বিবরণস্ | • • • | > | œ |
| গ্রন্থকুতো গ্রন্থস্থ চ বিবরণম্ | • • • | 2 | ¢ |
| গ্ৰন্থপ্ৰয়োজনাভিধেয়ানি | ••• | 2 | 2 9 |
| নি গু ণত্র ন্ধপ্রসঙ্গ ঃ | ••• | • | 8 |
| সম্ভণোপাসনয়া-নিগু ণাব্যাপ্তিঃ | ••• | • | 20 |
| সম্ভণোপাসনা-প্রশংসা | ••• | 8 | 8 |
| শিববিষ্ণুশক্তিসূর্য্যগণপতিনাং পঞ্চানাং | পরব্র সা ত্বম্ | œ | > |
| পঞ্চদেবতানামেকত্বস্ | • • • | ٩ | 25 |
| উপাসনায়াঃ কর্ত্তব্যত্বম্ | ••• | ъ | ¢ |
| কলো আগমোক্তবিধিনা উপাসনাদি | ••• | ৯ | Ь |
| অাগমশব্দার্থঃ | ••• | 20 | ₹8 |
| দিতীয়কলাপ্ৰকাশ | : 1 | | |
| দীক্ষাশব্দার্থঃ | ••• | 78 | ప |
| দীক্ষায়া নিত্যত্বম্ | ••• | 3 8 | ۵۲ |
| দীক্ষায়াঃ কাম্যত্বম্ | | | |
| মন্ত্রদানফলম্ | ••• | 70 | ૭ |
| يرطي الملاوا فأ | ••• | 3 ¢ | >5 |

| বিষয় | | পৃ | পং |
|--|-----------------|-----------|-----|
| <i>মূর্য্যোশে</i> শাচ্যুতশক্তিরুদ্রপঞ্চেবত | ামজ্রৈরেব দীক্ষ | 1 50 | ۵۷ |
| গায়ত্রীদীক্ষানন্তরং পুনদীক্ষা | ••• | ٥٢ | ≥8 |
| মন্ত্রদানাধিকারিণঃ | • • | ১৬ | ৬ |
| ব্ৰা ক্ষণমাহাত্ম ্ | • • • | <i>3७</i> | ь |
| ক্ষত্রিয়বৈশ্যয়োরপি গুরুত্বম্ | ••• | >9 | २ऽ |
| শূদ্রাণাং মন্ত্রদানানধিকারিতা | • • • | 72 | ৬ |
| দীক্ষালকণম্ | | 79 | ٥, |
| ধনলোভাদিনা বলাৎ বা অযোগ্যে | দীক্ষানিষেধঃ | 22 | ď |
| শিয়্দক্ষিণকর্ণে মন্ত্রদানবিধিঃ | ••• | ₹8 | 76- |
| শব্দস্বরূপমন্ত্রস্থ দানং গ্রহণঞ্চ | ••• | ₹৫ | > 0 |

তৃতীয়কলাপ্রকাশঃ।

| গুরুশিন্যনামোর্যোগার্থঃ | ••• | 20 | > |
|----------------------------------|-----------|----|------------|
| পিত্ৰাদিতো দীক্ষানিষেধঃ | ••• | ২৬ | ১৬ |
| তত্রায়ং বিশেষঃ | ••• | २৯ | 7 a |
| সিদ্ধমন্ত্ৰকাণাং দ্বৈবিধ্যম্ | ••• | ೨೦ | 5 |
| শূদ্রাণাং মন্ত্রেম্বনধিকারঃ | ••• | ೨೦ | ২৩ |
| শূদ্রাণাং মন্ত্রবিশেষেধিকারঃ | ••• | ೨೨ | 20 |
| স্ত্রীণামপি দীক্ষাদাবধিকারঃ | | •8 | ২৩ |
| স্ত্রীণাং ভর্তৃশুক্রামণপুরঃসরমেব | পজনাদিকম্ | ৩৫ | 26 |
| যন্ত্ৰাণাং ব্ৰহ্মকভাদিভেদঃ | *** | ৩৫ | ٤; |

| বিষয় | | পৃ | পং |
|---|------------|------------|---------------|
| নক্ষত্ৰচক্ৰগণনা | ••• | ৩ ৯ | 29 |
| অদীক্ষিতমরণে নরকম্ | ••• | 8২ | ۵ |
| মন্ত্রদানে রাশ্যাদিগণনাপ্রতিষেধঃ | ••• | 8₹ | > 8 |
| স্বপ্নলকমন্ত্রে শুদ্ধিঃ | ••• | 88 | ٦8 |
| বিবিধমন্ত্রগ্রহণে বিচারঃ ব্যবস্থা চ | ••• | 8€ | 78 |
| পরত্রক্ষমন্ত্রঃ | ••• | 8৬ | 29 |
| স্থল ৰুমন্ত্ৰপ্ৰশংসা | ••• | 89 | œ |
| সংকল্পবিধানম্ | ••• | 89 | ২০ |
| স্বয়ংদীক্ষিতেনৈব অস্মস্ত দীক্ষাবিধানং | ••• | 8৯ | ۳ |
| গুরুণা নিজমন্ত্রো দাতব্যো ন বা ইতি বি | ারঃ | 8৯ | 77 |
| স্বীয় মন্ত্ৰপ্ৰকাশনিষে ধঃ | ••• | ¢° | ২১ |
| মন্ত্ৰত্যাগে মন্ত্ৰপ্ৰকাশে চ যৎ কৰ্ত্তব্যম্ | ••• | ¢۵ | > & |
| মন্ত্রাণাম্ অভক্ত্যাগ্যফীদোষবিবরণম্ | ••• | ৫ ২ | ৬ |
| অভক্ত্যাদিদোষজন্যানিষ্টফলানি | ••• | ৫ ২ | ২৩ |
| অভক্ত্যাদিজন্মদোষশান্তিঃ | ••• | ৫৩ | ٥٤ |
| শাশানসাধনম্ | ••• | ৫৬ | ъ |
| দক্ষিণাচারিণাং বিধিঃ | ••• | ৫ ዓ | 3 8 |
| বহুমন্ত্ৰসাধকস্থ ইতিকৰ্ত্তব্যতা | ••• | ৫৯ | ٧. |
| মন্ত্রদাতুর্দক্ষিণাদাতৃত্বম্ উত গ্রহীতুরিতি | বিচারঃ | ৫৯ | ۵۵ |
| দর্ববন্ধং গুরবে দহাদিত্যস্থাভিপ্রায়ঃ | ••• | ৬৽ | >9 |
| গুরুলক্ষণমৃ | ••• | ৬১ | 9 |

| বিষ য় | | পৃ | প্ৰং |
|---|--------------|------------|---------------|
| তুরদৃষ্টবশাৎ মন্ত্রবিশ্বতো গুরোরসুপস্থিতে | হী | | |
| উপায়ঃ | ••• | ৬১ | २२ |
| দীক্ষানন্তরং গুরুষ্ শিষ্যেতিকর্ত্তব্যতা | ••• | ৬২ | ১৬ |
| শ্ৰীনাথদেবস্বামীতিনাল্লাং যোগাৰ্থঃ | ••• | ৬৩ | 8 |
| গুরুসমক্ষে শিষ্যব্যবহারঃ | ••• | ৬৩ | > ° |
| গুরুচ্ছিফ্টভোজনবিচারঃ | ••• | ৬8 | æ |
| দেব-মন্ত্র ⁻ গুরূণামেকার্থতা | ••• | ৬৭ | ٥٥ |
| গুরুমন্ত্র-ত্যাগ-বিচারঃ | ••• | ৬৪ | 35 |
| দোষাভাবাৎ গুরুমন্ত্রত্যাগে দোষঃ | ••• | ৬৫ | • |
| গুরুমরণেহশোচম্ | ••• | ৬৬ | ૭ |
| পঞ্চমকলাপ্রকাশঃ। | | | |
| গৃহীতমন্ত্ৰগৃহিণাং কৰ্ত্ৰ্যম্ | ••• | ৬৬ | ٥, |
| প্রাতঃকৃত্যম্ | ••• | ৬৭ | 28 |
| তত্ত দিঙ্মুখনিয়মঃ | ••• | ৬৭ | ₹8 |
| প্রাতঃকৃত্যস্থ কালবিশেষমিয়মঃ | ••• | ৬৮ | ъ |
| প্রাতঃক্বত্যস্থ ব্রাহ্ম্যযুর্ত্তে কর্ত্তব্যতা | ••• | ৬ ৯ | 9 |
| অরুণোদয়কালনি র্ণ য়ঃ | ••• | ৬৯ | ১২ |
| প্রাতরুত্থায় কর্ত্তব্যম্ | ••• | 95 | 78 |
| প্রাতঃকৃত্যাদিকর্মস্থ ধ্যানযোগে বামহস্তে | াপুরি | | |
| দক্ষিণহস্তধারণম্ | ••• | 98 | 25 |
| কীদৃশং গুরুং ধ্যায়েদিত্যাহ | ••• | 9¢ | æ |
| সাত্ত্বিকাদিভেদাৎ গুরোঃ শুক্লাদিবর্ণভেদঃ | ••• | ৭৬ | ₹8 |
| | | | |

| • | | | |
|--|-------|------------|-----|
| · বিষয় ^হ | • | পৃ | প্ |
| দাত্ত্বিকাদয়প্তিবিধাঃ দাধিকাঃ | ••• | 96 | 9 |
| পূর্ণাভিষেকস্থলে গুরুনামোল্লে খ ঃ | ••• | ૧৯ | من |
| প্রতিঃকৃত্যে মূলমন্ত্রজপস্থাবিশ্যকত্বম্ | • • | ک ٥ | 9 |
| প্রাতঃক্ত্যানন্তরং স্নানবিধিঃ | ••• | ৮০ | 79 |
| গঙ্গায়াং পাদস্পর্শে দোষাভাবঃ | ••• | ৮২ | ٦٤٠ |
| বস্ত্রপরিধানম্ | ••• | ৮৬ | ২ |
| সাত্ত্বিকাদিভেদেন বস্ত্ৰনিয়মঃ | ••• | ৮৬ | 8 |
| তিলকধারণবিধিঃ | ••• | ৮৬ | ১৯ |
| ব্রাহ্মণাদিভেদেন উদ্ধিপুগু কাদিতিলকভেদঃ | | 4 | > |
| উদ্ধপুণ্ড লম্ব্রুণম্ | ••• | 6 9 | ¢ |
| ন্ত্ৰীণামপি উদ্ধপুগু ধারণবিধানম্ | ••• | 6 4 | ን৫ |
| ঊদ্ধ পুণ্ড <u>ু</u> বৰ্ণভেদফলম্ | ••• | 49 | ১৯ |
| ত্রিপুণ্ডুধারণে ফলাতিশয়ঃ | ••• | ひひ | ২৪ |
| ত্রিপুণ্ড করণপ্রকারঃ | ••• | ৮৯ | ¢ |
| ত্রিপুণ্ড ধারণফলম্ | ••• | ৮৯ | ٥٥ |
| ত্রিপুণ্ড সাধনম্ | ••• | ৮৯ | ₹8 |
| দিজেতরস্থা উদ্ধ পুণ্ড নিষেধঃ | • • • | ৯০ | ১৬ |
| ः ষ ঠকলাপ্রকাশঃ। | | | |
| যজোপবীতধারণবিধানম্ | ••• | ৯১ | 9 |
| বৃদ্যাদে ছিলে অগ্যস্থ নৃতনস্থ ধারণম্ | | | • |
| শভাধতস্থারণনিষেধশ্চ | | ৯২ | Œ |
| | | | |

| বিষয়ঃ | | পৃ | औ |
|--|------|-------------|-------------|
| রুদ্রাক্ষধারণে বিশেষঃ | ••• | సల | 59 |
| অসংস্কৃতকদ্রাক্ষধারণে দোষঃ | ••• | ৯৪ | 7 |
| পূজাস্থানগমনম্ | ••• | ৯8 | ১৬ |
| অথ সন্ধ্যা তস্থা নিত্যত্বঞ্চ | ••• | ৯৬ | ¢ |
| তর্পণবিচারঃ | ••• | ৯৬ | 36 |
| ত্রিসন্ধ্যার্ঘ্যদানস্থাবশ্যক তা | ••• | ৯৯ | ¢ |
| গায়ত্রীজপানস্তরং মূলমন্ত্রজপস্থাবশ্যকতা | ••• | 300 | ٩ |
| স্ত্রী-শূড়াণামপি তান্ত্রিকসন্ধ্যাস্বধিকারঃ | | د پر | 25 |
| দ্বাদশ্যাদিষপি তান্ত্রিকসন্ধ্যায়াঃ কর্ত্তব্যত। | **** | >0> |) \$ |
| অশোচে সন্ধ্যাপ্রতিষেধঃ | ••• | ५० २ | 3 5 |
| দৈবাৎ সন্ধ্যায়াং পতিতায়াং গায়ত্রীজপর | ist- | | |
| প্রায়শ্চিভ্য্ | ••• | 302 | ২১ |
| প্রাতঃসন্ধ্যামকৃত্বা দেবপূজায়ামনধিকারঃ | ••• | >°¢ | ን৮ |
| সপ্তমকলাপ্রকাশঃ। | | | |
| অথ পূজা | | ১০৬ | ¢ |
| পূজারাং স্ত্রীশৃদ্রয়োরপ্যধিকারঃ | ••• | ১০৬ | \$ २ |
| প্রথমতঃ শিবলি স পূজা কর্ত্ব্যা | ••• | २०७ | \$8 |
| সর্কেষাং বর্ণানাং শিবলি ঙ্গ পূজায়ামধিকার | ··· | 20R |) 2 |
| লি ঙ্গ শন্দ্ৰ্প্তিঃ | ••• | 306 | \$6 |
| লিঙ্গনির্মাণমৃত্তিকাপরিমাণম্ | ••• | >06 | >6 |
| শিবলিঙ্গোপরি বিন্দুস্থাপনম | ••• | >0% | > |

| বিষয়ঃ | • | পৃ | পং |
|--|-------------|-------------------|------------|
| শিবলিঙ্গপূজাধারনিয়মঃ | ••• | >> | >> |
| কাংস্থাদিপাত্রস্থ-িবলিঙ্গপৃজায়াং নারি | রকেলো- | | |
| দকাদিনানপ্রকারঃ | ••• | 3 7° | ১৬ |
| তত্ৰ ফলদানে বিশেষঃ | ••• | 777 | b |
| অটমূত্তিপ্জনক্রমঃ | ••• | 222 | ٥٥ |
| কলো কণ্ঠে গরলচিত্তনস্থা নীলকণ্ঠত্ত | ৰপাঠতা চ | | |
| नि र म्बर | ••• | >> < | œ |
| শিবপ্রসাদভক্ষণ-বিচারঃ | ••• | 225 | ১৬ |
| মধ্যস্থানস্থানভদ্রব্যাণামের ভক্ষ-ক্লি | Mas . | >>9 | ৯ |
| रीवितिक ि.वार | ••• | 226- |) c |
| বিদ্লিত্প,থিবলি স্থ পিন্ডান্ন্ | ••• | 222 | ٦٣ |
| গুজালে নিন্দত্বিহিতস্থানন্ | *** | 772 | > 7 |
| प्षाटक वृश्चि | - | 772 | ২ 8 |
| ুজাকালনি শুমঃ | • • • | 252 | œ |
| প্রজাণ। মানসিকাদিপ্র হারতেদঃ | ••• | ১ २२ | 8 |
| গুজালা উত্ত্যানিপ্রকারণভালঃ | ••• | 322 | >9 |
| নত্যপূজায়াঃ সঞ্জেপেণ কর্ত্তনত। | ••• | ১২৩ | ٤. |
| াস্ত্রবিশেষেণ দেববিশোনাং প্রজানিং | ा ४३ | \$ 28 | ১৬ |
| শাদপ্রকালনে দিঝু খনিয়দঃ | ••• | ১২ ৪ | ২ ২ |
| গথ আচননম্ | ••• | ১২৫ | ১৬ |
| বৈষ্ণবাদিভেদেন আচমনভেদঃ | | > 29 | ъ |
| | | | |

- অষ্টমকলাপ্রকাশঃ ।

| বিষয়ঃ | | পৃ | প ং |
|-----------------------------------|------|---------------------|-------------|
| অথ দামান্তার্ঘ্য | ••• | 7 07 | ٥. |
| তৎপ্রকারঃ | ••• | 202 | ৬ |
| ত্রিকোণমগুললিখনে বিশেষঃ | ••• | ১৩৫ | ٩ |
| একদারে দারচতুষ্টয়কল্পনম্ | ••• | ১৩৫ | 3 2 |
| দার-দারপাল-পূজাক্রমঃ | ••• | ુ ૦૯ | 59 |
| আবাহনং বিনৈব পূজায়াঃ কর্ত্তব্যতা | ••• | ১৩৭ | હ |
| পূজাগৃহপ্রবেশকথনম্ বিদ্বাপসারণঞ্চ | ••• | > 99 | ১৬ |
| উপবেশনীয়াসননিরূপণম্ | ••• | >80 | ২ ২ |
| তীর্থে লিঙ্গপীঠে চ আসনোপবেশননি | যধঃ… | >85 | ২১ |
| আসনশুদ্ধিঃ | ••• | 3 8 9 | ¢ |
| দেবতাভেদেন আসনপ্জাক্রমঃ | ••• | >88 | 20 |
| উপবেশনপ্রকারঃ | ••• | 389 | ৬ |
| পদ্মাসনাদিলক্ষণম্ | ••• | \$89 | 22 |
| প্রোঢ়পাদেন দেবতার্চ্চননিমেধঃ | ••• | 784 | 24 |
| দেবপৃজনে অত্যথা পাদপ্রদর্শননিষেধঃ | | 786 | 20 |
| পূজায়াং সাধকদিল্ম খনিয়মঃ 🤾 | | ১ 8৯ | > |
| পুষ্পশোধনম্ | | >02 | 8 |
| কালীকুল <u>শী</u> কুলম্ | ••• | ১৫২ | 2 2. |
| ত র্কাদেঃ প্রণামঃ | ••• | 26.5 | 20 |
| করশুদ্ধেরাবশ্যকত্বমৃ | ••• | ১৫৩ | >8 |
| শাক্তেষু প্রকারান্তরম | | ` \$ @8 | ⊋ છ |
| | | | |

| विषयः | | পৃ | পং |
|---|-------------|--------------|----|
| উদ্ধোৰ্দ্বতালত্ৰয়ং দিশস্কনঞ্চ | | >00 | 8 |
| দ্বারপূজাদিমারভ্য ভূতশুদ্ধ্যারস্তপর্যান্তকণ | ৰ্মাণি | ১৫৬ | ₹8 |
| | | | |
| নবমকলাপ্রকাশঃ। | | | |
| ভূতশুদ্ধিঃ | ••• | ১৫৮ | >9 |
| ভূতশুদ্ধেঃ কর্ত্ত্বং জীবাত্মনো মনসো বে | তি | ১৫৯ | ٥٥ |
| ষট্চক্রনিরূপণ মৃ | ••• | ১৬১ | 20 |
| ষট্চক্রস্থ গ্রথনপ্রকারঃ | ••• | ১৬৩ | 22 |
| ভূতশুদ্ধো কীদৃশশরীরধ্বংসঃ | ••• | ১৬৭ | ۷ |
| লিঙ্গশরীরম্ | ••• | ১৬৭ | ۳ |
| পঞ্চীকরণপ্রকারঃ | ••• | ১৬৮ | 20 |
| অনায়াসসাধ্যমন্ত্রোপাত্তভূতশুদ্ধিঃ | ••• | ১৬৯ | ১৩ |
| মাতৃকাতাসঃ | ••• | ১৬৯ | 25 |
| পঞ্চাশল্লিপিভিরেকপঞ্চাশল্লিপিভির্ববা স্থাস | [8 | 292 | ٩ |
| সর্ব্বোপাসকৈরেব স্থাসস্থ কর্ত্তব্যতা | ••• | ১৭২ | ٩ |
| সবিন্দুনির্বিন্দুন্যাসব্যবস্থা | ••• | 8 ° ¢ | 20 |
| अगा निकामः | ••• | 398 | 22 |
| শক্তিবিশেষাণাং ভৈরববিশেষস্থ নিয়মঃ | ••• | ১৭৫ | 9 |
| প্রাণায়ামঃ | ••• | ১৭৬ | ঽঽ |
| প্রাণায়ামশব্দশ্ত যোগার্থঃ সর্গর্ভনিগর্ভরূপ | দ্ববিধ্যঞ্চ | 599 | Ъ |
| সগৰ্ভপ্ৰাণায়ামস্থ নিয়মঃ | ••• | 299 | ১৬ |
| প্রণবকথনম্ | ••• | ১৭৮ | œ |
| | | | |

| বিষয়ঃ | | পৃ | প্ |
|---|--------------|---------------|-----|
| কর স্বন্থা সঃ | ••• | 295 | ٥٥ |
| করন্যাদে তালপ্রকারঃ | ••• | 2F2 | ۳ |
| শক্তিনড়ঙ্গমুদ্রা শৈবনড়ঙ্গমুদ্রা চ | ••• | 2F2 | 36 |
| মস্করিবৈথানসাদীনাং স্থাসবিশেষঃ | | 3 60 | 9 |
| শিবমোঢ়ান্তাসাদিঃ | ••• | ১৮৬ | ٥٥ |
| ব্যাপকন্যাসঃ | | 3 55 | 30 |
| ন্যাসম্ভ ত্রৈবিধ্য ম্ | ••• | 797 | ২৩ |
| দশমকলা প্ৰকাশঃ | 1 | | |
| ধ্যানম্ তম্ম দগুণনিগুৰ্ণভেদাৎ দ্বৈবিধ্য | 7 ≉ … | \$ \$8 | œ |
| সগুণ ধানিপ্রকারঃ | ••• | \$ 58 | >8 |
| মানসপূজা তস্থা নিত্যত্বঞ | ••• | ১৯৫ | • |
| বাহ্পজা | ••• | ১৯৬ | ১৭ |
| পূজাধারাঃ নানাবিধাঃ | ••• | ১৯৭ | > |
| তারিণী শিলা | ••• | ১৯৮ | 28 |
| শালগ্ৰামে শক্তিপূজা বিহিত্যন্ত্ৰাভাবে | কার্গ্যা | ১৯৯ | ٩ |
| যন্ত্রে পূজাপ্রাধান্তম্ | ••• | ১৯৯ | شا2 |
| বিদ্রুনাদিয়ন্ত্রাণাং ফলম্ | ••• | २०० | > |
| <i>লোহ</i> ত্ৰয়বিভাগঃ | ••• | २०० | ь |
| ভূজাদিলিথিতযন্ত্রে পূজাকালনিয়মঃ | • • • | २०० | 20 |
| যন্ত্ৰস্ত দাহাদো প্ৰায়শ্চিত্ত্য্ | ••• | 200 | 26 |
| অস্থমরেথকযন্ত্রে পূজানিয়েধঃ | ••• | २० % . | しゅ |

| বিনয়ঃ | | পৃ | পং |
|---|----------------|------------|----|
| তাদৃশস্থামযন্ত্রলিখনাশক্তস্তা শূদ্রস্তা পূত্র | ন ধা রঃ | 203 | >& |
| শিবলিঙ্গে সর্ববেদবতাপূজাধিকারঃ | ••• | २०১ | ২৩ |
| শাক্তে শিবলিঙ্গবিশেষে পূজানিষেধঃ | ••• | ২৽২ | 8 |
| বৈক্তবাদীনাং পূজাধারে বিশেষাঃ | ••• | ২৽৩ | 2 |
| অর্থ | ••• | ২০৩ | 26 |
| অর্দ্যপোত্রবিশেষে ফলবিশেষঃ | • • | ২•৪ | ۲ |
| অর্ঘ্যপাত্রনিম্মাণপ্রকারঃ | ••• | ২৽৪ | ৯ |
| বৈশংবানামর্ঘ্যপাত্রবিশেনঃ | ••• | 208 | ኃ৫ |
| অগ্সে পাত্রয়ম্ | ••• | २ % | ₹8 |
| শক্ত্যশক্তিভেদেনার্ঘপোত্রসঞ্জেপঃ | ••• | ২০৬ | > |
| অর্ঘ্যদ্রব্যাণি দ্রব্যদানবিধিনিধেঝে চ | | २०७ | 8 |
| অর্ঘ্যে দূর্ব্বায়া বিশেষঃ | ••• | २०৮ | న |
| সগর্ভ-নিগুঁভ-দূর্কাদান-বিচারঃ | ••• | २०৮ | ኃ৫ |
| অর্যাত্ররাণাং প্রয়োজনম্ | • • • | ২০৯ | 2 |
| পীঠন্য:দক্রমেণ পীঠপুজা | ••• | २১• | • |
| <u> পীঠপু জাস্থাননিরূপণম্</u> | ••• | २ऽ२ | >0 |
| পীঠিদেবতাকথনম্ | • • • | २ऽ७ | 8 |
| পুনধ্বিম্ | ••• | 250 | ১২ |
| শক্তিানাং রক্তপুষ্পেণ ধ্যানম্ | ••• | २५७ | 2¢ |
| দেবতার্পণাৎ প্রাক্ স্বাঞ্চলিস্থ-ধ্যানপুস্প | * - | | |
| ত্যাগনিষেধঃ | ••• | २১৫ | २ऽ |
| আবাহনাদিকম্ | ••• | ২১৬ | ٩ |

| [4°] | | | |
|---|-------|-------------|---------------|
| तिगराः | | পৃ | \$10 |
| আধারনিশেষে আবাহনস্থ কর্ত্তব্যাকর্ত্তব্য | ত্বম্ | ૨ ১৬ | ১৬ |
| সম্মুখীকরণরপাবাহনস্ত মন্ত্রদয়ম্ | ••• | २১१ | ٩ |
| বাণলিঙ্গ-বহ্নি-জল প্স্পানে বিশেষঃ | ••• | २ऽ१ | 22 |
| প্রাণপ্রতিষ্ঠামন্ত্রবিচারঃ | ••• | २১৮ | ٥٥ |
| উপচারাঃ | ••• | ঽঽ৽ | ৯ |
| ষট্ত্রিংশহুপচারাঃ | | २२० | ১৯ |
| অকীদশোপঢারাঃ যোড়শোপচারাঃ | ••• | २२১ | 2<10. |
| দাদেশোপচারাঃ | ••• | ঽঽঽ | ২৩ |
| দশ সপ্ত পঞ্চ উপচারাঃ | | २२२ | ી 9170 |
| উপচারদানপ্রকারঃ | ••• | २२२ | ২২ |
| অর্যাজলেন প্রোক্ষণম্ তল্লক্ষণঞ্চ | ••• | ২২৩ | 20 |
| বামহস্তযুক্তদক্ষিণহন্তেন দ্ৰব্যদানম্ | ••• | ২২৩ | 79 |
| দ্রব্যদানে পঞ্চনখদর্শন-নিষেধঃ | ••• | २२० | ২৩ |
| দেবতাঙ্গে পাতাদিদানস্থানম্ | ••• | ২ ২৪ | 78 |
| পাক্সাদীনাং ত্যাগার্থকমন্ত্রঃ | ••• | ২ ২৪ | ১৯ |
| দেবদেয়াসনানি | ••• | २२৫ | ১২ |
| স্বাগত ম্ | ••• | २२७ | ¢ |
| পাদ্যদ্রবাম্ | ••• | ২২৬ | > b |
| আচমনীয়-দ্ৰব্যাণি | ••• | २२१ | ¢ |
| মধ্পর্কঃ | ••• | ঽ২৮ | ৯ |
| পুনরাচমনীয়ম্ | ••• | ২২৯ | 8 |
| क्षानी यक्रवराणि | ••• | ২২৯ | >° |

| বিষয়ঃ | | পৃ | পং |
|---|--------------|-------------|---------------|
| বস্ত্রম্ | ••• | ২৩০ | 9 |
| ভূষণদানাসমর্থানাং কর্তব্যম্ | ••• | ২৩১ | ¢ |
| গন্ধঃ তম্ম লক্ষণানি চ | ••• | ২৩১ | ۵ |
| গন্ধদানস্থানম্ | ••• | ২৩২ | ৬ |
| গন্ধদানপ্রকারঃ | ••• | ২৩২ | ን৫ |
| রক্তচন্দনাক্ত-রক্ততুলস্তা ঐক্তিঞ্পূজনম্ | • • • | ২৩২ | ২৩ |
| নিষিদ্ধপুষ্পাণি | ••• | ২৩ 8 | 8 |
| (ক্লিঊ-ভূপতিত-পযু্∫াষিত-বামহ | | | |
| চোরিতা-শস্তত্নন্তী-ঙ্গম্পূ ঊ-স্বয়ংগি | কসি ত | 7- | |
| ভ্ৰাত-ক্ৰী তাদীনি) | | | |
| পত্রপুষ্পবিশেষাণাং ছিন্নভিন্নে দোষাভাব | · · · · | ২৩৭ | > ২ |
| নির্ন্ত-সর্ত্ত-পূক্তিশঃ পূজনম্ | ••• | ২৩৭ | 24 |
| জলপুল্পে বিশেষঃ | ••• | ২৩৭ | ٤5 |
| গন্ধযুক্তপুষ্পদানম্ | ••• | ২৩৮ | 8 |
| পুষ্পদানস্থানমৃ | ••• | ২৩৮ | ٩ |
| পত্রাণি বিল্পপত্রে বিশেষশ্চ | ••• | ২৩৮ | ७५ १२८ |
| • একাদশকলাপ্সকাশঃ | 1 | | |
| অঙ্গাদিপূজাব্যবস্থা | ••• | ২৩৯ | స్ |
| ধ্পদানম্ | ••• | ₹85 | २२ |
| দীপদানম্ | ••• | २ 8२ | 20 |
| नी श्रमाना निम् | • • | ২8৩ | ২২ |
| नौপनिर्द्वा र नं . दनायः | ••• | ₹88 | 2 |
| | | | |

[no/o]

| | পৃ | পং |
|-----|--------------|---|
| ••• | ₹88 | ¢ |
| ••• | ₹88 | २১ |
| ••• | ২৪৬ | ৯ |
| ••• | ২৪৬ | 28 |
| ••• | ২৪৬ | ২ ২ |
| ••• | ২৪৭ | ٥, |
| •• | ર 8ને | 78 |
| ••• | ২৪৭ | ₹8 |
| ••• | २8৮ | > 2 |
| ••• | ₹8₽ | 26 |
| | | |
| ••• | ২৪৯ | • |
| ••• | ২৪৯ | \$8 |
| ••• | २৫• | >> |
| ••• | २৫১ | ۳ |
| ••• | २৫२ | ৬ |
| ••• | ২৫২ 🔸 | >9 |
| ••• | २৫৩ | 9 |
| ••• | २৫৫ | \$ \$ |
| ••• | ২৫৬ | 3 2 |
| ••• | २৫१ | >> |
| ••• | ২৫৯ | >0 |
| | | 288 289 289 289 289 289 289 289 288 289 289 280 262 262 262 262 269 |

[nd•] .

| বিষয়ঃ | | পৃ | পঃ |
|---|-------------|--------------------|------------|
| নীরাজন প্রকারঃ | ••• | ૨৫৯ | રર |
| প্রকারান্তরনীরাজনম্ | ••• | ২৬০ | 23 |
| ছাদশকলা প্ৰ কাশঃ। | | | |
| নিত্যহোমঃ | ••• | ২৬১ | ડર |
| সমিদ্ধে২গ্নো হোতব্যম্ | ••• | ২৬৩ | 9. |
| জপঃ | ••• | ২৬৩ | ۳ |
| মালাভাবে করমালয়া জপঃ | | ২৬ 8 | 9 |
| মণিমালায়াং স্ত্রীশূদ্রয়োবিশেষঃ | ••• | ২৬৪ | २১ |
| দিবা রুদ্রাক্ষমালয়া জপনিষেধঃ | ••• | ২৬৫ | 8 |
| তুলস্ঠাদিকাষ্ঠমালয়া জপবিচারঃ | | <i>ચ</i> .৬৫ | 20 |
| ষণ্যাদিমালায়াং গ্রন্থিবন্ধনস্থাবশ্যকতা | ••• | ২৬৬ | ۵۲ |
| মণিমালয়া পথি গচ্ছতো জপনিষেধঃ | ••• | ২৬৯ |) . |
| মালাসংস্কারঃ প্রাণপ্রতিষ্ঠা চ | ••• | ২৬৯ | 9 |
| নিত্যপূজায়াং জপসখ্যানিয়মঃ | ••• | ঽঀ৽ | 8 |
| দপদমপ্ণম্ তত্ৰ বিচার ণ্চ | | 290 | ۶8 |
| স্ত বকবচাদিপাঠক্রমঃ | ••• | ২ 9২ | २० |
| ক্তাঞ্জলিনা স্তোত্রাদিকং পঠনীয়ম্ | 6 34 | ٠.` ۱۹ ૭ | રેર |
| স্ভোত্রাদিপাঠম্মেতিকর্ত্তব্যতা | ••• | ২ 98 | > |
| প্রদক্ষিণম্ | | ₹9 ¢ | 7 |
| শশ্চাৎকৃত্বা প্রদক্ষিণকরণে দোষঃ | ••• | ২৭৬ | • |
| বিশেষার্য্যসমর্পণমূ | ••• | २१७ | 9 |
| প্রণামকালনিয়মঃ | ••• | • | • |
| | | २१. ७ | 25 |

. [>]

| বিষয়ঃ | | পৃ | পং |
|--|--------------|---------------|---------------|
| অক্টাঙ্গাদিপ্রণামবিধিঃ ক্ষমাপ্রার্থনঞ্চ | ••• | २ १९ | > |
| কৰ্মাৰ্পণম্ | ••• | ২৭৭ | २७ |
| আত্মার্পণম্ | ••• | ২৭৭ | > 2 |
| আ ত্মার্পণমন্ত্রঃ | ••• | ২৭৮ | ₹8 |
| উত্তরকর্ম্মবিধিঃ | ••• | ২৭৯ | ৮ |
| উচ্ছিউপুষ্পাদিনা উচ্ছিষ্টভোজিনাং পূজা | | | |
| তেষাং পূজাস্থানকথনঞ্চ | ••• | 21.0 | 8 |
| তেষাং পূজায়া মন্ত্রান্তরম্ | ••• | ২৮১ | २ऽ |
| সর্ব্বপুংদেবতোচ্ছিষ্টভোজিনাং পূজার্থমগু |)লম্ | ২৮৪ | ৬ |
| নির্মাল্যধারণাদি | ••• | ২৮৫ | ¢ |
| পাদোদকপানে বিশেষঃ প্রদা দ ভক্ষণবিচা | র শ চ | ২৮৫ | ১৯ |
| নিৰ্মাল্য-নিক্ষেপস্থান্য্ | | २ ৮१ | 2¢ |
| শঙ্গপূজনম্ | ••• | 269 | ንሖ |
| ত্ৰোদশকলাপ্ৰকাশঃ | 1 | | |
| নিত্যনৈমিভিককর্মলোপে প্রায়শ্চিত্তম্ | ••• | ২৮৮ | œ |
| পূজায়া অকরণে দোষাভাবকালাঃ | ••• | २ <i>৮</i> నీ | >> |
| ব্যাধিতত্রস্তাদীনাং পূজাবিধিনিয়মঃ | ••• | ২৯০ | > |
| ন্ত্রীণাং রজোযোগে পূজানিষেধঃ | ••• | ২৯২ | 8 |
| বিগ্মৃত্রোৎসর্গশঙ্কাদিযুক্তানাং কন্ম করণে | দোষঃ | ২ ৯২ | ৬ |
| পূজামধ্যে গুৰ্ববাছাগমনে কৰ্ত্তব্যতা | ••• | ২৯২ | > 8 |
| নৈশিত্তিকা ৰ্চ নম্ | ••• | ২৯৩ | ¢ |

| বিষয়ঃ | | পৃ | পং | |
|--|-------|-------------|------------|--|
| প্রতিমাযন্ত্রয়োরেকত্র পূজানিষেধঃ | ••• | ২৯৩ | ર્ | |
| প্রতিমাথেঘটস্থাপনম্ | ••• | ২৯৪ | >> | |
| ধ্যানানুরপনিশ্মিতমূর্ত্তিপূজেতিকর্ত্তব্যতা | ••• | ২৯৪ | ২০ | |
| কাৰ্ত্তিকামাবস্থানিমিত্তক-শ্যামাপূজাকাল- | | | | |
| নিরূপণম্ | ••• | ২৯৬ | ঙ | |
| তত্র শৈবাদীনামপ্যধিকারঃ | ••• | ২৯৬ | 75 | |
| নিশাৰ্চ্দে শ্ঠামাপূজাবিধানম্ | ••• | २৯१ | 7 2 | |
| সন্ধিকালনিরূপণ-পরিভাষা | ••• | ২৯৭ | ₹8 | |
| সন্ধিকালপূজায়া বীজকথনম্ | ••• | ミット | ২৩ | |
| কেষাঞ্চিৎ মতে পশুবীরয়োঃ পূজাকালনি | নয়মঃ | ٥٠٧ | • | |
| পূজাকালনিরূপণে বিচারঃ | ••• | ٥٠٧ | 79 | |
| তত্র সঞ্জেপঃ | ••• | ৩১২ | ১২ | |
| রটন্তীপূজা তৎকালনিয়মশ্চ | ••• | ७७२ | ১৯ | |
| ফলহারিণীপূজা | ••• | 9 78 | 9 | |
| অমাবস্থানিমিত্তক-প্রতিমাসীয়-শ্যামাপৃজ | 1 | ৩১৫ | ₹8 | |
| নৈমিত্তিকজগদ্ধাত্ৰীপূজা | ••• | ৩১৬ | 20 | |
| নবর্মীনির্ণয়ঃ | ••• | ৩১৭ | > | |
| অন্নপূৰ্ণাপূজা-ব্যবস্থা | ••• | ৩২২ | 29 | |
| তারাদিবিভানাং ,নৈমিত্তিকাকুষ্ঠানম্ | ••• | ৩২৩ | ২৩ | |
| চতুদশকলাপ্ৰকাশঃ। | | | | |
| বৈধহিংসা | ••• | ৩২৪ | 2.0 | |
| তত্রাপি বলিমাংসভক্ষণবিধিবিশেষঃ | ••• | ৩২৮ | 20 | |
| | | | | |

| বিষয়ঃ | | Ą | পং | | | |
|---|-----|-------------|----|--|--|--|
| वलौनाः विद्यवः | ••• | ७२৮ | ১৭ | | | |
| ন্ত্ৰীপশুবলিদাননিষেধঃ | ••• | ৩২৯ | >> | | | |
| ব্রাহ্মণেযু বিশেষঃ | ••• | ৩২৯ | ኃ৫ | | | |
| পশুশব্দপ্রয়োগস্থানম্ | ••• | ৩২৯ | રર | | | |
| <u> ছেদনপ্রকারঃ</u> | ••• | ೨೨೦ | 8 | | | |
| বলিমস্তকস্থাপনপ্রকাবঃ | ••• | ೨೨۰ | ٥٥ | | | |
| বিহিতবলীনাং মাংসদানস্থাবশ্যকতা | ••• | ೨೨೧ | ১৬ | | | |
| পশ্নাং সক্তেছদনব্যাঘাতে প্রায়শ্চিত্তম্ | ••• | ೨೨೦ | 79 | | | |
| পুরশ্চরণম্ | ••• | ৩৩১ | ৬ | | | |
| ক্ষুধানিদ্রাতুরাণামনধিকারঃ | ••• | ৩৩২ | • | | | |
| পুর*চরণাঙ্গজপত্থাবশ্যকতা | ••• | ৩৩২ | ۳ | | | |
| যুগভেদে জপসংখ্যা-ভেদঃ | ••• | ೨೨೨ | >8 | | | |
| গ্রহণপুর শ্চ রণম্ | ••• | ೨೨৬ | 39 | | | |
| গ্রহণে মেঘাচ্ছন্নে যৎকর্ত্তব্যম্ | ••• | ၁၈၅ | 29 | | | |
| গ্রহণে আসনোপবেশন-নিষেধঃ | ••• | ೨೨৮ | ২১ | | | |
| পঞ্চলশকলাপ্ৰকাশঃ। | | | | | | |
| আচারনির্ণয়ঃ আচারলক্ষণানি চ | ••• | ೨೨৯ | • | | | |
| আচারস্থ সপ্তবিধত্বম্ | ••• | ৩৩৯ | ১৬ | | | |
| পঞ্তত্ত্বম্ মভপানবিচার*চ | ••• | 9 88 | 8 | | | |
| অবধূতলক্ষণম্ তদ্তেদ*চ | ••• | 9 89 | ১৬ | | | |
| ৰাক্ষণশব্দস্থ ব্ৰহ্মবিদৰ্থকত্বম্ | ••• | ৩৫২ | Œ | | | |
| <u>আত্মবিদোলক্ষণম্</u> | ••• | ૭ ૯૨ | ъ | | | |

| বিষয়ঃ | | ? | পং |
|---|--------------|-------------|-------|
| যোগমার্গান্মুসারেণ মন্ত্রসিদ্ধিলক্ষণম্ | | ৩৫৩ | ১৬ |
| মন্ত্রগ্রহণমাত্রমেব কৌলাচারগ্রহণনিষে | ४ ३ | ૭૯૪ | ₹8 |
| প্রাণায়ামাদিযোগিসদ্ধস্থাপি কুলাচারেং | 1 - | | |
| ধিকারঃ বশিষ্টস্ <mark>ত মুনের্যোগ</mark> সিদ্ধিবি | বরণ ঞ | ૭৫৫ | ২৩ |
| বুদ্ধদেবকথিত-কুলমার্গনিরূপণম্ | ••• | ৩৫৮ | > |
| সর্বাদৌ পাশবকল্পাশ্রয়ণস্থ কর্ত্তব্যতা | | ৩৫৯ | ₹ ષ્ઠ |
| বীরকল্পনিরূপণম্ | ••• | ৩৬০ | 26 |
| অদীক্ষিতপশুধর্মিণাং নিন্দা | *** | ৩৬ ৩ | > |
| অধমপ <i>শুলক্ষ</i> ণম্ | ••• | ৩৬৩ | 59 |
| পাশবাচার-নিরূপণম্ | ••• | ৩ ৬৪ | > |
| স্থরোৎপত্তিলক্ষণম্ (অমূলক ডেন স ন্দি | শ্বম্) | ৩৬৬ | ৯ |
| যুক্তেরাদরণীয়তা জগদস্বয়া স্বয়মুক্তা | | ৩৬৮ | ₹8 |
| নানাচারিণাং জপপূজাদি-কালনিরূপণম্ | | ৩ ৬৯ | 9 |
| স্বস্বকল্পোক্তাচারস্থ্য কুলাচারস্বয় বৈ ঞ্চর | ানাং | | |
| পঞ্চতভ্ৰুঞ্চ | • • • | ৩৭০ | ٣ |
| গাণপত্যানামাচারঃ | •• | ৩৭১ | ۶۰ |
| সারস্বতাচারঃ | • • | ৩৭১ | ১৯ |
| ্ৰাড়শকলাপ্ৰকাশ ঃ | 1 | | |
| প্রকীর্ণকম্ নাস্তিকেন সহ সংসর্গনিষেধ | * £ | ৩৭৩ | > |
| গুরুং প্রতি ব্যবহারঃ | ••• | ૭ ૧૭ | ٣ |
| শৰ্কতোভদ্ৰমণ্ডলং ঘটস্থাপনাদি চ | •• | ৩৭৫ | >> |
| দেবতায়ৈ কন্ম সমর্পণম্ | ••• | ৩৭৬ | œ |
| | | | |

| বিষয়ঃ | | পৃ | পং |
|---|---------------|----------------|---------------|
| জপস্য সময়নিয়মঃ | ••• | ৩৭৬ | 25 |
| সংপুটল ক্ষণম্ | ••• | ৩৭৭ | 8 |
| শতমূর্থব্রাহ্মণাপেক্ষয়া বিদ্বদেকব্রাহ্মণোণ | ংকৰ্যঃ | ৩৭৮ | ২ |
| পঞ্চাব্যনিরূপণম্ ত্রিমধুরনিরূপণঞ্চ | | ৩৭৮ | ৫ ।ऽ२ |
| কাম্যকন্ম াধিকারিনিরূপণম্ | ••• | ৩৭৮ | 74 |
| শূ দ্রোদীনামস্যা শ্র মনিষেধঃ | ••• | ৩৭৯ | 8 |
| অনুকল্পে শাপমোচনাভাবঃ | ••• | ৩৭৯ | ٩ |
| আমায়তভদবিভাঃ ষট্ | ••• | ৩ ৭৯ | ১৬ |
| শূদ্ৰস্থাপিতলিঙ্গাদিবিলোকনাদি-নিষেধঃ | | ৩৮১ | > ¢ |
| কম্ম করণবিধানম্ | ••• | ৩৮১ | 74 |
| সর্বদা মানসকম্ম বিধানম্ | ••• | ৩৮২ | ٩ |
| জপপ্রশংসা | ••• | ৩৮২ | 20 |
| দেবীবিষ্ণুশিবাদীনামেকত্বকথনম্ | ••• | ৩৮২ | २১ |
| গ্রস্থকৃতঃ ক্ষমাপ্রার্থনাদি-শ্লোকাঃ | | ে শ্য ' | পৃষ্ঠায় |



হরতত্তদীধিতিঃ

THE WATER

उँ नत्मा विद्वविनामनाम् ।

विरयं ने विषयः मरमन-यमयः खब्दः मना मक्रनः সারাৎ সারতরং স্থচারু স্থচিরং সংসারসারৌষধম্। সূক্ষাস্থূলবহিষ্কৃতং শরণদং সৎ শুদ্ধসত্ত্বাস্পদং সংবিৎসোখ্যচয়ং স্মরামি সততং সত্যাত্মকং তন্মহঃ॥ ১॥ দেবেন্দ্রো রাজ্যমৈন্দ্র্যং পুরমপি চ পরিত্যজ্য ভূমীশ্বরেন্দ্র-ব্যাজাৎ বিপ্রেন্দ্র-বংশে সমজনি কলিকাতানগর্য্যাং নরেন্দ্রঃ। শ্রীগোপীমোহনাখ্যাজনিতজনরবঃ ক্ষাতলখ্যাতকীর্ত্তিঃ ব্যাখ্যাংকুৰ্ব্বন্তি কেবা তদমল্যশসাং নো বিছঃ কে তদাখ্যাম ॥২॥ শান্তো দান্তঃ প্রমোদী সবিনয়বচনঃ সন্মতিঃ সত্যবাদী গম্ভীরোহতিপ্রতাপী সকরুণনয়নঃ সদগতির্জ্ঞানবাপী। দারিদ্রাণাং বুধানাং বহুবিধগুণিনাং তঃখদের্গিত্যশাক্ত্যৈ ় দানৈর্মানৈর্গু গৈর্ব্বা ক্ষিতিতলচরতাং কে জনাস্তৎসমানাঃ॥ ৩॥ যদানকল্পবিটপী প্রথিতঃ পৃথিব্যাং ছায়াপ্রসুনফলগদ্ধচয়প্রদানেঃ। নাসো জনঃ ক্ষিতিতলে স্থচিরায় ভৃপ্তিং লেভে ন যোহত্র যদি দূরতরেহপি বাসঃ॥ ৪॥

যদীয়ং গাস্কীর্য্যং বিমলতরতাঞ্চাকলয্যামৃতাবিঃ
স্বমন্দং মন্দাক্ষং সপদি পরিতো দ্রান আসীদ্ধিতান্তম্।
নচেন্মৃত্যুপায়ং নিয়তমুদরে তৎ কুতঃ কালকুটং
বভার প্রজ্ঞাবান্ কচন সহতে স্বীয়সন্মানহানিম্॥ ৫॥
সৎসঙ্গঃ সদ্বিচারঃ স্থিরমতিসরলঃ পঞ্চমন্তৎকুমারঃ
শ্রীলন্তন্ত্রামূশীলঃ কুশল-হরকুমারাভিধানঃ স্থশীলঃ।
সন্দেহচ্ছেদনার্থং স্থবির্তনিভূতং সাধকানাং স্থথাপ্ত্যু
সৎসম্বন্ধং নিবন্ধং হিত্মিতি তন্তুতে তন্ত্রমন্ত্রামূবন্ধম্॥ ৬॥
তন্ত্রাম্ভোধিতরঙ্গপারতরণির্বিজ্ঞান্তিবিধ্বংসিনী
সত্র্কামৃত্বর্ষিণী জনমনঃসন্দেহসংহারিণী।
ভূষান্মে হরতত্ত্বীধিতিরিয়ং সচ্চিত্তসন্তোষিণী॥ ৭॥

. ইহ খলু তুষ্পারাসারসং দারসাগরসমূত্তরণাসমর্থানাং তৎসমুখিতবিষমবিষয়বিষবিষমীকৃতচেতসাং চিরতরাচার্য্যচরণাধ্যনাচলাচলচালনোচিত চৈত্যামৃতানাস্বাদকানাং নিগৃঢ্-নিখিলনিগমাগমবিষমবিশেষাববোধানভিজ্ঞানাং ধর্মার্থকাম-মাক্ষেষ্ চতুর্ব্বিধপুরুষার্থেষ্ পরমপ্রয়োজনত্বাৎ তদেকোপায়ে বিশেষেণ যত্নতঃ সমাখ্যায়তে।

অপিচ। যভাপি সন্তর্কার্কসম্পর্কাতীবদূরীকৃতাতিকর্কশকুতর্কান্ধকার প্রকাশীকৃতার্থকৃতার্থীকৃতাশেষজনগণাগুণিত হুরসার্থতীর্থপ্রতিমাগমবিবিধবিভাবিপিনবিচরণবিদ্বদুন্দবারণবারবারণবারণারিভির্মহামহোপাধ্যায়েনিবন্ধৃভিনিখিলনিগৃঢ়নিগমাগমমী—
মাংসাভিহিতা, তথাপি তৈন্তন্তঃ স্থকুমারার্থাবলোকনেন
বিবোধান্ধ্রানবসরাদতীব হেলয়া নিগৃহীতনানানিগমাগমবচ-

নানাং ছুরালোচনয়াতীবসিদ্ধান্তামন্দান্ধীকৃতাতিচপলচিত্তানা-মথর্বসর্ববার্ব্দপর্বত–নির্বাপণপবীয়মান—শুদ্ধসিদ্ধান্তেন তানি মীমাংস্থান্তে।

প্রত্যক স্থলোহচক্ষরপ্রাণোহমনোহকর্তা চৈতন্যং চিম্মাত্রং সদিতি। একমেবাদ্বিতীয়ং ত্রন্মেত্যাদি শ্রুতিঃ॥ যোগিনীতন্ত্রে দশমপটলে চ—স্বপ্রকাশং মহাদেবি ব্যাপ্যব্যাপকবর্জ্জিতম। নাধেয়কৈব নাধার-মদ্বিতীয়ং নিরন্তরম। ইদং হি সকলং দেবি সর্বাং মায়াময়ং পুনঃ। মিথ্যৈব সকলং দেবি সত্যং ব্রহ্মৈব কেবলমিতি ব্রহ্মপ্রতিপাদকশ্রুতিতন্ত্রাদিভিশ্চৈতন্ত্র-স্বরূপাদ্বিতীয়ং ব্রহ্মেতি স্থিতম্। ততুপাদনয়ৈব প্রমমুক্তিঃ। তথাচ শ্রুতঃ--আত্মা জ্ঞাতব্যো ন স পুনরাবর্ত্ততে ইতি। তরতি শোকমাত্মবিৎ। ত্রহ্মবিৎ ত্রহৈন্মবু ভবতীতি। তমেব বিদিত্বা অতিমৃত্যুমেতি নান্তঃ পন্থা বিল্ততেহয়নায় ইতি॥ কুলার্ণবে নবমোল্লাদে চ—ভিন্ততে হৃদয়গ্রস্থিশিছ্গুস্তে সর্ববিদংশয়াঃ। ক্ষীয়ন্তে চাস্ত কর্মাণি তত্মিন্ দৃষ্টে পরাবরে॥ পরে ব্রহ্মণি বিজ্ঞাতে সমস্তৈর্নিয়মৈরলম্। তালরুন্তেন কিং কার্য্যং লব্ধে মলয়মারুতে॥ ইতি। এবং কুব্রিকাতন্ত্রে নবমপটলে——নিরাকারং সমাসাগ্য নিরঞ্জনপদং লভেং। নিরাকারেণ দেবেশি কৃতকৃত্যশ্চ সাধক ইতি॥

তত্বপাদনা বেদান্তাদিনানাশান্ত্রেয়ু প্রপঞ্চিতা। দা তু শ্রবণমনননিদিধ্যাদনাদিরূপা, কিন্তু তদসুষ্ঠানস্থ তুর্বলাধি-কারিণামম্মদাদীনামতীব তুঃদাধ্যত্বাৎ দগুণোপাদনমসুষ্ঠেয়ম্, যতন্তদিপি চিত্তিকাগ্র্যনারা নির্বিশেষত্রহ্মদাক্ষাৎকারত্তেত্বঃ। তত্ত্তং বেদান্তপরিভাষায়াম্—নির্বিশেষং পরং ত্রহ্ম দাক্ষাৎ- কর্ত্রমনীশ্বরাঃ। যে মন্দান্তেহসুকল্পন্তে সবিশেষনিরূপিণৈঃ॥
বশীকৃতে মনস্থেষাং সদ্গুণব্রহ্মশীলনাৎ। তদেবাবির্ভবেৎ
সাক্ষাদপেতোপাধিকল্পনমিতি॥

অথ প্রকৃতমনুসরামঃ—তত্তাদে সগুণোপাসনাপ্রশংসা-মাহ ভগবদ্গীতাসূপনিষৎস্থ দ্বাদশাধ্যায়ে—ক্লেশোহধিক-তরস্তেযামব্যক্তাদক্তচেতদাম। অব্যক্তা হি গতির্ছঃখং দেহবদ্ভিরবাপ্যতইতি ॥ তথাত্রাপি কুলার্ণবে **পঞ্চমখণ্ডে** নবমোল্লাদে – ধ্যানন্ত দ্বিবিধং প্রোক্তং স্থূলসূক্ষবিভেদতঃ। সাকারং স্থলমিত্যুক্তং নিরাকারস্ত সূক্ষাকম্। স্থিরার্থং মনসং কেচিৎ স্থূলধ্যানং প্রকুর্বতে। স্থূলেন নিশ্চলং চেতো ভবেৎ সূক্ষোহপি নিশ্চলমিতি॥ **কুজিকাতন্ত্রে** নবমপটলে চ---সাকারেণ মহেশানি নিরাকারঞ্চ ভাবয়েৎ। সাকারেণ বিনা দৈবি নিরাকারং ন পশ্যতি॥ সাকার-মূলকং দর্কাং সাকারঞ্চ প্রপশ্যতি। অভ্যাদেন সদা দেবি নিরাকারং প্রপশ্যতীতি॥ কুলার্ণবে ষষ্ঠোল্লাদেহপি—অরূপং রূপিণং কৃত্বা কর্ম্মকাণ্ডরতা নরাঃ। গবাং সর্ব্বাঙ্গজং ক্ষীরং ব্রবেৎ স্তনমূখাৎ যথা। তথা দর্ব্বগতো দেবঃ প্রতিমাদিয়ু রাজতে ইতি । তথা মুগুমালাতন্ত্রে প্রথমপটলে—চিন্মযুস্থা-দ্বিতীয়স্ত নিক্ষলস্থাশরীরিণঃ। উপাদকানাং কার্য্যার্থং ব্রহ্মণো রূপকল্পনেতি॥ রূপস্থানাং দেবতানাং পুংস্ত্র্যঙ্গা-স্ত্রাদিকল্পনেত্যধিকপাদদ্বয়স্ত রাঘবভট্টে পাঠঃ॥ অগস্ত্য-সংহিতায়ামপি তৃতীয়াধ্যায়ে—সর্বেশ্বরঃ সর্বময়ঃ সর্ব-ভূতহিতে রতঃ। সর্কেষামুপকারায় **সাকারো২ভূমি**রা-কৃতিরিতি॥

তম্মাস্ত শিববিষ্ণুশক্তিসূর্য্যগণপত্যাদিরূপভেদেন নানাত্বেহপি ফলতো ন কশ্চিদ্বিশেষঃ॥ যথা যোগিনীতন্ত্রে ষষ্ঠপটলে শিবোক্তো—যে যথা মাং প্রপাগন্তে তে তথা ফলভাগিন ইতি। পুষ্পাদন্তকৃতস্ততো চ—ক্রচীনাং বৈচিত্র্যাদৃজুকুটিলনানাপথজুষাং নৃণামেকো গম্যস্থমিদ প্রসামর্ণবইবেতি॥ তথা কুজিকাতন্ত্রে প্রথমপটলে—নির্গ্রণঃ সপ্তণো
ব্রহ্ম শিবো জ্বেয়ঃ সনাতন ইতি॥ কাশীখণ্ডে ত্রেয়োবিংশত্যধ্যায়ে চ—নিরাকারোহপি সাকারঃ শিব এব হি কারণম্।
ভুক্তয়ে মুক্তয়ে চাপি ন শিবান্মোক্ষদোহপরঃ॥

বিষ্ণুবিষয়ে যথা ভগবদগীতাসূপনিষৎস্থ—যে যথা মাং প্রপান্থতে তাংস্তথৈব ভজাম্যহম্। মম বর্জানুবর্তন্তে মনুষ্যাঃ পার্থ দর্ববাশ ইতি ॥ নির্বাণতত্ত্বে পঞ্চমপট্লুহপি—শ্রীমন্তাধি-কাপ্রশানন্তরং শ্রীভগবানুবাচ—যে যথা মাং ভজন্ত্যেব তেন মার্গেণ দদগতিম্। দাস্থামি শৃণু চার্বাঙ্গি দদা ত্বং ভক্ত-বংশদেতি ॥

শক্তিবিষয়ে তু পিচ্ছিলাতন্ত্রে পূর্ব্বথণ্ডে উনবিংশতি-পটলে—নির্গুণা সগুণা চেতি নিরাকারা তু নিগুণা। সগুণাকারভেদেন সাধকানামভাঁইটদা॥ যদ্রোমকুহরে কোটি-ব্রুমাণ্ডাদি বিলীয়তে। সাহি নানাবিধা ভূত্বা সাধকাভীইটদা ভবেদিতি॥ নবরত্নেশ্বরেহপি—স্ত্রীরূপাং বা স্মরেদ্দেবীং পুংরূপাং বা স্মরেৎ প্রিয়ে। স্মরেদ্বা নিষ্কলং ব্রহ্ম সচ্চিদানন্দ-রূপিণীম্॥ নেয়ং যোষি-মচ পুমান্ ন যণ্ডো ন জড়ঃ স্মৃতঃ। তথাপি কল্পবল্লীবং স্ত্রীশব্দেন চ যুজ্যতে। সাধকানাং হিতার্থায় অরূপা রূপধারিণীতি॥ এবং ব্রহ্মাণ্ডতন্ত্রে একাদশ-

পটলে—धाम्रेखि ७१ दिखवान्त कृष्धः श्रामनञ्चन्त्रम्। কেচিচ্চতুর্ভুজং শান্তং লক্ষীকান্তং মনোহরম্ ॥ ত্রিশূলধারিণং কেচিৎ পঞ্বক্ত্রং দিগম্বরম্। নানারূপঞ্চ পশুন্তি ধ্যানামূ-সারতশ্চ যাম্। সা দেবী প্রকৃতির্বন্ধতেজোমগুলবাসিনী। কেবলং প্রকৃতিশ্চৈকা দৃশ্যতে ভক্তিযোগতঃ। ভিন্ততে সা কতিবিধা দূর্য্যো দর্পণদিমধো। আকাশো ভিন্ততে যাদৃক্ ঘটস্থাদিস্তথাচ সা। একৈব হি মহাবিতা নামমাত্রং পৃথক্ পৃথগিতি ॥ তথা কূর্দ্মপুরাণে কূর্দ্ম উবাচ--সর্ববেশান্তবেদেযু নিশ্চিতং ব্রহ্মবাদিভিঃ। একং সর্ব্বগতং সূক্ষাং কূটস্থমচলং ধ্রুবম্। যোগিনন্তৎ প্রপশ্যন্তি মহাদেব্যাঃ পরং পদম্॥ অনস্তমক্ষয়ং ব্রহ্ম কেবলং নিষ্কলং পরম্। যোগিনস্তৎ প্রপশ্যন্তি মহাদেব্যাঃ পরং পদম্॥ পরাৎ পরতরং তত্ত্বং শাশ্বতং শিবমচ্যুতম্। অনন্তং প্রকৃতো লীনং দেব্যান্তৎ পরমংপদম্॥ শুভ্রং নিরঞ্জনং শুদ্ধং নির্গ্রণং দ্বৈতবর্জ্জিতম্। আত্মোপলব্ধিবিষয়ং দেব্যান্তৎ প্রমং পদমিতি॥ ততৈব শ্রীদেবীবচনম্—যত্ত যে নিক্ষলং রূপং চিন্ময়ং কেবলং পরম্। সর্কোপাধিবিনির্মক্তমনন্তমমূতং পদম্॥ জ্ঞানেনৈকেন তল্লভ্যমক্লেশেন পরং পদম। জ্ঞানমেব প্রপশ্যন্তো মামেব প্রবিশন্তি তে ইতি॥ দেব্যাগমে চ—চিতিরূপা মহামায় পরং ব্রহ্মস্বরূপিণী। সেবকাস্থগ্রহার্থায় নানারূপং দধার সেতি॥ যোগিনীতন্ত্রে চতুর্থপটলেহপি—নিত্যা চ পঞ্চমী শক্তিঃ পরং এক্ষম্বরূপিণী। পরমানন্দকং রূপং জগতাং কারণং মহৎ। তস্থা দেব্যাস্ত তদ্রপমুদয়াস্তবিবর্জ্জিতম্। স্থলতে স্থলরপাচ স্কাজে স্কারপতা। স্থলস্কাবিভেদেন

পরং ব্রহ্মস্বরূপিণী ॥ প্রধানানি চ রূপাণি সদানন্দকরাণি চ।
তম্মা রূপঞ্চ তজ্জেয়ং তম্মান্তু ব্যাপকং মহৎ ॥ যোহসৌ
বিশ্বেশ্বরো দেবো বিশ্বং ব্যাপ্য স্থিতশ্চ যঃ। সৈব বিশ্বেশ্বরী
দেবী ব্যাপকত্বেন সংস্থিতেতি ॥

সূর্য্যবিষয়ে যথা—আদিত্যো ব্রহ্মেতি ব্যজনাদিতি শ্রুতিঃ ॥ ভবিষ্যোত্তরপুরাণীয়ে আদিত্যহৃদয়ে চ—এষ বিষ্ণুঃ শিবশৈচব ব্রহ্মা চৈব প্রজাপতিঃ। মহেশ্বরশ্চ কামশ্চ যমো বরুণ এব চেত্যাদি ॥

গণপতো তু ত্রন্ধবৈবর্ত্তপুরাণে গণেশথণ্ডে নারায়ণকৃত-গণেশস্ততো—স্বেচ্ছয়া সগুণং ত্রন্ধন্ নিগুণঞ্চাপি স্বেচ্ছয়া। স্বয়ং প্রকৃতিরূপঞ্চ প্রাকৃতং প্রকৃতেঃ পরমিত্যাদি॥

এবং পঞ্চদেবতানামেকত্বনাহ পদ্মপুরাণে নারায়ণোক্রা—সোরাশ্চ শৈবা গাণেশা বৈষ্ণবাঃ শক্তিপুজকাঃ।
মামেব তে প্রপদ্যন্তে বর্ষান্তঃ সাগরং যথা। একোইহং
পঞ্চধা যাতঃ ক্রীড়ার্থং নামভিঃ কিলেতি॥ শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাধ্বতভবিষ্যোত্তরে চ—যো ব্রহ্মা স হরিঃ প্রোক্তো যো
হরিঃ স মহেশ্বরঃ। মহেশ্বরঃ শ্বৃতঃ সূর্য্যঃ পাবকউচ্যতে। পাবকঃ কার্ত্তিকেয়োহসে কার্ত্তিকেয়া বিনায়কঃ। গোরী লক্ষ্মীশ্চ সাবিত্রী শক্তিভেদাঃ প্রকীর্ত্তিতাঃ॥
দেবং দেবীং সমুদ্দিশ্য ন কুর্য্যাদন্তরং কচিৎ। তত্তন্তেদো ন
মন্তব্যঃ শিবশক্তিময়ং জগদিতি॥ তথা দেবীপুরাণে
শুক্রং প্রতি ব্রহ্মবাক্যম্—দেবীরূপো হরির্বৎস বিষ্ণুর্দেবী
হহং তথা। সর্ব্ররূপা মহাভাগা চন্দ্রস্থ্যাদিরূপিনী। সর্ব্বত্র
শাক্ষরী দেবী তত্নভিন্না মতিশ্চ সা। নামভেদাৎ ভবৈদ্ধিন্না

ন ভিন্না পরমার্থতঃ। সর্বা সর্ববিগতা দেবী সর্বদেবনমস্কৃতা।
দ্রুফব্যা শুদ্ধভাবেন ন ভিন্না পৃথগেব সা। দেব্যা ব্যাপ্তমিদং সর্ববং জগৎ স্থাবরজঙ্গমমিতি। ইত্যাদি বছুনি সন্তি
গ্রন্থগোরবভিয়া নেহ প্রপঞ্চিতানি।

উপাসনায়াঃ কর্ত্তব্যত্বমাহ কুলার্ণবৈ ষষ্ঠোল্লাসে—গবাং সর্পিঃ শরীরস্থং ন করোত্যাত্মপোষণমূ। স্বকর্মচরিতং পরমেশ্বরি। বিনা চোপাসনাং দেবি ন দদাতি কলং নুণা-মিতি ৷ রুদ্রজামলে সপ্তবিংশতিপটলে চ—যাবন্মনো লয়ং যাতি কৃষ্ণে স্বাত্মনি চিন্ময়ে। তাবজ্জপেন্মনুং মন্ত্রী জপ-হোমং সমভ্যদেৎ। অতঃ পরং ন কিঞ্চিত্র কৃতমস্তি মনো-হরে। বিদিতে তু পরে তত্ত্বে সমস্তৈর্নিয় মৈরলম্। তাল-ব্ৰন্তেন কিং কাৰ্য্যং লব্ধে মলয়মাৰুতে॥ মন্ত্ৰাভ্যাদেন যোগেন জ্ঞানং জ্ঞানায় কল্পতে। ন যোগেন বিনা মন্ত্রো ন মন্ত্রেণ বিনা হি সঃ। দ্বয়োরভ্যাসযোগো হি ব্রহ্মসংসিদ্ধিকারণম্। অতএব সদা কুর্য্যাৎ ধ্যানং যোগং মনুং জপেৎ। তমঃপরিবৃতে গেহে ঘটো দীপেন দৃশ্যতে॥ এবং মায়ারতো হ্যাত্মা মনুনা গোচরীকৃতঃ। ত্যাপাপভবৈর্ছঃথৈর্ম্চ্যতে নাত্র সংশয়ঃ॥ তুর্লভং বিষয়াসকৈঃ স্থলভং যোগিনামপি। স্থলভং ন ত্যজে দ্বিদান্ যদি সিদ্ধিমি হৈ চ্ছতি॥ ব্ৰহ্মজ্ঞানং যোগধ্যানং মন্ত্রজাপ্যং ক্রিয়াদিকম্। যঃ দদা ভাবয়েদ্ভজ্যো বীরভজ্যো হি যোগিরাট্।। ভক্তিং কুর্য্যাৎ সদা শস্তোঃ শ্রীবিভায়াঃ পরাৎ পরাম্। যোগসাধনকালে চ কেবলং ভাবনাদিভিঃ। মননং कीर्जनः धानः श्रातः भानत्मवनम्। श्राप्तनः वन्ननः

দাক্তং স্থ্যমাত্মনিবেদনম্। এতম্ভক্তিপ্রসাদেন জীবস্মৃক্তস্ত সাধকঃ। যোগিনাং বল্লভো ভূত্বা সমাধিছো ভবেদ্যতি-ব্রিতি ॥

অথ যভপি শ্রুতিস্মৃতিপুরাণোপপুরাণদংহিতাদাবখণ্ডঃ প্রকাণ্ডো বিহিতানেকবিতত্তো বিবিধোপাসনাকাণ্ডো বিভাতে তথাপি কলাবাশুফলদায়কত্বাৎ হুগমোপায়ত্বাচ্চ আগমোক্ত-বিধিনা উপাসনং নিরূপ্যতে।

তথাহি মহানির্ব্বাণতন্ত্রে দ্বিতীয়োল্লাদে।—বিনা হ্যাগম-মার্গেণ কলো নাস্তি গতিঃ প্রিয়ে। শ্রুতিস্মৃতিপুরা-ণাদে ময়ৈবোক্তং পুরা শিবে। আগমোক্তেন বিধিনা কলো দেবান্ যজেৎ স্থবীঃ। কলাবাগমমূলজ্য্য যোহন্যমার্গে প্রব-র্ত্তে। ন তস্ত গতিরস্তীতি সত্যং সত্যং ন সংশয় ইতি॥ তথা কলো তন্ত্রোদিতা মন্ত্রাঃ সিদ্ধান্তর্ণকলপ্রদাঃ। শস্তাঃ কশ্মন্থ সর্বেষু জপর্যজ্ঞকিয়াদিষু। নির্কীর্য্যাঃ শ্রোতজাতীয়া বিষহীনোরগা ইব। সত্যাদো সফলা আসন্ কলো তে মৃতকা ইব। পাঞ্চালিকা যথা ভিত্তো সর্কেন্দ্রিয়সমন্বিতাঃ। অমূর-শক্তাঃ কার্য্যেষু তথাত্যে মন্ত্রনাশয়ঃ। অন্যমন্ত্রৈঃ কৃতং কর্ম্ম বন্ধ্যান্ত্রীসঙ্গমো যথা। ন তত্র ফলসিদ্ধিঃ স্থাৎ শ্রম এব হি কেবলন্॥ কলাবস্যোদিতৈশ্মার্ত্যঃ সিদ্ধিমিচ্ছতি যো নরঃ। ছবিতো জাহ্ণবীতীরে কূপং খনতি ছুর্মতিঃ॥ নাম্যঃ পৃস্থা पुक्लिट्ड्यूतिहामूज স্থাপ্তয়ে। যথা তন্ত্রোদিতো মার্গো মাক্ষার চ স্থায় চেতি॥ মাতৃকাভেদতক্ত্রে একাদশপটলে-্পি প্রাদাদদানবিধিমুক্ত্য--বেদোক্তকৈব স্মৃত্যুক্তং মৃত্রং ন যাজন্মেৎ কলো। এবং কূপাদিদানেযু কর্ত্তব্যং পরমেশ্বরীতি॥

কুজিকাতন্ত্রে প্রথমপটলে চ—শ্রুতিবিধানেন পূজা কার্য্যা युगळारा। व्यागरमाळविधारनन करली (मरान् यरक् इसी:। নহি দেবাঃ প্রদীদন্তি কলো চান্সবিধানত ইভি॥ তারা-প্রদীপে প্রথমপটলেহপি—আগমোক্তবিধানেন কলো মন্ত্রং জপেৎ স্থবীঃ। নহি দেবাঃ প্রসীদন্তি কলো চাম্মবিধানতঃ॥ ক্বতে শ্রুত্তকুমার্গঃ স্থাৎ ত্রেতায়াং স্মৃতিসম্ভবঃ। স্থাপরে তু পুরাণোক্তঃ কলাবাগমসম্ভব ইতি ॥ পুরশ্চরণরদোলাসতন্ত্রে ভৃতীয়পটলে চ—তত্ত্রোক্তং ধ্যানমন্ত্রঞ্চ প্রশস্তং ভারতে কলো। বৈদোক্তকৈব স্মৃত্যুক্তং পুরাণোক্তং বরাননে। ন শন্তং চঞ্চলা-পাঙ্গি কদাচিদ্রারতে কলাবিতি॥ মহানির্বাণতজ্ঞে চতুর্থে। ল্লাসেহপি--- দর্বং কর্মা নরঃ কুর্য্যাৎ স্বস্থ বর্ণাপ্রমোদিতম্। দীক্ষাং পূজাং জপং হোমং পুরশ্চরণতর্পণম্। ব্রতোদ্বাহো পুংসবনং সীমস্তোন্নয়নং তথা। জাতকর্ম্ম তথা নাম চূড়াকরণ-মেব চ। মৃতক্রিয়াং পিতৃ শ্রাদ্ধং কুর্য্যাদ্বাগমসম্মতম্ ॥ তীর্ণ-শ্রাদ্ধং রুষোৎসর্গং শারদোৎসবমেব চ। যাত্রাং গৃহপ্রবেশ নববস্ত্রাদিধারণম্। বাপীকৃপতড়াগানাং সংস্কারং তিথিকর্ম চ গৃহারন্তং প্রতিষ্ঠাঞ্চ দেবতাস্থাপনং তথা। দিবাকুত্যং নি^{শা} কৃত্যং পর্বকৃত্যং তথৈব চ। ঋতুমাদবর্ষকৃত্যং নিত্যং নৈমিত্তিকঞ্চ য় । কর্ত্তব্যং যদকর্ত্তব্যং ত্যাজ্যং গ্রা**হঞ্চ** যম্ভ-বেৎ। ময়োক্তেন বিধানেন তৎসর্কাং সাধ্যেম্বরঃ॥ ন ক্র্যাং। যদি মোহেন ছুর্মত্যাশ্রদ্ধরাপি বা। বিনষ্টঃ সর্ব্ধকর্মভো বিষ্ঠারাং জারতে কৃমিঃ ॥ যদি মন্মতমুৎস্ক্য মহেশি প্র^{বরে} কলো। যদা যৎ ক্রিয়তে কর্ম্ম বিপরীতং হি তদ্ভবেৎ ॥ মান তাসম্মত দীকা সাধকপ্রাণঘাতিনী। পূজাদি বিফলং ^{দেবী}

হুতং ভক্মার্পণং যথা। দেবতা কুপিতা তম্ম বিল্পস্তম্ম পদে পদে। প্রবৃদ্ধে কলিকালে চ জ্ঞাত্বা মচ্ছাস্ত্রমন্বিকে। যোহন্য-মার্গৈঃ ক্রিয়াং কুর্য্যাৎ স মহাপাতকী ভবেৎ ॥ ব্রতােদ্বাহো প্রকৃর্বাণো যোহন্তমার্গেণ মানবঃ। স যাতি নরকং ঘোরং মাবচ্চদ্রদিবাকরো ॥ ব্রান্ম্যে ব্রহ্মবধঃ প্রোক্তো বাত্যো মান-বকো ভবেৎ। কেবলং সূত্রবাহোহসো চাণ্ডালাদধমোহপি সঃ॥ উদ্বাহিতা চ যা নারী জানীয়াৎ সা তু গর্ব্বিতা। উদ্বোঢ়াপি ভবেৎ পাপী সংসর্গাৎ কুলনায়িকে। বেশ্যাগমনজং পাপং তক্ত পুংসো দিনে দিনে। তদ্ধস্তাদমতোয়াদি নৈব গৃহুন্তি দেবতাঃ। পিতরোহপি নচাশস্তি যম্মাত্রমলপূয়বং। তয়ো-রপত্যং কানীনঃ সর্ববধর্মবহিষ্কৃতঃ। দৈবে পিত্র্যে কুলাচারে নাধিকারোহস্ম জায়তে॥ অশাস্তবেন মার্গেণ দেবতাস্থাপন-ঞ্জেং। ন সামিধ্যং ভবেতত্ত্র দেবতায়াঃ কথঞ্চন। ইহাযুক্ত ফলং নান্তি কায়ক্লেশো ধনক্ষয়ঃ॥ আগমোক্তবিধিং হিন্দা যঃ প্রাদ্ধং কুরুতে নরঃ। শ্রাদ্ধং তদ্বিফলং সোহপি পিতৃভির্নরকং ব্ৰজেং। তভোৱা শোণিতসমা পিণ্ডা মলময়া ভবেং। তম্মা-মার্ত্যঃ প্রযম্ভেন শাঙ্করং মতমাশ্রেয়ে ॥ বছনাত্র কিমুক্তেন সত্যং সত্যং ময়োদিতং। অশাম্ভবং কুতং কর্ম্ম সর্ববং দেবি নিরর্থকম্। অস্তু তাবৎ পরে। ধর্মঃ পূর্ববধর্মোহপি নশ্যতি। শাস্তবাচারহীনশু নরকামেব নিষ্কৃতিঃ॥ মহুদীরিতমার্গেণ নিজ্যনৈমিত্তকৰ্মণাম্। সাধনং যম্মহেশানি তদেব তব সাধ-নম্। বিশেষারাধনং তত্ত্র মন্ত্রযন্ত্রাদিসংযুত্ন্। ভেষজং কলি-রোগাণাং শ্রেয়তাং গদতো মমেতি॥

নন্জসকলবচনপর্য্যালোচনয়া নিত্যানাং নৈমিভিকানাং

কাম্যানাঞ্চ কর্ম্মণাং কলাবাগমবিধিনা কর্তব্যম্বদর্শনাৎ বৈদিকামুঠানশু নিন্দাশ্রবণাচ্চ কথং তেষাং বৈদিকামুঠানেন
কর্তব্যমন্ । নচ তেষাং বৈদিকামুঠানেনাকর্তব্যতৈবেতি
কথং ভবতাং পূর্ববপক্ষাবসর ইতি বাচ্যম্ অনাদিসিদ্ধানাং
পরমাপ্তমহাজনাঙ্গীকৃতবৈদিকামুঠানকৃত-সংস্কারাদীনামসিদ্ধানা
পত্তেঃ । ন চেক্টাপত্তিঃ সংস্কারাসিদ্ধ্যা সর্বেষাং ব্রাহ্মণ্যাভাবে ব্রাহ্মণমাত্রকর্তব্যানাং ভবহুক্ততান্ত্রিককর্ম্মণাং বৈকল্যাপত্তেঃ ।

নচ বৈদিক্বিধিকৃত্সংস্কারাদিকানাং ন তান্ত্রিক্কশ্রফলং কিন্তু তান্ত্রিকবিধিক্তসংস্কারাদিকানামেব তদিতি বাচ্যং বৈদিকামুষ্ঠানকুতসংস্কারাণামপি বিরূপাক্ষব্রন্ধানন্দাদীনাং তান্ত্ৰিককৰ্মণা সিদ্ধিদৰ্শনাৎ উচ্যতে কাম্যকৰ্মপ্ৰতিপাদকানি তন্ত্রোক্তবচনানি বৈদিকানুষ্ঠানতঃ প্রাশস্ত্যপরাণি যানি তু বৈদিকানুষ্ঠানেন সামান্ততঃ কর্ম্মণাং নিষেধপ্রতিপাদকানি তান্যাগমস্থ প্রশংসাপরাণি। অতএব জৈমিনিঃ—ন নিন্দা নিন্দ্যং নিন্দিত্বং প্রবর্ত্ততে তর্হি ইতরৎ স্তোতুম্। গিরা গিরেতি ক্রয়াৎ যদা গিরা গিরেতি ক্রয়াত্রদা উদ্গাতা ঋত্বিক্ আত্মানমেব নিগিরেৎ তন্মাদেবং কুত্বা গেয়মিতি তিথিবিবেকে শূলপাণিমহামহোপাধ্যায়ঃ। দীক্ষাবিষয়ে যানি তু সিদ্ধিপ্রতিপাদকানি তানি কলো বৈদিকার্ম্প্রানেন িসিদ্ধ্যপ্রযোজকানি। বৈদিকসদ্ব্যোপাসনাদীনি তু নিভ্যত্বেন প্রত্যবায়পরীহারার্থং চতুর্গুগেম্বের কর্ত্তব্যানীতি সর্বাং স্থাসমঞ্জাম ।

যতু মলমাসতত্ত্বয়তকূর্মপুরাণে হিমা**লয়ং প্রভি** দেবী

ৰাক্যম—যানি শান্তাণি দৃশ্যন্তে লোকেংশ্মিন্ বিবিধানি চ। ঞ্তিস্মৃতিবিরুদ্ধানি নিষ্ঠা ভেষাং হি তামগী। করালং ভৈরবং বাপি জামলং বা মমাঞ্রিতম্। এবংবিধানি চাম্যানি মোহনার্থানি তানি তু। ময়া স্ফানি চান্থানি মোহায়ৈষাং ভবার্ণবে ইতি তমায়িকাসিদ্যাদিপ্রতিপাদকপরম্ অশুথা আগমস্থ ভবান্ কর্ত্তা বেদকর্ত্তা হরিঃ স্বয়ম্। আগমন্চৈব (वनक (वी वाङ्क सम श्रूकत्नी। बाज्यातमय श्रुकः मर्वदः ত্রৈলোক্যং সচরাচরম্। যশ্চাগমং বা বেদং বা বিলঞ্জ্যা-ন্মতরং ভজেৎ। তস্থাহং বিকলাঙ্গাভ্যাং সমুদ্ধর্ত্বুমশক্তিক ইতি রহদ্ধর্মপুরাণীয়বচনস্থ, শ্রুতিস্মৃতিপুরাণোপপুরাণেষা-গমেষু চ। সংহিতাদিষু শাস্ত্রেষু যঃ সারঃ সাত্বিকো মত ইতি পাদ্মোত্তরথগুীয়বচনস্থা, তেনৈব বহ্নে মন্ত্রেণ জুহুয়ামান্ত্র-ভাবিতম। আগমোক্তেন বিধিনা গুরুবাক্যনিযন্ত্রিতম্। নৈবেতাং শস্তবে পুষ্পাং ফলং তামূলমুক্তমম্। ধৃপাং নীরাজনং त्रगाः ছত্তः দর্পণমুত্তমম্॥ সমর্পয়িত্বা বিধিবশাল্তৈকৈদিক-তান্ত্রিকৈরিতি ক্ষন্দপুরাণীয়ত্রক্ষোত্তরখণ্ডসপ্তমাধ্যায়বচনস্ত, এতজ্জাত্বা তু বিছন্তিঃ পূজনীয়ে। জনাৰ্দনঃ। বেদোক্ত-বিধিনা ভদ্রে আগমোক্তেন বা স্থধীরিতি বরাহপুরাণীয়-বচনস্ত, য আশু হৃদয়গ্রন্থিং জিঘাংস্থঃ পরমাত্মনঃ। বিধি-নোপচরেদেবং তন্ত্রোক্তেন চ কেবলমিতি শ্রীভাগবতবচনস্থ. বৈদিকী ভান্ত্রিকী মিশ্র ইতি মে ত্রিবিধো মথঃ। ত্রয়াণা-মীম্সিতেনৈৰ বিধিনা মাং সমর্চ্চয়েদিতি তত্তৈকাদশক্ষমীয়-বচনস্ত চ বিদ্রোধাপত্তেঃ।

্ৰাগ্যশব্দাৰ্থমাহ আগমট্ৰতনিৰ্ণৱে—'আ'গতং 'শিব-

বক্তেভ্যো 'গ'তঞ্চ গিরিজামুখে। 'ম'তং শ্রীবাস্থদেবস্থ তন্মা-দাগম উচ্যতে ॥ বাস্থদেবসন্মতমিত্যনেন বেদাবিরুদ্ধস্থমে-বায়াতম্। অতএব শ্রুতিবিরুদ্ধা হি নিষ্ঠা তেহধাং হি তামসীত্যপি সঙ্গছতে।

> ইতি সতত্মহামহীশচক্রচ্ডামণিচর্চিতচরণনলিন শ্রীমদেগাপী-মোহনপাদপদ্মামন্দমকরন্দসন্দোহানন্দিত্মনোমধুকর শ্রীহরকুমারদেবশর্ম-স্থারচিস্তামণিমন্ত্রচিস্তোদক্ষ-হরতত্বদীধিতৌ প্রথমকলাপ্রকাশ:।

অথ কিল সকল ক্রিয়ায়া দীক্ষামূলকত্বেন সৈব যগগি প্রামাণিক-নিবন্ধকার-রাঘবভট্ট — তন্ত্রসারকারাদিভির্নিরূপিতা তথাপি তত্তানবহেলয়া কিঞ্চিদস্মত্নক্তিরপ্যবধীয়তাম্। তত্তাদো তস্থাঃ শব্দার্থমাহ রাঘবভট্টঃ—দদাতি যস্মাদিহ দিব্যভাবং মায়াময়ে কর্ম্ম চ সংক্ষিণোতি। ফলং চতুর্ব্বর্গভবঞ্চ যম্মাত্তস্মাভু দীক্ষেত্যভিধানমস্থা ইতি।

দীক্ষায়া নিত্যত্বঞ্চ সারচিন্তামণিধ্বত-দত্তাত্তেয়-জামলে—
অনীশ্বরত্থ মর্ত্যত্ত নান্তি ত্রাতা যথা ভুবি। তথা দীক্ষাবিহীনত্ত নেহ স্বামী পরত্র চেতি ॥ তথা গৌতমীয়ে—দ্বিজ্ঞানামসুপেতানাং স্বকর্মাধ্যয়নাদিষু। যথাধিকারো নান্তীহ
ত্তাচ্চোপনয়নাদমু ॥ তথা চাদীক্ষিতানাঞ্চ মন্ত্রদেবার্চনাদিষু। নাধিকারোহন্ত্যতঃ কুর্যাদাত্মানং শিবসন্ধৃতমিতি ॥
কুলার্ণবে পঞ্চমথণ্ডে চতুর্দশোলাসেহপি—নাদীক্ষিতত্ত কার্যাং
ত্তাৎ তপোভিনিয়মন্ত্রতৈঃ। ন তীর্ষক্ষেত্রগমনৈর্ন চ শারীয়-

যন্ত্রণৈ:। তশ্মাৎ সর্ববিপ্রয়ত্ত্বন গুরুণা দীক্ষিতো ভবে-দিতি।

কাম্যত্বঞ্চ রুদ্রজামণে — দীক্ষিতো ব্রাহ্মণো যাতি ব্রহ্মনাক্ষনাময়ম্। ঐলুলোকং ক্ষত্রিয়োহপি প্রাজ্ঞাপত্যং তথা বিশঃ। যাতি গন্ধর্বনগরং শূদ্রো দীক্ষাপ্রভাবত ইতি॥ তথা নির্বাণতত্ত্বে দ্বিতীয়পটলে—ব্রাহ্মণস্থ মহামোক্ষং সাযুজ্যং ক্ষত্রিয়প্ত চ। সারূপ্যঞ্জোরুজাতস্থ শূদ্রস্থ সহলোকতানিতি॥ অত্র বচনদ্বয়ে যৎ ফলবৈষম্যশ্রেবণং তৎ সাধনতারতম্যোনবিরুদ্ধন্। তথা নবরত্বেশ্বরে—সর্বাসামপি দীক্ষাণাং মৃক্তিঃ ফলমথগুতুম্। অবিরোধান্তবত্যেয়া প্রাসক্ষিক্তস্ত ভুক্তয় ইতি॥

মন্ত্রদানে ফলমাহ জামলে—যো দদাতি দ্বিজাতিভ্যো মহামন্ত্রং মহেশ্বরি। স মুক্তঃ সর্বাপাপেভ্যো মোদতে ব্রহ্ম-সন্নিধাবিতি॥

দীক্ষা তু সূর্য্যাণেশাচ্যুতশক্তিরুদ্ররপ-পঞ্চদেবতামন্ত্রৈরেব কার্যা। তথাচ রুদ্রজামলে—শ্রীপার্বব্যুবাচ। কতি মন্ত্রৈ-ভবদৌক্ষা হাগমোক্তঃ শৃণু প্রিয়ে। বাং কৃত্বা কলিকালে চ স্বাভীষ্টং লভেমরঃ॥ সূর্ব্যুকদন্তাচ্যুতশক্তিরুদ্রা কিন্তীশহেরম্ব-চণ্ডীশ্বভাতুক্ষাঃ। রুদ্রকদন্তাচ্যুতশক্তিসূর্য্যা কভীশহেরম্ব-পতসক্ষাঃ। শ্রীনাথবিম্নেশভগান্বিকেশাঃ প্রদক্ষিণং তত্র বিদিক্ষ্ কার্য্যা ইতি॥ অত্র পুনঃ পঞ্চদেবতোপাদানং পঞ্চানাং প্রথমতোহভিধানেন সর্বেষামেব প্রাধান্ত-ভ্রাপনার্থম্।

গায়ত্তীদীকায়াস্তৃপনয়নসংস্কারাঙ্গকত্বেন দীকাসুসারতঃ

নিরুক্তপঞ্চদেবতাম্বেকতমস্যোপাদনমেব কর্ত্তব্যম্। তহক্ত-মাগমদন্দর্ভে—গায়ত্রী প্রথমা দীক্ষা আত্মজানপ্রদীপিকা। অতো হি প্রথমা পূজা গায়ত্র্যাঃ পরিকীর্ত্তিতা। দীক্ষামুদারেণ ততো হুন্মঞ্চ দমুপাদতে। ব্রাহ্মণে ক্ষত্রিয়ে বৈশ্যে চৈতত্তব্য প্রশাস্তত ইতি।

অথ মন্ত্রদানাধিকারিণঃ। তত্ত্ব চতুর্ণাং বর্ণানাং মন্ত্রদানে ব্রাহ্মণ এবাধিকারী। ততুক্তং বিশ্বসারতন্ত্রে দ্বিতীয়পটলে— জিতেন্দ্রিঃ সত্যবাদী ব্রাহ্মণঃ শান্তমানসঃ। পিভুনাতৃহিতে যুক্তঃ দর্বকর্মপরায়ণঃ। আশ্রমী দেশস্থায়ী চ গুরুরেব বিধী-য়ত ইতি॥ তথা বৃহদ্যোত্মীয়ে—হরিভক্তিযুতোহকুর: সদাচারো জিতেন্দ্রিয়ঃ। বিপ্র এব মুনিশ্রেষ্ঠ বর্ণানাং গুরু-ক্লচ্যতে ইতি ॥ শাক্তানন্দতরঙ্গিণীগ্রততন্ত্রেহপি—সদাচারে। ছিজো যস্ত বর্ণানাং গুরুরেব সং। ছিজো বিপ্রঃ, বর্ণানামিতি বহুত্বনির্দেশাৎ। অন্নদাকল্পে প্রথমপট্লে—মনুষ্যেষু চ সর্বেষু ব্রান্মণো গুরুরুচ্যতে। তত্রাপি শাস্ত্রবেক্তা স্থাৎ শ্রেষ্ঠ-স্তস্মাত্ত্ব তত্ত্ববিৎ। উদ্ধর্তু কৈব সংহর্তুং সমর্থো ব্রাহ্মণোত্তম-ইতি ॥ বীজং তত্র শিরঃস্থসহস্রদলকমলকর্ণিকান্তর্গতগুরো-রংশ এব ব্রাহ্মণঃ সর্বাদেবত।ময়শ্চ। ততুক্তং নির্বাণতন্ত্রে তৃতীয়পটলে এলিব্যবাচ—তুরীয়ং ধাম যো দেবঃ পর-মান্সা স এব হি। শিরঃপদ্মে স্থিতে বাহ্যে নমস্কারঃ কথং ভবেৎ । শ্রীশিব উবাচ। শিরঃপদ্মে মহাদেব স্তবৈধব পর্মো গুরু:। তৎসমো নান্তি দেবেশি পুজ্যো হি ভুবনত্তয়ে। তজ্ঞপং চিন্তব্যেশ্বস্ত্রী বাহে গুরুচতুষ্টয়ম্। তদংশভাবসম্ভূতা যে চান্তে গুরুবো জনাঃ। তথৈব ব্রাহ্মণাঃ সর্বের চাংশাবতার-

সংশ্বিতাঃ॥ যদৈব বাহে চৈতাংশ্চ প্রত্যক্ষে ভাবয়েন্তদা। সহস্রারে মহাপদ্মে দদা চিত্তং বিবর্জ্জয়েৎ। প্রত্যক্ষদর্শনে দেবি বাহে তদ্ত্রকা চিন্তয়েৎ। নমস্বারাদিকং দেবি কুর্য্যাৎ সাধকসত্তমঃ n এভ্যো দর্শনমাত্তেণ নমস্কারাদিকঞ্চরেৎ। ন কুর্য্যাৎ যদি মোহেন স ভবেদাপদাশ্রয়ঃ॥ ত্রাহ্মণাদীন্ সমালোক্য ব্রহ্মচারিযতিত্রয়ম্। দৃষ্টিমাত্রেণ গিরিজে প্রণমেৎ দণ্ডবদ্ধবি। মহাপাতকযুক্তোহপি মুক্তো ভবতি তৎক্ষণাৎ॥ ন কুৰ্য্যাদ্যদি মোহেন মহাপাতকবান্ ভবেদিতি ॥ যোগিনী-তন্ত্রে ত্রয়োদশপটলেহপি—সর্ব্বদেবময়ো বিপ্রো ব্রহ্মবিষ্ণু-শিবাত্মকঃ। ব্রহ্মতেজঃসমুদ্রতঃ সর্ব্বদেবময়ো দ্বিজঃ॥ ব্রাহ্মণৈ-র্জাতে যত্র তত্র ভুঙ্কে হরিঃ স্বয়ম্। তত্র ব্রহ্মা চ রুদ্রুশ্চ খেচরা ঋষয়ো মূনিঃ। পিতরো দেবতাঃ দর্কা ভুঞ্জতে নাত্র সংশয়ঃ। সর্বাদেবময়োবিপ্রস্তম্মাত্রং নাবমানয়েও॥ তাত্রেব সপ্তদশপটলে চ--যন্তকাণ্যশতং দেবি ব্রাহ্মণঃ সমুপাচরেৎ। আত্মনো হিতকামেন তথাপি তং নচোৎস্থজেৎ। নাবমানশ্চ কর্ত্তব্যঃ সর্ব্ধদা স্থরপুঙ্গবে। ব্রাহ্মণঃ সর্ব্বদেবাত্মা মোক্ষ-তেজঃসমো হি য ইতি ॥ এবং মহাভারতে—দেবাধীনং জগৎ-দৰ্কং মন্ত্ৰাধীনাশ্চ দেবতাঃ। তে মন্ত্ৰা ব্ৰাহ্মণাধীনা স্তম্মাৎ ব্ৰাহ্মণদেবতেতি ॥ তথা ভগবদ্বাক্যম—অবিত্যো বা সবিত্যো বা ব্রান্সণো মামকী তন্তুরিতি।

অত্রান্থলোম্যেন ক্ষজিয়বৈশ্যয়োরপি গুরুত্বম্। তথাচ
ভূবনেশ্বরীতন্ত্রে প্রথমপটলে—ব্রাহ্মণঃ দর্বকালজঃ কুর্যাৎ
দর্বেষকুগ্রহম্। তদভাবে দ্বিজপ্রেষ্ঠঃ শাস্তাত্মা ভগবন্ময়ঃ।
ক্ষজিবিট্শ্রজাতীনাং ক্ষজিয়োহকুগ্রহে ক্ষমঃ। ক্ষজিয়স্থাপি

চ গুরোরভাবাদীদৃশো যদি। বৈশ্যঃ স্থাত্তেন কার্য্যন্চ শৃদ্রে নিত্যমনুগ্রহ ইত্যাদিবচনান্যপি কলীতরপরাণি। শনকৈস্ত ক্রিয়ালোপাদিমাঃ ক্ষল্রাদিজাতয়ঃ। র্ষলত্বং গতা লোকে ব্রাহ্মণাদর্শনেন চেতি স্মার্ত্রধৃতবচনেন ক্ষল্রাদীনাং শৃদ্রতুল্যস্ব-প্রতিপাদনাং।

শূদ্রাণান্ত ন কদাচিন্মন্ত্রদানাধিকারিত্বম্। শূদ্রঃ শূদ্রমুখাৎ শ্রুত্বা বিভাং বা মন্ত্রমুত্তমম্। গৃহীত্বা নরকং ফাতি ছুঃখং প্রাপ্নোতি নিত্যশ ইতি শাক্তানন্দতরঙ্গি । তবচনাৎ। শূদ্রঃ শূদ্রমুখাৎ শ্রুত্বা বিভাগ বা মন্ত্রমুত্তমম্। কোটিবংশান্ সমাদাম রৌরবং প্রতিগচ্ছতি॥ অপিদাতৃগ্রহীত্রোকা ছয়োরপি সমং ফলম্। ব্রহ্মহত্যামবাপ্নোতি অক্ষরকাক্ষরং প্রতি ইতি বাস্থদেবরহস্তদিতীয়পটলবচনাৎ।। ন শূদ্রায় মতিং দ্ব্যাৎ নচ শূদ্রঃ কদাচন। উভয়োর্নরকং দেবি ত্রি-কোটিকুলসংযুতমিতি জ্ঞানানন্দতরঙ্গিণীধৃতবচনাৎ॥ শূদ্রঃ শূদ্রমুথাৎ শ্রুত্বা বিভাং বা মন্ত্রমুত্তমম্। যং যং নরকমাপ্নোতি তং তমাপোতি নিত্যশং॥ ন শূদ্রায় মকুং দভানতু শূদ্রং কদাচন। উভয়োর্নরকং দেবি ত্রিকোটিকুলসংযুত্র্। যদেশে বিন্ততে শৃদ্রঃ পাতকী মন্ত্রবিক্রয়ী। তদ্দেশং পতিতং মত্যে তস্ত রাজা চ পাতকী॥ স কথং চঞ্চলাপাঙ্গি জিহ্নায়াং প্রজপেমরঃ। তস্ত জিহ্বা বরারোহে মৃত্রশোণিতবিভূযুতা। তমুখং মৃত্রবিজ্রূপ-মন্নং বিষ্ঠাময়ং সদা। তজ্জলং শোণিতং দাক্ষাৎ চণ্ডালদমজাতিয়ু। আলোক্য তন্মুখং তীর্থ স্ত স্থানং ত্যজ্য গচ্হতি। তীর্থাঃ কোটিঃ পলায়ন্তে দৃষ্টৃ তন্মুখমণ্ডলম্। গঙ্গাজলং পরিত্যজ্য দ্রুতং স্বন্ধার্মাং।

মহাপাতকিনো যে যে ব্রহ্মহত্যাদিসংযুতা:। ত্রৈলোক্য-পাবনী গঙ্গা তান্ পুনাতি ন সংশয়ং। মন্ত্রবিক্রয়িণং শৃদ্রং দৃষ্ট্যা ব্রহ্মপুরং ব্রজেদিতি কামধেনুতন্ত্রীয়াফীদশপটলবচনাচ্চ।—
যতু সজাতীয়েন শৃদ্রেণ তাদৃশেন মহামতে। অনুগ্রহা-ভিষেকো চ কার্য্যো শৃদ্রস্থ সর্বাদেতি হরিভক্তিবিলাসগ্রত-নারদপঞ্চরাত্রবচনং তদনুগ্রহাভিষেক্যাত্রবিধায়কং, ন মন্ত্র-দানাধিকারিতাপ্রতিপাদকম্। যত্র যত্র ভূ ভগবদ্তক্তত্বেন শৃদ্রাণাং গুরুত্বমভিহিতং তদনুপেক্ষণীয়ত্বেন শৃদ্রনিষ্ঠভগব-দ্যক্রিশংসাপরমিতি নিক্রষ্টঃ।

দীক্ষা তু তত্তমন্ত্রবিশেষাণাং গুরুক্তোচ্চারণপ্রয়োজ্য-শিয্যোচ্চারণরূপা। ভেনৈকতরোচ্চারণমাত্রঞ্চ ন দীক্ষেতি ব্যব-স্থিতম্। তৎপ্রযোজ্যত্বঞ্চ অহং তেহমুকমন্ত্রং দদানীত্যা-কারকেচ্ছাপূর্ব্বক-গুরুচ্চারণান স্তরজায়মানত্বমৃ তেন তাদৃ-শেচ্ছাং বিনা গুরুণোচ্চারিতং মন্ত্রং দৈবাৎ শ্রুদ্যোচ্চারণে न দীক্ষাত্রম্। ন বা যজ্ঞাদৌ বৈদিকাদিমন্ত্রং পাঠয়িতুঃ পুরোহিত। সন্ত্রং শ্রুত। পঠতো যজমানশু দীক্ষাকর্মত্বম্। শিয্যোচ্চারণস্ত অয়ং মেংমুকমন্ত্রং দদান্বিত্যাকারকেচ্ছাপূর্ব্বক-ত্বেন বিশেষণীয়ম্। সদৈব স্থমুখং কুর্য্যাচ্ছিग্যং দৈবত-তুউয়ে দত্ত্বা দীক্ষান্ত লোভাগৈচর্দেবতাশাপমাপুয়াদিতি-বচনে, অনিচছয়া শ্রুতং মন্ত্রং ছদ্মনাপি চছলেন বা। পত্তে-২িক্ষতঞ গা**থা**বৎ তমুপেত্য স্বনর্থকুদিতি শৈবরত্ববচনে চানি-চ্ছুকশিয়ে মন্ত্ৰদানে দোষপ্ৰবণাৎ। তেন তাদৃশেচ্ছাপূৰ্ব্বক-গুরুচ্চারণানন্তরজায়মান-তাদৃশেচ্ছাসুতরশিয্যোচ্চারণস্থ नौकाष्ट्रम्।

তাদৃশেচ্ছাপূর্ব্বক-বৈদিকাদিমস্ত্রোচ্চারণপ্রযুক্ত্যে চ্চারণন্ত দীক্ষা ভবত্যেবেতি কেষাঞ্চিৎ প্রলপিতমপা-পাস্তম। অত্র শিশ্যস্থ তাদুশেচ্ছাসত্ত্বে দীক্ষা ভবত্যেবেতি মন্ত্ৰবিশেষাস্ত্ৰ শিশ্বাভিল্যিতত্বেন বোধ্যম ॥ শিখ্যানভিল্যিত-গুরুকুত-মন্ত্রোচ্চারণকুতজায়মানোচ্চা-ন দীক্ষাত্বম্। তথাচ তাদুশেচ্ছাপূৰ্বক-গুৰুক্ত-শিশাভিল্যিত-তন্মন্ত্রোচ্চরণোত্তর জায়মান–তঃদৃশেচ্ছ্ৰপূর্বক— শিখুকুত-তন্মস্ত্রোচ্চারণং দীক্ষেতি প্রয়বসিতম্। তেন শিখ্যা-ভিল্যিত-শুরুকুতৈ কমন্ত্রোচ্চারণানন্তর-জায়মান-শিশ্যকৃততাদৃ-শেচ্ছাপূর্ব্বকাত্তমন্ত্রোচ্চারণস্ত ন দীক্ষাত্বয়। ন চ তাদৃ-শেচ্ছানন্তরং গুরোর্ছেশ্বিষয়ে শিয়ে তন্মন্তে বা শিয়স্ত তাদুশেচ্ছানন্তরং দেষবিষয়ে গুরো তন্মন্তে বা তাদুশোচ্চার-ণোত্তরজায়মান-তাদুশোচ্চারণস্থ দীক্ষাস্বাপত্তিরিতি গুরোস্তাদুশেচ্ছানন্তরং দ্বেযবিষয়তাশূন্সয়োঃ শিষ্যতন্মন্ত্রয়োঃ শিখ্যস্থ চ তাদুশেচ্ছানস্তরং দ্বেষবিষয়তাশূখ্যয়োর্গুরুতন্মন্ত্র-যোশ্চ লক্ষণে নিবেশনীয়ত্বাং॥ সর্ব্বাণি বিশেষণানি বচন মূলকানীতি বোধ্যম ॥ মাতরং পিতরং নত্বা ত্যোরাজ্ঞানু-সারতঃ। ধর্মার্থকানমোক্ষার্থী সচ্ছিয়ো গুরুমা**প্র**য়েদিত্য-ন্ধদাকল্প-প্রথমপটলবচনম্ —পূর্কেছ্যঃ প্রাতরুত্থায় কৃতনিত্য-স্থবীঃ। নিমন্ত্রয়েকারুং শিষ্যো মন্ত্রলাভপরায়ণঃ। जात्र तिम्हन्मरेनर्सरेवाः करेनतरेगः स्थथरिमः। গুরবে সম্যাগদণ্ডপাতং চরেৎ ভুবি। ততঃ শিষ্যং সমাদা^র পুচ্ছতি তৎক্ষণাৎ। নিবেদয়েত্তদা শিয়াঃ সদ্গ্রে বিনয়ারিতঃ। সংসারগর্তে পতিতোহ্হমুগ্রে মোহারিতস্তা^{মস-} পাশরুদ্ধঃ। বিতাক্ষিদানৈঃ স্থতরাং মহাত্মন্ প্রমোচয় ত্বং বরমন্ত্রশক্তিঃ॥ স্বীকারশ্চ প্রদাতব্যঃ শিয়ায় গুরুণা সদেতি তারাপ্রদীপপ্রথমপটলবচন-প্রতিপাত্যদীক্ষাঙ্গানি ন লক্ষণঘটকানি এতেষাং বৈকল্যেহপি দীক্ষাসিদ্ধিসম্ভবাৎ।

নকু, ধনেচ্ছাভয়লোভাতিগ্রযোগ্যং যদি দেবতাশাপমাপ্নোতি ক্লতঞ্চ বিকৃতং ভবেদিতি কুলার্ণবচতু-ৰ্দ্দশোল্লাসবচনে—পরশিয়ে ছুফবংশে ধূর্ত্তে পণ্ডিতমানিনি। স্ত্রীদ্বিটে সময়ভ্রটে ব্যঙ্গে দীক্ষা তু নিষ্ফলেতি মেরুতন্ত্রপ্রথম-প্রকাশবচনে—অন্যায়েন চ যো দ্বাদ্গুহ্লাত্যন্তায়তশ্চ যঃ। দদতো গৃহুতো দেবি দেবীশাপঃ প্রজায়তে॥ অকৃত্বা বিধিব-দীক্ষামযক্তা গুরুপাতুকাম। ইহ দারিদ্রামাপ্রোতি দেব্যাঃ শাপঃ প্রজায়তইতি তন্ত্ররত্নপ্রতার্ণববচনে চ দীক্ষাপদশ্রবণাৎ গুরুশিশুয়োরশুতরস্ম লোভাদিসত্ত্বে অনিচ্ছয়া বা দীক্ষৈব মা সিধ্যতু ॥ ত্রিবিধা চ ভবেদ্দীক্ষা সর্বতন্ত্রসমন্বিতা। মহা-দীক্ষা তথা দীক্ষা উপদেশস্ততঃপরম্। যুগে যুগে চ বোদ্ধব্যা উপদেশঃ কলো প্রিয়ে ইতি বিশ্বসারতন্ত্রদ্বিতীয়পটলবচনাৎ কলাবুপদেশমাত্রবিধানেন চন্দ্রসূর্য্যগ্রহে তীর্থে সিদ্ধক্ষেত্রে শিবালয়ে। মন্ত্রমাত্রপ্রকথনমুপদেশঃ স উচ্যত ইতি ভন্ত্রসারপ্রত-বিশ্বসারতস্ত্রবচনাৎ যেন কেনাপি যস্ত কস্তুচিল্লোভাদিভি-র্শান্ত্রমাত্রকথনেনোপদেশঃ সিধ্যত্যেবেতি চেৎ মৈবম্ ভুক্তি-মুক্তিপ্রসিদ্ধ্যর্থম্ পরীক্ষ্য বিধিবদ্গুরু:। পশ্চাতুপদিশেমন্ত্র-মশুণা নিষ্ফলং ভবেৎ॥ অন্সায়েন চ যো দন্তাদ্গুহ্লাত্যন্তায়-তশ্চ যঃ। দদতোগৃহুতোবাপি কুলশাপো ভবিয়তি॥ शुक्र-শিষ্যাবৃত্তে মোহাদপরীক্ষ্য পরস্পরম্। উপদেশং দদদ্গৃত্বন্ প্রাপ্রয়াতাং পিশাচতাম্॥ **অশাস্ত্রীয়োপদেশন্ত যোগ্**রাতি দদাতিচ। ভুঞ্জীয়াতাবুভো ঘোরামরকানেকবিংশতিমিতিমের-তন্ত্ৰপ্ৰথমপ্ৰকাশবচনেন পূৰ্ব্বোক্তলোভাদিকতমন্ত্ৰমাত্ৰোপদে-শেহপি দোষশ্রবণাৎ অশাস্ত্রীয়োপদেশঞ্চ যো গৃহ্লাতি দদা-তি চ। স যাতি কুলকোটীভির্নরকানেকবিংশতিমিতি কুলা-র্ণবৰচনেনাশাস্ত্রীয়োপদেশস্থ নরকাবাপ্তিরূপাতীবদোষশ্রবণাচ ॥ নচ নিন্দার্থবাদস্থ নিষেধজ্ঞাপকত্বেন নিষিদ্ধলোভাদি-প্রযোজ্যাশান্ত্রীয়োপদেশস্থাচরণেন গুরোঃ শিশস্য বা-বি-হিত্তানসুষ্ঠানারিন্দিত্ত চ সেবনাং। অনিগ্রহাচেন্দ্রিয়াণাং নরঃ পতনমৃচ্ছতীতি বচনাৎ তুরদৃষ্টমেব জায়তাং নভূপদেশা দিদ্ধিঃ। নহি যো ব্রাহ্মণানবগুরেৎ তং শতেন যাতয়েৎ যো-হন্সাত্তং সহস্রেণ যোলোহিতমকরোৎ যাবতঃ পাংশূনভ্যনক্তি তাৰতঃ পরিবৎসরান স্বর্গাৎ প্রচ্যবেত তম্মাৎ ব্রাহ্মণান্ নাক গুরেৎ ন হন্তাৎ ন লোহিতং কুর্য্যাদিত্যাদি নিষেধমনাদৃত্য ব্রাহ্মণাবগোরণাদে কুতে নিষেধবলাতদিদিদ্ধং স্থাৎ কিন্তু ব্রাহ্মণাবগোরণাদিজন্মপাপমেব ভবেৎ। নহি বচনশতেনাপি বস্তুনোহন্যথাকর্ত্ত্রং শক্যতইতি বাচ্যম্ উপদেশস্ত শাস্ত্রপ্রাপ্ত পূর্ব্বোক্তমেরুতন্ত্রবচনপ্রতিপাত্য-নিন্দার্থবাদপ্রযোজ্য-নিষেধে তত্নপজীবিনঃ পর্যুদাসতাশ্রয়ণাৎ। অতএব পূর্বে। ক্তমেরুতন্ত্রবচনে পশ্চাত্নপদিশেন্মন্ত্রমন্তথা নিক্ষলং ভবেদিত্য নেনোপদেশজন্মফলাভাবপ্রদর্শনং স্থসঙ্গতমের ॥ কিঞ্চ অসং স্কুতোপদেশঞ্চ যঃ করোতি বিমৃঢ়ধীঃ। বিনশ্যন্তি চ তন্মন্ত্রাঃ সৈকতে শালিবীজবদিতি পূর্ব্বোদাহৃতমেরুত্রস্তানস্তরবচনে বৈকতে শালিবীজবদিতি দৃষ্টান্তেন তত্নপদেশস্ত নিক্ষণ-

ত্বমেব প্রকটীকৃতম্। তম্মাল্লোভাগ্যন্বিতেতরস্থ গুরোরুপদেশে তাদৃশস্থ শিশ্বস্থ মন্ত্রগ্রহণে চাধিকারিতেতি নিকর্ষঃ। অক্সথা পথি গছতো যস্ত কস্তাপি জনস্ত যেন কেনাপ্যুপদেশ-সিদ্ধো মহাননৰ্থঃ স্থাৎ। অপিচ পৈতৃকগুরুকুলজাতেযু লাম্পট্যাদিমহাদোষাশ্বিতত্বেন শাত্রবাদিনা বা সর্বদাশ্রদ্ধেন যেন কেনচিদ্বলভশ্ছলতো বা মন্ত্রমাত্রপ্রকথনেনোপদেশ-সিন্ধে শিষ্যস্থোপদেশজ্যুচতুর্বর্গাবাপ্তিরূপফলসিদ্ধিস্ত দূর-এবাস্তাং প্রত্যুত গুরুদ্দেশ্যকাশ্রদ্ধয়াতীবনরকাবাপ্তেঃ কারণং স্থাৎ । কিঞ্চ শিয়ানভিল্যতিগুরুকর্তৃকমন্ত্রমাত্রপ্রকথনে তন্মন্ত্রে শিয়াস্বীকৃতে চ শিয়স্ত যত্ন্যুপদেশজন্যফলসিদ্ধিঃ স্থান্তদা পতিতেন কমপি বেদজ্ঞত্রাহ্মণমুদ্দিশ্য তদকুমতিমন্ত-রেণৈব তন্নামগোত্রাত্ন্যলিখ্য মহাদানে ক্বতে তেন তু তস্মিন্ধ-স্বীক্ততে২পি পতিত্স্বামিকমহাদানপ্রতিগ্রহজন্মহাদোষ-প্রসক্ত্যা সোহপি পতিতঃ স্থাৎ॥ মন্ত্রত্যাগান্তবেন্যুত্যুঃ গুরু-ত্যাগাদ্দরিদ্রতা। গুরুমন্ত্রপরিত্যাগাদ্রেরিবং নরকং ব্রজে-দিতি রুদ্রজামলদ্বিতীয়পটলবচনং পূর্ব্বোক্তশাস্ত্রীয়োপদেশাৎ শিষ্যেণ মন্ত্রগ্রহণে ক্বতে পুনস্তৎপরিত্যাগে দোষপ্রতিপাদ-কম্। অশান্ত্রীয়োপদেশে তু শিয়্যস্ত স্বীকারাভাবে তত্ত্যাগা-প্রদক্ত্যা কুতো দোষপ্রদঙ্গইত্যান্তাং বিস্তরঃ॥

নকু গুরুক্তমন্ত্রোচ্চারণানন্তরং শিশুক্তোচ্চারণে প্রমাণবিরহাৎ গুরুচ্চারণেনৈব দীক্ষা সিধ্যতু গুরুণা শিশ্বকর্ণে মন্ত্রকথনমাত্রস্থ্য প্রমাণসিদ্ধত্বাৎ। তথাচ গৌতমীয়ে—দক্ষকর্ণে বদেশ্বন্ত্রং ত্রিবারং পূর্ণমানসইতি। তথা—মন্ত্রমাত্রপ্রকথনমুপদেশঃ স উচ্যতইতি। মৈবং গায়ত্র্যুপদেশে মাণবকো-

বৈধত্বাৎ মহাজনপরিগৃহীতব্যবহারসিদ্ধভাচ । চ্চারণস্থ একত্র নিণীতঃ শাস্ত্রার্থো বাধকমন্তরেণাম্যত্রাপি তথেকি স্থায়েনাত্রাপি তথা কল্পনাৎ।। নমু কিং গুরোঃ সম্যঙ্মন্ত্র-স্ফোচ্চারণানন্তরং শিয়েণোচ্চারণং কর্ত্তব্যম্ অথবা প্রত্যেক্ বর্ণোচ্চারণানন্তরং প্রত্যেক বর্ণোচ্চারণমিতি সাবিত্রী প্রমাণমু। ন খলু অসমাপ্তমপ্তমবর্ষস্থ সাবিত্র্যাঃ সম্যগুচ্চারণসামর্থ্যং বর্ত্ততে পরস্তু একদ্বিত্রিচতৃঃপঞ্চষ্ডাদি বর্ণানামুচ্চারণানন্তরমুচ্চারণেহপ্যুপদেশঃ সিধ্যভি সম্যগুচ্চা-রণানন্তরং সম্প্রক্ষারণে তু স্থতরাম্॥ এবঞ্চ তত্তমন্ত্রাণ ঘটকা যাবস্তো বর্ণাস্তেষাং তাদুশেচ্ছাপূর্ব্বকগুরুকুতৈকৈকে৷ চ্চারণোত্তরমেকৈকাহ্যুচ্চারণে যথা তথা সকলোচ্চারণোত্তর সকলোচ্চারণে হপ্যক্ষতং সমুদায়োচ্চারণেহপ্যেকৈকোচা রণস্থ সত্ত্বাৎ ন চ ব্যুৎক্রমেণ ব্যবধানেন সংযুক্তাক্ষরপার্থক্যেন বোচ্চারণেহপি সিদ্ধিঃ স্থাদিতি বাচ্যম তত্তদামুপুর্ব্যা উচিত্যেন চোচ্চারণস্থ নিবেশনীয়ত্বাদিতি। অস্ত বা তভ দলক্ষ্যব্যারভ্রমুচ্চারণনিষ্ঠবৈজাত্যমেব লক্ষণঘটকং তথা বিজাতীয়োচ্চারণত্বমেব দীক্ষাত্বমিতি তু পরমার্থঃ।

অত্তেদমবধেরং সম্যঙ্মন্ত্রস্থ প্রথমতো যথাবিহিত্তমেকোচারণে কৃতে পুনরন্থকর্ণে তন্মন্ত্রং ত্রিঃ কথয়িত্বা পশ্চাদ্গুরুণা
শিষ্য একৈকং মন্ত্রবর্ণং বিশিক্তং বা মন্ত্রং পাঠয়িতব্যঃ তাবতৈব
সর্বসামপ্রস্থাদিতি রীতিরেব সাধীয়সীতি মন্থামহে ॥ অতএব
দক্ষকর্ণে ত্রিশো বিভামেকোচ্চারেণ চোচ্চরেদিতি বচন
মুপয়ুজ্যতে। অতএব চানভিজ্ঞানাং দ্রীবালশ্দ্রাণামনেকাক্ষর
ঘটিতমন্ত্রোপদেশঃ সাধুপয়ুজ্যতে।

অথ গৃহ্লীয়াশান্ত্রমুত্তমনিত্যাদিবচনাশান্ত্রগ্রহণমেব দীক্ষেতি
কথমুচ্চারণং দীক্ষোচ্যতে ইতি চেত্নচ্যতে। গ্রহণমত্র উপাস্তজ্বেন স্বীকারঃ স ছভিব্যঞ্জকে উচ্চারণে কতে সিধ্যতি যথা
ভার্য্যাত্বসম্পাদকস্বীকারাত্মকো বিবাহঃ সপ্তপদীগমনাদো।
নচ চন্দ্রসূর্যগ্রহে তীর্থে সিদ্ধক্ষেত্রে শিবালয়ে। মন্ত্রমাত্রপ্রকথনমুপদেশঃ স উচ্যতইতি বিশ্বসারতন্ত্রীয়বচনাশান্ত্রং
কথমতো গুরোরুপদেশকর্ত্বাপত্তিরিতি বাচ্যম্ তদ্বচনে
শিশ্যস্তেত্যধ্যাহৃত্য তেনৈব প্রকথনস্ঠান্বয়সমর্থনাৎ। তৎ
নাকথনঞ্চ গুরুকথনানস্তরমেবেতি মন্তব্যম্।

নকু মন্ত্রস্থ শব্দস্বরূপস্থ দাভৃত্বং গ্রহীতৃত্বঞ্চ কথং সম্পত্ততে ইতি চেৎ শৃণু মন্ত্রস্থ দানং হি মছুচ্চারণানস্তরমনেনাচ্চ-রতোহয়ং মন্ত্র এতস্থেক্টং সাধয়ত্বিতীচ্ছাবিশেষ এব তদ্বত্তয়া চ গুরোর্দাভৃত্বম্ । গ্রহণস্ত উপাস্থত্বেন স্বীকারঃ তদ্বত্তয়া চ গ্রহীতৃত্বং শিয়াস্য । যথা পুণ্যদঃ পুণ্যমাপ্রোতীত্যাদৌ মদজ্বিতমিদং পুণ্যং মম স্বর্গমজনয়িত্বা অস্য স্বর্গং জনয়ত্বিতীচ্ছাবিত্রমেব পুণ্যদাভৃত্বম্, অস্য পুণ্যং মম স্বর্গং জনয়ত্বিতীচ্ছাবিত্রমেব পুণ্যগ্রাহিত্বমিত্যাস্তাং বিস্তরঃ ।

ইতি সততমহামহীশচক্রচূড়ামণিচর্চিতচরণনলিন প্রীমদ্গোপী-মোহনপাদপদ্মামন্দমকরন্দসন্দোহানন্দিতমনোমধুকর-শ্রীহরকুমারদেবশর্ম-স্বীয়চিস্তামণিমস্ক্রচিস্তোদর্ক-হরতস্থাধিতৌ বিতীয়কলাপ্রকাশ:। গুরুশিয়লক্ষণস্ত তন্ত্রসারাদাবনুসন্ধেয়ন্। তয়োর্নাম্নের্বোগর্থমাহ কুলার্গবে সপ্তদশোল্লাসে—"গু"শব্দস্থক কারঃ স্যাৎ কুশব্দস্তনিরোধকঃ। অন্ধকারনিরোধকাৎ গুরুদ্ধিতাভিধীয়তে ইতি। তথা গুন্থাগমাত্মতন্ত্রানুসন্ধানাদ্বোধনাদিপি। রুদ্রাদিদেবরূপত্বাদ্গুরুদ্বিত্যভিধীয়ত ইতি। তত্রৈব—শরীরমর্থ প্রাণাংশ্চ স্বগুরুভ্যে নিবেগ্য যঃ। গুরুভ্যঃ শিয়তাযোগংশিয় ইত্যভিধীয়তইতি।

তত্র তু মন্ত্রিপাপঞ্চ রাজানং পতিং জায়ারতং তথা। তথা
শিয়াকৃতং পাপং প্রায়ো গুরুমপি স্পৃশেদিতি নিন্দিতশিষ্যপরিগ্রহে দোষশ্রবণাৎ অসচ্ছিয়াং ন পরিগৃহ্লীয়াৎ। প্রায়ইতি
গুরুণা শিয়াঃ সম্যগ্বোধিতোহপি তদ্বাক্যমনাদৃত্য পাপঞ্চে
দাচরতি তদা তৎ পাপং গুরুং ন ব্যাপ্নোতীত্যর্থঃ। বর্ণা
শ্রমাণাং সর্বেষামাচারঃ সদ্গতিপ্রদাঃ। গুরুব্রিবারমাচারঃ
বোধয়েৎ কুলনায়িকে। ন গৃহ্লাতি হি শিষ্যশ্চেত্তদা পাগং
গুরো নহীতি কুলার্থবিপঞ্চমখণ্ডীয়ৈকাদশোল্লাস্বচনাৎ।

অথ পিত্রাদিতোদীক্ষানিষেধঃ। যোগিনীতন্ত্র—পিড়ু র্মন্ত্রং ন গহ্নীয়াৎ তথা মাতামহস্ত চ। সোদরস্ত কনিষ্ঠ বৈরিপক্ষাশ্রৈতস্য চেতি॥ পিতুরিতি পিতুঃ সকাশামন্ত্র ন গৃহ্নীয়াদিত্যর্থঃ বক্ষ্যমাণ-রুদ্রজামলবচনৈকবাক্যত্বাং এবমন্ত্রত্ব মাতামহস্তেত্যাদিয়ু বোধ্যম্॥ ন চ পিতুরুপাশ্রুং মন্ত্রং ন গৃহ্নীয়াদিত্যর্থ ইতি বাচ্যম্ পিক্রপাদ্যমন্ত্রদ্যান্ত তোগ্রহণে দোষাভাবাং স্বপ্লান্তের ব্রিয়া দত্তে কুলমন্ত্রি স্থাধিতে। ন তত্র শুদ্ধিঃ কর্ত্ব্যা শুদ্ধমন্ত্রাপ্ত তে স্থান্ত্র হৈতি শারদাটীকারুদ্গোবিন্দভট্ট-প্রত-বচনপরিপ্রাপ্ত-কুলমন্ত্র

গ্রহণবিরোধাৎ। তুল্যযুক্ত্যা মাতামহদোদরকনিষ্ঠান্ত্যপাশ্ত-মন্ত্রপরিত্যাগে তেষামনন্তত্বেন দীক্ষায়া অপ্রদক্ত্যা মহাজনা-চারবিরোধাপত্তেশ্চ।। সোদরস্থ কনিষ্ঠস্থেতি ন বিশেষণ-বিশেয়ভাবেনাৰয়ঃ, ন পত্নীং দীক্ষয়েদ্ভৰ্তা ন পিতা দীক্ষ-য়েৎ স্থতাম। ন পুত্রঞ্চ, তথা ভাতা ভাতরং নচ দীক্ষয়ে-দিতি রুক্তজামলবচনেন সামান্যেন ভ্রাতৃতো দীক্ষানিষেধাৎ। কনিষ্ঠঞ্চ রিপুঞ্চাপি সোদরং বৈরিপক্ষগমিত্যুপক্রম্য-বর্জ্জয়িত্বা তু শিষ্যেন্দ্রো দীক্ষাবিধিমুপাচরেদিতি তক্তৈয়ব দ্বিতীয়-পঠলে—কনিষ্ঠস্থ পৃথগ্বচনশ্রবণাচ্চ। নতু দোদরস্থ কনিষ্ঠ-স্তেতি বচনেন কনিষ্ঠাদ্দীক্ষানিষেধাৎ পৈতৃকগুরোঃ কনি-ষ্ঠস্ম ত্যাগাপতিঃ নচাত্রেফীপতিঃ পৈত্র্যং কুলগুরুং যস্ত ত্যজেদ্বৈ পাপমোহিতঃ। স যাতি নরকং ঘোরং যাবচ্চন্দ্রা-তারকমিতি পিচ্ছিলাতন্দ্রপ্রথমপটলবচনাৎ। ন চ সোদ-রস্থ কনিষ্ঠস্থেতি বচনৈকবাক্যতয়া পিচ্ছলাতন্ত্রবচনং কনি-ষ্ঠাতিরিক্তগুরুকুলপরমিতি বাচ্যম্। তম্মাদগ্রোর্ব্বংশজাতং বয়োহল্লমপি পণ্ডিতম্। গুরুং কুর্য্যাত্ত্ব দীক্ষায়ামবিচার্য্য গুরোঃ কুলমিতি রুহদ্ধশ্বপ্রাণীয়বচনেন গুরোর্ব্বংশজাতবয়ঃ-নিষ্ঠস্থাপি দীক্ষাগ্রহণশ্রবণাৎ॥ উচ্যতে যোগিনীতন্ত্রে কনিষ্ঠনিষেধঃ নবীনগুৰ্ববেষ্বেণ বোদ্ধব্যঃ। কুলগুরো ভু নৈতাদৃষিচারঃ কর্ত্তব্য ইতি ধ্যেয়ম্॥

কশ্চিত্তু কনিষ্ঠস্থেতি শাস্ত্রীয়স্বজ্ঞানাপেক্ষয়া ন্যুনশাস্ত্রীয়-জ্ঞানকদ্যেত্যর্থমভিধায় প্রমাণত্বেন বক্ষ্যমাণমন্ত্র্বচনাস্থাহ তৎ, বালোহপি বিভ্রো বৃদ্ধস্থ পিতা ভবতি ধর্মত ইত্যস্থ পূর্বাদ্ধি তদ্যৈব কুল্লুকভট্টব্যাখ্যানঞ্চানালোচ্যেবাম্মাভি- রেব মনুরালোচিতো নাল্যৈরিত্যভিমানেনৈব বা. অভো বালবিষয়কত্বেন তদৰ্দ্ধং ন হৃদয়ঙ্গনং তথা সতি প্ৰথম গুরুকরণেহধিকবিদ্যাৎ বয়ঃকনিষ্ঠাদপি দীক্ষায়াস্তদ্পক্তশাস্ত্র-সিদ্ধত্বেন পুত্রাদিতঃ পুত্রাদীনাং দীক্ষাগ্রহণপ্রসক্তো অত্যন্ত ব্যবহারবিরোধাপত্তিত্বেন মহাননর্থঃ স্থাৎ। মনুবচনপূর্বার্দ্ধং তদ্যাখ্যানঞ্চানুপদমেব দর্শয়িয়তে॥ যানি তু—বালো২পি বিপ্রো র্দ্ধস্থ পিতা ভবতি ধর্মতঃ। অধ্যাপয়ামাস পিতৃন্ শিশুরাঙ্গিরদঃ কবিঃ। পুত্রকা ইতি হোবাচ জ্ঞানে পরি-গৃহ্ তান্। তে তমর্থমপুচ্ছন্ত দেবানাগতমন্তবঃ। দেবাকৈ তান্ সমেত্যোচুর্ন্যায়ং বঃ শিশুরুক্তবান্। অজ্ঞো ভবঙি বৈ বালঃ পিতা ভবতি মন্ত্রদঃ। অজ্ঞং হি বালমিত্যাহুঃ পিতেত্যেব চ মন্ত্রদম্। ন হায়নে র্ন পলিতে র্ন বিত্তৈর্নচ বন্ধুভিঃ। ঋষয়শ্চক্রিরে ধর্ম্মং যোহনূচানঃ স নো মহান্। বিপ্রাণাং জ্ঞানতো জ্যৈষ্ঠ্যং ক্ষল্রিয়াণাঞ্চ বীর্য্যতঃ। বৈশ্যানাং ধান্যধনতঃ শূদ্রাণামেব জন্মতঃ॥ ন তেন রুদ্ধোভবঙি যেনাস্য পলিতং শিরঃ। যো বৈ যুবাপ্যধীয়ান স্তং দেবাঃ न्हिवतः विद्वः ॥ यथा कार्ष्ठभाषां रखी यथा वर्ष्मभाषाम् ॥ यक বিপ্রোছনধীয়ান স্ত্রয় স্তে নাম বিভ্রতি॥ যথা যণ্ডোহফলঃ স্ত্রীষু যথা গৌ র্গবি চাফলা। যথা চাজ্ঞেহফলং দানং ত্র্গ বিপ্রোহনুচোহফলঃ ইতি মনুবচনানি তানি বেদাধ্যয়নবিষ্যু-কানি বালোহপি বিপ্রো রূদ্ধদ্যেত্যস্মাৎ পূর্ববং ব্রাহ্মদ্য জন্মন্ট কৰ্ত্তা স্বধৰ্ম্মদ্য চ শাদিতেত্যভিধানাৎ তদ্ববচনাৰ্গত-পিজূ নধ্যাপয়ামাদেতি শ্রবণাচ্চ। তথাচ কুল্লুকভট্টঃ—ব্র**ন্ধা**ৰণা^{থং} জন্ম ব্ৰাহ্মমুপনয়নং ত**দ্য কৰ্ত্তা স্বধৰ্মস্থ শাদিতা** বে^{দাৰ্থ}

ব্যাখ্যাতা তাদৃশোষ্থি বালো বৃদ্ধন্য জ্যেষ্ঠন্য পিতা ভবতি
ধর্মতইতি পিতৃধর্মান্তম্মিদ্ধস্থাতব্যাঃ পিতৃনিতি পিতৃত্ব্যান্
পিতৃব্যপুজ্রাদীন্ অধিকবয়নোহধ্যাপিতবান্ তান্ জ্ঞানেন
পরিগৃহ্ছ শিয়ান্ কৃত্বা পুজ্রকা ইত্যাজুহাবেতি॥ যত্ত্বেত্বৰচনান্তগতং—পিতাভবতি মন্ত্রদঃ পিতেত্যেবচ মন্ত্রদমিত্যক্র মন্ত্রপদং
তদধ্যেতব্যমন্ত্রপরম্। তথাচ কুল্লুকভট্টব্যাখ্যানম্ অতএব
বালোভবতি নত্বপ্লবয়াঃ মন্ত্রদঃ পিতা ভবতি বেদোপলক্ষগার্থং যোহধ্যাপয়তি আচফে স পিতা। অতৈব হেতুমাহ
যক্ষাৎ পূর্কেইপি মুনয় ইত্যুচু র্মন্ত্রদঞ্চ পিতেত্যক্রবন্ধিত।
ক্রিয়াঙ্গমন্ত্রপরং বা। অতএব যত্র কাদাচিৎকে কর্মাণি
পিতৈব হোতা পূজকো বা তত্র পুক্রদ্যাচার্য্যত্বব্যবহার ইতি
সর্বাং স্থিরম্।

এবস্ত পিত্রাদিতো দীক্ষাগ্রহণনিষেধদত্ত্বেহপি তত্রায়ং বিশেষাে যথা। রুদ্রজামলে দ্বিতীয়পটলে—দিদ্ধমন্ত্রাে যাদ পতিস্তদা পত্নীং স দীক্ষয়েৎ। শক্তিফেন ভৈরবেন্দ্র ন চ সা পুত্রিকা ভবেদিতি। দিদ্ধাে মন্ত্রাে যস্য সং॥ যত্ত্ব্ যদি দিদ্ধমন্ত্রঃ দিদ্ধােমন্ত্র স্তদা তং দিদ্ধমন্ত্রং দীক্ষয়েদিতি তন্ত্রসারটীকাকারেণ ব্যাখ্যাতং তদেতদ্বচনসমানাকুপূর্ব্বীক্বিচনস্য পিতা তথাবিধঃ পুত্রং তদা দীক্ষাং সমাচরেদিতি পরার্দ্ধস্যানবলাকনেন তথাবিধেত্যনেন দিদ্ধমন্ত্রজনস্য পরাম্পাসঙ্গতেঃ। অত্র নানাবচনদর্শনাৎ দিদ্ধমন্ত্রো ভর্ত্তাদিঃ পত্মাদীন্ দিদ্ধমন্ত্রং দীক্ষয়েদিতি তাৎপর্য্যার্থোহবগন্তব্যঃ। যথা তন্তরত্বপ্পত্রজামলে—ন পত্নীং দীক্ষয়েন্তর্তা ন পিতা দীক্ষয়েৎ স্থতাম্। দিদ্ধমন্ত্রো যদি পতিস্তদা পত্নীং স

দীক্ষয়েৎ। শক্তিত্বেন বরারোহে ন চ সা কন্সকা ভবেৎ।
পিতা তথাবিধঃ পুত্রং তদা দীক্ষাং সমাচরেৎ। ভ্রাতা সিদ্ধন্ম ভূরাদগুরু প্রতিভঃ। সিদ্ধনত্রে নরঃ সর্বমযোগ্যং যোগ্যতাং নয়েদিতি। পত্নীং স দীক্ষয়েৎ সিদ্ধং মন্ত্রং দীক্ষয়েদিত্যর্থঃ। তথাবিধঃ সিদ্ধনত্র ইত্যর্থঃ। তথাবিধঃ পিতা পুত্রং দীক্ষাং সমাচরেৎ। সিদ্ধন্ম মন্ত্রস্থা দীক্ষাং সমাচরেদিত্যর্থঃ। সিদ্ধনত্র নরঃ সর্বমযোগ্যং যোগ্যতাং নয়েদিতি নিক্রক্ততন্ত্ররত্নপ্রতজামলবচনশেষাৎ॥

দিদ্ধমন্ত্রকাস্ত দ্বিবিধা ভবন্তি পুরশ্চরণাদিসাধিতমন্ত্রকাং
যথা তন্ত্রসারধ্বতাগস্ত্যসংহিতায়াম্ পুরশ্চরণানন্তরবচনম্—এবং
দিদ্ধমন্ত্রমন্ত্রী সাধ্যেৎ সকলেম্পিতানিতি। মহাবিত্যোপাদকাশ্চ তদাহ ক্রমচন্দ্রিকায়াম্—কালী তারা মহাবিত্যা ধােড়ন্দ্রী তিরবী ছিল্লমস্তা চ বিত্যা ধুমাবতী তথা। বগলা দিদ্ধবিত্যাচ মাতঙ্গী কমলাত্মিকা। এতা দশ মহাবিত্যাঃ দিদ্ধবিত্যাঃ প্রকীর্ত্তিতাঃ। দীক্ষিতাস্তাম্থ যে নিত্যং দিদ্ধবিত্যাঃ প্রকীর্ত্তিতাঃ। দীক্ষিতাস্তাম্থ যে নিত্যং দিদ্ধবিত্যাঃ তান্বিত্ররিতি। দিদ্ধমন্ত্রকাণাম্ উত্তমমধ্যমাধমচিয়ানি তু কুলাচারবিচারে দর্শয়িয়ামঃ। অত্র কেচিত্র দিদ্ধবিত্যা মহাদেবি যদি ত্রৈপুরুষং ভবেৎ। সা এব পরমা বিত্যা সহাদেবি যদি ত্রৈপুরুষং ভবেৎ। সা এব পরমা বিত্যা দিদ্ধবিত্যা প্রকীর্ত্তিতেতি তন্ত্রকৌমুদীপ্পত-কালীকল্পবচনাং দিদ্ধবিত্যা প্রকীর্ত্তিতেতি তন্ত্রকৌমুদীপ্পত-কালীকল্পবচনাং দিদ্ধমন্ত্রে ন দোষঃ স্থাৎ যদি ত্রৈপুরুষং ভবেদিতি তদ্ধৃত্ত দিংহবাহিনীতন্ত্রবচনাচ্চ প্রপিতামহপিতামহপিত্রপাদিতিদিদ্ধন্ত্রং পিত্রাদয়্যে প্রাহয়েব্রবিত প্রান্তঃ।

নসু শূদ্রাণাং মন্ত্রেষনধিকারঃ শ্রেয়তে যথা রাঘবভট্ট^{র্যত}্ন মহাকপিলপঞ্চরাত্রে—ন বেদঃ প্রণবং ত্যক্তা মন্ত্রো ^{বেদ}

সমূথিতঃ। তত্মাদ্বেদপরো মন্ত্রো বেদাঙ্গশ্চাগমঃ স্মৃতঃ। বশ্চা-ক্র্যাদিকং কাম্যং দৃষ্টাদৃষ্টফলপ্রদম্। বেদেন সাধ্যতে সর্বং গ্রহয়জ্ঞাদিভিঃ কিল। ন বেদেন বিনা যজ্ঞান যজ্ঞা বেদ-বর্জিতাঃ। তত্মাৎ বেদপরো মস্ত্রো ন মক্রো বেদমুজ্ঝিতঃ॥ ন মত্ত্রে চাধিকারোহস্তি শূদ্রাণাং নিয়মঃ পরঃ। মন্ত্রাভাবা-দমন্ত্রেণ ভাষিতং সর্ব্বকর্ম হীতি॥ তথা নারদপঞ্চরাত্রে— ব্রাহ্মণক্ষজ্রিয়বিশাং পঞ্চরাত্রং বিধীয়তে। শূদ্রাদীনাং ন তৎ শ্রোত্রপদবীমধিগচ্ছতীতি ॥ শাতাতপদংহিতায়ামপি— যাবন্ত্যণানি মন্ত্রাণাং শৃদ্রেয়ু প্রতিপাদয়েৎ। তাবত্যো ব্রন্মহত্যাঃ স্ব্যুঃ স্বয়মাহ প্রজাপতিরিতি॥ বিশ্বসারতদ্তে দ্বিতীয়পটলেহপি—ব্ৰাহ্মণাঃ ক্ষ্ত্ৰিয়া বৈশ্যাঃ সৰ্ব্বতন্ত্ৰাধি-काविनः। कन्प्राधिकाविनास्य जू मर्व्यमञ्जाधिकाविनः॥ य চান্যে সঙ্করাঃ প্রোক্তা অথ শূদ্রা মছেশ্বরি। তে সর্ব্বে কর্ম-কর্ত্তৃণাং সেবকাঃ পরিকীর্ত্তিতাঃ। তেষামর্দ্ধকলং লব্ধা মোদস্তে দিবি দেববৎ ॥ ন শূদ্রায় মতিং দন্তাৎ প্রণবং বেদবোধিতম্। ন মন্ত্রং মন্ত্রযোগঞ্চ তথা মন্ত্রাঙ্গতাং পুনঃ। ন শূদ্রেভ্য-স্তথা স্ত্রীভ্যঃ প্রদন্তাৎ সাধকঃ সদা। লোভাদ্বা যদি বা কুর্য্যাৎ দর্বকর্মান্তরং দদ। তদা স্বর্গাৎ পতত্যেব ক্ষণাৎ সৈকতহৰ্দ্ম্যবদিতি চেৎ—সত্যং সামান্তবচনং বক্ষ্যমাণবিশেষ-বচনেন বাধিত্বা শূদ্রাধিকারো মন্ত্রবিশেষেয়ু প্রতিপাদয়ি-^{মৃতে}। শিবার্চনচন্দ্রিকাকারশ্চ—ব্রাহ্মণাঃ ক্ষল্রিয়া বৈশ্যাঃ শূ্দ্রা যে শুচয়োহমলাঃ। তেষাং মন্ত্রাঃ প্রদেয়া বৈ নতু সঙ্কীর্ণ-ধর্মিণামিতি ভবিয়োত্তরবচনাৎ উক্তবচনানামুচ্ছিফীদিদান-নিষেধবদসচ্ছুদ্রপরত্বমিতি প্রথমতঃ পরিকল্প্য তেষাং নিষেধ- বচনানাং মন্ত্রবিশেষপরত্বমপ্যাহ।—কালীবিলাসতন্ত্রে প্রথম পটলে—সপ্তকোটির্মহাবিদ্যা উপবিদ্যাস্তবৈধব চ। এ বিষ্ণোঃ কোটিমন্ত্রেয়ু কোটিমত্ত্রে শিবস্ত চ। শূদ্রাণামধিকারোহন্তি স্বাহাপ্রণববর্জ্জিতইতি॥ দেবীজামলে চ—স্বাহাপ্রণবসংযুক্তং শূদ্রে মন্ত্রং দদদ্বিজঃ। শূদ্রো নিরয়মাপ্নোতি ত্রাহ্মণো যাত্য-ধোগতিমিতি ॥ এবং রাঘবভট্টধ্বতনৃসিংহতাপনীয়ে—সাবিত্রীং প্রণবং যজুর্লক্ষীং স্ত্রীশূদ্রয়োর্নেচ্ছন্তি; সাবিত্রীং লক্ষীং যজুঃ প্রণবং যদি জানীয়াৎ স্ত্রীশূদ্রঃ স মৃতোহধো গচ্ছতীতি। লক্ষীং লক্ষীবীজং শ্রীমিতি যাবং। তদ্বীজঘটিতমন্ত্রমিতি ব্যাখ্যানমদৎ, মুখ্যার্থবাধাপত্তেরিতি তন্ত্রদীপিকাকারেণোক্তয়। রুদ্রজামলে—প্রণবাঢ়ো ন দাতব্যো মন্ত্রঃ শূদ্রায় সর্ব্বগা আত্মন্ত্রো গুরোর্মন্ত্রো মন্ত্রশ্চাজপদংজ্ঞক ইতি ॥ আত্মমন্ত্রং আত্মোপাদিতমন্ত্র ইত্যর্থঃ। গুরোর্মন্ত্রঃ গুরূপাদিতমন্ত্রঃ। যদ্যপি কেনাপি প্রকারেণ তং জানাতি তদা তং মন্ত্রং শূদ্রায় ন দ্যাদিতি রহস্যার্থঃ॥ তথা তত্তৈব—পিতুর্মন্ত্রং তথা মাতুর্মন্ত্রং সিদ্ধিপ্রদং শুভম্। শূদ্রো নিরয়মাপ্নোতি ব্রাক্ষণো যাত্যধোগতিমিতি॥ যতু কেবলস্বাহাযুক্তমন্ত্রঃ শূদেয়ু ন নিষিদ্ধঃ স্বাহাপ্রণবসংযুক্তমিতি বচনস্ত উভয়োঃ সংযোগে দোষবোধকম্। ন চ স্বাহান্তমন্ত্রোহপি শূদ্রে নিষিদ্ধ ইতি বাচ্যম্ গোপালপ্রচণ্ডচণ্ডিকামন্ত্রেষু স্বাহাবলীঢ়েহপি শূড়া-ধিকারদর্শনাৎ। অতএব স্বাহান্তমন্ত্রঃ শৃদ্রেষু প্রশস্ত ইতি তন্ত্রদীপিকাকারে৷ জল্লতি তন্ত্র সমীচীনমূ যতঃ শূর্টে বচনে স্বাহাযুক্তমন্ত্রস্যানিষিদ্ধত্বে স্বাহাপ্রণবসংযুক্তমিত্যাদি স্বাহাপদোপাদানং ব্যর্থং স্যাৎ তন্মতদিদ্ধস্য প্রণবযুক্ত

নিষ্কেবস্থ স্বাহাং বিনাপি নির্ববাহাৎ॥ এবং যদিকামী ভবত্যেব শূদ্রো২পি হোমকর্মণি। বহ্নিজায়াং পরিত্যজ্য হ্যদয়ান্তেন হোময়েদিতি বারাহীতন্ত্রবচনেন বহ্নিজায়াস্থলে মায়াং দত্তা শূদ্রো জপেদ্যদি। জপাৎ সিদ্ধীশ্বরো ভূত্বা পরং ব্রহ্মাধিগচ্ছতীতি কালীবিলাসতন্ত্রপ্রথমপটলবচনেন চ স্বাহাকারে শূদ্রাণামনধিকারবোধনাচ্চ॥ তথা পৈঠীনসীনাং বচনান্তরং পঠ্যতে—স্বাহাং নৈব স্মারেচ্ছ,দ্রো মনসাপি কদাচন। বিনা প্রাণপ্রতিষ্ঠাঞ্চ অন্তথা নরকং ব্রজেদিতি॥ তথা তারং তৎ সৎঠঠাত্মানং তত্ত্বমর্গাতি পাদজঃ। নোচ্চরে-ছুচ্চরেত্তের্ ঠঠাত্মানং তদঙ্গত ইতি। পাদজঃ শূদ্রঃ ঠঠা-স্থানং স্বাহা তদঙ্গতঃ যড়ঙ্গমন্ত্রে॥ তন্ত্রকৌসুনীপ্পতজামলে চ স্বাহোচ্চারণমাত্রেণ শুদ্রশ্চাণ্ডালতাং ব্রজেদিতি। ইপ্থং শূদ্রাদীনাং মন্ত্রবিশেষেহধিকারাৎ প্রধানবদঙ্গেহপীতি স্থায়াৎ তত্তদঙ্গনন্ত্রেরপ্যধিকারে প্রাপ্তেহিপি ন স্বাহাদিপ্রয়োগে-ংধিকারন্তেযু বিশেষনিষেধোক্তেঃ॥ যত্র তু স্বাহাবটিতে২পি গুখ্যে শূদ্রাণামধিকারো দৃশ্যতে তত্র তু **তদঙ্গীভূতমন্ত্রে** দাহাবলীঢ়েহপ্যধিকার ইতি নির্ণীতম্।

এবম্ অসক্ষ্ দ্রাণামপি তত্তমন্ত্রেষপ্যধিকারোহস্তি।
একদিত্রিতুর্য্যবর্ষাণ্যালোচ্য যোগ্যতা ভবেৎ। ভক্তিমান্
এণবান্ বাপি ক্রমান্বর্ণে সসঙ্করে ইতি শিবার্চ্চনচন্ত্রিকাপ্পততন্ত্ররাজবচনাৎ স্ত্রীশূদ্রাণাময়ং মন্ত্রো নমোহস্তশ্চ শুভাবহঃ।
এতজ্জ্ঞাত্বা মহাসেন চাণ্ডালানপি দীক্ষয়েদিতি রাঘবগুটুপ্পত্বচনাচ্চ॥ যানি তু ভূতশুদ্ধ্যাদিতন্ত্রেষ্— তন্ত্রোক্তং
খণবং দেবি বহ্জায়াঞ্চ পার্ব্বতি। প্রজপেৎ সততং

শূদ্রো নাত্র কার্য্যা বিচারণেতি। তথা তত্ত্রৈব—শক্তি-বিদ্যান্বিতা স্বাহা জায়তে যদি পার্ব্বতি। প্রজপেৎ সততং শুদ্রস্তদা সিদ্ধিঃ প্রজায়তে ইত্যাদীনি বচনানি শুদ্রস্থাপি স্বাহাপ্রণবান্বিতমন্ত্রাধিকারিতাপ্রতিপাদকানি তানি যথা-যথং গোপালদশাক্ষরামপূর্ণাসপ্তদশাক্ষরমন্ত্রপরাণি॥ সর্কের বর্ণেষু তথাশ্রমেষু নারীষু নানাহ্বয়জন্মভেষু। দাতা ফলা-নামিহ বাঞ্ছিতানাং প্রাণেব গোপালকমন্ত্র এষ ইতি ক্রম-দীপিকায়াং গোপালকমন্ত্র এষ ইতি বক্ষ্যমাণদশাক্ষরমন্ত্র-বিশেষ ইতি তট্টীকাকারব্যাখ্যানাৎ॥ মায়াহুদ্ভগবত্যন্তে মায়েশ্বরি পদং ততঃ। অন্নপূর্ণে ঠযুগলং মকুঃ সপ্তদশাক্ষরঃ। ব্রাহ্মণাঃ ক্ষত্রিয়া বৈশ্যাঃ শূদ্রাঃ সর্ববাশ্রমান্তথা। প্রাতরেনং জপেমন্ত্রং নিত্যমষ্টোতরং শতমিতি তন্ত্রকৌমুদীধৃতামপূর্ণা-কল্পবচনাচ্চ। তথা মনো স্বাহা চ যা দেবী শূদ্রোচ্চার্য্যা ন সংশয়ঃ। হোমকার্য্যে মহেশানি শূদ্রঃ স্বাহাং ন চোচ্চ-**রেৎ। মন্ত্রেংপ্যুহো নাস্তি শূদ্রে বিষবীজং বিনা প্রি**য়ে ইতি কঙ্কালমালিনীতন্ত্ৰপঞ্চমপটলীয়বচনমপ্যেতদ্বিষয়কমেৰ পূর্ব্বোক্তপ্রণবপদস্ত ভৈরবীবর্ণাভিধানপরম্। তথাচ তারঃ প্রণব উদ্দিষ্টঃসর্বত্তেতি বিনিশ্চয়ঃ। সৌকারস্তৈশ্চ বিজ্ঞেয়ে বালাবাগ্ভব উচ্যতে। মৃত্যুঞ্জয়ে হকারঃ স্থাৎ তারায়াঃ কুৰ্চ্চ উচ্যত ইতি॥ তথা কঙ্কালমালিনীতন্ত্ৰে পঞ্চমপটলে— স্ত্রীণাঞ্চৈব বরাননে ইতি॥

এবং সতি স্ত্রীণামপি দীক্ষাদাবধিকারোহস্তি। ^{তদাহ} শিবার্চ্চনচন্দ্রিকায়াম্—স্থাগমোক্তেন মার্গেণ স্ত্রীশূদ্রেশ্চা^{পি} পূজনম্। কর্ত্তব্যং শ্রেদ্ধায়া বিষ্ণোশ্চিন্তায়িত্বা পতিং হাদি॥
স্ত্রীণামপ্যধিকারোহস্তি বিষ্ণোরারাধনাদিরু। পতিপ্রিয়রতানাঞ্চ শ্রুতিরেষা সনাতনীতি॥ বিষ্ণোরিভ্যুপলক্ষণং
তাসাং শৈবাদিমন্ত্রেহপ্যধিকারোহস্তি। স্ত্রীশূর্ট্রাণাময়ং মন্ত্রো
নমোহস্তশ্চ শুভাবহঃ। এতজ্জাত্বা মহেশানি জড়তামপি
সংত্যজেদিতি রুদ্রজামলবচনাৎ॥ যদ্বা বেবেষ্টি ব্যাপ্নোতীতি
বিষ্ণুঃ পর্মাত্মা তেন ন সর্ব্বাসাং দেবতানামপি পর্মাত্মস্বরূপত্বাৎ॥ এতদেব গ্রন্থারম্ভসময়ে বিশেষেণ বির্তং
কিং পুনর্জ্বনেনেতি॥ অতঃ সর্ব্বদেবতামন্ত্রে স্ত্রীণামপ্যধিকারোহস্তীতি সিধ্যতি। চিন্তায়িত্বেত্যাদি মৃতভর্ত্বাপরং
পতিপ্রিয়েত্যাদি সধ্বাপরং জ্যেয়্ম্।

অত্র নারীণাং ভর্তৃশুক্রাবণস্থৈব মুখ্যধর্মস্বাত্তৎপুরংসরমেব ক্তানাং ভজনাদীনাং সাফল্যাৎ পতিসেবাপুরংসরমেব
দেবতারাধনং কর্ত্তব্যা যা স্ত্রী ভর্ত্রা বিষুক্তা চ শুভাচারেণ সংযুতা। সা চ মন্ত্রান্ প্রগৃহ্লাতু সভর্ত্রী তদকুজ্ঞয়া।
বিনা স্বধর্মং যথকিঞ্জিৎ দেবতারাধনাদিকম্। পরিভ্রশ্যেত
তত্ত্রমাৎ ক্ষণাৎ সৈকতহর্ম্মবিদিতি ভবিষ্যোত্তরবচনাৎ। ভর্ত্রা
বিষ্ক্রা স্বামিনা রহিতা। সভর্ত্রীত্যনন্তরং তুকারো বোধ্যঃ
মন্ত্রণ ভর্ত্রণ বিষুক্তেত্যনেন অভেদান্বয়প্রসঙ্গাৎ। সভর্ত্রীতি
সমাসান্তস্থানিত্যত্বাৎ কপ্রত্যয়াভাবঃ॥

অথ মন্ত্রাণাং ব্রহ্মক্ষত্রাদিভেদঃ। কুলার্ণবৈ—ব্রাহ্মণঃ
ক্ষত্রিয়া বৈশ্যঃ শূদ্রো ভবতি বৈ মনুঃ। অনুলোমেন দেয়ঃ
ছাৎ প্রতিলোমেন ন কচিদিতি॥ শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাপ্তমণিহল্তে২পি—মায়াবীজং ব্রাহ্মণঃ স্থাৎ শ্রীবীজং ক্ষত্রিয়ঃ স্মৃতম্।

কামবীজং ভবেদৈশ্যো বাগ্ভবং শূদ্র ঈরিতম্॥ চতুব্বীজ-পরিত্যক্তো মন্ত্রঃ পোলস্ত্যসংজ্ঞকঃ। চতুর্বীজং ব্রাহ্মণানাং ক্ষত্রিয়াণাং ত্রিবীজকম্। বীজদ্বয়স্ত বৈশ্যানাং শূদ্রাণামেক-বাজকমিতি॥ কুলমূলাবতারে চ। শ্রীদেব্যুবাচ—শাক্ত-भाखितरमोतांगाः शाराभारेतकारवर् **ह। क्र**ब्यः क्रबां मिवर्गानाः সঙ্করাণাং বিশেষতঃ। প্রবৃত্তিং শ্রোতুমিচ্ছামি সাধকানাং স্থাবহম্। যেযু যেযুচ যে মন্ত্রাস্তদ্ভেদং বদ শঙ্কর। ঈশর-উবাচ। উমা মহেশ্বরণ্চেব দক্ষিণামূর্ত্ত্যবোরকম্! হয়-গ্রীবঞ্চ বারাহ্মন্টাক্রমতঃপরম্। প্রণবাঘং বাস্তদেবং লক্ষ্মী-নারায়ণং তথা। বর্ণত্রয়ে চ দাতব্যং নান্সবর্ণে কদাচন॥ পাশুপতং নারসিংহং তথা চৈব স্তুর্লনম্। বর্ণদ্বয়ে চ দাতব্যং নান্যয়োশ্চৈব কহিচিৎ॥ অগ্নিমন্তাশ্চ যে কেচিৎ সূর্য্যমন্ত্রাশ্চ যে তথা। তারাদিয়ণিস্ত্রাশ্চ দতব্যাশ্চ দ্বির্ণকে॥ অফু-ফুঁভং শক্তিমন্ত্রাস্তগা বিদ্যানিবাসিনী। তথা নীলসরস্বত্যা দাতব্যাশ্চ দ্বিব কি। আদিবৰ্ণকৈ ইতি পাঠান্তরম্।। মাত-ঙ্গিন্তু প্রতার চুকালিক। শ্রামলা তথা। ছিন্নমন্তা চুবালা চ দাতব্যা সর্ববর্ণকে॥ তারাদিস্ত গণেশশ্চ হরিদ্রাসংজ্ঞকস্তথা। ত্রিবর্ণেষেব দাতব্যঃ কথিতঃ সর্কাসিদ্ধিদঃ॥ ত্রিপুরারাশ্চ যে মন্ত্রা যে মন্ত্রা বটুকাদয়ঃ। সর্ববর্ণেয়ু দাতব্যাঃ পুরন্ত্রীণাং বিশেষতঃ॥ প্রণবং মায়াং লক্ষ্মীঞ্চ বাগ্ভবঞ্চান্ত্রবীজকম্। এত্ৰীজেন সংযুক্তং দাত্ব্যঞ্চাদিবৰ্ণকে।। মায়াং লক্ষ্মী বাগ্ভবঞ্ লভব্যং ক্জিয়েষপি। লক্ষ্মীঞ্ বাগ্ভবংশ্ব কথিতং বৈশ্যবৰ্ণটে। বাগ্ভবঞ্চান্তৰীজঞ্চ শূদ্ৰাণাং সমূ^{দী} রিতম্। হলাদ হুঁস্টকারাদি সম্বর্ণাণ প্রশস্তত ইতি।

{বর্ষাসন্ত্রাশ্চ} যে তথেতি সামান্তেনার্ভিধায় তারাদিল্পণিমন্ত্রা-■শ্চিতি বিশেষতোহভিধানাৎ তদন্যসূর্য্যমন্ত্রে বৈশ্যশুদ্রয়ো-দ্রবিকারঃ প্রতীয়তে সর্বত্র তথা দর্শনাৎ।। গোপালস্থাপি াদজে। তৎপুত্রাশ্চাপি দূর্য্যস্ত গণেশস্ত্র মনুস্তথেতি ত্রসারধ্বতবারাহীতন্ত্রবচনাৎ। শূদ্রাধিকারে সিদ্ধে বৈশ্যাধি-ারোহপি দণ্ডাপূপন্তায়সিদ্ধঃ। সচ তায়ো যথা। মূষিকস্য ওভক্ষণং তুষ্করম্ তন্নিপ্পত্তো তৎসহচরিতাপূপভক্ষণমতি-ন্ত্রকরত্বাৎ সম্ভাব্যতে ইতি॥ এবং ক্ষত্রিয়বৈশ্যয়োঃ ক্রমেণ গাগাশ্রীবীজনিষেধাশঙ্কায়াং মায়াং লক্ষ্মীং বাগ্ভবঞ্চ দাতব্যং ্লিয়েম্বপীতি বচনমধিকারপ্রতিপাদকম্॥ তথা শৈবমন্ত্র-মাধকৃত্য স্ত্রীশূদ্রাণাসয়ং মন্ত্রো নমোহস্তশ্চ শুভাবহঃ। জ্জাত্বা মহেশানি জড়তামপি সংত্যজেদিতি শিবাৰ্চ্চনpন্দ্রিকাপ্পত-রুদ্রজামলবচনাৎ ন বৈদিকং জপেচছুদ্র ত্রহাউচৰ কদাচন। নমোহন্তং শিবমন্ত্রং বা বৈষ্ণরঞ্চে-🛚 🖟 মুর্টেরিতি যাজ্ঞবল্ক্যবচনাচ্চ তথা শৈবর**েভ্র**—অয়ং মাদ নমেহিন্তঃ স্থাৎ স্ত্রীশুদ্রাণাং শুভাবহঃ। এবং প্রাপ্য াহেশানি চাণ্ডালানপি দীক্নয়েদিতি তথা নমো২ন্তেন্ ^{এনে}নৈব স্ত্রীণাং পূজা বিধীয়তইতি স্মার্ত্তপ্রতনাৎ। শিশুমন্ত্রমধিকৃত্য সপ্তার্ণঃ শুদ্রযোঘিতোরিতি বচনাচ্চ নমোkেত্ত শিবপঞ্চাক্সরে বিষ্ণুসপ্ত¦ক্ষরে চ স্ত্রীশূদ্রাধিকারঃ॥ ^{দুগন্ত্যসংহিতায়ামপি—শুচিত্ৰততমাঃ শূদ্ৰা ধান্মিকা দ্বিজ-} নবকাঃ। স্ত্রিয়ঃ পতিব্রতা নিত্যং প্রতিলোমানুলোমজাঃ। লাকা*চাণ্ডালপর্য্যন্তাঃ সর্ব্বেহপ্যত্রাধিকারিণ ইতি। মনজ্রে ইত্যর্থঃ॥ রহদেগতিমীয়ে সর্কান্ কৃষ্ণমন্ত্রানধি-

কৃত্য—গৃহস্থারণ্যগাশ্চেব যতয়ে। বনবাসিনঃ। ব্রিয়ঃ শূল্রাদ্রাে যে চ সর্ব্বেহপ্যত্রাধিকারিণ ইত্যুক্তম্। তথা প্রচণ্ড চণ্ডিকাষোড়শীবিভামধিকৃত্য বিশ্বসারভৈরবয়োঃ—তশ্মাৎ সর্ব্বপ্রয়ের সর্ব্বোপাস্থা চ বোড়শী। মকলেয়ু চ বর্ণেয়্ সকলেয়াশ্রমেয়ু চ। অন্তিমেয়ু চ বর্ণেয়্ ভুক্তিমুক্তিপ্রদারিকা। প্রণবাভাশ্চ যা বিভাঃ শূদ্রাদে ন সমীরিতাঃ অস্থাপ্তিব বিশেষোহয়ং যোবিচ্চেৎ সমুপাসয়েৎ। ডাকিনা সা ভবত্যেব ডাকিনীভিঃ প্রজায়তে। পতিহীনা পুত্রহীনা যথা স্থাৎ সিদ্ধযোগিনীতি॥

যত্ত্রসর্ববর্ণাধিকারিতাপ্রসঙ্গে ন চাধিকারিচিন্তাত্র গ্রহণ কালিকামনোরিতি কালীকুলসর্ব্বস্থবচনাৎ তৎপুরশ্চরণ প্রকরণে ২ভিহিতত্বাচ্চ শ্র্যামায়া দ্বাবিংশত্যক্ষরমন্ত্রে ২ধিকার ইত্যাগমসারকারেণ বিশ্বসারতন্ত্রবচনমনালোচ্য যত্নক্তং তঃ মনোরমম্। তথাচ বিশ্বসারতজ্রে চতুর্থপটলে দাবিংশত্যক্ষ-রমধিকৃত্য—ন শূল্রায় মহাবিত্যাং প্রদত্যাচ্চ কদাচন। यद তত্র যথাস্থানে প্রাণান্তে২পি বিশালধীঃ॥ ন বক্তব্যং ন বক্তব্যং দর্শয়েশ্ব কদাচনেতি॥ ন চাধিকারিচিন্তাত্ত্রোদি বচনস্ত্র দ্বাবিংশত্যক্ষরাতিরিক্ত-কালিকামন্ত্রপর্মিতি ধ্যেয়ম। তস্মাৎ যেষু যেষু স্বাহাঘটিতমন্ত্রেষু বিশিষ্য স্ত্রীশূদ্রাণামধিকারে দুখ্যতে তে তু স্ত্রীশূদ্রাণামনূহা এব প্রদাতব্যাঃ এতৎপরমে কঙ্কালমালিনীতন্ত্ৰপঞ্চমপটলবচনম্। তথাচ মনৌ স্বাহা চ দেবেশি শৃদ্রোচ্চার্য্যা ন সংশয়ঃ। হোমকার্য্যে মহেশানি শূদ্রঃ স্বাহাং ন চোচ্চরেৎ। মন্ত্রেহপূরহোনাস্তি শূদ্রে বিষবী^{জং} বিনা প্ৰিয়ে ইতি॥ বিষবীজং প্ৰণৰঃ॥ এতদ্বচনস্থ-শূদ্ৰপাং

স্ত্রীণামপুপেলক্ষকর্ম। স্ত্রিয়ঃ শূদ্রাদয়ো যে চ সর্ব্বেহপ্যত্রাধিকারিণ ইত্যাদি-পূর্ব্বোক্ত-মৃহদুগোতমীয়াদি-নানাতন্ত্রবচনেরু
স্ত্রীণামপি স্বাহাযুক্তমন্ত্রাধিকারদর্শনাৎ। হঠাদ্যদি মহামন্ত্রং
স্বাহাপ্রণবসংযুত্র্য। মন্ত্রং গুরুমুখাৎ শ্রুজ্বা শূদ্রঃ শূকরযোনিষু। জায়তে নাত্র সন্দেহো গুরুদেবোহপি জায়তে।
ইতি কালীবিলাসতন্ত্রভূতীয়পটলবচনন্ত উক্তেত্রবিষয়কম্।
এবং যত্র যত্র স্ত্রীশূদ্রাণাং স্বাহাযুক্তমন্ত্রনিষেধাে দৃশ্যতে
তদপ্যবং সমাধেয়মিতি দিক্।

ইতি সততমহামহীশচক্রচূড়ামণিচর্চিতচরণনলিন শ্রীমদ্গোপী-মোহনপাদপদ্মামন্দমকরন্দসন্দোহানন্দিতমনোমধুকর-শ্রীহরকুমারদেবশর্দ্ম-স্বীয়চিস্তামণিমন্ত্রচিস্তোদর্ক-হরতস্থদীধিতৌ তৃতীয়কলাপ্রকাশঃ।

অথ চক্রগণনা তন্ত্রসারাদাবনুসম্মেয়া॥ নক্ষত্রচক্রগণনায়াপ্ত
চঞ্চিত্রচাতে। তত্র লকারদ্বয় উদ্ধৃতঃ আচ্চলকারস্থ রাক্ষসগণস্বম্ অন্তালকারস্থ দেবগণস্বম্। তর্হি লকারাদিনাদ্রঃ
লকারো গ্রাহ্ম কিমান্ত উত দ্বিতীয় ইতি সন্দেহঃ
াৎ। নচ তত্র দ্বয়োলকারয়োরস্কত্রয়সংখ্যকত্বাৎ একএবেতি ক্রম ইতি বাচ্যম্ গণভেদকত্বন লকারদ্বয়বিধানাম্পেলভ্তঃ॥ উচ্যতে—তৌ তু পূর্ববর্গশেষবর্গস্বেন সংজ্ঞিতৌ
র্বাদীর্ঘস্বরমুক্তঃ শেষস্ত ব্রস্বস্বরমুক্তো ব্যঞ্জনমুক্তাযুক্তো বা।
চথাচ শক্তিসঙ্গমতন্ত্রে—দীর্ঘস্বরসমাযুক্তো লকারঃ পূর্বব্রগকঃ। স্বয়্যুক্তো ব্রস্বযুক্তো:লকারঃ শেষবর্গক ইতি॥
অথ স্বপ্ললক্ষত্রে বিশেষঃ। যোগিনীতন্তে—নিব্বী-

র্যান্চ পিতুর্মল্পতথা মাতামহস্য চ। স্বপ্নলবঃ প্রিয়া দট্টঃ সংস্কারেণৈর শুধাতীতি । তথা রুদ্রজামলে দ্বিতীয়পটলে— স্বপ্নে তু নিয়মো নাস্তি দীক্ষায়াং গুরুশিষ্যয়োঃ। স্বপ্নলব্ধে স্ত্রিয়া দত্তে সংস্কারেণৈব শুধ্যতীতি॥ নম্বত্রোক্তবচনাভ্যাং স্বপ্নলব্বমন্ত্রস্থা সংস্কারশ্রুতেঃ পুনদ্দীকাভাবঃ প্রতীয়তে। তত্র অদীক্ষিতা যে কুর্ব্বন্তি জপপূজাদিকা ক্রিয়াঃ। ন ভবন্তি প্রিয়ে তেয়াং শিলায়ামুপ্তবীজবৎ।। দেবি দীক্ষ-বিহীনস্থ ন সিদ্ধিন চ সলাতিঃ। তম্মাৎ দৰ্অপ্ৰয়ভ্ৰে গুরুণা দীক্ষিতো ভবেৎ॥ অদীক্ষিতো২পি মরণে রোর নরকং ব্রজেৎ। তত্মাদীক্ষাং প্রযক্তেন সদা কুর্য্যাচ্চ তান্ত্রি কাৎ।। কল্পে দৃষ্ট্য ভু মন্ত্রং বৈ যো গৃহ্লাতি নরাধমঃ। মন্বন্তরসহত্রের নিষ্কৃতির্নৈব জায়তে। গুরোমুখান্মহাবিল্যা সর্বব্যাপপ্রণাশিনীম্॥ ইতি বৃহন্নীলভন্ত্রীয়তৃতীয়পটলক নাৎ অদীক্ষিতস্থ সর্ব্বকর্মানধিকারশ্রুতেঃ পারলৌকিক নরকাদিশ্রুতে শ্চ। স্বপ্নদীক্ষিতস্থে বস্তুতো হদীক্ষিতক্ষে তিদোষঃ প্রসজ্যেত॥ ন চ স্বপ্নদীক্ষায়েব তস্থ দীক্ষিতঃ সিদ্ধমিতি বাচ্যম্। স্বপ্নে যদি মহামন্ত্রং প্রাপ্নোতি সাধকো ত্তমঃ। তদা সিদ্ধিমবাপ্নোতি সত্যং সত্যং কুলেশুরি। তন্মন্ত্রং কৌলিকে নাথ গুরো যত্নেন সংগ্রহী। যদা ভবতি সিদ্ধিঃ স্থাত্তৎক্ষণান্নাত্র সংশয় ইত্যাগমসারধৃত-রুদ্রজামল-বচনেন তন্মন্ত্ৰস্থ পুনদীক্ষাশ্ৰবাণাৎ॥ উচ্যতে এতৰচনৈ^ক-বাক্যতয়৷ পূর্ববচনোক্তসংস্কারপদং পুনদীক্ষারূপসংস্কার পরং ন তু মন্ত্রস্থ দশসংস্কারপরম্॥ আগমসারধৃতরুদ্রজা^ন লীয়বচনার্যস্ত-–হে নাথ কোলিকে গুরো তন্মস্ত্রং যদা সংগ্রহী

ভবতি তদা তৎক্ষণাদেব সিদ্ধিঃ স্থাদিতি। তমন্ত্রমিত্যত্র ষষ্ঠ্যভাবস্তু ছান্দসঃ। কৌলিক ইতি বংশপরস্পরাপরি-প্রাপ্তত্তরাবিত্যর্থঃ। পৈত্র্যং কুলগুরুং যস্ত ত্যজেদ্বৈ ধর্ম-মোহিতঃ। স যাতি নরকং যোরং যাবদাচন্দ্রতারকমিতি পিচ্ছিলাতন্ত্রপূর্ব্বথণ্ডপ্রথমপটলীয়বচনাৎ।—ন ত্যাজেৎ কুল-দেবঞ্চ যদীচেছদাত্মনো হিতম্। যেন তস্মান্তবেদ্দীক্ষা তৎ-প্রকারং শৃণু প্রিয়ে। কুলোদ্ভবং তথা শান্তং ভাবত্রয়বিভেদ-ক্ষ। আগমজ্ঞং স্থালঞ্চ গুরুক্মারতস্ত য়ঃ। ত্যানীয় প্রযক্ষেন পাঠয়েতান্ গুরোঃ স্থতান্॥ यः শিষ্যঃ পাঠয়েদেবি শিববৃদ্ধ্যা গুরোঃ স্থতান্। তস্ম কিং মন্ত্রপূজায়াং স সিদ্ধো নাত্র সংশয়ইতি গুরুতন্ত্রবচনাচ্চ॥ পূর্বেবাক্তযোগিনী-তন্ত্র-রুদ্রজামলবচনয়োঃ স্ত্রীপদন্ত পতিপুত্রবিহীনাপরম্। বিধবায়াঃ স্থতাদেশাৎ কন্সায়াঃ পিতুরাজ্ঞরা। নাধিকারো-যতো নার্য্যা ভার্য্যায়া ভর্ত্ত্রাজ্ঞয়েতি কুলার্ণবতন্ত্রপঞ্চমখণ্ড-চতুর্দ্দশোল্লাসবচনাৎ।—নাধিকার ইতি স্বাতন্ত্র্যেণ নাধি-কারঃ। সাধ্বী চৈব সদাচারা গুরুত্ত্তা জিতেন্দ্রিয়া। ইত্যু-'ক্রম্য গুরুয়োগ্যা ভবেৎ সা হি বিধবা পরিবর্জ্জিতা। স্ত্রিয়ো দীক্ষা শুভা প্রোক্তা মাতুশ্চাইত্তণা স্মৃতা। পুত্রিণী ^{বিধবা} গ্রাহ্মা কেবলানন্দকারিণীতি রুদ্রজামলদ্বিতীয়প**টলে** শামান্ততো বিধবাবৰ্জনমুক্ত্যা পুনঃ পুক্ৰিণ্যাএব তস্থাঃ দীক্ষাধিকারপ্রতিপাদনাচ্চ। যদি তু মাতা স্বপ্নে স্বমন্ত্রং ক্রয়াৎ তদা পুনদ্রীক্ষাং নাচরেৎ। স্বপ্নে তু যদি বা মাতা ^{ন্দাতি} চ স্বমন্ত্রকম্। পুন্দীক্ষাং সোহপি কৃতা দানবত্বমবা-🏿 ্রাদিতি রুদ্রজামলদ্বিতীয়পটলবচনাৎ।

কেচিত্রু অদীক্ষিতমরণে নরকপ্রতিপাদকবচনন্ত বৈশ্ববং বাথ শাক্তং বা শৈবং সোরঞ্চ গাণপন্। যোহহঙ্কারাম গৃহ্লাতি মন্ত্রং সোহদীক্ষিতঃ স্মৃত ইতি ব্রহ্মবৈবর্ত্তবচনোক্তাদীক্ষিত-পরমিত্যাহুঃ। যচোক্তং মাতুরিত্যুপাসিতে হঠওওণন্ অনুপাসিতে শুভফলদমিতি তন্মাদরণীয় মভিযুক্তেঃ ঈদৃশার্থ-ন্যায়বচনয়োরভাবাৎ মাতুঃ স্বীয়মন্ত্রদানে বিশেষফলশ্য পৃথগভিহিতহাচ্চ। যথা রুদ্রজামলে—যদি মাতা স্বীয়মন্ত্রং দদাতি তত্মজায় চ। তদাইটিদিন্ধমাপ্রোতি ভক্তিমার্গে ন সংশয়ঃ। তদেব ত্বর্লভং দেব যদি মাতা প্রদীয়তে। আদে ভুক্তিং ততামুক্তিং সংপ্রাপ্যকালরূপপ্রক্। তথা সহস্রকোটিবিত্যার্থং জানাতি নাত্র সংশয়ঃ ইতি॥ তথা ভৈরবতন্ত্রে—স্বীয়মন্ত্রোপদেশে তু ন কুর্য্যাদ্গুরুচিন্তনমিতি সামান্যতো-হভিহিতন্।

নমু পুরশ্চরণরসোল্লাসে ষষ্ঠপটলে—রাশ্যাদিগণনাং কৃষা যদি মন্ত্রং প্রদাপয়েৎ। তস্ম সর্ববং রথা দেবি অন্তে নরকমাপ্রুয়াৎ। কোটিবংশান্ সমানায় রৌরবং নরকং ব্রজেৎ। উভয়োশ্চঞ্চলাপাঙ্গি সমানফলমেব চ। অতএব মহেশানি গণনাং বর্জ্জয়েৎ সদেতি॥ তথা শাক্তানন্দ-তরঙ্গিণীপ্তত-গুপুদীক্ষাতন্ত্রে—যং কুর্য্যাচ্চক্রগণনাং দীক্ষায়াং পশুপামরঃ॥ স ভ্রন্টঃ স চ পাপিষ্ঠো বিষ্ঠায়াং জায়তে কৃষিঃ। কিং ঋণৈঃ কিং ধনৈশ্চৈব রাশ্যাদে কিং বিচারণা। সিদ্ধিসাধ্যস্থসিদ্ধারিবিচারং পরিবর্জ্জয়েৎ॥ নাস্তি সত্যং মহেশানি নক্ষত্রাদি-বিচারণা। রাশ্যাদিগণনা নাস্তি শঙ্ক-রেণেতি ভাবিত্মিতি বচনৈর্মন্ত্রাণাং রাশ্যাদিচক্রগণনা-

প্রতিষেধঃ প্রত্যুত দোষশ্রুতিশ্চ। যথা রুদ্রজামলে তৃতীয়-পটলে—যদি চক্রং নো বিচার্য্য রিপুচক্রং সমভ্যদেৎ। নিজায়ুঃ সংছিনত্ত্যেব মূকো ভবতি নিশ্চিতম্॥ বিচারং চক্রসারস্থ করণীয়মবশ্যকম্। দীক্ষাপূর্ব্বদিনে কুর্ঘ্যাৎ ন্থবিচারং প্রযক্ততঃ। অবশ্যং শোধয়েচ্চক্রং গোপনীয়ং স্থরা-স্থারিঃ॥ ধনিমন্ত্রং ন গৃহ্নীয়াদকুলঞ্চ তথৈব চ। গৃহীত্বা নিধনং যাতি কোটিজাপেন সিধ্যতীতি॥ তথা মায়াতন্ত্রে— নাশ্রমেরদরিমন্ত্রস্তু মিত্রমন্ত্রং সমাশ্রমেদিতি।। তথা রাঘব-ভট্টধৃতম্। মন্ত্রোবা যদি বা বিহ্যা স্তবো বা সূক্তমেব বা। অর্থবন্ধুশরীরস্ম নাশকো ভবতি ফুণাৎ।। তম্মাৎ সর্ব্বপ্রয-ত্নেন ছফীং সর্বত্র বর্জ্জয়েৎ। ন কেবলস্তু মন্ত্রাণাং বিশে-ষেণ তু দেহিনাম্। পরস্পারং সমীক্ষ্য স্থাৎ সম্বন্ধো নান্যথা ভবেদিত্যাদিবচনৈর্মন্ত্রাণাং চক্রবিচারস্থাবশ্যকত্বমিতি বিরোধঃ। নচ কাল্যাদিদশমহাবিভা উপক্রম্য নাত্র সিদ্ধা-গুপেক্ষান্তি নক্ষত্রাদিবিচারণা। কালাদি শোধনং নান্তি নচানিত্রাদিদূষণম্। , সিদ্ধবিস্ঠাতয়া নাত্র যুগদেবাপরিশ্রমঃ। নাস্তি কিঞ্চিন্মহাদেবি ছুঃখসাধ্যং কথঞ্চনেতি মুণ্ডমালাতন্ত্র-বচনেন পুরশ্চরণরসোল্লাস-গুপুদীক্ষাতন্ত্রবচনানি কাল্যাদি-সিদ্ধবিঙ্গাপরাণীতি বাচ্যম্। শাক্তে শৈবে বৈঞ্চবে তু সৌরে গাণপতে তথা। অন্যসর্ব্বাস্থ বিচ্ঠাস্থ গণনাং বর্জ্জয়ে-^{মরঃ}। অন্যথা নরকং যাতি স্বয়ন্ত_ু লিঙ্গচালনাৎ। স্বয়ন্ত_ুকোটি-লিঙ্গানাং চালনাদ্যদ্ভবেৎ ধ্রুবম্। তৎ পাপং সমবাগ্গোতি গণনাদ্বরবর্ণিনি। তম্মাৎ সা পরিহর্ত্তব্যা গণনা নিন্দিতা প্রিয়ে ইতি কামধেনুতন্ত্রীয়েকাদশপটলবচনেন সামান্যতঃ

পঞ্চোপাসকানাং গণনায়াং নিন্দাশ্রবণাৎ। নচ বরাহার্ক-নুসিংহস্ম তথা পঞ্চাক্ষরস্ম চ। স্ত্রীদত্তস্ম তথা স্বপ্পলব্ধস্ম চ মহামনোঃ। একাক্তরস্থ মন্ত্রস্থ সিদ্ধাদীলৈব শোবয়েৎ। এক-দ্বিত্র্যাদিবীজস্ম সিদ্ধমন্ত্রস্ম বৈদিকে। হংসাফীক্ষরমন্ত্রস্মসিদ্ধা-দীন্নৈব শোধয়েৎ॥ মালামন্ত্রস্থ কালস্থ চন্দ্রচূড়স্থ সন্মনোঃ। নপুংসকস্থ মন্ত্রস্থ সিদ্ধান। বৈংশত্যপাধিক। মন্ত্রা মালামন্ত্রাঃ প্রকাতিতাঃ। দূর্য্যমন্ত্রস্থ যোগস্থ কৃত্যা-মন্ত্রস্থ শঙ্কর। শব্দবীজন্য নেদস্থ সিদ্ধাদীরেব শোধয়ে-দিত্যাদি রুদ্রজামলতৃতীয়পটলবচনেত্যো ানঞ্চুবচনানি তত্তদেবতানাং তত্ত্মদ্রপরাণীতি বাচ্যস্। তত্ত্বৈ বরাহার্ক-নৃসিংহস্যেত্যুপক্রম্য চণ্ডেগ্রন্য মন্ত্রদ্য বরুণদ্য মহাত্মনঃ। কালীতারাদিমন্ত্রস্য সিদ্ধাদীলৈব শোধয়েও।। তথাপি শোধয়ে-মান্ত্রং প্রাশংসাপরমেব তৎ। যত্র প্রাশংসা পরমং তৎ কার্য্যং দৈবতং স্মৃতম্।। প্রশংসা যত্র নাস্ত্যেব তৎ কার্য্যং নাপি কারুরেদিভ্যুপহারেণ তন্মধ্যবর্ত্তিবচনানাং প্রশংসাপরতয়ৈব পৰ্য্যবসানাৎ॥ তত্ৰৈব মহাবিতা ,মহামন্ত্ৰং বিচাৰ্য্য কোটিপুণ্যভাক ॥ অবিচারে চোক্তফলং দদাতি কামস্ত্ৰ-ন্দর্রাতি॥ তত্ত্বৈ মহাবিভামন্ত্রমূপক্রন্য যদি মন্ত্রং বিচার্ঘ্যান্ত গৃহ্লাতি সাধকোভমঃ। অনন্তকোটিপুণ্যস্য দ্বিগুণং ভবতি ঞ্রবম্। বিচার্য্য চক্রসারঞ্চ মন্ত্রং গৃহ্লাতি যো নরঃ। বৈক্ণ-নগরে বাসস্তদ্য জন্মশতেম্বপীতি চক্রবিচারে ফলাতিশ্য-শ্রেবণেনাবশ্যকর্ত্তব্যর্রবিধানাচ্চ॥ অতএব মন্ত্রোহয়ং চুষ্টোং-তুকৌবেতি কৃতে দোষ ইত্যাগমসারাদাবভিহিতম্।

ন চ স্বধে তু নিয়মো নাস্তি দীকাস্ত গুরুশিগ্যয়োঃ।

দ্বপ্ললকে স্ত্ৰিয়া দত্তে সংস্কারেণৈব শুধ্যতীতি রুদ্রজামল-দ্বিতীয়পটলবচনাৎ স্বপ্নলব্ধমন্ত্ৰপরং তদিতি বাচ্যম্। স্বপ্নে ্যদি মহামন্ত্রং প্রাপ্তোতি সাধকোতমঃ ইত্যুপক্রম্য অরি-্রুচদেব স তদা যদি বিগ্রাহয়েমনুম্। অন্যমন্ত্রং বিচার্ব্যেব ব্যঞ্জেশ্চাপি শিবস্য চ। শক্তিমন্ত্রো যদি অরি স্তদা এবং-প্রকারকম্। আদাবস্তে চ মধ্যে চ ওঁবোষট্স্বাহয়ান্বিতম্। কুত্বা জপ্ত্বা মহাদিদ্ধিং কামরূপস্থিতামিব। প্রাপ্নোতি নাত্র সন্দেহো মমাজ্ঞা বলবানিতীত্যাগমসারধ্বতরুদ্রজামলীয়-বচনেয় স্বপ্নলক্ষনন্ত্ৰস্যাপি বিচারদর্শনাৎ। স্বপ্নলক্ষমন্ত্রো ্যস্তরিং স্যান্তদা যদি মন্ত্রং গ্রা**হ**রেতদা যস্য মন্ত্রঃ **স্বপ্নলর**-স্তদ্যৈব বিষ্ণোঃ শিবস্য বা মন্ত্রান্তরং গ্রাহয়েৎ। শক্তিবিষয়ে ম্বপ্লব্যে তু ওঁ বৌষট্ স্বাহেতি মন্ত্ৰং মন্ত্ৰস্যাদো মধ্যে অন্তে চ দত্ত্বা জপেৎ। বলবানিতি পুংস্ক্রং ছান্দসমিত্যাগমসারকারঃ। উচ্যতে যশ্মিন্ মক্রে বিচারোহপি সিদ্ধারিগণদূযণম্। তত্তৎ সর্ববং মহেশানি গৃহস্থস্য স্থনিশ্চিতম্। স্থবিচার্য্য মহামন্ত্রং গৃহ্বীয়াৎ সাধকোতমঃ॥ একাক্সরে তথা কুর্চ্চে मानामलामिद्रविम्दरु । विठादता नास्ति एमदर्ग स्थलदक তথৈব হি॥ তথাপি <mark>চ গৃহস্তৈশ্চ স্থ</mark>বিচার্য্যো **মহামনুঃ।** ভিনো দূষণং নাস্তি সৰ্ব্বমন্ত্ৰস্য দীক্ষণে ইতি বৃহন্নিৰ্ব্বাণ-তন্ত্রচতুর্দ্দশপটলবচনাৎ পুরশ্চরণরসোল্লাস-গুরুদীক্ষাতন্ত্রবচ-নানি গৃহস্থেতরপরাণি। স্বপ্নলব্ধে ত্বয়ং বিশেষঃ যথা রুদ্র-জামলদ্বিতীয়পটলে—স্বপ্নে তু যদি বা মাতা দদাতি চ স্বমন্ত্ৰকম্। পুনৰ্দীফাং সোহপি কৃত্বা দানবত্বমবাপ্লুয়া**ৎ।** ^{বিদি} ভাগ্যবশেনৈব জননীচ্ছান্তবর্ত্তিনী। তদা সিদ্ধিমবাপ্নোতি তত্র মন্ত্রং বিচারয়েদিতি। এতদ্বচনানি তাদৃশভক্তাতি শয়পরাণ্যপি। যস্থ যত্র ভবেদ্ধক্তিঃ সোহপি মস্ত্রোহস্থ সিধাতীতি রুদ্রজামলচতুর্থপটলবচনাৎ॥ যদ্বা পূর্ণাভিষেকবিষয়ে পরব্রহ্মমন্ত্রস্থ সর্কেষের সাধকেরু সাম্যান্তর্মন্ত্রস্থ বিচারানহ্তর্য়। পুরশ্চরণরসোল্লাস-গুরুদীক্ষাতন্ত্রবচনানি তন্মন্ত্রবিচারে দোষপ্রতিপাদকানি তত্রৈর অভ্যুক্ষ্য মন্ত্রবীজেন পূর্বমন্ত্রপ্রদাপয়েদিত্যনেন পূর্বমন্ত্রপ্রদানপ্রবণাৎ তৎপ্রকরণ্য। পূর্ণাভিষেকপরতা অবশ্যং প্রতীয়তে। তথাচ কুলার্ণবে—বিন্দুরূপং পরং ব্রহ্ম সহস্রদলসংস্থিত্য। সক্রমন্ত্রময়ং সর্কাদেরতাময়মোন্ময়য়্। কোটিসূর্য্যপ্রতীকাশং চন্দ্রকোটিন্ত্রশীতলম্ব কিনিক্তর্ত্রকোণান্তর্মগুলত্রয়মণ্ডিত্য। গুণাতাত্রপ্রবিদ্যাত্রকালান্তর্মগুলত্রয়মণ্ডিত্য। গুণাতাত্রপ্রক্রক্ত্রলনীযুত্রবিভাত্মপ্রব্রক্ষমন্ত্রো যথা। ওঁ সর্বদেবতাময়কুলকুগুলিনীযুত্রিভাত্মপ্রব্রহ্মণে নম ইতি।

বস্তুতন্ত্র পূর্বেবাক্তবচনানি পুরুষানুক্রমোপাসিত-পৈতৃক্ মন্ত্রপরাণি। পত্নী যদি ভাগ্যবশান্তর্ভ্রমন্ত্রং প্রাপ্নুয়াৎ তদ তৎপরাণ্যপি। উপাসিতা যদি ভবেৎ পৈতৃকী পুরুষক্রমাণ্ তদা তদ্যুহণে ধীরো বিচারং নৈব কারয়েৎ॥ ভর্ত্ত্রমন্ত্রুষ্টি বনিতাশ্রয়েন্ত্রাগ্যবশাদ্যদি। তদা ভর্ত্ত্র্বির্চারেণ বিচারোহস্পা ন তু স্বত ইত্যন্ত্রদাকল্পপ্রথমপটলবচনস্বরসাৎ॥ পৈতৃকীরি মন্তর্রপা বিদ্যেত্যর্থং। তথাচ বিশ্বসারতন্ত্রে—মহিষমদিনী মন্তর্মন্ধৃত্য দশাক্ষরীসমা নাস্তি বিভা ত্রিভুবনেশ্বরী। প্রণব্য তথা মায়া ভবেদ্বিভা চতুর্দ্বশীতি॥ তথা ভৈরবতন্ত্রে— কালীবিজিদ্বয়ং দেবি দীর্ঘহ্,কারমেব চ। ত্র্যক্ষরী সা মহা বিলা চামুগু। কালিকা স্মৃতেতি॥ পৈতৃকীতি পুরুষানু-ক্রমারাধিতদেবতেত্যর্থো বা। তদা পুরুষানুক্রমারাধিত-দেবতামন্ত্রাণাং মধ্যে যদি কোহপি মন্ত্রঃ শিষ্যস্থ রাশ্যাদি-চক্রোদ্ধতো ন স্থাত্তদাপি নোপেক্ষণীয় ইতি নিম্নর্যঃ॥

যভু স্বপ্নে বা সদগ্রোঃ স্থানে প্রাপ্তিমাত্রেণ মুক্তিভাক্। তশ্মন্ত্রং বর্জ্জয়িত্বা চ ঘোরান্ধকাররোরবে। বসন্তি সর্বব-কালঞ্চ মম[া]জ্ঞা-বলভাগিনী॥ তত্তিব চক্রসারাদিবিচারং ব্যুষ্তাষণম্। অরিমন্ত্রং মহাপুণ্যং সর্কামন্ত্রোভ্যোভ্যম্। কোটিজন্মাৰ্জ্জিতঃ পুণ্যৈম হাবিচ্যাশ্ৰয়ী ভবেৎ। স্বপ্নে কোটিকুলোৎপর্মৈঃ পুণ্যকোটিফলৈরপি। প্রাপ্নোতি সাধকো দ্রেং ভুক্তয়ে মৃক্তয়ে ধ্রুবম্॥ তত্র মক্ত্রো নো বিচার্য্যঃ বিচার্য্য মরণং ভবেৎ। ইতি রুদ্রজামলপঞ্চমপটলে স্বপ্ন-ৰুক্তমন্ত্ৰদ্য চক্ৰবিচাৱে দোঘদ≚নিং তৎ স্বপ্নলক্ৰমন্ত্ৰদ্যাত্যন্ত-চ্যাগান্ঠতাপ্রয়োজকম্॥ যজপি চক্রবিচারবৈর্থ্যমভিধায় মরিমন্ত্রস্য মহাপুণ্যত্বেন সর্ব্বমন্ত্রোত্তমোত্তমতাপ্রতিপাদনং চদিপি স্বপ্নলক্ষমন্ত্ৰস্য প্ৰশংসাপরম্ নতু প্ৰণবাদিকং বিনা চন্দন্ত্রস্য জপবিধায়কম্ কিন্তু চক্রং বিচার্য্যঞ্থ যদি স্বপ্লে চমৎ-ত্ত্ব। এতেয়াং চক্রবর্গাণাং বিচারাদফীসিদ্ধিদমিতি তত্ত্রৈবা-পদমেব চক্রবিচারে অফীসিদ্ধিফলাবাপ্তিশ্রবণাদিতি দিক্।

অথ সঙ্কল্পবিধানম্। প্রথমখণ্ডীয়দ্বিতীয়পটলে—অস-ল্লিতমতের্বা যন্ধ্যুনাধিকমথাপি বা। ন সম্যক্ ফলভাগ্ভূয়াৎ স্মান্ত্রিমমাচরেৎ।। তাত্রপাত্রং সদূর্ব্বঞ্চ সতিলং জল-ন্ত্রিতম্। সকুশঞ্চ ফলৈর্দ্দেবি গৃহীত্বাচম্য কল্পতঃ। অভ্যর্চ্য শিরঃপদ্মে শ্রীগুরুং করুণাময়ম্। যক্ষেশবদনো বাপি

দেবেন্দ্রবদনোহিপি বা। মাসং পক্ষং তিথিঞ্চৈব দেবপর্ক্য দিকন্তথা। আদ্যন্তকালঞ্চ তথা গোত্রং নাম চ কামিনাম্ ক্রিরাহ্বয়ং করিষ্যেহন্তমেবং সমুৎস্তজেৎ পয়ঃ॥ চাত্র সৌরশ্চ সর্বত্র চান্দ্রঃ স্থাভিথিচোদনে। তথাপি মুগ্য চান্দ্রস্ত গৌণস্ত ক্রুরকম্মণি॥ স্নানে দানে তথাদানে গ্রেষ্ঠ পগ্যাদির প্রিয়ে। মাসো নাক্ষত্রিকঃ প্রোক্তঃ সাবনে: বর্ষপর্ব্বণি। এবং যুগে যুগে প্রোক্তঃ কলো সৌরঃ সর্ববিতঃ। সৌরে মাসি শুভা দীকা ন চান্দ্রে ন চা তারকে। দীক্ষা কার্য্যা প্রযন্তেন শুক্রকুঞ্চবিভেদতঃ।। মুক্তিকাঃ কৃষ্ণপক্ষে ভুক্তিকামঃ সিতে তথা। ভূতিকামেন কর্ত্তকা কুষ্ণে২পাণপ্ৰাদিনাৎ। শুভকালে শুভং সৰ্বমশুভঞ শুভং ভবেৎ। উপরাগে মহাতীর্থে কালদোমো ন বিছত ইতি। তথা পিছিলাতন্ত্রে পঞ্চমপটলে—সোরে মাণ শুভা দীফা ন চান্দ্রে ন চ তারকে। প্রয়োগাদীনি সর্কাণি সৌরেণৈব সমাচরেদিতি।

যগ্নপু্যক্তবচনে বিষ্ণুরোম্ তং সদজেত্যুল্লেখনং নায়ারি তথাপি বক্ষ্যমাণবচনৈকবাক্যতয়া ততুল্লেখনং কর্ত্ব্বানের তথাচ কমলাবিলাসতল্পে তৃতীয়পটলে—বিষ্ণুরোম্ তং সদ্বৈত্যমকে মাসি ততো মুনে ইতি।

অথ স্বস্বাভিলনিত-দেবতামন্ত্রস্ত তত্তৎকরে অনুসঙ্গের গ্রন্থগোরবভিয়া ইহোপেক্ষিতঃ কিন্তুত্র মন্ত্রতন্ত্রানুসন্ধানদেহ বেশাদিলক্ষণম্। মন্ত্রোচ্চারণভেদঞ্চ জ্ঞাত্রা কণ্মাণি সাধ য়েদিতি কুলার্ণবিয়োড়শোল্লাসবচনেন মন্ত্রোচ্চারণভেদজ্ঞান স্থাবশ্যকস্বাৎ ভদ্বিশেনো নিরূপ্যতে। তথাচ পিচ্ছিলাত্র পূর্বগণ্ডে একবিংশপটলে—শ্রিয়োবীজে শকারস্থ ছপ্রতিঃ
পরমেশরি। বধুবীজে সকারস্থ চপ্রতিঃ সাধু জায়তে
অন্যত্রাপি তবর্গাদিচন্দ্রে চপ্রাতিরিয়তে। রেফান্তে ছপ্র্যুতিক্রিবি চন্দ্রবর্ণ সদৈব হি। কূটমন্ত্রোচ্চারণে হি সাকারং
বর্ণসকরেং। সংযুক্তেরু চ বীজেনু স্বর্নোগোহস্তবর্ণকে।
এবং জ্ঞান্থা বিশেষেণ মন্ত্রগ্রহণমাচরেং। অন্যথাক্ষরমাত্রস্থ

স প্রতি চতুর্বর্গাবাপ্তিফলক্ষেন নিত্যত্বেন চ গণেশাদিপঞ্চিবতামন্ত্রগ্রহণরূপ-দীক্ষা কর্তুব্যেতি ব্যবস্থিতম্। তত্রাদীক্ষিতক্ষা দীক্ষাকর্ত্ত্বানধিকারাৎ দীক্ষিত এবাত্যং দীক্ষয়েদিত্তি পরমার্থঃ। অথ যন্মন্ত্রেণেব দীক্ষিতো গুরুঃ সএব যদি
শিষ্যন্ত রাশ্যাদিচক্রোদ্ধৃতঃ স্থাৎ তদা কিং সএব মন্ত্রস্তম্মে
শিষ্যায় দাতব্যঃ কিংবাত্যো বিচারণীয়ঃ।

নালঃ ্রাণাত্তিংপি চ কল্মৈচিন্ন মন্ত্রঞ্চ প্রকাশয়েদিতি
বর্ণনারতন্ত্রবিতীয়পটলবচনাৎ জপকালে তু গোপ্তব্যা
কপ্যালা স্থানাতনা। স্বমন্ত্রঞ্চাক্রমালাঞ্চ গুরোরপি ন
শেরেং। গুরুং প্রকাশয়েং বিদ্বা মতু মন্ত্রং প্রকাশয়েন
দিতি মুগুমালাতন্ত্রবচনেন তন্মদ্রদাতুগুরোরপি পুনঃকথননিবেবেনান্ডেদাং কথনস্থা স্থানুরপরাহতত্বাৎ। মননাত্রাতি
ক্রাহ্মঃ সাধকং ভববন্ধনাৎ। অতোহনুগীয়তেবেদৈ র্মন্ত্রঃ
ক্রার্থিসাধকঃ। তম্মাদ্বিত্যাং সদা মন্ত্রং বত্নেন পরিগোপয়েং।
তথা বীর্যাবতী বিদ্যা নির্ব্বীর্য্যা স্থাৎ প্রকাশতঃ। ইতি
হারাপ্রান্ধিপ্রথমপটলবচনে মন্ত্রং বিদ্যা মক্ষমালাং ন কদান
হিং প্রকাশমেদিতি পিচ্ছিলাতন্ত্রচতুর্দ্রশপটলবচনেন গুরুং

প্রকাশয়েৎ ধীমা ন্মন্ত্রং নৈব প্রকাশয়েৎ। অপ্রকাশপ্রক শাভ্যাং ক্ষীয়েতে সম্পদায়্বী। ইতি কুলার্ণবীয়েকাদশে লাসবচনেন চ দোবপ্রযোজকমন্ত্রপ্রকাশনিষেধাচ্চ॥ এতদ্ বচনার্থস্ত ধীমান্ গুরুং প্রকাশয়েৎ মন্ত্রং যত্নতোগোপয়েৎ। প্রকাশয়েদিত্যর্থঃ॥ বৈপর্বাত্যে দোবমাহ অপ্রকাশপ্রকাশ ভ্যামিতি। এততু গুরুমন্ত্রযোর্যথাক্রমমন্বিতং তেনায়মং সম্পদ্যতে গুরোরপ্রকাশাৎ সম্পৎ ক্ষীয়তে মন্ত্রস্থ প্রকাশাহু আয়ুরিতি॥

ন দিতীয়ং প্রণবাদ্যং ন দাতব্যং মন্ত্রং শূদ্রায় সর্ব্রথা আত্মমন্ত্রং গুরোর্মন্ত্রং মন্ত্রঞ্গজপসংজ্ঞকম্। পিতুর্মন্ত্রং তং মাতুর্মন্ত্রং সিদ্ধিপ্রদং শুভ্মৃ। শূদ্রোনিরয়মাথোতি ব্রাক্ষণে যাত্যধোগতিমিতি রুদ্রজামলীয়দ্বিতীয়পটলবচনে শূদ্রমায়ে সর্বরথা স্বমন্ত্রদানশালুমতত্বাৎ সহিব্যং বা প্রপূদ্রণ বিনেষ্টং দাপয়েন্নচ। লোভাদ্রয়াৎ বা কামান্বা বোদদাং স্বীয়মন্ত্রকম্। শিষ্যস্থ জায়তে সিদ্ধিঃ গুরোঃ শাপঃ প্রজাল ইতি মেরুতন্ত্রদিতীয়প্রকাশে সচ্ছিষ্যস্থপুল্রাভ্যামন্তরেণ স্বীধিন বিষয়েন্দ্রক্ষিত্র তাভ্যাং দানবিধানাৎ। লোভাদ্র্যা কামাবেত্যত্র লোভাদিপ্রযোজ্যদোক্ষত্যা তমন্তরেণ স্বীধিনার বিলাভাদ্রা

উচ্যতে স্বীয়মন্ত্রস্থ শিষ্যরাশিচক্রাদিসিদ্ধত্বে পুনর্^{ন্ত্র্ঞ}্ বিচার্য্য দেয়ঃ। যদি গুরূপাসিতদেবতৈব শিষ্যস্থ ^{কুর} দেবতা তদা তস্থাএব মন্ত্রান্তরং বিচার্য্য দেয়ম্। ^{যদি গু} রাশিচক্রাদিসিক্রং ন ঘটতে গুরূপাসিত্রমন্ত্রোবা শিষ্যস্থ ^{কুর} মন্ত্রনা শূদ্রেতরসচ্ছিষ্যসৎপুক্রয়োর্ম মান্নং মন্ত্রস্ত্রতাং দীয়তে ইতি প্রকাশমন্তরেণ স্বীয়মন্ত্রো দেয়ঃ পূর্ব্বোক্তরুজামল-মেরুতন্ত্রবচনাভ্যাং তিদ্বিধানাৎ ॥ তদপি নাে লােভাদিনা লােভাদ্রয়াদ্বা কামাদ্বেতি পূর্ব্বোক্তমেরুতন্ত্রবচনাৎ ॥ কুলার্ণবিতারাপ্রদীপমুগুমালামন্ত্রবচনৈস্ত্র স্বীয়মন্ত্রপ্রকাশএব নিষিধ্যতে ম তু তদ্দানং; ত্রচনেরু—ম তু মন্ত্রং প্রকাশয়েদিতি যত্নেম পরিগোপ্রেদিতি, মন্ত্রং যত্নেম গোপ্রেদিতি চ প্রবণাৎ ॥ তদ্দানক্ষ রুদ্রজামলমেরুতন্ত্রবচনেক্বাক্যতয়া শুদ্রেতরসচ্ছিষ্যসংপুক্রবিনয়কম্। তদিতরেভাস্ত্র তাদৃশস্থলে স্বপুক্রদ্বারা স্বায়মন্ত্রো দাপ্রিতব্যঃ ॥

যতু অনাস্থা গুরুপাদের মন্ত্রপ্রকথনে তথা। বহুলোকানিযোণের মন্ত্রঃ কাপি ন সিধ্যতীতি তারাপ্রদীপবচনেন
ন্ত্রপ্রকথননেব নিষিদ্ধং তৎ মমায়ং মন্ত্র ইত্যাকারকবাক্যমরোগাল্বক বৈশেষবিজ্ঞাপনপুরঃসরপ্রকথনপরম্। অন্যথা
নাৎ স্বালমন্ত্রোজারণে কৃতে মন্ত্রস্থা বীর্যহানিপ্রসঙ্গং স্থাৎ।
স্থাহি তন্ত্রদাঁপিকাপ্পতম্—প্রকাশাদ্যদি গুপ্তিঃ স্থাৎ তৎকাশান্ন দুযণমিতি। ইতি সর্বাং স্প্রসিদ্ধম্॥

অথ যদি গৃহাত্মন্ত্রমালস্থাৎ প্রমাদাদা ত্যজতি অথবা

ব ক্রচিৎ কথনেন তন্মন্ত্রং হীনবীর্য্যত্বং প্রাপয়তি তদা

কর্ত্রিত্বং তদাহ সময়াচারতন্ত্রে হ্উমপটলে—গুরোহাত্মন্ত্রঞ্চ জপ্ত্রা ত্যজতি সাধকঃ। হুইটাচারাৎ প্রমাদাদা

অগ্যাদ্বাপি স্থন্দরি। সঙ্করস্য গৃহীতস্থা কথিতং যত্র ব্রিচিৎ। হীনবীর্য্যবাপ্নোতি মন্ত্রাদিকং বরাননে।

ত্যাদি দোসশান্ত্যর্থং বিধানং শৃণু স্থন্দরি। প্রথমং জননং নাম জীবনন্ত দ্বিতীয়কম্। তৃতীয়ং তাড়নং দেবি চতুর্গং বোধনং তথা। পঞ্চমঞ্চাভিষেকস্ত বিমলীকরণঞ্চ ষট্। আপ্যায়নং সপ্তমঞ্চ অফসং তর্পণং মতম্। দীপনং নবসং প্রোক্তং গোপনং দশমং ভবেৎ॥ কথিতা তব দেবেশি দশৈতা মন্ত্রসংক্রিয়া ইতি।

অথ মন্ত্ৰাণামভক্ত্যাদ্যঊদোশানাহ॥ মাতৃকাভেদতত্ত্ৰ দাদশপটলে—মন্ত্ৰচ্ছিন্নং প্ৰবক্ষ্যামি শৃণু দেবি সমাহিতাঃ অভক্তিশ্চাফরে ভ্রান্তিঃ লুপ্তশ্ছিন্নস্তথৈব চ। হ্রাস্তা দার্যশ্চ কথনং সপ্লে তু চাইটা স্মৃতা ইতি॥ অদ্যার্থঃ—অভিভ র্মন্ত্রেষকরবুদ্ধ্যাদিরূপা। তত্ত্তং কুলার্ণবে দ্বাদশোল্লাদে— গুরো সনুযাবৃদ্ধিন্ত মন্ত্রে চাক্ষরভাবনাঃ। প্রতিমান্ত 🙌 বুদ্ধীঃ কুর্বাণো নরকং ব্রজেদিতি॥ দেবতান্তরমন্ত্রপ্রশাস স্বমন্ত্রস্থাফল হবুদ্যাদিরূপা চ। ১॥ সক্ষরে ভ্রান্তিও ক্রে শিদ্যস্থ বা ভ্রান্ত্যা মন্ত্রেয়ু বর্ণ বৈপরীত্যং বর্ণাধিক্যঞ্চ। : লুপ্তঃ, মন্ত্রেয়ু বর্ণন্যুনত্ব্য । ৩ ॥ ছিনঃ, মন্ত্রান্তর্গত-যুক্তবর্ণক্ষে ন্যুনসম্। ৪॥ হ্রস্কঃ, দীর্গস্থানে হ্রস্প্রোগ্যা ৫॥ 🎉 **হ্রস্থানে দীর্ঘপ্রাগেঃ॥ যদ্যপ্যেতদোষ্যা**রকরভান্তা ভূতিয়েন পৌনরুক্তাং স্যাৎ, তথাপি এতদ্বোলয়েঃ পুণর্ প্রায়শ্চিত্তস্ম বক্ষ্যমাণস্থাৎ অক্ষরভাতিস্তদিতর্থিনয়। ৬। কথনমন্যেরু স্বীরমন্ত্রপ্রকাশঃ। ৭॥ স্বপ্নে দ্বিতি স্বণ্নে ত্রাক্ষ রূপিদেবেন স্বীয়মন্ত্রস্থা প্রহরণং তাস্থান্ স্বীয়মন্ত্রপ্রকাশ ইজি যাবе। ৮॥

ক্রমেণ এতদ্দোনজন্যানিন্টদলান্যাহ তাত্রেব—অভজ নৈব সিদ্ধিঃ স্থাৎ কল্পকোটিশতৈরপি। এবং মন্ত্রশচান্য বা চেতি ভ্রাস্তা হি বাতুলঃ। লুপ্তবর্ণে বৃদ্ধিনাশশ্ছিমে
নাশোভবেৎ কিল।
ইস্বোচ্চারে ব্যাধিযুক্তো দীর্ঘজাপে
বিপ্ঃক্ষয়ঃ। কথনে মৃত্যুমাপ্রোতি স্বপ্নে তু শৃণু শৈলজে।
কালিকারাশ্চ তারায়া মন্ত্রোহিপি জ্বলদন্নিবৎ। বিপ্ররূপেণ
দেবোহিপি প্রেমভাবেন চেতসা। যদি মন্ত্রং হরেদেবি শৃণু
সাধকলক্ষণম্। সর্ব্বাঙ্গে বৈ ভবেৎ জ্বালা দেহমধ্যে বিশেগতঃ। তোয়ে শৈত্যং ন জায়েত তথৈকোষধ্যেবনে। সদা
বাত্বলবং সর্ব্বং প্রত্যক্ষে স্বপ্রবদ্ধবেং। বর্ষমধ্যে ত্রিবর্ষে বা
মৃত্যুক্তস্থ ন সংশয় ইতি।

তত্রাভক্তিজন্মদোষশান্তিমাহ তত্রৈব—বহুজাপাৎ তথা ছোমাৎ কায়ক্লেশাদিবিস্তরাৎ। যদি ভক্তির্ভবেৎ দেবি তস্থ্র শিক্ষাদুরত ইতি। ১॥

অকরপ্রতিজন্যদোষশান্তিমাহ তত্ত্রব—গুরুণা তৎতত্ত্বি শেষকেন বরাননে। অক্সরে দূষণং হিত্বা পুনর্ম প্রথ প্রশানমেদিতি। অস্থার্থঃ গুরুণা তদভাবে তৎস্তত্তেন তথ্যান তল্লকণাক্রান্তসাধকেন অক্সরে অক্সরবিধয়ে দূষণং বৈপরীত্যরূপমাধিক্যরূপঞ্চিত্রা মোচয়িত্রা পুনর্ম প্রথান শ্রেই সাধক মায়নীতি শেষ। হিন্নেত্যভর্তু তেণর্থো বৌদ্ধব্যঃ। গুরুণেত্যাদিকন্ত প্রয়োজ্যসবধেয়ম্। ২॥

লুপ্তদোষশান্তিমাহ তত্রৈব—গুরুণা তৎস্ততেনৈব সাধ-কেন সমাহিতঃ। লুপ্তবর্ণং সমুখাপ্য পুনমন্ত্রং প্রকাশয়েদিতি। প্রকাশয়েদিতি সাধক আলুনীতি শোষঃ। স্পাফীর্থমন্তৎ। ৩॥ িন্যদোসশান্তিমাহ তত্রৈব—চক্রতেদেন সট্কেন তথৈব

ব্যানিসন্ত্রা। একে।চলাতে জপেক্সন্তং লফ্ডমেকং বরাননে।

গুৰ্ববাদিনা মহেশানি ছিল্পদোষ্য নিকুন্তনমিতি। অস্তাৰ্থ: ছিন্নবর্ণনিতি সমূহ পূর্বে। ক্রং সমুখাপ্যেত্যকুষজ্যতে। গুৰ্বাদিনেত্যাদিনা তৎস্তুতসাধকান্তরয়োগ্রহণং প্রথমং গুরুণা তদভাবে তৎস্থতেন তদভাবে তদুযোগ্যসাধকেন ছিন্নবৰ্ণ সমুখাপ্য ষট্কেন চক্রভেদেন মূলাধারোৎপন্নমন্ত্রবর্ণানাং মূলাধার-স্বাধিষ্ঠান - মণিপুরকানাহত - বিশুদ্ধাজ্ঞাথ্য- ষট্চক্রান্ত পতি-ত্রন্ধাখ্যশিরাবলুনা ত্রন্ধরন্ধুপর্যন্তং গমনাগমনাভ্যাং ষট্চক্রতেদেন তথৈব যোনিমুদ্রয় অপানবারোর্ক্ষ্য কর্বার্থং পাঞ্চিভাগেন গুদসহিতগুদমেচ্বাত্র যোনিস্থান বন্ধনরূপমুদ্রণেন। তথাচোক্তং রাঘবভট্টপ্লত যোনিমূদ্র-্লকণ্ম্—পাঞ্চিভাগাৎ স্থসংগীড়া যোনিমার্গং তথা গুদ্ম্। অপানমূৰ্দ্ধনাকৰ্ষেৎ মূলবন্ধো নিগদ্যতে ৷ গুদমেঢ়ান্তরং যোনিস্তামাকূচ্য প্রবন্ধয়েং। যুবা ভবতি রূদ্ধোহপি সতত মূলবন্ধনাদিতি। যোনিস্থানবন্ধনাৎ যোনিমুদ্রেত্যভিধানমস্তঃ তদাহুঃ—সেয়ং ময়োক্তা খলু যোনিমুদ্রা বন্ধশ্চ দেবৈর্গি ত্বৰ্লভোহস্ঠাঃ। অনেন বন্ধেন ন শোধ্যতে যন্নাস্ত্যেব তং সাধকপুঙ্গবস্থেতি। প্রকারান্তরযোনিমুদ্রা তু মৎকৃতপুরু *চরণবোধিন্যামনুসন্ধেয়া। একোচ্চারে ইতি তৃতীয়া^{থে} সপ্তমী। ন দ্রুতং ন বিলম্বঞ্চ জপেন্মোক্তিকহারবদিতি স্মরণাৎ দ্রুতবিলম্বরহিত-সমুচ্চারেণেত্যর্থঃ। একং লক্ষং মন্ত্রং জপেৎ সাধকইতি শেষঃ। নিকৃন্তনমিতি নিকৃন্ত্যতে যৎ তন্নিক্স্তনমিতি কর্মণি লুটে। উক্তপ্রকারেণ ছিন্নদৌষ মন্ত্রান্তর্গতিযুক্তবর্ণৈকদেশনূচনত্বরূপমন্ত্রচ্ছিন্নজাতদোয়ং নিকৃত্তক ছিদ্যোন কুৰ্ব্যাদিতি শেষঃ। ৪॥

হ্রস্বদীর্ঘদোষশান্তিমাহ তত্রৈব। গুরুণা লক্ষজাপেন তন্মন্ত্রং শ্রাবয়েল্রিধা। দূযণে ব্রস্বদীর্ঘস্ত শান্তির্জাতা ন সংশয়ইতি। অস্থার্থঃ গুরুণেতি তৎস্ততদ্যোগ্যসাধকয়ো-রপুপেলক্ষকম্। ব্রস্বদীর্ঘবৈপরীত্যমিতি সমূহ্য পূর্বে।ক্তসমু-িখাপোত্যমুবজ্যতে। তম্মন্ত্রং ব্রস্বদীর্ঘবৈপরীত্যবিহীনমন্ত্রং গুরুণাত্মানং ত্রিধা শ্রাবয়েৎ সাধক ইতি শেষঃ। শ্রাবয়ে-দিত্যত্র প্রয়োজকেণন্তাৎ পুনরিণ্, গুরুণেতি প্রয়োজকস্ম প্রয়োজ্যহান্ন কর্ম্মতা। ততঃ স্বয়ং লক্ষজাপেন হ্রস্থদীর্ঘস্ত দূষণে ব্লন্দ্রীত্যজনিতদূষণে শান্তির্জাতেতি। ৫।৬। অন্যেগু স্বমন্ত্রকথনে দোষশান্তিমাহ তত্ত্রৈব—শুরুণা তৎস্থতেনৈব সাধকেনৈব শৈলজে। উক্তমার্গেণ দেবেশি• জপেল্লক্ষততুষ্টয়ম্। তদ্দশাংশং হুনেৎ পশ্চাৎ তর্পণাদি সমাচরেৎ।। ততোহপি যদি নৈবাভূৎ সাধকঃ স্থিরমানসঃ। চহুগুণস্ত কর্ত্তব্যং শিষ্যস্থ মুক্তিহেতবে॥ যদি মৃত্যুর্ভবেত্তস্থ তথাপি মুক্তিভাগ্ভবেং! কথনস্ত দোদশান্তিৰ্ভবত্যেব ন সংশ্য় ইতি। অস্থার্থঃ অত্রাপি গুরুণেত্যাদিকং পূর্ব্বপূর্ব্বা-ভাবে অনম্ভরোক্তেন তৎস্তাদিনা উক্তমার্গেণ যট্চক্রভেদা-ছ্যুক্তপ্রকারেণ দ্রুতবিলম্বরহিতসমূচ্চারেণ চ লক্ষচতুষ্টয়ং জপেৎ সাধক ইতি শেষঃ। গুরুণেত্যাদীনাং প্রযোজ্যত্বেহপি সৈন্মেন যুধ্যত ইত্যাদিবং করণতৈব। যদ্বা জপেদিত্যত্রান্ত-ৰ্ছ তেণৰ্থতা স্বীকাৰ্য্যা। জপধাতোঃ ব্ৰুবৰ্থত্বেহপি তত্ত্ৰেণ-প্রয়োগাভাবাৎ গুরুণেত্যাদীনাং ন কর্ম্মতা। গুর্বাদিনা জপস্ত শিষ্যস্থ মুক্তিহেতবে ইত্যনন্তরোক্তেন স্থব্যক্তএব। ব্যক্তার্থমন্তং। ৭॥

স্বপ্নে স্থায়মন্ত্রপ্রকাশজনিতদোষশান্তিমাহ তত্ত্বৈ—
স্বপ্নেইপি মন্ত্রকথনে শ্রাশানে সাধনং চরেৎ। উক্তমার্কে
দেবেশি জপেল্লকচতুইন্তর্য়। তদ্দশাংশং হুনেৎ পশ্চাং
তর্পণাদি সমাচরেৎ॥ ততােইপি যদি নৈবাভূৎ সাধক
ফিরমানসং। চতুগুণংহি কর্ত্তব্যং পূর্কেবাক্তং পূজনং চরেৎ
কুজে বা শনিবারে বা প্রথমে গমনক্ষরেৎ। সপ্তাহং বা জপ্রে
দেবাং ভুরীয়ং বা দিনং জপেৎ॥

শ্মশানসাধনং বক্ষ্যে শুণু চৈকাগ্রচেতসা। সর্পং রৌপ্য তথা বস্ত্রং দত্ত্বা বরণমাচরেৎ। স্বর্ণপীঠং প্রদাতব্যং চতুরস্কৃত্ বিস্তৃত্য । ভোগবোগ্যং প্রদাতব্যং মধুপুকং বথোচিত্য । রাজ- পত্নী যেন তুষ্টা তোক্ষয়েত্তেন বাসদা। অলঙ্কারং যথায়ে। তত্র তত্র নিযোজয়েং। নৈবেদ্যং বিবিধং র্ম্যাং নানাদ্রব্য সম্বিত্য। সামিধানং গুড়ং ছাগং স্থরাপিউকপায়সম্। ভোগদ্ৰ্ব্যং জলে সৰ্ববং যদি ভোক্তা ন তিষ্ঠতি॥ এক পূজাং সমাপ্যাদে শিবপূজাং সমাচরেং। বোড়শৈরুগ চারৈশ্চ লিঙ্গানাঞ্চিকবিংশতিম্। অফৌতরশতেনৈব বিহু-পত্রৈঃ সচন্দনৈঃ। প্রত্যেকং প্রজপেনস্ত্রং গজান্তকসহস্রকন্। সহস্রং হোময়েৎ পশ্চাদ্বিপত্রের্বরাননে। এবং কুতে লভেছাতিং দীর্ঘায়ুর্নাত্র সংশয় ইতি। অত্রাপি স্বয়মসমূর্ণে গুর্ববাদিনৈতৎ কার্য়িতব্যম্। উক্তমার্গেণেতি পূর্ববন্দে বেদিতব্যং তুর্রায়মিতি পূরণীপ্রত্যয়!ন্তার্থো ২বিবঞ্জি দিনচতুক্টয়মিত্যর্থঃ! দিনচতুক্টয়াপেক্ষয়া সপ্তাহস্থাধিক্যাং পুর্ব্বোভেইপি দিনচতুষ্টয়ে যদি সাধকঃ স্থিরো ন স্থাতদা সপ্তাই জপেদিতি ব্যবস্থিতেশিষ্যং বিকল্পঃ॥ <mark>অত্র শ্রাশানা</mark>ধিকরণ^ক

পূজা প্ররাদানঞ্চ বামাচারবিষয়ম্। দক্ষিণাচারিণাস্ত শ্যামাপ্রদাপপ্রতজামলে—শ্রীপার্ববিষয়ম্। দক্ষিণাচারিণাস্ত শ্যামাপ্রদাপপ্রতজামলে—শ্রীপার্ববিষয়ম্। দ্বা যত্তং তৎ সর্বাং
কগরন্ধ বিশেষতঃ। স্বয়স্কুকুস্তমং কিংবা কিংবা শুক্রং মহানতে। কোবা শবো মৈপুনং কিং কা শুচিশ্চাশুচিশ্চ কা।
কা বা যোনিস্তথা শব্যা কিং বা মেপুনসম্ভবম্। কিং বা
শ্রানং কেশং বা কিয়ক্তং মৎস্থামাংসকম্। ভগনীতিং লিঙ্গনরশন্তাং মহেশর। মত্যঞ্জ বিবিধাকারং কথয়স্বান্ত্রন্থা। অথ এয় দিতীয়ানা-মধিকারঃ সনাতনঃ। অগ্রাহ্যা
চ অপেয়া চ স্থরা চৈব দিজাতিভিঃ। ইত্যাখ্যাতং ত্রা দেব
স্বারণ সংশারিতং মম॥

্রিনহাদেব উবাচ। দেধা মার্গো মহাদেবি বামদক্ষিণ-ভেন্তঃ। যশ্মিন্ মতে য আচারস্কত্র ধশ্মস্ত তাদৃশঃ। কুতার্থ-তেন জায়েতে স্বর্গোবা মোক্ষএব বা॥

দাক্ষণস্থা বিধিকৈব শৃণুষ কমলাননে। স্বয়ন্তুক্সমং দেবী

রক্তচন্দনসংজ্ঞকম্। কাকচক্ষুরিতি খ্যাতং সর্থপক্ষেত্র
নিত্তব্য: মথিত্বা দধি যৎ কুর্যান্নবনীতং মহেশ্বরি। শুক্রং

হোদেবি শ্বাসনমুদাহৃতম্। ওড়ুপুস্পং স্থরেশানি দ্যাগুলিযোগতঃ। মৈথুনং কথিতং দেবি কথ্যতে চাশুচিঃ

প্রেয়। ভোজনানন্তরং পূজা সা পূজাশুচিসম্ভবা। যোনি
নিগং মহাদেবি যোনিশ্চাত্রাভিধীয়তে। উত্তরাভিমুখীভূয়

গুলিয়েজ্জগদন্বিকাম্। শ্যাসংজ্ঞং সমুদ্দিষ্টং সর্ববতন্ত্র
দম্বিত্য্। কর্কচ্ছপিকাং কৃত্বা দ্যাৎ পুষ্পাঞ্জলিত্রয়ম্।

ক্থিতা দেবদেবেশি পূজা মৈথুনসম্ভবা। অপরা পুষ্পার্মে

তু কুলস্থানং মনোরমম্। হয়ারিকুস্তমে দেবি স্বয়মস্তি দদ্ শিবঃ। হয়ারো লঘু সংযোজ্য চাপরা কাপি সংযুতা। যোজয়েচ্ছিবশক্ত্যোৰ্কা চৈক্যং সম্ভাবয়ন্ ধিয়া॥ শ্মশান শুণু দেবেশি যদ্ধক্তং ভৈরবপ্রিয়ম্। শূক্যাগারং তথারাফ শাশানং সমুদীরিতম্। কেশঞ্চ বিল্পপুষ্পং স্থাৎ রক্তঞ্চ রক্তচন্দনম। দধি দুগ্ধং পায়সঞ্চ নবনীতং তথা মধু। শকরা-পনসামাণি মভং মাংসমুদাহৃতম্। দুগ্ধং কুস্মাওথওঞ্চ মাংসং মগ্যঞ্চ মার্কিকম্। সমারুহৈকরকত্ত ততোহগুত্র-গতা লতঃ। তদ্যোগে যভু কুস্থমং কুণ্ডং তৎ পরিকীতিতম্। পুষ্পাং য়ং ততু গোলাখ্যং মহাদেব্যা মহৎ প্রিয়ম্। অথবোড্রক কুস্থমং কুগুপুপামূদাহৃতম্। বর্বারাকুস্থমং দাক্ষাৎ গো পুষ্পং প্রকীতিতম্। সর্বকালোদ্ভবং বিদ্ধি চন্দ্রসূর্য্যমণিপ্রভ স্বয়ন্তুকুস্তমং তত্ত্রে কচিদ্ ভূচম্পকং স্মৃতম্। ভগগীতিস্তং স্তোত্রং লিস্পীতির্মম স্তবঃ। বৈশ্বামিত্রস্ত যৎ পাত্রং নর শুখুমুদাহতমু। ১ শৈখং কচিৎ প্রোক্তং দক্ষিণাবর্ত্তশুখুক্যু অয়স্তাত্রসয়ং দারুসম্ভবঞ ত্রিধা মতম্। নরাস্থিমালিকা দে^{নি} শন্মালা প্রকার্তিতা। স্ফাটিকা বা মহেশানি ভবেত্তৎ ক্রা-শোদিতা। নিঃমেহাস্থিপরিস্পর্শে ন দোযস্তন্ত্রসম্মতঃ। বলি দানং মহেশানি কথিতং চতুরপ্রিয়ম্। তত্ত্ব সর্বত্ত দাতব্যং দ্ তুগ্ধং তথা মধু।। কৌকুটং মাহিয়ং যত্ৰ মাংসমৎস্থাদিকভ নাকুলং মৃষিকাদীনি তত্র ছুঋং নিবেদয়েৎ। ছেদনং মারা যত্র জন্ত,নাং সমুদারিতম্। আচ্চৈর্যজ্ঞবিশেষেণ তত্র কুষা দনশুধীঃ॥ এবং ক্রমেণ যা পূজা সান্থিকী সা প্রকীভিত। প্রশস্তা দা বিক্বাড়ী নাং প্রত্যক্ষাঃ পশবো হি তে ইতি।

ইং দক্ষিণাচারিণাং স্থরা নোক্তা সা কুলাচারবিচারে২কু-সন্ধ্রো। ভোগ্যদ্রব্যং জলে সর্ব্বমিতি ক্ষিপেদিতি শেষঃ। গঙ্গান্তকসহস্রকম্ অফৌতুরসহস্রম্।

যতু ব্যানমূলং গুরোম্ তিঃ পূজামূলং গুরোঃ পদম্। মূল-মল্লং গুরোব্রাক্যং মোক্ষমূলং গুরোঃ কপেতি কুলার্থবাদশো-লগেবচনে গুরুম্থনিগতিস্থাপি যস্ত কস্থাপি বর্ণস্থ মহা-মলুফ্লার্ডনং তথাহামজ্বৎ গুর্বাজ্ঞাপ্রতিপালনবিধায়কং নত্ তথালামক্রলান্ত্যাদিদোয়ত্ব্বৈহ্পি তথাল্ঞাণামেব জপাদিবিধায়ক্মিতি দিক্।

অথ দৈবাদ গৃহীতবহুসন্ত্ৰসাধকস্ম ইতিকৰ্ত্তব্যতামাহ
সময়চারতন্ত্ৰে অফ্নপটলে। বহুমন্ত্ৰী যদা দেবি সাধকো
দৈবদেৱগতা। তত্ৰ কস্ম জপং কুৰ্য্যাৎ পূজনাদিকমেব চা
সৰ্বদেৱনমন্ত্ৰীয়ং নিত্যং কুৰ্য্যাৎ প্ৰযন্ত্ৰী। জপাদিকস্ত তাস্থৈব যত্ৰ শক্ষা প্ৰজায়তে॥

অথ সন্ত্রদাতুর্দক্ষিণাদাতৃদ্ধ মন্ত্রগ্রহীতৃশ্চ দক্ষিণাগ্রাহিত্বসালাত্ব ত বৈপরাত্যমিতি চেৎ এতৎকশ্মণঃ খলু দক্ষিণা
বাচনিকা গুরুবে শিষ্যস্থে আরাতু বা গুরোদানদক্ষিণাদাতৃত্বং
শিষ্যায়ান্তাম্মৈ বা শিষ্যস্থ গুরুবে বাচনিক্যুপদেশদক্ষিণা
কেন বারণীয়া। বস্তুতস্ত অত্র দানপদং ভাক্তং মন্ত্রে কস্থাপি
স্বর্গাভাবাৎ স্ত্রীশুদ্রাদীনাং সম্প্রদানসাভাবাচ্চ। নমু দক্ষিণাগাৎ গুরোর্মন্ত্রবিক্রগ্রিত্মস্থিতি চেৎ ক্রমঃ। মস্ত কুর্জাপা
গাৎ গুরোর্মন্ত্রবিক্রগ্রিত্মস্থিতি চেৎ ক্রমঃ। মচ কুর্জাপি
বিরুধ্বিভাষ্তর্গনকমূল্যগ্রহণং হি বিক্রয়ঃ। নচ কুর্জাপি
বিরুদ্ধ কম্থাপি স্বত্বং স্বত্বধ্বংশো বা জায়তে ন বা মন্ত্রস্থ

অতএব শিষ্যদত্তদ্রবাদের্দক্ষিণাসমূচ্যতে ন তু মূল্যস্থং দক্ষি চোপদেশকশ্বণঃ সাঙ্গতার্থং সন্তোযার্থঞ্চ গুরুবে দেয়ৈবেহি সর্বাং রমণীয়মিতি।

দক্ষিণাদাননিয়মস্ত গুরুতন্তে চতুর্থপটলে—সিদ্ধমন্ত্রো হং হি গচ্ছ শীস্রং নিজালয়ম্। ইত্যাদ্যুক্তে গুরো দে শিয়োহপি দত্তদক্ষিণঃ। বিভবস্থানুরপেণ সর্বস্বং ব নিবেদয়েং। তদর্কিং বা তদর্কং বা অর্জনস্থার্দমেব বা র্গান্ পরিত্বক্তাংশ্চ উদ্বর্ত্তা যচ্চ জায়তে। তদেব গুরুদেব প্রত্যক্ষায় শিবায় চ। দল্গাদিতি শোনং। ২৬,নেন বিজ্বাসুসারাদরেশেন যং কিঞ্চিদানমেবানুমতম্। বিভক্তানুরপেণ ইত্যপক্রম্য স্বর্গান্ পরিত্বক্তাংশ্চ উদ্বর্ত্তা যা জায়তইত্যুপসংহারাং।

যত্ত্ব সর্বব্দং গুরুবে দলাভদদ্ধং বা তদাজ্ঞয়েতি। তঃ
সারপ্লতবচনে সর্বব্দানং গুরুবাজ্ঞয়া তদৰ্দ্দানঞ্চ বিকলে
নোক্রং তস্পায়মভিপ্রায়ঃ। উক্তবচনে বাশন্দো ব্যবস্থিত
বিকল্পাথঃ তেনায়মর্থোভবতি দর্বব্দানং গৃহস্থাতি
নির্মেণ্
ব্যবস্থিতম্ অর্দ্দানস্ত গৃহাস্থাঞ্জমে ব্যবস্থিতম্ অন
শব্দঃ পুংলিঙ্গঃ সচ যৎকিঞ্চিদংশবাচকঃ, ভিত্তং শকলপা
বা পুংস্থাদ্দোহদ্দানক ইত্যমরকোষাৎ। তদাজ্ঞয়ে
তদক্ষং বেতাত্রেবান্বিতং ভোঃ শিষ্য কিঞ্চিৎ দীয়তানি
গুর্বাজ্ঞয়েত্যর্থঃ। তেনৈত্বচনেনাপ্যক্ষেশতঃ শিসেছে
যৎ কিঞ্চিদেব দানং প্রতিপাদিতম্। যথাশ্রুকার্থসরগ্রহণে ই
সর্বেষাং গৃহস্থানাং সর্বব্দানেন তৎক্ষণাদেব তদাশ্রমলোপ্র

স্যাৎ। যদ্বা সর্ববিষদানং তদৰ্দ্ধং বা তদাজ্ঞয়েতি বিধানং তাদুশগুরুবিষয়ে বোধ্যম্।

ওরুলক্ষণং যথা সনৎক্মারতন্ত্রে একাদশপটলে—অমোঘবচনঃ শান্তো বেদবেদাঙ্গতৎপরঃ। যোঢ়ামাগান্তুসন্ধারী
দেবতাহ্বদয়ঙ্গমঃ। ইত্যাদিগুণসম্পন্নো গুরুর্ভবতি সম্মতইতি॥ তথা কুলার্ণবে ত্রয়োদশপটলে—আজ্ঞাসিদ্ধিস্ত্রিকালজ্ঞো নিগ্রহানুগ্রহে ক্ষমঃ। বেধকো বোধকঃ শান্তঃ
সর্বর্জীবদয়াপরঃ। তুল্যনিন্দাস্ততিশ্মোনী নিরপেকো নিরাঃ। ইত্যাদিলক্ষণোপেতঃ শ্রীগুরুঃ কথিতঃ প্রিয়ে ইতি।
নিবন্ধেহন্টমপটলে—পাশযুক্তঃ পশুঃ প্রোক্তঃ পাশমুক্তঃ
সদাশিবঃ। স পাশিভিগতে যেন সহি সদ্গুরুরুক্তাতেইত্যাদি। বহুনি সন্তি তৎপটলেহন্যত্রাপি দ্রন্টব্যানি।

বস্তুতস্তু স্থান্ত্যা বং কিঞ্চ্দিক্ষিণাদানস্থাবশ্যকত্বম্। তত্ত্তং বিশ্বসারতন্ত্রে দিতীয়পটলে—গুরোলক্ষমনুদ্যাৎ স্বর্ণদিক্ষিণাং প্রিয়ে। অবশ্যং স্বর্ণং গুরবে দ্যাচ্চ বিধিনা স্বধারিতি সর্ববং স্তসমঞ্জসম্।

অথৈকদেবতামন্ত্রগ্রহণে সর্ব্বতাধিকারিতা ন পুনর্দীক্ষা-হণম্। তত্তক্ত পিচ্ছিলাতন্ত্রে পূর্ববথণ্ডে একবিংশতিপটলে —একদা জন্মমরণমেকদা মন্ত্রবীক্ষণম্। একমন্ত্রদীক্ষণং হি সর্ব্বমন্ত্রেহধিকারিতা। ন তত্র দীক্ষাগ্রহণং সর্ব্বনাশভয়া-|দিহেতি।

অথ ছুরদৃষ্টবশান্মন্ত্রবিশ্বতো গুরো দেশান্তরগতে মৃতে
বা উপায়মাহ কালীবিলাসতত্ত্রে তৃতীয়পটলে—শ্রীদেব্যবাচ।
দত্ত্বা মন্ত্রং তথা বিভাং: এফর্দেশান্তরং গতঃ। শিষ্যৈও রু-

মুখাচ্ছু জা মন্ত্রো বিল্লা চ বিশ্বৃতা। কিং কর্ত্তব্যং তদা দেঃ শিন্যোণ বদ সাম্প্রতমিতি দেবীপ্রশানন্তরং শিববাক্যম্ তৎপুরুষ উবাচ। শ্রুত্বা চাত্যতরস্থাস্থাভান্ত্রিকস্থ স্থরু ফিতে। পূৰ্ব্ববিচ্যাং তথা শ্ৰুত্বা জ্ঞা**হা সিদ্ধীশ্বরো**ভকে দিতি॥ তথা গুরুপুত্রাদিনা তদভাবে <mark>তদ্বংশজাতেনা</mark>ন্যে নাখিলেরু মন্ত্রজাতেষ্ট্রতেষু স্বযন্ত্রস্থ শ্রবণাদবশ্যং স্মৃতি-জ যিতে প্রচুরতুরদৃষ্টবশেন তত্রাপ্যনিশ্চয়ে তদ্দেবতামন্ত্রান্তর গৃহ্লীয়াৎ। তত্রাপ্যতিত্রদৃষ্টবশাদেবতাবিশ্বতো গহুৰু দেকে ষুচ্চরিতের্ যদি স্মতিজায়তে তদা তখতে গৃহীয়াং তত্রাপি দেবতাস্মতেরভাবে যত্র প্রচুরতরভক্তিঃ দৈবে-পাস্থা। স্বান্তঃকরণরুত্ত্যে যত্র শ্রন্ধা গরীয়দী। দৈনে পাস্থা প্রয়ন্ত্রেন বিচারস্তত্র নিষ্ফল ইত্যমদাকল্পীয়াৎ যেষাং যাসাং দেবতানামিচ্ছা তিষ্ঠতি চেতসি। তন্ম গ্রহণাদেব অক্টেশ্বর্যযুতো ভবেদিতি রুদ্রজামলচতুর্থপটন বচনাচ্চেতি দিক।

অথ প্রসঙ্গাদ্দীক্ষানন্তরং গুরুষু শিষ্যেতিকর্ত্তব্যতা আদ্ ক্ষাতে। বরদাতন্ত্রে পঞ্চমপটলে—গুরোরত্রে পৃথক্ পৃঞ্ মৌদ্ধত্যঞ্চ বিবর্জ্জয়েৎ। দীক্ষাং ব্যাখ্যাং প্রভুষণ গুরো রগ্রে বিবর্জ্জয়েৎ। ব্রাক্ষণাং ক্ষত্রিয়া বৈশ্যাঃ শূদ্রাশ্চ বরবর্ণিনি ভূঞ্জীরন্ বিবিধৈর্ভক্ত্যা গুরোরুচ্ছিক্টযুত্তমম্। গুরোরুচ্ছিক্ট ভূগেদবি পুজরেৎ সর্বাদেবতাং। গুরোঃ পাদোদকং পৃষ্ ভক্ত্যা চ শিরসা বহন্। কাশ্যাদিসর্ববর্তীর্থাণাং কলং কোলি গুণং লভেৎ। পুষ্পং বা বদি বা পত্রং শ্রীনাথে ভক্তিত্থে দদৎ। মেরুত্বাস্থবর্ণস্থা দানস্থা ফলমাপ্রুয়াৎ। যদ্যদাক্ষ প্রিয়ং বস্তু তৎ সর্বাং বিনিবেশ্য চ। দেবতাগ্রীতিমালভ্য পরং নিব্বাণমাপ্নুয়াৎ। গুরুং নান্ধা ন ভাষেত জপহোমার্চনা-দৃতে। শ্রীনাথ দেব স্বামীতি বিবাদে সাধনে বদেদিতি।

অত্র শ্রীনাথাদিনাম্নাং যোগার্থমাহ কুলার্ণবে পঞ্চশো-ল্লাদে—শ্রীমোকজ্ঞানদাতৃত্বান্ধাদব্রক্ষাববোধনাৎ। স্থাপিত-জ্ঞানচিত্রত্তাৎ শ্রীনাথঃ কথিতঃ প্রিয়ে॥ দেশকালাবিরোধেন বৰ্তুমানাৎ কুলগেমে। বশীকৃতজগজ্জানাদেব ইত্যভিধী-যতে। স্বান্তঃশান্তিসমুন্মীলাৎ পরতত্ত্বার্থচিন্তনাৎ। মিথ্যা-জ্ঞানবিহীনত্বাৎ স্বামীতি কথিতঃ প্রিয়ে ইতি॥ কুলার্ণবে ছাদশোল্লাসেহপি—গুরুক্তং নিষ্ঠ্যরং বাক্যমাশিষং চিন্তরে-চ্ছিবে। তেন সন্তাড়িতো বাপি প্রসাদমিতি সংস্মরেৎ। ত্বব্যে ন তপঃ কার্য্যং নোপবাসত্রতাদিকম্। তীর্থবাত্রাং ন কুর্য্যাচ্চ ন স্নায়াদাত্মশুদ্ধয়ে। ন নিমোগং গুরৌ কুর্য্যাৎ ছুফ্টতাং ন বিভাবয়েৎ। ঋণাদানং তথাদানং বস্তুনাং ক্রয়বিক্রয়ম্। ন কুর্য্যাদ্গুরুভিঃ সার্দ্ধং শিষ্যো ভূত্বা কদাচ-নেতি।। তথা তত্ত্বৈব। শিরসান বহেন্তারং গুরুপাদাস্মুজ্ৎ বিনা। তদাজ্ঞয়া চ কর্ত্তব্যম্ আজ্ঞারূপো গুরুঃ স্মৃতঃ। ান্ত্রাগমান্তমন্ত্রত প্রকরণ তেখে নিবেদয়ে। গুর্ববাজ্ঞয়া তু গুহ্নীয়াত্তদনিষ্টং বিবৰ্জ্জয়ে**। যত্ৰ শ্ৰীগুরুনিন্দা স্থা**ৎ পিধায় শ্রবণেহন্বিকে। সম্ভস্মাদিনিক্রামে 🛪 তিষ্ঠেত কদাচন। গুরোর্নাম স্মরেৎ পশ্চাৎ শ্রবণে সা প্রতিক্রি-াতি। তথা, বিনক্ষুৰ্দ্দেশিকাবাসং শাস্তচিত্তোহতিভক্তিতঃ। বাহনং পাতৃকাং ছত্রং চামরব্যজনাদিকম্। তাম্বুলং কজ্জলং বেশমুৎস্ক্র্য প্রবিশেচ্ছনৈরিত্যাদি॥ তথা শুরুতন্ত্রে সপ্তম

পটলে—কদাচিৎ পরমেশানি যদি তত্র ভ্রমো ভবেৎ ন তস্যা নিঙ্কতিদূ ন্টা কল্পকোটিশতৈরপি। ন ভক্ষয়েদ্যং মোহান্দ্ররাক্ষজ্জিনকং প্রিয়ে। তস্থ ক্রুদ্ধা ভবেস্থং নি বিপত্তিশ্চ পদে পদে ইতি॥ যোগিনীতজ্ঞে পূর্ববিধণ্ডে প্রথম পটলে চ—গুরুচ্ছিন্টস্ত দেবেশি তৎস্ততোচ্ছিষ্টমেব চ ভোজনীয়ং ন সন্দেহো বিকারশ্চেদধোগতিরিতি।

যত্ত্ব শুরুবৎ শুরুপুত্রে বভিতব্যং পাদোপসংগ্রহণাতৃচ্ছিপ্ট ভোজনাদিনেতি ললিতাসহস্রনাগভাসে ভাস্থানন্দনাথপ্পত্ত সূত্রং তৎ স্বাপেক্ষয়া ন্যুনবয়স্কগুরুপুত্রপরানিতি সাম্প্র দায়িকাঃ॥ নিবন্ধেংপ্টমপটলে—যথা ঘটশ্চ কলসং কুস্তশ্চে কার্থনাচকঃ। তথা দেবশ্চ মন্ত্রশ্চ গুরুশ্চেকার্থ উচ্যতে। যথ দেবস্থা মন্ত্রো যথা মন্ত্রপ্থণা গুরুঃ। দেবমন্ত্রগুরুণাঞ্চ পুজ্য সদৃশং ফলমিতি॥ তথা কুলার্ণবে দ্বাদশোল্লাসে—জন্মহেতৃ পিতরো (যথাহি মাতাপিতরো ইতি পাঠান্তরম্) পূজনীয়ে প্রয়ন্তঃ। গুরুর্কিশোনতঃ পুজ্যো ধর্ম্মাধর্ম্মপ্রদর্শকঃ। গুরুর্কিশোনতঃ পুজ্যো ধর্ম্মাধর্ম্মপ্রদর্শকঃ। গুরুর্কিশোতা গুরুর্কেবো গুরুর্গতিঃ। শিবে রুস্টে গুরুব্রাও গুরুর্গতিঃ। শাবে রুস্টে গুরুব্রাও গুরুর্গতিঃ। আহিতাচরণাদ্দেবি বিষ্ঠায়াং জায়তে কুমিঃ মন্ত্রত্যাগান্ডবেন্মৃত্যুঃ গুরুত্যাগাদ্দরিদ্রতা। গুরুমন্ত্রপরি ত্যাগাদ্দরিদ্রতা। গুরুমন্ত্রপরি

গুরুত্যাগাদিতি মহাপাতকাদিদোযাসত্ত্বে বোধ্যম্। তং সত্ত্বে তু মন্ত্ররত্বপৃত-তন্ত্রাস্তরে দীক্ষাশেখরে চ—গৃহীত্মন্ত স্ত্যক্তব্যো গুরুশেচদোষসংযুক্তঃ। মহাপাতকযুক্তো বা গুরু শেচদ্বেবনিন্দকঃ। অনুচ্চার্যাশ্চ যো মন্ত্রঃ শক্রগেহগতস্তথা অসংস্কৃতগৃহীতশ্চাবিধিদীকাপুরঃসরং। ত্যক্তৃ। সর্বাং প্রয-্রুন পুনগ্রহিং যথাবিধীতি বচনাৎ গুর্বস্তরাৎ গৃহ্বীয়াৎ। দোষাভাবাৎ গুরুসন্ত্রপরিত্যাগএব দোষং ব্যক্তমাহ। ভুবনেশ্বত্তীতত্ত্বে প্রথমপটলে—শিষ্যস্ত সদ্গুরোর্মন্তং গৃহীত্বা e[,] পরিত্যজেং। গুরুত্যাগকরঃ শিষ্যঃ গ্রায়**শ্চিত্রী ভবেদ্ধর**-নতি। তথা জামলে—অদোষতো গুরুং ত্যক্তা মন্ত্রঞাপি বিশেষতঃ। গুরুত্যাগাদ্ভবেন্মূভ্যুম ব্রত্যাগাদ্রিউভো। গুরুমন্ত্র-পরিত্যাগাদ্রোরবং নরকং ত্রজেদিতি॥ এবঞ্চ কুলার্ণবে ত্রয়ো-শোলাদে স্বচ্ছন্দতৈরবে চ—মধুলুদ্ধো যথা ভৃঙ্গঃ পুঞ্চাৎ ুস্পান্তরং ব্রজেৎ। জ্ঞানলুরস্তথা শিষ্যো গুরোগুর্ববন্তরং রজেদিত্যনেনানভিজ্ঞঞ্জত্যাগোহপ্য<mark>কুমত ইতি কুলম</mark>ূলাব-তারঃ। এতদেব স্প**ক্টমাহ আগমসারগ্নতকুলার্ণবে** ত্রয়ো-শোল্লাদে—শ্রীগুরুং লক্ষণোপেতং সংশয়োচ্ছেদকারকম্। ক্রির জ্যানপ্রাদং দেবি ন গুর্ববন্তরমা**শ্রায়েৎ। অনভিজ্ঞং** ^{টুরুং} প্রাপ্য সংশ্য়াচ্ছেদকারকম্। প্রতারকং লিঙ্গিনং বা ^{বরিপকাশ্রিতং তথা। গুর্বস্তরং ততো গন্ধা তদ্বোমেণ} লিপ্যতইতি॥ রহ্লাকরস্ত গুরুত্যাগাদ্দরি<u>দ্রতে</u>ভূয়**ত**ু। ভিদ্ব্যবীরবিষয়ে ইত্যাহ—আছো দীক্ষাগুরুঃ প্রোক্তঃ ^{শষঃ} শিক্ষাগুরুম[´]ত ইতি পিচ্ছিলাতন্ত্রীয়প্রথমপটলবচন-^{রেসাৎ}। গুরোগুর্<mark>ববন্ত</mark>রং ব্রজেদিত্যত্র মন্ত্রান্মন্ত্রান্তরং ব্রজে-ি পাঠান্তরম্। তন্মতে চ-ুরিপুমন্ত্রং সাধ্যমন্ত্রং বীজহীনং টংখব চ। সন্দিগ্ধমন্ত্রং মন্ত্রী তু হিন্না মন্ত্রান্তরং ব্রজেদিতি। ত্র সকলৈব্বীজহীনশ্চ :সন্ধিগ্ধো নিন্দিতস্তথা। মনবস্তে মিধ্যম্ভি গুরুঃ স্থাদ্বেক্ষঘাতকঃ। তদা তং সহসা জ্ঞাত্মা মন্ত্রং দেবং গুরুং ত্যজেদিতি বচনাদ্বিতাং বিহায় মহাবিতাগ্রহণং কার্যামতি শ্রামারহস্তকারঃ।

গুরো লোকান্তরগতে২শোচমাহ মৎস্থসূক্তে পঞ্চবিংশতি-পটলে২শোচপ্রকরণে—গৃহাতো দেবতামন্ত্রঃ সাবিত্রীগ্রহণং কৃতম্। যম্মান্তস্ত ত্রিরাত্রন্ত রক্ষেদ্বিদ্যাগ্রহো যত ইতি।

> ইতি সতত্যহামহীশচক্রচুড়ামণিচর্চিত্রচবণনলিন শ্রীমদ্রোপী-মোহনগাদপদ্মামন্দমকরন্দসন্দোহানন্দিত্মনোমধুকর-শ্রীহরকুমার দেবশস্ম-স্বীয়্চিন্তামণিমন্ত্রচিন্তোদ্ধ হরতত্ত্বদীধিতৌ চঙুর্থকলাপ্রকাশঃ।

অথ লক্ষমন্ত্ৰকগৃহিণাং যথ কৰ্ত্তব্যং তদাহ রাঘবভট্টঃ—
দ্বিবিধং স্থাল্লক্ষমনোৰ্বাহ্যান্তরমুপাসনম্। ন্যাদিনাং চান্তর:
প্রোক্তমন্যেযামুভ্যং তথেতি। অত্র তু প্রাতঃক্ত্যাত্মকমান্তরোপাসনং গৃহিণাং কর্ত্তব্যং ন হল্যান্তর্যাগ্যঃ। অন্তর্যাদ্ধ
ইতি প্রোক্তো জাঁবতো মুক্তিদায়কঃ। মুনীনাঞ্চ মুমুক্তৃণামন্তি
কারোহত্র কেবলমিতি গৌতমায়তন্ত্রবচনে গৃহিণামন্তর্যাগ
নিষেধাৎ। নম্বেভদ্তবন্ত্রক্তগৌতমীয়বচনে মুমুক্তৃণামন্তর্যাগ
নিষেধাৎ। নম্বেভদ্তবন্ত্রক্তগৌতমীয়বচনে মুমুক্তৃণামন্তর্যাগ
বিধানাং গৃহস্থমুমুক্তৃণাং কেবলমন্তর্যাগঃ কর্ত্তব্য ইতি
চেন্স ন গৃহী জ্ঞানমাত্রেণ পরত্রেহ চ মঙ্গলম্। প্রাপ্রো
চন্দ্রবদনে দানহোমাদিভির্বিনা। গৃহস্থো যদি দানদি
দদ্যান্ধ জ্ল্ত্রাদপি। পূজ্য়েদ্বিধিনা নৈব কঃ কুর্য্যাদেত-

দয়হম্। ন ব্রহ্মচারিণো দাতুমধিকারোহস্তি ভাবিনী।
ত্তরুভ্যোহপি চ সর্বেজ্য কোবা দাস্থত্যপেক্ষিতম্। নারণ্যবাসিনাং শক্তি র্ন তে সন্তি কলো যুগে। পরিব্রাট্ জানমাত্রেণ দানহোমাদিভির্বিনা। সর্ব্বস্থুংথপিশাচেভ্যো মুক্তো
ভবতি নাঅথা। পরিব্রাড়বিরক্তশ্চ বিরক্তশ্চ গৃহী তথা।
কর্ত্ত্বাপাকে নিমজ্জ্যেতে দ্বাবুভৌ কমলাননে। পুণ্যাঃ
স্থ্রিয়ো গৃহস্থাশ্চ মঙ্গলৈ মঙ্গলার্থিনঃ। পুজোপকরণৈঃ কুর্যুদর্গুলোনানি চাইণাম্। বানপ্রস্থাশ্চ যতয়ো যদ্যেবং কুর্যুরন্থ্য়। সংসারাম নিবর্ত্তত্তে বিধ্যন্তি ক্রমদোয়তঃ। আরুজ্পতিতা হোতে ভবেয়ুর্গুখভাজনমিতি রাঘবভট্টপ্রতসংহিতীয়শক্ত্বাক্যাং গৃহস্থমাত্রাণাং বহির্বাগাকরণে দোয়ত্রবণাঙ্ক।
অতএব কেবলান্তর্গাণেনব গৃহস্থানামপি সিদ্ধিরিতি বদস্তো
ব্যবহরন্তশ্চ নিরস্তাঃ।

অগ প্রাতঃকৃত্যম্। শাক্তানন্দতরঙ্গিণীধৃতজামলে—
প্রাতঃকৃত্যসকৃষা তু যো দেবীং ভক্তিতো যজেৎ। তক্
পূজা ৮ বিফলা শোচহানা ক্রিয়া যথা ইতি। গোক্তমীয়ে
চ—ইদানীং পূর্ববকৃত্যঞ্চ প্রসঙ্গাৎ কথয়ামি যৎ। কৃষ্বাধিকারিতাং যাতি মন্ত্রতন্ত্রার্চ্চনাদিরু। বিনা যেন ন সিদ্ধিঃ
স্থান্নরকঞ্চ প্রপদ্যত ইত্যাদিবচনেভ্যোহকরণে দোযক্রুতেস্তম্ম নিত্যত্বম্। তথাচ বরদাতত্ত্রে তৃতীয়পটলে—নিত্যং
সদা যাবদায়ু র্ন কদাচিদতিক্রমেং। উপেত্যাদিক্রমে দোষক্রুত্রাগদর্শনাং। ফলাশ্রুত্বব্রীপ্রয়া চ তং নিত্রমিতি
কার্তিত্রমিতি।

তত্র দিখুখনিয়মঃ নিগমকল্পলতায়াং দশমপটলে—প্রাতঃ-

কৃত্যাদিকং বৎস শ্রেরতাং মে কুলেশর। যদসুষ্ঠানমাত্রে আনন্দার্ণবিমগ্নবান্। সহস্রারে মহাপদ্মে গুরুং সঞ্চিত্র কাননে। প্রণমেৎ পরয়া ভক্ত্যা পূর্ববস্থাভিমুথস্থিত ইতি। বিশ্বসারতন্ত্রে তৃতীয়পটলে চ—প্রাতরেব সমুখায় হস্তপালে বিশুধ্য চ। উত্তরাভিমুখীভূয় কুর্য্যাদ্ভক্ত্যা গুরোনতির্মিত্র বচনদ্বয়েনোভয়থা প্রতিপাদনাৎ প্রাতঃকৃত্যে পূর্বাস্তে ভরাস্তয়োরিচ্ছাবিকল্পো জ্রেয়ঃ।

অথৈতৎকালবিশেষনির্ণয়ঃ। তত্ত্বেদং বিচার্য্যানে তথাহি শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাপ্নত-নারদপঞ্চরাত্রে -নিশাবসালে শয়নাৎ স্মৃত্বা নারায়ণং বিভূম্। উত্থায় দক্ষিণাঙ্গেন বাদ্ পাদং অদেদ্ধুবীতি॥ অত্র নিশাবসানইত্যস্ত পশ্চিম্যাল ইতার্থঃ প্রতীয়তে। কচ্চিৎ ত্বং মধ্যমো যামো রাত্রেঃ স্তপ্ত **বিশাম্পতে। দঞ্চিত্ত**য়দি ধ**র্ম্মার্থে**ী যাম উত্থায় পশ্চিমইতি মহাভারতে তত্ত্রিবোত্থানোক্তেঃ। স্বত্ত নারায়ণমিত্যুপলক্ষণ স্বেষ্টদেবতাং স্মৃত্বেত্যর্থঃ॥ সারসংগ্রহেহপি—রাত্রিশেল সমূত্থায় কুত্বাবশ্যকমাদরাৎ। রাত্রিবাসঃ পরিত্যজ্য বাস^{র্চ} বরিধায় চেতি॥ শাস্তবীতন্ত্রে পঞ্চমপটলে চ—রাত্রিশ্যে সমূত্থায় সন্ত্যজ্য রাত্রিবাসসম্। সহস্রারে শিরঃপদ্মে চিতঃ মণিগৃহে গুরুমিতি চিন্তগ্রেদিতি পরেণান্বিতম্ ৷ এতদ্বচন জ্মাঞ্চলরাত্রিশেষপদমপি তৎপরমেবেতি প্রতীয়তে। নম্বেজ দসস্তং প্রতিভাতি রাত্রেঃ পশ্চিম্যামশ্র পর্যুদস্তঞে সৰ্ব্বকৰ্মান্হস্বাৎ। তথাচ মুগুমালাতন্ত্ৰে—গতে তু প্ৰথে যামে তৃতীয়প্রহরাবধি। নিশায়ান্ত প্রজপ্তব্যং রাত্রিশে লপেন্নজিতি সত্যয়। প্র্কোক্তবচনেয়ু পশ্চিম্যামপদং রাজি

িশ্যপদঞ্চ উত্থানমাত্রবোধকং নতু প্রাতঃকৃত্যবিধায়কং পুনঃ-|পুনরুত্থায়েতি শ্রুতঃ।

প্রতিংক্তান্ত ব্রাক্ষ্যসূত্র্তব কর্ত্র্যমৃ তদাহ শাক্তানন্দতরঙ্গিনীধৃতজামলে—ব্রাক্ষ্যে মুহর্ত্তে উত্থায় চিন্তয়েদ্গুরুদ্বতমিতি। অত্র পশ্চিমে যামে উত্থায় ব্রাক্ষ্যে মুহূর্ত্তে
ক্রদৈবতং চিন্তয়েদিতান্বয়ঃ পূর্ব্বোক্তবচনজাতৈকবাক্যত্বাং।
মুগুনালাতন্ত্রীয়রাত্রিশেষপদন্ত অক্লণাদরপূর্ব্বকালপরম্।
যন্বা ব্রাক্ষ্যে মুহূর্ত্তে উত্থায় চিন্তয়েদ্গুরুদ্বৈতমিতি বচনৈকবাক্যতয়া পূর্ব্বাক্তবচনজাতস্থপশ্চিম্যামাদিপদম্ অক্লগোদ্যকালপরম্। তদা ব্রাক্ষ্যে মুহূর্তে উত্থায় গুরুদ্বৈতং
চিন্তয়েদিত্যন্বয়ঃ॥

অরুণোদয়কালো যথা মহানির্বাণতন্ত্রে পঞ্চমোল্লাসে—
রজনীশেষযামস্থ শোষার্দ্ধমরুণোদয় ইতি। তথা ব্রাক্ষ্যমহওস্ত শাক্তানন্দতরঙ্গিণীধৃতজামলে—দ্বে দণ্ডো রাত্রিশোষ্ট ব্রাক্ষ্যং মুহূর্তকং বিচুরিতি। রাত্রিশেষং রাত্রিশোর্দ্ধ প্রহরং প্রাপ্যেতি শেষঃ। তত্রাচ্চদগুদ্ধং ব্রাক্ষ্যমুহূর্ত্তঃ শোসদগুদ্ধয়ন্ত রোদ্রমুহূর্ত্তং ইতি শিবমু।

অথ প্রকৃতমন্ত্রসরামঃ। গৌতসীয়ে ষষ্ঠাধ্যায়ে—ব্রাক্ষ্যে মুহুর্ত্তি চোপায় চিন্তয়েদ্গুরুদৈবতম্। স্বমূদ্ধনি সহস্রারে ক্ষাথ্যে পরবিন্দুকইতি॥ তথা শিবার্চনচন্দ্রিকাপ্পতদক্ষিণার্ভিদংহিতায়াং—প্রাতরূপায় দেবেশি সংস্মরেৎ পদ্ম-মুজ্জনম্। কপূরাজং স্মেরমুখং দ্বিভুজং শ্বেতবাসসমিতি॥ নিত্যাতন্ত্রেহপি—ব্রাক্ষ্যে মুহূর্ত্তে উত্থায় গুরুং নত্বা স্বনা-মতিঃ। আনন্দনাথশব্যান্তে পূজ্যেদথ সাধক ইতি॥ তারা-

ভক্তিস্তধার্ণবধূতভৈরবতন্ত্রে—অথাতঃ প্রাতরুখায় শ্যাক্ষ্ স্তুসমাহিতঃ। শিরঃস্থকমলে ধ্যায়েৎ স্বগুরুৎ শিবরূপি মিতি। জ্ঞানার্ণবে চ—প্রাতরুখায় দেবেশি ব্র**ন্দ**রন্ত্র নিজং গুরুম্। স্মৃত্রা দেবীময়োভূত্বা তৎপ্রভাপটলেহ্ম_ে ইত্যাদি॥ রুদ্রজামলে প্রথমথণ্ডে প্রথমপটলেহপি— ব্রাক্ষ্যে মুহর্তে উপায় বদ্ধপদ্মাসনঃ স্থবীঃ। নিধায় ভূত ওদ্যাদীন্ ওকং প্রাতঃ সারেলর ইতি॥ তথা নীলতয়ে প্রথমপটলে—উপায় পশ্চিমে যামে চিন্তফের্গ্রতারিণাস্ আমূলাৎ বেদারদু।ভিং বিসতন্তসকপিণীমিতি॥ কন্দজামদে ষষ্ঠপটলে চ—অথ প্রাতঃ সমুখায় পশুরুত্তমপণ্ডিতঃঃ গুরুণাং চরণাস্ভোজমঙ্গলং শীর্ষপঙ্কজে। বিভাব্য পুনরে হি শ্রীপদং ভাবয়েদ্যতিরিতি॥ কৃষ্ণার্চনচন্দ্রিকাগ্গত-তত্ত্ স্তরেহপি—বাক্ষ্যে মুহূর্তে উপায় বদ্ধপদ্মাদনঃ স্থির: শিরঃস্থিতাধোবক্ত্র্প সহস্রদলপক্ষজম্। ইত্যাদিনানাতন্ত্রক নেষু প্রাতঃ সমুখানানন্তরমেব প্রাতঃকৃত্যস্থ কর্জব্যত: প্রতিপাদনাৎ বিশ্বনুত্রোৎসর্গাদেঃ পূর্ব্বমেবাত্যক্তরাত্রিবাসঃ শয্যাস্থ এব প্রাতঃকৃত্যং কুর্য্যাৎ॥ ব্যক্তমাহ শিবার্চন চন্দ্রিকাগ্নতসারসংগ্রহে—ইতি স্তত্ত্বা গুরুং স্বাপে ধ্যায়েদি ষ্টাঞ্চ দেবতাম্। গুরুদৈবতয়োরৈক্যং ভাবয়েচ্চ ভিয়াকুলঃ [‡] ইফার্থপ্রার্থনাং কৃত্বা আজাং সংপ্রার্থয়েত্ততঃ। ইফদেক ভূমো চ তস্থাং শ্বাদানুসারতঃ। বিশুস্থ পাদমুখায় কুর্যা দাবশ্যকীঃ ক্রিয়াঃ॥ তত্রৈবাজ্ঞাপ্রার্থনক্লোকানন্তরম্—ই^খ-মুত্তার্য্য লব্ধুজাং দেশিকঃ শৌচমাচরেদিতি॥ শাক্তা^{নক} ত্রিসিণীয়ততন্ত্রান্তরেহপি—গুরুস্মরণানন্তরম্। এবং সঞ্জি

নিদা গৃহান্নির্গত্য বাগ্যতঃ। আচমা প্রয়তো মন্ত্রী দন্তবিন্যাচরেদিতি ॥ তারাপ্রদীপে দ্বিতীয়পটলে চ—রাত্রিক্রে সমুখায় সংস্থারেৎ পদামুজ্জলম্। স্বমস্তকে স্থাপোপতং
ক্রেল্ফ্লাদকারণম্। কপূরাভং স্মরেভত্র শ্রীগুরুং নিজপিণম্। ততো বিচিন্তয়েদেবীং ভারতীং লোক-মাতরম্।
প্রদানকারণং দেবীং মহামোক্রপ্রদায়িনীম্ ॥ রাত্রিবাসন্ততক্রিণ নিম্মলানক্রানসঃ। ত্যক্ত্রা মৃত্রপুরীয়ঞ্চ দন্তধাবনবাচরেদিতি ॥ অত্রবাক্তবিশ্যুত্রোৎস্গাত্যক্তরাত্রিবাস্সাং
বিজ্ঞানাং প্রাতঃকৃত্যাচরণং স্বস্পত্যেব ॥

যত্ত্ব ব্রাক্ষ্যে মুফুর্তে উত্থায় ত্যক্তস্বাপস্ত্যক্তরাত্রিবাসাঃ
নিপদ্মাসনঃ শিরঃস্থাধােমুখশুক্রবর্ণসহস্রদলকমলকর্ণিকান্তর্গতং
গঠন্দ্রমণ্ডলস্থং হংসপীঠে নিজগুরুং শুক্রবর্গং শুক্রালস্কার্ভূষিতং
নিনন্দ্রমুদিতমানসং দ্বিভূজং বরাভ্যকরং শান্তং স্বপ্রকাশরপং খেতুমাল্যানুলেপনং স্থবাম্যারুহিতয়া রক্তবর্ণয়া
ক্রপর্নারাপরা বামকরপ্পতরক্তোৎপলয়া শক্ত্যা দক্ষিণহস্তপৃহীতকরা দিনয়নং পরমশিবস্বরূপং বিচিন্ত্য দিব্যাভিষেকেন
করণা সম্প্রদারানুগতক্তনানপূর্বেকমভিষেকাভভাবে প্রকৃতনিপুর্বকং শ্রী অমুকানন্দ্রনাথগুরুং গুজয়ার্মাতি স্মৃত্যা বক্ষ্যনিপ্রতিয়া মানসোপচারেরভ্যক্ত্য বক্ষ্যমাণ-মন্ত্রাভ্যাং প্রণমে-

প্রাতঃকৃত্যপ্রাণে আগমতত্ত্বিলাসকৃদ্রঘূনন্দনতর্ক-গৌশেন কিমপি প্রমাণমুপাদায রাত্রিবাসস্ত্যাগাচরণমভি-ং তদনাদরণীয়ম্ ;

যদাপ ব্রাক্ষ্যে মুহূর্তে উত্থায় স্মৃত্যক্তবিধানেন শৌচাদিকং দহশুদ্ধিঞ্চ বিধায় বাসঃ পরিত্যজ্য বাসোহত্তরং পরিধায় মন্ত্রতঃ স্নানং ক্বরা দেনগৃহমাগত্য সংমার্জনোপলেপাদিক কুত্বা দেবস্থা নির্মাল্যমপদার্ঘ্য পূর্ববিদনাবশিষ্টপত্রাদিনাভার্চ্য নমস্কুৰ্য্যাদিতি প্ৰয়োগমভিধায় তৃগাক্ৰান্তঃ পশুৰ্বদ্ধঃ কলুক চ রজম্বলা। দেবতা চ সনির্মাল্যা হস্তি পুণ্যং পুরাকুত্ মিতি॥ মন্ত্ৰতন্ত্ৰপ্ৰকাশে—স্মৃত্যুক্তেন বিধানেন সম্যক্ শৌচ বিধায় চ। প্রফাল্য পাদাবাচম্য ক্বন্না স্থাসং যতাহ-বান্। প্রবিশ্য দেবতাস্থানং নির্মাল্যমপরুষ্য চ। দল্যং পুষ্পাঞ্জলিং বিদানর্ঘ্যপাদ্যে তথৈব চ। মুখগ্রকালনং দদ্যং দ্যুট্রে দ্রপ্রাবন্য। দ্যাদ্যুদ্যায়ঞ্জ দ্যুদ্রাহ্যুল্ শুভমিতি বচনানি প্রমাণজেনোপগুস্থ ততো যথোক্তাসক উপবিশ্য গুরুং মৃদ্ধি ধ্যায়েৎ। প্রাতঃ শিরদি শুক্লেংক্তে দ্বিনেত্রং দ্বিভুজং গুরুমিত্যাদি রাঘবভট্টেনাভিহিতং—তদ্পি প্রয়োগানুসারিপ্রমাণানভিধানেন ন সমীচীনম্। যতন্তং-প্রসাণেন স্মৃত্যুক্তশোচাদ্যনন্তরং দেবতাগৃহগমনাদিক: কর্ত্তব্যমিত্যুপপাদিতং নতু শৌচাদ্যনন্তরং গুরুস্মরণমপি তস্মাৎ শৌচাদেঃ পূর্ব্বমেব গুরুস্মরণাদিরূপপ্রাতঃক্বত্যং বিধা শৌচাদিকং রুম্বা রাত্রিবাসঃ পরিত্যজ্যাচ্য্য ন্যাসং বিধায় দেবতাগৃহগমননিশ্মাল্যাপসারণাদিকং কর্ত্তব্যমিতি নিষ্কর্যঃ।

অতএব শিবার্চনচন্দ্রিকাধৃতসারসংগ্রহে—রাত্রিশেটে সমুখায় রুত্বাবশ্যকমাদরাং। রাত্রিবাসঃ পরিতাণা বাসসী পরিধায় চ। আচমঃ শুদ্ধদেহঃ সন্ দেবতঃ যাগমন্দিরম্। মার্জয়িম্বোপলিপ্যাথ ভক্তিযুক্তঃ স্থাক্তিতঃ। উপবিশ্য শুচৌ দেশে প্রাদ্ধায় প্রোক্ত আসনে। প্রাণায়ান ত্রয়ং রুত্বা ন্যাসং কুর্য্যাধিধানতঃ। নির্মাল্যমপ্রুষ্যাথ দদ্যাং লুষ্পাঞ্জনিত্রয়ম্। অর্ঘ্যপাতে নিবেতাথ দতাদৈ দম্ভধাবনম্। মুখপ্রফালনং দ্বা দ্যালাচ্যনীয়ক্ষ্। চক্ষুরাস্তপ্রোক্ষণায় ক্যাদ্বাদোহমলং শুভমিত্যনেন প্রাতরাবশ্যকশৌচাদ্যনন্তরং দেবতাগৃহগমনাদিকমুক্তং নতু গুরুস্মরণমপি তস্থ তৎপূর্ব্ব-চালকর্ত্র্যসাৎ। দেবতাগৃহগমনাদিকং যত্নুক্তং তৎ প্রতি-ষ্টতদেবতাবিষয়কমিতি॥ কমলাবিলাসতন্ত্রে তৃতীয়পট-লেংপি—ব্রান্ধ্যে মুহূর্ত্তে চোত্থায় প্রণম্য গুরুদৈবতমিত্যু-পক্রম্য—যদ্দত্তং গুরুণা মন্ত্রং দশধা প্রজপেদিতি—প্রাতঃ-ত্যমুপসংহত্য প্রাতঃকৃত্যং ততঃ কৃত্বা গৃহমাগত্য হে ানে। রাত্রিবাসঃ পরিত্যজ্ঞা পাদৌ প্রক্ষাল্য সাধকঃ। মাচন্য মূলমন্ত্রেণ গুরোর্মক্তং জপেৎ দশ। ধ্যাত্বা দেবীং হোলক্ষীং নারায়ণসময়িতাম্। অফৌতরশতং জপ্তা দশধা-া মহামুনে। পতিস্বা চৈব হে বিপ্ৰ প্ৰণম্য ভক্তিতো গুরুম্। দ্বীং প্রণম্য হে বিপ্র সংসারক্বত্যমাচরেদিত্যনেন প্রাতপ্ত রু-মরণাদ্যনন্তরং বিথা,ত্রোৎসর্গাদিরূপং প্রাতঃক্বত্যং বিধায় াত্রিশসঃ পরিত্যজ্য পাদপ্রকালনাচমনাদিকং কুত্বা পুন-🗜 ঁরুমন্ত্রজপাদিকমভিহিত্য অতঃ কমান্তরমেবৈতদিতি। ্র্বোক্ততারাপ্রদাপেহাপ প্রাতঃরুত্যান্তরং মৃত্রপুরীযোৎ-ার্গাদিকমভিধায় শুচিভূ হাচমেদারি দ্বিতয়ং সাধকোত্তমঃ। মহক্ষলমাসীনঃ স্বস্তিকাল্যাসনেন চ। বিশেতত্ত স**লা** যাগী মন্ত্রসিদ্ধিপরায়ণঃ। ষড়ঙ্গন্তাসমাচর্য্য প্রাণায়ামত্রয়ং রেৎ। যোনিমূদ্রাং ততঃ কুর্য্যাৎ সাধকো মন্ত্রসিদ্ধয়ে। শাধারে চিন্তয়েদ্দেবীং জগচ্চৈতত্মরূপিণীম্। প্রস্থপুজ্জ-ণাকারায্ কুগুলীং সূক্ষ্মগামিনীম্। বায়ুনা বহ্নিমুখাপ্য

বোধয়েন্তারতীং সদা। ব্রহ্মরন্ত্রপথে পশ্চাৎ পরব্রহ্মণি যোজয়েও। আধারে চ ততো মেট্রে নাভৌ চ হাদয়ে তথা। কঠে চৈব ভ্রুবোর্মধ্যে চিন্তয়েৎ পরমেশ্রীমিত্যাদিনা কুগুলী-ভাবনা-রূপ-কর্মান্তরমুক্তয়্। এতৎপরমেব রুদ্রজামলবচনং যথা ব্রাহ্ম্যে মুহূর্ত্তে উত্থায় রাত্রিবাসঃ পরিত্যজেৎ। বদ্ধপদাসনো মন্ত্রী কুগুলীং চিন্তয়েদধ ইতি।
অতএবাত্র কুগুলীচিন্তনমাত্রমুক্তং নতু গুরুচিন্তনমপি।
অত্র রাত্রিবাসঃপদং বিম্লোৎসর্গান্ত্যপদক্ষকং পূর্ব্বোক্ত

যদপি জামলে—ব্রাক্ষ্যে মুহূর্ত্তে উত্থায় মুক্তস্থাপঃ শুচি-শুতঃ। শিরঃস্থিতসহস্রাজে গুরুং ধ্যায়েৎ স্থ্রেম্বরীতি। তত্ত্বৈবোত্তরথণ্ডে দিতীয়পটলে—প্রভাতে চ সমুখায় অরুণো-দয়কালতঃ। প্রাতঃকৃত্যাদিকং কৃত্বা পুনঃ শয্যাস্থিতো নরঃ। গুরুং সঞ্চিন্তরেচ্ছীর্বাজ্যোজে সহস্রজে দলে ইতি। এত্বচ-নাভ্যাং শোচাদ্যনন্তরং গুরুচিন্তনমুক্তং—তন্ম ত্রপুরীয়বেণো-পস্থিতো বোধ্যম্। পূর্ব্বোক্তসারসংগ্রহশান্তবীতন্ত্রবচনদ্য-মপ্যেতৎপরমেব॥ অতএবোক্তং কুলার্ণবে পঞ্চদশোল্লাদে নিবন্ধে ষোড়শপটলে চ—বিণুমুত্রোৎসর্গশঙ্কাদিযুক্তঃ কর্ম করোতি যঃ। জপার্চনাদিকং সর্বমপবিত্রং ভ্রেং প্রিয়ে ইতি।

অথ প্রাতঃক্বত্যাদিকর্মস্থ ধ্যানযোগে বামহস্তোপরি দক্ষিণহস্তং ধারয়েৎ। তত্তুক্তং ব্রহ্মানন্দগিরিক্বত-তারা-রহস্যে—সর্ববিদ্যাস্থ সর্বব্র প্রাতঃক্বত্যাদিকর্মস্থ। ধ্যান-থোগে বামহস্তে দক্ষিণং পরিধারয়েদিতি॥ তারাবিদ্যায়াপ্ত তদ্বতারাগমে—স্বনাভৌ দক্ষিণে হস্তে বাসহস্তং নিধায় চ। ভাবয়েত্ব সহস্রারে শ্রীগুরুং শক্তিসংযুতমিতি॥ মহা-নীলতন্ত্রেংপি—তারাবিভাস্থ সর্ব্বাস্থ ভাবনাদৌ ব্যতিক্রমঃ। স্বনাভৌ পাণ্যোর্যোগশ্চ ভূতশুদ্ধ্যাদিকে শিবে ইতি।

তত্র গুরুং কীদৃশং ধ্যায়েদিত্যাহ গোত্সীয়েহয়্টমাধ্যায়ে—
য়য়ৢয়য়ি সহস্রারে রুয়্ঞাখ্যে পরবিন্দুকে। শশাস্কায়্তসঙ্কাশং
বরাভয়লসৎকরম্। শুক্লাম্বরধরং শ্রীসচ্ছু রুমাল্যামুলেপনম্।
বামোরো রক্তশক্ত্যা চ যুক্তং রুয়্ঞাখ্যমব্যয়ম্। শিবেনক্যং
সয়ৢয়য়য় ধ্যায়েৎ পরগুরুং ধিয়েতি॥ তথা রুদ্রজামলে
দিতীয়পটলে—গুরুং সঞ্চিত্তয়েৎ শীর্ষাস্তোজে শাহস্রিকে
দলে। তরুণাদিতয়সঙ্কাশং তেজাবিম্বং মহাগুরুম্। অনস্তান
নস্তমহিমসাগরং শশিশেখরম্। মহাসুক্ষভাস্বরাঙ্গং দিনত্রং
দিভুজং বিভুম্। আত্মোপলব্রিবিষয়ং তেজসা শুরুবাসসম্।
আঞ্জাচক্রোদ্ধিনিকরং কারণং জগতাং স্থেম্। ধর্মার্থকামমোক্রাঙ্গং বরাভয়করং প্রভুম্। প্রফুল্লকমলারঢ়ং সর্বজ্ঞং
জগদীশ্রম্। অন্তঃপ্রকাশচপলং বনমালাবিভূষিতম্। নানালঙ্কারভূষাঢ্যং দেবদেবং সদা ভজে ইতি।

নশ্বত্র গুরোঃ শুক্লবর্গ-ব্রক্তবর্গ-প্রতিপাদকবচনাভ্যাম্ বিরোধএব তত্র কিং দক্ষিণাচার-বামাচারভেদেন বর্ণভেদঃ উত্যোপাসকভেদেনেতি। নাফঃ আচারভেদেন গুরো-বর্ণভেদপ্রতিপাদকমানাভাবাৎ প্রভূতে বীরাচারপ্রতি-পাদকতন্ত্রেষ্ শুক্লবর্ণধ্যানমেব দৃশ্যতে। তথাচ কৌলা-বলীয়ে—ধ্যায়েমিজগুরুং বীরো রজতাচলসমিভমিতি॥ তথা-মদাকল্পে—গ্রাক্ষ্যে মুহুর্তে চোপ্রায় কুলবৃক্ষং প্রণম্য চ। শিরঃপদ্মে সহস্রারে চন্দ্রমণ্ডলমধ্যগে। অকথাদিত্রিরেথীয়ে হংসমন্ত্রে স্থপীঠকে। ধ্যায়েমিজগুরুং বীরো রজতাচলসমিভমিতি॥ দিতীয়ে তু গোতমীয়বচনেন বৈষ্ণবৈরেব শুরুবর্ণত্বেন গুরুবর্ণ্যয়ঃ রুদ্রজামলবচনেন তু
শাক্তৈরক্তবর্ণএব ধ্যেয় ইতিচেম—শক্তিদেবতোপাসনামাত্রপ্রতিপাদকেষু তন্ত্রেষু শুরুবর্ণদর্শনাৎ॥ তথাচ কঙ্কালমালিনীতন্ত্রে প্রথমপটলে—সহস্রদলপত্মস্থ-মন্তরাত্মানমুজ্জলম্ । তম্পোপরি নাদবিশোর্মধ্যে সিংহাসনোজ্জলে। তত্র
নিজগুরুং নিত্যং রজতাচলসমিভমিতি॥ তথা শ্যামারহস্থে।
শুদ্ধস্ফটিকসঙ্কাশং শুদ্ধক্রেমিবিরাজিতমিতি॥ গুপ্তসাধনতন্ত্রেহপি—শরচন্দ্রকরাভাসং শরৎপঞ্জলোচনমিতি॥ কালীকুলামুত্রতন্ত্রে প্রথমপটলেচ—সাধকঃ প্রাতরুপায় সহস্রদলনীরজে। বরাভয়করং শাস্তং শুরুবর্ণং সশক্তিকমিতি॥

নচ শ্রীবিভায়া রক্তবর্ণছেন তত্বপাসকৈরক্তবর্ণএব শুরু-ধ্যের ইতি বাচ্যং—সহস্রদলপঙ্কজে সকলশীতরশ্মিপ্রভং বরাভয়করাদ্মুজং বিমলমাল্যগন্ধাদ্বরম্। প্রসম্বদনেক্ষণং সকলদেবতারপিণং স্মরেচ্ছিরসি হংসগং তদভিধানপূর্বাং শুরুমিতি॥ শুদ্ধক্টিকসঙ্কাশং শ্বেতাভরণভূষিতমিতি শ্রীবি-দ্যোপাসনামাত্রবিধায়ক- শ্রীতত্ত্বচিস্তামণি- গন্ধর্বতন্ত্র- বচনয়োঃ শেতবর্ণগুরোর্ধ্যানদর্শনাৎ॥ ন বা জবাক্ষটিকভায়েন রক্ত-শক্ত্যাঃ প্রভাপটনেন রক্তবর্ণো গুরুধ্যেয়ঃ নানাতন্তের্মু রক্তবর্ণশক্তিসহিত্তৈশ্রব গুরোর্ধ্যানদর্শনাৎ সর্ববিত্রব শুক্ত-মর্ণজেন গুরোর্ধ্যানাসঙ্গতেঃ॥

তম্মাদাচারভেদপ্রযোজ্য-বর্ণভেদজ্ঞানানবগাহি নানাতন্ত্র-

বচনেযু উভয়থা প্রতিপাদনাৎ সাত্ত্বিকাদিভেদাৎ শুক্লা-দিভেদঃ ॥ তথাচ শ্রামাসপর্য্যাক্রমধৃতজামলে—শিরঃস্থিত-সহস্রাক্তে গুরুং ধ্যায়েৎ স্থরেশ্বরি। শেতাম্বরধরং শেতং শ্বেতমাল্যাভালস্কৃতমিতি ॥ • শ্বামাদপর্য্যায়াঞ্চ—প্রাতরুতায় শিরসি সহস্রদলপক্ষজে। অনুণারুণকিঞ্জক্ষে বিধোর্মগুল-মধ্যগম্। ধ্যায়েনিজগুরং বীরো রজতাচলসনিভমিতি। শিবার্চনচন্দ্রিকা- ধ্বত-দক্ষিণামৃত্তি- সংহিতায়াম্ — প্রাতরুপায় দেবেশি সংস্মারেৎ পদ্মমুজ্জ্বলম্। কর্পূরাভং স্মেরমুখং দ্বিভূজং খেতবাসসম্। বরাভয়করং তত্র শ্রীগুরুং নিজরূপিণমি-ত্যাদি॥ কৃষ্ণার্চনচন্দ্রিকায়াম্—ব্রাক্ষ্যে মুহূর্ত্তে উত্থায় বন্ধ-পন্মাসনঃ স্থিরঃ। শিরঃস্থিতাধোব*ত*্রঞ[্]সহস্রদলপক্ষজম্। শুক্লং তৎকর্ণিকান্তঃস্থং চন্দ্রমণ্ডলমুজ্জ্বলম্। তত্র হংসাখ্য-পীঠে তু স্বগুরুং রক্তবর্ণকম্। সর্ববালস্কারভূষং তং জ্ঞানা-নন্দমুদং মনঃ। দধতং স্থাস্মিতং নাথ বরাভয়করং ততঃ। বামোরুস্থিতয়া রক্তশক্ত্যান্বিতকলেবরম্। বামে ধ্তোৎ-পলায়াশ্চ প্রিয়ায়াঃ স্থকলেবরম্। দ্বিনেত্রং দ্বিভূজং শাস্তং শ্বরেত্তন্নামপূর্বকমিতি॥ তথা তদ্ধৃত-তন্ত্রান্তরে—প্রাতঃ শুক্লাজমধ্যে শিরসি নিজগুরুং প্রোগুদাদিত্যভাসং বামোরৌ রক্তশক্ত্যান্বিতমভয়করং বিভ্রতং পাণিযুগ্মে। কুর্ববন্তং কোলশিষ্যোপরি গুরু করুণাং সন্মিতং চারুবক্ত়্ ধ্যাত্বা তন্নামপূর্ব্বং মনুমপি বিমুষেদিত্যাদি॥ কৌলাবলীয়েহপি— সহস্রারে গুরুৎ ধ্যায়েৎ স্থরক্তং পদ্মলোচনম্। মানদৈ-রুপচারৈস্ত স্বগুরুং পূজ্যেন্মুদেতি। অতএব তামসগুরুং নীলবর্ণমঙ্গি ধ্যায়েৎ। তথাচ বীরচ্ডামর্ণো—নীলান্সরং নীল-

বিলেপযুক্তং শন্ধাদিভূষং মুদিতং দিনেত্রম্। বামাক্ষপীঠন্থিত-নীলশক্তিং বন্দাম বীরং করুণানিধানমিতি।

অতএব সান্ত্বিকাদিভেদাৎ সাধকানপি ত্রিবিধানাই।
সময়াচারতন্ত্রে সপ্তমপটলে—সাধকান্ত্রিবিধাঃ প্রোক্তাঃ
সান্ত্রিকো রাজসন্তথা। তামসন্ত তথা দেবি তেষাং বক্ষ্যান্নি
লক্ষণম্। সান্ত্রিকঃ সান্ত্রিকের্যুক্তো লক্ষণেশ্চাপি স্থলারি
সান্ত্রিকো বলিদানানি নিত্যং কুর্য্যাৎ প্রযক্তঃ। রাজসো
রজোগুণৈযুক্তঃ সত্যং সত্যং বরাননে রাজসো বলিদানানি স্থরেশে রাজসৈযুক্তঃ। তামসপ্তামসগুণ-রালস্থাদি
যুক্তঃ প্রিয়ে। ন শ্রন্ধা বলিদানেয় পূজনাদিয় স্থলারি। ন
স্থোত্রপাঠে হোমে চ নামমাত্রেণ সাধক ইতি।

যতু শ্যামাসপর্যাধৃতশিবতাগুবে—ব্রহ্মরন্ধে সহস্রায়ে সহস্রদলশোভিতে। প্রীপ্তরুং পরমানন্দং চাক্ষমুদ্রালসৎকরম্। দিনেত্রং দিভুজং পীতং ধ্যামেদখিলসিদ্ধিদমিতি পীতবর্ণপ্তরুধ্যানং দৃশ্যতে, তস্থায়মভিপ্রায়ঃ পীতং গোরং শুক্রমিতিয়াবং। তথা চ মেদিনীকরঃ, পীতং পানে হরিদ্রায়ং দ্রিয়াং গোয়ে হভিধেয়বদিতি। অতএব শ্যামারহস্যে—শেতাম্বরধরং গৌয় শেতাভরণভূষিতমিত্যুক্তম্। তম্মাৎ পূর্ব্বোক্তপ্রমাণজাতের শিরোহবন্থিতাধ্যেম্থ-সহস্রদলক্ষাদিপক্ষোপাসকৈরেব শিরোহবন্থিতাধ্যেম্থ-সহস্রদলক্ষালকর্ণিকার্তিগতি। দিভুজো দিনেত্রঃ প্রীপ্তরুঃ সান্তিব্বাদি ভেদাৎ শুক্রবর্ণো নীলবর্ণন্চ ধ্যেয়ঃ।

যত্ত্ব শ্রামার্চ্চ নচন্দ্রিকাপ্পতভৈরবতন্ত্রে—ব্যোমাশ্বজে কর্ণিক মধ্যসংস্থিতং সিংহাসনে সংস্থিতদিব্যমূত্তিম্। ধ্যায়েৎ গুরুং চন্দ্রসিতপ্রকাশং ধীপুস্তকাভীতিবরং দধানমিতি॥ তথ্ কশ্বালমালিনীতন্ত্রীয়গুরুন্তবে—শান্তং শুক্রকলেবরং ত্রিনয়নং কান্তাঙ্গভূষং শিবং বাঞ্চাভীতিকরং প্রচণ্ডতিমিরাজ্ঞানপ্রণাশং র রবিম্। নিত্যং নৌমি রবিং ভবান্ধিতরণে তং কর্গধারং শুরুং যস্ত শ্রীপদপঙ্কজোদ্ভবস্থা সিদ্ধৈঃ সদা পীয়তে ইত্যক্ত শুরোশ্চতুভূজত্বং ত্রিনয়নয়ঞ্চ প্রতিপাদিতং তত্তস্ত শিব-রূপত্বেন ধ্যানে বেদিতব্যম্। অতএব শিবমিতি বিশেষণ-ত্বেনোপন্যস্তমিতি সর্ববং স্থাসিদ্ধম্।

তত্র পূর্ব্বেক্তিশ্যামাসপর্য্যাক্রম্প্রতজামলশিবাচ্চ নচন্দ্রিকাপ্রত-দক্ষিণামূর্ত্তিসংহিতাদি-বচনপর্য্যালোচনয়া সান্ত্রিকরাজসভানসভেদেন শুক্রব্রুলনীলবর্ণভেদং প্রীপ্তরুং শ্মরেদিতি শ্বিতম্। মানি তু স্বস্বপ্তরুলনামাভিধানপূর্ব্বক-তৎস্মরণপ্রতিপাদকবচনাম্যুক্তানি তানি পূর্ণাভিষেকসংপ্রাপ্তং সংপ্রদামজিয়াগতম্। শ্রীনাথনাথ সংস্মৃত্যু মানসোক্তৈর্যজেৎ স্ববীরিতি বামাচারপ্রতিপাদক-শ্যামাসপর্য্যাপ্নত-মন্ত্রদর্পণবচনৈকনাক্যত্তা। তৎপরাণ্যেবেতি ধ্যেয়ম্। ব্রাক্ষ্যে মূহুর্ত্তে উত্থায় গুরুং নত্বা স্বনামভিঃ। আনন্দনাথশব্দান্তে পূজয়েদথ সাধক ইত্যাদি নিত্যাতন্ত্রাদিবচনাৎ আনন্দনাথশব্দপ্রয়োগেহপি তৎপরএব পূর্ণাভিষেকপ্রকরণে তথাদর্শনাৎ। তথা কৌলাচ্চ নদীপিকাপ্বত-কুলার্ণবে—এবং সেকং কারয়িত্বা তন্মামকরণঞ্চরেৎ। পূর্ব্বনান্ধা তু সম্বোধ্য অন্ত প্রভৃতি স্বং স্বত! শ্রীঅমুকানন্দনাথ-নামাসীতি বদেদ্গুক্রবিতি॥

যত্ত্ব রুদ্রজামলে দ্বিতীয়পটলে পাশবকল্পে—প্রাতঃ-কুত্যাদিকং কুত্বা পুনঃ শ্যাস্থিতঃ পশুরিত্যুপক্রম্য অথ মধ্যে জ্পেদান্ত্রমান্তন্তপ্রণবেন তু। মধ্যে বাগ্ভবমাযোজ্য গুরুনাম ততঃ পরম্। আনন্দনাথশব্দান্তে গুরুং ডেইস্তং সমুদ্ধরেৎ। নমঃপদ্ধ ততো জ্রয়াৎ প্রণবং সর্ব্বসিদ্ধিদম্। মহাগুরোর্মসুং জপ্ত্বা সর্ব্বসিদ্ধীশ্বরো ভবেৎ ইত্যত্তানন্দনাথ-শব্দান্তে শ্রীগুরুপ্রকৃতনামকথনমুক্তং তদস্মদেশীয়প্রামাণিক-নিবন্ধতন্ত্রসারক্তন্মহামহোপাধ্যায়-কৃষ্ণানন্দভট্টাচার্য্যানভিহিতদ্বেদ সাম্প্রদায়িকৈর্ন ব্যবহ্রিয়তে ইতি॥

প্রাতঃকৃত্যে মূলমন্ত্রজপস্থাবশ্যকত্বমাই ব্রহ্মানন্দণিরিকৃত-তারারহস্তারত-তারাসারাদে প্রতিত্বতাঃ বিধায়াথ মূলমন্ত্রং জপেন্নচ। তস্থা সিদ্ধির্মহাদেব ব্রিয়তে যোগিনীগণৈরিতি। ততঃ শ্বসনামুসারেণ ভূমো পাদং ক্ষিপেং। ততুক্তং শ্রীতত্ত্ব্বিস্তামণো চতুর্দশপ্রকাশে—ত্যজেৎ প্রভাতে চরণং বিধিজ্ঞঃ, সমীরণামুক্রমতো ধরায়াম্। শিবোক্তন্ত্রণং পরিভাব্য তল্লাৎ সমস্তদোষাপমুদং জানানামিতি॥ শিবাচ্চনিচন্দ্রকাধ্বত-সারসংগ্রহে চ—ইফার্থপ্রার্থনাং কুল্বাজ্ঞাং সংপ্রার্থয়েত্ততঃ। ইফদেবস্থা ভূমো চ তস্থাং শ্বাসামু-সারতঃ। বিশ্বস্থা পদমুখায় কুর্য্যাদাবশ্বকীঃ ক্রিয়া ইতি।

ষট্চক্রভেদানন্তর- কুগুলিনী - পরমশিব - সংযোগপ্রকারঃ সহস্রারবিচারশ্চ ভূতশুদ্ধিপ্রকরণে প্রদর্শয়িষ্যতে।

প্রাতঃক্ত্যানন্তরং যথাবিহিতশোঁচাদিকং বিধায় স্নায়াৎ।
তত্ত্বজং রাঘবভট্টপ্রতমন্ত্রতন্ত্রপ্রকাশে—বিহিতাবশ্যকং শৌচমাচাস্তং দন্তধাবনম্। মুখপ্রফালনাদীনি কৃত্বা স্নানং সমাচরেদিতি॥ তস্থ নিত্যত্বমাহ রাঘবভট্টঃ—যতশ্চাশুচিবন্ত্রমস্রানমনদঙ্কারং পুরুষং দেবতা নাধিতিষ্ঠতীতি। তথা
স এব—অথ স্নানং প্রবিক্ষ্যামি সর্ব্বপাপহরং শুভুম্। যং

কুত্বা সাধকঃ সম্যক্ সর্বকর্মাইকো ভবেদিতি॥ কাম্যত্ব-মপি। মৎস্থাদৃক্তে দশমপটলে—স্নানমুলাঃ ক্রিয়াঃ দর্কাঃ শ্রুতিস্মৃত্যুদিতা নৃণাম্ I তস্মাৎ স্নানং নিমেবেত শ্রীপুষ্ট্যা-রোগ্যবর্দ্ধনমূ। যাম্যং হি যাতনাছঃখং নিত্যস্নায়ী ন পশ্যতি। নিত্যস্নানেন পূজ্যন্তে যেহপি পাপক্বতো জনাঃ। অগ্ন্যাগ্মনাৎ পাপাৎ পাপিভ্যশ্চ প্রতিগ্রহাৎ। রহস্তা-চরিতাৎ পাপান্ম চ্যতে স্নানমাচরন্নিতি॥ মন্ত্রদর্পণে—গত্ব। নদীতটে মন্ত্রী প্রাতঃসদ্ধ্যাং সমাচরেৎ। বৈদিকীং তান্ত্রিকীং স্থানদ্বয়ঞ্চৈব যথাবিধি। স্পাত্বান্তোদেবতারূপং ধ্বত্বাঙ্গুল-কুশো স্থবীঃ। অনামায়ান্ত তর্জ্জন্মাং স্বর্ণং রোপ্যং ক্রমাদিমো॥ বৈষ্ণবাদো স্মৃতাবন্তা আরণ্যা মূলমুচ্চরন্। মলপ্রক্ষালনস্নানং কৃত্বা তান্ত্রিকমাচরেৎ॥ তাত্রপাত্রং সদূর্ব্বান্তস্তিলমাদায় সাধকঃ। অমুকীদেবতাপ্রীত্যৈ স্নায়াৎ শ্রেতামুখঃ স্থগীঃ॥ প্রাণায়ামং ষড়ঙ্গানি কুত্বা মার্ভণ্ড-মণ্ডলাং। তীর্থান্তাবাহয়েন্মন্ত্রী মুদ্রয়াঙ্কুশসংজ্ঞয়া॥ অঙ্কু-শাখ্যা দক্ষমৃষ্টিরস্কুশীকৃততর্জনী। ধেমুনাপ্যয়তীকৃত্য কবচে-নাবগুণ্ঠ্য চ। সংরক্ষ্যাস্ত্রেণ সংজপ্য মূলৈকাদশধা স্থধীঃ। ক্ষিপেৎ দ্বাদশধা বারিধারামাদিত্যসংমুখীম্।। ততোহস্মিন্ দেবতাপাদপদ্মনিঃস্থতবারিণি। তির্নিমজ্জ্য চ তাং ধ্যায়ন্ মূলঞ্চ শক্তিতোজপন্। উন্মজ্জ্য ত্রির্জপ্ততোয়ৈ রাত্মান-মভিষিচ্য চ। ত্রিবারং দেবতারূপং মস্তকে কু্স্তুমুদ্রয়া। কর্ণনাসাক্ষিবক্ত্রাণি সংরুধ্যাঙ্গুলিভিস্ততঃ। মজ্জেক্ত ত্রিবিধা কেশং পাশবং স্নানমীরিতমিতি।

ধ্যাঙ্গুলকুশাবিতি শাক্তাভিপ্রায়েণ। তথাচ বরদাতদ্রে

প্রথমপটলে শক্তিবিভামধিক্বত্য—তর্জ্জন্তাং রজতং ধার্য্যং স্বর্ণং ধার্য্যমনাময়। ন কুশকার্য্যকরং যম্মান্নতু বন্তাঃ কুশাঃ কুশাঃ। কুশয়া রহিতা পূজা বিফলা কথিতা ময়া। নান্তন্ত রজতং স্বর্ণং ধার্য্যং হি নিজমঙ্গলে ইতি। এতেনান্তস্বামিক-স্বর্ণরজতরূপকুশধারণনিষেধােহপুযুক্তঃ।

বৈষ্ণবাদাবিত্যত্রাদিশব্দেন গাণপত্যস্থ গ্রহণং শৈব-সৌরয়োঃ শাক্ততুল্যপং তভ্বত্রে প্রকটীভবিষ্যতি ॥ তত্র আবা-হনক তীর্থানাং নাপেক্ষ্যং জাহুবীজলে! নিঃসঙ্কল্লোহণি যঃ স্নায়াৎ স চ পাপৈবিমুচ্যত ইতি বহদ্ধর্মপুরাণীয়গঙ্গার্ধ্ম-বচনাৎ গঙ্গায়াং তীর্থাবাহনস্থানাবশুকত্বেহণি ফলাতিশ্যার্ধ্ম তত্রাপি তীর্থবাহনমপি কার্য্যম্ ॥ সাবাহনস্থানমভিধায় যোহনেন বিধিনা স্নায়াদ্যত্র কৃত্র জলে দ্বিজঃ । স তীর্থফল-মাপ্নোতি তীর্থে দশগুণং ফলমিতি শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাধ্বতায়ি-পুরাণবচনাৎ । এতত্ব সকামিনামেব নিক্ষামিনাস্ত কামধেকু-তত্ত্রে দ্বাত্রিংশৎপটলে গঙ্গাস্থানপ্রসঙ্গেস্ক—সামান্থে চ জলে দেবি সামান্থান্থ নদীষু চ । তীর্থমাবাহয়েদ্দেবি ন চ তীর্থে কলাচনেতি ॥

অথ প্রদঙ্গাৎ গঙ্গায়াং পাদস্পর্শে দোষাভাবমাহ। মাজু কাভেদভন্ত্রে চতুর্দ্দশপটলে গঙ্গাবিষয়কচণ্ডিকাপ্রশ্নানন্তরং শ্রীশঙ্করউবাচ—শৃণু দেবি প্রবক্ষ্যামি তজ্জলে স্নানমাত্রতঃ মুক্তিভাগী ভবেমর্ত্ত্যঃ স্লানাবগাহনাৎ কিল। পাদাদিমন্তকান্তং বৈ স্লানকালে প্রমজ্জতি। পাদস্পর্শো ন দোষায় পর ব্রহ্মণি শৈলজে। পরমাত্মনি লীনে চ তথৈব পরমেশ্বরীতি। তত্ত্র মূলমন্ত্রাভিমন্ত্রিতজলেন স্বশিরস্তভিষেক্মাহ শিবার্চন

চন্দ্রিকায়াম্। ভুবনেশ্যা সমামন্ত্রামৃতীকৃত্য স্বধাসুনা। কবচেনাবগুণ্ঠ্যাথ সংরক্ষ্যান্ত্রেণ মন্ত্রয়েৎ। মূলেন দেবতাং তত্র সাঙ্গাং সাবরণাং প্রিয়ে। সমাবাছ জলে ধ্যাত্বা তৎ-পাদনির্গতং জলম্। ধ্যাত্বা তীর্থং স্মরন্ মূলমন্ত্রং সায়াজ্জলে ত্রিশঃ। উদ্মজ্জ্য মূলমন্ত্রেণ সিঞ্চেৰ কুম্ভমুদ্রয়েতি॥ রাঘব-ভট্টে চ---হন্মন্ত্রাঙ্কুশমুদ্রাভ্যাং তীর্থমারুষ্য মণ্ডলাৎ। আবাছান্তিসি সংযোজ্য সোমসূর্য্যাগ্রিমগুলম্। সঞ্চিস্ত্য মন্ত্রী তন্মধ্যে নিমজ্জেৎ স্থসমাহিতঃ। মূলং মন্ত্রং সমাবর্ত্ত্য মনসোল্লিথ্য চাক্বতিম্। উত্থায়াচম্য তৎপশ্চাৎ ষড়ঙ্গন্সাসসং-যুতঃ। আত্মানং মূলমন্ত্রেণ মুদ্রয়া কলশাখ্যয়া। সপ্তকুত্বো-২ভিষিচ্যাথ মনুনা মন্ত্রিতৈর্জ্জলৈরিতি॥ তথা তদ্ধৃতবশিষ্ঠ-সংহিতায়াম্—বিশুস্থাঙ্গে ষড়ঙ্গানি প্রাণায়ামপুরঃসরম্। শ্রীসূর্য্যমণ্ডলাত্তীর্থমাকুষ্যাস্কুশমুদ্রয়া। বমিত্যনেন চাপ্লাব্য কবচেনাবগুণ্ঠয়েং। সংরক্ষ্যান্ত্রেণ মূলেন মন্ত্রয়েৎ রুদ্র-সংখ্যয়া। নিমজ্জ্য তশ্মিন্ শ্রীদেবং ধ্যায়েচ্ছক্ত্যা জপশ্মসুম্। উন্মজ্য কুম্ভুমুদ্ৰোঞ্চ বদ্ধা সুায়াদ্বিষট্ তত ইতি॥ গৌতমীয়ে সপ্তমাধ্যায়ে তীর্থাবাহনমভিধায়—এবমাবা**হু** বিধিব**ৎ মূল-**মত্ত্রেণ মন্ত্রহাঙ্ । আমন্ত্র্যান্ত্রসি সংযোজ্য সোমসূর্য্যাগ্নিমণ্ডলম্। বিচিন্ত্য মন্ত্রী তশ্বধ্যে নিমজ্জেন্মূলমূচ্চরন্। উত্থায়াচম্য তৎপশ্চাৎ ষড়ঙ্গন্তাসসংযুত্য। আত্মানং দশধা সিঞ্েমুদ্রয়া কলশাখ্যয়া। সপ্তক্কস্বোহভিষিঞ্চেদ্বা মনুনামন্ত্রিতৈর্জ লৈরিতি। শ্ৰীতন্ত্ৰচিন্তামণো চ—তীৰ্থাবাহনমুক্ত্ৰা মূলং স্মরন্ মূৰ্দ্ধি তোয়ং কুস্ভ্যাখ্যেন ত্রিধা ক্ষিপেৎ। ততঃ কুস্তমুদ্রামভিধায় সপ্ত ছিদ্রাণি সংরুধ্য ত্রিধা মজ্জেভতঃ স্থণীরিতি॥ তথা

অন্ধদাকল্পে পঞ্চমপটলে—কৃত্তসঙ্কল্পএবাসে বড়ঙ্গপ্রাণসংযমম্।
কৃষা তু পুরতন্তোয়ে কুলচক্রং লিখেদ্বৃধঃ। কুলস্র্যাৎ
সমাক্রয় কুলমুদ্রাল্পণেন চ। কুলতীর্থানি তত্ত্বৈ বিশ্রস্থ
তদন্তরম্। অবগুঠ্য চ সংরক্ষ্য ধেনুযোনীং প্রদর্শ্য চ। মূলেন
দশধামন্ত্র্য ত্রিধা কলশমুদ্রয়া। মূদ্ধি নিক্ষিপ্য তত্তোয়ং
মূলমন্ত্রং সমুচ্চরন্॥ সপ্ত ছিদ্রাণি সংরুধ্য ত্রিনিমজ্জেলান্তরইতি॥ রহন্নীলতন্ত্রে প্রথমপটলে—জলাঞ্জলিং
ততো দল্লাৎ মূদ্ধি কুতাভিষেচনম্। তত আচমনং কুর্যাৎ
ত্রিকোণং দক্ষিণেন তু। গৃহীতপাণিনা কি শন্ধাবর্ত্ত্রমেণ
তু। বিলোজ্য তত্র নিশ্বজ্জেদবমর্ষণকং তথেতি।

নমু পূর্বেরাক্তশিবাচ্চ নচন্দ্রিকা-রাঘবভট্টপ্নত-বশিষ্ঠসংহিতাগোতমীয়তন্ত্রবচনেয়ু নিমজ্জনাৎ পরমভিষেকঃ প্রতীয়তে
শ্রীতত্ত্বচিন্তামণ্যন্নদাকল্লরহন্ধীলতন্ত্রবচনেয়ু মজ্জনাৎ পূর্ব্বমভিষেকা দৃশ্যতে। তত্র কিমূভয়ত্রৈবাভিষেকঃ কর্ত্তব্যঃ উত্ত নিমজ্জোতি আহোম্বিদভিষিচ্য নিমজ্জেদিতি। নচ শক্তিদেবতোপাসনামাত্রপ্রতিপাদকশ্রীতত্ত্ব চিন্তামণ্যাদিবচনেয়ু নিম্জ্জনাৎ পূর্ববং তদভিধানাৎ তত্ত্বপাসকৈর্মজ্জনাৎ পূর্ব্বমভিষেকঃ কর্ত্তব্যঃ অত্যৈন্ত্র পরমিতি বাচ্যম্ কাল্যাদিবিল্যানিক্তিয়—ত্রির্নিমজ্জ্য ঘথাশক্তি মূলমন্ত্রং জপেৎ প্রিয়ে। ত্রিবারমন্ত্রিতৈন্তোয়েঃ মুদ্রয়া কলশাখ্যয়া। আত্মানমভিশ্বিক্তেরু ততঃ সন্ধ্যামুপাসয়েদিতি তোড়লতন্ত্রত্তীয়পটলকচনন আমন্ত্র্যান্তিস সংযোজ্য সোমসূর্য্যাগ্রমগুলম্ । বিচিন্ত্যাক্তিন আমন্ত্র্যান্তিস দিবেজ্য মূলমূচরন্। উত্থায়াচম্য তৎপশ্চাৎ বড়ঙ্গন্তাস্বস্থানিমজ্জ্য মূলমূচরন্। উত্থায়াচম্য তৎপশ্চাৎ বড়ঙ্গন্তাস্বস্থান্তঃ। আত্মবিল্যাশিবৈস্তত্ত্বেরাচামেৎ সাধ্কা-

গ্রনীঃ। বহ্নিজায়াং পরে দত্ত্বা শুদ্ধেন পাথসা প্রিয়ে। অভিমন্ত্র্য ততন্তোয়ং মূলমন্ত্রেণ সাধকঃ। ক্ষালয়েত্রেন বপুষঃ কলুমং কুস্তুমুদ্রয়া। আত্মানং দশধা সিক্ষেমুদ্রয়া কলশাখায়া। সপ্তকৃত্বোহভিষিক্ষেমা মন্তুমামন্ত্রিতৈর্জলৈরিতি শাক্তানন্দ-তরঙ্গিণীধৃতজামলবচনে চ তদ্বৈপরীত্যদর্শনাৎ। তত্র নাছঃ অভিষেকস্থ বারদ্বয়াভিধায়কবচনাভাবাৎ। ন দ্বিতীয়ঃ অম-দাকল্লাদিয় নিমজ্জনাৎ পূর্বমভিষেকবিধানবৈফল্যাৎ। নাস্ত্যঃ গোতমীয়তন্ত্রাদিবচনবিরোধাৎ। তত্মাত্রভয়ত্রেব শান্ত্রসিদ্ধত্বা-দিচ্ছাবিকল্লোহয়ং বোদ্ধব্যঃ। অত্র দ্বাদশ দশ সপ্ত ত্রিবা-রাভিষেকদর্শনাৎ শক্তাশক্তভেদেনাভিষেকসংখ্যাভেদোহপি ব্যবস্থাপয়িতব্যঃ।

যত্ত্ব অভিষেকং ততঃ কুর্য্যাৎ মূলমন্ত্রং সমূচ্চরন্। মূলেন চ নমোহন্তেন স্বাভিষেকপদেন চ। অভিষেকং ততঃ কুর্যাং শ্রেরআরোগ্যহেতবইতি তারাপ্রদীপদিতীয়পটল-বচনেন স্বাভিষেকপদঘটিতমন্ত্রাভিমন্ত্রিতজ্ঞলেনাভিষেচনমূক্তং তৎ ক্রেরআরোগ্যহেতবে ইতি ফলান্তরপ্রবাণাৎ যক্ত পর্নন্মী জুহূর্ভবতি ন স পাপশ্লোকং শৃণোতীতিবৎ সাধকক্ত ফলান্তরস্ত্রাপ্যাকাজ্জায়াং বোধ্যম্। প্রীতয়েহমুকদেবতায়্বাঃ করিষ্যে স্নানমিত্যতঃ। স্বমূর্দ্ধন্তমূকীং দেবীমভিষিঞ্চামি সপ্তভিঃ। ততো বহ্লিবধ্যুক্তং ত্রিবারমভিষেচয়েদিতি শান্তবীতন্ত্রপঞ্চমপটলবচনমপি তারাপ্রদীপবচনক্বাক্যতয়া তৎপরমেব বোদ্ধব্যম্ তারাপ্রদীপবচনক্ষ-স্বাভিষেকপদ্শৈত্বদটনকবাক্যতয়া স্বীয়দেবতাঘটিতাভিষেকমন্ত্রপরমেব। তারাপ্রদীপবচনে নমোহন্তমন্ত্রঃ স্ত্রীশৃদ্রপরঃ। শান্তবীতন্ত্র-

বচনে শাহাশন্দে দিজাতিপর ইতি সর্ব্ব্রাবিরাধঃ ।
ততো বস্ত্রপরিধানং কুর্যাৎ। তত্তকং রহন্দীলতন্ত্রে প্রথমপটলে—সোমায়ভাবেন পশ্চাৎ জলাতুখায় বাসদী। পরিধায় ততো মন্ত্রী যখাবিধি সমাচরেদিতি ॥ তত্র সান্ত্রিকাদিভেদেন বস্ত্রনিয়মমাহ মহানীলতন্ত্রে সপ্তবিংশতিপটলে—
দান্ত্রিকঃ শুক্রবন্ত্রেণ কার্য্যং কুর্য্যাদতন্ত্রিতঃ। রাজদা রক্তবন্ত্রেণ তামদাঃ কৃষ্ণবন্ত্রকে। রজঃসন্থা নীলবন্ত্রে তমঃসন্থাশ্চ
পীতকে। রজস্তমা ধূত্রবন্ত্রে সন্থরাজদতামদাঃ। অকণাভং তথা কুর্যু র্বস্ত্রাচ্ছাদনমীরিতম্। শীক্ষামঙ্গলকার্য্যে
পুরশ্চরণকর্মাণ। ষট্ কর্মান্ত প্রকৃত্রিত বন্ত্রাচ্ছাদনমানকমিতি ॥ তত্র স্বাধীত্রযুগ্মবন্ত্রস্থাবশ্যকত্রমাহ নারদপঞ্চরাত্রে—স্বধোতং পরিধায়াথ বন্ত্রযুগ্মমখেদদম্। তদভাবাদাধঃশাটী যোগপট্রকসংযুতা। ন চৈকবাদদা যম্মান্তবিতব্যং
কদাচনেতি॥

যত্ত্ব চাতুৰ্ব্বৰ্ণ্যমুপক্ৰম্য শ্বেতং ব্ৰক্তং তথা পীতং কৃষ্ণঞ্চেত্ৰমুপূৰ্ব্বশ ইতি মৎস্থসূক্তবচনে বিপ্ৰাদিবৰ্ণভেদেন বক্তাণাং শুক্লাদিভেদোপাদানমভিহিতং তৎ কৰ্ম্মসামান্তে বোধ্যং সামান্তবিশেষভায়াৎ ॥

অথ কর্মমাত্রের স্নানাচমনাদিবং কর্তৃসংস্কারকাঙ্গত্বে তিলকস্থাধিকারিতাপ্রতিপাদকত্বমাহ শ্যামাপ্রদীপধৃতযজ্ঞ-পার্য:—তিলকী কর্ম কুর্বীতেতি। তত্মাম্মূদা জলেনাপি কর্তব্যং তিলকং বুধৈঃ। অন্যথা বিফলং জ্রেয়ং বীজোপ্তি-রমরে যথেতি। তিলকীতি উদ্ধপুণ্ডাদিম্মস্কাত্যক্ততিলক-বানিভ্যর্থঃ।

তথাচ ব্ৰাহ্মণাদিভেদেনোদ্ধ পুণ্ডাদিভিলকভেদমাহ শিবাৰ্চনচন্দ্ৰিকাগ্বজামলে—বিভ্য়াদ্বাসদী শুদ্ধে তিলকং বৰ্ণভেদতঃ।
ব্ৰাহ্মণস্থোধিপুণ্ডং স্থাৎ ক্ষত্ৰিয়স্থ ত্ৰিপুণ্ডুকম্। বৈশ্যপুণ্ডুমৰ্চন্দ্ৰং শূদ্ৰাণাং বৰ্ত্তুলাক্ষতীতি।

উর্দ্ধপুণ্ড লক্ষণস্ত মৎস্থসূক্তে। নাসিকাকেশপর্যন্তমৃদ্ধপুণ্ডং বিধীরতে। মধ্যে ছিদ্রন্ত কর্তব্যং তচ্ছিদ্রং হরিমন্দিরমিতি॥ পদ্মপুরাণোত্তরথণ্ডে চ—একান্তেন মহাভাগাঃ
সর্বাভ্তহিতে রতাঃ। সান্তরালং প্রকুর্বন্তি পুণ্ডং হরিপদাকৃতিমিতি॥ মধ্যচ্ছিদ্রাভাবে দোষমাহ তত্রৈব—নিরন্তরালং যঃ কুর্য্যাদৃদ্ধপুণ্ডং দিজাধমঃ। স হি তত্র স্থিতং
বিষ্ণুং লক্ষ্মীঞ্চৈব ব্যপোহতি। অচ্ছিদ্রদ্দ্ধপুণ্ডুন্ত যে
কুর্বন্তি দিজাধমাঃ। তেষাং ললাটে সততং শুনঃ পাদো
ন সংশয়ঃ। তন্মাচ্ছিদ্রান্থিতং পুণ্ডুং দণ্ডাকারং স্থশোভনম্।
বিপ্রাণাং সততং ধার্য্যং স্ত্রীণাঞ্চ শুভদর্শনে ইতি।

অত্র স্ত্রীণামূদ্ধ পুণ্ড ধারণস্ত পদ্মপুরাণবচনস্থ বৈষ্ণববিষয়-তরা বিষ্ণু পাসিকানাং বৈদিককল্পেন বিষণু পাসনাবিষয়ং নতু বৈদিককর্মমাত্রে। বক্ষ্যমাণ-শাশ্বততন্ত্রে তাসামূদ্ধপুণ্ড -নিষেধাং।

উদ্ধপুশুবর্ণভেদফলমাই তত্তিব—শ্যামং শান্তিকরং প্রোক্তং রক্তং বশ্যকরং তথা। শ্রীকরং পীতমিত্যাহ্যঃ খেতং মোক্ষপ্রদং শুভমিতি॥ ক্বতম্বন্ধাভূয়ৰ্দ্ধপুশু।দি-ব্রাহ্মণাদিভিঃ সর্ব্বোপাসকৈরেব পুনস্ত্রিপুশু ধারণং কর্তব্য-মিত্যাই শ্যামাপ্রদীপধ্বতশাশ্বততন্ত্রে—বৈষ্ণবো বাথ শৈবো বা শাক্ষো বা সৌর এববা। ত্রিপুণ্ডেণ বিনা পূজাং কুর্কানো যাত্যধোগতিম্। অত্র অন্তঃস্থবাশব্দস্রাম্কুসমুচ্যার্থকেন গাণপত্যেহপি। তথাচ কঙ্কালমালিনীতক্ত্রে পঞ্চমপটলে ত্রিপুণ্ডুমধিকৃত্য তৎসাধনাভিধানে—শৈবে বিষ্ণে চ সোরে চ গাণপত্যের্ পার্বতি। শক্তিরূপা চ যা গোঃ স্থাৎ তন্তা গোময়সম্ভবম্। তন্মাত্তের্ মহেশানি বিশিষ্টং পরিকীর্তিডিনিতি। তত্রিব—যৎ কিঞ্চিৎ কুক্তে কর্ম্ম বিনা বিপ্রস্তিপুণ্ডুকম্। ব্যর্থমেব ভবেৎ সর্ববং বন্ধ্যান্ত্রীমৈথুনং যথা। অত্র বিপ্র ইত্যুপলক্ষণম্। পূর্ববিচনে বৈষ্ণবো বাথ শৈবো বেতি সামান্তেনাভিধানাৎ বক্ষ্যমান্ত্রনে শ্বপচ্ন্তাপি ত্রিপুণ্ডুধারণফলাতিশয়শ্রেবণাচ্চ।

যত্ত্ব উদ্ধ পুণ্ডে ত্রিপুণ্ডঃ যঃ কুরুতে মানবাধমঃ। ভঙ্ক্ত্যা বিষ্ণুগৃহং পুণ্যং স যাতি নরকং ধ্রুবমিতি ভগবদ্ধক্তিবিলাসগ্নত-পাদ্মোত্তরথগুবচনে—তির্য্যক্ পুণ্ডঃ ন কুর্বীত সংপ্রাপ্তে মরণেহপিচ। নৈবাক্তনাম চ জ্রয়াৎ পুমান্নারায়ণাদৃতে ইতি তদ্ধৃতক্ষন্দপুরাণবচনে চ ত্রিপুণ্ড নিষেধাভিধানং তদৈদিকক্ষেন বৈষ্ণবানাং বিষ্ণুপাসনামাত্রবিষয়ং নতু বৈদিকক্ষ্মাত্রে। ত্রিপুণ্ডেণ বিনা কুর্য্যাৎ যাং কাঞ্চিদৈকীং জ্রিয়ায়্। নিক্ষলা সা ভবেৎ ভূপ ব্রহ্মণাপি কৃতা যদীতি শ্যামাপ্রদীপগ্নত-ক্ষন্দপুরাণবচনএব ত্রিপুণ্ড্রং বিনা বৈদিক-ক্রিয়াকরণে নিক্ষলত্বাভিধানাং।

তম্মাৎ কলাবাগমোক্তক্কত্যস্থাতীবপ্রাশ্যস্ত্যেন বৈষ্ণবৈরপি তান্ত্রিককল্পেন বিষ্ণৃপাসনায়াং ত্রিপুণ্ডুধারণমপি কর্ত্তব্য-মেবেতি।

তথাচ ত্রিপুগুধারণে ফলাতিশয়মাহ কঙ্কালমালিনীতত্ত্তে

শ্বসপটলে—ললাটে দৃশ্যতে যস্ত ত্রিশূলাভং ত্রিপুশুকম্। আত্মানমাত্মদৃক্ শ্বানং নয়ত্যচ্যুতরূপতাম্। ত্রিপুশুধারিণং পশ্যেদ্যদি বা শ্বপচাধমম্। ব্রহ্মবিষ্ণুশিবাদেশাৎ তং নমস্তি স্তরা অপীতি।

ত্রিপুণ্ড করণপ্রকারমাহ শ্রামান্চ নচন্দ্রকাধতরহদ্ধারা-বল্যাম্। বক্রা ললাটগা খণ্ডচন্দ্ররেখা ত্রিপুণ্ড কমিতি। ত্রিপুণ্ডান্তর্গতরেখাণাং ত্রৈবিধ্যমাহ শাশ্বততন্ত্র—অধোরেখা: তামদী স্থান্মধ্যরেখা চ রাজদী। উর্দ্ধান্ত দান্ত্রিকী প্রোক্তা বামাংশাদ্দিশিং গতেতি।

ত্রিপুণ্ড্রধারণফলমাহ কন্ধালমালিনীতন্ত্রে পঞ্চমপ্টলে—
যানি তীর্থানি লোকেহিম্মন্ গঙ্গাডাঃ সরিতশ্চ যাঃ। স্নাতো
ভবতি সর্বত্র যল্ললাটে ত্রিপুণ্ডুকম্। সপুকোটিমহামন্ত্রা
উপমন্ত্রাস্তথৈব চ। শ্রীবিফোঃ কোটিমন্ত্রাশ্চ কোটিমন্ত্রাঃ
শিবস্তা চ। তে সর্ব্বে তেন জপ্তাঃ স্থ্য র্যোবিভর্ত্তি ত্রিপুণ্ডুকম্।
সহস্রং পূর্ববজাতানাং সহস্রঞ্চ জনিয়তাম্। স্ববংশজাতান্
মর্ত্র্যানামূদ্ধরেৎ য ন্ত্রিপুণ্ডুক্ৎ। শতৈশ্ব্যিগুণোপেতঃ প্রাপ্যা
দিন্যবপুস্ততঃ। দিব্যং বিমানমারুছ্য দিব্যস্ত্রীশতেসেবিতঃ।
বিভাগরাণাং সিন্ধানাং গন্ধ্রবিগাং মহোজসাম্। ইন্ত্রাদিলোকপালানাং লোকেরু চ যথাক্রমম্। ভুক্ত্রা ভোগান্ স
বিপুলান্ প্রক্রশানাং পুরেন্ চ। ব্রহ্মণঃ পদমাসাত্য তত্র
ক্রাযুতং বন্ধে। বিষ্ণুলোকেরু রমতে আব্রহ্মণঃ শতায়ুষম্।
শিবলোকং ততঃ প্রাপ্য রমতে কালমক্ষয়ম্। শিবসাযুজ্যমাপ্নোতি ন স ভুয়োহভিজায়তইতি॥

ত্রিপুগু সাধনমাহ শাশ্বততত্ত্রে—ত্রিপুগু মূর্দ্বপুগুঞ্ যদা

হবভশ্বদীৰিভিঃ ৷

কুর্যাদ্বিজোত্তমঃ। গঙ্গাম্বদায়িহোত্রোপতস্মনা বা স মুক্তিভাক্॥ এতত্ত্ব সামান্যম্। বিশেষমাহ কঙ্কালমালিনীতত্ত্বে পঞ্চমপটলে করীয়ত্ত্যাদিসাধনমূক্ত্বা—সামান্যমেতং হুজ্যোদিবিধেং শৃণু মংপ্রিয়ে। করীয়ত্ত্যাদন্দে হৌম্যত্ত্ম মহাফলম্। হৌম্যত্ত্যাৎ কোটিগুণং বিষ্ণুযাগ্যং মহেশার শিবহৌমং তদ্বিগুণং তত্মাত্বু শৃণু স্থান্দরী। স্বীয়েইটদেবতা-হৌম্যমনন্তং প্রিয়বাদিনি। তন্মাহান্ত্যামহং বক্তুং বজ্ব-কোটিশতৈরপি। ন সমর্থো যোগমাণি কিমন্তৎ কংয়ামিতে ইতি।

বৈষ্ণবেন তু স্বস্থজাত্যুক্তোর্দ্ধপুশ্রাগ্যনন্তরং ত্রিপুণ্র কৃষা শঙ্খচক্রাদিতিলকধারণমপি কার্য্যয়। তদাহ রাঘন ভট্টপুতম্—ললাটে তু গদা কার্য্যা মূর্দ্ধি, চাপং শরং তথা। নন্দকঞ্চৈব হামধ্যে শঙ্খং চক্রং ভুজন্বয়ে। শঙ্খচক্রান্ধিতো বিপ্রঃ শাশানে ত্রিয়তে যদি। প্রয়াগে যা গতিঃ প্রোক্ত সা গতিস্তস্থা নারদেতি।

দ্বিজেতরস্মোর্জপুণ্ড নিষেধমাহ শাশ্বততন্ত্রে—নারী ব পতিতো বাপি শূদ্রো বাপ্যস্ত্যজোহপি বা। উর্জ্বপুণ্ড বিধায়াশু নরকং যাতি রোরবমিতি।

যত্ত্ব উদ্ধৃপুণ্ডুমুজ্ং সোম্যং ললাটে যক্ত দৃশ্যতে। ফ্র চণ্ডালোহপি শুদ্ধারা পূজ্য এব ন সংশয় ইতি ব্রহ্মাণ্ডপুরাণ্চণ্ডালক্তাপি উদ্ধৃপুণ্ডধারণং দৃশ্যতে তত্তক্তিব প্রশংসাপ ফ্রেনাবিক্লক্ষ্। চণ্ডালঃ কর্মচণ্ডালে। দ্বিজ ইত্যথো বা স্ত্রীণামন্ত্রপনী তানাঞ্চ বিশেষেত্রসর্বকর্মস্ক শৃদ্রভুল্যজ্বদর্শনি তিলকেহপি বিশেষানভিধানাত্তথৈবেতি বোধ্যম্। কেচিট

বিষ্ণৃপাদকব্রাহ্মণাদিচণ্ডালপর্যান্ত-দর্ববর্ণৈ ব্রিষ্ণৃপাদিকাভিঃ ক্রীভিশ্চোর্দ্ধৃপুণ্ডুধারণং কর্ত্তব্যমিত্যাহুঃ।

> ইতি সত্তমহামহীশচক্রচুড়ামণিচর্চিতচরণনলিন শ্রীমদ্গোপী-মোহনপাদপদ্মামন্দমকরন্দসন্দোহানন্দিত্মনোমধুকর-শ্রীহরকুমার দেবশর্শ্ম-স্বীয়চিস্তামণিমন্ত্রচিস্তোদর্ক-হরতত্ত্বদীধিতৌ পঞ্চমকলাপ্রকাশঃ।

অথ প্রদঙ্গাৎ যজ্ঞোপবীতধারণবিধানমূচ্যতে। মহানীল-তন্ত্ৰে একত্ৰিংশ-পটলে—কাৰ্পাদস্ত বিজাতীনাং ক্ষৌমঞ্চ ভূভুজাং তথা। বৈশ্যানাং শণসূত্রঞ্চ শঙ্করস্থ মতেন চেতি॥ মাতৃকাভেদতন্ত্রে একাদশপটলে চ। শ্রীচণ্ডিকোবাচ—যজ্ঞ-সূত্রধ:রণেন ভূপুজো নাত্র সংশয়ঃ। ইদানীং যজ্ঞসূত্রস্থ বিধানং ময়ি কথ্যতাম্।। শ্রীশিবউবাচ—যজ্ঞসূত্রস্থ যন্মানং তৎ শৃণুম্ব বরাননে। ঋথেদী ধারয়েৎ সূত্রং নাভেরূর্দ্ধ্বং স্তনা-দ্বঃ॥ যজুষাং সূত্রমানং হি আশ্চর্যাং শৈলজে <mark>পরম্।</mark> বাহুমূলপ্রমাণেন যজ্ঞসূত্রং দ্বিজাতিভিঃ। ধারণীয়ং প্রযক্ষেন নান্তৎ দৈর্ঘ্যং কদাচন॥ সামগস্ম দীর্ঘসূত্রং ত্রিবিধং বর-বর্ণিনি। ব্রহ্মরন্ধ্রান্নাভিদেশপর্যন্তং নাভিসূত্রকম্॥ পরমেশানি প্রকারান্তরকং শৃণু। ত্রীবায়া দক্ষিণাঙ্গুষ্ঠপর্য্যন্তং ^{বজ্ঞ}সূত্রকম্॥ অথবা ধারয়েৎ সূত্রং যজেন যজ্যাং মতম্॥ অথবা ধারয়েৎ সূত্রং সামগস্ত প্রক্রাণতঃ। অথবা ধারয়েৎ ^{যজ্ঞ}মূত্রং পরমনোহরম্।। আজাচক্রান্নাভিদেশপর্যান্তং যজ্ঞ-

সূত্রকম্॥ এতৎ সক্ষেত্যজ্ঞাস্বা যঃ কুর্য্যাৎ সূত্রধারণম্। স চণ্ডালসমো দেবি যদি ব্যাসসমো ভবেদিতি॥ সামগস্থ প্রমানত ইতি যজুর্কোদিবিষয়ম্। আজ্ঞাচক্রাদিতি জ্রমধ্যা-দিত্যর্থঃ॥

ভৃঞঃ—পতিতং ক্রটিতং ব্যাপি ব্রহ্মসূত্রং কমগুলুম্।
নূতনং ধারয়েৎ বিপ্রঃ স্নানসঙ্গলপূর্বকম্ ॥ যজ্ঞোপবীতমেকৈকং প্রতিমস্ত্রেণ ধারয়েং। সকুত্রচারণাৎ তস্থ
প্রায়শ্চিত্রী ভবেষর ইতি॥ বিজানধিকতা কাত্যায়নঃ—
সদোপবীতিনা ভাব্যং সদা বদ্ধশিখেন চ। বিশিখী ব্যুপ্রতী চ যৎ করোতি ন তৎ কৃত্যিতি॥ তথা, উপবাতং
বটোরেকং দ্বে তথেতরয়োঃ স্মৃতে। একমেব যতীনাঞ্ধ
ইতি শাস্ত্রবিনির্ণয় ইতি॥ বটুঃ অকৃতসমাবর্ত্তন ইত্যুর্থঃ।

যতু, একযজ্ঞোপবীতেন জপহোমাদিকং কৃতম্। তং সর্ববং রাক্ষসৈনীতং পিতৃণাং নোপতিষ্ঠত ইতি স্মৃত্যন্তর-বচনে একযজ্ঞোপবীতধারণস্থ দোষশ্রেবণম্য, তৎ বক্ষ্যমাণ-দেবলবচনৈকবাক্যতয়া ব্রহ্মচার্য্যতিরিক্তগৃহিপরম্। তথাচ দেবলঃ—ব্রহ্মচারিণ একস্ত স্থানাৎ প্রভৃতি তৎ স্বয়ম্। বয়ুনি বা য়ুংকামশ্চ ধারয়েৎ সততং দ্বিজ ইতি॥ স্থানাৎ অবভৃথ-স্থানাৎ পরমিত্যর্থঃ। আশ্বলায়নঃ—যজ্ঞোপবীতে দ্বে ধার্য্যে জারতে স্মার্ত্তি চ কর্ম্মণি। তৃতীয়মুপবীতং বা বস্ত্রাভাবে তদিয়তে॥ আয়ুজামেঃ সদা কার্য্যং বহু যজ্ঞোপবীতকম্। পঞ্চভিঃ পুত্রকামী স্তানিতি শাস্ত্রবিনিশ্চয় ইতি॥ চকারাং তাল্রিকে কর্মণ্যপি তথা।

নম্ব সম্প্রতং ধৃতং কায়ে যুম্মাৎ যুক্তোপবীতক্ষ!

নোতারয়েত্ততঃ প্রাজ্ঞো যদীচ্ছেৎ শ্রেয় আত্মনঃ॥ তথা সামগালৈচৰ যে চান্ডে যে চান্ডে যজুশাথিনঃ। কণ্ঠাছভার্ষ্য দূত্রস্ত পুনঃ কুর্বস্তি সংক্ষিয়ামিতি বচনাভ্যাং সামযজু-বেদিনো র্যজ্ঞোপবীতস্থ কণ্ঠাছভারণনিষেধাৎ প্রভ্যুত পুনঃ-সংস্কারবিধানাচ্চ তৎ কথমভ্যঙ্গাদৌ কণ্ঠাহুত্তোলনমিতি চেৎ সত্যম্। অভ্যঙ্গে চোদধিস্নানে মাতাপিত্রোমূতে-২হনি। কণ্ঠাছভাষ্য সূত্ৰস্ত কুৰ্য্যাৎ বৈ ক্ষালনং দ্বিজ ইতি॥ তথা মালাপকর্ষণে স্নানে তৈলাভ্যঙ্গে তথৈব চ। ব্রহ্মসূত্রং পৃথক্ কুৰ্য্যাদন্যথা পতিতো ভবেদিতি বচনাভ্যাং সামান্য-বিশেষস্থায়েন পূর্বেবাক্তবচনদ্বয়ং তৈলাভ্যঙ্গাগুতিরিক্তবিষ-য়ম্। তম্মাৎ স্বেচ্ছয়ৈবৈতাদৃশকারণমন্তরেণ যজেপবীতস্থ কণ্ঠাত্মভোলনে দোষো জ্বেয়ঃ॥ কাত্যায়নঃ—উপবীতমল-ক্ষারং ব্রজং করকমেব বা। উপানহো তথা বাসো ধ্রতমন্তৈর্ন ধারয়েং॥ মেথলামজিনং দণ্ডমুপবীতং কমগুলুম্। অপ্দৃ প্রাস্ত বিনন্টানি গৃহ্বীতান্তানি মন্ত্রত ইতি॥ এতেনালৈধ্বতং যজেপিবীতং ন ধারয়েৎ এবং বক্ষ্যমাণমালামপি॥

তুলস্থাদিমালাধারণস্ত স্বস্বকল্পেইধিগন্তব্যম্। তত্র কল্যক্ষে তু বিশেষঃ কশ্চিত্বচ্যতে। তথাচ কল্পালালানী-তন্ত্রে পঞ্চমপটলে—মুক্তাপ্রবালক্ষ্টিকৈঃ সূর্য্যেন্দুর্মাণ-কাঞ্চনিঃ। সমেতান্ ধারয়েৎ যস্ত ক্রদ্রাক্ষান্ শিব এব সঃ॥ কেবলানপি রুদ্রাক্ষান্ যো বিভর্তি বরাননে। তং ন স্পৃশন্তি পাপানি তিমিরাণীব ভাস্কর্মিতি॥ এতেন তুলস্থাদি-মালানাঞ্চ রত্নাদিসহক্তধারণমপি যুক্তং নিষেধানবলোকনাৎ প্রত্যুত তদ্ধারণজনিতপৃথক্পৃথক্কল্যাবণাচ্চ॥

অসংস্কৃতরুদ্রাক্ষধারণে দোষমাহ রামানন্দতীর্ধস্বামি-শোধিতরহতন্ত্রসারে—বিনা মস্ত্রেণ যো ধতে রুদ্রাক্ষং ভূবি মানবঃ। স যাতি নরকান্ ঘোরান্ যাবদিজ্রাশ্চতুর্দশা ইতি॥ একবক্তাদিভেদেন তৎসংস্কারস্তথান্বেফব্যঃ॥ এবং তুলসী-মালায়ামপি-স্কান্দে-সংনিবেদ্যৈব হরয়ে তুলসীকার্চসম্ভ-বাম্। মালাং পশ্চাৎ স্বয়ং ধত্তে স বৈ ভাগবতোত্তমঃ॥ হরয়ে নার্পয়েৎ যস্ত তুলদীকাষ্ঠসম্ভবাম্। মালাং ধড়ে স্বয়ং মূঢ়ঃ স যাতি নরকং ধ্রুবম্। ক্ষালিতাং পঞ্চাব্যেন মূলমন্ত্রেণ মন্ত্রিতাম্। গায়ত্র্যা চাই্টকুত্বো নৈ মন্ত্রিতো ধূপ-য়েচ্চ তাম্॥ বিবিবৎ পরয়া ভক্ত্যা সন্তোজাতেন পূজয়েৎ। তুলদীকাষ্ঠসম্ভূতে মালে কৃঞ্জনপ্রিয়ে। বিভর্মি ত্বামহং কণ্ঠে কুরু মাং কৃষ্ণবল্লভম্॥ যথা ত্বং বল্লভা বিষ্ণো নিত্যং বিষ্ণুজনপ্রিয়া। তথা মাং কুরু দেবেশি নিত্যং বিষ্ণুজন-প্রিয়ম। এবং সম্প্রার্থ্য বিধিবৎ মালাং কুষ্ণ গলেহপিতাম। ধারয়েৎ বৈষ্ণ্যবা যো বৈ স গচ্ছেৎ বৈষ্ণবং পদমু ইতি॥

ততঃ পূজাস্থানং গচ্ছেৎ। শিবার্চনচন্দ্রিকাপ্পতনারদপঞ্চরাত্রে—ততশ্চোদকসম্পূর্ণং ভাগুমাদায় পাণিনা। একান্তং
নিবিশন্ প্রায়াৎ মনোজ্ঞং দোষবর্জ্জিতম্। হাম্মধ্যস্থং স্মরেং
বিষ্ণুং প্রবুদ্ধানন্দবিগ্রহম্। দিগন্তরং নিরীক্ষেত মোনী
সংরুদ্ধলোচন ইতি॥ বিষ্ণুমিত্যুপলক্ষণম্ স্বেইদেবতাং
মনসি বিভাবয়ন্ যাগমন্দিরং প্রায়াদিত্যর্থঃ। মোনীত্যনেন
জনসম্ভাধণনিষেধঃ। সংরুদ্ধলোচন ইতি ইন্দ্রিয়াণাং
চাপল্যং যেন ন স্থাৎ তথা গচ্ছেদিত্যর্থঃ॥ তদ্ধৃত-মহাক্রিশ্রহিপি—মূলমন্ত্রং জপন্ গচ্ছেৎ যাবৎ প্রাপ্রোতি

বৈ গৃহম্। প্রাপ্য হস্তে চ পাদে চ প্রক্ষাল্যাচম্য যত্নতঃ।

যাগমগুপমাসাত্ম বিশেতত প্রদক্ষিণমিতি॥ তথা রাঘবভট্টয়তমন্ত্রস্ত্রপ্রকাশে—কৃষা সন্ধ্যাং জপন্ স্তোত্রং যায়াদ্রৈ

যাগমন্দিরমিতি॥ তথা তন্ধ্তহত্যত্র—উক্তেনের বিধানেন
কৃষা স্নানন্ত তান্ত্রিকম্। বৈদিকীং তান্ত্রিকীং সন্ধ্যাং কৃষা তর্পণমেব চ। জপন্ স্তোত্রাণি নামানি যায়াদ্দেবনিকেতনমিতি॥
অত্র মূলমন্ত্রস্তোত্রনামজপানামিচ্ছাবিকল্পঃ একদা ত্রয়াণামসম্ভবাৎ। যত্না ত্রয়াণামের শাস্ত্রবোধিতত্বাৎ কিয়দ্বরং
গচ্ছন্ ম্লমন্ত্রং নাম চ জপ্তা স্তোত্রং পঠেৎ। স্তোত্রং
পঠিয়া বা মূলমন্ত্রং নাম চ জপ্তোত্রং পঠেৎ। স্তোত্রং
পঠিয়া বা মূলমন্ত্রং নাম চ জপ্তেদিত্যর্থঃ। নামজপস্তোত্রপাঠয়োরেকবচনপ্রতিপাত্যর্যাৎ॥ মহানীলতক্ত্রে পঞ্চদশপটলেহপি—শুদ্ধবন্ত্রং পিধায়াথ মৌনমান্ত্রিত্য দেশিকঃ।
জলপাত্রং সমাদায় দেবালয়মথাগমদিতি।

নশ্বত্র জলপাত্রগ্রহণপূর্ব্বকগমনমুক্তং শিবার্চনচন্দ্রিকাকার-রাঘবভট্টপ্নত-বচনয়োস্ত গচ্ছতো মূলমন্ত্রনামজপোহভিহিতঃ তৎ কথমুভয়মেকস্থ একদৈব সম্ভাব্যতে মৈবং যত এতজ্জপঃ সম্ভাব্যহিতএবাভিপ্রেতঃ। অহ্যথা পুরশ্চরণজপবৎ প্রাণায়ান্মাদিতদিতিকর্ত্ব্যতাপ্রসজ্যেত। কিঞ্চ অপবিত্রকরোহশুদ্ধঃ প্রলপন্ধ জপেৎ কচিৎ। অনাসনঃ শ্য়ানো বা গচ্ছন, ভূঞ্জান এব চেতি তন্ত্রসারপ্নতবচনেন গচ্ছতো জপনিষ্ণোৎ কৃতস্তৎ-প্রশন্ধঃ তম্মাৎ সম্ভাক্ততিকর্ত্ব্যতাপূর্ব্বকজপস্ত পুরশ্চরণাদ্বিব বোধ্যঃ। অত্র তু তদ্বিনৈব মূলমন্ত্রজপমাত্রমুপাংশুদ্বন্দাব্যেব কর্ত্ব্যমিতি পর্যাবস্থিতম্।

যত**ু পুরশ্চরণমানেন নিয়মেন জপেৎ সদা** জপসন্থ্যা

প্রকর্ত্তব্যা নাসন্থ্যা চ কথঞ্চন। অসন্থ্যাকারকস্থাপি সর্ব্ধং ভবতি নিক্ষলমিতি বিশ্বসারতন্ত্রীয়দ্বিতীয়পটলবচনং তদপি পুরশ্চরণাদো সন্থ্যারাহিত্যে দোষবিধায়কম্। তত্র সন্থ্যাং বিনা জপস্থানর্থক্যমুচিতমেবেতি॥

অথ সন্ধ্যা। তস্থা নিত্যত্বমাহ শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাধৃতশৈবাগমে—সন্ধ্যালোপো ন কর্ত্তব্যঃ শস্তোরাজৈবমেব হি।
দেশিকঃ সন্ধ্যায় হীনো ন দীক্ষাফলমশ্বুত ইতি॥ তথা
ব্রহ্মানন্দগিরিক্ত-ভারারহস্থম্ — প্রাতঃসন্ধ্যাবিহীনশ্চ ন চ
স্লানফলং লভেৎ। মধ্যাহ্ণসন্ধ্যাহীনশ্চ র পূজাফলমাপ্নু য়াৎ।
সায়ংসন্ধ্যাবিহীনশ্চ জপবিত্রঃ সদা ভবেৎ। তস্মাৎ স্থলরি
তত্ত্বভ্জঃ সন্ধ্যাত্রয়মুপাচরেদিতি॥ গান্ধর্ব-তোড়ল-কালীকুলাম্ত- মহানির্বাণ- গোতমীয়াগস্ত্যসংহিতা- কল্পসূত্রটীকাদিঃ
সন্ধ্যায়া যৎ পরস্পারব্যতিক্রমো দৃশ্যতে তৎ সর্ব্বেযাং শান্ত্রপ্রতিপন্ধত্বাৎ দেশভেদাদবিক্রন্ধন্।

সা স্বভানিবন্ধৃ ভিবিত্বতা তথাপি কিঞ্ছিচ্যতে। যথা তন্ত্রসারধৃত-জামলে—দেবান্ধীন্ পিতৃংশৈচব তৎকল্লোজ-বিধানতঃ। গুরুপঙ্ক্তিং পুরা তর্প্য তর্পয়েদিফদৈবতামিতি। নম্বস্মিন্ বচনে পিত্রাদীনাং তর্পণং প্রতিপাদিতম্ তৎ কথং সঙ্গহ্নতে যতো জীবৎপিতৃকস্থ বৈদিকতর্পণেহনধিকারদর্শনাৎ তান্ত্রিকতর্পণেহপি তথৈব প্রতিভাতি একত্র নির্ণীতঃ শাস্ত্রার্থ ইত্যাদিভায়াৎ। এবঞ্চ জীবহৃদ্দেশ্যকতর্পণস্থ সামাভ্যতো নিবেধঃ স্থব্যক্ত এব তথাচ সতি জীবতি গুরো তর্পণাভাবঃ স্থতরামেবায়াতীতি চেন্ন জীবতাং ব্রহ্মাদীনাং তর্পণবং জীবৎপিত্রাহ্যদেশ্যকমপি তপণং করণীয়ম্। ন চ তেষাং দেবস্থ

শ্বেণাৎ তদিতি বাচ্যম্ মর্ত্যবসতাং নৃশরীরপরিএহীতৃণাং মরীচ্যাদীনামুষীণাং তপ্ণদর্শনাৎ। ন চ তাবদমীষামজ-রামরত্বদর্শনাভদিতি বাচ্যম্ এতাদৃধিশেষে মানাভাবাৎ।

উচ্যতে—বৈদিকতর্পণে নামগোত্রান্থ্যন্থেবিধানাৎ তত্ত্ব পিতৃপদং জনকাদিমাত্রপরম্। অত্র তু তগাবিধেতিকর্ত্তর্যতা-বিশেবাভাবাৎ পিতৃপদং প্রাপ্তপিতৃলোকপরম্। অতাে জীবংপিতৃকাণামপি তত্তপ্ণাবিকারিতা। নচৈবং বৈদিক-করেংপি জীবৎপিতৃকেণাপি প্রাপ্তপিতৃলোক্যেদ্দেশ্যকতর্পণং করণীয়মিতি বাচ্যম্ প্রধানীভূতজনকাদিতপ্ণানিবিকারিত্বেন তদঙ্গীভূত-তত্তর্পণাধিকারাভাবাৎ তন্মাত্রোদ্দেশ্যকতর্পণ-বিধায়কপ্রমাণাভাবাচ্চ। বস্তুতস্ত্র প্রকৃতে জীবৎপিতৃকস্থাপি তর্পণং বাচনিকম্। তথা চ মহাকালমোহিনীতন্ত্রে—মুতে পিতরি কর্ত্ববং বৈদিকং তর্পণং প্রিয়ে। তন্ত্রোক্তং তর্পণং কার্যাং জীবে পিতরি নিত্যশ ইতি॥ অতএবোক্তং কিং ন করোতি বচনং বচনস্থ নাতিভার ইত্যাস্তাং বিস্তরঃ॥

যত্ত্ব জীবৎপিতৃকস্থাপি তর্পণাভাব ইতি সাম্প্রদায়িক। ইতি কিমপি প্রমাণমন্তরেণ রামানন্দতীর্থস্বামিনোক্তং তদেত-ঘ্টনানালোচনেনেতি বেদিতব্যম্॥

নমু তর্পণস্থ স্নানাঙ্গনাং তৎকালএব তর্পণং কার্য্যং নাখদেতি চেন্ন তর্পণস্থ স্নানাঙ্গমাত্রত্বাভাবাৎ। তথা দতি দৈবাৎ স্নানমকুর্ব্বতন্তর্পণাভাবঃ প্রসজ্যেত। ন চ স্নানাভাবেহপি ভাববৎ তর্পণাভাবে দোযাভাব ইতি বাচ্যম্ স্নানাভাবেহপি পঞ্চ্যজ্ঞান্তর্গতত্বপ্রশান্ত্রাক্ষাং। ন চ তথাপি তর্পণস্থ ত্রিকালকর্ত্তব্যত্বং কুতঃ প্রতীয়ত ইতি বাচ্যং বৈদিন্যে যথা

তথাস্ত, তান্ত্রিকে তু সন্ধ্যায়ান্ত্রিকালকর্ত্তব্যম্বেন তদঙ্গীভূত-তপণিম্ম হৃতরাং ত্রিকালকর্ত্তব্যস্থাৎ॥ তপণিষ্ম সন্ধ্যাঙ্গত্তে কিং মানমিতি চেং কালীকুলামূততন্ত্রে প্রথমপটলে তপ্ন-ঘটিতসন্ধ্যামুক্ত্বা—ইতি সন্ধ্যাত্ৰয়ং নিত্যং কুৰ্য্যামন্ত্ৰফলাপ্তয়ে ইতি বচনমু অগস্ত্যসংহিতায়াং সপ্তদশাধ্যায়ে সন্ধ্যামুপক্র-ম্যোপদংহারে—তপ য়েচ্চ ততো মূল-মন্ত্রোচ্চারণপূর্বকম্। স্তবংশ্চ প্রণমেদ্রামং যথাশক্তি মুনীশ্বর। কৃত্বৈবং প্রত্যহং সম্যক্ ত্রিসন্ধ্যঞ্চ যথাবিধি ইতি বচনঞ্চ॥ বস্তুতস্ত বাচনিক-মেবাদঃ—তথাচ মহানির্ব্বাণতক্ত্রে পঞ্চলোলাসে—ত্রিসন্ধা-মেতাং প্রজপন্ সন্ধ্যায়াঃ ফলমাপ্নুয়াৎ। ততস্ত তপ য়েদেনি দেবর্ষিপিতৃদেবতা ইতি॥ তথা রুহন্নীলতন্ত্রে প্রথমপটলে— সন্ধ্যাঙ্গদেবীতপ্ণমূকু৷ তৃপ্যন্ত পিতরঃ প্রোক্ত্য এতত্তপ্ণ মাদিশেৎ। গায়ত্রীং প্রজপেদ্ধীমান্ অঘমর্ষণপূর্ব্বক্ষ্। এতৎসন্ধ্যাত্রয়েণৈব দিবা রাত্রো চ বন্দনা কার্য্যেতি পরেণা-ষয়ঃ॥ তথা মহাকালমোহিনীতন্ত্রে—ত্রিসন্ধ্যং তপর্ণং কার্যাং দেবাদীনাং জগৎপ্রিয়ে। সূর্য্যায়ার্ঘ্যং প্রদাতব্যং রাত্রাবণি ন সংশয়ঃ। দেববত্তপর্ণং কার্য্যং দৈবতীর্থেহপুদ্বর্যা পূর্ব্বদিখদনো ভূত্বা বৈষ্ণবস্তপ য়েদিদমিতি।

যত্তু প্রতির্ন তপণিং কার্য্যং নচ সায়ং বিশেষতঃ। মধ্যাহে তপণিং ক্বয়া যথোক্তফলভাগ্ ভবেদিতি ব্রহ্মানন্দগিরিক্ত তারারহস্থবচনং তদ্গ্রন্থনামাধ্রতত্ত্বন অমূলকম্ সমূলক্ষে তস্থ তারাবিভাপরস্বম্ এতদ্বচনাধিকরণগ্রন্থস্থ তারাপুজাদি মাত্রপ্রতিপাদকস্বাৎ।

যদিপ মহামহোপাধ্যায়কৃষ্ণানন্দ-ভট্টাচার্য্য-পরিগৃহীতশ্র-

বৈদিকী তান্ত্রিকী সন্ধ্যা যথাসুক্রমযোগত ইতি বচনার্দ্ধশ্য সন্ধ্যা ত্রৈকালিকী জ্বেয়া সায়ং তপ্রণবর্জিতা ইতি পূর্ববার্দ্ধং প্রকল্প্য সায়ংসন্ধ্যাঙ্গত্বেন তপ্রণং নিষিদ্ধং তৎ কল্পনমেব তস্থা কৈন্চিদপি নিবন্ধৃ ভি-রপরিগৃহীতত্বেনামূলকত্বাদিতি॥

ইহ ত্রিসন্ধ্যার্ঘ্যদানস্থাবশ্যকত্বমাহ ব্রহ্মানন্দগিরিক্বত-তারারহস্তপ্রতম্—অর্ঘাহীনা তু যা সন্ধ্যা শোকতুঃখপ্রদা মতা। অর্ঘ্যং ত্রিসক্ষ্যং দেয়ঞ্চ অন্তথা নিফ্ষলো জপ ইতি॥ অথ উদ্যদাদিত্যমগুলমধ্যবভিন্যৈ চ সমুদ্ধরেৎ। নিত্য-চৈতন্যোদিতায়ৈ স্বাহেতি তক্ষত্মঃ স্মৃত ইতি তারাবিছা-সন্ধ্যাঙ্গার্ঘ্যদানবিধায়ক-নীলতন্ত্রবচনে তন্নামোলেখাভাবেন কথং তন্ত্রসারকারেণ তত্মল্লেখোহভিহিতঃ। মৈবং সামান্সতঃ সর্বতার্ঘদোনে তত্তদেবতানামোল্লেখস্থ বিধেয়তয়া সামান্য-বিশেষস্থায়যোগাৎ তারাবিস্থায়াং তদাচরণে ন কশ্চি-দোষঃ। নচ অত্রোক্তমাচরেৎ সম্যক নাশ্রৎ সঞ্চারয়েৎ কচি-দিতি কেৎকারিণীতন্ত্রবচনেন তারাবিন্যায়াং ভবছুক্তন্তায়-যোজনা ন সম্ভাব্যত ইতি বাচ্যম্ করবীরাদিকুস্থমৈদূর্ব্বাক্ষত-সমশ্বিতিঃ। রক্তচন্দনগন্ধাটৈঢ্যদ্দাপয়েন্মন্ত্রপূর্ব্বকম্। উন্ত-দাদিত্যমাভাষ্য মণ্ডলঞ্চ ততোবদেৎ। বত্তিনীং ঙেহন্তসংযুক্তাং নিত্যশব্দং সমাশ্রায়েৎ। ততকৈচতন্মোদিতায়ৈ এষঃ অর্ঘ-স্ততঃ পরম্। শ্রীমদ্দক্ষিণকালিকায়ৈ ত্যাগাত্মকমনুং ততঃ। মন্ত্রেণানেন দেবেশ চার্ঘং দ্যাৎ সমাহিত ইতি নিগমকল্প-শতাদশমপটলবচনেন কালিকার্ঘদানে নামোচ্চারণসহকুতা-র্ঘদানবিধিদর্শনেন কালীতন্ত্রোক্তকর্ম্মাণি কুর্ব্যান্তারানিষেবকঃ। তারাতন্ত্রোক্তকর্মানি কুর্য্যাৎ কালীপ্রপূক্তক ইতি ব্যোমরত্র-

সন্ধ্যাঙ্গগিয়ত্ত্ৰীজপানন্তরং মূলমন্ত্ৰজপন্তাবশ্যকত্বমাহ ব্ৰশানন্দগিরিক্ত-তারারহস্ত-গৃত্য্—গায়ত্ত্ৰীং পরিজপ্যাগ মূলমন্ত্ৰং জপেনচেৎ। সা সন্ধ্যা নিজ্ফলা ক্ষেয়া ত্বভিচারায় কল্পতইতি॥ এবং তে কথিতা তন্ত্ৰসন্ধ্যামন্ত্ৰফলাপ্তয়ে। ন ক্ৰ্যাৎ যদি সোহেন ন দীন্দাফলমাপুয়াৎ। সন্ধ্যাদয়ং তথা ক্ৰ্যাৎ ব্ৰাহ্মণো বিধিপূৰ্ববক্ত্য্। তন্ত্ৰোক্তবিধিপূৰ্ববন্ত শৃদ্ৰং সন্ধ্যাং সমাচরেদিতি তন্ত্ৰসারগ্নত—পৌত্ৰীয়তন্ত্ৰবচনাং শৃদ্ৰাণাং তান্ত্ৰিকসন্ধ্যাশাধিকারঃ। যোঘিতাং সৰ্বত্ৰ শৃদ্ৰ-তুলাস্থাভিধানেন তাসাম্পি॥

নন্ধ শবানোহ স্কল্রসন্ত্র্যা যোগিতাং ন কথঞ্চনেতি রামা
নন্দতীর্থস্বাস্থানশাধিত-বৃহত্ত্রসারপ্তত-নৎস্থাসূক্তবচনেন দ্রীণাং
তাল্লিকসন্ত্যাপ্রতিষ্ণোত্ত তের যৎ দ্রীণামধিকার উক্তস্তর
সদচ্ছতে ইতি চেন্ন জ্রন্ধানন্দক্ততারারহস্থে পশ্যচারপ্রসঙ্গে—চিতাং বা কাগিনীং বাপি শবং বা নচ সাধ্যেদিতি
সামান্থতঃ পশূনাং শবারোহণাদিনিধ্যেধাৎ পশুস্ত্রীণাং শবারোহণস্থাপ্রসক্তরেন নিকক্তবচনস্থ-শবারোহণ-তল্লসন্ত্যায়েন রেকত্র নিমেধেন তাল্লিকসন্ত্যানিমেধস্থাপি বীরস্ত্রীপরত্বাৎ।
ক্রেথা পশুস্ত্রীণাং তৎপ্রসক্তত্বাভাবেন প্রসক্ত্যপ্রভিষ্ণেনঞা প্রতিষেধানুপপত্তেঃ ॥ সর্বত্র হোমপূজায়াং সংসারে বালকম্ম চ। প্রয়োগে যন্ত্রসংশুদ্ধো স্রজঃ সংস্কারকর্মণি।
শবানাঞ্চ চিতানাঞ্চ লতানাঞ্চাপি সাধনে। লজ্জা তু প্রণবদ্বানে হৃদ্বীজং বহ্নিবল্লভা। সেতুস্থানে কূর্চ্চবীজং যোঢ়ায়াং
কামবীজকম্। স্বর্গমোক্ষপ্রদং বিদ্ধি সর্বত্র শূদ্রযোঘিতোরিতি ব্রহ্মানন্দক্তত-তারারহস্মগ্রত-তারানিগমবচনেন স্ত্রীণামপি শবারোহণমায়াতীতি বাচ্যং সম্ভবব্যভিচারে হি বিশেযণমনর্থবদ্ভবতীতি ন্যায়াৎ শূদ্রযোঘিতোরিত্যম্ম শবানাং
সাধনে ইত্যনেন সহান্বয়েহপি তাসাং তদধিকারাভাবাং ॥

নকু বৈদিকসন্ধ্যায়াঃ সংক্রান্ত্যাদিষু প্রতিষেধদর্শনাৎ তদকু-কৰ্ত্ব্য-তান্ত্ৰিকসন্ধ্যাপি ন কাৰ্য্যেতি প্ৰতীয়তে। বৈদিকী তান্ত্রিকী সন্ধ্যা যথানুক্রমযোগত ইতি তন্ত্রসারাদূতবচনাৎ। তম উভয়াধিকরণং প্রতি তান্ত্রিক্সন্ধ্যায়াঃ পশ্চান্মাত্রকর্ত্ব্য-তাবোধকত্বং নত্তময়ব্যতিরেকাভিধায়কত্বমিতি নবাপানয়ো-রঙ্গ প্রিভাবঃ তথাত্বে মানাভাবাৎ। অন্যথা তান্ত্রিকসন্ধ্যা-যাত্রাধিকারিণাং স্ত্রীশূদ্রাণাং তন্মাত্রকর্ত্তব্যতা কদাপি নো ঘটতে। স্পান্টমাহ ব্রহতন্ত্রসারধ্বতজামলে—দ্বাদশ্যাগ্রনু-রোধেন সায়ংসন্ধ্যাং মম প্রিয়ে। অকুর্বন্ নিরয়ং যাতি যতো নিত্যাগমক্রিয়েতি॥ তথা রুদ্রজামলে—চতুর্ব্বিধং ময়া খ্যাতং বেদকার্য্যেরু পার্ব্বতি। আগমং ন তথা বিদ্ধি এবমেব হি তদ্বচঃ। সন্ধ্যাং সায়ন্তনীং কুৰ্য্যাৎ দ্বাদশ্যাদি-ষপি প্রিয়ে। অকুর্বন্ নিরয়ং যাতি যাবদাহূতসংপ্লবমিতি॥ পিচ্ছিলাতন্ত্রে চতুর্দ্দশপটলে চ—ন চৈবং তান্ত্রিকীং সন্ধ্যাং দ্বাদশ্যাদিষু বর্জ্বয়েদিতি॥ অপিচ রহন্নীলতন্ত্রে প্রথম- পটলে—সন্ধ্যাং সায়ন্তনীং কুর্য্যাৎ দ্বাদশ্যাদিষ্বপি প্রিয়ে।
অকুর্বন্ নিরয়ং যাতি যতো নিত্যাগমক্রিয়েতি॥ ব্রহ্মজামলেহপি—সংক্রান্ত্যাং পক্ষয়োরন্তে দ্বাদশ্যাং প্রাদ্ধবাসরে।
সায়ংসদ্ধ্যাং প্রযক্ত্রন কুর্য্যান্ত্রী সমাহিতঃ। ন কুর্য্যাং
যদি মোহেন ন দীক্ষাফলভাক্ ভবেৎ। ইহ লোকে দরিদ্রঃ
স্থাৎ মতে শৃকরতাং ব্রজেৎ। তক্ষাদ্দেবি প্রযক্ত্রেন সায়ংসন্ধ্যাং সমাচরেদিতি॥ মাতৃকাভেদতক্ত্রে চ—সন্ধ্যা সায়ন্তনী কার্য্যা দ্বাদশ্যাদিষ্বপি প্রিয়ে॥ ইত্যলমতিবিস্তরেশ।

ন চৈতানি ঘাদশ্যাদিম্বপি তাল্রিকসঝাবিধায়ক-বচনানি কৌলপরাণীতি বাচ্যং ঘাদশ্যাদিয়ু তন্মিষেধকং কিমপি বচন-মন্তরেণ এতাদৃশমীমাংসায়া ভ্রমবিলসিতত্বাং ॥

অথ সর্ব্বোপাসকানামশোচে সন্ধ্যায়াং নাধিকারঃ। তথাচ
পিচ্ছিলাতন্ত্রে চতুর্দ্দশপটলে—সূতকে মৃতকে চৈব নার্চ্চয়েং
পরমেশ্বরীম্। ন জপেচ্চ মহাবিচ্যাং ন সন্ধ্যাবিধিমাচরেদিতি॥ পরমেশ্বরীমিত্যুপলক্ষণম্। তত্র যত্যপি কালিকাতারাত্রিপুরোপাসকানামশোচে বিশোবিধিনা পূজাদাবিধিকারোহস্তি তথাপি সন্ধ্যা নাচরণীয়া। ততুক্তং তত্ত্রৈব—
কালিকায়াশ্চ তারায়াঃ ত্রিপুরায়াশ্চ স্থন্দরি। বাহ্যপূজাজপো
কার্যে সূতকে মৃতকেহপি চ। তত্রাপি নাচরেৎ সন্ধ্যাবিধানং হরবল্লভে ইতি।

যত্ত অত্যাজ্যা তান্ত্রিকী সন্ধ্যা জননে মরণে তথা। ত্যাজ্যা চ বৈদিকী সন্ধ্যা জননে মরণে তথেত্যাদি গায়ত্রী-তন্ত্রচতুর্থপটলবচনং তৎ তাদৃশাধিকারিপরস্॥

এয় দৈবাৎ কস্থাঞ্চিৎ সন্ধ্যায়াং পতিতায়াং গায়য়ী:

দশধা জপ্তা কালান্তরে সাপি কার্য্যা। নমু ইতি সন্ধ্যাত্রয়ং প্রোক্তং কর্ম্মণাং সিদ্ধিদায়কম্। সন্ধ্যায়াং পতিতায়াং বা গায়ত্রীং দশধা জপেদিতি গৌতমীয়তন্ত্র-সপ্তমাধ্যায়বচনে সন্ধ্যাস্থানীয়তয়া দশধা গায়ত্রীজপবিধানেন সন্ধ্যায়া অকরণে গায়ত্রীজপমাত্রমেবাস্ত কিং পুনস্তদনুষ্ঠানেন। ন চ প্রমাদাৎ পতিতাং সন্ধ্যাং পুনরেব সমভ্যসেৎ। গায়ত্রীং দশবা জপ্ত্বা ততঃ কর্ম্ম সমাচরেদিতি শ্যামার্চ্চনচন্দ্রিকাগ্গতার্শববচনেন পুন-স্তৎসন্ধ্যায়াঃ কর্ত্তব্যস্থমেবেতি বাচ্যম্। এতদ্বচনপূর্ব্বার্দ্ধেন পুনঃ সন্ধ্যাভ্যাসমভিধায় তৎস্থানীয়-গায়ত্রীদশধাজপানস্তর-মেবান্সকর্মাচরণবিধানাৎ। মৈবং সন্ধ্যায়াং পতিতায়ান্ত গায়ত্রীং দশধা জপেৎ। ততঃ কালোচিতাং সন্ধ্যাং কুত্বা কর্ম সমাপয়েদিতি যোগিনীতন্ত্ৰদ্বিতীয়পটলবচনেন পূৰ্ব্বকালো-চিতসন্ধ্যায়াঃ কর্ত্তব্যতাপ্রতিপাদনাৎ। সন্ধ্যাহীনো২খ্য-সন্ধ্যায়াঃ পূর্ববাং সন্ধ্যাং ক্রিয়াময়ীম্। বিধায়োত্তরসন্ধ্যায়াঃ ক্রিয়াং কুর্য্যাদতন্দ্রিত ইতি শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাগ্বত-শৈবাগম-বচনেন প্রসন্ধ্যায়াঃ পূর্ব্বকালে পতিত্সন্ধ্যাকরণানন্তরং তস্তাঃ কর্ত্তব্যত্মবিধানাচ্চ। গোতমীয়তন্ত্রবচনে দশধা গায়ত্রীজপস্ত তৎ-**সন্ধ্যায়াঃ স্বকালাকরণজ্মুদোযোপশান্তয়ে প্রায়শ্চিতাত্মক-**এব। অর্ণববচনার্থস্ত গায়ত্রীং দশধা জপ্তা প্রমাদাৎ পতিতাং সন্ধ্যাং পুনরেব সমভ্যসেৎ। ততঃ পতিতসন্ধ্যা-করণানন্তরং কর্ম্মসমাচরেৎ পরসন্ধ্যাদিকং কুর্য্যাদিতি।

পূর্ব্বপক্ষবাদিসম্মতার্থস্ত ন সঙ্গচ্ছতে জপ্তা ইত্যনেনৈব আনস্তর্যাবেধে পুনস্তত ইত্যস্থানর্থক্যাৎ। অহ্যথা দৈবাদ্য্যাদি-পাকসাম্ব্যভাবেন একোদিন্টাকরণে তদ্বোবপরী-

হারার্থমূপবাসং বিধায় কালান্তরে তদ্ভান্ধবিধানমপি ন সঙ্গ-চহতে ॥ তথা সতি যোড়শশ্রাদ্ধানামন্ততমাকরণে প্রেত্ত্ব-পরীহারাভাবে মহাননর্থঃ স্থাৎ ॥ অপিচ দৈবাৎ কেযাঞ্চিং সংস্কারাণামকরণে মহাব্যান্তভিভিঃ প্রায়শ্চিত্তং কৃত্বা কালা-ন্তরে তৎসংস্কারাণাং কর্ত্ব্যত্বমিতি ন সঙ্গচ্ছতে। তথা চ সতি দ্বিজন্বসম্পাদকোপনয়নাভাবেন মহৎ বৈপরীত্যাং স্থাং।

তত্র কিং বিজানাং বৈদিকতান্ত্রিকোভয়সন্ধ্যয়েরকরণে বৈদিকগায়ত্রীজপানন্তরং বৈদিকসন্ধ্যাং বিধায় পুনস্তান্ত্রিকগায়ত্রীং জপ্তা তাল্রিকসন্ধ্যা কর্ত্তব্যা ক্রিক বৈদিকগায়ত্রীজপেনৈর উভরপ্রায় কিন্তুরিকা। বৈদিকসন্ধানন্তরং তাল্রিকজপমন্তরেণের তৎসন্ধ্যা কর্ত্তব্যেতি॥ নাল্যঃ সক্রৎ ক্বতে ক্বতঃ শাস্ত্রার্থ ইতি স্থায়াৎ নাশকোদয়েন নাশ্যস্থাবন্থানাবসরাভাবাৎ। বিশেষতঃ প্রায়শ্চিত্রানাম্পপাতকমন্তরেণ সর্বত্রের তন্ত্রতাদর্শান্ত। পুনস্তান্ত্রিকগায়ত্রীজপর্মপপ্রায়শ্চিত্রাপ্রসাহ। নাপি দ্বিতীয়ঃ বৈদিকতান্ত্রিকয়োঃ স্বর্মপতা ভেদাৎ। অন্থা স্থানাচমনাদীনামপি বৈদিকপ্রয়োগে নৈর সিদ্ধ্যা পুনস্তদনুষ্ঠানমনর্থকং স্থাৎ॥ নচ তেধামিতি কর্ত্ব্যতাভেদেন ভেদাৎ পুনস্তদনুষ্ঠানস্থাবশ্যকত্বমিতি বাচ্যম্। অত্রাপি গায়ত্রীভেদেন পুনঃ প্রায়শ্চিত্রানুষ্ঠানপ্রসাহ। অত্রাপি গায়ত্রীভেদেন পুনঃ প্রায়শ্চিত্রানুষ্ঠানপ্রসাহ।

উচ্যতে ইরস্ত ব্রহ্মসাবিত্রী যথা ভবতি বৈদিকী। তথৈব তান্ত্রিকী জ্বেয়া প্রশস্তোভয়কর্শ্মণীতি মহানির্বাণ-তন্ত্রাক্টমপটলবচনেন বৈদিকতান্ত্রিকোভয়কর্শ্মণ্যেব তস্তাঃ প্রাশস্ত্যাভিধানাৎ তন্ত্রতয়া সক্বদেব বৈদিকগায়ত্রীদশধা জপাত্মকপ্রায়শ্চিতং কৃত্বা উভয়সন্ধ্যানুষ্ঠানং কর্ত্তব্যং নতু প্রত্যেকপ্রায়শ্চিত্তানুষ্ঠানমিতি।

ন চ তন্ত্ৰতায়া হেতুশ্চ অদৃষ্টাহৈৰ্বিজ্ঞাতীয়কৰ্ম্মণঃ কালদেশকত্ৰ দিনাং প্ৰয়োগানুবন্ধ বৈধহেতুভূতানামভেদে উদ্দেশ্যবিশোগ্ৰহ ইতি স্মাৰ্ভোভ্যা একজাতীয়ক্ম্মণ্যেব তন্ত্ৰতাভিধানেন বিজাতীয়বৈদিকতান্ত্ৰিককৰ্মণো স্তদনবসন্ন ইতি
বাচ্যম্ প্ৰায়শ্চিভানাং সৰ্ব্ববৈত্ৰৰ সাজাত্যাৎ। অতএব
স্মাৰ্ভেন প্ৰতিজ্ঞাতং লাঘবং গৌৱবং বীক্যা সক্লাব্নভিতস্তথা।
দানব্ৰতাদিমাত্ৰেণ পাপমাত্ৰশ্য নাশ্যতা ইতি। অন্যথা
কিম্মিংশ্চিৎপাপে বৈদিকানুষ্ঠানেন প্ৰায়শ্চিতে ক্তে বৈদিককৰ্মমাত্ৰাধিকান্নিণা পুনস্তান্ত্ৰিককৰ্মাধিকান্নাৰ্থং তান্ত্ৰিকান্ত্ৰষ্ঠানেন প্ৰায়শ্চিভঃ কৰ্ত্ৰব্যং স্থাৎ।

যত্ত্ব তান্ত্রিকবচনেষ্ তত্বক্তগায়ত্রীঙ্গপরূপপ্রায়**শ্চিতং** শ্রুয়তে তৎ দাদশ্যাদৌ বৈদিকসন্ধ্যানধিকারে স্ত্রীশূদ্রাদৌ স্বরূপত স্তদনধিকারে চ বোদ্ধব্যায়িতি॥

একাহাদি-সন্ধ্যালোপস্থেতিকর্ত্তব্যতাং পূজাপ্রকরণান্তে প্রকটিকরিয়ামঃ॥

অথ প্রাতঃসন্ধ্যামনাচর্য্য দেবতাপূজায়ামনধিকারিতানাহ। জ্ঞানান্দতরঙ্গিপ্পত-ক্রিয়াসারে—প্রাতঃকৃত্যাদিকং
কৃষা সন্ধ্যাদিকং সমাচরেৎ। নাস্থা ফলভাগী স্থাৎ সা
পূজা বিফলা ভবেদিতি॥ অত্র সন্ধ্যাপদং প্রাতঃসন্ধ্যাপরং
বিষ্ণামাণবচনৈকবাক্যত্বাৎ। যথা পরমহংসপটলে—প্রাতঃদন্ধ্যাং পরিত্যজ্যে দেবতাভ্যর্কনং চরেৎ। মোহাৎ কৃষা
মহেশানি নারকী স্পায়তে নর ইতি॥

ইতি সততমহামহীশচক্রচ্ডামণিচর্চিতচরণনলিন শ্রীমদ্গোপীমোহনপাদপত্মামন্দমকরন্দসন্দোহানন্দিতমনোমধুকরশ্রীহরকুমার দেবশর্ম-স্বীয়চিস্তামণিমন্ত্রচিস্তোদর্কহরতস্বদীধিতৌ ষষ্ঠকলাপ্রকাশঃ।

অথ পূজা। তস্থা নিত্যত্বমূক্তং গন্ধর্বতন্ত্রেংফাবিংশতি-পটলে—যথাবিধি গুরোর্দীক্ষাং গৃহীত্বা সাধকোত্তমঃ। তথৈক চ যজেদ্দেবীং নিত্যং প্রাতরনস্থীরিতি! দেবীমিত্যুপ-লক্ষণম্। তথা বরদাতন্ত্রে প্রথমপটলে—পূজনং প্রত্যহং কার্য্যং ভক্তিযুক্তেন চেতসেতি॥ কাম্যত্বঞ্চ পিচ্ছিলাতন্ত্রে একাদশপটলে—বিনা হোমৈর্ন চৈশ্বর্যাং ন সিদ্ধির্জপনং বিনা। পূজাং বিনা ন পূজান্তি সর্ব্বত্র পরমেশ্বরীতি।

পূজায়াং স্ত্রীশূদ্রয়েরপ্যধিকারমাহ। তন্ত্রকৌমুদীধ্বত-বিশ্বসারে—আগমোক্তবিধানেন স্ত্রী শূদ্রুংশ্চব পূজয়েদিতি।

তত্র শৈববৈষ্ণবশাক্তসৌরগাণপত্যাদিভিঃ প্রথমতঃ শিবলিঙ্গমভ্যর্চ্চ্যান্যদেবতাপূজা কর্ত্তব্যা। তথাচ তোড়লতন্ত্রে
পঞ্চমপটলে—শৈববৈষ্ণবদৌর্গার্কগাণপত্যেক্রসপ্তবঃ। আদৌ
শিবং পূজ্যিত্বা পশ্চাদন্যং প্রপূজ্যেৎ॥ আদৌ লিঙ্গং পূজ্ যিত্বা যদি চাল্যং প্রপূজ্যেৎ। তৎফলং কোটিগুণিতং সত্যং
সত্যং ন সংশয়ঃ॥ অন্যদেবং পূজ্যিত্বা শিবং পশ্চাদ্যজেদ্যদি।
তত্ম পূজাফলং সর্ববং ভুজ্যতে যক্ষরাক্ষসৈরিতি॥ উৎপত্তিতত্মে চতুঃমন্তিপটলে চ—শাক্তোবা বৈষ্ণবোবাপি শৈবোবা
গাণপোহথ বা। শিবাক্তনিবিহীনস্য কৃতঃ সিদ্ধির্ভবেৎ প্রিয়ে॥ অনারাধ্য চ মাং দেবি যোহচ্চ য়েদ্দেবতান্তরম্। ন গৃহ্লাতি মহাদেবি শাপং দন্ত্বা ব্রজেৎ পুরম্। পর্ববতাগ্রসমং দেবি মিন্টামাদিক্রমেণ হি। ফলানি বহুধান্তেব পুষ্পান্যেব যথাবিধি। স্থমেক্রসদৃশঞ্চান্তং নানাবিধং মহেশ্বরি। সূপাদিকং মহেশানি যদি স্থাৎ সাগরোপমম্। যদ্ভৱং পুষ্পানৈবেছং দর্বং বিষ্ঠাসমং ভবেং॥ শিবাচ্চ নবিহীনো যঃ পূজয়েদ্দেবতান্তরম্। বিশেষতঃ কলিয়ুগে স নরঃ পাপভাগভবেদিতি॥ তথা লিঙ্গাচ্চ নতন্ত্রে প্রথমপটলে—শাক্তোবা বৈষ্ণবোবাপি শেবোবা পরমেশ্বরি। আদৌ লিঙ্গং প্রপূজ্যাথ বিল্পপত্রৈক্রাননে। পশ্চাদন্তং মহেশানি শিবং প্রার্থ্য প্রপূজ্য়েৎ॥ অন্তথা মৃত্রবৎ সর্ববং শিবপূজাং বিনা প্রিয়ে। প্রত্যহং পরমেশানি যাবজ্জীবং ধরাতলে। পূজ্য়েৎ পরয়া ভক্ত্যা লিঙ্গং ব্রক্ষাময়ং প্রিয়ে ইতি॥ এতেন শিবপূজায়া নিত্যত্বমপি প্রতিপাদিতম্॥

যতু যাবন্ধ দীয়তে চার্য্য ভাস্করায় মহাত্মনে। তাবন্ধ
পূজ্য়েদ্বিষ্ণুং শঙ্করং বা স্থরেশ্বরীমিতি তন্ত্রসারধ্বতনন্দিকেশ্বরসংহিতোক্তবচনং তত্তন্ত্রত্য়া সন্ধ্যাপ্সসূর্য্যার্য্যদানেনৈব কুতার্থম্।
এবঞ্চ সতি আদিত্যং পূজ্য়েদাদৌ প্রত্যক্ষং লোকসাফিণম্।
অত্যথা নৈব সিদ্ধিঃ স্থাৎ কল্পকোটিশতৈরপীতি ক্রদ্রজামলবচনমর্য্যদানবাধকম্। যদ্বা আদৌ শিবপূজাতিরিক্তকর্মাদাবিত্যেতৎপরম্। ব্রক্ষাগুমধ্যে যে দেবা স্তদ্বাহে যাশ্চ
দেবতাঃ। তে সঁক্রে ভৃপ্তিমায়ান্তি কেবলং শিবপূজনাদিতি
শিত্তাভিদতন্ত্রীয়-দাদশপটলবচনেন তৎপূজায়াং সর্ক্রেষাং
ভৃপ্তিপ্রতিপাদনাৎ।

কেচিত্তু মহাবিতাং পূজ্য়িস্বা শিবপূজাং সমাচরেৎ অন্যথাকরণাদেবি ন পূজাফলমাপ্নুয়াদিতি লিঙ্গাচ্চ নচন্দ্রিকাবচনাৎ আদে মহাবিতাং পূজ্য়িস্বা শিবপূজনং কুর্য্যাদিতি বদস্তি তন্ন পার্থিবং নাচ্চ য়িস্বা তু কালীং তারাঞ্চ স্থলরীম্। অচ্চ য়েং যন্ত্রিলোকস্থঃ স গচ্ছেদ্যমযাতনামিতি মহালিঙ্গেশ্বরুত্ত্রবচনদর্শনেন যাবন্ধ পূজ্য়েলিঙ্গং পার্থিবং সাধকাধমঃ। তম্ম পূজাং ন গৃহ্লাতি স্থলর্রী তারকাসিতা ইতি ত্রিপুরাকন্ধবচনদর্শনেন চ তম্বচনক্ষ মহাবিত্যানাং প্রশংসার্থত্য়া শ্রীব্রহ্মনন্দপর্মহংসপরিব্রাজকাবধূতেঃ স্বকৃত্তানারহুম্মে সমাহিত্বাং আদাবন্তে চ শিবপূজায়াঃ শান্ত্রসিদ্ধন্নাত্ত্রস্থাতিরভিধীয়তে॥

অথ সর্কোনাং বর্ণানাং শিবলিঙ্গপূড়ায়ামধিকারমাহ। মেরুতন্ত্রেশিবপূজাবিধিপ্রকাশে ব্রাহ্মণঃ ক্রতিয়াবৈশ্যঃ শূদ্রোর প্যন্তুলোমজঃ। পূজ্য়েৎ সততং নিঞ্চং তন্মস্ত্রেণৈব সাদরমিতি।

লিঙ্গণব্দব্যুৎপত্তিমাহ স্মান্দে—আকাশং লিঙ্গমিত্যাহং পৃথিবী তম্ম গাঁঠিকা। প্রলয়ে সর্ব্যদেয়ানাং লয়নালিঙ্গ-মুচ্যতে ইতি॥

তিরশিণিয়ভিকাপরিমাণমাই। মাতৃকাভেনতন্ত্রে সপ্তম-পটলে—যুভিকাতোলকং গ্রাহ্য-নগরা তোলকদ্বয়ম। এত-মা, মান কর্ত্তবাং কদাচিদিনি পার্বভীতি।। যতু রুদ্রাফং শিবলিঙ্গঞ্জ স্থলাং শহ্মে শালগ্রামো নার্মাদশ্চ সূক্ষ্মাৎ সূক্ষ্মো বিশিয়ত ইতি সেরুভক্তীবচনং তৎ প্রতি-ষ্ঠিতপাষাণলিঙ্গপরন্। শিলাদৌ প্রমেশানি স্থলঞ্চ ফল-দার্যকনিতি মাতৃকাভেদতন্ত্র-সপ্তমপটলবচনাং। শিবলিঙ্গোপরি বিন্দুস্থাপনপ্রমাণমাহ। তোড়লতন্ত্রে অন্টমপটলে। শ্রীদেব্যবাচ—লিঙ্গাছিদ্রং সমাকৃষ্য সংস্থিতা কুগুলী কথম্। কথয়স্ব সদানন্দ সর্ববিজ্ঞস্বং স্থারেশ্বর ॥ শ্রীশিব উবাচ—লিঙ্গমধ্যে মহতেজাে বহ্নিরপঞ্চ স্থানর । যৎকিঞ্জিরায়ুযোগেন ব্রহ্মাণ্ডং দহুতে যতঃ। অতঃ সা কুগুলী দেবী মুখেনাচ্ছাদ্য সংস্থিতা। তেনৈব পার্থিবে লিঙ্গে বিন্দুশক্তিং নিযোজয়েৎ। বিন্দুশক্তিং সমুখাপ্য লিঙ্গপূজা প্রকীর্তিতেতি।

নশ্বত্র বচনে বিন্দুং পরিত্যজ্য পূজ্নমুক্তম্—নির্মায় পার্থিবং লিঙ্গং বজ্রহীনং যজেদ্যদি। রথা তস্ম ভবেৎ পূজা গন্ধর্কৈং পূজিতং যত ইতি তন্ত্রকৌমুদীধ্ত-শিবসংগ্রহবচনেন সবজ্রশিবলিঙ্গপূজনমনুমতং তৎ কথমেকদৈব সবজ্রনির্বজ্ঞেতংপূজা সম্ভবতি। তত্র পূজকস্ম বজ্রস্থাপনকৌশলাৎ যৎকিঞ্চিৎস্নানজলদেকেন তৎপতনেহিপি পূজকাত্যক্তম্ অথচ স্বামেব পতিতমিথং ত্যাগাত্যাগপ্রযোজকোভয়বচনসঙ্গতিরপিন যুজ্যতে পূর্ববিগদিতশিবসংগ্রহবচনে যথাকথঞ্জিদ্ধজ্ঞহীন-শিবলিঙ্গার্চনে নিষ্ফলত্বপ্রতিপাদ্নাৎ।

উচ্যতে সবজনির্ব্বজ্ঞশিবলিঙ্গপূজাবিধায়কোভয়বচনসিদ্ধ্যর্থং দেব্যা যোনো বিন্দুং প্রক্ষিপ্য পূজয়েৎ। তত্তুক্তং কামাখ্যা-তন্ত্রোত্তরথণ্ডে—ন বায়ো প্রক্ষিপেৎ বিন্দুং ন বক্ষো প্রক্ষিপে-ততঃ। ন পৃথিব্যাং ক্ষিপেদ্বিন্দুং পুষ্পযন্ত্রে বিনিক্ষিপেদিতি। স্বস্থার্থঃ পুষ্পং দ্রীরজস্তস্থ যন্ত্রং যোনি স্তস্থাং বিন্দুং ক্ষিপেৎ স্থাপয়েৎ। বামভাগে শক্তেঃ সংস্থিতত্বাদ্বেব্যাযোনাবিত্যর্থঃ। তত্ত্বক্তং স্মার্ভিগ্নত্তিথিতত্ত্বে—ন প্রাচীমগ্রতঃ শক্তো র্নোদীচীং শক্তিসংস্থিতাম্। ন প্রতীচীং যতঃ পৃষ্ঠমতোদক্ষং সমাঞ্জফ়ে দিতি। পুষ্পং বিকাশিকুস্থমন্ত্রীরজঃস্থ নপুংসকমিতি মেদিনী-করঃ।

পাদ্যাদিদানপ্রকারমাহ। তোড়লতন্ত্রে পঞ্চমপটলে— এতৎ পাদ্যং মহেশানি ষড়ক্ষরমন্থুং ততঃ। নমস্কারং সমৃ-চ্চর্য্য সর্ব্যং দদ্যাদ্বিচক্ষণ ইতি।

তেষামেকীকৃত্য পূজনে সংখ্যামাহ। লিঙ্গার্চ্চনতন্ত্রে— একং বা পূজয়েল্লিঙ্গং যুগলং নতু পূজয়েং। একীকৃত্য মহেশানি দশ পঞ্চ শতানি চ। প্রভ্যেকেনাথবা দেবি বিল্পপত্রৈঃ প্রপূজয়েদিতি।

তৎপূজাধারনিয়মো যথা। মহিষমৰ্দ্দিনীতন্ত্রে ত্রয়োদশ-পটলে—স্বর্ণপাত্রে তথা রোপ্যে তাত্রে চ প্রস্তরে তথা। পদ্মপত্রে পলাশে চ তথা বা কদলীদলে। পূজনং মুগ্মাং লিঙ্কং কাশীক্ষেত্রসমং প্রিয়ে। তৈজসে দারবে পাত্রে সামাখ্য-ফলদং সদা। অশুৎ পাত্রঞ্চ চার্কঙ্গি বর্জ য়েচ্ছিবপূজনইতি।

কাংস্থাদিপাত্রস্থানিবলিঙ্গপূজায়াং নারিকেলাদকাদিদানোপায়মাহ। তত্রিব। শ্রীদেব্যুবাচ—নারিকেলাদকংকাংস্থে তাত্রে চ দেব মাদকম্। মধু গব্যঞ্চ ভো দেব তাত্রপাত্রে চ মাদকম্। তৎ কথং দেবদেবেশ শিবায় বিনিবেদয়েৎ। শ্রীঈশ্বরউবাচ—তাত্রপাত্রে তথা কাংস্থে ন দভাভু কদাচন। তাত্রপাত্রে স্থিতে লিঙ্গে ন দভাৎ কেবলং মধু। তথৈব কাংস্থপাত্রে চ নারিকেলোদকং প্রিয়ে। ন দভাৎ পরমেশানি কেবলস্ত কদাচন। শর্করাঞ্চ তথা হুগ্মং মৃতং দিবি তথা মধু। আমান্সসহিতং কুত্বা শিবায় লিঙ্গা

রূপিণে। যোদতাৎ প্রয়তো নিত্যং স শিবো নাত্র সংশয়ঃ।

য়দ্দ্রব্যং ষট্স্থাকারং ভূত্বা স্বয়মুপস্থিতম্। স্পনেন বিধিনা দেবি
নান্তি দোষঃ কদাচন। স্থবা প্রমেশানি তাত্রং হাটকবৎ

সদা। যট্স্থায়াং মহেশানি মধুত্বং নান্তি পার্কবিত। নারিকেলোদকং দেবি ষট্স্থারহিতং সদা। ভক্তিমাত্রেণ চার্কঙ্গি
যোদদ্যাৎ কমলেক্ষণে। দত্তমাত্রে মহেশানি শিবসাযুজ্যমাপ্রুয়াদিতি।

তত্ত্র ফলদানে বিশেষমাহ। লিঙ্গাচ্চ নতন্ত্রে প্রথমপটলে— পনসং কোষমুদ্ধ ত্য রম্ভাং দদ্যাৎ ত্বচং বিনেতি।

অষ্টমূর্ত্তিপূজনক্রমমাহ। তোড়লতন্ত্রে পঞ্চমপটলে—
পূজয়িত্বা মহেশানি চাইটমূর্ত্তীঃ প্রপূজয়েং। সর্বো ভবন্তথা ক্রদ্র উগ্রো ভীমঃ পশোঃপতিঃ। মহাদেবশ্চ ঈশানোডেযুতং কুরু যত্রতঃ। ক্রিতিং জলং তথা চাগ্রিং বায়ুঞ্চাকাশমেবচ। যজমানং তথা সোমং সূর্যাঞ্চ মূর্ত্তিনা সহ। সর্বত্র
ডেযুতং কৃত্বা পূজয়েং সাধকোত্তমঃ। প্রণবাদি-নমোন্তেন
বামাবর্ত্তেন পূজয়েং। মূর্ত্তয়োহন্টো শিবস্তৈতাঃ পূর্ব্বাদিক্রমযোগতঃ। আয়েয্যন্তাঃ প্রপূজ্যান্তা বেদ্যাং লিঙ্গে শিবং
যজেদিতি। অস্থার্থঃ সর্ব্ব ইত্যাদিনাল্লাং সর্বত্র স্বরূপগ্রহণং ডেযুতং চতুর্থ্যন্তং মূর্ত্তিনা সহেতি সর্ব্বক্রান্বয়ঃ। বামাবর্ত্তেনেতি পূর্বাদ্যয়িকোণপর্যান্তমবগন্তব্যম্। বেদ্যামেতাঃ
শিবস্থান্তিই। বেদী তু শিবলিঙ্গস্থাধঃখণ্ডমিতি।

যত্ত্ব সর্বেবা ভবো রুদ্র উগ্রঃ প্রাচ্যাদিদিক্চতুষ্টয়ে। ভীমঃ পশুপতি মহাদেব ঈশান এব চ। কোণস্থাশ্চ তথা পূজ্যা দক্ষিণাবর্ত্তযোগত ইতি স্মৃতিচন্দ্রস্থাহ্নিককলাধ্বত-শিব-ধর্মবিচনে দক্ষিণাবর্ত্তন পূজনমুক্তং তৎপ্রকরণান্তরে বোধ্যম্। যদপি শিবপ্রদক্ষিণে মন্ত্রী সোমসূত্রং ন লঙ্ঘয়েদিত্যত্ত্ব প্রদক্ষিণস্থলে পূজনপদং ক্ষয়ন্তি তত্ত্ব কল্পনমেব।

কলো কণ্ঠে গরলচিন্তনন্ত নীলকণ্ঠন্তবপাঠন্ত চ নিষ্ধেনাহ। তোড়লতন্ত্রে পঞ্চমপটলে—কণ্ঠে চ গরলং দেবি ন কলো ভাবয়েং কচিৎ। বদীচ্ছেদালনোম্ভুগং যদি বোনান্ত্যানিছেতি। তদৈব সহসা দেবি নীলকণ্ঠমুপাসতে। ছুরদৃষ্টবশাদ্দেবি নীলকণ্ঠন্তবাদিকম্। করোতি কার েনাপি মম হত্যাং করোতি সঃ। অতএব মহেশানি স পাপিষ্ঠো ন চান্তথা। নিষিদ্ধাচরণং পাপং করোতি যদি পামরঃ। পুত্রদারধনং তম্ম নাশায়ামি ন সংশায়ঃ। কণ্ঠে তু গরলং দেবং যদি পূজাপরো ভবেৎ। ইহ লোকে দরিদ্রঃ ম্থাৎ মতে শ্করতাং ব্রজেৎ। নীলকণ্ঠম্ম যন্মন্তং যদি কুর্য্যাৎ পুরক্ষিয়াম্। পক্ষা-জরে মহেশানি তম্ম মৃত্যু নঁচান্তথেতি।

অথ শিবপ্রসাদভক্ষণবিচারঃ। কালিকাপুরাণে—মহাবীরো মুনির্কাপি ব্রাহ্মণশ্চেতরোহপি বা। যদ্যথা ভক্ষ্যতে ভক্ষ্যং তত্তথিব প্রদাপয়েৎ। অন্যথা তৎপ্রসাদেন ন তৎফলমবাপুরাৎ। অগ্রাহ্যং শিবনির্ম্মাল্যং পত্রং পুষ্পং ফলং জলমিতি॥ তথা দ্রব্যমন্ধং ফলং তোয়ং শিবস্থা ন স্পৃশেৎ কচিৎ। ন নয়েচ্ছিবনির্ম্মাল্যং কুপে সর্বাং বিনিক্ষিপেৎ। মক্ষিকাপাদমাত্রং যঃ শিবস্থমুপজীবতি। লোভাৎ মোহাৎ পতত্যেব কল্লান্তং নরকে নর ইতি॥ পাল্মে শিবেন—অমর্হং মম নৈবেত্যং পত্রং পুষ্পং ফলং জলম্।

মহাং নিবেগ সকলং কূপএব বিনিক্ষিপেদিতি। স্কান্দে সূতেন—নিৰ্মাল্যঞ্চ নিবেচঞ্চ পত্ৰং পুষ্পঞ্চ বৰ্জয়েৎ। রুদ্রেণ ভুক্তং নির্মাল্যং ন তথা দেবতান্তরিঃ। নৈবেচ্চং বিষ্ণুনা ভুক্তমমৃতঞ্চান্তদৈবতৈঃ। নিশ্মাল্যঞ্জ নিবেছঞ্চ ভুক্ত্যা চান্দ্রা-য়ুণঞ্চরেদিতি। তথা বিসজ্জিতস্ত দেবস্ত গন্ধপুষ্পানিবেদনম্। নিশ্মাল্যং তৰিজানীয়াৎ বর্জ্যং বস্ত্রবিভূষণম্। অপয়িত্বা তু তে ভূয়শ্চণ্ডেশায় নিবেদয়েদিতি॥ কালোত্তরে চ—চণ্ডদ্রব্যং গুরুদ্রব্যং দেবদ্রব্যং তথৈব চ। রোরবে তে২পি পচ্যস্তে মনসা যেহপি ভুঞ্জতে ইত্যাদি বচনৈঃ শিবনৈবেল্পত্ৰ-পুষ্পফলজলানামগ্রাহ্যত্বং প্রতিপাদিতং প্রভ্যুত প্রায়শ্চিত্ত-শ্রবণঞ্চ॥ তৎপ্রতিষেধে সনৎকুমারপ্রশ্নানন্তরম্ ব্রহ্মো-বাচ—সাধু সাধু জয়া বৎস প্রশ্লোহয়ং পাপনাশনঃ। কৃতঃ পাদোদকস্যাত শৃণু মাহাত্ম্যুভ্মম্। অকালমৃত্যুমথনং সর্কব্যাধিবিনাশনম্। সর্কাপাপোপশমনং শভ্যেঃ পাদো-দকং শুভমিত্যাদি বহুধা পাদোদকমাহাত্ম্যমভিধায় শস্তোঃ পাদোদকং পীত্বা পশ্চাদশুচিশঙ্কয়া। য আচামতি মোহেন তং বিন্তাদ্বেশ্মঘাতকম্॥ যথা পাদোদকং পুত্র পত্রং পুষ্পং স্থাবহম্। তথৈব ধূপশেশচ দীপশেষো ন সংশয়ঃ॥ অহমন্যৎ রহস্যন্তে কথয়ামি শৃণুদ্ব তৎ। তৎপ্রসাদোদক-স্পর্শাৎ পুণ্যমন্তন্ন বিভাতে ইতি নানাবচনপর্য্যালোচনয়া শিবনিবেদিভদ্রব্যাণামগ্রহণে মহাদোষঃ স্থাদিতি বিলোধঃ। নচ অনর্হং মম নৈবেছা পত্রা পুষ্পা ফলা জলম্। শালগ্রামশিলালগ্নং সর্কাং যাতি পবিত্রতাম্। নৈবেদ্যঞ্চ নরো ভুক্ত্বা শুদ্ধ্যৈ চান্দ্রায়ণঞ্চরেদিতি পুরাণসংগ্রহে শ্রীশিব- বচনাৎ শালগ্রামশিলাস্পৃষ্টঞ্চেৎ তয়ৈবেদ্যং তদা ভক্ষণীয়মিতি বাচ্যম্॥ সোহপি যাতি নরো ঘোরং নরকান্তরমক্ষরম্। শুপ্রতিষ্ঠিতলিক্ষে তু ন তথা পূর্ববভাবনা। তথা
শিবপ্রসাদস্থ পূর্ববনাম ন সংশ্মরেদিত্যুপক্রম্য উপসংহারে
নোচে দনর্পিতং ভুক্তং প্রসাদং নিক্ষলং ভবেৎ। রূপং
সমর্পেৎ দ্রব্যস্থ রুচিমপ্যর্পয়েত্ততঃ। উভয়ার্পণহীনঞ্চেৎ প্রসাদং
নিক্ষলং ভবেৎ। দীপান্ত উপচারঃ স্থান্নৈবেদ্যান্তঞ্চ পূজনম্। তত্মান্নৈবেদ্যহীনঞ্চেৎ পূজালোপো ভবেৎ সদা।
তত্ম প্রসাদভোগান্তং নৈবেদ্যার্পণমূচ্যতে। প্রসাদাদনহীনঞ্চেদপি তচ্চাপি নিক্ষলম্। ব্রতোপবাসনিয়মৈর্যেন
কেনাপি হেতুনা। পূজাপ্রসাদলোপশ্চেমাসাবাপ্রোতি তৎফলমিতি স্বন্প্রাণীয়বচনে শালগ্রামশিলাস্পর্শনমন্তরেণ
নৈবেদ্যার্পণসম্পূর্ত্যে তদ্ককণবিধানাৎ।

নচ নৈবেদ্যার্পণসম্পূর্ত্ত্যর্অন্তক্ষণদর্শনান্তত্বপাসকপরমিতি বাচ্যম্। শিবদত্তং বিষ্ণুদত্তং গিরিজাদত্তমেব চ। নৈবেদ্য-মুদরে কৃত্বা নরঃ সাযুজ্যমাপ্পুয়াদিতি তথা রোগং হরতি নির্মাল্যং শোকস্ত চরণোদকম্। নৈবেদ্যং সর্ব্বপাপানি শস্ত্যোর্দহতি নিশ্চিতমিতি তন্ত্রকৌমুদীপ্পতবচনাভ্যাং সামান্ততস্তক্ষণে সাযুজ্যফলশ্রবণাৎ॥ নচ ক্ষন্দপুরাণীয়বচনৈক্বাক্যত্তয়া এত্বচনদ্বয়মপি তত্বপাসকপরমিতি বাচ্যম্। এতাদৃশকল্পনয়া প্রসাদভক্ষণমভিধায় তত্ত্বচনানাং তত্বপাসকমাত্রপরত্বে বিষ্ণুাদিদেবতানামপি তত্বপাসকভিন্নানাং তৎপ্রসাদভেক্তি ক্রাক্রপপত্তেঃ॥ নচ বিষ্ণুাদিদেবতাপ্রসাদভক্ষণনিষেধবচনাভাবাৎ ন তত্বপাসকেতরাণাং তৎপ্রসাদ

ভোক্ত ত্বানুপপত্তিরিতি বাচ্যম্। বর্জ্জয়েৎ বিষ্ণুকল্পঞ্চ বর্জ্জয়েৎ তুলদীদলম্। বৰ্জ্জয়েমালতীপুষ্পং বৰ্জ্জয়েদশ্যপূজনমিতি নীলতন্ত্র-ষষ্ঠপটলবচনেন বিষ্ণুকল্পবর্জ্জনবিধানাৎ॥ নচৈ-তদ্বচনং বীরাচারপরমিতি বাচ্যম্ এতদ্বচনস্থ বীরাচারপরত্বে ক্তুদ্বচনানাং হরিহরাদিভেদকপাযগুপরত্বে বাধকাভাবাৎ। যদ্যপি শিবপ্রসাদভক্ষণনিষেধবচনানাং তত্তৎপাযগুপরত্বে মানাভাবঃ পাষণ্ডামুপক্রম্য তত্ত্বচনাভিধানাভাবেন সামান্ত-পরত্বে সৌলভ্যাৎ। বিষ্ণুাদিপ্রসাদভক্ষণনিষেধবচনস্ত বীরা-দারপর্যমের তানেবোপক্রমা তম্বচনাভিধানাদিত্যায়াতং সর্বেষাং বিষ্ণাদিপ্রসাদভোক্তৃত্বম্। শিবপ্রসাদভোক্তৃত্বস্ত তত্ত্-পাসকানামেব তথাপি ইমং প্রসাদং ভুঞ্জানো বিরিঞ্চিঃ কিল জৈমিনে। অফীদশমহাবিদ্যাস্থানচারণপারগঃ। কণ্ঠস্থলে তেন নৃত্যদ্বারতীভাস্থরাননঃ। স্থরাস্থরশিরোরত্নবিরাজিতপদাস্বুজঃ। অনুগ্রহাতুং সকলং নিগ্রহাতুঞ্চ লীলয়া। জগজ্জনয়িতুং শক্তঃ প্রদাদানুভবাদভূৎ।। বিষ্ণুঃ পরশুরামোহপি শিবেন পরি-দীক্ষিতঃ। পাদোদকপ্রসাদেন নির্মাল্যান্থনিযেবকঃ। বশি-ষ্ঠোহপি গরিষ্ঠোহভূৎ প্রসাদস্থ প্রভাবতঃ। তম্মাৎ পাদো-দকং পেয়ং প্রসাদক্ষিব ভক্ষয়েদিতি শিবপুরাণীয়বচনে দ্বিতীয়-বিদ্যোপাসকস্ম বশিষ্ঠস্ম শিবপ্রসাদভক্ষণদর্শনাৎ। যুক্তং বশিষ্ঠস্থ দ্বিতীয়বিদ্যোপাসকত্বে প্রমাণমাহ তারা-গ্রহস্তর্বভিগ্নত-নীলতন্ত্রবচনম্—বশিষ্ঠোপাসিতা বিদ্যা নতু শীঘ্রফলপ্রদা। অতস্তেনৈব মুনিনা শাপো দত্তঃ স্থদারুণ ইতি।

উচ্যতে শ্রুতিস্মৃতিবিরোধে তু শ্রুতিরেব গরীয়সীতি

ন্যায়াৎ শ্রুতিবলেন নিরুক্তম্মতিবচনানি বাধিত্বা সর্কৈ: শিবপ্রসাদোভক্ষ্যইতি। তথাচ রহজ্জাবালোপনিষৎ—ক্ষদ্র-ভুক্তং ভুঞ্জীয়াৎ রুদ্রশীতং পিবেৎ রুদ্রদ্রাতং জিম্রেৎ রুদ্রে ভুক্তং দ্রব্যমশ্বন্তি রুদ্রেণপীতং পিবন্তি তম্মান্নির্মান্যমেব ভক্ষ্যং পীতং নিশ্মাল্যমেব নিষেবেতেতি। যদ্বা জৈমিনিরুবাচ-অনর্হং মম নৈবেদ্যং পাদাস্থ কুস্থমং দলম্। ইতীশ্বরেণ কথিত-মিতি কেচিনাহর্ষয়ঃ। বদস্তি তৎ কঞ্চ স্বামিন্ যথার্ছং কথয়স্ব মে॥ ব্যাস্টবাচ। দেব শ্রুত্বা হি নচসো বিষয়োহয়ং হি জৈমিনে। যে বীরভদ্রশপিতাঃ শেবভক্তিপরাষ্মুখাঃ। শস্ভোরন্যত্র দেবেগু যে ভক্তা যে ন দীক্ষিতাঃ। যে শুদ্ধ-কর্মিণঃ শস্তোরন্যত্র সমবুদ্ধয়ঃ। তেষামনর্হমীশস্থ তৎপ্রসাদ চতৃষ্টয়ম। নিম্মাল্যং নিম্মালং শুদ্ধং নিম্মালম্বাদনিন্দিত্য। তম্মাদভোক্ত্যং নিম্মাল্যং প্রাকৃতৈরশিবাত্মভিঃ॥ জিহ্না-চাপল্যসংযুক্তঃ শিবসংস্কারবর্জিতঃ। অশুদ্ধাত্মাশুচির্লোভা-**মৈ**বেদ্যং পাবনং পরম্। ভক্ষরনাশমায়াতি শূদ্রো হ্যধ্যয়-নাদিব॥ শিবাকুভূতমথিলং নির্ম্মান্যং পরিভাষ্যতে। ভোজাং ধাৰ্য্যমিতি দ্বেধা তদ্বিধঞ্চ তদিয়াতে—দেবস্বং দেবতাদ্ৰব্যং নিবেদ্যঞ্জ নিবেদিতম্। চণ্ডদ্রব্যং বহিঃক্ষিপ্তং নিম্ম ব্যাল্যং ষড়-বিধং স্মৃতম্॥ দেবস্বং গ্রামভূম্যাদি দাসীদাসচতুষ্টয়ম্। হেম-রূপ্যকরত্নাদি দেবদ্রব্যমিতি স্মৃতম্॥ সঙ্কল্পিতস্ত দেবায় পত্রং পুষ্পাং ফলং জলম্। অন্নপানাদি তৎ সর্ববং নিবেদ্যমিতি কীৰ্ত্তিতম্। এতত্ৰিবিধনিম্ম াল্যমনৰ্হমিতি কথ্যতে। প্ৰমাদাৎ ভোজনং কুর্ববন্ ভূমো স স্থাদমঙ্গলঃ। শিবদ্রব্যাপহারেণ নরকং থাত্যমো জনঃ। শিবোপভুক্তস্রগ্রন্ধমন্নপানাদিকঞ্চ যৎ।

তৎ পবিত্রমিতি প্রোক্তং সর্ব্বপাপহরং শুভষ্। স্থাপিতং বিধিনা লিঙ্গং সর্ব্বৈর্দেবাস্থরেন রৈঃ। এতজ্রিবিধনিশ্বাল্যে চণ্ডেশাধিক্বতঃ শিবঃ। বহিঃক্ষিপ্তমনর্হং স্থাদন্যদ্রব্যস্থ কারণাৎ। পিশাচানাঞ্চ সর্ব্বেষামধিকারোহত্র সর্ব্বদা। নিশ্বাল্যং ষড়্বিধং ভোজ্যমেকমেব নিষেদিতমিতি জৈমিনিপ্রশান্তর-শিবপুরাণীয়-ব্যাসবচনজাতেন পূর্ব্বোক্তশিবপ্রসাদভাজনবিধায়ক-তন্নিযেধপর-বিরোধিবচনানাং সমাধানমিতি নো শিক্টব্যবহারবিরোধঃ।

বস্তুতস্ত্র বক্ষ্যমাণবচনৈমধ্যস্থানস্থমুখদভদ্রব্যং কৈশ্চিদপি ন ভক্ষণীয়ম্। তদিতরপ্রসাদেষু সর্কেষামেব ভক্ষ্যতা। অতএব নিষেধবচনানি সর্ববাণ্যূদ্ধমূখদত্তদ্রব্যভোজনাদিনিষেধপরাণীতি ন কশ্চিদ্দোষলেশঃ। তথাচ লিঙ্গার্চ্চনতত্ত্বে দ্বাদশপটলে— যদ্যদত্তং মহেশানি শিবায় পরমাত্মনে। তৎ স্বর্বং পরমেশানি তৎক্ষণাত্তন্ময়ং ভবেৎ। যৎকিঞ্চিত্রপচারং হি লিঙ্গোপরি নিবেদয়েং। তন্নির্মাল্যং মহেশানি অগ্রাহ্যং পরমেধরীতি॥ তথা তত্ত্বৈব ক্রয়োদশপটলে— ত্বনির্মাল্যং মহাদেব ব্রহ্মাদীনাং স্বত্র্লভম্। অগ্রাহ্থ তব নির্ম্মাল্যং কথং বদসি যোগভূদিতি দেবীপ্রশ্লানন্তর-মীশ্বরোত্তরবচনম্—মধ্যস্থানস্থিতং যত্তু তন্মুথং পরমেশ্বরি। শ্রামলং তত্তু ঈশানং সদা উদ্ধিং শুচিস্মিতে। তেজোময়ং মহেশানি মুথমূর্দ্ধং বরাননে। ক্ষীরোদমথনে দেবি উত্থিতং গরলং মহদিত্যাদি প্রস্তুত্য ততঃ করতলীক্ষত্য তদ্বিষং প্রমে-খরি। ততঃ শ্যামমুখে দেবি নিপীয় তদ্বিষং প্রিয়ে। ততঃ-প্রভৃতি দেবেশি মুখং জ্বালায়তে সদা। কণ্ঠে তু গরলং

ভূষা দদা তিষ্ঠতি কামিনীতি॥ তস্ত চতুর্দ্দশপটলেহপি—
ঈশানস্থ মহেশানি জ্ঞানং পরমত্বর্লভম্। যস্থ শ্রেবনমাত্রেণ শিবপূজাফলং লভেং। ঈশানং তন্মুখং দেবি পরং বন্ধ
বরাননে। পত্রং বা যদি বা পুষ্পাং জলং বা বরবর্ণিনি। অন্তার্ব
পরমেশানি উপচারং মনোহরম্। যো দ্যাৎ পরমেশানি
তন্মুখোপরি পার্ববিত। অগ্রাহ্যং তত্তু নির্মান্যং দাক্ষাদ্রেক্ষময়ং যতঃ। এতত্তু পরমেশানি নির্মান্যং যস্ত ধারয়েং।
দ ভ্রম্টো জায়তে দেবি নিষ্কৃতির্নান্তি তম্ম বৈ। অগ্রাহাং
মম নিম্মান্যমত্রব বরাননে ইতি সর্ববং স্ক্র্যন্ত্রসম্।

বাণলিঙ্গে ত্বয়ং বিশেষঃ। মেরুতন্ত্রে শিবলিঙ্গপূজাপ্রকাশে—বাণলিঙ্গেন চাশোচং নচ নিম্মাল্যকল্পনা। সর্বাং
বাণাপিত গ্রাহ্যং ভক্ত্যা ভক্তেশ্চ নাম্মথা॥ প্রাহ্যাগ্রাহ্যবিচারোহয়ং বাণলিঙ্গে ন বিহাতে। তদর্পিতং জলং পত্রং
গ্রাহ্যং প্রসাদসংজ্ঞয়েতি॥ পুরাণসংগ্রহে হপ্যেবম্ স্বয়ন্তুপ্রভৃতি-শিব-নিম্মাল্যস্ম গ্রাহ্মপে। পুরাণসংগ্রহে শিবনারদসংবাদে—বাণলিঙ্গে স্বয়ন্তুতে চক্রকান্তেন্দ্রসংস্থিতে। চান্দ্রান্দ্রমণ জ্বেয়ং শক্তোনিবেহ্যভক্ষণেরিতি॥

বিসর্জ্জিতপার্থিবলিঙ্গন্থাপনস্থানমাহ। শৈবাগমে—
ঐশান্তাং হস্তমাত্রস্ত খাতং কুর্য্যাদিচক্ষণঃ। তত্র সংস্থাপয়েল্লিঙ্গং ধনর্দ্ধিকরং পরম্ ॥ বিল্লমূলে চতুর্বর্গং ফলমাপ্নোতি নিশ্চিতম্। ধৃস্তুরে মম সাযুজ্যং জলে নির্ব্বাণতামিয়াৎ। চ্যুতরক্ষতলে দেবি শত্রুন্ সংহারয়েৎ সদা।
ধাত্রীমূলে ভবেনোক্ষঃ সত্যং সত্যং ন সংশয় ইতি॥ তথা
ব্রক্ষানন্দগিরিক্বততারারহস্তে—হরস্ত পার্থিবং লিঙ্কং শঙ্করস্ত

নরো যদ। জলে সংস্থাপয়েদেবি স দরিদ্রো ভবেদ্ধ্রবম্।
পূজয়িত্বা তু যো লিঙ্গং পার্ববতীপ্রিয়মূত্তমম্। স্থাপয়েদ্বুবি রোদ্রে চ দন্দশূকং প্রয়াতি সঃ॥ শিবলিঙ্গং পূজয়িত্বা
ভূমো সংপ্রোথয়েৎ কিল। অথবা স্থাপয়েত্রোয়ে দন্দশূকং
ব্রজেমচেতি॥ যত্র যত্র নঞ্জাতিস্তত্র তৎ স্থগী র্ন
কার্যাম্। উভয়ত্র দোষপ্রবিশাদনদশূকং ব্রজেমচেতিশ্রাবণাচ্চ ভূমো প্রোথনমেব কার্যাম্। জলে স্থাপনস্ত সামান্তজলে তরিষেধদর্শনা দত্র তোয়পদং গঙ্গাজলপরম্। তত্ত্তং
তব্রৈব—ন জলে স্থাপয়েছছুং ভাগীরথীজলং বিনা। ন
জলে পূজয়েছছুঃ ভাগীরথীজলং বিনেতি॥

পূজায়াং নিন্দিতবিহিতস্থানমাহ। গান্ধর্বে সপ্তম-পটলে—কেশকীটাদিসংযুক্তা ন স্নিগ্ধা নাতিপিচ্ছলা। ন রক্ষা নাতিনীচা বৈ নাত্যুচ্চা ন বনান্বিতা। ন চ বায়ুডি-রাচ্ছয়া নান্তপ্রাণিসমাকুলা। ধূলিকর্দমসংযুক্তা পশুভির্নবিলাকিতা। রক্ষাদিভিরনাকীর্ণা দূরবারিসমাকুলা। অনান্বতা চতুর্দ্দিক্ষু মনসোহতুইকারিণী। উষরে ক্মিসংযুক্তে স্থানে পূণ্যুহপি নার্চ্চয়েং। যাগভূমিনিষিদ্ধা বিহিতা কথ্যতেহধুনা—বাপীকৃপসমীপস্থা স্লমনোবনমধ্যগা। বিচিত্রন্থপর্ত্তা শুদ্ধবেদিপরিষ্কৃতা। পেয়ের্ভক্ষ্যঃ সমাযুক্তা কপূরাগুরুধ্পতা। বালার্কসদৃশী রম্যা মনঃসন্তোধনারিণী। তত্তদায়ুধপূর্ণান্তবিভূষিতপ্রপূজিতা। এবমেষা মহাদেবি যাগভূমিঃ সমীরিতা॥ পূজা দেব্যা বহিঃ স্থিষা চতুর্হস্তান্তরে প্রিয়ে। গৃহে চেৎ দ্বারদেশস্থ আচম্য মনসা গুরুন্। পুণ্যক্ষেত্রাণি বক্ষ্যন্তে শৃণু প্রাধান্যতো মম—পুশ্য-

ক্ষেত্রং নদীভীরং গুহা পর্বতমস্তকম্। তীর্থপ্রদেশাঃ সিদ্ধৃনাং সঙ্গমঃ পাবনং বনম্। উদ্যানানি বিবিক্তানি বিশ্বমূলং তটং গিরেঃ। তুলসীকাননং গোষ্ঠং রুষশৃন্তং শিবালয়ম্। অশ্বখানলকীমূলং গোশালা জলমধ্যতঃ। দেবতায়তনং কূলং সমুদ্রম্ম নিজং গৃহম্। শুরূণাং সিদ্ধিনঞ্চ চিতৈকাগ্র্যস্থলং তথা। সর্বেষামূত্রমং প্রোক্তং নির্জনং পশুবর্জিতম্॥ যত্র তত্র নরঃ পূজাং নির্জনে কুরুতে তু যঃ। তত্যাদত্তে স্বয়ং দেবী পত্রং পূজাং ফলং জলম্। শ্রদ্ধাভক্ত্যাশ্চ বাহুল্যাং পূজাদ্রব্যক্ত বিস্তরাং। দেব্যাঃ সমিশ্রিত্র স্থান্ধির্জনে পূজানতথেতি।

ন বনাষিতেতি বনরহিতা শঙ্কাতঙ্কবনরহিতেতি তাৎপর্যার্থঃ॥ তত্তক্তং নিবন্ধে যোড়শপটলে—মেচ্ছ-ত্রুইমগ-ব্যাল-শঙ্কাতঙ্কবিবর্জিত ইতি॥ পশুভির্ন বিলোকিতেতি
কুলপজাভিপ্রায়েণ—কুলদ্রব্যাণি দেবেশি পশ্বাদিভ্যো ন
দর্শয়েৎ। দর্শনে সিদ্ধিহানিঃ স্থাদ্রোরবং নরকং ব্রজেদিতি
নিরুত্রতন্ত্রদ্বাদশপটলবচনেন নিন্দাশ্রুতেঃ। যদ্বা পশবে।
দীক্ষারহিতকুলানি তৈর্নাবলোকিতেতি। যৎকুলে নান্তি
দীক্ষা চেৎ পশুশব্দেন তৎকুলম্। প্রোচ্যতে দেবদেবেশি
বর্জ্যমাগমবেদিভিরিতি রুদ্রজামলোক্তেঃ। তত্তদায়ুধপূর্ণান্তবিভূষিতেতি স্বস্বোপাসিতদেবতায়া আয়ুবৈঃ পূর্ণগৃহমধ্যশোভিতেত্যর্থঃ॥ রুষশৃন্থমিতি কাকাক্ষিগোলকন্যায়াছভয়ত্র সম্বধ্যতে রুষশৃন্তং গোষ্ঠং শিবালয়ঞ্চ প্রত্যেজ্বা থে
শিবস্থানে রুষভাদিবিবর্জ্জিত ইত্যগস্ত্যসংহিতোক্তত্বাৎ। জলমধ্যত ইত্তি জলমধ্যে ইত্যর্থঃ। তত্র বিশেষয়তি কালিকা-

পুরাণে শাক্তা নন্দতরঙ্গিণীপ্তত গোরীজামলেহপি—সলিলে যদি কুর্ব্বীত দেবতানাং প্রপূজনম্। তত্রাপ্যাসনমাসীনো নোখিতস্ত সমাচরেদিতি॥ জলোপবেশার্থবিহিতাসনান্যগ্রে প্রতিপাদয়িষ্যামঃ।

অথ পূজাকালনিয়মঃ। যোগিনীভক্তে দ্বিভীয়পটলে—
প্রাতঃকালং সমারভ্য যাবন্যধ্যন্দিনং ভবেৎ। তাবৎ কর্মাণি
কুর্বীত যঃ সম্যক্ ফলমিচ্ছতি। ক্রুরকর্মাণি কুরুতে শেষে২পি পরমেশ্বরীতি॥ অত্র কর্ম্মণদা পূজাকন্মপরং তৎপ্রকাণ্টেভিহিতত্বাং। তথা কেংকাণিয়ে ভূতায়পটলে—
পূর্বাহ্নে দেবতায়াশ্চ পূজাং কুর্য্যাদ্বিশ্যেত ইতিঃ।

যত্ত্ব প্রথমপ্রহরার্কিঞ্চ তাত্ত্বা পূজনগাচানেই। দশদণ্ডে তু সম্পূর্ণে তত্ত্ব পূজাং সমাপ্রানিতি নিগসক্ষরতালৈকাদশ-পটলবচনে প্রথমপ্রস্কানিকতিং তাই প্রান্ত এ-শৌচা-চমন-স্নানান্তপেকাক্বত-কালশৈথিল্যবোধকম্।

যদপি চতুর্থভাগমধিকৃত্য কুর্যান্মাধ্যাহ্নিকং স্নানং জপদেবার্চনাদিকমিতি রামার্চনচন্দ্রিকারামুক্তং তদ্রাজ্ঞসপূজাপরম্। এতদ্বিষয়এব মহানির্বাণতন্ত্র-তৃতীয়োল্লাসবচনম্।
তদ্যথা—প্রাতঃকৃত্যং প্রাতরেব সন্ধ্যাং কুর্যান্ত্রিকালতঃ।
মধ্যাহ্নে পূজনং কুর্যাং সর্বতন্ত্রেষয়ং বিধিরিতি। অতএব
মহানীলতন্ত্রে অফাবিংশতিপটলে—প্রভাতে পূজ্যেদেবীং
সম্ববুদ্ধ্যা স্থলাধকঃ। মধ্যাহ্নে পূজ্যেদেবীং রাজসঃ কর্ম্মদিদ্ধয়ে। সায়াহ্নে পূজ্যেদেবীং তামসং শক্রনাশিনীমিতি।
অত তু প্রভাতপদং পূর্বোদাহ্যতবচনকবাক্যতয়া পূর্বাহ্নপর্মবধ্যেম্।

সান্ত্রিকাদীনাং বিশেষফলমাহ। রহন্ধীলতন্ত্রে ষষ্ঠপটলে— সান্ত্রিকং মোক্ষকামাণাং রাজসং রাজ্যমিচ্ছতাম্। তামসং শক্রনাশার্থং সর্বব্যাধিনিবারকমিতি।

প্রকারান্তরে ত্রিবিধপূজামাহ—রুদ্রজামলে সপ্তর্যষ্ঠিতম-পটলে—পূজনং ত্রিবিধং প্রোক্তং মনঃসাক্ষান্বচোময়ম্। মানসং যোগিনাং প্রোক্তং সাক্ষাৎপূজা গৃহে প্রভো। বচোময়ং তামসানাং নৃপাণাং কামিনাং প্রভো। একা পূজা চ ত্রিবিধা কথিতা পরমেশ্বরি। সা পূজা সিদ্ধিদা কালে ত্রিকালে সর্বকালকে। কালে সিদ্ধিগৃহস্থানাং ত্রিকালে ব্রক্ষচারিণাম্। যোগিনাং সর্বকালে তু বিফলা তুইটেতসাম্। ভাবত্রয়ং হি পূজানাং রজঃসত্ত্বতমাময়-মিতি॥

প্রকারান্তরমাহ রাঘবভট্টঃ শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাকারোহপি—
পুনস্ত্রিধা মতা পূজা উত্তমাধমসধ্যমা। অধিকারিনিমিত্তাভাাঃ
ভিন্ততে শতধা পুনঃ। যাগোপকরণৈঃ কৃৎক্রৈঃ ক্রিয়মাণোভুমা মতা। যথালকৈ বিবিনিস্পান্তা দ্রব্যৈঃ পূজা তু মধ্যমা।
পত্রপুপ্পান্থানিস্পান্তা পূজা চাধমসংজ্ঞিতা॥ বিদিতাখিলবেদার্থৈব্রক্ষর্যিভিরকল্মথৈঃ। ক্রিয়মাণা তু যা পূজা সাত্ত্বিকী
সা বিমৃক্তিদা॥ রাজ্যিভিস্তপোনিষ্ঠে র্ভগবভত্তবেদিভিঃ।
যা পূজা ক্রিয়তে সম্যক্ রাজসী সা স্থপপ্রদা॥ স্ত্রীবালর্দ্ধন্দিন্ত র্ভক্রেক্ষুদ্রমানসৈঃ। যা পূজা ক্রিয়তে নিত্যং
তামসী সা প্রকীর্ত্তিতা॥ আরাধনাসমর্থন্টেৎ দল্লাদর্চনসাধন্ম। যো দাহুং নৈব শক্ষোতি ক্র্য্যাদচ্চনবন্দ্রন্ম।
নৈকন্তর যম্ম বিদ্যেত সোহধো যাতেরে নাল্যথা॥ যন্ত ভক্তা

প্রযক্তেন শক্ত্যা সম্পাদ্য চাথিলম্। সাধ্যুম্বর্চয়েদ্বিদ্বান স সমগ্রং ফলং লভেদিতি॥ তত্ত্ব ভূ শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাগ্বতাগস্ত্য-সংহিতায়াম্—স্বস্থঃ সমর্থঃ কুর্বীত চোত্তমৈরেব সাধনৈঃ। মধ্যমা মধ্যমেরেব ন্যনোন্যনৈস্তপোধন। অপরৈশ্চাসমর্থশেচৎ ন্যুনৈরেব সমাচরেৎ। পূজাকর্ম বিশেষণ দেশকালান্মুসারতঃ ইতি॥ এবঞ্চ দিবা ন পূজয়েদ্দেবীং রাত্রো নৈব চ নৈব চ। সর্ব্বদা পূজয়েদ্দেবীং দিবারাত্রো ন পূজয়েদিতি .মুগুমালা-তন্ত্রসষ্ঠপটলবচনং তস্থায়মভিপ্রায়ঃ—দিবারাত্রিসর্ব্বদা**শব্দেন** পারিভাষিককালবিশেষো গৃহুতে ন হু সূর্য্যকিরণাবচ্ছিন্স-কালো দিবা, সূর্য্যাস্তমিতকালোরাত্রিরিতি। এতদ্যাচষ্টে রেবাতত্ত্রে ভগবত্যাঃ সংশয়াপনোদনায় ভগবান্ স্বয়মেব শূলপাণিঃ। যথা দিবাচার্দ্ধপ্রহরিকা চাদ্যন্তে প্রমেশ্বরি। ঋতুদণ্ডাত্মিকা তম্মাদ্রাত্রিরুক্তা মনীসিভিঃ। ততো বৈ দ**শ** নাড্যস্ত নিশা মহানিশা স্মৃতা। সর্বদাচ সমাথ্যাতা সর্ব-সাধনকর্ম্মণি। ততোহবশিষ্টা যা রাত্রি র্দ্দিবারাত্রিঃ প্রকী-ভিতেতি। অস্থায়মর্থঃ ত্রিধা বিভক্তায়া রাত্রের্মধ্যভাগ-এব সর্ব্বদাপরনামা মহানিশেতি সৈব দেব্যাঃ পূজনে বিহিতা তৎপূর্ব্বাপরভূতয়োর্ভাগয়োর্যথাযথং দিবা-দিবারাত্রিসংজ্ঞয়োঃ পর্যুদস্ততেতি সিদ্ধম্। ইতি তু কুলপূজাপরম্।

অথ নিত্যপূজায়াঃ সংক্ষেপেণ কর্ত্তব্যত্বমাহ শ্যামার্চ্চনচন্দ্রিকাপ্পত-সারসমূচ্চয়ে—নিত্যপূজা তু সংক্ষেপাৎ কর্ত্তব্যা
বৈ দিনে দিনে। বিস্তারে কম্ম বা শক্তিঃ কোবা জানাতি
তত্ত্বতহিতি॥ অতএব স্পাইনাহ পিচ্ছিলাতন্ত্রে দ্বাদশপটলে—
বিশেষপূজা কথিতা জামলাদৌ ময়া ত্বয়ি। দ্রব্যাদ্যভাবাৎ

সা দেবি ছর্লভা প্রত্যহং প্রিয়ে॥ সংক্ষেপতন্তথাপ্যেবং কৃত্বা সম্যক্ ফলং লভেৎ। অন্যথানর্থকারী স্থাদভিচারায় কল্পতে। তদেব কথয়াম্যদ্য শৃণুম্ব হরবল্লভে॥ আচম্য चांत्ररम्टम जू मार्याचार्याः म्याठरतः । निश्विषामितिचारमी মূলেন করশোধনম্। করব্যাপকবিন্তাসো কৃত্বাঙ্গান্ সংগ্ত-সেৎ স্থবীঃ॥ তালত্রয়ং দিশাং বন্ধঃ প্রাণায়ামত্রয়ং তথা। ধ্যানমিন্টস্থৈব পূজা জপশ্চ কালিকার্চনম্। অয়মেব বিধিঃ প্রোক্তঃ সর্ব্বেষাং যজনক্রমে। উপচারেঃ ষোড়শভিস্তং ভবেৎ পূজনং মহৎ। নিত্যে দশোপচার্চ্যেত পঞ্চ বা বিত-রেৎ শিবে॥ অভাবে গন্ধপুষ্পাভ্যাং পত্রেণ তদভাবতঃ। পুষ্পাভাবে জলেনাপি দূর্ব্বয়া তণ্ডুলেন বা। মানসীং তদ-ভাবেহপি পূজাং নো লজ্ময়েৎ কচিং। লজ্মনে সর্বনাশঃ স্থা-দাপদশ্চ পদে পদে ইতি॥ সর্কোযামিতি সর্কোষাং দেবানাং পুজনে অনুমের বিবিজ্ঞে ম:। আদে খায়াদিবিত্যাদঃ কর-শুদ্ধিস্ততঃপর্মিত্যাদি তন্ত্রসার্ধতবচনৈকবাক্যমাৎ।

অত্র যদ্যপি পূজ্পাভাবে কেবলতওুলেন কেবলদূর্বরা বা সামান্যেনসর্বদেবতানাং পূজাভিহিত। তথাপি বক্ষ্যমাণবিশেষ-বচনৈকবাক্যতয়। বিষ্ফাদীনাং তন্নিষেধাহবন্তবয়ঃ। যথা শিবার্চনচন্দ্রিকাপ্পত-জ্ঞাননালায়াং — নাক্ষতৈরচ্চ য়েদিফুং ন তুলস্থা গণাধিপম্। ন দূর্বয়। যজেদুর্গাং বিল্পপত্রৈদিবা-করমিতি॥

ইদানীং পূজায়াং বিশেষো নিরূপ্যতে। পাদপ্রক্ষালনে দ্বিত্ব দিল্পখনিয়মমাহ শাক্তানন্দতরঙ্গিণ্যাম্—অথ পূজাগৃহদ্বারি উপবিশ্য কুশাসনে। উত্তরাভিমুখো ভূত্বা পাদপ্রক্ষালনং

চরেৎ। দিবা পূর্ববমুখো ভূজা রাত্রো কুর্যান্ত্রদল্প ইতি। তনুক্ত্যমাহ দিবার্চনচন্দ্রিকাগ্ধতোত্তরতন্ত্রে—আচান্তঃ শুচিতাং প্রাপ্তঃ স্থন্সাতো দেবপূজনে। পূজ্যাবেলা বহিঃ স্থিতা চতুর্হস্তান্তরে ধিয়া। গৃহে চেদ্যারদেশস্থঃ প্রণমেমনসা গুরুন্। প্রণমেদিউদেবঞ্চ দিক্পালানপি চেত্সা। যৎ পূর্ব্বমঞ্জিতং পাপং তদ্দিনেহন্যদিনেহপি বা। প্রায়শ্চিত্তৈ-র্নাপকুদেত্তদা পাপং স্মরেদ্ধিয়া। তৎপাপস্থাপনোদার্থং মন্ত্রদ্বয়মুদীরয়েৎ॥ মন্ত্রদ্বয়স্ত তত্তৈব—ওঁ দেব স্বং প্রাক্বতং চিত্তং পাপাক্রান্তমভূম্ম।। তন্নিঃসারয় চিত্তাম্মে পাপং হুঁফট্চ তে নমঃ॥ ওঁ সূধ্যঃ সোমো যমঃ কালো মহা-ভূতানি পঞ্চ। এতে শুভাশুভস্মেহ কর্মণো নব সাক্ষিণ-ইতি॥ তত্ত্রৈব—এবং ক্ততে প্রথমতঃ পাপোৎদাদনকর্মণি। যৎ স্থাদল্পতরং পাপং তদ্দুরে চাবতিষ্ঠতে। অতীতে পূজনে স্থানং স্বং প্রায়াতি পুনশ্চ তৎ। যৎ স্থাদল্পতরং পাপং তন্ধাশং প্রতিপঘত ইতি।

অথাচমনম্। কাত্যায়নীতন্ত্রে চতুঃসপ্ততিতমপটলে—
মন্ত্রেণাচমনং কার্য্যং সামান্তার্য্যং ততশ্চরেদিতি॥ মন্ত্রেণ

ফ্লমন্ত্রেণেত্যর্থঃ। ততুক্তং মৎস্তাস্ভুক্তে সপ্তমপটলে—কুশহস্তঃ শুচিমোনী মূলেনাচম্য যত্নত ইতি॥ তথা কমলাতন্ত্রে তৃতীয়পটলে—আচম্য মূলমন্ত্রেণ গুরোমন্ত্রং জপেদশেতি॥ মূলমন্ত্রস্তু বিশ্বসারতন্ত্রে দ্বিতীয়পটলে—যস্ত্র লোকস্তা যং মন্ত্রং দল্লাচ্চ বিধিনা গুরুঃ। তং মূলমন্ত্রং
বিজ্ঞেয়ং সর্ববিত্রসমন্তিতিমিতি॥ এতত্ত্ব বিশেষাত্মক্তেঃ।
তথাপি শাক্তান্বয়েরু মূলমন্ত্রাত্মত্বাদিমন্ত্রয়োরিচ্ছাবিকরঃঃ বক্ষ্যমাণবচনেন বিশেষদর্শনাৎ। তথাহি তন্ত্রকৌমুদীধৃত-ভূতশুদ্ধিতন্ত্রে—আত্মতত্ত্বাদিনাচম্য সংপূজ্য দ্বারদেবতাম্। ততঃ সংশোধয়েদ্ভূমিমাসনঞ্চ প্রপূজয়েদিতি। অত্রাত্মতত্ত্ব-বিচ্চাতভ্ৰ-শিবতভ্ৰ-নান্নাং প্ৰণবাদিস্বাহান্ততা জ্ঞেয়া। তছুক্তং রাঘবভট্টপ্রতপিঙ্গলামন্ত্রে—আচম্য চাত্মতভূুাজ্যৈঃ প্রণবাদ্যৈ-ৰ্দ্বিঠান্তকৈঃ। মন্ত্ৰৈস্ত্ৰিধা ততো বক্ত্ৰং নাসাক্ষিশ্ৰোত্ৰনাভিহ্নৎ। মস্তকাংশান্ স্পৃশেদিতি। অত্র ত্রিধা ইতি ত্রিধা জলং পীত্বেত্যর্থঃ সর্বত্র তথাদর্শনাৎ। মস্তকাংশান্ স্পূশেদিতি তত্তৎস্থানানাং স্পাশস্তি মূলমন্ত্রেণামন্ত্রকেণ বেতীচ্ছাবিকল্লঃ। বক্ষ্যমাণবচনাভ্যাং তথা শ্রবণাৎ। তথা নীলতন্ত্রে দ্বিতীয়-পটলে—আচামেদাত্মতন্ত্রালৈঃ প্রণবালৈ দিঠান্তকৈঃ। মদ্রৈস্ত্রিধা তথা বক্তুনাসাক্ষিশ্রোত্তনাভিহ্নৎ। স্বমস্তকশিখাং স্বাং সংস্পৃশেন্মক্রৈশ্চ সাধকঃ। আচম্য প্রাধ্মুখো ভূত্বে-ত্যাদি। মত্ত্রৈশ্চ সাধক ইতি পুনর্মন্ত্রশব্দোপাদানাদ্বিশেযা-নভিধানাচ্চ মূলমন্ত্রৈরিত্যর্থঃ। এতেন তত্তৎস্থানানাং মূল-মন্ত্রেণ স্পর্শোহভিহিতঃ॥ তথা মন্ত্রমহোদধৌ বিংশতি-তরঙ্গে—আস্তে নসোঃ প্রদেশিন্তানাময়া নেত্রকর্ণয়োঃ। কনিষ্ঠয়া নাভিদেশে২ঙ্গুষ্ঠঃ সর্বত্ত সংযুতঃ। তলেন হৃদয়ে ন্সস্থেৎ সর্ব্বাভির্মস্তকেহংসয়োঃ। আত্মবিভাশিবৈস্তত্ত্বৈঃ স্বধাত্তৈরপি বেদপঃ। হাং হীং হুমাদিমৈঃ শৈবে শাক্তে বাম্বীজপূর্ব্বকৈঃ। ক্ষালনাদিকর্মগত্যা স্পর্ণোহপি স্থাদমন্ত্রক ইতি। প্রদেশিনী তর্জনীত্যমরঃ। অত্রামন্ত্রকঃ স্পর্শঃ সূচিতঃ।

যভু এতদ্বচনস্থ-স্বধান্তৈরিতি পদং তৎ শৈবানাং সন্ধ্যা-

ক্লাচমনে জ্রেয়্। স্বধান্তৈরাত্মতত্ত্বান্তিরাত্মবিভাশিবাত্মকম্। জ্নমান্তত্ত্ব্রেং বিভাৎ হাং হীং হুং শম্বরাঃ ক্রমাদিতি রাঘবভট্টয়ত-সদ্ধ্যাপ্রকরণীয়-শৈবাগমবচনৈকযোগাৎ।
যদপি শাক্তে বাখাজপূর্ককৈরিতি শাক্তে আত্মবিভাদীনাং
বাগ্ভবপূর্ককত্বং তৎ স্ত্রীশূদ্রাভিপ্রায়েণ জ্ঞাতব্যম্। তয়োঃ
প্রণবোচ্চারণেহনধিকারাৎ। এতদ্বননাঙ্গুলিনিয়মোহপি
প্রদর্শিতঃ॥ এতদেব সামান্তেন নিত্যাচমনং নিরূপিত্ম।

অধুনা নিত্যকাম্যভেদেন যাসাং যাসাং দেবতানামাচমনে বিশেষোহস্তি তদপি প্রদর্শ্যতে॥ তত্ত্রাদৌ বৈঞ্চবাচমনং গৌতমীয়ে সপ্তমাধ্যায়ে—কেশবাদ্যৈস্ত্রিভিঃ পীত্বা দ্বাভ্যাং প্রকালয়েৎ করো। ঘাভ্যামোষ্ঠো চ সংমৃজ্যাৎ ঘাভ্যাং মূজ্যান্মুখং ততঃ। একেন হস্তং প্রক্ষাল্য পাদাবপি তথৈ-কতঃ। সংপ্রোক্ষ্যেকেন মূর্দ্ধানং ততঃ সঙ্কর্ষণাদিভিঃ। আস্থনাসাক্ষিকর্ণাংশ্চ নাভ্যুরস্কং ভূজো ক্রমাৎ। স্পুশে-নেবং ভবেদাচমনস্ক বৈষ্ণবাৰয়ে। এবমাচমনং কৃত্বা সাক্ষা-মারায়ণো ভবেৎ।। কেশবাদ্যাঃ পুরা প্রোক্তা বক্ষ্যে সঙ্ক-র্ষাণাদিকান্—সঙ্কর্ষণো বাস্থদেবঃ প্রত্যুত্ম শ্চানিরুদ্ধকঃ। পুরুষোত্তমাধোক্ষজ-নূসিংহাশ্চ তথাচ্যুতঃ। জনাৰ্দ্দনোপেন্দ্ৰ-হরিবিফ্রবো দ্বাদশেরিতা ইতি॥ কেশবাদ্যাস্ত কেশব-নারায়ণ-মাধব- গোবিন্দ- বিফু-মধুসূদন- ত্রিবিক্রম- বামন-শ্রীধর-ষ্ণীকেশ-পদ্মনাভ-দামোদরা ইতি বৈষ্ণবকুলে ইত্যর্থঃ। ইদস্ত কাম্যমৃ এবমাচমনং ক্বত্বা সাক্ষারায়ণো ভবেদিতি ফলশ্রুতেঃ।

শৈবাচমনং যথা শিবাচ্চ নচক্রিকাগ্গত-শৈবাগমে--প্রক্ষাল্য

হস্তাবাচম্য মূলমন্ত্রেণ মন্ত্রবিদিতি। যতু সংবীক্ষ্য ত্রিঃ পিবেদ্রু ব্রাক্ষ্যতীর্থেন শম্বরৈঃ। স্বধাইন্তরাত্মতন্ত্রাক্ষ্যতিবাত্মক্ষ্য ক্রমান্তিত্র ত্রমং বিদ্যাৎ হাং হীং হুং শম্বরাঃ ক্রমাদিতি রাঘবভট্টপ্বত-শৈবাগমবচনং তৎ সন্ধ্যাঙ্গাচমনে বেদিতব্যং তৎপ্রকরণীয়ত্বাৎ।

শ্রীবিদ্যায়ান্ত ভৈরবতন্ত্রে—বালাবীজৈস্ত্রিভিঃ পীত্বা দ্বাভ্যামোষ্ঠো প্রমার্জয়েৎ। তুর্গাদ্বাভ্যাং দ্বিরুম্জ্য মায়য়া ক্ষালয়েৎ করম্। শ্রীমায়া বাক্ পরা ক'মত্রিপুটা যোনি-বর্ত্ত লৈঃ। কামকলাঙ্কুশাভ্যাঞ্চ মুখনাসাহ্ষিকর্ণকান্। নাভ্যু-রক্ষং ভুজো স্পৃষ্ট্বাপ্যধিকারী জপাদিধিতি॥ বালাবীজৈরিতি ঐং ক্লীং সোঁঃ। তত্তকং রুদ্রজামলে—প্রথমং বাগ্ভবং দেবি কামরাজং দিতীয়কম্। ভৃতীয়ং শক্তিবীজন্ত শিবযুক্তং সদা ভবেদিতি॥ তুর্গাদ্বাভ্যামিতি দুঁ দুঁ ইত্যেতাভ্যামিত্যর্থঃ। তথাচ বর্ণ ভৈরবে—থাস্তবীজং সমুদ্ধৃত্য বামকর্ণবিভূষিতম্। চন্দ্রথণ্ডসমাযুক্তং তুর্গাবীজমুদাহতমিতি॥ পরা ব্রীঁবীজম্। হ্রীঁলজ্জা গিরিজা শক্তি হুর্লেখা চ হরপ্রিয়া। মহামায়া পরা মায়া শিবধর্মার্দ্ধহারিণীতি মন্ত্রকোষাৎ।। ত্রিপুটেতি হ্রী জী ক্রী ইত্যর্থঃ। তথাচ তন্ত্রসারে—জ্রীমায়া মাদনৈঃ প্রোক্তা মন্ত্রো বীজত্রয়াত্মক ইতি॥ যোনিরেকারঃ তথাচ কেৎকারিণীয়প্রথমপটলে—সকুলো ভগ একারইতি যোনি-রিতি॥ বর্ত্ত্রলং বিন্দু স্তদেবার্দ্ধচন্দ্রঃ। তন্তুক্তং বর্ণ ভৈরবে— বিন্দুৰ্দ্বতী চ কান্তাখ্যো নাদবিন্দুরুদাহত ইতি॥ কামকলা ঈঁকারঃ তত্তক্তং মন্ত্রদীপিকাধ্বতসময়াতন্ত্রে—বিদ্যায়া মাদ-নাখ্যায়া আদিকূটস্থ মধ্যমম্। দেবী কামকলেত্যুক্তং তদেব

পরমাক্ষরমিতি। মাদনাখ্যায়াঃ কামরাজবিভায়া আদিক্টভেতি বাগ্ভববীজস্ম তৃতীয়ং বীজমিত্যর্থঃ॥ অঙ্কুশঃ কোঁ।
তত্ত্তং বর্ণকোষে। কোঁ।কারমঙ্কুশঃ শূলীতি॥ অথৈতৎপ্রয়োগঃ—এঁ ব্রীঁ সোঁ।ইতি বীজত্রয়েণ ত্রিজ্বলং পীত্বা দুঁ দুঁ
ইত্যোষ্ঠো প্রমার্জ্য ব্রীঁ ইতি করো প্রকালয়েৎ। প্রীঁ ইতি
মুখে ব্রীঁ ইতি দক্ষিণনিসি ঐঁ ইতি বামনিস ব্রীঁ ইতি
দক্ষিণচক্ষুষি ক্রীঁ ইতি বামচক্ষুষি, প্রীঁ ইতি দক্ষকর্পে
ব্রী ইতি বামকর্ণে ক্রীঁ ইতি নাভো এং ইতি বক্ষসি ঈঁ
ইতি দক্ষিণভুজে কোঁ।ইতি বামভুজে ইতি।

ছিন্নস্তায়াং তন্ত্রসারে—লক্ষ্মী-মায়া-কৃষ্ঠ-বীজৈব্রিভিঃ
পীয়ায়ৄ সাধকঃ। বাগ্ভবেনোষ্ঠো সংমৃজ্য মায়াভ্যাঞ্চ
দিরুন্মজেৎ। কুর্চেন ফালয়েৎ পাণী এভির্ম ক্রৈশ্চ বিভাসেৎ।
শ্রী-মায়া-কৃচ্চ-বাক্-কাম-ত্রিপুটা-ভগ-বর্তু লৈঃ। কামকলাস্কুশাভ্যাঞ্চ বক্তুনাসাফিশ্রোত্রয়োঃ। নাভিহ্নমস্তকঞ্চাংসৌ
স্পৃষ্ট্বা শস্তু ভবেৎ ক্ষণাৎ। আচম্যৈবং ছিন্নমস্তাং বৎসরাজ্ঞাং
প্রপশ্যতীতি। ত্রিপুটাভগবর্ত্ব লৈঃ কামকলাঙ্কুশাভ্যাঞ্চেতি
প্রবিদর্থো দ্রেইব্যঃ। ইদন্ত কাম্যং ফলশ্রুন্তঃ।

কালীবিদ্যায়াং কালীতন্ত্রে—কালিকাভিন্ত্রিভিঃ পীম্বা কাল্যাদিভিরুপস্পৃশেৎ। দ্বাভ্যামোষ্ঠে দ্বিরুন্মৃজ্য একেন কালয়েৎ করম্। মুখ-আণেক্ষণ-শ্রোত্র-নাভ্যুরস্কং ভূজে স্পশেৎ। আচম্যৈবং ভবেৎ কালী বৎসারাত্তাং প্রপশ্যতীতি॥ কালিকাভিরিতি কালীবীজত্রয়েণেত্যর্থঃ। কাল্যাদিভিরিতি কালী কপালিনীত্যাদি পঞ্চদশকালীভিরিত্যর্থঃ। উরস্কমিতি উরঃ হাদয়ং কং শিরঃ। মুখনীর্বজ্বনেষ্ক্রমিতি মেদিনীকরঃ। এতদেব কাম্যং ফলশ্রুতেঃ। নিত্যমাচমনং কুর্য্যাদ্বহ্নি-জায়ান্তমায়য়েতি শ্যামাপ্রদীপধৃত-ফেৎকারিণ্যক্তত্বাচ্চ।

অত্র যদ্যপি কেবলন্থী স্বাহেত্যনেন নিত্যাচমনমায়াতি তথাপি তৎ প্রণবাদ্যমেব কার্য্যম্ ও মায়া বহ্লিজায়। চ তথা চাচমনে মনুরিতি নিগমকল্পলতাদ্বাদশপটলবচনেন বেদাদ্যঞ্চ তথা মায়া স্বাহেত্যাচমনং তত ইতি কুমারীতন্ত্রদ্বিতীয়পটলবচনেন চৈকবাক্যস্থাৎ। এতন্মন্ত্রন্থিক্ষচারণেন ত্রিধা জ্ঞানং কার্য্যং সর্কাত্রেবংনিয়মাৎ।

তারাচমনমাহ নিগমকল্পলতায়াং দ্বাদ্ধনেটলৈ—তারাভেদ-ব্রিভিঃ পীত্ব। মায়য়া কালয়েৎ করম্। স্ত্রাঁ ফুঁ ওষ্ঠে দ্বিরুমাজ্য ফট্কারেঃ কালয়েৎ করম্। আস্তে নসি দুশো শ্রেতি নাভিবকঃশিরোভুজান্। বৈরোচনাদিভিঃ স্পৃষ্ট্য সর্ব্বপাপেঃ প্রমূচ্যতে। আচম্য ভৈরবো ভুত্বা বৎসরাত্তাং প্রপশ্যতীতি ৷ তারাভেদৈরিতি উগ্রতারৈকজটা-নীলসর-স্বতীভেদৈরিত্যর্থঃ। বৈরোচনাদয়স্ত তত্ত্রৈব—প্রণবং পূর্ব্ব মুদ্ধত্য বৈরোচনপদং ততঃ। চতুর্থান্তেন চাভাষ্য ত্যাগা-ত্মকপদং শিব। মুথে হস্তং স্পু শেদেবং প্রকারং সর্ববর্ষাস্থ। শ্বাপাণ্ডরপদ্মনাভ্নামকমামকপাণ্ডবাঃ ৷ অদিতপদ্মান্তক বিদ্না-ন্তক নরান্তকা ইতি ত্যাগাত্মকপর্দায়তি। অত্র যদ্যপি নমঃ স্বাহা স্বধা চৈব বৌষড়িতি যথাক্রমাদিতি তন্ত্রকৌমুদীধ্যতা ত্তরতন্ত্রবচনেন ত্যাগাত্মকবিবিধশব্দাঃ সন্তি তথাপি প্রথমোপ-স্থিতত্বান্নমঃশব্দএব গৃহতে॥ এতদাচমনং কাম্যং ফলোপ-ধায়কত্বাৎ। অস্থা নিত্যাচমনমাহ তারারহস্মর্ত্তিকারধ্ত-মৎস্তদুক্তে—তারং লজ্জা চাস্ত্রবীজং স্বাহা আচমনে মনুরিতি। অশ্নপূর্ণাচমনমাহ। শাস্তবীতন্ত্রে অফমপটলে। আত্মবিদ্যা শিবৈস্তত্ত্ব্বাচামেৎ কুলসাধকঃ। মায়াবীজং মুখে দত্ত্বা
বহ্নিকান্তাং তথা পরে। দৈবেন ক্রমযোগেন শেষমন্তৎ
সমাপয়েদিতি॥ অত্র কুলসাধক ইতি পদোপাদানাৎ কৌলপরমিত্যপি বক্তব্বং শরুমঃ॥

ইতি সতত্যহামহীশচক্রচুড়ামণিচচ্চিত্ররণনলিন শ্রীমদ্গোপী-মোহনপদেপল্লানন্দমকরন্দমন্দোহানন্দিত্যনোমর্কর-শ্রীহরকুমার দেবশন্ম-স্বীলচিস্তার্মণমর্বচিস্তোদক-হরতত্ত্বদীধিতৌ সপ্তমকলপ্রেকশেঃ।

অথ সামাতার্ঘ্য। তত্র শাক্তানন্দতরঙ্গিণ্যাম্—অর্য্যং বির পুরস্কৃত্য তৎক্রমং কথাতেহধুনেতি। অন্ধদকল্পে ষষ্ঠ-পটলেচ—ততাে দ্বারস্ত পুরতঃ সামাতার্ঘ্যং প্রকল্পয়েদিতি। তথা কমলাতল্রেহউমপটলে—পুপাঞ্জলিনা দ্বারে চ পূজ্যেদ্বারদেবতাম্। ততন্ত সাধকঃ শ্রীমান্ প্রবিশেদ্যাগমগুপ-মিত্যাদি নানাতন্ত্রীয়বচনৈঃ পূজাগৃহন্বারি সামাতার্ঘ্যস্থাপনং দ্বারদেবতাপূজানন্তরগৃহপ্রবেশনঞ্চোপপাদিতং সম্প্রদায়ব্যবহারে তরিপরাতনিতি বিরোধঃ। নচ গৃহদ্বারি সামাতার্ঘ্যস্থাপনং দ্বারদেবতাপূজ্যনঞ্চ মহাপুজাদাবেবেতি বাচ্যম্ আচম্য দ্বারদেশে তু সামাতার্ঘ্যং বিবার চেতি পিচ্ছিলাতন্ত্রদ্বাদশ্পটলবচনেন সংক্ষেপতাে নিত্যপূজাসূত্রেহপি দ্বারদেশে সামাতার্ঘ্যস্থাপনবিধানাৎ। নচ নিক্তব্যুব্যানি যথাবিধিবিত্যভূব্ বির্ত্তমগুপপরাণীতি বাচ্যং তৎপরত্বে মানাভাবাং।

অত্যোচ্যতে যদ্যপ্যেতৈর্ব্বচনেঃ পূজাগৃহদ্বারি সামান্যার্ঘ্য-স্থাপন-দারদেবতাপূজান্তে গৃহপ্রবেশোহভিহিত স্তথাপীতি-কর্ত্তব্যতাবাহুল্যভিয়া সৎসাম্প্রদায়িকা গৃহান্তঃ সামান্যার্ঘ্যা-দিকমাচরন্তি তদকরণে যৎ কিঞ্চিবিগুণ্যেহিপি পূজা প্রাসাঙ্গক-স্বেউদ্বেতানামোচ্চারণেন তদ্বোধনাশাবগম ইতি।

তৎপ্রকারমাহ। রাঘবভট্টগ্নত-মন্ত্রমূক্তাবল্যাম্। পাত্রমন্ত্রেণ সংশোধ্য হ্রনান্ত্রেণাভিপরয়েৎ। তীর্থমাবাহ্য গন্ধাদীমিক্ষিপেৎ প্রণবেন তু। ধেনুমুদ্রাং দর্শয়েচ্চ সাফাত্যার্ঘ্য উদাহৃত-ইতি। অত্র প্রণবশব্দেন যথায়থং পঞ্চপ্রণবানামপি এহণং **জে**য়ম্। তত্র প্রকারঃ—সাধারপাত্রং দারাভিমুখং সংস্থাপ্য ওঁ হ্রঃ দ্বারার্ঘ্যং সাধয়ামীতি কৃত্বা শ্লোকোক্তক্রমোহনুসন্ধেয় ইতি ভট্টলিখিতপ্রয়োগঃ॥ তথা মন্ত্রমহোদধাবেকবিংশতি-তরঙ্গে—তারং খং বহ্নিসর্গাঢ্যং দারার্ঘ্যং সাধয়ামি **চ**। উক্ত্যাস্ত্রমন্ত্রনা পাত্রং কালয়েৎ পুরয়েদ্ধূদা। তীর্থান্যাবাহ গন্ধাদীংস্তত্রাস্থেমিয়মাদিনা। ধেকুমুদ্রাং দর্শয়িত্বা মূলেনাপ্যভি-মন্ত্রয়েৎ। সামাত্যার্ঘ্যবিধিঃ প্রোক্ত ইত্যাদি॥ গৌতমীয়ে অন্টমাধ্যায়ে চ—পূৰ্ব্বদারি ততো গত্বা সামাত্যাৰ্ঘ্যং বিশো-ধয়েৎ। অস্ত্রেণ শব্বং প্রকাল্য কৃষ্ণমন্ত্রেণ পূরয়েৎ। মন্ত্রয়েৎ প্রণবেনৈব সামান্যার্ঘ্যমিদং স্মৃতমিতি॥ সম্মোহনতত্ত্বে তৃতীয়-পটলেহপি—অস্ত্রেণ পাত্রং সংশোধ্য হৃন্মন্ত্রেণ প্রপূর্য়েৎ। নিক্ষিপেত্তীর্থমাবাহ্য গন্ধাদীন্ প্রণবেন তু। দর্শয়েদ্বেস্থ-মুদ্রাঞ্চ সামান্যার্ঘ্যমিদং প্রিয়ে ইতি॥ এবং শাস্তবীতত্ত্রে অষ্টমপটলে—অন্ত্রেণ পাত্রং প্রকাল্য হন্মন্ত্রেণ প্রপূরয়েৎ। নিক্ষিপেত্তীর্থমাবাহ্য গন্ধাদীন্ প্রণবেন তু। সাধারপাত্রতোয়ে

বহু যুক্ শশিম গুলম্। পূজয়িতা তুদশধা মায়াবীজেন মন্ত্রয়েৎ। দর্শয়েকেকুমুদ্রাং বৈ সামান্যার্য্যমিদং স্মৃতমিতি॥ কালীকুলায়ততন্ত্ৰে দ্বিতীয়পটলে—স্ববামে মণ্ডলং কুত্বা ত্রিকোণং তত্র পূজয়েং। মণ্ডলায় নমইতি তত্র পাত্রঞ্চ বিশ্যসেৎ। সাধারং তত্র বিশুস্থ অস্ত্রমন্ত্রেণ ক্ষালিতম্। জলেন পূর্য়িত্বা চ হাদার্ঘ্যায় নমস্ততঃ। ধেনুমুদ্রামৃতীকৃত্য প্রণবং দশধা জপেৎ। সামান্যার্ঘ্যমিদং প্রোক্তং তজ্জলেন প্রপূজয়েদিতি॥ কাত্যায়নীতন্ত্রে চতুঃসপ্ততিপটলেহপি— ত্রিকোণমণ্ডলং কুত্বাধারশক্তিং প্রপূজয়েৎ। তত্রাধারং সমা-স্থায় মায়য়া পূরয়েজ্জলৈ:। তীর্থান্যাবাহ্থ তত্ত্রৈব গন্ধপু**ল্পা**-দিকং স্থাসেৎ। ওমিতি শ্রেষ্ঠমন্ত্রেণ মন্ত্রয়েদউধা চ তৎ। দৰ্শয়েদ্ধেনুমুদ্ৰাং বৈ সামান্তাৰ্য্যমিদং স্মৃতমিতি॥ তন্ত্ৰ-সারে চ—ত্রিকোণর্তভূবিদ্বমণ্ডলং রচয়েত্ততঃ। আধার-শক্তিং সংপূজ্য তত্রাধারং বিনিক্ষেপৎ। অন্ত্রেণ পাত্রং সংশোধ্য হান্মন্ত্রেণ প্রপূরয়েৎ। নিক্ষিপেত্তীর্থমাবাছ গন্ধা-দীন্ প্রণবেন তু। দর্শব্যেদ্ধেনুমুদ্রাং বৈ সামান্তার্ঘ্যমিদং স্মৃতম্॥ মন্ত্রয়েৎ প্রণবেনৈব সামান্তার্ঘ্যমিদং স্মৃতমিতি গৌতমীয়বচনাদফধা প্রণবজপঃ বিশেষার্ঘ্যে তথা দর্শনাৎ। শক্ত্যাদৌ তু দশধা তদর্য্যে তথাদর্শনাদিতি॥

যদ্যপি নিরুক্তসকলবচনানাং প্রায়শঃ পরস্পরং কিঞ্চিৎকিঞ্চিদ্বৈষম্যং দৃশ্যতে তথাপি নিখিলবচনৈকবাক্যতাজনিতসারার্থমণ্ডিত -মহামহোপাধ্যায় - তন্ত্রসারকার -মতমেবাম্মাভিরাদরণীয়ম্॥ নমু ভবদাদৃতবচনে ত্রিকোণবৃত্তভূবিম্বলিখনামুমতত্বেন কালীকুলামূত-কাত্যায়নীতন্ত্রয়োর্বচনে কেবল-

ত্রিকোণমণ্ডলাভিধানস্থ কা গতিরিতি চেন্দৈবম্। অধি-কন্তু প্রবিষ্টং ন তু তদ্ধানিরিতি যুক্তা ত্রিকোণমগুলক তদন্তর্গতত্ত্বনাবিরোধাৎ ॥ নচ ভবন্মতে সামান্ততো নমঃ ইতি মন্ত্রেণ জলপূরণস্থ কর্ত্তব্যতয়া কৃষ্ণমন্ত্রেণেতি শ্রীক্লয়-পূজায়াং গৌতমোক্তবিশেষবচনবলাত্ত্র তেনৈব কর্ত্তব্যমিতি বাচ্যম্। শ্রীকৃঞ্পূজাপ্রতিপাদক-সম্মোহনতন্ত্রবচনে নমঃ-শব্দেন জলপুর্ণদর্শনেন স্থতরামিচ্ছাবৈকল্পিকসিদ্ধান্তস্ত কর্ত্তব্যত্যাত্রাপি দোষলেশাভাবাৎ।। নচ মায়য়া পূর্যে-জ্জলৈরিতি কাত্যায়নীতন্ত্রবচনস্থ কা গতিরিতি বাচ্যম্। শক্তিদেবতামাত্রপূজাপ্রতিপাদকেযু কালীকুলামৃতাদিবচনে নমঃশব্দেন তৎকর্ত্ব্যহদর্শনাদিচ্ছাবিকল্পস্থ স্বীকর্ত্ব্যদেন বিরোধবিরহাৎ ॥ নচ ভবন্মতে প্রণবজপস্থ কর্ত্তব্যতয় মূলেনাপ্যভিমন্ত্রয়েদিতি মন্ত্রমহোদধিবচনস্থ কা মীমাংদেতি বাচ্যম। নিরুক্তসকলবচনেযু প্রণবেন তৎকর্ত্তব্যতয়া ওমি-ত্যেকাক্ষরং ব্রহ্মেতি বচনেন ওঁকারস্থ ব্রহ্মবীজ্ঞ্বাৎ পঞ্ দেবতানাং ব্রহ্মস্বরূপত্বেন তজ্জপেনৈব সর্ববাসাং মূলমন্ত্র-জপস্থ সিদ্ধত্বাৎ ওঁকারো বৈ সর্ববা বাগিতি শ্রুতেশ্চ।

যত্ত্ব প্রণবশব্দেন যথাবথং পঞ্চপ্রণবাণামপি গ্রহণনিতি প্রমাণশূলরাঘবভট্টলিখনং তচ্চিন্ত্যম্। ওমিতি শ্রেষ্ঠনত্ত্রেণ মন্ত্রমেন্ট্রপা চ তদিতি পূর্বের্বাক্তকাত্যায়নীতন্ত্রবচনে ওঁকারজপ্রস্থা স্পেন্ট্রবিধানাং॥ নচ সাধারপাত্রতোয়েষু বহুর্বেশমিগুলমিত্যাদি শাস্ত্রবীতন্ত্রীয়োক্ত্যা তত্তন্মগুলানাং পূজাবিধেয়ত্যা তত্তহিতভবদ্যবস্থাবলম্বনে কর্মণোহসম্প্রিরিতি বাচ্যম্। এতদর্যে বহ্যবশাশিমগুলপূজনস্থা সংসাম্প্রায়িকৈ

ত্রিকোণলিখনে বিশেষো যথা ব্রহ্মানন্দগিরিক্বত-তারারহস্তপ্ত্ত-রুদ্রজামলে—যত্র যত্র মহাবিচ্চা শক্তিবিচ্চা উপাসিতা। তত্র তত্র ত্রিকোণঞ্চ অধোমুখমুদারিতম্। দেবত্রিকোণে কর্তব্য উদ্ধিং তৎ পরিকাভিত্যিতি।

একদারে দারচতুষ্টয়কল্পনং গৃহভিল্পে পূজায়াং মনসা দারকল্পনঞ্চাই। গন্ধর্কতন্ত্রে—অশক্তো দারমেকস্থিন কল্পয়েং দাশচতুষ্টয়ম্ । অভাবে মনসা কল্প দারাণ্যতং সমাচরেদিতি। কল্পয়েং পূজয়েদিত্যপং। অভাবে দারচতৃষ্টয়াভাবে ইতি। এতং সমাচরেদিতি দারদেবতাপূজনং সমাচরেদিত্যপং।

দারপূজাক্রমমাহ নিগমকল্পলতায়াং চতুর্দশপটলে—
পূর্বদারে চ দক্ষে চ পশ্চিমে চ তথােত্রে। পূজ্য়েৎ
পরয়া ভক্তা ততাে যন্ত্রান্তরে যজেদিতি। তথা রাঘবভট্টঃ
তয়ােরিতি বিদ্মক্ষেত্রয়াঃ পার্মগতে গঙ্গাযমুনে ইত্যনেন
পূর্বদারাদিপূজা সূচিতা সৈব ক্রমাদিত্যনেনাথে উক্তা ইতি।
তথা শিবার্চনচন্দ্রিকাধ্বতসারসংগ্রহে—অধশ্চ দেহলী নিউন্
দারপালান্ সমচ্চ য়েং। পশ্চিমদারমারভ্য দারপালা অপি
ক্রমাদিতি। গােবিন্দভট্টােহপি—দারং পশ্চিমং প্রবেশাে-

২প্যনেনৈব পূর্ব্বদক্ষিণপশ্চিমোত্তরক্রমে**ণ** প্রাগবলোকন-মিতি॥ শাক্তানন্দতরঙ্গিণীধৃতবিশ্বসারতন্ত্রে—উত্তরাদিক্রমে-বৈব দারপালান্ সমচ্চ য়েদিতি॥ শক্তিসঙ্গমতস্ত্রেতু—দক্ষিণ-দারমাসাদ্য পূজয়েদ্ধারদেবতা ইতি নানাতন্ত্রবচনৈশ্চতুর্দিকু প্রথমদারপূজারস্তো যৎ দৃশ্যতে তৎ প্রধানদারাভিপ্রায়েণে-ত্যবিরোধঃ। তাদৃশ্যাগমগুপীয়-চতুদ্বিক্ত স্বস্থপ্রাধাস্থাৎ প্রথমলব্ধবারাদেব পূজয়েদিতি। দারদেবতাপূজা তু গণে-শাদি-দারপালানাং সর্বসাধারণতয়াভিহিতক্রেনাদৌ তান্ সংপৃক্য স্বস্বকল্পোক্তবিশেষোহপি পৃজনীয় । ছারমস্ত্রাস্থনা প্রোক্ষ্য উদ্ধে বিছেশমচ্চ য়েং। তদক্ষিণে মহালক্ষ্মীং বামে চৈব সরস্বতীম। দারশ্রিয়ঞ্ক তন্মধ্যে শাখ্যোদিক্ষিণাম্যয়োঃ। গণপং ক্ষেত্ৰপালঞ্চ শৃন্ধং পদ্মনিধীন ক্ৰমাৎ। মায়াশক্তিঞ্চ চিচ্ছক্তিং গঙ্গাঞ্চ যমুনাং তথা। ধাতারঞ্চ বিধাতারমূর্দ্ধাদি-ক্রমতো যজেৎ। অধশ্চ দেহলীমিষ্ট্রা ছারপালো সমচ্চ য়ে-দিতি শিবাচ্চ নচক্রিকাগ্নতসারসংগ্রহবচনেন বিম্নেশাদীনাং পজানন্তরং পুনর্ঘারপালপূজাবিধানাৎ।

তাসাং মন্ত্রো যথা মেরুতন্ত্রে পঞ্চমপ্রকাশে—নাম্নশ্চাদ্যক্ষরং বিন্দুযুক্তং নাম চ ঙেহস্তকম্। সমুচ্চার্য্য হদস্তঞ্চ দেবানেতান্ প্রপূজ্যেদিতি। দেবান্ দারপালান্ তংপ্রকরণাক্তত্বাৎ প্রণবাদিকানপি বক্ষ্যমাণরাঘবভট্টপ্নত-ডামরবচনৈকযোগাৎ। তথাচ রাঘবভট্পন্ত-ডামরে—ওঁকারং
বিন্দুমধ্যস্থং নামধ্য়োদ্যমক্ষরম্। দেবতানাং স্ববীজ্তত্তৎ
পঞ্জায়ামৃদ্ধিসিদ্ধিনিতি। ইতি তু সাধারণম্। তত্র বিশেষস্তারাবিদ্যায়াং নিগমকঙ্গলতায়াঞ্চুর্দশপটলে—তে সর্কে

শ্রুবদীর্ঘাট্যাঃ শক্তিবীজপুরঃসরা ইতি। গ্রুবং প্রণবঃ দীর্ঘঃ আকারঃ শক্তিবীজং হ্রাঁকারঃ, অস্ত ব্যাখ্যানে যথাতথাস্ত কিন্তু ওঁ হ্রাঁ গাং গণপতয়ে নম ইত্যাদি ক্রমেণ পূজনমিতি প্রামাণিকনিবন্ধকৃতঃ। এবমন্যদেবতানামপি বিশেষোহকুসন্ধ্যেঃ।

পূজা স্বাবাহনং বিনৈব কর্ত্তব্যা গাং গঙ্গাং যাং যমুনাং শ্রিপ লক্ষ্মী বাক্সরস্বতীম্। চতুদারি স্থিতা এতা গন্ধপুলৈঃ সমর্চ্চরেদিতি শ্রামাসপর্য্যাপ্পত-কুমারীকল্পবচনোসাং তত্তদারি স্থিতিদর্শনাৎ। স্থিতো দারে দারে কচিরমণিমাল্যান্দরগরো গণেশক্ষেত্রেশো সহপরিকরো যত্ত্য মহিতাবিত্যাদি ত্রিপুরাসারসমূচ্চয়প্রথমপটলবচনাচ্চ। এব এব সাম্প্রদায়িকঃ পক্ষঃ। যত্ত্ব দ্বার্য্যাবাহ্য যজেত্ত্র সর্ব্ববিশ্লোপশান্তরে। নন্দঃ স্থনন্দহণ্ডশ্চ প্রচণ্ডো বল এব চেত্যাদি গোত্র্মায়াক্টমাধ্যায়ন্বচনন দারদেবতানামাবাহ্নপুরঃসরপূজ। দৃশ্যতে তদ্দীক্ষা-প্রকরণেহভিহ্তিত্ত্য়া তৎপরমবধ্য়েম্।

পূজাগৃহপ্রবেশমাহ বিশ্বসারতন্ত্রে দিতীয়পটলে—গৃহং প্রবিশ্য বিধিনা তত্তবিদ্ধান্ বিনাশয়েদিতি। গৃহং যাগমগুপং বিধিনেতি স্ত্রাপুংদেবতোপাসকভেদেন দক্ষিণবাসপাদপুরঃ-সারস্কত্র প্রবিশ্যেত্যর্থঃ। তত্তুক্তং সম্মোহনতন্ত্রে তৃতীয়-পটলে—স্বাস্থং সঙ্কোচয়ন্নন্তঃ প্রবিশেদক্ষিণাজ্যি ণেতি। তথা শিবার্চ্চনচন্দ্রকায়াং—দক্ষিণেনাথ পাদেন প্রবিশেৎ যাগমগুপ-মিতি। গৌতমীয়েহক্রমাধ্যায়েহপি—ভূতসংঘান্ সমুৎসার্ঘ্য দক্ষপাদপুরঃসরঃ। ধ্যায়ন্ বিষ্ণুং গৃহাভ্যন্তঃ প্রবিশেন্নত-কর্নন ইতি। শাক্তস্ত বামপাদেনেতি। তথাচ তন্ত্রান্তরে—

কিঞ্চিৎ স্পূশন্ বামশাখাং বামপাদপুরঃসরম্। স্মরন্ দেব্যাঃ পদান্ডোজং মণ্ডপং প্রবিশেৎ স্থবীরিতি। শিবার্চ্চনচন্দ্রিকা-ধৃতত্ত্বিপুরার্ণবে চ—বামপাদং পুরস্কৃত্য প্রবিশেদ্যাগমণ্ডপ-মিতি। স্ফুটমূক্তং মেরুতন্ত্রে পঞ্চমপ্রকাশে—দক্ষপাদং পুরস্কৃত্য প্রবিশেদ্বেমন্দিরম্। শাক্তস্ত বামপাদমিতি।

যত্তু তন্ত্রসারকারেণ দক্ষপাদপুরঃসরং বামশাখাং স্পৃশন্
দক্ষিণাঙ্গং সঙ্কোচয়মগুপান্তঃ প্রবিশ্যেতি সামান্যেনোক্তং
তদেতদ্বচনমনালোচ্যৈর কেবলপুংদেরতাভিপ্রায়েণ বেতি।
শাস্তবীতন্ত্রেহ্ফুমপটলে—ততো দিব্যাংশ্চান্তরীক্ষান্ ভৌমান্
বিল্লান্নিবারয়েৎ। দিব্যদৃষ্ট্যা চান্ত্রতোয়েঃ পার্ফিঘাতত্রয়েণ
চেতি। তথা সম্মোহনতন্ত্রে তৃতীয়পটলে—গৃহং প্রবিশ্য
কুর্য্যাচ্চ পূজাদ্রব্যনিরীক্ষণম্। অনন্তরং দেশিকেন্দ্রো দিব্যদৃষ্ট্যাবলোকনাং। দিব্যান্থৎসারয়েদিল্লান্ অন্ত্রান্তিশ্চান্তর্ন্ত্রিভির্ত্রেশিনিতি বিল্লান্ধিবারয়েদিতি।

দিব্যদৃষ্টোতি সক্রোধানিমেষতির্য্যগৃদৃষ্টিন্দিব্যদৃষ্টিস্তয়া।
তত্ত্তং গন্ধর্বতন্ত্রে ২ফমপটলে—আত্মনঃ ক্রোধদৃষ্ট্যা তু
নিরীক্ষ্য স্থমনা ভবেদিতি। তথা বিশ্বসারে দিতীয়পটলে—
অনিমেষচক্ষ্বা দৃষ্টিন্দিব্যদৃষ্টিঃ প্রকীভিতেতি। মেরুতন্ত্রে
পঞ্চমপ্রকাশে চ—তির্যগৃদৃষ্ট্যাবলোকেন দিব্যান্ বিশ্বান্
নিবারয়েদিতি।

অন্ত্রতোরৈরিতি অস্ত্রায় ফড়িতি মন্ত্রিতজ্ব লৈরিত্যর্থঃ।
তথাচ বিশ্বসারে দিতীয় পটলে—অস্ত্রায় ফড়িতি মন্ত্রেণ
বারয়েচ্চান্তরীক্ষণানিতি।

পার্ফিঘাতত্রয়েণেতি কালীকুলামুততন্ত্রে দিতীয়পটলে।

বামপাঞ্চিষাতত্রয়ং দন্ত্বা ভৌমান্নিবারয়েদিতি। তথা রাঘব-ভট্টপ্রতসোমশস্ত্রো—দক্ষপাঞ্চিত্রিভির্যাতৈত্রু মিষ্ঠানিতি। এত-বচনদ্বয়ে যদামদক্ষিণপাঞ্চিষাতো দৃশ্যতে তৎ স্ত্রীপুংদেবতা-ভেদেন বেদিতব্যঃ গৃহপ্রবেশে তদ্ভেদ্য্য নিরূপিতত্বাৎ। শারদায়াং—ততোহক্ষতান্ সমাদায় দক্ষে নারাচমুদ্রয়া। প্রক্ষিপেদস্ত্রমস্ত্রেণ গৃহান্তবিদ্মশান্তয়ে। অপসর্পস্ত তে ভূতা ইতি মস্ত্রেণ চাদরাদিতি।

নকু অপক্রামস্ত ভূতানীত্যেতমন্ত্রদয়ং গুরুঃ। পাঠিত্বাক্রতিনার্থপুষ্পাণি বিকিরেভতঃ। অন্ত্রমন্ত্রেণ মন্ত্রজ্ঞান মণ্ডপাভ্যন্তরে বুধ ইতি শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাধুত-নারায়ণীয়বচনে গুরুপদশ্রবণাৎ দীক্ষাঙ্গপূজায়ামেব ভূতোৎসারণং প্রতীয়তে শারদাতিলকোক্তবচনমপি তৎপ্রকরণপ্রতিপাদকঞ্চ। তম সম্মোহননীলতন্ত্রয়োদ্দীক্ষাপ্রসঙ্গাভাবেহপি তৎকর্মবিধানাৎ। যথা সম্মোহনতন্ত্রে ভূতীয়পটলে—বিকিরান্ বিকিরেভত্র সপ্তাক্রান্থ শারানথ। লাজচন্দনসিদ্ধার্থভত্মাদূর্ব্বাকুশাক্ষতাঃ। বিকিরা ইতি সন্দিষ্টাঃ সর্ব্বং বিদ্বৈকনাশকাঃ। অপসর্পত্ত তে ভূতা যে ভূতা দিয়্বিদিক্স্থিতাঃ। যে ভূতা বিল্লকর্ত্তারস্তে নশ্যন্ত্র শিবাজ্ঞয়া। অনেন মনুনা সর্ববং বিদ্বোঘ্যপ্রসার্মেদিতি। নীলতন্ত্রে ভূতীয়পটলে চ—বিল্লাকুৎসারয়েন্দ্রী নারাচমুদ্রয়াক্তিরিত। অন্ত্রমস্ত্রেণেতি ফড়িতি মন্ত্রেণেত্যর্থঃ। কড়িত্রসং প্রসিদ্ধং স্যাদিতি বর্ণ ভৈরবমন্ত্রকোষাৎ।

ন চ অন্তিঃ পুষ্পাক্ষতৈশ্চৈব বহ্নিবীজাস্ত্রমন্ত্রিতৈঃ। প্রক্ষি-পেৎ পতিতো মন্ত্রী ভূতবিঘ্ননির্ত্তয়ে ইত্যগস্ত্যসংহিতৈকা-দশাধ্যায়বচনৈকবাক্যতয়া রং ফড়িতি মন্ত্রেণেতি বাচ্যং তিশ্মন্ প্রারাসচন্দ্রপূজাপ্রতিপাদিতত্বেনৈব তৎপরত্বাবগমাৎ।
নচ হকাররেকো চ বিদর্গবন্তাবন্ত্রায় ফট্কারবচন্ডদন্তে।
উক্ত্যান্তরে সর্যপনক্ষতাংশ্চ পূজ্পাণি সিঞ্চেদিতি শিবার্চনচন্দ্রিকাপ্পত-ভুবনেশ্বর্গাপারিজাতবচনেন হঃ অস্ত্রায় ফড়িতি
তেনৈকযোগাৎ সর্ববিত্রবায়ং প্রয়োগ ইতি বাচ্যং তশ্মিন্
ভুবনেশ্বর্গাপূজাসাত্রাভিহিতত্বেন এতন্মন্ত্রস্য তৎপরত্বাৎ।

বস্ততন্ত বিশোষানভিহিতস্থলে ফড়িতি মস্ত্রেণৈব সামা-ন্যেন তথাদর্শনাৎ তেনৈব সপ্তাভিমন্ত্রিতানফতাদান অপ-সর্পন্ত তে ভূতা ইত্যাদিনা বিকিরেৎ পূর্ব্বোক্তসন্মোহনতন্ত্র-বচনাৎ। বিকিরান বিকিরেত্র সপ্তজপ্তান শরানথেতি শ্রীতন্ত্রচিন্তামণিপঞ্চনপ্রকাশবচনাচ্চ।

যতু সিদ্ধার্থাক্ষতপুষ্পাণি নারাচাস্ত্রধিয়া বুধঃ। অস্ত্রমন্ত্রণ সমুচ্চার্য্য মণ্ডপান্তর্বিনিফিপেদিতি শিব,র্চ্চনচন্দ্রিকাধ্নত-তুর্ণযোগবচনং তৎ শারদাতিলকোক্তাপদর্পন্ত তে ভূতা ইত্যাদিমন্ত্রপাঠসহক্বতাস্ত্রমন্ত্রপাঠাভিপ্রায়কং ব্যাবর্ত্তকৈবকা-রাগ্যভাবাৎ। এবঞ্চাত্র যন্নানাগ্রন্থের বিম্নোৎসারণদ্রব্যস্ত বহুধাল্লধাবোধকত্বং তদ্ভাবাভাবাভ্যাং বিকল্পেন ব্যবস্থেয়ম্।

বিম্নোৎসারণন্ত আসনোপবেশনাৎ প্রাক্ আসনে স্থিয়া বা কুর্য্যাৎ। তত্তুকং তন্ত্রসারে—আদৌ বিদ্বান্ সমূৎসার্য্য পশ্চাদাসনকল্পনম্। অথ বা চাসনে স্থিয়া বিদ্বানুৎসার্ব্যেৎ স্থ্যারিতি।

অথোপবেশনীয়াসনানি। কালিকাপুরাণে—অত্তৈব সাধ-কানাঞ্চ আসনং শৃণু ভৈরব। যত্রাসীনঃ সাধকস্ত সর্ববিদ্ধি-মবাথ্য়াদিতি। তথা গন্ধকতন্ত্রে সপ্তমপটলে—আসনঞ ততঃ কুর্মানাতিনীচং ন চোচ্ছিত্র। আসনকার্যপোত্রক ভগ্নমাসাদয়েন্ন তু॥ কৃষ্ণাজিনে মোক্ষসিদ্ধিঃ শ্রীমোকৌ ব্যাস্রচর্ম্মণি। কাম্যার্থং কম্বলঞ্চৈবমভীষ্টং রক্তকম্বলে। কুশাসনে মন্ত্রসিদ্ধি র্মারণে কৃষ্ণকম্বলম্। ত্রিপুরাপূজনে শস্তং রক্তকম্বলমাসনম্। নৈতদি,হস্ততো দীর্ঘং সার্দ্ধহস্তান্ন বিস্তৃতম্। ন ত্র্যঙ্গুলাৎ সমুচ্ছ্রায়ং পূজাকর্মাণি সংগ্র**হেৎ।** যথেক্টং চার্ম্মণং কুর্য্যাৎ পূর্ব্বোক্তং সিদ্ধিদায়কম্। নাদীক্ষিতো বিশেজ্জাতু কৃষ্ণশারাজিনে গৃহী। ধরণ্যাং তুঃখসম্ভৃতি<u>ঃ</u> দেভিাগ্যং দারুজাসনে। আত্রনিম্বকদম্বানামাসনং বংশ-মাশনম্। বকুলে কিংশুকে চৈব পলাশে চ হত⊜ায়ঃ। বংশেফকাষ্ঠধরণীতৃণপল্লবনিশ্মিতম্। বর্জয়েদাসনং মন্ত্রী দারিদ্রাব্যাধিত্বঃখদম্। নারাচৈর্কা বিভিন্নং স্থাদ্দিশীর্ণং ভগ্ন-মেব চ। পর্ব্যধিতং পরেষান্তদধোতঞ্চ বিবর্জয়েৎ। গাস্তারী-নির্শ্বিতং শস্তং নাম্মদারুষয়ং শুভম্। ন যথেন্টাসনো ভূয়াৎ পূজাকর্মাণি সাধকঃ। কাষ্ঠাদিকাসনং কুর্য্যান্মিত-নেবং সদা প্রিয়ে। চতুর্ব্বিংশত্যাঙ্গুলেন দীর্ঘং কাষ্ঠাসনং প্রিয়ে। ষোড়শাঙ্গুলবিস্তীর্ণমূচ্ছ্রায়াচ্চতুরঙ্গুলম্। ধরণ্যাং বস্ত্রসংযোগাৎ দারুক্তে কম্বলস্থ চ। কোশে চাজিনসং-যোগো হন্তি পুণ্যং পুৱাকৃতম্। যথাশক্তিকতো মন্ত্রী শস্তা-সনমুপাবিশেদিতি।

ক্ষণাজন ইত্যাদি অত্র চর্মাদনং নির্লোম কর্তব্যম্। তত্ত্রুং হংসমাহেশ্বরে—লোন্নি চৈব যদাদীনন্তদা সর্ব্বং ^{বিনশ্য}তি। লোমস্পার্শনমাত্রেণ সিদ্ধিহানিঃ প্রজায়তে ইতি। অভাষ্ঠং রক্তকম্বলইতি পূর্ব্ববচনে সামান্ডেন ফল- শ্রবণাৎ সর্বাদেবতাস্থ প্রশস্তং পুনস্ত্রিপুরাপূর্জ নিত্যুত্ত সিত্যুত্ত পাদানাত্তবিয়ে প্রশস্ততরমিতি বোধ্যম। নাদাক্ষিতোবিশেক্জাত্বিতি অদীক্ষিতো জনো গৃহী চ কৃষ্ণসারাজিনে ন বিশেৎ কদাচিম বিশেদিত্যর্থঃ।

অত্র ন বিশেষ্যবিশেষণভাবেনাম্বয়ঃ অতথা কৃষ্ণাজিনে গৃহস্থানাং নাধিকারঃ কথঞ্চনেত্তি সম্মোহনতন্ত্রকথিতবচনেন গৃহিণাং সামান্ততো নিষেধবিরোধাপত্তেঃ। তহি কো বিশেং তদাহ যোগিনীহৃদয়ে—বিশেদ্যতির্ব্বনস্থশ্চ ব্রহ্মচারী চ ভিক্ষুক ইতি।

বস্তুতন্তু কৃষ্ণসারাজিনে গৃহী ন বিশেৎ অদীক্ষিতো যত্যাদিরপি ন বিশেদিতি। কালিকাপুরাণে—আয়সং বর্জ-য়িয়া তু কাংস্থানীসকমেব বা। শিলাময়ং মণিময়ম্ তথা রত্ময়ং মতম্। তৎ সর্বমাসনং শস্তং পূজাকর্মাণি সাধকইতি। শিলাময়মিতি জলেহপি পূজ্য়াং জ্য়েয়য়্। সলিলে যদি কুর্ব্বীত দেবতানাং প্রপূজনম্। তত্রাপ্যাসনমাসীনো নোখিতস্তু সমাচরেৎ। তোয়ে শিলাময়ং কুর্য্যাদাসনং কোশমেব বা। দারবং তৈজসং বাপি নাম্যদাসনমাচরেৎ। আসনারোপসংস্থানং স্থানে তোয়ে তু পূজকঃ। আসনং পূজয়িয়া তু মনসা পূজয়েজজলে ইতি তত্রৈবাভিহিতয়াৎ। আসনারোপসংস্থানমিত্যনস্তরং পরিকয়েয়ত্মহ্ময়্।

তীর্থে তু বিশেষয়তি কামধেনুতক্সীয়দ্বাত্রিংশপটলঃ। তীর্থে আসনসংস্থাপ্যে উপবিশ্য জপেতু যঃ। সর্ববং তক্ষ রথা দেবি জপপূজাদিকাঃ ক্রিয়াঃ। মহিষাস্থরমেদেন পৃথিবী দৃঢ়তাং গতা। যদেতচ্চঞ্চলাপাঙ্গি তীর্থাদন্যস্থলেয়ু তৎ। ন তীর্থাবাহনং তীর্থে আসনে ন বসেৎ স্থণীরিতি। এবং সিদ্ধ-পীঠেহপি। তথাচ তত্ত্বৈ ত্রয়ন্ত্রিংশপটলে—সিদ্ধপীঠেষ্ তীর্থেষ্ আসনে ন বিশেৎ স্থণীঃ। ন তীর্থফলমাপ্ণোতি তীর্থ-ত্যাগং তদা ভবেদিতি॥

অথাসনশুদ্ধিঃ। শ্রীতত্ত্বিভামণো চতুর্দশপ্রকাশে—
ভূমো ত্রিকোণমালিখ্যাধারশক্ত্যাদিপূজনম্। মনোহরমূত্বপ্রক্ষমাসনং তত্ত্র নিক্ষিপেৎ। আসনকার্য্যপাত্রঞ্গ ভগ্নমেব
বিবর্জয়েং। মেরুপৃষ্ঠ ঋষিঃ প্রোক্তঃ স্থতলং ছন্দ ঈরিতম্।
কূর্ম্মোহত্র দেবতা প্রোক্তা আসনারোপণে ততঃ। বিনিয়োগস্ত কথিতস্ততো ধুষা পঠেদিমম্। পৃথি স্থ্যা ধুতা
লোকা দেবী স্থং বিষ্ণুনা ধৃতা। স্থঞ্ধ ধারয় মাং নিত্যং
পবিত্রং কুরু চাসনমিতি।

নশ্বনেনাসনধারণসমানকালীনঃ পৃথি ছয়েত্যাদিমন্ত্রপাঠো হভিহিতঃ। অসেন্ম দ্ব্লি, ঋষিত্যাসং ছন্দোত্যাসং মুখান্বজে। দেবতাত্যাসমাকুর্য্যাৎ হৃদয়াস্তোক্রহে স্থগীতি রুদ্রজামলা-ইচ্ছারিংশপটলীয়বচনাৎ আসনমন্ত্রস্থ ঋষ্যাদিত্যাসবৎ স্থ-শরীরে তৎকর্ত্তব্যতা প্রতিভাতি। নচ ঋষিচ্ছন্দোদৈবতানি অস্ত মন্ত্রস্থ মন্ত্রবিৎ। আয়নো মুদ্ধি, বদনে হৃদয়ে চ যথাক্রমাদিতি নিবন্ধতন্ত্রীয়ত্রয়োদশপটলবচনাত্রপাসিতমন্ত্রস্থ ঋষ্যাদিকমাত্মনঃ শরীরে অসেৎ নাত্যস্থিতি বাচ্যম্। মাতৃকাত্যাসস্থ ঋষ্যাদেরাজনঃ শরীরে কর্ত্তব্যত্বদর্শনাং। ন চ কেবলত্যাসাত্মকঋষিচ্ছন্দোদেবতাদিত্যাসঞ্রব আত্ম-শরীরে অস্তব্য ইতি বাচ্যং স্থোত্রাদের্ন্যাসন্থাভাবেহিপি তথা দর্শনাৎ। নচ ঋষিচ্ছন্দাদিকং অস্থ পঠেৎ স্তোত্রং বিচক্ষণঃ। স্তোত্তে ন দৃশ্যতে যত্র প্রণবন্যাসমাচরেদিতি বারাহীতন্ত্র বচনাৎ স্তোত্রাদৌ তাদৃশবিধানত্বেন তৎ কর্ত্তব্যমিতি বাচ্যং যত্র যত্র ঋষ্যাদিদৃশ্যতে তত্ত্বৈব স্তস্তব্যত্বাৎ নিষেধাভাবাচ্চ।

উচ্যতে তন্মন্ত্রস্থাসনপরিগ্রহণত্বেন হস্তাভ্যামাসনং ভূমিং বা ধ্রহা সচ পঠনীয়ঃ নতু স্থাসবৎ। ততুক্তং গান্ধর্বেহপ্টম-পটলে—পাণিভ্যামাসনং ধ্রহা স্মান্ধেদেবং বিধানতঃ। মেরু-পৃষ্ঠ ঋষিঃ প্রোক্তঃ স্কৃতলং ছন্দ ঈরিত্মিত্যাদি। তথা স্থামাপ্রদীপধ্রতশাস্বততন্ত্রে—ভূমো ত্রিকোণমালিখ্য ভূমিং ধ্রহা পঠেততঃ। মেরুপৃষ্ঠ ঋষিঃ প্রোক্তঃ ধ্রতলং ছন্দঈরিত্মিত্যাদি। যতু শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাকারেণৈতচ্ছান্ত্রানব-গাহিত্যা সাধকশরীরে ঋষ্যাদিন্থাসবত্তন্ত্রাসপ্রয়োগেহভিহিতঃ তদ্ধেয়ম্।

অথ দেবতাভেদেনাগনপূজাক্রমং। তত্রাদৌ বিস্থুবিষয়ে।
সম্মোহনতন্ত্রে তৃতীয়পটলে—পৃথি স্বয়েত্যাদি মন্ত্রমভিধায়।
পরাবীজং সমূচ্চার্য্য ততশ্চাধারপূর্বকম্। শক্তিপদং সমালিখ্য কমলাসনমালিখেৎ। ঙেহস্তং নমংপদং কৃত্বা আসনস্থ মসুঃ প্রিয়ে ইতি। গণেশস্থ বিশেষাসুক্তত্বাদ্বত্ত্যু তথা
দর্শনাচ্চায়ংপ্রকারো বোদ্ধব্যঃ॥ সোরাণাং শাক্তবদ্বাবহারঃ। তত্ত্বং শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাপ্পত্রামদেবতন্ত্রে—সৌরং
শক্তিময়ং স্বহো বিজয়তে সোন্দর্যুগীমাস্পদমিতি॥ শিবস্থায়ং বিশেষঃ তদ্ধৃতসারসংগ্রহে। পৃথিস্বয়েত্যাদিমন্ত্রমুক্ত্বী
আসনস্থ চ সন্তুক্টো গণেশঞ্জন্ট সরস্বতীম্। তুর্গাং ক্ষেত্রপতিক্ষাপি গন্ধাদিভিঃ সমর্চয়েদিতি।

অত্র গণেশাদীনান্ত্র্যাদিচতুক্ষোণেয় পুজনং বেদিতবাম্।

তথাচ মেরুতস্ত্রে—আসনস্থ চতুকোণে গণেশঞ্চ সরস্বতীম্।
দুর্গাং ক্ষেত্রপতিঞাপি বহুগাদিযু সমর্চ্চয়েদিতি।

শক্তিবিষয়ে তু। উমাজামলে—ভূমো ত্রিকোণমালিখ্যাধারশক্ত্যাদিপূজনম্। মেরুপৃষ্ঠ ঋষিঃ প্রোক্ত ইত্যারভ্য
পবিত্রং কুরু চাসনমিত্যন্তং নিগল্য ধ্বইত্বঞ্চাত্র দেবেশি
কুশাংস্তত্রেব দাপয়েৎ। মায়াবীজং সমুদ্ধৃত্য আধারশক্তিমূদ্ধরেৎ। কমলাসনমুচ্চার্য্য ডেনমোহন্তং প্রপূজয়েদিতি। তথা
জানার্গবে বিতীয়পটলে—সম্পূজ্য পরমেশানি পূজয়েদাসনং
ততঃ। মায়াবীজং সমুচ্চার্য্য তত আধারপূর্ববিকম্। শক্তীতি
পদ্যালিখ্য কমলাসনমালিখেৎ:। ডেহন্তং নমঃপদং কৃষ্যা
আসনস্থ মনুঃ প্রিয়ে ইতি।

অন্নপূর্ণবিভায়াম্। শাস্তবীতন্ত্রেহ্ন্টনপটলে—নমোগর্ভং ত্রিকোণঞ্চ চতুরব্রং লিখেত্তঃ। কামাধারশক্তিকমলাসন-ত্রেযুতং ততঃ। নমোমন্ত্রেণ সংপূজ্য বিশেন্মুঘাসনে স্বধী-রাত॥ তথান্দাকন্ত্রে যঠপটলে—মণ্ডলং স্বোপবেশার্থং চতুরব্রং ত্রিকোণকম্। বিলিখ্য পূজ্যেত্ত্র কামরূপায় হন্মযুঃ। কামবীজাদিকং রুম্বা ততস্বাধারশক্তিতঃ। কমলা-সনায় নমো মন্ত্রেণৈবাসনং যজেদিতি। ত্রিকোণকং ত্রিকোণ-ভিমিত্যর্থঃ। এতত্বভ্য়বচনৈক্বাক্যত্রা আসনাধোনমোগর্ভং চাণং তদ্বহিশ্চতুরব্রক্ত বিলিখ্য কামরূপায় নম ইতি শংপূজ্য রুণী আধারশক্তিকমলাসনায় নম ইতি পূজ্যেদিতি যোগঃ।

নন্কোমাজামলাদিয় সর্বত্র মায়াবীজাদিনাসনপূজাদর্শনাৎ স্তিবীতন্ত্রান্নদাকল্লয়োঃ রহস্তপূজাবিধানাচ্চ তৎপরএব তৎ- কল্পঃ প্রতিভাতীতি। মৈবম্ ঈদৃশত্বে মানাভাবাৎ পশ্বাচারিন্ত্র্ বিশেষাকুক্তত্বাচ্চ। যগুপ্যত্রাসনস্থ্য ঋষ্যাদিমক্ত্রো নোক্ত-স্তথাপি পূর্ব্বোক্তোমাজামলীয়াসনশুদ্ধিরত্র গৃহুতে।

ত্রিপুরাবিভায়াম্। গান্ধর্কে সপ্তমপটলে—পাণিভ্যামাসনং

ধুরা বিহিতং বিস্তরেদ্ভূবি। পরাবীজং সমূচ্চার্য্য ততশ্চাধারপূর্বকম্। শক্তিপদং সমালিথ্য কমলাসনমালিথেৎ। ঙেইস্তং
নমঃপদং কুর্য্যাদনেনৈবাসনং যজেৎ। মূলপ্রকৃতিং তত্ত্রৈব
কুর্মঞ্চ পরিচিন্তয়েৎ। অনস্তঞ্চাপি সংপ্রজ্য পৃথিব্যর্ঘ্যং
নিবেদয়েৎ। প্রণবং পূর্বব্যুচ্চার্য্য পৃথিব্যৈ নম ইত্যুপীতি।
ইত্যানেনাসনপূজামূক্ত্বা আসনমন্ত্রন্সেত্যাদি-মন্ত্রোহভিহিতঃ।
পরাবীজং মায়াবীজম্।

তারাবিভায়াম্। তারারহস্তর্ভিধৃততত্ত্বে—প্রণবং পবিত্রবজ্ঞভূমে হুঁ ফট্ ততঃ পুনঃ। স্বাহেত্যনেন মনুনা কুর্যাদ্ভূম্যভিমন্ত্রণম্। তত্র চাদনমান্তীর্য্য মগুলং তত্র চালিখেং। আঃ স্বরেখে বজ্ররেখে হুঁ ফট্ স্বাহেতি পুষ্পকৈরিতি। তথাচ নিগমকল্পলায়াং ত্রয়োদশপটলে—বিষ্টরং বাদমান্তীর্য্য পুষ্পেণ্
পূজ্যেত্রতঃ। বেদাভ্যমাঃ স্থরেখে চ বজ্ররেখে ততঃ পরম্ বহ্নিজায়ান্তমনুনা পূজ্যেদাদনং তত ইতি। পুষ্পকৈঃ রক্তচন্দন মুক্ত-পুষ্পকৈরিত্যর্থঃ। তথা চ রহন্দীলতন্ত্রে প্রথমপটলে—প্রণবং পূর্বেমৃচ্চার্য্য আঃপদং তদনন্তরম্। স্থরেখে বজ্ররেখে চ্রুই ফট্ স্বাহাবধির্মন্ত্রং। রক্তচন্দনপুষ্পাভ্যাং পূজ্যিত্বাদনং স্থীঃ। বিশেত্রাদনে দেবি ততঃ পূজনমারভেদিতি॥

বীরতান্ত্রে দিতীয়পটলে তারাবিভামধিকৃত্য ভূমিশোধন মুক্ত্বা—তত্র মুঘাসনং দেব পীঠমন্ত্রেণ পূজবন্নং। ওঁ ঐঁ গ্রী কামপীঠায় ছদয়ান্তোহয়মীরিতঃ। তত্রবদ্ধাসনো বীর আত্মানং শোধয়েত্তত ইতি যৎ প্রকারান্তরেণাসনপূজাবিধানং তদিছো-বিকল্পো বোধ্যঃ। ইহ তু সামায়্যোক্তাসনশুদ্ধিরনাদরশীরাঃ অত্যোক্তমাচরেৎ সম্যক্ নাস্তৎ সঞ্চারয়েৎ কচিদিতি ফেৎকারিণীতদ্রবচনাৎ।

অথোপবেশনপ্রকারমাহ। শারদায়াং চতুর্থপটলে—বদ্ধপদ্মাসনো মৌনী সমাহিতজিতেন্দ্রিয় ইতি। পদ্মাসনম্ ইত্যুপলক্ষণম্। তথা রাঘবভট্টঃ—পদ্ম-স্বস্তিক-বীরাদিম্বেকা-সনসমাস্থিতঃ। জশাচ্চ নাদিকং কুর্য্যাদন্তথা নিষ্ফলং ভবে-দিতি।

এতেষাং লক্ষণানি যথা তদ্ধ্ ভতন্ত্রান্তরে—সব্যং পাদমুপাদায় দক্ষিণোপরি বিশ্বদেশ। তথৈব দক্ষিণং সব্যক্ষোপরিষ্টানিম্নাপয়েশ। বিষ্টভা কট্যো পার্ফা তু নাসাগ্রন্থভালোচনঃ।
পদ্মাসনং ভবেদেত সর্কোষামপি পূজিতমিতি॥ ১॥ গোতমীয়েংইইমাধ্যায়েইপি—উর্কোরুপরি বিশ্বস্থ সম্যক্ পাদতলে
উভে। পদ্মাসনমিদং প্রোক্তং যোগিনাং হৃদয়ঙ্গমমিতি॥ ১॥
সদ্মোহনতন্ত্রে দ্বিতীয়পটলে—জানুর্কোরন্তরে সম্যক্ কৃষা
পাদতলে উভে। ঋজুকায়ো বিশেদ্যোগী স্বস্তিকং তং প্রচক্ষতে॥ ২॥ একং পাদমধঃ কৃষা বিশ্বস্থারো তথেতরম্।
ঋজুকায়ো বিশেদ্যোগী:বীরাসনমিতীরিতম্॥ ৩॥ এতত্রু
বামদক্ষিণযোগেনোভয়্রখা সম্ভবতি॥ অম্ভাসনানি সর্কোপাসকৈরিষ্টানি নতু বীরাসনসংজ্ঞোপাদানত্বন কেবলবীরাচারিণামিত্যাশঙ্কনীয়ং বিষ্ণুপাসনাবিধায়ক-সন্মোহনতন্ত্রাদাবপি বীরাসনস্থাক্তম্বাং। কিন্তুর্ পূজায়ামেতেয়ামাসনানা-

মেকতমেনোপবিষ্টস্য কিয়ৎকালানন্তরং যদি পাদব্যথা স্যান্তদা প্রকারান্তরাসনেনোপবেশনমিপা কর্ত্তব্যম্ অন্যথা অধিককালং তদবস্থত্বে মৃনসোহস্থিরত্বাৎ কর্ম্মানর্থক্যং ভবেৎ। ততুক্তং নিবন্ধে যোড়শপটলে—দেবতাং চিত্তগাং কূর্য্যাৎ কুর্য্যাচ্চ হৃদয়ং স্থিরম্। জপাদিকঞ্চরেদ্ধীরশ্চান্যথানর্থকং ভবেদিতি। তথা তত্ত্রব—প্রসার্য্য ন জপেৎ পাদাবুং-কটাসন এব বেতি। জপেদিহ্যুপলক্ষণম্। উৎকটং ক্লেশ-দায়কমাসনং যম্প্রতি সঃ।

যতু বামোরপরি দক্ষিণং হি চরণং সংস্থাপ্য বামে তথা
দক্ষস্থাপরি পশ্চিমেন বিধিনা কৃত্বা করাভ্যাং দৃঢ়্য্।
অঙ্গুপ্তি হৃদয়ে নিধায় চিবুকং নাসাগ্রমালোকয়ে-দেত্ব্যাধিবিকারনাশকরণং পদ্মাসনং প্রোচ্যুত ইতি প্রকারান্তরপদ্মাসনবিধায়ক-ঘেরুওসংহিতাদ্বিতীয়প্রকাশবচনং তৎ যোগিনাং
যোগবিষয়ে জ্যেয় অন্যথা পূজায়াং রুদ্ধহস্তম্ভ তদসম্ভবাৎ।

প্রোচ্পাদেন দেবতার্জননিসেধসাহ রাঘবভট্টঃ। দান্দাচ্যনং হোমং ভোজনুং দেবতার্জনম্। প্রোচ্পাদের ক্বর্বীত স্বাধ্যায়কৈব তর্পণমিতি॥ প্রোচ্পাদলক্ষণন্ত তত্ত্বি—আসনার্ক্যপাদস্ত জামুনোর্ব্বাথ জড়্ময়োঃ। কৃত্বিসক্থিকো যস্ত্র প্রোচ্পাদঃ স উচ্যত ইতি॥

দেবপূজনে অভাথা পাদদর্শনং ন যুক্তমিত্যাই। সম্মোহন তান্ত্রেতৃতীয়পটলে—তান্ত্রোপসংবিশেদ্দেবি বদ্ধপদ্মাসনাদিক । ন যুক্তমভাথা পাদদর্শনং স্থরপূজনে ইতি ॥ সংবৎসরকৌ মুলি-যোগিনীতান্ত্র—নী চৈরাসনমাসাভ্য স্বস্তিকাদিক্রমেণ তুটি বিশেষ্টিনাকুলন্তর পাদে সংভাত বাসসাইতি।

অথ পুজায়াং সাধকদিয়ুখনিয়য়ঃ। কুলার্গবে যঠোলাসে—একান্তে বিজনে রম্যে দেশে ব্যাধিবিবর্জিতে। প্রখাসনে সমাসীনঃ প্রাগ্ধুখো বাপুদেয়ুখ ইতি॥ মেরুতন্ত্রে পঞ্চমপ্রকাশে—উদগ্ধুখঃ প্রাগ্ধুখো বা স্বস্তিকাসনমান্থিতঃ। পদ্মাসনগতো বাপি ঋজুকায়ো মনঃস্থির ইতি॥ শিবার্চনন্দ্রেকাধ্রতোত্তরতন্ত্রেহপি—উদগ্ধুখঃ প্রাগ্ধুখো বা ভূজাপ্রজনানসঃ। স্বস্তিকাসনমাসীনঃ পদ্মাসনমথাপি বেতি॥ তথা শ্যামার্চনচন্দ্রিকায়াম্—উপবিশ্যাসনে ধীমান্ প্রাগ্ধুখো বাপুদেয়ুখ ইতি॥

এতৈর্ব্বচনৈঃ পূর্ব্বোত্তরাস্তয়োঃ সামান্তেনাভিহিতত্বাদিচ্ছাবিকল্প ইতি চেন্মেবম্—প্রাগ্মুখঃ প্রয়তাত্মা চ সংবিশেদিহিতাসনে ইতি গৌতমীয়তন্ত্রাফমাধ্যায়বচনে প্রাচীদিধদনো নিবধ্য স্থদৃঢ়ং পদ্মাসনং স্বস্তিকং বাসীনঃ স্বগুরুন্ গণাধিপমথো বন্দেত বদ্ধাঞ্জলিয়িতি ক্রমদীপিকাপ্রথমপটলবচনে
চ কেবলপূর্ব্বমুথেন বৈশ্ববানাং পূজনস্তাভিহিতত্বাৎ। উত্তরাভিমুথো ভূত্বা বীরঃ পদ্মাসনস্ততঃ। উপবিশ্যাসনে মন্ত্রী
আচম্য সর্ব্বসিদ্ধিদ ইতি তারাভক্তিস্থধার্ববৃহত-ভৈরবতন্ত্রবচনে শাক্তানাং কেবলোত্রমুখেন পূজাপ্রতিপাদিতত্বাচ্চ।

নচ বৈষ্ণবশাক্তভেদেন পূর্ব্বোত্তরাস্ময়ো র্যথাক্রমেণ পূজনং কর্ত্তব্যমিতি বাচ্যম্। বিশেশহাসনে মন্ত্রী প্রাধ্যুথো বাপ্যুদগ্মুথ ইতি সনৎকুমারতন্ত্রত্তীয়পটলবচনেন প্রাগা-ননো ধনদদিশ্বদনোহথ বাপি বন্ধাসনো গণপতিঞ্চ গুরুঞ্চ নত্বেতি ত্রিপুরাসারসমূচ্চয়বচনেন বিশেশ্ম্ দ্বাসনে মন্ত্রী প্রাধ্যুথো বাপ্যুদগ্ধ্যুগ্ধঃ। বন্ধবীরাসনো মন্ত্রী শোধ্যেদ্বিজ্যাঃ তত ইত্যন্দাকল্পীয়-ষ**র্চপটল-বচনেন চ শাক্ত**বৈষ্ণবয়ো-ব্রৈপরীত্যদর্শনাৎ।

নচ ত্রিপুরায়পূর্ণাপূজাপ্রতিপাদক-ত্রিপুরাসারসমূচ্চায়ায়দাকল্পবচনাভ্যাং তত্তৎপূজনং পূর্বেবাভরমুথয়োরেকতরেন
কর্ত্তব্যম্ অন্যাসাং কেবলোভরমুথেনেতি বাচ্যম্। স্থাসনে
সমাসীনঃ প্রায়্বা বাপ্যুদ্রমুখ ইতি তারাবিদ্যাপূজাপ্রতিপাদকনিবন্ধতন্ত্রীয়-সপ্তমপটলবচনেন আসনং তত্র সংপূজ্য
সংবিশেৎ স্বস্তিকাসনে। পূর্ব্বাশাভিমুখো ভূষা চোভরাশামুখোহপি বেতি কালীপূজামাত্রবিধায়ক-সিদ্ধাবিদ্যালীপিকাবচনেন উপবিশ্যাসনে বিদান প্রায়্রাখ্য বাপ্যুদ্রমুখঃ।
বন্ধবীরাসনো মন্ত্রী বিজয়াং পরিশোধয়েদিতি কালীপূজাবিধায়ক-মহানির্বাণতন্ত্র-পঞ্চমোল্লাসবচনেন চ পূর্বেবাভরমুখেন
পূজাবিধানাৎ। পূর্ব্বাশাভিমুখো ভূষা বিশেম্মুদ্বাসনোপরীতি বারাহীতন্ত্রাইমপটলে মহালক্ষ্মীপূজাপ্রকরণে কেবলপূর্ব্বমুখেনৈব তৎপূজাবিধানাচ্চ।

তশ্মদিবারাত্রিভেদেন শৈবেতরসর্বোপাসকানাং পূর্ব্বাস্থোভরাস্তয়োর্ব্যবন্থা জ্ঞেয়া। দিবা পূর্ব্বমুখো ভূজা রার্ত্রো
কুর্যাত্রদল্প খং। দেবীপূজাং শিবস্থাপি সদা কুর্যাত্রদল্প খ
ইতি শাক্তানন্দতরঙ্গিণুক্তেত্বাৎ। ততঃ কৃষ্ণার্চ্চকঃ প্রায়ে
দিবসে প্রায়্ধ খো ভবেং। উদপ্মুখো রজন্যান্ত স্থিরমূর্তিশন্দাধক ইতি ভগবদ্ধক্তিবিলাসোক্তত্বাচ্চ। কৃষ্ণার্চক ইতি
পুংদেবতামাত্রোপলক্ষকঃ বিশেষানবলোকনাং। অত্র প্রায়ঃশন্দস্যায়মভিপ্রায়ঃ যত্র যত্র পশ্চিমাভিমুখো দেবস্তত্র তত্র
সর্ববিদেব সায়কঃ পূর্ব্বাস্তঃ যুত্র যত্র দক্ষিণাভিমুখো দেবস্তত্র

তত্র সদৈব সাধক উত্তরাস্ত:। আসীন: প্রাপ্তদমার্চেদচ্চ গ্রান্ত্রথ সংমুধ ইতি ভগবদ্ধক্তিবিলাসগৃত্তৈকাদশক্ষরবচনেন সংমুখত্বপ্রতিপাদনাৎ দেবীসংমুখতো দেবি ততঃ পূজাং সমারভেদিতি বহুদ্মীলতন্ত্র-ষষ্ঠপটলবচনাচ্চ। আসীন ইতি প্রাঞ্জু থঃ উদগ্রু থঃ। অন্ত গ্র প্রতিমা তস্তাং দ্বিরায়াস্ত সংমুধঃ প্রতিমাভিমথোপবিষ্টঃ সমিত্যর্থঃ।

এবঞ্চ যত্র যত্র বাশব্দঃ তত্র তত্র সমুচ্চয়ার্থোহবগন্তব্যঃ
বা স্থাধিকস্নোপময়ারেবার্থে চ সমচ্চয়ে ইত্যমরকোষাৎ।
অতএব মেরুভস্তোভরতন্ত্র-শ্রামাচ্চ নচন্দ্রিকাবচনানি দিবারাত্রিভেদেন ব্যবস্থাপিতানি। গোত্তমীয়তন্ত্র-ক্রমদীপিকাবচনস্ত দিবাপূজাবিধায়কম্। ভৈরবতন্ত্রবচনং কেবলরাত্রিপূজামাত্রপ্রয়েজকম্। সনৎকুমারতন্ত্রবচনং পূর্বব্যবস্থাপিত-দিবারাত্রিভেদেন জ্যেম্। এবং যত্র কুত্রাপি পূর্ববাস্থোভরাস্থবিধানং তত্রৈব দিবারাত্রিভেদেন মীমাংসয়িতব্যম্। শিবপূজনস্ত সর্বদৈবোদপ্পুর্থেন কর্ত্রব্যং প্রাগুক্তশাক্তানন্দতরিক্ষণীবচনেন প্রতিপাদিতত্বাৎ।

যত্ত্বাধকঃ পূজয়েদেবীং সর্বদা বৈ উদগ্মুখঃ। প্রাশ্ম -খোবা যজেৎ কাপীতি শ্যামান্ত নচন্দ্রিকাগ্নতবচনং তৎ গ্রন্থ-নামাগ্রতত্বেন নির্মূলম্। সমূলত্বে তু সর্বদাপদং পূর্বেবাক্ত-নির্ণীতকালবিশেষপরম্। প্রাশ্মুখো বা যজেৎ কাপীতি যত্ত্ব যত্ত্ব পশ্চিমাভিমুখী দেবতা তদভিপ্রায়েণেতি।

যদপি দিখিভাগে চ কোবেরী দিক্ শিবাপ্রীতিদায়িনী। তস্মান্তর্মুথ আসীনঃ পূজয়েচ্চণ্ডিকাং সদেতি কালিকাপুরাণবচনং তৎ স্মৃত্যুক্তামুষ্ঠানপরমিতি।

যত্ত্ব সাধকেচ্ছাবশাদেবি সর্ব্যদিশ্ব খদেবতেতি শ্রামা চ্চ নচন্দ্রিকাধৃতভাবচূড়ামণিবচনং তত্তাদৃশসিদ্ধসাধকপরমিতি। বলা প্রতিষ্ঠিতদেবতাপরং তাসাং সর্ব্যদিশ্বখস্থাপনদর্শনাৎ।

অথ পুষ্পশোধনম্। তত্রাদৌ বিষ্ণুবিষয়ে লক্ষ্মীনারায়ণ-পূজাবিধায়ক-কমলাতন্ত্রে পঞ্চমপটলে—পুষ্পমন্ত্রে মহাভাগ পুষ্পশোধনমেব চ। ওঁ পুষ্পকেতুরাজার্হতে শতায় সম্যক্ সম্বন্ধায়। ওঁ পুষ্পে পুষ্পে মহাপুষ্পে স্থপ্রসম্ভবে। পুষ্পচয়াবকীর্ণে হুঁ ফট্ স্বাহেতি ততঃ পরম্। যন্ধ বৈষ্ণবানাং দাদশশুদ্ধ্যন্তঃপাতি-পুষ্পশোধনস্থাভিহিতত্বাৎ । তেনৈব তচ্ছু দ্ধিঃ সিদ্ধা। দ্বাদশশুদ্ধিস্থগস্ত্যসংহিতা-গোতমীয়-তন্ত্রাদাবনুসন্ধেয়া॥ কালীবিভায়াং যথা কুমারীতন্ত্রে দিতীয়-পটলে—অধিষ্ঠানে চ পুষ্পস্থ প্রণবং পূর্ববমদ্ধরেৎ। শতা-ভিষেকেতি পদং শতাভীতি ততঃ পরম্। ষেকেতি চ ততঃ প্রোক্তং হুঁ ফট্ স্বাহা ততঃ পরম্। প্রণবং পুষ্পকেতুশ্চ তথা রাজার্হতেহপি চ। শতায় সম্যগিত্যুক্ত্বা জপেচ্চৈব চ হূমিতি। পুষ্পে পুষ্পে মহাপুষ্পে স্থপুষ্পে পুষ্পমন্তবে। পুষ্পচয়াবর্কার্ণে হুঁ ফট্ স্বাহা চ ততঃ পরমিতি॥ শ্রীবিভায়াস্ক বারাহীতন্ত্রে ষষ্ঠপটলে—পুষ্পে পুষ্পে মহাপুষ্পে পুষ্পাবকীর্ণ ইত্যপি। স্বাহেতি শোধয়েৎ পুষ্পং তেন পুষ্পেণ পূজয়েদিতি।

সকলশক্তিদেবতানাং কালীকুল শ্রীকুলান্তঃপাতিস্থাদি শ্রিন্
বিশেষানভিহিত-মন্ত্রবিছোপাসকৈঃ স্বস্বকুলভেদবর্মনা তচ্ছোধনং কার্য্যা, কালীকুল শ্রীকুলং যথা নিরুত্তরতন্ত্রে প্রথমপটলে—কালী তারা ছিন্নমন্তা ভুবনা মহিষমর্দিনী। ত্রিপুটা
স্বরিতা সুগা বিছা প্রত্যাধিরা তথা। কালীকুলং সমাখ্যাতং

প্রাকুলঞ্চ ততঃ পরম্। ধূমাবতী চ মাতঙ্গী বিদ্যা স্বপ্নাবতী প্রিয়ে। মধুমতী মহাবিদ্যা শ্রীকুলং পরিভাষিতমিতি। অত্র যথা ভূবনেশ্বরীমূর্ত্তিভেদামপূর্ণাদীনাং কালীকুলান্তঃপাতিত্বং স্কুতরাং স্বতঃসিদ্ধত্বেন তদ্বদেবাচরণীয়ং তথা অন্যা অপ্যেতৎ-ক্রমেণানুসন্ধেয়াঃ॥ গণপতেস্ত বিষ্ণুভূল্যত্বং তস্ম তদবতারত্বাৎ প্রমাণস্ত ব্রহ্মবৈবতীয়গণেশপঞ্চাদাবনুসন্ধেয়ম্। শৈবানাং বিশেষানুক্তস্থলে শাক্তবদ্যবহারঃ তথাচ রুদ্রভামলে যট্বষ্টি-তমপটলে—যথা দেব্যাস্তথা শস্ত্রোর্জপ্রাগঃ সমারিত ইতি॥ এবং সৌরাণামপীত্যাসনপূজাপ্রকরণে প্রকটীকৃতম্॥

অথ গুর্ব্বাদিপ্রণামো যথা। গোতসীয়েংইকাধ্যায়ে— কৃতাঞ্জলিপুটো ভূত্বা বামে গুরুত্রয়ং যজেৎ। গুরুঞ্চ পরমা-দিঞ্চ পরাপরগুরুং তথা। দক্ষপার্থে গণেশঞ্চ মূর্দ্ধি, দেবং বিভাবয়েদিতি।

করশুদেরাবশ্যকত্বমাহ। শক্তানন্দতরঙ্গিণীয়ত-গান্ধর্বে

—মর্দনাৎ করয়োঃ শুদ্ধিমিঞ্জনাৎ করপৃষ্ঠয়োঃ। প্রাণাৎ

নেনাশ্চ তুষান্তি তীর্থানাঞ্চ সমাগমঃ। ক্ষপণাৎ সর্ববিদ্যানাং

নুরসংস্থানমেব চ। তুর্গদ্ধোচ্ছিস্টসংস্পর্শদূষণং করয়োস্ত যঃ।

মজানরূপং তৎ সর্ববং নাশয়েদ্বিধিনামুনেতি॥ মেরুতন্ত্রে পঞ্চমপ্রকাশেহপি—অস্ত্রমন্ত্রেণ নারাচমুদ্রয়েশদিশিত্যজেদিতি॥

শ্বার্চনচন্দ্রিকায়াঞ্চ। স্থগন্ধপুস্পাণ্যাদায় চন্দনাক্তানি মন্ত্রবিৎ।

মদিয়িয়া করো সম্যক্ স্থরভীক্তা সাধকঃ। বামহন্তে

শ্বাদায় নির্মঞ্জ্যাদায় যক্তঃ। বক্ষ্যমাণেন মন্ত্রেণ চৈশান্যাং

দিশি সন্ত্যজেদিতি। ত্যজেৎ ক্ষিপেৎ নারাচমুদ্রয়া।

স্ক্রপেছত্তরতঃ পুষ্ণং মন্ত্রী নারাচমুদ্রয়েতি সারসংগ্রহবচনাৎ।

অত্র যদ্যপুত্তরস্থাং করমার্জিতপুষ্পপ্রক্ষেপ উক্তস্তথাপি ঐশান্থাং দিশ্যেব তৎ ত্যাজ্যং বহুরু তথা দর্শনাৎ ঐশান্থামুত্তরাংশস্থিতিদর্শনাচ্চ॥ মন্ত্রেণেতি অস্ত্রমন্ত্রেণেত্যর্থঃ। পাণী বিশোধয়েদস্ত্র-মন্ত্রেণ মন্ত্রবিত্তম ইতি দক্ষিণামূত্তিকল্প-বচনাৎ। পুষ্পং চন্দনসংযুক্তমাদায় করয়োদ্ব য়োঃ। অস্ত্রেণ ঘর্ষয়িত্বাথ প্রক্ষিপেৎ করশুদ্ধয়ে ইত্যমদাকল্লাই্টমপটল-বচনাচ্চ। অস্ত্রমন্ত্রঃ ফট্কারঃ পূর্ব্বএব দর্শিতঃ।

যত্ত শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাকারেণ অস্ত্রমন্ত্রস্ত তাংসভূতঃ নতু কেবলফট্কারঃ অস্ত্রায় ফড়িত্যক্ত্রা ভাময়েদ্দাক্ষণং করমিতি কুম্বসম্বর্বচনাৎ অতএব যত্রযত্রাস্ত্রাদিপদেনাভিধানং তত্ততত্ত্র তদঙ্গভাস্তাদিমন্ত্রা গ্রাহ্যাঃ নতু ফট্কার্মাত্রম্ উক্তবচনাৎ। ন চৈবং পাদ্যং পদাস্থুজে দদ্যাৎ দেবস্থা হৃদয়েমুনেত্যাদাবঙ্গ-মন্ত্রদানপ্রদঙ্গঃ নিরাকাঞ্জত্বাৎ। নচ মন্ত্রোদ্ধারে অতিপ্রদঙ্গঃ **অঙ্গ**মন্ত্রগ্রাহকাভাবাৎ মন্ত্রোদ্ধারানন্তরমেবা**ঙ্গমন্ত্রোদ্ধারাৎ**। কচিদস্ত্রপদেন কচিৎ ফট্কারপদেনোদ্ধরেচ্চেত্যুক্তং তদতী বাযুক্তংপশ্যামঃ এশাস্থাং নিক্ষিপেদেতৎশরবীজেন পার্বতীতি গন্ধর্বতন্ত্রাস্টমপটলবচনে শরবীজেন তৎপুষ্পপ্রক্ষেপ-বিধা নাৎ। নতু শরশকেন অস্ত্রায় ফড়িতি মন্ত্রঃ কেনাপ্যুদ্ধৃতঃ সর্ববৈত্রেব শরশব্দস্থ ফট্কারমাত্রবোধকত্বাচ্চ। কুম্ভদম্ভক বচনস্তু কুম্বসম্ভবোহগস্ত্যঃ তৎসংহিতৈকাদশাধ্যায়ীবৈত দ্বচনমস্মাভিরালোচিতং তভু বহ্নিপ্রাকারচিন্তনবিধায়কবচন নতু করমার্জনপ্রযোজকমিতি।

শাক্তেযু প্রকারান্তরং যথা শাক্তানন্দতরঙ্গিণীধৃত গান্ধর্কে। গৃহীদ্বা রক্তপুষ্পঞ্চ স্থগন্ধং সাধকোত্রমঃ। অনে

নৈব তু মন্ত্রেণ পুষ্পং হস্ততলস্থিতম্। সম্মার্জ্য সব্যহস্তেন বামেন পাণিনা ততঃ। নিৰ্মঞ্য কামবীজেন চান্ত্ৰায় বাগ্-ভবেন তু। ঐশাস্থাং নিক্ষিপেদেতৎ শরবীজেন পার্ব্বতীতি॥ ততঃ শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাধৃত-নৃসিংহকল্পে—করশুদ্ধিং সমাপ্যাথ কুৰ্য্যাতালত্ৰয়ং ততঃ। উৰ্দ্ধোৰ্দ্ধমন্ত্ৰণ দিথন্ধমপি দেশিকঃ। তেন মস্ত্রেণ মন্ত্রী তু রক্ষাং কুর্য্যাৎ সমস্তত-ইতি॥ তালত্রয়মিতি ততু তর্জনীমধ্যমাভ্যাং তথাচ <mark>শাস্তবী-</mark> তত্ত্বেংউমপটলে—তর্জনামধ্যমাভ্যাঞ্চ উদ্ধতালত্ত্বয়ং ততঃ ইতি॥ স্পন্টমাহ মহানির্বাণতন্ত্রে পঞ্মোল্লাদে—তর্জনী-মধ্যমাভ্যাঞ্চ বামপাণিতলে শিবে। উদ্ধোদ্ধতালত্ৰিতয়ং দ্বা দিথন্ধনং ততঃ। অস্ত্রেণাচরেদিতি শেষঃ দিথন্ধনমিতি নারাচমুষ্ট্যুদ্ধৃত-তর্জ ভা দশদিশি অস্ত্রমন্ত্রভাসঃ। তছুক্তং প্রয়োগসারে—আচ্ছাদ্য দিক্ষু তর্জন্তা জ্যেষ্ঠাগ্রস্থালিতা-গ্ৰয়েতি॥ তথা শ্ৰীতত্ত্বনিস্তামণো পঞ্চদশপ্ৰকাশে—আচ্ছাদ্য দিকু তর্জন্যা জ্যেষ্ঠামূলাদিতালকা। অস্ত্রমূদ্রেয়মাখ্যাতা দিশাং প্রাগাদিবন্ধন ইতি। জ্যেষ্ঠাঙ্গুলিতর্জ অঙ্গুলিকরণেন মূলাদিতালকা মূলাদে তালকা যস্তা এবংভূতা সতী অস্ত্ৰ-মুদ্রেত্যর্থঃ। মূলাদগ্রপর্যন্তং তালবিশিক্টা সতীতি যাবৎ॥ খাদিপদেনাগ্রপর্যান্তপরিগ্রহঃ॥ ততুক্তং শিবার্চ্চনচন্দ্রিকা-য়তপ্রয়োগসারে—আয়ুধা দিক্ষু তর্জ*ন্*যাঙ্গুষ্ঠতালেন বে**উ**য়ে-নিতি। তথা মন্ত্রদর্পণে—অস্ত্রেণ গন্ধপুষ্পাভ্যাং করে। সংশোধ্য সাধকঃ। উদ্ধোদ্ধতালত্রিতয়ং দত্ত্বা ছোটিকয়া দিশাম্। কৃত্বা বন্ধনমাগ্লেয়ং প্রাকারং বারিধারয়া। চতুর্দিকু মরেমন্ত্রী বহ্নিবীজং সমুচ্চরনিতি। শ্রীতত্ত্বচিস্তামণ্যক্ত-

বচনেন প্রাগাদিতো দিখন্ধনমপি দর্শিতম্।। বিশ্বসারে দিতীয়পটলে—আত্মানং রক্ষয়েত্তত্ত ব**হ্নিপ্রাচীরযোগতঃ**। বহ্নিবীজৈঃ চতুর্দ্দিক্ষু প্রাচীরং ভাবয়েদ্ধিয়েতি। তত্ত্ব, অস্ত্র-মুদ্রয়া। তল্লক্ষণমুক্তং রাঘবভট্টেন—ত্রিশূলাগ্রো করো ক্বত্বা ব্যত্যস্তাবভিতো নয়েৎ। অস্ত্রমুদ্রেয়মাখ্যাতা বহু-প্রাচীরলক্ষণেতি। এবং শ্রীতত্ত্বচিন্তামণাবপি॥ অত্র শ্রীবি-জায়াং মন্ত্রবিশেয়ো যথা তত্ত্বৈব পঞ্চদশপ্রকাশে—ত্রৈলোক্যং রক্ষ রক্ষেতি হুঁ কট্ স্বাহেতি কীর্ত্তিঃ। তারাদিকোহয়ং মন্ত্রঃ স্থাদগ্নিপ্রাকারসংজ্ঞক ইতি॥ বৈষ্ণবে তু ত্রিতাল-দিগ্বন্ধ-বহ্নিপ্রাকারচিন্তাস্ত মন্ত্রবিশেষো গোতমীয়ে২ঊমা-ধ্যায়ে—ওঁনমঃ স্লদর্শনায়েত্যুক্ত্বাস্ত্রেণ চ দেশিকঃ। তত-স্তেনৈব জনিতং তেজো রক্ষত্বিতি স্মরেদিতি॥ তথা নারদ-পঞ্চরাত্রে তৃতীয়রাত্রে চতুর্থাধ্যায়ে রাঘবভট্টপ্পতং—প্রণব-হুদোরবসানে সচতুর্থীস্থদর্শনং তথাস্ত্রপদঞ্চ উক্ত্যা ফড়ন্তমনুনা কলয়েচ্চ দশ হরিত ইতি। পূর্ব্বাদিক্রমেণ কলয়েদিত্যর্থঃ॥ তত্র শ্রীরামমন্ত্রে বিশেষমাহাগস্ত্যসংহিতায়ামেকাদশাধ্যায়ে— ততো দেবং নমস্কৃত্য কুর্য্যাতালত্রয়ং পুনঃ। ওঁ রশ্চাস্ত্রায় ফট্ চোক্ত্রা ভ্রাময়েদ্দিশিং করম্। ততস্ত চিন্তয়েদন্তর্দেকং স্থানত্রয়ান্তরে। জ্যোতির্ময়মনুস্যুতং সত্যজ্ঞানপ্রথাত্মকম্। আত্মনঃ পরিতো বহ্নিপ্রাকারং ত্রাণনায় চ। ভূতপ্রেতপিশা-চেভ্যো বিধায় তদন্তরম্। অদ্তিঃ পুষ্পাক্ষতৈ শৈচব বহিং-বীজাস্ত্রমন্ত্রিতঃ। প্রক্রিপেৎ পরিতো মন্ত্রী ভয়বিত্ননিরুত্তয়ে ইতি। এবমন্তাদাং বিশেষোহকুসন্ধেয়ঃ।

যতু দারপালপজাদিতো ভূতওদ্ধ্যারস্তান্তকর্মণো নানা-

তন্ত্রেম্বাস্থলান্যবৈলােয়াভ্যাং বৈপরীত্যং দৃশ্যতে তহুভয়ক্ত শাস্ত্রসিদ্ধর্যাৎ কর্ত্ব রিচ্ছৈব তৎপ্রতিপত্তো প্রয়ােজিকেতি দিদ্ধান্তঃ। এবঞ্চ বক্ষামাণপার্ক্রাপর্যারপেণাবস্থিতস্মভূতশুদ্ধা-দিস্বেন্টদেবতাধ্যানপর্যান্তবিবিধকর্মণােহিপি কচিদিছাবিকল্পেন কচিদ্ধৈন্ধবাহ্যপাসকভেদেন চ ব্যবস্থোপপাদনীয়া। ততু-পায়ঃ স্বন্ধকলালােচনয়া অনায়াসলভ্যন্তাৎ গ্রন্থবাহ্লাভ্যা স্থগমজ্ঞানেন চোপেক্ষিতঃ। তেম্বপি যেষাং যেযামবশ্যস্তাব-প্রতিপাদকানি তান্যেব যথাপ্রজ্ঞং যত্নতো মীমাংসয়িষ্যামঃ।

এতছঃক্তেঃ প্রামাণ্যার্থং কতিপয়বচনানি প্রতিপাদয়ামঃ। যথা শ্যামারহস্যধৃতস্বতন্ত্রতন্ত্রে—প্রাণায়ামত্রয়ং কৃত্বা ভূত-শুদ্ধিমথাচরেদিতি। কালীতত্ত্বেংপ্যেবম্।। তথা শ্যামার্চন-চক্রিকাধৃতদারদংগ্রহে—ভূতশুদ্ধিং ততঃ কুর্য্যাৎ প্রাণায়াম-পুরঃসরমিতি॥ কমলাতন্ত্রে পঞ্চমপটলে তু। পূর্ব্বোক্ততন্ত্র-বৎ কুর্য্যাৎ পঞ্ছুতবিশোধনম্। প্রাণায়ামং ততঃ কুর্য্যাৎ পূর্ব্বতন্ত্রানুসারত ইতি। তথা বারতন্ত্রে চতুর্থপটলে— ভূতশুদ্ধিং পুরা কুর্য্যাৎ পূজাযোগ্যা যথা ভবেৎ। প্রাণায়ামঞ্চ বিধিবদৃষিন্যাসং সমাচরেদিতি॥ মহানির্ব্বাণতন্ত্রে পঞ্মো-ল্লাদে তু—ভূতশুদ্ধিমভিধায়—ইত্থং লিপিং প্ৰবিশ্ৰস্থা প্ৰাণা-সমাচরেদিতি। অন্নদাকল্পে ষষ্ঠপটলে২প্রেবম্॥ তোড়লতন্ত্রে কালীপূজাসূত্রে তু—বহ্নিনা বেঊনং কার্য্যং ভূতশুদ্ধিমথাচরেৎ। মাতৃকায়াঃ ষড়ঙ্গঞ্চ কুর্য্যাদন্তরমাতৃকাম্। মাতৃকাধ্যানমাচর্ঘ্য বাহে তু মাতৃকাং অদেৎ। পীঠন্যাসং ততঃকৃত্বা প্রাণামংসমাচরেদিতি॥ গৌতমীয়ে নবমাধ্যায়ে— ভূতশুদ্ধিৰ্মাতৃকা চ কেশবাখাস্তথা চ সা তত্ত্ৰুখানং তথা কুর্য্যাৎ প্রণায়ামস্ততঃ পরমিতি॥ তারাবিদ্যায়াং তারা-রহস্তরন্তিধৃতায়াঃ ফেংকারিণ্যাম্—ভৃতশুদ্ধিং বিধায়াথ অর্য্যাদিস্থাপনশ্বরেৎ। প্রাণায়ামং ততঃ কৃষা ঋষ্যাদিস্থাসন্মাচরেদিতি॥ এতৈর্নানাবচনৈরেকএব প্রাণায়ামঃ ক্চিন্ত্তুতুত্বেরাদাবুক্তঃ কচিৎ তৎপরং কৃত্রচিৎ ভৃতশুদ্ধিমাতৃকা-ভ্যাসানন্তরম্ কচিৎ ভৃতশুদ্ধিমাতৃকাভ্যাসবিদ্যাসানতরং কচিৎ ভৃতশুদ্ধিমাতৃকাভ্যাসকেশবকীর্ত্যাদিভ্যাসতন্ত্বুভ্যাসানন্তরম্। তারাবিদ্যায়াং ভৃতশুদ্ধানন্তরমর্ঘ্যাদিবং সংস্থাপ্য প্রাণায়ামোহভিহিত ইতি। বস্তুতন্তু একদেবতায়া নানাতন্তের্ ভ্যাসাদীতিকর্ত্ব্যতানাং পোর্ব্বাপর্ব্যেহিপি তত্ত্তন্ত্রেম্বেক্তমস্থ মতমবলম্য পূজ্যেৎ তথাহি স্বতন্ত্রতন্ত্রে সপ্তমপ্টলে। পূজা ভু বিবিধা প্রোক্তা তাম্বেক্তমমাশ্রেদিতি।

ইতি সতত্যহামহীশচক্রচ্ড়ামণিচর্চিত্চরণমণিন শ্রীমন্গোপী-মোহনপাদপদ্মামন্দমকরন্দসন্দোহানন্দিত্মনোমধুকর-শ্রীহরকুমার দেবশর্ম-স্বীর্চিত্তামণিমন্ত্রচিস্তোদর্ক-হরতত্ত্বদীধিতাবস্তমকলাপ্রকাশঃ।

অথ ভূতশুদ্ধিঃ। তস্ত নিত্যত্বমাহ শিবাৰ্চ্চনচন্দ্ৰিকা-ধ্বতাগন্ত্যসংহিতায়াম্—ভূতশুদ্ধিবিহীনেন ক্বতা পূজাভিচারবৎ। বিপরীতফলং দত্যাদভক্ত্যা পূজনং যথেতি। শ্রীমন্তগব-চহুদ্ধরাচার্য্যচরণৈর্যোগপ্রকরণে প্রোক্তত্বাৎ ভূতশুদ্ধের্যোগি-বিষয়কত্বং বদন্তি তম নিরুক্তাগস্ত্যসংহিতাবচনেন আত্ম-স্থানমনুদ্রব্যং দেহশুদ্ধিন্ত পঞ্চমীম্। যাবম কুরুতে দেবি তাবদেবার্চ্চনং নহি। আত্মা তু ভূতসংশুদ্ধিপ্রাণায়ামাদিভিঃ প্রিয়ে। ষড়ঙ্গাত্যথিল্যাদৈ দেহশুদ্ধিরিহোদিতা। দেহ-শুদ্ধিং বিধায়েত্বং ততো বৈ স্থাপয়েদসূন্। ইতি কুলার্ণব-বচনেন চ তম্ভাঃ পূজাঙ্গপ্রপ্রতিপাদনাং। অসূন্ প্রাণান্। অতএব ভূতশুদ্ধিঃ সর্বৈঃ কর্তুব্যেতি পর্যাবদিতম্।

নকু শরীরাবচ্ছিমস্ত কর্মাণো জীবাত্মনঃ কর্তৃত্বং শ্রেয়তে মূলাধারাত্ততো জীবং ব্রহ্মমার্গেণ দেশিকঃ। হংসেন পুষ্ণরস্থানে পরমাত্মনি যোজয়েদিতি তন্ত্রসারপ্ত্ত-বারাহী-তন্ত্রবচনেন ভূতশুদ্ধো তস্ত কর্মাত্বপ্রতিপাদনাৎ কর্তৃত্বে কো নির্দিশ্যতে ইতি চেৎ সত্যং মনসঃ সারথ্যে নিযুক্তত্বাৎ তব্যৈব কর্তৃত্বং প্রতীয়তে মনস্তত্র মহেশানি সার্থিঃ সর্ব্বতঃ সদা। সর্বাং মনসি কর্তৃব্যং ভূতশুদ্ধ্যাদিকং প্রিয়ে ইতি ভূতশুদ্ধিতন্ত্রত্রয়োদশপটলবচনাৎ।

ন চ আকাশেন সহানীয় আজ্ঞাচক্রস্থমানসে। খং বিলাপ্য মনো নাদে ধ্বনে ধ্বনিং বিলাপ্য চেতি পিচ্ছিলাতন্ত্রঅয়োদশপটলবচনেন মনসোহপি লয়দর্শনাজ্জীবাত্মানং
কুলকুণ্ডলিন্তা সহ পরমশিবসংযোগে তৎকর্ত্ত্বানুপপত্তিরিতি
বাচ্যস্। মনস্তত্ত্বং তদুর্দ্ধঞ্চ মনঃ সর্বত্র ব্যাপকম্। বিভূত্বাঘ্যাপকত্বাচ্চ সাক্ষান্তিপু্সয়ং মনঃ। যাবন্তি পরমেশানি
ভূতশুদ্ধ্যাদিকানি চ। তানি সর্বাণি দেবেশি মনস্তেব-

প্রলীয়তে। সর্ব্বিগামি সর্ববেতৃ সর্ব্বসাক্ষি সদা মনঃ। পাপপুণ্যে মহেশানি বদ্ধং ন স্থান্মনঃ প্রিয়ে। মনসা বাক্যমুৎপদ্ধং মনস্থেব প্রলীয়তে। মন্ত্রং বিভা মহেশানি মনসা জপমাচরেদিতি ভূতশুদ্ধিতন্ত্র-চতুর্থপটলবচনেন মনসঃ সর্ব্বব্যাপিত্বেন বিভূত্বেন চ তস্থা নিত্যত্বপ্রতিপাদনেন কর্তৃত্বাবগমাৎ। পিচ্ছিলাতন্ত্রবচনতাৎপর্য্যার্থস্থ যথা আকাশস্থা নিত্যত্বেহপি ঘটে ভগ্নে ঘটাকাশধ্বংসভানবৎ পঞ্ছৃতাদীনাং নাশত্বেন তদবন্দ্রিমনসোহপি নাশভানস্থীকারঃ।

নচ ভূতশুদ্ধিতন্ত্রোক্তবচনেন যদ্মনসঃ সর্ক্ব্যাপিত্বং ন তিমিত্যত্বে তন্ত্রম্। আকাশস্ত তথাত্বেহপি তন্মাদেতস্মাদায়ন আকাশঃ সম্ভূত ইত্যাদিশ্রুত্যা তস্ত্রোৎপত্তিমত্ত্বেন নাশ্যত্বা-বগমাদিতি বাচ্যম্। সাধারণনিয়মেনোৎপত্তিমতাম্ ধ্বংসদর্শনেন মনস উৎপত্ত্যভাবেন নিত্যত্বাৎ মৈবং প্রাগভাব-স্ত্রোৎপত্ত্যভাবেহপি নাশদর্শনাৎ। তন্মনোহস্ক্রৎ ইত্যাদি শ্রুত্যা তস্ত্রোৎপত্তিদর্শনাচ্চ।

উচ্যতে ধ্বনো মনসি প্রলীনে তৎসঙ্গিনী ভবপাশনিক্তনী উন্মনী তত্যা নাশাভাবাৎ সৈব কর্ত্রীতি। তথাচ ভূতশুদ্ধিতিরে পঞ্চমপটলে—মনসা জীবসংযুক্তঃ কর্ম্মকর্ত্তা সদা প্রিয়ে। মনঃ প্রবিভবেদেব উন্মনীসহিতং যতঃ। উন্মনী চ মহেশানি ভবপাশনিক্তনী॥ জীবস্থা পরমেশানি গুপুতত্ত্বং শৃণু প্রিয়ে। মূলাধারে স্থিতং জীবং প্রদীপকলিকাক্তিম্। প্রণবেন সমাক্ষ্য দাদশান্তং নয়েৎ স্থবীঃ। আকাশে চ মহেশানি স্থথমোক্ষমবাপুয়াৎ। হুৎপদ্মে চ মহেশানি পরং ব্রেশ্ধানিরীক্ষণম্। আজায়াং পরমেশানি প্রথমং গুরুদর্শমম্।

ততো জীবং মহেশানি মূলাধারং নয়েৎ প্রিয়ে। মনঃ-সার্থিনা দেবি উন্মনী ভবনাশিনী॥ সংহত্যা সদস্ৎ কর্ম্ম জীবঃ সর্ববং করোতি হি। মনঃশারথিনা জীব উন্মনী মন-সার্থিরিতি॥ উন্মতা মনঃসঙ্গিত্বে প্রমাণনাহ-পুরশ্চরণ-রসোলাসে নবমপটলে—মনসঃ সঙ্গিনী সাক্ষাত্রমনী পরমে-শ্বরি। উন্মনী যা মহেশানি ভবপাশনিক্নন্তনী। সা স্ত্রী-রূপেণ চার্ব্বঙ্গি সর্বাং ব্যাপ্য তু তিষ্ঠতীতি।

যদা সর্বভূতসংশ্রয়ঃ পরমপবিত্রো জ্ঞানাত্রা যত্নবান্সয়ং ভূতশুকোঃ কর্ত্তে। তহুক্তং কালীকুলামূততন্ত্রে দ্বিতীয়-পটলে—জ্ঞানাগাথ স্বয়ং যতঃ পবিত্রো ভূতসংশ্রয়ঃ। হৃদ-াঙ্গং সমনুনা নীত্বা জীবং মুখান্বজে। হূঁকারেণ সমুখাপ্য কু ওলীং পরদেবতামিত্যাদি।

ষট্চক্রজানং বিনা ভূতগুদ্ধেরপারকত্বাভদেবাদে নির্ন্ধ-পাতে। রুদ্রজামলাদাবতীব বিস্তারেণ নির্বাণতন্ত্রাদৌ নংক্রেপেন তৎ প্রকরণং দেদীপ্যতে। যদ্যপি যোগিনা-নপাগম্যকোশ্মাকং বুদ্ধিপ্রবেশস্ত স্তদূরপরাহতস্বাৎ তন্মী-মাংসাপ্রবৃত্তিঃ কেবলহাস্থাম্পদায়ৈব তথাপি প্রায়শো নিবন্ধকারাণাং কথঞ্চিত্রক্তিদশনৈনোচিত্যবোধাৎ ভূতশুদ্ধ্য-প্রোগিনামুপস্থিতসন্দেহানাং স্বৃদ্ধ্যত্মসারেণ কাচিন্মীমাংসা ক্রিয়তে। পিচ্ছিলতিন্ত্রে যোড়শপটলে—মূলাধারাৎ সমুৎ-পন্নং মেরুদণ্ডং সনাড়িকম। মেরোর্কাহে বামভাগে ইড়া চন্দ্রস্বরূপিণী। পিঙ্গলা দক্তিণে ভাগে সূর্য্যরূপা প্রকীতিতা। মেরুমধ্যে স্থিতা নাড়ী মূলা দাব্রব্সরন্ধুগা। স্বযুদ্ধা বামাবর্ত্তেন বেষ্টিতং বিসতস্তবৎ। স্লয়ন্নান্তর্গতা চিত্রা

তন্মধ্যে বক্তিণী মতা। তন্মধ্যে ব্রহ্মনাড়ী তু তন্মধ্যে ব্রহ্ম-রন্ধ কম্। তেনৈব বন্ধ না দেবী যাতায়াতং করোভি চেতি। হুষুদ্ৰেতি হুষুন্নায়া নাড্যা বামাবর্ত্তেন বিসতস্তবৎ মুণাল-সূত্রবৎ তয়া বেষ্টিতং শিবলিঙ্গমিত্যর্থঃ। তথাচ শাক্তানন্দ-তরঙ্গিণ্যাং—ব্রহ্মরন্ধ্রস্ত তমধ্যে হরবজ্রাৎসদাশিবম্। বামা-বৰ্ত্তক্রমেণৈব বেষ্টিতং বিসতস্তবদিতি। সদাশিবমিত্যত্ত বাণলিঙ্গবিশেষণত্বেন নপুংসকত্বস্। অত্র চিত্রান্তর্বর্তিনী বজ্রিণাক্তা তক্মধ্যে বজ্রিণী নাড়ী দ্বাঙ্গুলোদ্ধা ততঃ প্রিয়ে। তদস্তশ্চিত্রিণী নাড়ী বিসতস্তৃপমা প্রিয়ে হাঁ তন্ত্রচূড়ামণি-বচনে তু বক্সিণ্যস্তশ্চিত্রিণীনাড্যাঃ স্থিতিদর্শনেন পরস্পর-বৈপরীত্যেহপি কেবলসংজ্ঞামাত্রভিন্নত্বাৎ ন কাচিৎ ফল-হানিঃ। ব্রহ্মরন্ধ্রকমিতি ব্রহ্মপথমিত্যর্থঃ। তছুক্তং ভাব-চূড়ামণো—ব্রহ্মরন্ত্রগতা যশ্মাত্রশ্বাদ্বহ্মপথং দেবী কুণ্ডলিনীত্যর্থঃ। পিচ্ছিলাতক্ত্রে তৎপটলে—অধশ্চোদ্ধ⁶ স্থ্যায়াঃ সহস্ৰদলযুগ্মকম্। শুক্রং রক্তং তয়োর্ব্বর্ণমূদ্ধাণো-মুখমীশ্বরি। ষট্ পদ্মানি তয়োর্মধ্যে স্বন্ধা গ্রন্থিসংযুতা। অধোমুখানি গৃহিণামূদ্ধবিক্তাণি যোগিনামিতি। অধশ্চোর্দ্ধ-মিত্যাদি স্ব্মায়া অধউর্ধু: সহস্রদলপল্বয়মিত্যর্থঃ। তয়ে-র্মধ্যে ষট্পদ্মানি সহস্রারং সহস্রারেণ শরাবদ্বয়বৎ পুটী-কৃতমিত্যর্থঃ। তত্ত্র স্থয়ুমায়া উদ্ধন্থসহস্রারপদ্মমধোমুথং 🖷 ক্লবর্ণম্ অধঃস্থসহস্রারস্ত উদ্ধৃমুধং রক্তবর্ণমিতি নিক্ষর্ণঃ।

যন্ত শামার্চনচন্দ্রিকাকাররত্বগর্ভেণ তম্মাদূর্দ্ধ্বমধোমূর্থং বিকসিতং রক্তং সহস্রছনং নিত্যানন্দময়ীং সদাশিবপুরীং শক্তিং নমঃ শাশ্বতীমিত্যক্তং তৎ কিঞ্জন্ধাভিপ্রায়েণ নত্ তৎপদ্মতা রক্তবর্ণস্বয়। তথাচ বিশ্বসারতন্ত্রে দ্বিতীয়পটলে—প্রাতঃ শিরসি শুক্লেহজে দ্বিনেত্রং দ্বিভূজং গুরুমিতি
সহস্রারে হিমনিভে সর্ব্বর্ণবিভূষিতে ইতি চ॥ সারসমূচ্চয়ে
হপি—বিসর্গাদধন্তাৎ সহস্রারপদ্মধাবক্ত্রনারক্তকিঞ্জন্ধপূঞ্জং ক্রন্থেগহীনন্ত্রিশৃঙ্গন্তদন্তঃ স্ফুরদ্রশিজালঃ স্থধাংশুঃ
সমান্তে ইতি। স্বর্মা গ্রন্থিসংযুতা ইতি স্বর্মায়া আবরণরূপেণ গ্রন্থিতা নাড্যঃ উপরিভাগন্ত প্রাধান্তাৎ গ্রন্থিসংযুক্তবেন বদনং তদ্বক্ষদারমিত্যর্থঃ। তছকং যোগচিন্তামণো—ব্রক্ষদারং তদান্তে প্রবিলস্তি স্থাসাররম্যপ্রদেশং
গ্রন্থিয়নং তদেতদ্বন্মিতি স্বর্মাখ্যনাড্যালপন্তীতি।

যট্চক্রস্থ গ্রথনপ্রকারমাহ তত্ত্রব—তন্মধ্যে চিত্রিণী সা প্রণবিলিসিতা যোগিনাং যোগগন্যা লৃতাতন্ত্রুপমেয়া সকলসরসিজান্ মেরুমধ্যান্তরস্থান্। ভিত্রা দেদীপ্যতে তদ্প্রথনরচনয়া শুদ্ধবাধপ্রবোধা তস্মান্তর্র ক্ষনার্ড়ী হর-মুথকুহরাদাদিদেবান্তসংস্থেতি। তন্মধ্যে বজ্ঞামধ্যে চিত্রিণী নাড়ী স্থিতা প্রণবিলিসিতা প্রণবাকারা ধনুরাকারেতি যাবং। তত্ত্বং তন্ত্রচ্ডামণোঁ—চাপাকারে স্থিতে আত্যে স্বয়ুমা প্রণবাক্তিরিতি। লৃত্যানাং মর্কটীনাং জালসূত্রবং সকল-সরসিজান্ মূলাধার-স্বাধিষ্ঠান-মণিপুরকানাহত-বিশুদ্ধাজ্ঞাখ্যানি পদ্মানি। মেরুমধ্যান্তরস্থান্ মেরুমধ্যে স্বয়ুমা তন্মধ্যে বজ্ঞা তৎস্থান্ প্রথনরচনয়া প্রথনপ্রকারণ ভিত্রা ভেদং ক্যা যথা সচ্ছিদ্রমণীনাং সূত্রপ্রচালনর্নপেণ ভেদং ক্যা যথা সচ্ছিদ্রমণীনাং সূত্রপ্রচালনর্নপেণ ভেদং ক্যা বাধ্যা তু যা নাড়ী কথিতা যোগিত্বর্লভা। তন্ত্রা মধ্যে স্থিতা

বজ্ঞা তন্মধ্যে চিত্রিণী শুভা। তত্র স্থিতানি পদানি সর্জ্রং
তদনন্তরমিতি ॥ শুসামার্চনচন্দ্রিকাধৃততন্ত্রচ্ড়ামণাবপি—
মেরোর্কামে স্থিতা নাড়ী ইড়া চক্রযুতা শিবে। দক্ষিণে
সূর্য্যশংযুক্তা পিঙ্গলা নাম নামতঃ। তদ্বাহে তু তয়োর্মধ্যে
স্থ্যু বহুিসংস্থিতা। তন্মধ্যে বজ্বিণী নাড়ী দ্বাঙ্গুলোর্দ্ধ্য ততঃ
প্রিয়ে। তদন্তন্চিত্রিণী নাড়া বিসতন্ত্রপমা প্রিয়ে। তয়া সংগ্রথিতান্থেব ষট্পদানি প্রিয়ংবদে ইতি।

নমু যোগচিন্তামণি-কালীকুলামূততন্ত্ৰ-শ্যামার্চনচন্দ্রিকা-ধৃত-তন্ত্রচ্ডামণিবচনের চিত্রিণী-নাড্যা মূলাধানাদি-ষট্-পদ্মানি গ্রেথিতানি দৃশ্যন্তে বক্ষামাণশাক্তানন্দতরঙ্গিণীধৃতবচন-নিগমকল্পলতাবচনয়োস্তানি প্রবৃধাগ্রেথিতান্তোবালোক্যন্তে চিত্রিণীনাড্যাঃ প্রবৃধান্তব্বভিতয়া একবস্কৃত্রস্থানস্থিতে-রসম্ভবান্মহাবিরোধাপভিঃ।

উচ্যতে বট্পদ্মানি চিত্রিণী-নাড্যা গ্রথিতান্তেব পূর্ব্বোক্ত-যোগচিন্তামণ্যাদিবচনপ্রতিপাদিতানি। যট্পদ্মানাং স্বস্থ-স্থানস্থিতয়ে মূলে উপরিভাগে চ স্থান্মা নাড়ী গ্রন্থিরূপেণ্ পরিণতা। তত্তকং শাক্তানন্দতরঙ্গিণ্যং—স্থান্মাগ্রন্থিসংস্থানি ষট্পদ্মানি যথাক্রমাদিতি। তথা নিগমকল্পলতায়াং ত্রিংশ-ভ্রমপটলে—স্থানাগ্রথিতান্তেব পদ্মানি ষট্ স্করোভ্রমে ইতি। কিঞ্চোক্রপিচ্ছিলাতন্ত্রবচনে পদ্মানি গৃহিণামধোবক্ত্রাণি নির্দ্দিন্টানি তত্র কথং শিবাদীনামবস্থিতিঃ সঙ্গছতে ইত্যাহ। পুরশ্চরণরসোলাসে পঞ্চমপটলে। শ্রীদেব্যুবাচ—দেবদেব মহাদেব সন্দেহো জায়তে মম। ছিন্ধি ছিন্ধি যোগসিদ্ধে সন্দেহং মম সাম্প্রতম্ম। অধ্যেমুখে মহাপদ্মে গ্রেরাঃ দ্বিতিঃ কথং বদ। বরাটসহিতং পদ্মং সদা বাধোমুখন্থিতম্।
কিমাচারো মহাবাহো বীজকোষস্থ তদ্বদ॥ শ্রীমহাদেবউবাচ—সাধু পৃক্তং দ্বরা ভদ্রে যোগসারং মম প্রিয়ে। অত্যন্তগুহুং চার্কঙ্গি নিগদামি শৃণু প্রিয়ে। ইত্যাদ্যপক্রম্য
উপসংহারে বীজকোষস্থ দেবস্থ উর্দ্ধৃশক্তিময়ং যতঃ।
অধঃশক্তিযুতং পদ্মমন্ত্রানং প্রমেশ্বরি। উর্দ্ধৃশক্তিযুতং
ভদ্রে বীজকোষং ন চান্তথেতি।

নত্ম মূলাবারানাহতাজ্ঞাচক্রেয়ু স্বস্বপদ্মাধিষ্ঠিতশিবশক্ত্য-তিরিক্তস্বয়স্তুলিঙ্গবাণালিঙ্গেতরাখ্যানি তদন্তঃস্থিতানি তৈ-র্জাবাররোধস্থ কৃত্রাৎ কথ্ং কুলকুগুলিন্যা গমনং সম্ভ-বতীত্যাহ। শাক্তানন্দতরপ্পিণ্যাং—ইতরাখ্যং হি কন্দর্প-মাধারে তত্রিকোণকে। স্বয়ন্তুলিঙ্গং তন্মধ্যে সরন্ধং পশ্চিমাননমিতি। শ্যামার্চনচন্দ্রিকাধ্বতমায়াতন্ত্রেহপি—ভিত্তু। নিঙ্গত্ররং দেবী শক্তিমার্গেণ শাশ্বতী। তত্তদ্রপেণ চক্তেণ নিকলং প্রাস্থ নির্তেতি॥ কিঞ্চ পিচ্ছিলাতন্ত্রে ত্রয়োদশ– পটলে—কুকোভানে করে। স্বাক্ষে মূলাধারস্থকুগুলীম। প্রস্থপ্তভুজগাকারাং সার্দ্ধত্রিবলয়ান্বিতাম্। প্রবন্দহনযোগাৎ স্বয়স্তুলিঙ্গবেষ্টিনীম্। হংসেন মন্ত্রনা দেবি কূর্চ্চবীজেন বা প্রিয়ে। তাং চৈতন্মবর্তীং কৃষা পৃথিব্যা দার্দ্ধমানয়ে-দিতি॥ হংসকৃষ্ঠবীজয়োগ্রহণং দ্বিজাতিশূদ্রভেদেন জা-নীহি। হংসাখ্যং ন শ্বরেৎ শূদ্রো ভূতশুদ্ধো কদাচনেতি তন্ত্রসারধ্বত-বারাহীয়াৎ॥ তত্রাপি হংসমন্ত্রস্ত শক্তিবিষয়ে (**ভ**রঃ ।

পুংদেবতাবিগায়ে তু গোতমীয়ে নবমাধ্যায়ে—চিস্তয়েৎ

পুনরাধারং কনকাভঞ্জুর্দলম্। তন্মধ্যে চিন্তয়েদ্যোনিং চক্রা-কাগ্রিসমন্ত্যতিম। তদন্তশ্চিন্তয়েশান্ত্রী জীবাত্মানং সমাহিতঃ। জবাবন্ধ কসদৃশং তড়িৎকোটিসমপ্রভম্। সূর্য্যকোটি-প্রতী-कामः हे छत्यः त्वारिनी छत्तम्। अमी अक्तिकाकादः कूछ-লিভা সমং তয়া। হৃষ্মাবন্ধনা সোহহমিতি মঞ্জে। যোজয়েদিতি॥ এতদ্বচনস্ত জীবাত্মানং স্বকেতনাম লাধারং সমানীয় কুলকুগুলিন্<mark>তা সহ যোজ</mark>য়েদিভূ্যহেনাশ্বয়ঃ _॥ জীবজপ্যেন মন্ত্রেণ জীবাত্মানং স্বকেতনাৎ। মূলাধারং সমানীয় দণ্ডবীজেন চেতয়েদিতি শ্যামার্চনচন্দ্রিকাগ্গততন্ত্র-চুড়ামণিবচনে তথাদর্শনাৎ। জীবজপ্যেন হংসমন্ত্রেণেত্যর্থঃ। স্বকেতনাৎ হৃদয়াৎ জীবস্থ নিকেতনং হৃদয়মেব। তথাচ ভূতশুদ্ধিতক্ত্রে দ্বিতীয়পটলে—হৃৎপদ্মং পরমেশানি শুদ্ধ-সত্ত্রায়কং সদা। প্রদীপকলিকাকারং তম্মধ্যে বৃক্ষরূপিণম্। বেষ্টিতং দাদশৈর্ব বৈর্ণঃ সর্ব্বশক্তিময়ং প্রিয়ে। সংমুখে তস্থ দেবেশি জীবস্তিষ্ঠতি সর্ব্বদেতি।

তত্র পরমশিবপ্রাপণানন্তরং দ্রীপুংদেবতাভেদাৎ হংসঃ
সোহহমিতি মন্ত্র্যোর্বিলোমেন পুনহ্নদি জীবালানমানয়েং।
তথাচ গৌতমীয়ে নবমাধ্যায়ে—স্বস্থানে হংসমন্ত্রেণ পুনস্তেনৈব বর্মা। জীবং তত্ত্বানি চানীয় স্বস্থানে স্থাপয়েত্তইতি।
শিবার্চনচন্ত্রিকাধূতযোগিনীতক্ত্রে চ—সোহহমেবং সমাভাষ্য জীবং হৃদি সমানয়েদিতি। শ্রীরস্থ ক্ষুদ্রতয়া ষট্চক্রচন্তরনাসম্ভবেন তৎপ্রতিপত্তী দৃষ্টান্তমাহ নির্ববাণতক্ত্রে
দশমপটলে—যথাদর্শস্থ গর্ভে চ পরিপশ্যতি পর্ববতম্।
সহস্রারে মহাপদ্যে তথা দেবং বিচিন্তয়েদিতি।

অথ ভৃতশুকো স্বশরীরনাশে পুনরুৎপত্যসম্ভবশিক্ষায়ামাহ:।

গুপ্তসাধনতন্ত্রে ষষ্ঠপটলে—ভৃতশুকো মহাদেব যদি দেহস্ত
নাশরেৎ। কৃত্র স্থানে ভবেৎ স্প্তিরমৃতঃ কৃত্র সঞ্চরেদিতি
নিবীপ্রশানন্তরং শ্রীমচ্ছিববাক্যম্—বামকুকো স্থিতং পাপপুরুষং কজ্জলপ্রভম্। তম্ম সন্দহনার্থায় মহতী প্রকটীরুতা।
লিঙ্গদেহো মহেশানি তম্ম দেহো ন সংশয়ঃ। পাপদেহং
ভবেদ্ধাং স্বদেহং নৈব নাশরেদিতি।

অপ্রক্ষীকৃতভূতৈর্লিঙ্গশরীরং মনোবুদ্ধিভ্যামুপেতং জ্ঞানে-ন্দ্রিয়পঞ্চক-কর্ম্মেব্রিয়পঞ্চক-প্রাণাদিপঞ্চক-সংযুক্তং তত্তক্তং বেদান্তপরিভাষায়াম্-পঞ্চপ্রাণমনোবৃদ্ধিদশেন্দ্রিয়-সমন্বিতম্। অপঞ্জীকৃতভূতোখং সূক্ষাঙ্গং ভোগসাধনমিতি। मृक्यभंतीतरमव लिक्रभंतीतः, अमांगः त्वनाख्यभारखश्यूमरक्षयम्। এতচ্ছরীরস্ত প্রলোক্যাত্রানির্ব্বাহকং মোক্ষপর্যান্তস্থায়ি তন্নাশ এব পরমমুক্তিহেতো তত্ত্ববেদিনো নানোপায়মাচরন্তি অতস্তদেব দ্হনীয়ম্। তত্ত্বকং গৌতমীয়ে নবমাধ্যায়ে। গৌতম উবাচ। ভূতশুদ্ধ্যা বদ ব্রহ্মন্ কম্ম শুদ্ধিঃ প্রজায়তে। নাত্মনঃ সর্ব্ব-শুদ্ধীনাং কারণং সভু কথ্যতে। ন জীবস্থ বৃহ্মণা চ সহৈক্যং তস্ম নিত্যশঃ। ন দেহস্ম তদারভ্যানিত্যতা তস্ম কথ্যতে। মনসো নাপি শুদ্ধিশ্চ কম্ম স্থাদ্গুরুরীক্ষণম্। ইত্যাদি সংশয়ং ছিন্ধি ত্বং হি ব্রহ্মসমঃ স্মৃতঃ। নারদউবাচ। অন্তঃ-করণমধ্যে তু জ্যোতিরাত্মা প্রবর্তকঃ। নিঙ্গদেহন্ত তং প্রাহ-র্যোগিনস্তত্ত্ববেদিনং। তস্ত শোধনমাত্ত্রেণ সর্ববশুদ্ধিঃ প্রজা-য়তে। তদেব বিশ্বজননকারণং জন্মকর্ম্মণাম্। তদ্বিয়োগে উবেন্মক্তির্নান্তথা জন্মকোটিভিরিতি। অতএব পরমকারু- ণিকারাধ্যচরণশ্রীমন্মহাদেবেন গুপুসাধনতন্ত্রে লিঙ্গশরীরশু পাপদেহোপচারিকং পরিকল্প্য তম্ম সন্দহনার্থায়ানুমতম্।

যত্ত্ব ধ্বন্ধা নাসাপুটো পাপপুরুষেণ দহেত্তত্মিতি পিচ্ছিলাতন্ত্রত্র্যোদশপটলবচনং তত্ত্বদাহবোধকং তৎ পাপপুরুষ-বিশিষ্টলিঙ্গশরীরদাহপরং যো জটাভিঃ স ভূঙ্ত্তেইত্যাদিবৎ।

যদ্বা তন্মাত্রভূতকৃতোপচারিকপাপপুরুষস্থ পঞ্চীর্কতভূতোপস্থলশরীরস্থ চোৎপত্তের্ গ্রুক্তমেণ পরবৃদ্ধণি সংযোজনাদপ্যেকপ্রকারা ভূতশুদ্ধির্ভবতি। তত্তুক্তং গোতর্মায়ে
নবমাধ্যায়ে—শরীরাকারভূতানাং ভূতানাং যদিশোধনম্।
অব্যয়বৃদ্ধাসংযোগাৎ ভূতশুদ্ধিরিয়ং মতেতি। শরীরাকারভূতানাং স্থলভূতানাং পঞ্চীকৃতভূতানামিতি যারৎ।

পঞ্চীকরণপ্রকারস্ত্র আকাশমাদে বিধা বিভজ্য তয়ে বিকং ভাগং পুনশ্চতুদ্ধা বিভজ্য তেয়াঞ্চুর্পামংশানাং বাষ্ট্রান্ত্র চতুর্ভূতের সংযোজনম্। এবং বায়ুং দিধা বিভজ্য তয়ে রাকেং ভাগং পুনশ্চতুদ্ধা বিভজ্য তেয়াঞ্চুর্পামাকাশাদির সংযোজনম্ এবং তেজোহপ পৃথিব্যংশানামপি। তয়ুক্তং বেদান্তর্সারে—দিধা বিধায় চৈকৈকং চতুদ্ধা প্রথমং পুনঃ। স্বস্বেতরদিতীয়াংশৈর্যোজনাৎ পঞ্চপঞ্চতেতি। পঞ্চানাং পঞ্চাত্রকদেতীয়াংশৈর্যোজনাৎ পঞ্চপঞ্চতেতি। পঞ্চানাং পঞ্চাত্রকদেতীয়াংশৈর্যোজনাৎ পঞ্চপঞ্চতেতি। পঞ্চানাং পঞ্চাত্রকদেতীয়াংশৈর্যোজনাৎ পঞ্চপঞ্চতেতি। পঞ্চানাং পঞ্চাত্রকদেত্র স্থানাধিক্যাদাকাশাদিব্যবহারঃ। বৈশেহাাভিদ্বাদ্বস্থাদ ইতি ভায়াদিতি। ভূতানামিতি তল্মাত্রভ্রতানাম্ অপঞ্চীকৃতভূতানামিতি যাবৎ। অভ্যৎ স্থামম্। এতদেব স্পন্টয়তি অগস্ত্যসংহিতায়ামেকাদশাধ্যায়ে—ভূতানিনাম পৃথিবী জলং তেজাে মক্রদিয়ৎ। যদ্যতাে জায়তে

তশ্মিন্ প্রলয়োৎপাদনং পুনঃ। শরীরকোষভূতানাং ভূতানাং শোধনং বিছুরিতি।

তহি পঞ্ছতানাং দাহাসম্ভবাৎ ধাভূনামনেকার্থস্বীকারা-চেহ দহধাতোঃ বিলানার্থাহ্বগম্যতে। এবঞ্চ বামপার্শ্বস্থিতং পাপপুরুষং কজ্জলপ্রভমিত্যাদি গোত্যায়তন্ত্রবচনমপি লিঙ্গ-শরীরাভিপ্রায়েণ নিরুক্তগুপ্রসাধনতন্ত্রবচনেক্যোগাদিত্যাস্তাং বিস্তরঃ।

তারাদি-বিভানাং সম্বয়ে ভূতশুদ্ধেবিশেষস্ত তত্তৎকল্পে-২কুসন্ধেয়ঃ।

ভূতশুদ্ধানুপূর্বিকেতিকর্তব্যতায়াঃ সর্ব্য প্রলভন্নাদিহোপেক্ষ্য তৎসারো নিগদিতঃ কিন্তুপ্রদেশীয়সর্বসাধারণৈরেতদ্ভূতশুদ্ধাচরিতত্বেহপি তৎসম্পূর্টেঃ প্রভূত্তরয়াৎ স্বযমনি
সর্বৈরেব পরিভূয়তে। অতএবানায়াসসাধ্য-মন্ত্রোপাভভূতশুদ্ধিরিহ নিরূপ্যতে। যথা ভূতশুদ্ধিতত্বে পঞ্চমপটলে—
শুণু দেবি প্রবক্ষ্যামি ভূতশুদ্ধেন্ত কারণম্। জ্যোতির্মপ্রং
মহেশানি অন্টোভরশতং জপেৎ। তারং ব্যোমায়িমনুরুগ্
দণ্ডী জ্যোতির্মন্থর্ম তঃ। এতজ্জানপ্রভাবেন ভূতশুদ্ধেঃ ফলং
লভেদিতি। তারং প্রণবঃ, ব্যোম হকারঃ, অয়িঃ রকারঃ,
মকুশ্চভুদ্দশন্বরঃ, দণ্ডী অনুস্বারঃ, তেন ওঁ ক্লোং ইতি মন্ত্রঃ।
ক্ষুশ্বোক্তভূতশুদ্ধিস্থাগ্যতত্ত্বিলাসাদাবনুস্বন্ধয়া।

অথ মাতৃকান্সাসঃ। তক্ষ নিত্যত্বমাহ তন্ত্ৰসারধ্বত-জামলে—ভূতশুদ্ধিলিপিন্সাসো বিনা যস্ত প্রপূজয়েৎ। বিপ-রীতফলং দন্তাদভক্ত্যা পূজনং যথেতি॥ স চ চতুর্ব্বিধঃ। তহুক্তং তত্ত্বৈব—চতুর্দ্ধা মাতৃকা প্রোক্তা কেবলা বিন্দুসং- যুতা। সবিসর্গা সোভয়া চ রহস্তং শৃণু কণ্যতে। বিজাকরী কেবলা চ সোভয়া উক্তিদায়িনী। পুজ্রদা সবিসর্গাভূ সবিন্দুর্বিভ্রদায়িনীতি। সোভয়া উভয়াভ্যাং বিন্দুবিসর্গাভ্যাং সহ বর্ত্তমানেত্যেওঃ ॥ তত্রাপি বাস্থান্তর্ভেদান্দিধা তথাচ গোতর্মায়ে দিতীয়াধ্যায়ে—মাতৃকা বিবিধা প্রোক্তা পরা চাপ্যপরা তথা। স্বযুম্বান্তঃ পরা জেয়া অপরা বাহ্নদেশকে ইতি।

নকু পঞ্চশংঘাড়শস্বরয়েন্যাদে বিন্দৃবিসর্গয়োরকুচার্যথাৎ কথং ভাসনিষ্পত্তিঃ। নচ মনস। বিভাসেয়্যাসান্ পুশ্পেণবাথ বা মুনে। অঙ্গু ষ্ঠানামিকাভ্যাং বা চাষ্ঠ্যং বিফলং ভবেদিতি গৌতমীয়বচনেনাভ্যন্তরবাহোভয়ত্বকথনাভাদৃশবর্ণয়োরকুচার্য্যতেইপি ধ্যানযোগ্যন্তমন্ত্রীতি বাচ্যম্ একৈকং বর্ণমেকৈকপত্রান্তে বিভাসেমুনে। এবমন্তঃ প্রবিভাস্থা মনসা তো বহিন্যদেদিত্যগস্ত্যসংহিতাবচনেন হং কং ধ্যায়েদয়ং কার্য্যে মনসা কেবলেন চ। স্বদেহেইনাময় কার্য্যঃ পুশ্পেণ স্থরমূর্ভিম্বিতি মেক্তন্ত্রীয়-পঞ্চদশপ্রকাশবচনেন চ অন্তর্কাহ্যমাত্তকাভেদেনান্তর্কহিঃকর্ভব্যন্থবিধানাং। অত্তর্বব গৌতমোক্তবচনার্থন্ত এতৎক্রমেণাবধারণীয়ঃ।

উচ্যতে যথা স্বরান্তর্ববিতিবিদর্গানুস্বারয়েঃ স্বরান্তরং বিনো-চ্চারণাযোগ্যত্বেন অমদো বিন্দুবিদর্গাবিতি লক্ষণাৎ অং অঃ ইত্যুচ্চার্য্যতে তথা ত্যাদস্থলে অপরবিদর্গানুস্বারাবপি। এবঞ্চ সতি অমং অদং ইতি ত্যাদস্থলে বক্তব্যং তথাচ অমং অদং ইত্যুচ্চার্য্য ত্যুদেদিতি রাঘবভট্টমতমেব শরণং তন্ত্রদারটীকাকারককাশীরামবাচম্পতেরপ্যয়মভিপ্রায়ঃ। ন চ নিরুক্তলক্ষণতো যদি সর্বত্র বিন্দুবিসগৌ অমসৌ স্থাতাং তদাঅম্বরম্ম তাভ্যাং যোগে আং আঃ ইতি ভবিতুমর্হতীতি বাচ্যং স্বরাস্ত্রবিন্দুবিসগৌ অমসাবিতি লক্ষণতাৎপর্যাৎ। বজু উপান্ত্যাস্থ্রে ছো চ ন বিন্দুং তত্র বিশ্বসেদিতি কেনাপি গ্রন্থনামাভিধানাক্ষমেণ তান্ত্রিকাভিমানিনা পঠ্যতে তদ্মূলকত্বাদ্বেয়ম্।

নতু পঞ্চশিল্লিপিভিরিত্যনেন পঞ্চশিল্লিপিদৃ শ্রতে তৎ কথং স্থাদে একপঞ্চশিদ্ধা দৃশ্যন্ত । নহি অকারাদিক্ষকারান্তাঃ পঞ্চশিমাত্কাঃ স্মৃতাঃ। একপঞ্চশিকা বর্ণাঃ থাদে মানে চ কাভিতা ইতি তন্ত্রকৌমুদ্যিগ্রতবচনে একপঞ্চশেদ্বর্ণা স্থাদে যোজ্যা ইতি বাচ্যম্। এতদ্বচনস্থ ভূ গ্রন্থনামাধ্রতন্ত্রন নিমূলকহাৎ। সমূলকত্বে অন্তর্মাত্কাল্ডাদে পঞ্চশিল্লিপিভির্যাসদশ্নেন মহাবিরোধাপত্তঃ।

উচাতে পঞ্চাশচ্ছকেন সামাপ্যসম্বন্ধেন লক্ষণয়া একপঞ্চাশল্লক্ষ্যতে। অন্বয়ানুপপত্তিব ভাৎপর্য্যানুপপত্তেরপিলক্ষণাবীজস্তাভাপোতত্বাৎ। অথবা মকারঃ পুরুষো মত ইতি
রাঘবভট্টোক্তেস্তস্ত সম্বরূপহাৎ পঞ্চাশদিত্যক্তিঃ। যদা
ক্ষকারস্ত ক্ষসংযোগাত্মকত্বাভ্রোরুপনেশ্টেনবাপ্যপদেশইত্যপুনরুক্তং পঞ্চাশদ্গ্রহণম্।

নচ যত্তায়ং ব্যঞ্জনদ্বয়াত্মকএব স্থাৎ তদাজ্ঞবদস্থাপি পৃথ-গুপদেশো ন স্থাদিতি বাচ্যং জাবিব্তুবর্ণানাং চতুক্তিংশ-দুর্ণমধ্যেহগণিতত্বাৎ ক্ষকারস্থ তেম্বগণিতত্বাচ্চ।

যন্ত্রা পঞ্চাশচ্চ লশ্চ পঞ্চাশল্লাঃ পঞ্চাশলাশ্চ তা লিপয়-শ্চেতি পঞ্চাশল্লিপয়ঃ ভাভিলিপিঃ লকারত্রয়ীত্রক-লকার- লোপা'ভত্তকং তুর্গিংহপাদেঃ আদিলোপশ্চান্তলোপো মধ্য-লোপস্তথৈব চ। বিভক্তিপদবর্ণানাং দৃশ্যতে সার্ব্ববিশ্নিকে ইতি। অত্র সর্ব্ববর্ণান্তপেক্য যল্লকারগ্রহণং কৃতং তদ্বর্ণ-মালাক্রমেণ, তথাচ কামধেকুতন্ত্রে—লকারাচ্চসমাক্ষ্য লকারং স্করবন্দিতে। সংস্থাপ্য ফার্শস্থানে বৈ ক্ষমেরুং পুচ্ছরূপিণ-মিতি।

অয়ং ভাসোহি সর্বোপাসকৈরেব কর্ত্তন্যঃ ভূতশুদ্ধি-লিপিভাসাবিত্যাদিপূর্বোক্তেঃ। নিত্যভূপ্তিপাদকবচনে সামান্ডেন দোষশ্রবণাৎ লিপিভাসং বিনা পূজা ত্বভিচারায় কল্পত ইতি শ্রামার্চনচন্দ্রিকাপ্তবচনাচ্চ।

সর্বা নাতৃকাভাসান্ কর্তু মশক্তঃ শাক্তে কলামাতৃকাদীন্, শৈবে প্রীকর্তমাতৃকাদীন্, বৈশ্ববে কেশবমাতৃকাদীন্, শুদ্ধপ্রপঞ্যাগমাতৃকে সর্বত্র ভাসেদিতি রাঘবভট্টঃ। কালীবিভায়ামাগমতত্ত্ববিলাসকারেণাত্র বর্ণভাসাত্রক মাতৃকাভাস্ইতি সম্প্রদায়ঃ। পূর্ণানন্দস্ত বর্ণভাসানন্তরং সর্বসাধারণনাতৃকাভাসমপ্যাহ তচ্চিন্তঃ, যথা কালী তথা নীলা তৎক্রেমানাতৃকাং ভাসেদিতি নীলমাতৃকায়াঃ কালীমাতৃকানাদ্শ্যনির্দেশন কালীমাতৃকায়াঃ সামাভ্যমাতৃকাবৈলক্ষণ্যস্থ সিদ্ধরাদিতি যদ্ধিতং তত্তস্ত তন্ত্রসারকারোচ্ছিফলোলুপত্রা আক্রতিপুরিতবিদ্যভোজনদোশাদ্বিবাজ্ঞানাজীরেণিদাারঃ।

অথাত্যৎ সংপ্রবক্তামি দক্তিণাং কালিকাং পরামিত্যুপ-ক্রম্য কেবলাং মাতৃকাং তাস্থ্য বাজতাসং সমাচরেদিত্যনন্তরং করাঙ্গতাসমূত্যু বর্ণতাসং ততঃ কুর্য্যাদ্যেন কালীময়ো ভবে-দিত্যাদি কঞ্চালনালিনীতন্ত্রচতুর্থপট্লবচনৈ মাতৃকাত্যাস্বর্ণ- ন্যাসয়োর্বিধানাৎ মাতৃকায়াঃ ষড়ঙ্গঞ্চ কুর্য্যাদম্ভরমাতৃকাম্। মাতৃকাধ্যানমাচর্য্য বাছে তু মাতৃকাং ন্যদেৎ। পীঠন্যাসং ততঃ কৃষা প্রাণায়ামং সমাচরেৎ। ঋন্যাদিকং বড়ঙ্গঞ্চ বর্ণ-ন্সাসং সমাচরেদিতি তোড়লতন্ত্রীয়কালীপূজাসূত্রে মাতৃকা-ন্যাসবর্ণন্যাসবিধানাৎ। তস্থাঞ্চ ভূতশুদ্ধ্যাদীন্ কৃত্বা বৈ মাতৃকাং গ্রাসেং। প্রাণায়ামং ততঃ কৃত্বা কার্য়িত্বা যথা-বিধীত্যুপক্রম্য ৯কারান্তাং মাতৃকাঞ্চ হদয়ে সংপ্রবিশ্বদেৎ। ঘকারাস্তাং ততঃ পশ্চাদ্দিদেণে চ ভুজে শ্রুদেদিত্যাদি কালী-পূজাপ্রতিপাদক-কুমারীতন্ত্রদিতীয়পটলবঢনেন পুনর্ব্বর্ণস্থাস-বিধানাৎ। সমাহিতমনাঃ কুর্য্যান্মাত্কান্তাসমন্বিকে। মাত্-কায়া ঋষিত্র ক্যা গায়ত্রীচ্ছন্দ ঈরিতমিত্যাদি কালীপূজাবিধা-য়কমহানির্বাণতন্ত্রপঞ্মোল্লাসীয়বচনেন মাতৃকান্তাসবিধা-নাৎ। ততস্তু মাতকাশ্হাসং কুৰ্য্যাদেহবিশুদ্ধয়ে ইত্যান্ত্যপ-ক্রম্য অকারাদিককারাভৈ-রাপাদতলমস্তকম্। অস্থ শ্রী-মাতৃকামন্ত্রস্থা ব্রহ্মিরিঃ পরিক্',ভিতঃ ইত্যাগুন্তর্বাহ্যমাভূকা-স্থাসমভিধায় গৃহিভির্ঘতিভির্দেবি ক্যন্তব্যঃ পৌরুষা**প্তয়ে।** এম তে কথিতো দেবি মাতৃকান্যাসবিস্তরঃ। বিনা যেন ন দিদ্ধা স্থাজ্জপহোমাদিকা ক্রিয়া॥ গতপ্রাণে যথা দেহে নাধিকারোহস্তি কশ্মস্থ। মাতৃকা প্রাণ উদ্দিক্টো মাতৃকা শুচিকারিকা। মাতৃকৈব হি সর্ববস্বং তস্মান্তামভাদেৎ সদেতি কালীপূজাবিধায়ক--কালীকুলামূততন্ত্ৰদ্বিতীয়প**টলবচনৈৰ্মাভূক**!--न्यामवर्ष्ट्रात् (मायञ्चवनाक ।

তত্র যগপি কালীতন্ত্রনীরতন্ত্রয়োরনিরুদ্ধসরস্বতীবিগা-পুজায়াং মাতৃকান্যাসোঁ নোক্ত তথাপি নিগদিতভূরিবচনৈক- বাক্যস্বাদন্যত্র নিষেধাভাবাচ্চ তস্থামপি স কর্ত্তব্যঃ। অন্যথা তত্রামুক্তপীঠন্যাস – বীজন্যাস – তত্ত্বন্যাসানামবশ্যকর্ত্তব্যত্বেহপি তৎপরীহারাপজিঃ।

তারাবিদ্যায়াস্ত নৈষ মাতৃকান্যাসস্তম্যা বর্ণন্যাদেনেব তৎসিদ্ধহাৎ। বর্ণন্যাসমুপক্রম্য উপসংহারে হৃদন্তান্ বিন্দৃ-সংযুক্তান্ ন্যদেদর্গাংস্ত সাধকঃ। স্থানেষেতেয়ু তারিণ্যাঃ পূজাযোগ্যন্তদা ভবেদিতি তারাপ্রকরণীয়বীরতন্ত্রবচনাৎ। নচ যথা কালী তথা নীলা তৎক্রমান্মাতৃকাং ন্যদেদিতি রহন্ধীলতন্ত্রিষপটলবচনে কালীবন্ধীলায়া মাতৃকান্যাসদর্শনাক্তমাত্রিদিতীয়পটলবচনে কালীবন্ধীলায়া মাতৃকান্যাসদর্শনাক্তমাত্রপ্রতি বাচ্যম্ ভবত্তক্রমাতৃকান্যাসপদস্য বর্ণন্যাসপরস্থাৎ অন্যথা প্রামাণিকনিবন্ধকারেস্তারাপ্রকরণে বর্ণন্যাসমাত্রাভিধানস্থাসস্থতেঃ।

ইহ বর্ণন্যাসঃ কালীতন্ত্রাদো সবিন্দুরুক্তঃ কশ্ধালমালিনীতন্ত্রাদো তু নির্বিন্দুরিতি। তত্মাৎ সবিন্দুনির্বিন্দূ ভয়স্থ
শাস্ত্রসিদ্ধত্বাদিকাবৈকল্পিকেইপি সাম্প্রদায়িকাঃ সবিন্দুমেব
ব্যবহরন্তি। তত্রাপি জ্রীশুদ্রয়োনির্বিন্দুরেব। তত্তকঃ ব্রহ্মানন্দগিরিক্বত - তারারহস্পপ্তত- তারার্ণবে—নাদবিন্দুসমোপেতঃ
সর্ববর্ণে ব্যবস্থিতম্। স্ত্রীশুদ্রয়োরেতদেব নাদবিন্দু বিবর্জিতমিতি। যুক্ত ক্ষৈতত্ত্রোস্ত্রয়োদশস্বরোচ্চারণে প্রণবোচ্চারণসিন্ধেঃ। শ্রীবিত্যায়াস্ত যোঢ়া ন্যাসো মাতৃকান্যামানস্তরঃ
কর্ত্ব্য ইতি সম্প্রদায়বিদ ইতি তন্ত্রসারকারঃ।

অথ ঋন্যাদিন্যাসঃ। তত্র ঋন্যাদিপদানাং যোগার্থনাহ। শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাধতদারসংগ্রহে—ঋবর্ণার্থস্ত গত্যর্থো ধাছুঃ প্রাপ্ত্যর্থকস্তর্থা। নিবর্ণার্থস্ত বিজ্ঞানমতস্তৎপ্রাপকঃ স্মৃতঃ। অনয়োরপদম্পত্তী ঋষিপ্ত ক্রিরিতীরিতঃ। ছমেতি ধাতুরিচ্ছায়াং দাদির্দানার্থকো মতঃ। ছন্দো বক্তু গতো বর্ণসমূহঃ
পরিকীর্ত্তিঃ। ক্রীড়ার্থকাদা ধাতোরিতি সংজ্ঞা প্রকীর্তিতেতি। গৌতমীয়ে দিতীয়াধ্যায়ে—মহেশ্বরমুখাজ্জ্ঞাত্বা
যঃ সাক্ষাত্তপসা মতুম্। সংসাধ্য়তি শুদ্ধাত্বা স তস্ত ঋষিরীরিত ইতি তু পুংদেবতাবিষকম্।

শক্তিবিষয়ে তু তোড়লতন্ত্রে প্রথমপটলে। জ্রীদেব্যুবাচ— ক্রহি মে জগতাং নাথ সর্ববিদ্যাময় প্রভো। মহাবিদ্যাস্থ দর্কান্ত গুহান্ত ভুবনত্রয়ে। এতাসাং দক্ষিণে ভাগে নানারূপঃ পিনাকধৃক্। পৃথক্পৃথঙ্মহাদেব কথয়স্ব ময়ি প্রভো। শ্রীশিবউবাচ। শৃণু চার্বঙ্গি শুভগে কালিকায়াশ্চ ভৈরবম্। মহাকালং দক্ষিণায়: দক্ষভাগে প্রপুজয়েং। মহাকালেন বৈ সার্কং দক্ষিণা রমতে সদা॥ তারায়া দক্ষিণে ভাগে অক্ষোভ্যং পরিপূজয়েৎ। সমুদ্রমথনে দেবি কালকূটং সম্থিতম্। দর্কে দেবাঃ দদারাশ্চ মহাক্ষোভমবাপ্ন য়ুঃ। ক্ষোভাদিরহিতং যম্মাৎ পীতং হালাহলং বিষম। অতএব মহেশানি অক্ষোভ্যঃ পরিকীর্ত্তিভঃ। তেন দার্ছং মহামায়া তারিণী রমতে দদা॥ মহাত্রিপুরস্থন্দর্য্যা দক্ষিণে পূজয়েচ্ছিবমৃ। পঞ্চক্ত্রু ত্রিনেত্রঞ্ব প্রতিবক্ত্রে হ্মরেশ্বরি। তেন দার্দ্ধং মহাদেবী দদা কামকুত্র-হলা। অতএব মহেশানি পঞ্মীতি প্রকীতিতা। শ্রীমদ্-ভুবনস্থন্দর্য্যা দক্ষিণে ত্রাম্বকং যজেৎ। স্বর্গে মর্ত্যে চ পাতালে যা চাগ্যা ভুবনেশ্বরী। এতাহ্ব রমতে যেন অ্যম্বকস্তেন কথ্যতে। স শক্তি শ্চ সমাখ্যাতঃ সর্ববতন্ত্রপ্র-

পূজিতঃ। ভৈরব্যা দক্ষিণে ভাগে দক্ষিণামৃত্তিসংজ্ঞকম্। পূজয়েৎ পর্যত্নেন পঞ্চবক্ত়্ তমেব হি। ছিন্নমস্তা দক্ষিণাং-শে কবন্ধং পূজয়েচ্ছিবম্। কবন্ধপূজনাদেবি সর্কাসন্ধান্ধান ভবেৎ। ধূমাবতী মহাবিছা বিধবারূপধারিণী। বগলায় দক্ষভাগে একবক্তং প্রপূজয়েৎ। মহারুদ্রেতি বিখ্যাতং জগৎসংহারকারকম্। মাতঙ্গীদক্<mark>নিণাংশে চ মাতঙ্গং পূজ-</mark> য়েচ্ছিবম্। তমেব দক্ষিণামৃতিং জগদানন্দকারকম্। কম-লায়া দক্ষিণাংশে বিষ্ণুরূপং সদাশিবম্। পূজয়েৎ পরমে-শানি স সিদ্ধো নাত্র সংশয়ঃ। পূজ্যেদ্দ ূর্নায়া দক্ষিণে ব্রকারপেকম্। মহামোক্সপ্রদং দেবং দশবক্ত_{্রং} মহেশ্রম্॥ তুর্গায়া দক্ষিণে ভাগে নারদং পরিপূজয়েৎ। নাকারঃ স্থৃষ্টিকর্ত্তা চ দকারঃ পালকঃ সদা। রেফঃ সংহাররূপশ্চ নারদঃ পরিকীত্তিতঃ॥ অন্যাস্থ সর্ববিষ্ঠাস্থ ঋষির্যো-যো নিগন্ততে। সএব তস্তা ভর্কা চ দক্ষভাগে প্রপূজ-য়েদিতি।

যত্ত্ব ঋষিঃ শক্তিবিশিষ্ঠস্ম স্বত ইতি রাঘবভট্ট রত-সংহিতাবচনং তদশিষ্ঠতপদা দ ত্রান্ধকঃ বশিষ্ঠপুত্রত্বং গত ইত্যভিপ্রায়কম্। অন্যথা তোড়লতন্ত্রবচনেন দার্দ্ধিং মহাবিরোধাপত্তে র্জগদম্বায়া মনুন্যদারস্বশঙ্কাপত্তেশ্চ॥ যথা শ্রীক্লফো বহ্নদেবপূর্বভপদা তৎপুত্রত্বং গতন্তথেহাপীতি ন কশ্চিদ্যোগলেশঃ॥

অথ প্রাণায়ামঃ। তস্ত নিত্যত্বমাহ গৌতনীয়ে দিতী-য়াধ্যায়ে—প্রাণায়ামং বিনা বদ্যৎ সাধনং নিক্ষলং ভবেদিতি। কাম্যত্তঞ্চ কুলার্ণবৈ—তপ্সাং তীর্থবাত্রাতা য**মদানত্রতা**- দয়: । প্রাণায়ামস্থ তস্তৈব কলাং নাইন্তি ষোড়শীম্। মানসং বাচিকং পাপং কায়িকঞ্চাপি যৎ ক্বতম্। তৎ সর্বাং নির্দ্দহেল্ছীঘ্রং প্রাণায়ামত্ররেণ বৈ॥ দহুন্তে গ্রায়মানানাং ধাতৃনাং হি যথা মলাঃ। তথেন্দ্রিয়াণাং দহুন্তে দোৱাঃ প্রাণস্থ সংযমৈরিতি॥ গৌতমীয়ে দিতাঁগাধ্যায়েহপি—প্রাণায়ামাৎ পরং তত্তং প্রাণায়ামাৎ পরং তগঃ। প্রাণায়ামাৎ পরং জ্ঞানং প্রাণায়ামাৎ পরং প্রাণায়ামাৎ পরং প্রাণায়ামাৎ পরং প্রাণায়ামাৎ

অস্ত বোগার্থনাই গান্ধর্কে দশনপটলে—প্রাণো বায়্-রিতি খ্যাত আয়ামন্তরিরোধনন্। প্রাণায়ামইতি প্রোক্তো যোগিনাং যোগদাধনমিতি॥ দচ দ্বিবিধঃ। যথা রুদ্র-জামলে—সগর্ভণ্চ নিগর্ভণ্চ প্রাণায়ামো দ্বিধা মত ইতি। তথা যোগিনীতক্ত্রে—অয়ঃ প্রাণায়ামঃ দকলছরিতধ্বংসনকরো নিগর্ভঃ প্রোক্তোহদো শতগুণফলোহপ্যঙ্গদহিতঃ। জপধ্যানো-পৌতঃ দ তু নিগদিতো গর্ভরহিতঃ দগর্ভোযস্তুকো মুনি-পরিরটের্যোগনিরতৈরিতি।

সগর্ভক্রমনাহ কাত্যাগ্রনীতন্ত্র—জানুং প্রদক্ষিণীকৃত্য যাবৎকালেন হস্ততঃ। তাবৎকালমিতা মাত্রা স্থনিধাস-সমাহিতেতি তু যোগিনামেব উক্তবচনাদতএবোপেন্দিতঃ॥ স্থা্মাকস্ত নিগর্ভ্রস্থ বিহিত্যায়ন তদেব নিরূপাতে॥ শ্র্যামা-চ্চনচন্দ্রিকাপ্পততন্ত্রভূড়ামণো—প্রাণায়ামং ততঃ ক্র্যামানুলেন প্রণবেন বা। স্থাপ্যিত্রা মনংশুদ্ধিং গূলাধারে হ্যন্সধীঃ। দক্ষনাসাপুটং প্রত্বা স্থলীঃ যোড়শমাত্রয়া। বায়ুনা শোষ্যে-দ্বেং প্রত্বা নাসাপুটো পুনঃ। মাত্রয়া তু চতুঃষ্ট্যা ক্স্তু-য়েত্রঞ্চ সাধ্বঃ। রেচয়েদ্দক্ষিণেন্ত্রব দ্বাত্রিংশন্মাত্রয়া পুনঃ। প্রাণায়ামো ভবেদেকস্ত্রিভিরেকং ক্রমোৎক্রমৈঃ। রেচয়েৎ যেন মার্গেণ পুনস্তেনৈব পূরয়েৎ। অশক্তো তচ্চতুর্থাংশৈ-স্তভূর্ব্যাংশৈস্তদন্যথা। প্রাণায়ামত্রয়ং ক্র্র্যাৎ প্রাণায়াম-বিধির্যত ইতি।

প্রণবমাহ তদ্বুততন্ত্রাদর্শে—সর্ব্বত্র প্রণবাে দেবি ওঁকারঃ পরিকীর্ভিতঃ। কালিকায়া নিজং বীজমন্সাসং ব্রী
প্রকীর্ভিতেতি। তারাবিভায়ান্ত প্রণবেন তথা মন্ত্রবীজেশ বা
প্রাণায়ামঃ। তত্তক্তং তন্ত্রসারপ্রতকালীহৃদ্যে—প্রাণায়ামত্রয়ং কুর্য়ান্মালন প্রণবেন বা । অথবা মন্ত্রবাজেন যথোক্তবিধিনা স্থধীরিতি। মূলেন উপাস্থমন্ত্রেণেত্যর্থঃ। তদাঃ
বিশ্বসারতন্ত্রে দিতীয়পটলে—যস্থ লোকস্থ যং মন্ত্রং দছাচ্চ
বিধিনা গুরুঃ। তং মূলমন্ত্রং বিজেয়ং সর্ব্বতন্ত্রসমন্বিতমিতি
মন্ত্রবীজেনেতি মন্ত্রেয়ু বীজং নিদানং তেন তত্তদ্বেবতানিজবীজেনেতি যাবং। ইতি তু সাধারণম্॥

অত্র শ্রীকৃষ্ণমন্ত্রাণাং রেচককুম্ভকপূরকাদিভির্ঘাদশেষে-২স্তি তদ্গৌতমাদৌ দ্রুইব্যঃ।

যতু শিবার্চনচন্দ্রিকাকারেণ—কুস্তুসম্ভবঃ যাবচ্ছক্যং
নিয়ম্যাসূন্ মনসৈব মন্থং জপেৎ। রামং মুভ্রমুভ্র্যায়ন্
পূর্ব্বোক্তবিধিনা মুনে। অসুনিয়ম্য কুস্তকং কুত্বা রামং ধার্যন্
যাবচ্ছক্যং মন্থং জপেদিতি সম্বন্ধঃ। অতঃ কুস্তুকসময়এব
মন্ত্রজপো জ্যেঃ॥ দক্ষিণামূর্ত্তিকল্লেইপি—প্রাণাপানো সমৌ
কৃত্বা প্রবিধায় তু কুস্তুকম্। হৃৎপঙ্কজে সমাসীনং ধ্যায়ন্
সংযতমানসঃ। মূলমন্ত্রং যথাশক্তি জপেন্তক্তি প্রায়ণঃ।
ইত্যুক্তং তদ্যোগাঙ্গপ্রাণায়ামপ্রম্॥ অগস্ত্যুসংহিতাবিংশ

ত্যধ্যায়ে—প্রাণায়ামানথো বক্ষ্যে মুমুক্ষোরুপকারকানিভূযুপ-ক্রম্য পূর্ব্বোক্তবচনস্থ লিখিতত্বাৎ।

যদপি রামার্চনচন্দ্রিকায়াম্—ইড়য়া পূরয়েদায়ুং স্বরৈ-র্বরেশিচ কুম্ভয়েৎ। রেচয়েদ্যাদিকৈর্বর্বেশস্ততঃ পিঙ্গলয়া পুনঃ। তথৈব পূরণং বায়োঃ কুম্ভনং রেচনং পুনঃ। ইড়য়া স্থাততো দ্বাভ্যাং পূরণাদিত্রয়ং পুনঃ। প্রাণায়ামত্রয়ম্বেবং কুয়া ব্যাপকমারভেৎ। অকারাজৈঃ ক্ষকারাজৈরাপাদতল-মস্তকমিতি প্রাণায়ামোইভিহিত স্তন্মাতৃকাপ্রাণায়ামপরঃ। মস্ত রাঘবভট্টেন মাতৃকাপ্রাণায়ামত্বনোদাহৃতস্থাৎ।

্ অথ করাঙ্গন্সানঃ। অস্তাবশ্যকত্বমূক্তং রাঘবভট্টেন— পূজাজপার্চ্চনাহোমাঃ নিদ্ধমন্ত্রকৃতা অপি। অঙ্গবিন্যাস— বিধুরান দাস্তস্তি ফলান্মনী ইতি।

তৎপ্রকারমাহ শাস্তবীতন্ত্রেং ইমপটলে—বড়্ দীর্ঘভাজা বীজেন করাঙ্গন্যাসমাচরে দিতি॥ তথা তোড়লতন্ত্রে চতুর্থ-পটলে তারাপূজাসূত্রে—বর্ণন্যাসং ততঃ কৃত্বা করাঙ্গন্যাস-মাচরেদিতি॥ গান্ধর্বতন্ত্রে দশমপটলে চ—নমঃ স্বাহা বষ্ট বৌষট্ হুঁ ফড়িতি ষড়ঙ্গকম্। করয়োরথ বিন্যুস্থ ষড়-ঙ্গের্ তথা ন্যু দেদিতি॥ কঙ্কালমালিনীতন্ত্রে চতুর্থপটলে-ইপি—করন্যাসমূক্ত্বা পুনর্হ্ দয়াদিরু চৈতৈর্জাতিযুক্তঃ ষড়ঙ্গকৈঃ। ষড় দীর্ঘভাক্সবীজৈস্ত্র প্রণবাচ্ছিণ্ট বিন্যু দেদিতি॥ গোতমীয়ে শ্বিতীয়াধ্যায়ে—ততঃ করাঙ্গয়োর্ন্যাসস্তথৈব পরিক্রিতইতি। তথা করজামলে সপ্তবৃষ্টিপটলে—করাঙ্গন্যাসা সংস্কুর্যাৎ ষড় দীর্ঘিঃ স্বরসংমুতেরিতি। এতৈ-র্ব্দেইনঃ করন্যাসানস্তর্মঙ্গন্যাসঃ কর্ত্ব্যঃ।

নশ্বঙ্গন্যাসকরন্যাসে যথাবদভিধীয়তে। ষড়্দীর্ঘভাজা বীজেন প্রণবাছেন কল্লয়েদিতি কালীতন্ত্রপ্রথমপটলবচনেনাদাবঙ্গন্যাসম্ভ কর্ভব্যত্বমায়াতি। নচ তত্রানিক্তব্যব্সায়তীন মন্ত্রপ্রকরণমাত্রোপধায়কত্বাভৎপর্মিতি বাচ্যং ষড়ঙ্গনাচরেন্দেবি দ্বিরার্ভ্যা ক্রমেণ তু। ত্রিদ্যেকদশকত্রিদ্বিসংখ্যয় শৈলসম্ভবে। অঙ্গলীয় পুনর্দেবীতি জ্ঞানার্ণবিদ্বিতীয়পটলবচনেন ত্রিপুরাপুজায়ামপি তথাদর্শনাৎ॥ নচ কালীত্রিপুরাপুজায়াং তাদৃশেন কর্ভব্য ইতি বাচ্যম্। অঙ্গন্যাসকরন্যাসৌ মায়য়া দীর্ঘয়া চরেদিতি শাক্তানন্দতরঙ্গিণাবচনেন শাক্তনাধারণপূজাপ্রসঙ্গে তথাভিহিতত্বাৎ॥ নচ শক্ত্যুপাসকৈরেব তথাচরণীয় ইতি বাচ্যম্। অঙ্গকরাঙ্গন্যাসাংশ্চ ততোমুদ্রাঃ প্রকল্লয়েদিতি নারদপঞ্রাত্রবচনেন বৈষ্ণবানামপি তথা দর্শনিৎ।

উচ্যতে যদ্যপি প্রদর্শিতবচনশীমাংসয়। করাঙ্গন্যাসয়োঃ পরস্পারপ্রথমাচরণে দোলবিরহুক্তেনেচ্ছাবিকল্লঃ প্রতীয়তে তথাপি বহুষু করন্যাসস্থাদৌ নিপাতান্ত্ভয়োঃ শান্ত্রসিদ্ধক্ষে করন্যাসেহগ্রিমেক্বতে দোশলেশাভাবাৎ সৎসাম্প্রদায়িকৈ-স্তথা ব্যবহৃতহাচ্চ মহাজনপরিগৃহীতাবিরুদ্ধমেবাদরণীয়ম্।

বস্তুতস্ত্র পাঠক্রমাছ্যক্রেমস্থা বলবর্বাৎ কর্ন্যাসস্থাপ্র কর্ত্রব্যাস্বধারণীর্ম্। ননঃ স্বাহ্য বন্ত্ বোষট্ হুঁ ফড়িটি ষড়ঙ্গকম্। কর্মোর্থ বিন্যস্থা বড়ঙ্গেল্ তথা ন্যুমেদিতি গান্ধবিতস্ত্রদশ্যপটলবচনে শাক্র্যাদর্শনাং। কর্ন্যাসং পুরা কলা দেহন্যাসমনন্তর্মিতি রাঘ্যভট্গত্বচনস্থাক্রমাদর্শনিছে। স্তর্ভ্র কালীতন্ত্র-জ্ঞানার্থ-শাক্তানন্দতর্শি নারদপঞ্চরাত্রাদিবচনোৎপন্নপাঠক্রমো ন গ্রাহ্ণঃ। পঠিক্রমো যথা পূর্ব্বাপরোপন্যাসঃ শাব্দক্রমস্ত ইদং কৃত্বেদং
কর্ত্তব্যমিতি নিশ্চয়ঃ। এতদেবোক্তং স্মার্ত্তরঘুনন্দনভট্টাচার্য্যেঃ। কিন্তুর্য্যদানমাত্রে পাঠিকক্রমাৎ শাব্দোপক্রমস্ত চ
বলবন্ধাৎ ব্রহ্মপুরাণে প্রেতার্ঘ্যদানান্তরং ততঃ পিতামহাদিভ্য ইত্যাদি শাব্দক্রমস্তান্তরোধেন অর্ঘ্যপাত্রেয়ু গন্ধপুষ্পদানপর্য্যন্তং পিতৃপূর্ব্বকতেতি॥

অত্র করন্যাসে তালপ্রকারমাহ রাঘবভট্টঃ। প্রসারিততলাভ্যান্ত তালত্রয়মূর্দারিত্যিতি॥ বৈষ্ণবক্ষাঙ্গভাসেহপি
সএব॥ প্রসারিততলেনের পাণিনা হৃদয়ং শিরঃ। প্রোক্তা
শিখা তথা সম্যাগধোহস্কুচেন মৃষ্টিনা। তথাবিধাভ্যাং পাণিভ্যাং
বর্ষান্ধরাদিনাভিগম্। তর্জ্জনামধ্যমানামাঃ প্রোক্তা নেত্রত্রয়ে
ক্রমাৎ। যদা নেত্রদ্বয়ং প্রোক্তং তদা তর্জনীমধ্যমে ইতি॥
অত্র প্রসারিততলেনেত্যত্র অন্বষ্ঠবর্জ্জনাঙ্গুলীচতুই্টয়েনেত্যর্থঃ।
তত্ত্তং তেনৈব—অন্বষ্ঠবর্জ্জমন্থল্যশ্চতশ্রে হৃদি মূর্দ্ধনি।
শিখায়াং মৃষ্টিরেব স্থাদস্কুষ্ঠক্তনালিকা। সর্বাঙ্গুলয় আনাকৈঃ
পাণ্যাঃ ক্রচবন্ধন ইতি॥

শক্তিবড়ঙ্গমুদ্রা আহ সএন—হৃদরং মধ্যমানামাতর্জনীভিঃ স্মৃতং শিরঃ। মধ্যমাভর্জনিভ্যাং আদঙ্গুঠেন শিথা
স্মৃতা। দশভিঃ কবচং প্রোক্তং তিস্ভিনেত্রমীরিতম্।
প্রোক্তাঞ্জুলিভ্যামস্ত্রং আদঙ্গকঃপ্রিরিয়ং মতেতি॥

শৈবষড়ঙ্গমূদ্রাস্ত শৈবাগমে—কৃতমৃষ্টিপুটো হস্তো কৃষা-সুষ্ঠো হৃদি অদেং। হৃন্মুদ্রেয়ং সমাখ্যাতা শিরোমুদ্রা প্রকীর্ত্তাতে। ললাটাতো সমাধায় কৃতমৃষ্টিপুটো করো। কুর্য্যাদূর্দ্ধপ্রসক্তাত্তে তর্জ ন্যো জ্যেষ্ঠবাহ্নতঃ ॥ করে শিখায়াং সংযোজ্য কৃতমুষ্টিপুটাকৃতী। জ্যেষ্ঠাবধঃপ্রসক্তাত্তো কনিষ্ঠাব্দ্ধতন্ত্রথা। কুর্যাৎ সেয়ং শিখামুদ্রা সর্ব্বোপদ্রবনাশিনী। কৃষাঙ্গুটো প্রসক্তাত্রো তর্জ্জন্যো চ ত্রিকোণবং। মূর্দ্ধি, পশ্চামুখং কৃষা নয়েছভয়পার্যতঃ। করো হৃদন্তমুদ্রেয়ং ক্রচন্তাভয়প্রদা॥ কৃষা নেত্রমুখং হস্তং সক্তাঙ্গুষ্ঠকনিষ্ঠকম্। প্রসার্য্য মধ্যমাং কিঞ্জিময়য়েদিতরাঙ্গুলীঃ। নেত্রমুদ্রেয়মুদ্দিন্টারক্ষোভ্ত।ত্তিজম্মনী। পরস্পরতলঘদ্ধং প্নরাক্ষোটয়েদ্রাভ্ত।ত্তিজমনী। পরস্পরতলঘদ্ধং প্নরাক্ষোটয়েদ্রাভাত

নসু সর্ব্ব করাঙ্গলাদে জাতিষট্কেন কর্ত্ব্যঞ্চ্যতে অঙ্গুলভাগে নমো বাং ব্রী তর্জ্জনীভাগে নমস্ততঃ।
মধ্যমাভাগে নমো ব্রু ব্রেং অনামাভাগে নমস্ততঃ। ওঁ ব্রেই কনিষ্ঠাভাগি নমো ব্রুক্তলপৃষ্ঠয়োরিতি রাঘবভট্টপৃতবচনেন কেবলনগংশকৈন্তৎপ্রতিপত্ত্বী পরস্পরবিরোধঃ॥ নহি জাতিষট্কান্তঃপাতি-স্বাহাশকোপশুস্তত্বেন তত্র স্ত্রীশূদ্রাণা-মনধিকারাত্তৎপরমিতি বাচ্যম্। তারং তৎ সৎ ঠঠাত্মানং তত্ত্বমস্থেব পাদজঃ। নোচ্চরেছচ্চরেত্তেরু ঠঠাত্মানো তদঙ্গত ইতি প্রপঞ্চারবচনাৎ পূজনে চাঙ্গমন্ত্রে চ বদেৎ স্বাহা কুলেশ্বরি। স্বাহাপ্রণবসাহিত্যং জপেচ্ছ্ট্রো ন কুত্রচিদিতি গবাক্ষতন্ত্রবচনাচ্চ॥ তদঙ্গত ইতি অঙ্গমন্ত্রে আভাদিত্বান্ত্র্ব্ বক্তব্য ইতি তস্প্রত্যয়ঃ।

উচ্যতে আচক্রায় স্বাহা অঙ্গুণ্ঠাভ্যাং নমে। বদেং। বিচক্রায় স্বাহেতি তর্জ্জনীভ্যাং নমো বদেং। স্থচক্রাভ্যাং ততঃ স্বাহা মধ্যমাভ্যাং তথোচ্চরেং। ত্রৈলোক্যরক্ষা- চক্রায় স্বাহেত্যনামিকে তথা। অহ্বরাস্তরচক্রায় স্বাহা কনিষ্ঠয়োর্নমঃ। আচক্রায় ততঃ স্বাহা হৃদয়ায় নমো বদেং।
অঙ্গুষ্ঠরহিতেনৈব করাগ্রেণ হৃদং স্পুশেং। বিচক্রায় ততঃ
স্বাহা স্বাহেতি শিরসে বদেং। শিরসি বিশ্যসেতত্ত্বং
তথৈব করশাখয়া। হ্লচক্রায় তথা স্বাহা শিখায়ে বয়ড়ূ্চরেং। তথাধাহঙ্গুষ্ঠমুক্ট্যা তু শিখায়াং পরিবিশ্যসেং।
ত্রৈলোক্যরক্ষাচক্রায় স্বাহেতি কবচায় হুঁ। হস্তাভ্যাং
শির আরভ্য পাদান্তং সংস্পৃশেদ্যতিঃ। অহ্বরান্তরচক্রায়
স্বাহা স্রায় ফড়ুচ্চরেদিতি গৌতম তন্ত্রীয়দিতীয়াধ্যায়বচনেন
যথা শ্রীকৃষ্ণমন্ত্রবিশেষে করন্যাসে নমঃশব্পুয়োগঃ এবম্
অঙ্গন্যাসে জাতিষট্কস্থ তথা রাঘবভটীয়বচনমপি কম্পাশ্চিদেবতায়া মন্ত্রবিশেষে প্রয়োক্তব্যম্॥ ভট্টমহাশয়স্থ তু
তদ্বচনস্থা গ্রন্থদেবতাম দ্রাণাং নামানুল্লেখতয়া হ্লতরাং তাদৃশবিশেষপ্রকটীকরণেহসমর্থেহিশ্ম॥

নচ গোতমোক্তবচনানাং শ্রীকৃষ্ণমন্ত্রবিশেষপরত্বে মানাভাব ইতি বাচ্যম্। স্পষ্টপ্রমাণবচনাসত্ত্বেংপি বীজেন দীর্ঘযুক্তন বড়ঙ্গানি প্রবিন্যসেৎ। অঙ্গুষ্ঠাদিষঙ্গু লীবুন্যসেদক্ষৈঃ স্বজাতিভি-রিতি শ্রীকৃষ্ণমাত্রপূজাবিধায়কসম্মোহনতন্ত্রচতুর্থপটলবচনেন গৌতমোক্তবচনানাং বিরোধভঞ্জনায়ৈতাদৃশমীমাংসায়া আব-শ্রকত্বাৎ ॥ অত্রাঙ্গন্যাসে শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাকারেণ ষড়ঙ্গং বিন্য-সেম্মন্ত্রী হৃচ্ছিরশ্চ শিখা ততঃ। কবচং নেত্রমন্ত্রক্ষেতি দক্ষিণা-মৃত্তিবচনাৎ হৃদয়ে চ শিরোদেশে শিখা চ কবচং ততঃ। নেত্রমন্মিন্ন্যসেৎ ঙেইস্তম্ ইতি জ্ঞানার্ণবিবচনাচ্চ নেত্রত্রয়ায়-বৌষড়িতি প্রয়োগং দূষয়িত্বা যম্মেক্রায় বৌষড়িতি সর্বন্যাধারণ- প্রয়োগো বিন্যস্ত স্তদতীবাজ্ঞানবিধ্বংসিতমিতি প্রতিভাতি।
মধ্যে সোং নেত্রত্রায় বৌষট্ প্রণবনাদ্যকে। ইতি রুদ্রজামলীয়সপ্তষষ্টিতমপটলবচনাৎ নেত্রত্রয়ায় বৌষট্ স্থাদস্ত্রায়
ফড়িতীরিতমিতি মন্ত্রমহোদধিবিংশতিতরঙ্গবচনাৎ নেত্রত্রয়ায়
বৌষট্ স্থাদস্ত্রায় ফড়িতি ক্রমাদিতি শারদাতিলকচতুর্থপটলামদাকল্পষষ্ঠপটল-মহানির্বাণতন্ত্রপঞ্চমোল্লাসবচনাচ্চ॥ শিবাচর্চনচন্দ্রকাধ্বত-দক্ষিণামূর্ত্তি-জ্ঞানার্ণববচনস্ত্র জর্জনীমধ্যমানামাপ্রোক্তা নেত্রত্রয়ে ক্রমাৎ। যদা নেত্রদ্বয়ং গ্রাক্তং তদা
তর্জনীমধ্যমে ইতি রাঘবভট্টপ্রতবচনৈকবাক্যত্রা দ্বিত্রনেত্রদেবতাভেদেন নেত্রাভ্যাং নেত্রত্রয়ায়েতি প্রয়োগোহবধারণীয়ঃ।

নসু নেত্ৰত্ৰয়ায় বৌষড়িত্যত্ৰ যথা ত্ৰিনেত্ৰদেবতায়াং
ত্ৰিশব্দো যুজ্যতে তথা দ্বিনেত্ৰদেবতায়ামপি নেত্ৰদ্বয়ায়েতি
কথং ন স্থাৎ। মৈবং ত্ৰিনেত্ৰদেবতায়াং বহুবচনবিভক্তিনিৰ্দ্দেশন ত্ৰিচতুঃপঞ্চাদিবহুত্বাপত্তিশঙ্কয়া ত্ৰিশব্দোলেখঃ।
দিনেত্ৰে তু তাদৃশাশঙ্কাভাবাৎ কেবলদ্বিচনপ্ৰয়োগ ইতি
সৰ্ব্বং স্থামঞ্জসম্॥

ক্রমোৎক্রমান্বরারোহে তারা সোঢ়া প্রকীর্ত্তিতা।
ক্রতেহিন্মন্ ন্যাসবর্ষ্যে তু সর্বাং পাপং প্রণশ্যতি। যোগিনীনাং ভবেৎ পূজ্যং স দেবো নতু মানুনঃ। যং নমন্তি মহেশানি ষোঢ়াপুটিতবিগ্রহাঃ। অল্লায়ুঃ স ভবেৎ সদ্যো দেবতা
কম্পতে ভিয়া। নাস্ত্যস্থ পূজ্যো লোকেহিপি পিতৃমাতৃমুখো জনঃ। স উক্তম্তদ্ভতন্ত্রান্তরে—ন্যসেৎ সর্গান্বিতাং
স্কায় ক্রতা বিন্দ্বন্তিকাং ন্যসেৎ। বিন্দুসর্গান্বিতাং ন্যসেৎ

ভাদ্যর্ণান্ স্থিতিবন্ধনা। সংহৃতেদোষসংহারঃ স্থটেম্ভ স্থত-পুক্টয়ঃ। স্থিতেস্ত শান্তিবিন্যাসস্তম্মাৎ কাৰ্য্যন্ত্ৰিধা মতঃ॥ ম্যাসঃ সংহারাত্তে। মস্করিবৈথানসেয়ুবিহিতো২য়ম্। স্থিত্যস্তো গৃহমেধিয়ু স্ফ্যান্তো বৰ্ণিনামিতি প্রাহ্ণ। বৈরাগ্যযুক্তি গৃহস্থে সংহারান্তং কেচিদাহুরাচার্য্যাঃ। সহজানো বনবাসিনি স্থিতিঞ্চ বিদ্যার্থিনাং স্বষ্টিমিতি ষড়্বিধা চেতি স্বফ্ট্যাদেঃ ক্রমোৎ-ক্রমাৎ ষড়্বিধা চেত্যর্থঃ তন্ত্রান্তরবচনৈকবাক্যন্বাৎ। ন্যদেদি-ত্যাদি, সর্গান্বিতাং বিদর্গান্বিতাং বিন্দব্ভিকাং বিন্দ যুক্তাং বিন্দ -সর্গান্বিতাং বিন্দু বিসর্গযুক্তাম্। সংহারান্ত ইত্যাদি সংহার-বিতিস্**ষ্টি-স্**ষ্টিস্থিতিসংহারাল্লকো ন্যাসো মন্করিবৈখানসৈঃ কর্ত্ব্য ইতি তাৎপর্য্যার্থঃ। মন্ধরিণো নিস্ত্রীকাঃ বৈথানসাঃ বানপ্রস্থাঃ। স্থিত্যন্ত ইত্যাদি স্থিতিসংহারস্প্রি-সৃষ্টিসংহার-স্থিত্যান্মকো ন্যাদো গৃহমেধিভিঃ কর্ত্তব্য ইতি তাৎপর্য্যার্থঃ। গৃহমেধিনো গৃহস্থাঃ। স্ফান্ত ইত্যাদি স্ষ্টিস্থিতিদংহার-সংহার-স্থিতি-স্ফ্রাত্মকো ন্যাসো বণিভিঃ কর্ত্তব্যঃ ইতি তাৎপর্য্যার্থঃ। বর্ণিনো ত্রক্ষচারিণঃ। এবং মতাস্তরেহপি বোধ্যম। এতেন ত্রিধাধিকারিণাং ক্রমোৎক্রমাৎ ষড়্বিধা ন্যাসঃ সম্পদ্ধতে।

যতু কাশীরামবাচস্পতিনা স্ফ্যাদিসংহারাস্তো ন্যাসো
মন্ধরিবৈথানসানাং কর্ত্তব্যঃ সৃষ্টিস্থিতিসংহারস্থিস্থিত্যাত্মকো
ন্যাসো গৃহিভিঃ কর্ত্তব্য স্থ ফিস্থিতিসংহারস্ফ্যাত্মকো ন্যাসো
বিদ্যারিভিঃ কর্ত্তব্য ইতি তাৎপর্য্যেণ ব্যাখ্যাতং তন্মন্দং
তথা সতি ত্রিধাধিকারিরু বড় বিধাত্বানুপপত্তেঃ। তারারহস্থরতিকারেণ তু ব্যুৎক্রমেণ ক্ষাদিরান্তাঃ ঠাদিডান্তাঃ আদিকান্তাঃ

ইত্যর্থ ইত্যনেন বর্ণানামুংক্রমতা দর্শিতা তদপি ন স্থসংগতং স্থিত্যস্তস্থ্যস্তল্যাসে তাদৃশোৎক্রমত্বে ষড়্বিধাত্বানুপপত্তেঃ।

যন্ত্র মন্ত্রেণ মূলমন্ত্রেণ অন্তরিতাং পুটিতাং কৃষা ক্রমোং-ক্রমাৎ বড়্বিধা মাতৃকাং ন্যসেদিতি ব্যাখ্যানেন মন্ত্রপুটিতান্ অকারাদিক্ষকারান্তান্ ক্রকারাক্রকারান্তান্ অস্থ্য পুনরেবং-বিধং বারদমং ন্যসেদিত্যর্থঃ সম্পাক্ততে তৎ সঙ্গতং ভবিতৃ-মর্হতি যদি তন্ত্রসারকার-ধৃততন্ত্রান্তরবচনং ক্যাসান্তরবিষয়কং স্থাৎ। সৃষ্টিরকারাদিক্ষকারান্তা স্থিতির্জাদিঠান্তা সংহ্যতিঃ ক্ষকারান্ত্রকারান্তা সহজ্ঞানিঃ সন্ত্রীকঃ ইত্যলং পল্লবিতেন।

শিবষোঢ়া তু কুলার্ণবে চতুর্থপটলেহনুসন্ধেয়া। করাঙ্গ-ন্যাসয়োরন্তে ষোঢ়া কার্য্য প্রযত্নত ইতি শ্যামাসপর্য্যাগৃত-ভৈরবতন্ত্রবচনাদত্র যোঢ়া-ন্যাসঃ কার্য্যঃ স যথা রীততত্ত্বে অপ্তমপটলে—কেবলাং মাত কাং ক্বলা মাত কাং তারসংপুটাম্। মাতৃকাপুটিতং তারং ন্যসেৎ সাধকসভম: ॥ প্রীবীজপুটিতাং তান্ত মাতৃকাপুটিতন্ত তৎ। কামেন পুটিতাং দেবীং তং-পুটং কামমেব চ॥ শক্ত্যা চ পুটিতাং দেবীং তৎপ্টাং শক্তিমেব চ। ব্রী ছন্দ্রঞ্চ পুনর্নাস্থ্য ঋং ৯ং ৯ং চ পূর্ববং। মূলেন পুটিতাং দেবীং তৎপুটং মূলমেব চ। অনুলোম-বিলোমেন ন্যস্থ মন্ত্ৰং যথাবিধি। মূলেন ষট্শতং কুৰ্য্যা-ষ্যাপকং তদনস্তরম। ইতিগুপ্তেন ছুর্গায়া অঙ্গগোঢ়া **প্রকী**র্ভিতা ॥ তারায়াঃ কালিকারাশ্চ উন্মুখ্যাশ্চ তথা পরা। ক্তেংসিম্যাসকার্য্যে তু সর্ব্বপাপং বিনগ্যতি। বিষাপমৃত্যুহর^{গং} এহরোগাদিনাশনম্। ছুপ্টসভ্যানি নশ্যন্তি শত্রবো যান্তি মিত্রতাম। কবিতা-লহরী তম্ম দ্রাক্ষারসপরম্পরা। অণি-

মাজষ্ঠ সিদ্ধিস্ত হস্তে তস্তা ব্যবস্থিতা। কায়িকং বাচিকং চাপি মানসঞ্চাপি তুক্তম্। সর্বাং তস্তা বিনাশিত্বং যাতি ন্যাসস্তা চিন্তনাং। পরক্ত্যা ক্ষয়ং যাতি যংকিঞ্ছিপ-পাতকম্। যদ্ধপং দৃশ্যতে যেন স তদ্ধপঞ্চ গচ্ছতি। যং নমন্তি মহাদেবি বোঢ়া-পুটিতবিগ্রহাঃ। অল্লায়ুং স ভবেৎ সজ্ঞো দেবতা কম্পতে ভিয়া ইতি। কেবলাং তারাম্প্র টিতাম্।

নকু কেবলামিত্যস্থান্পাদানেহিপ তারাম্প্টিভামিত্যস্থার্থতে। লাভেহন্যথা মাতৃকাং তারসংপুটামিত্যনেন
পৌনরুক্ত্যাপভেঃ কথং কেবালমিতি বিশেষণাপাদানম্।
নচ কেবলাং বিন্দু বিসর্গরহিতামিত্যেবার্থ ইতি বাচ্যম্ অত্র
কেবলবিন্দু বিস্গরহিতন্যাসকরণে বিশেষবচনাভাবাং। অত্র
মাতৃকান্যাসাতিদেশেন মাতৃকান্যাসেতিকর্ত্ব্যতায়া বিনিগমনাবিরহেণ বিধেয়পাং। অত্রব মাতৃকান্যাসমুদ্রবৈর
বোঢ়া-ন্যাসং কুর্বন্তি মৈবং, তুলসীকাননং গোষ্ঠং রষশূন্যং
শিবলেয়মিতি তন্ত্রসারকারগত্ত-যোগিনীক্রদম্বচনে রষশূন্যং
গোষ্ঠং শিবালয়ক্ষেত্য যথা রষশূন্যপদম্ উভয়্রতাম্বিতং
তথা তারসংপুটামিত্যস্থোভয়ান্বয়েন তারসংপুটাং মাতৃকাং
ক্ষা ইত্যর্থকরণেন বারদ্বয়ং তারসংপুটাক্য।

যতু তারাভক্তিস্থধার্ণবকারেণ তারসংপুটাং শ্রীবীজসংপুটা-নিতি ব্যাখ্যাতং তদতীব মন্দং তারশব্দশ্য শ্রীবীজবাচকত্বা-ভাবাং কুত্রচিং স্থলেহিপি লক্ষণাদিনা তারশব্দশ্য শ্রীবীজ-বোধকত্বাভাবাং। শ্রীবীজং শ্রী৺ তাং মাতৃকাং তং শ্রীবীজং। কামেন ক্রীমিতি কামবীজেন দেবীং মাতৃকাং তংপুটং মাতৃকাপুটিতং শক্ত্যা ব্লী ইতি বীজেন দেবীং মাতকাং তংপুটাং মাতৃকাপুটিতাং হ্লী দক্ষণ পুনর্ন্যস্তেতি হ্লী দক্ষ-পুটিতাং মাতৃকাং, মাতৃকাপুটিতং হ্লী দক্ষমিতি তাৎপর্য্যার্থঃ লজ্জাদক্ষপুটাং লিপিং পুনরুমে লিপ্যা পুটং তদ্বয়মিতি বালাবিলাস্বচনক্বাক্যভাং।

যতু শ্যামারহস্থকারেণ যথা হ্রীঁ হ্রীঁ ঋং ৠং ৯ং ৯ং ছা হ্রীঁ হ্রীঁ ঋং ৠং ৯ং ৯ং ইতি প্রযুজ্যতে তম্মন্দং নিরুক্তবালা-বিলাসবচনবিরোধাৎ তদ্ধৃতবীরতন্ত্রবচনস্থাপি তদর্থে তাং-পর্য্যাচ্চ। অন্যথা পুনঃপদবৈয়র্থ্যাপত্তেঃ।

মচ তবাপি কথং তাদৃশার্থবাধ ইতি বাচ্যং মাতৃকাপূর্বমেকবারং হ্রী দল্পং ন্যম্য তৎপরং পুনর্নম্যেতি পুনঃশব্দেন বোধিতত্বাং। ঋং ঋং ৯ং ৯ং চ পূর্ববিদিতি ঋং ঋং
৯ং ৯ং পুটিতমাতৃকাং মাতৃকাপুটিতং তচ্চতুপ্টয়ং মূলেন পুটিতামিত্যাদি অনুলোমবিলোমেন মূলেন পুটিতাং দেবীং
মাতৃকাং তৎপুটং মাতৃকাপুটিতং মূলমন্ত্রং যথাবিধি ন্যম্যেত্যর্থং। বৈশিষ্ট্যং তৃতীয়ার্থং সচ দেবীমিতি দিতীয়াস্তেন
তৎপুটমিতি সমস্তৈকদেশতংপদার্থেন চার্ম্মী।

মূলশব্দস্টেমন্ত্রবোধকত্বাদেব সামঞ্জস্যে কথং মন্ত্রমিত্যস্যোপাদানমিতি বাচ্যং সংপূজ্য বিধিবদ্দেবীং মূলেনানেন
বায়ুনেতি শ্যামাচ্চ নচন্দ্রিকাধততৈ রবসংহিতীয়বচনে ফূলশব্দস্য প্রধানবিজ্ঞাপরত্বেন তলিরাসায়াবশ্যং মন্ত্রমিত্যস্যোপাদেয়ত্বাং । নচ ত্বয়া কথং মূলেন পুটিতামিত্যত্র ফূলশব্দেন
ইপ্তমন্ত্রো জ্ঞায়ত ইতি বাচ্যম্ অত্র প্রকরণবশান্মূলশব্দস্যেইমন্ত্রবোধকত্বাং ইপ্তমন্ত্রেণ পুটিতাং মাতৃকাং তৎপুটন্ত তং ।

জরুলোমবিলোমেন মন্ত্রন্তাসং যথাশ্রুতম্। বিধায় ব্যাপকং কুর্য্যাৎ তেনৈবাফৌত্তরং শতমিতি শ্রামার্চনচন্দ্রিকাগ্গতহার-বিলাসবচনে স্ফুটাভিধানাচ্চ।

এতেন বীরতন্ত্রবচনস্থাষ্টশতমিত্যত্রাষ্ট্রসংখ্যাবিশিষ্টশতং ব্যাপকং কুর্য্যাদিত্যাশঙ্কাপি নিরস্তা এতেনানুলোমবিলো-মেনেতি কথং ন সর্ব্বতাশ্বিতমিতি পরাস্তম্। ঋং ৠং ৯ং ৼ্লং চ পূর্ববিদিত্যাদের্ন্যসেদিত্যনেন জনিতাশ্বয়স্থ নিরাকাঞ্চ্যত্থেন পরত্রাবয়াসম্ভবাৎ। অতএব মূলেন পুটিতাং দেবীং তৎ-পুটং মূলং কৃত্বা সাধকোত্তমো অদেৎ অনুলোমবিলোমেন মন্ত্রং স্বস্থ্য ব্যাপকং কুর্য্যাদিত্যন্বয়ঃ কথং ন ভবেদিতি কুচো-গুমপি নিরস্তং মূলেন পুটিতামিত্যাদি দার্দ্ধশোকাম্বয়স্ত দহজত্বাৎ, ক্লীবান্ বর্ণপুটান্ পুনর্মনুপুটাং দেবীং তথা তৎপুটং মূলং তৎপরতো বিলোমকতন্থং মূলেন দেবীং পুটামিত্যাদি বালাবিলাসে স্ফুটাভিহিতছাচ্চ। বিলোমতা চাত্র মাতৃ-কায়া মূলং মাতৃকয়া বিলোমক্বতয়া দেব্যা পুটং তৎপরমিতি বালাবিলাদে ক্ষুটকথনাৎ অনুলোমবিলোমাস্থ মাতৃকাস্থ মকুং অদেং। তক্তস্বাটশতেনৈব কুর্য্যাদ্যাপকমুত্তমমিতি কৃষ্ণাৰ্চ্চনচন্দ্ৰিকাধৃতলক্ষীকুলাৰ্ণব্বচনাচ্চ নতু মন্ত্ৰস্থ তথা-সত্যেকাক্ষরস্থলে বিলোমতায়া অসম্ভবঃ স্থাৎ এবং মাতৃকা-স্থানস্থাপি বিলোমতা বোধ্যা।

স্থানার্ণয়োর্বিনিময়ো র্নাঙ্গুলিস্থানয়োঃ কচিদিতি। ক্বফাচ্চ্চিনচন্দ্রিকাপ্পতবচনাৎ অনুলোমবিলোমেন লিপিস্থানেয়ু
কেবলম্। মূলং বিশুস্থ মেধাবী মূলমফৌতরং শতম্।
সংজপ্য ব্যাপয়েদ্রেহে শ্রাসঃ ষষ্ঠোহয়মীরিত ইতি তারা-

ভক্তিস্থধাৰ্ণবধ্বত-হরগোরীসংবাদীয়বচনস্থ কা গতিঃ মৈবম্ এতদ্বচনস্থ কালিকাদাবিংশত্যক্ষরমন্ত্রপরস্থাৎ কালিকামন্ত্র-রাজস্থ যোঢ়া-স্থাসোহয়মীরিত ইতি নিরুক্তবচনশেষাৎ। এবঞ্চ যাবন্তি মন্ত্রবিলোমতাবোধকবচনানি তান্থেতন্মন্ত্র-বিশেষপরাণীতি বিজৈবিভাব্যম্।

যত্ত্ব তন্ত্রসারকারাদিভিঃ সামান্ততো মন্ত্রস্থ বিলোমতা উক্তা তদ্বালাবিলাসাবিলোকনেনেতি ন কাচিদমুপপত্তিঃ।

নসু কেবলাং মাতৃকাং স্যুস্ত্যুপাদানেনাবিশেষাৎ কিমন্ত-মাতৃকান্যাসক্রমেণ ষোঢ়া-ন্যাসঃ কার্য্যঃ কিং শৃক্ষাতৃকা-ন্যাসক্রমেণ উত বোভয়ক্রমেণ। নাঘন্তথাবিধশিষ্টব্যবহারা-ভাবাৎ। ন দিতীয়ঃ বিনিগমনাবিরহাৎ। ন তৃতীয়ঃ একস্থ বিনিগমকসন্তেহনেকবোধকত্বাভাবাৎ। যথা স্বাহাপ্রণবসং যুক্তং শূদ্রে মন্ত্রং দদদ্বিজঃ। শূদ্রো নিরয়মাপ্রোতি ব্রাহ্মণো যাত্যধোগতিমিতি তন্ত্রসারধ্নতদেবীজ্ঞামলবচনে দিজপদস্তা-নেকাভিধায়কত্বেহপি ন ক্ষত্রিয়াদিবোধকত্বম্।

অত্যোচ্যতে অস্থা বাহ্যগাসত্বাৎ বাহ্যমাতৃকান্যাসক্রমেণ কর্ত্তব্যতা যগুন্তর্মাতৃকাক্রমেণ কর্ত্তব্যতা স্থাৎ তদাবশ্যমন্তঃ-পদং প্রযুক্তং স্থাৎ।

যত্ত্বাভক্তিস্থগর্ণবকারেণ বীরতন্তে ইত্যুক্ত্রা কেবলাং মাতৃকাং অস্থ মাতৃকাং তারসংপুটাম। মাতৃকাপুটিতং তারং শক্তিং তৎপুটিতাং অদেৎ। হ্রী হ্রী ঋং ঋং ৯ং ইং মিত্যেব মত্ত্রেণ পুটিতং পুনঃ। তৈত্তৈস্তথৈব মন্ত্রঞ্চ পুটিতং বিঅদে-ঘূধঃ। অনুলোমবিলোমেন মন্ত্রং কেবলমেব তু। বিঅস্থ মাতৃকাস্থানে ব্যাপ্তমফৌত্তরং শতমিত্যাত্যপক্রম্য তারসংপুটাং অন্যা ষোঢ়া যথা তন্ত্রসারধ্বতকালীতন্ত্রে—মন্ত্রেণান্তরিতাং কৃত্বা ষড়্বিধা মাতৃকাং ন্যুসেৎ।

অথ ব্যাপকতানঃ। ভৈরবীতন্ত্রে—পঞ্চধা নবধা বাপি
ফ্লেন সপ্তধা তথা। সাধকো ব্যাপকং কুর্যাভতো মৃদ্রাপ্রদর্শনমিতি। কালীতন্ত্রে চ—ইতি ব্যাপ্তান্ প্রবিশ্বস্থ
ফ্লবিতাং সমুচ্চরন্। সপ্তধা ব্যাপকং কুর্যাৎ যেন দেবীময়ো ভবেদিতি। তথা ভৈরবতন্ত্রে—পঞ্চধা নবধা বাপি
ফ্লেন সপ্তধা তথা। দোর্ভ্যাঞ্চ ব্যাপকং কুর্যান্ম্লবিষ্ঠাং
সমুচ্চরন্। পাদাদিকশিরোহন্তঞ্চ শির্মাদি পদান্তকম্।
সকুদেব পদং শ্বস্থ সাধকস্তন্ময়ো ভবেদিতি।

অয়ং ন্যাসঃ সৃষ্টিস্থিতিসংহতিক্রমাৎ ত্রিবিধাে ভিষ্ততে। তথাচ ফেৎকারিণীশয় তৃতীয়পটলে—ওঁকারং সংপুটীকৃত্য মনুনা ব্যাপকং অদেৎ। শিরঃপ্রভৃতি পাদান্তং আদ-স্থোৎপত্তিরুচ্যতে॥ পাদাদিকঃ শিরোহন্তম্ভ সোহপি সংহরণো ভবেৎ। উদরোপক্রমন্তাসো হাদয়ান্তঃ স্থিতি-র্ভবেদিতি।

সচ পুনর্ত্র স্কাচারিগৃহিযতিভেদাৎ ত্রিবিধাে জ্ঞাতব্যঃ।
ততুক্তং মন্ত্রদর্পণে—শীর্ষাদি পাদপর্য্যন্তং পাদাদি মস্তকাবিধি। মূলেন ব্যাপকং কুর্য্যাৎ সপ্তধা পঞ্চধািপি বা।
উৎপত্তিসংজ্ঞকাে স্থাসঃ প্রথমাশ্রমবািদিনাম্। গৃহস্থানাং
স্থিতিস্থাসঃ সংহারাখ্যাে যতের্ভবেদিতি। এতাব ফলভূয়স্বাথিভিঃ সৃষ্টিস্থিতিসংক্ষতিস্থাানাে বিধেয়ঃ। তথাচ কুলাচারতক্ত্রে—স্টেস্থম্ভপুট্যাদি স্থিতেঃ সৎপালনং ভবেং।
সংক্ষতের্দোষসংহারস্তমাক্রিতয়্বমাচরেদিতি॥ গৌতমীয়েহপি—স্থিত্যন্তশ্চ গৃহস্থানাং ত্রয়ং কাম্যানুরূপতঃ। স্থাসত্রয়ং সদা কার্য্যমশক্তাবেকমেব হীতি॥

যত্ত্ব সপ্তধা নবধা বাপি মূলমন্ত্রং সমূচ্চরন্। শিরআদি চ পাদান্তং অদেৎ সাধকদত্তমঃ। নিত্যন্তাদ ইতি প্রোক্তঃ সর্ববৈত্রব স্থথাবহ ইতি বীরতন্ত্রপঞ্চমপটলবচনং তৎ কেবল-ব্রহ্মচর্য্যাঞ্জমাভিপ্রায়েণেতি বোধ্যম্।

ভৈরবতন্ত্রবচনন্থমূলবিভামিতি মূলবিভাং মূলমন্ত্রমিত্যর্থঃ নভু স্বেষ্টদেবতানাম, মলেন ব্যাপকভাদং নবধা
কারয়েদ্ধ ইতি স্বতন্ত্রতন্ত্রবচনাথ। মন্ত্রস্ত্র প্রণবপুটিত এব
বক্ষ্যমাণবচনৈকবাক্যাথ। তথাচ নিগমকল্পলতায়ামন্টাদশপটলে—উকারপুটিতং ক্বন্তা মন্ত্রনা ব্যাপকং ভ্যমেং।
শীর্ষাদিপাদপর্যাপ্তং পাদাদিশীর্ষকং ততঃ। কারাভ্যাং

মার্জয়েদ্গাত্রং ব্যাপকস্থাদ ঈরিত ইতি ॥ এতৈঃ শীর্ষাদি-পাদান্তং পাদাদিশিরোহন্তং নাভ্যাদিহ্নদয়ান্তং প্রণবপুটিত-ফলমন্ত্রেণ হস্তাভ্যাং মার্জ্জনমেকধা ন্যাদো ভবতি ॥ অস্থ ত্রিধাপঞ্চধাদিঃ শক্তাশক্তভেদেন কর্ত্তব্য ইতি নির্গলিতার্থঃ ।

অত্র ওঁকারপুটিতমূলেন ব্যাপকত্যাসকরণে স্পষ্ঠপ্রমাণ-সত্ত্বেহপি তন্ত্রসারমতাবলম্বিনঃ কেবলমূলেন ব্যাপকত্যাসং কুর্বিন্তি, ন কুর্বিন্তি চ নাভ্যাদিহদন্তত্যাসমিতি।

বৈষ্ণবে তু কিরীটমন্ত্রেণ ব্যাপকন্যাদং কুর্য্যাৎ। স তু তত্তৎকল্পে মার্গ্যঃ॥

ইহ তু সাধারণভাগো নিরূপিতস্তত্তেরতানাং স্বস্বকল্পো-ক্রবিশেষস্থাদেষস্পর্দ্ধিত্বাৎ সন্দেহাভাবেন গ্রন্থাভিয়া চ ততো নিরস্তোহস্মি॥ তত্রাপি মহাপূজায়াং সাধকস্থো-পাস্তাদেবতাপ্রকরণীয়ন্তাসবাহুল্যাবশ্যকত্বমস্ত্রের মহাপূজায়াং স্ক্র গোত্মীয়াদিয়লগ্রন্থে প্রামাণিকসন্দর্ভে চ নিখিল-মাদলিখনাৎ, আগমোক্তেন মন্ত্রেণ ন্যাদান্নিত্যং করোতি যঃ। দেবতাভাবসাপ্নোতি মন্ত্রসিদ্ধিঃ প্রজায়তে। অকুত্বা ন্যাসজালং যো মূঢ়াজা প্রজপেন্মত্বয়। দর্কবিদ্রৈশ্চ বাধ্যেত ব্যাঘ্রৈমু গশিশুর্যথেতি রাঘবভট্টপ্রতক্বলপ্রকাশতন্ত্রে জপে তথা দর্শনাচ্চ॥ একত্র নির্ণীতঃ শাস্ত্রার্থো বাধকমন্তরেণা-তথেতি ন্যায়াত্মক্রবচনস্য মহাপূজাপরস্বমেব ন্যত্রাপি অন্যথা সংক্ষেপপূজালিখনবৈয়র্থ্যাৎ তত্র মল্তেহক্ষরন্যাসো বাচনিকো নোক্তস্তত্রাপি কর্ত্তব্যঃ॥ মন্ত্রাক্ষরাণি বিন্যস্থে-দ্বেতাভাবসিদ্ধয়ে ইতি শারদায়াং সামান্যতো মন্ত্রাকরন্যাস-বিধানাদতএব রাঘভটেনাপি তথা লিখিতম্।

ইতি সত্তমহামহীশচক্রচ্ড়ামণিচর্চিত্চরণনলিন শ্রীমদ্গোপী-মোহনপাদপল্মামন্দমকরন্দসন্দোহানন্দিত্মনোমধুকর-শ্রীহরকুমার দেবশর্ম-স্বীয়চিস্তামণিমন্ত্রচিস্তোদর্ক-হরত্বদীধিতৌ নবমকলাপ্রকাশঃ।

অথ ধ্যানম্। তস্ত সগুণনিগুণভেদাদ্বৈবিধ্যম্। যত্নজং শিবাচ্চনচন্দ্রিকাধ্বতসারসংগ্রহে—ধ্যানং কুর্য্যান্ততো মন্ত্রী তত্তৎকল্লোক্তবর্জনা। ধ্যানমাত্মেউদেবস্তা বেদনং মনসং মতম্ ॥ তদপি বিবিধং প্রোক্তং সগুণং নিগুণং ততঃ। আল্লনো হাদয়ান্তোজে কণিকাকেশরোজ্জলে। প্রফুলে সোমসূর্য্যান্তি-মগুলেন বিরাজিতে। স্বেন্টদেবং ততো ধ্যায়েৎ তত্তদাগমবোধিতম্। এবং যদেদনং তহি সগুণং ধ্যানমূচ্যতে ॥ যজ্জীবব্রহ্মণোরৈক্যং সোহহমস্মীতি বেদনম্। তদেব নিগুণং ধ্যানমিতি ব্রহ্মবিদো বিত্বরিতি॥

সগুণধ্যানপ্রকারমাহ জামলে—ততো দেহময়ে পীঠে
চিন্তয়েদিউদেবতাম্। গৃহীত্বা মুদ্ররা পুষ্পং দেবীরূপং
বিচিন্তয়েদিতি। দেবীরূপমিত্যুপলক্ষণম্। মুদ্রয়েতি করকচ্ছপিকয়া ত্রিখণ্ডয়া বা বক্ষ্যমাণবচনাভ্যামূভয়োর্বিধানাং॥
তথাচ শ্যামারহস্পপ্রত-কালিকাপুরাণে—এবংবিধাং সর্ব্বসিদ্ধিং
দদাতি পাণিকচ্ছপঃ। কুর্য্যাত্তং হাদরাসন্নং নির্মাল্য নয়নছয়ম্। সমং কায়শিরোগ্রীবং কৃত্বা স্থিরতরো বুধঃ। ধ্যানং
সমারভেমন্ত্রী সর্ব্বপাপপ্রণাশনমিতি॥ শাক্তানন্দতর্বিণ্যামপি—ততো দেবীং হাদস্ভোক্তে ধ্যায়েত্তদ্গতমানসঃ। পুষ্পং
গৃহীত্বা দেবেশি মুদ্রয়া তু ত্রিথণ্ডয়া। তাং কুর্য্যাদ্ধৃদয়াসন্নাং

নিমীল্য লোচনদ্যম্। সমকায়শিরোগ্রীবো ভূত্বা স্থিরতরো বুধঃ। ধ্যানং সমারভেমন্ত্রী সর্ববপাপপ্রণাশনমিতি॥

অথ মানসপূজা। তস্থা নিত্যত্বমাহ শ্রামার্চনচক্রিকায়াম্—মানসী প্রবরা পূজা মানসঃ প্রবরো জপঃ।
মানসৈশ্চ বিনা পূজা ত্বভিচারায় কল্পতে ইতি। তথা
সনৎকুমারতন্ত্রে—অকৃত্বা মানসং যাগং ন কুর্য্যাত্বহির্প্তনম্।
বিনা যাগেন যা পূজা সা পূজা বিফলা ভবেদিতি।

নমু অন্তর্যাগ ইতি প্রোক্তো জীবতো মুক্তিদায়কঃ। মুনীনাঞ্চ মুমুক্রণামধিকারোহত্র কেবলমিতি গৌতমীয়তন্ত্রবচনেন গৃহস্থানামনধিকারিত্বং প্রতিভাতি তৎ কথং তৈর্মানসপূজা কর্তব্যতি চেৎ সত্যম্ অন্তর্যাগমানসপূজ্যোর্মহান্ ভেদোহান্ত আছাঃ কেবলমুমুক্ষূণাং যোগগম্যত্বাং। অন্ত্যা-সর্বেষামেব। স্মরণে কর্তিনে বিষ্ণোন্তথা মানসপূজনে। সদাধিকারঃ সর্বেষাং মহাপাতকিনামপীতি শিবার্চ্চনচন্ত্রিকাধৃতপদ্মপুরাণবচনাৎ। মানসং পূজনং দেবি বাহ্মপূজা যথা তথা। উভয়োক্রভয়োঃ সাক্ষাৎ প্রযোজকপরস্পরমিতি নিগমকল্পলতোনত্রিংশপটলীয়বচনেন সাম্যসন্দর্শলাচ্চ॥

ষতু অন্তর্যাগং বিধায়েখং বাহ্যপূজনমাচরেৎ। অন্তর্যাগবহিবার্গো গৃহস্থঃ সর্বনাচরেদিতি মন্ত্রমহোদধিবিংশতিতরঙ্গবচনেন গৃহস্থানামন্তর্যাগবিধানং তৎ যজ দেবপূজায়ামিতি
ধার্বর্থস্মরণাদন্তর্যাগপদং মানসপূজাপরম্ যদ্বা এতদ্বচনং
জনকরাজাদিবদৃগৃহস্থপরং প্রাতঃকৃত্যাত্মকান্তর্যাগপরং বেত্যবিরোধঃ॥ সা যথা কেৎকারিণীয়ে ভৃতীয়পটলে—
প্রাণায়ামত্রয়ং কৃত্বা প্রবিশ্য হৃদয়ামুজম্। দেবতাং তত্ত্ব

সঞ্জিন্তা মনসারাধয়েভতঃ ॥ যেন ক্রমেণ বৈ মক্ত্রৈর্ক্রিবর্ননানিবিধঃ শুভিঃ। তেন ক্রমেণ তেনেব মানসো যাগ ঈরিতঃ॥ ন বাচোচ্চারয়েন্দ্রং মনসৈব মন্ত্রং স্মরন্। মুদ্রাং প্রদর্শয়েভত্র হস্তাভ্যাং ভাবয়েৎ পরম্। তত্র চাবাহনং নেইং হানয়ে মানসার্চ্চন ইতি॥ দ্রব্যৈর্ধ্পান্তদ্রব্যৈরিত্যর্থঃ। তত্নজ্জং শ্যামার্চ্চনচন্দ্রকাপ্পতকুলসারে—ধূপান্তা মানসী পূজা কর্ত্বরা ভূতিমিচ্ছতেতি॥ ধূপান্তেত্যনেন নৈবেচ্চং বিনেয়ং সিন্ধেতি। তথাচ বিফুপুরাণে—এবমন্তর্জলে ক্লফ্মভিন্ট্র স যাদবঃ। অর্চ্চয়ামাস সর্ব্বেশং পুষ্পধূপের্ম নোরমৈরিতি॥

যভু কালিকাপুরাণে মনসাপি মহাদেব্যৈ নৈবেঞ্চং দাতুমিচ্ছতি। যো নরো ভক্তিসংগুক্তঃ স দীর্ঘায়ুঃ স্থা ভবেদিতি বচনং তদ্বাহ্যপূজাভিপ্রায়ম্। যথা এবং কৃত্বা ময়া
নৈবেন্তং দাতব্যমিতি মানসং কুর্ববেতাহিপ তাদৃশফলাবাপ্তিরিতি তাৎপর্যার্থঃ॥ যদপি ধ্যাত্বা যজেত্ততো দেবি মানসৈভৌজনাদিকৈঃ। ভৌজনাবসরেণার্ণে বৈশ্বদেবং সমাচরেদিতি
সারসংগ্রহ্বচনং তদন্তর্যাগাভিপ্রায়েণেত্যবধ্য়েম্॥

অথ বাহ্যপূজা। লিঙ্গার্চ্চনতন্ত্রে—বাহ্যপূজাং বিনা দেবি ন হি স্থান্তীঃ প্রজায়তে। স্থান্তিং বিনা মহেশানি সর্বাধি হি স্থান্তামিয়াদিতি মূণ্ডমালাতন্ত্রে পঞ্চমপটলে—বাহান্তি পূজা রাজসী চ সর্ব্বমোভাগ্যদায়িনী। ভুক্তিমুক্তিপ্রদা চৈব সর্ব্বাপৎপরিণাশিনী। সর্ব্যদোষক্ষয়করী সর্বশক্রবিনা শিনী॥ সর্ব্বরোগক্ষয়করী সর্ব্বক্ষনমোচনীতি॥ ফেৎকারিণী তান্তেহপি—আরাধ্য মনসা সম্যক্ বাহ্যপূজাং সমাচরেং। পূজাঞ্চ মানসাং কৃত্বা তাতোহ্ব্যস্থাপনঞ্জাকেনিতি। শথ পূজাধারাঃ। শিবাচ্চনচন্দ্রিকাপ্বত-কুলার্ণবৈ—লিঙ্গশ্বণ্ডিলয়োর্ব্বহ্লে সূর্য্যান্ত্রপটকেরু চ। মণ্ডলে ফলকে মূদ্ধি,
ফদয়ে দশ কীভিতাঃ। রাষ্ট্রস্থানেরু দেবেশি জায়ন্তে পরমং
স্থমিতি। রাষ্ট্রস্থানে উপদ্রবস্থানে তত্তু ভয়ানকস্থানং
পীঠস্থানমিতি যাবং। রাষ্ট্রং স্থাৎ পরিবর্ত্তনে উপদ্রবে
ক্রাবপুংসোরিতি মেদিনীকরঃ॥ মাতৃকাভেদতত্ত্রে দ্বাদশপটলে চ। শ্রীশিব উবাচ—অথাতঃ সংপ্রবক্ষ্যামি পূজাধারং
স্থল্লভম্। শালগ্রামে মণে যত্ত্রে প্রতিমায়াং ঘটে
জলে। পুস্তিকায়াঞ্চ গঙ্গায়াং শিবলিঙ্গে প্রস্থানকে॥
শালগ্রামে শতগুণং মণো তদ্বৎ ফলং লভেং। যত্ত্রে
লক্ষণ্ডণং পূণ্যং মূর্ত্তেলকং স্থলোচনে॥ ঘটে চৈকগুণং
পূণ্যং জলে চৈকগুণং প্রিয়ে। পুস্তিকায়াং সহস্রন্ত গঙ্গায়াং
তৎসমং ফলমিতি।

নসু শালগ্রামশিলাদে যিন্নত্যং সমিহিতো হরিরিতি রাঘবভট্টপ্নতবচনেন শালগ্রামশ্য বিষ্ণুযন্ত্রনেন প্রসিদ্ধত্যং কেবলং তত্র তৎপূজনমিতি প্রতীয়তে। ন চেক্টাপত্তিরিতি বাচ্যং শালগ্রামে নণে যন্ত্রে প্রতিমায়াং স্থরেশ্বরীতি গুপ্তসাধনতর্ত্ত্রীয়াক্টমপটলবচনেন শালগ্রামেহিপি সামান্যতং সর্ব্বদেবতা-পূজাবিধানাং॥ নচ শালগ্রামশ্য বিষণ্ণু ধিষ্ঠাতৃকত্বেন সামান্য-বিশেষন্যায়যোজনয়া তন্মাত্রপরমিতি বাচ্যম্। শালগ্রামেহিধিকফলা জবাপুষ্পেয় তাদৃশীতি পিচ্ছিলাতন্ত্রীয়চতুর্দ্দশ-পটলবচনেন শক্তিদেবতাযন্ত্ররূপ-জবাপুষ্পেণ তুল্যন্থকীর্ত্তনাং। নটেতিব্রচনেন শাক্তানাং যবাপুষ্পেযত্রে পূজায়া যাদৃশফলপ্রাপ্তিঃ বৈশ্ববানাং শালগ্রামে তথেতি ফলমেবা-

য়াত্য নতু শাক্তানাং ত্মান্ পূজনমভিহ্তিমিতি বাচ্যম্। শালগ্রামং ভবেদ্যন্ত্রং শালগ্রামং গৃহং ভবেৎ। যন্ত্রস্ত গৃহ-মিত্যুক্তং গৃহস্থা দেবতা মতেতি শক্তিদঙ্গমতন্ত্রোনবিংশতি-পটলবচনেন শাল্থামস্থ সামান্ততো যন্ত্ৰত্ববিভাৎ ॥ নচ নিরুক্তন্সায়যোজনয়া এতাদৃশসামান্সবিধায়কবচনানি বিষ্ণু-পরাণীতি বাচ্যম্। লিঙ্গস্থাং পূজয়েদ্দেবীং পুস্তকে প্রতিমান্ত্র চ। স্থণ্ডিলে পাতুকে চিত্রে খড়েগ বহ্নে জলেয়ু চ। লোহিত্যে চৈব গঙ্গায়াং সাগরে তীর্থসঙ্গমে। প্রতিপীঠে বিল্নমূলে বিল্নরক্ষে চ শঙ্করি। যত্র কালশিলা চৈব পীঠং তন্মণিপূরকম্। অন্তর্গৃহং মহাপীঠং মণিপীঠং তছচ্যতে। শিলায়াং পর্বতস্থাগ্রে তথা পর্বতগহ্বরে। দেবীং সংপূজ্যে-মিত্যং ভক্তিশ্রদাসমন্বিত ইতি যোগিনীতন্ত্রদিতীয়ভাগ-ষষ্ঠ-পটল-বচনেন শিলায়ামপি শক্তিদেবতাপূজাবিধানাৎ।। নচাত্ৰ তত্র যত্নেন গন্তব্যং যত্রাস্তে তারিণী শিলেতি বচনেন শিলা-পদং তারিণীশিলাপরমিতি বাচ্যম্। তস্থাং নিত্যপূজায়াং মানাভাবাৎ। তারিণী শিলা তু ব্রহ্মানন্দকৃততারারহচ্ছে— ঈশানে বক্রনাথস্থ বৈগ্যনাথস্থ পূর্ববতঃ। তারাপুরমিদং স্থাতং নগরং ভুবি ফুর্লভম্। তত্র যত্নেন গন্তব্যং যত্র তারা শিলাময়ীতি।

উচ্যতে শালগ্রামশিলারান্ত তত্তদুদ্ধ্যা সমর্চ্চ যেদিতি রাঘবভট্টপ্ত-সোনশন্তুবচনেন শালগ্রামশিলারান্ত যক্তব্যাঃ সর্বাদেবতা ইতি ব্রহ্মাণ্ডপুরাণীয়স্পক্টবিধানেন চ শালগ্রাম-শিলারাং পঞ্চোপাসকৈরেব পুজনং কার্য্যমিতি। যতু তারা-য়াকৈচব কালগশ্চ ত্রিপুরায়ান্তথার্চনে। তুলস্থা পূজনং নাস্তি শালগ্রামশিলাচ্চ নমিতি কালীকুলসর্ববস্বচনং শালগ্রামশিলা যত্র তত্ত্ব পূজাং ন চাচরেদিতি মায়াতন্ত্রবচনং কালী তারা তথা ছিন্না স্থন্দরী ভৈরবী তথা। এতাসাং পূজনং তত্ত্ব শিলায়াং নৈব যুজ্যতে। পূজা তু নিক্ষলা জাতা বিঘ্নস্তম্য পদে পদে ইতি নিরুত্তরতন্ত্রবচনঞ্চ তৎ তত্তদেবতাপরং রহস্যপূজাপরং বেত্যবিরোধঃ।

বস্তুতন্ত্ব শক্তিদেবতায়াঃ শাল্রামে পূজনং বিহিত্যন্ত্রা-ভাবে বোধ্যম্। তছুক্তং ব্রহ্মানন্দগিরিক্ত-ভারারহস্পপ্তভারানিগমে—অভাবে সর্বযন্ত্রাণাং শাল্রামে জলেহচ্চ মেনিতি। নম্বেত্বচনস্থ শক্তিদেবতামাত্রপরত্বে কিং মানমিতি চেৎ সত্যম্ তৎপ্রকরণীয়য়াৎ॥ তত্র শাল্রামে বিশেষয়তি মাতৃকাভেদতন্ত্রীয়দশমপটলঃ—শাল্গামে চ পূজায়াং ন লিখেদ্যন্ত্রম্ভ্রমনিতি॥ তথা শক্তিসঙ্গমতন্ত্রে উনবিংশতিপটলে। শাল্গামং তথা যন্ত্রং দ্বয়মেকত্র নাচ্চ য়েৎ। পঞ্চানয়তনদীক্ষা চেৎ দ্বিতয়ং পূজয়েৎ সদা॥ একপীচে পৃথক্প্রাং বিনা যন্ত্রং করোতি যঃ। দেবতাশাপমাপ্রোতি রৌরবং নরকং ব্রজেদিতি। যন্ত্রে তত্তদেবতাযন্ত্রে ইত্যর্থঃ।

যন্ত্রে পূজাপ্রাধান্তমাহ তন্ত্রসারঃ—যন্ত্রং মন্ত্রময়ং প্রোক্তং যন্ত্রাত্মা দেবএব হি। দেবাত্মনোর্যথা ভেদো যন্ত্রদেবতয়ো-স্তথেতি॥ তথা আদৌ লিখেদ্যন্তরাজং দেবতায়াশ্চ-বিগ্রহম্। কামক্রোধাদিদোযোপসর্ববহুঃখনিযন্ত্রণাৎ। যন্ত্র-মিত্যান্ত্রেকস্মিন্ দেবঃ প্রীণাতি পূজিতঃ। বিনা যন্ত্রেণ পূজায়াং দেবতা ন প্রসীদতি। হুঃখনিযন্ত্রণাৎ যন্ত্রমিত্যান্ত্র-স্তন্ত্রবেদিন ইতি।

তত্র বিদ্রুমাদিযন্ত্রণাং ফলমাহ শিবাচ্চনচন্দ্রিকাপ্পত-লক্ষণাগরে—বিদ্রুমেণ কৃতং যন্ত্রং মন্ত্রিণাং সর্বকামদম্। স্থব-রেণিন কৃতং যন্ত্রং সর্বরাজ্যবশঙ্করম্। রজতেন কৃতং যন্ত্রমায়ুরা-রোগ্যকামদম্। তাত্রেণ রচিতং যন্ত্রং সর্বৈশ্বর্যপ্রদং মতম্। যন্ত্রং হি স্ফাটিকং দেবি মনোহভিল্যিতপ্রদম্। মাণিক্যর্রিতং যন্ত্রং রাজ্যদং মুক্তিদং মতম্। কৃতং মারকতং যন্ত্রং সর্বশক্র-বিনাশনম্। লোহত্রয়োদ্রবং যন্ত্রং সর্ববিসদ্ধিকরং স্মৃত্যিতি।

লোহত্রয়বিভাগমাহ তত্ত্বৈ—লোহত্রয়বিভাগন্ত কথয়ানি তবানবে। ভাগা দশ স্থবর্ণস্থ রজতস্ম চ যোড়শ। তাত্রস্ম চ বিভাগেন পীঠং কুর্য্যান্মহেশ্বরি। তস্মিন্ পাঠে চ নির্মাণং পূজাচক্রস্ম কারয়েৎ। শান্তিদং পুষ্টিদং প্রোক্তং সর্ব্বশক্র-বিমর্দ্যনম্। আয়ুরারোগ্যজনকং কীর্ত্তিদং পুষ্টিদং মতমিতি।

তত্র ভূর্জ্জাদিলিখিতযন্ত্রে পূজাকালাবধিমাহ। সময়াচারতত্ত্বে দ্বিতীয়পটলে—ভূর্জে ষড়্বর্ষপর্য্যন্তং তাত্রে দ্বাদশমেব
চ। রূপ্যে চ ষষ্টিবর্ষঞ্জ মহাশন্থে সহস্রকম্। প্রবালে
মণিরত্বে চ শিবলিঙ্গে তথা পুনঃ। স্ক্বর্ণে স্ফাটিকে চৈব
বর্ষসন্থ্যান বিন্তৃত ইতি।

যন্ত্রস্থ দাহাদে প্রায়শ্চিত্রমাহ। শক্তিতন্ত্রে চতুর্থপটলে—
দশ্ধং বা স্ফাটিতং যন্ত্রং হৃতং চৌরেণ বা প্রিয়ে। উপবাসং
প্রকৃষর্বীত দিনমেকমতন্ত্রিতঃ। অযুতং প্রজপেদ্বিস্তাং হোম
তর্পপপূর্বিকাম্। সম্ভক্ত্যা চ গুরুং তোষ্য ব্রাহ্মণানপি
ভোজয়েদিতি॥ লুপ্রচিহ্নাদিযন্ত্রস্থ ভঙ্গে দোষং তীর্থরাজাদে
ক্ষেপণঞ্চাহ তত্রৈব—কদাচিল্লুপ্রচিহ্ণং বা ক্ষুটিতং বা বিদূবিতম্। ভগ্গং করেণতি যো মর্ত্যো মৃত্যুস্তম্থ ভবেৎ ধ্রুবম্।

তস্মাত্ত তীর্থরাজে বা গঙ্গাদিসরিতাং বরে। সমুদ্রে বা ক্রিপেদেবি চান্সথা জুংখনাপ্নু রাদিতি।

যতু শালগ্রামে শিলাচকে পুজয়েদ্বাব্দণঃ সদা। পুজয়েং भिरंतिष्ट तो न याज शृष्टार करतो। यनुष्ठ तिरान शृष्टा শা পূজা বিফলা ভবেৎ। পূজকস্ম তু তেজাপদি হরতে ভৈরবঃ ষয়ম্।। পূজনং শিবলিঙ্গে চ শুদ্রাণাং সম্মান কলাবিলি কলো যন্ত্রপজানিষেধক-কালীবিলাস-সপ্তমপট্লায়বচনং তৎ অস্থমরে থকবল্রে পূজানিবেধপরম্। অক্তর্ভ স্তল্যাং রেখাং নালিখ্য স্বমং মুখম। বোহত্র বাস্ত্রে প্রবর্তেত তম্ম সর্বাণ হরাম্যহমিতি তীর্থস্বামিশোধিত-রহভল্লসারবচনে অস্তুত্ত রেথকবন্ত্রে প্রয়ন্তে দোরশ্রবণাৎ। শালগ্রামে শিলাচক্রে পুজয়েদিতি তাদুশ্যরুলিখনাশক্তঃ পুজয়েদিতাপ ৷ সন্ত্রক্ত লিখনেহশক্তঃ পুস্পযন্ত্রে প্রপ্রজয়েদিতি লক্ষানন্দগিটিকত-ভারারহস্মধৃতভারানিগমনচনে অশক্ত ইতি প্রবণাৎ।

যন্ত্রস্থা তাদশ্রসমরেখাদিলিখনাশভেন প্রদেশ কুত্র পুজয়িতব্যমিত্যাকাজনয়ামাহ—পুজন শিংলিঙ্গে ৮ শদাণাণ শমতং কলাবিতি। কলিয়বৈশ্যারিদার্নাণ শাদুভ্রাত্তেম ন তায়োরুল্লেখঃ। জলে ইতি সামাত্রজলে ইতার্থ: উভরে গঙ্গাপদভাবণাং। তত্র পূজনন্ত পূজা-দোগোপশাভ্যর্থন্। তত্বক্তং গুপ্তসাধনতন্ত্রেংফীমপটলে---সামান্ডে চ জলে দেবি পূজা দোযোপশান্তয়ে ইতে। প্তিকায়ামিতি তত্ত-দ্বেতাপটলে ইতি রহস্মার্থঃ।

শিবলিঙ্গে ইতি। তত্র সর্ববদেবতাপুজাধিকারমাহ ক্ষজামলে—তেযাং।লঙ্গে মণো কুম্ভে শিলে চৈব প্রপুজনম্।

মালায়ামপি তদু দ্ব্যা যন্ত্রাদে চ প্রপূজ্যে । ভূমাবেব কৃত। পূজা ন পুণ্যফলদায়িনীতি। তেষাং পঞ্চদেবানাং শিলে শালগ্রামশিলায়ামিত্যর্থঃ ছান্দসন্থাৎ পুংস্বম্।

তত্রায়ং শাক্তে বিশেষঃ। মাতৃকাভেদতন্ত্রে দাদশপটলে—শিবলিঙ্গে হানস্তং হি বিনা পার্থিবলিঙ্গকমিতি।,
তথা পিচ্ছিলাতন্ত্রে চতুর্দ্দশপটলে—ন পার্থিবে শিবে কুর্য্যাৎ
পূজনং শাস্তবীমনোঃ। স্ফাটিকাদিশৈবলিঙ্গে পূজানন্তফলপ্রদেতি । গুপ্তসাধনতন্ত্রেহক্টমপটলেহপি—শিবলিঙ্গে মহেশানি অনস্তফলর্মারিতম্। ন কুর্য্যাৎ পার্থিবে নিঙ্গে দেবীপূজাদিকাঃ ক্রিয়াঃ। পার্থিবে পূজনাদেবি সিদ্ধিহানিঃ
প্রজায়তে। যদি দৈবামহেশানি মৃতিকাম্খলনং ভবেং।
তাবদ্বর্ষসহস্রাণি নরকে পূযশোণিতে। কুর্ন্তাপাকে মহাঘোরে
পচ্যতে পিতৃতিঃ সহ। অতএব মহেশানি পার্থিবে নহি
পূজয়েৎ। স্ফটিকাদীন্ সমানীয় লিঙ্গং নিশ্মায় যত্নতঃ।
তল্লিঙ্গে পূজনাদেবি সর্ব্বসিদ্ধিযুতো ভবেদিতি।

যভু কালিকাং তারিণীপৈব ত্রিপুরাং ভূবনেশ্বরীম্। যো-২র্চ্চয়েৎ পার্থিবে লিঙ্গে স যাতি পরমাং গতিম্। তারিণ্যাঃ কালিকায়াশ্চ স্থন্দর্যাঃ পরমেশ্বরি। পার্থিবে পূজনাদেবি চতুর্ব্বর্গফলং লভেদিতি কেনাপ্যাধূনিকনিবন্ধকারেণ লিখিতং তম্ম গ্রন্থনামাধূতত্বন সমূলত্বে মান্ঞিন্ত্যম্।

প্রস্নকে ইতি যন্ত্রপুষ্পে ইত্যর্থঃ। তছুক্তং কোলাবলীয়ে—যত্রাপরাজিতাপুষ্পং জবাপুষ্পঞ্চ বিদ্যতে। কর-বীরে শুক্লরক্তে দ্রোণং বা যত্র তিষ্ঠতি। তত্র দেবী বসে-দ্বিত্যং তদুয়ন্ত্রে চিওকার্চনমিতি।

বৈষ্ণবে বিশেষমাহ তন্ত্রদারধূতনারদীয়ে—আপোহ্যিছ দরং চক্রং বিষ্ণুক্ষেত্রসমুদ্ভবম্। বন্ত্রঞ্চ প্রতিমাস্থানমর্চনে
দর্বদা হরেরিতি॥ তদ্ধৃতগোত্সীয়েহপি—শালগ্রামে মণ্যে
বন্ত্রে প্রতিমামগুলের বা। নিত্যং পূজা হরেঃ কার্য্যা নতু
কেবলভূতলে॥ শালগ্রামশিলাস্পর্শাৎ কোটিজন্মাঘনাশনম্।
কিং পুনশ্চার্চনং তত্র হরিসান্নিধ্যকারণম্। বহুভির্জন্মভিঃ
পুণ্যের্ঘদি কৃষ্ণশিলাং লভেং। গোম্পদে নৈব চিহ্নেন জন্মস্তত্র সমাপ্যতে ইতি॥ শিবাচ্চনচন্দ্রকাপ্পত্রেলোক্যদন্মোহনতন্ত্রে চ—শালগ্রামে মণ্যে যন্ত্রে স্থভিলে প্রতিমাপ্র চ।
হরেঃ পূজা তু কর্ত্র্যা কেবলে ন তু ভূতলে ইতি।

শৈবানাং বিশেষো যথা শক্তিসঙ্গমতন্ত্রোনবিংশপটলে— জাবচক্রং যদা প্রাপ্তং বাণলিঙ্গে ন চার্চ্চ য়েং। বাণলিঙ্গং যদা প্রাপ্তং শালগ্রামং তদা ন বৈ। শালগ্রামং যদা প্রাপ্তং তদাহাত্র ন পূজয়েদিতি দিক্॥

অথার্ঘ্যম্। তৎস্থাপনপ্রকারস্ত স্বস্বকরেই মুদক্ষেরঃ।
তত্রাপি চন্দনান্ত্রদা মণ্ডললিখনবিধিঃ প্রদর্শতে। ততুক্তং
শিবাচ্চনচন্দ্রিকাধৃতসারসংগ্রহে—ত্রিকোণং রন্তসংরক্তং চতুরক্রঞ্চ মণ্ডলম্। গন্ধলিপ্তে স্ববামাত্রে বিদ্য্যান্মংস্থামুদ্রেতি।
রন্তসংর্ত্তমিতি ত্রিকোণং রন্তেন বেস্টিতমিত্যর্থঃ॥ নারদীয়েহপি—দেবাগ্রতঃ স্ববামাত্রে ত্রিকোণং চন্দনান্ত্রসা। রত্তেন
বেস্টিতং বাহে চতুরক্রেণ চৈব হি। বিরচ্য মুদ্রয়া মৎস্থার্কারা সাধকো ভুবীতি। পুংস্ক্রীদেবতাভেদেন ত্রিকোণস্থোদ্বার্যাং বিশেষতো দর্শন্নিয়ামঃ।

তত্র পাত্রবিশেষে ফলবিশেষমাহ শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাপ্পত-শিবরহস্থে—হেমপাত্রাণি সর্বাণি গৃহীতানি ভবন্ত মে। অর্ঘাং দল্প তু রোপ্যেণ লোকে পূজ্যস্থতান্ লভেং। তাত্র-পাত্রেণ সোভাগাং ধর্মাং মুম্ময়সম্ভবে। সর্বলাভে তু মাহেরং স্বহস্তব্যতিং যদি। আমলঞ্চার্যপাত্রঞ্গ ভ্রমাসা-দয়ের তু। সক্ষত্র স্বর্ণবভাত্রমর্যপাত্রং ততোহধিকম্। পাত্রা-ণামাদরং কার্য্যঃ পাত্রাণ্যেলোভনানি তু। বহির্হোমক্রিয়ায়াং হি বিনা পাত্রং ন সিধ্যতীতি।

তিরশ্বাণপ্রকারসাহ তাত্রেব—বট্রিংশদস্কুলং পাত্রস্ত্রণ পরিকীত্তিত্ব। মধ্যমস্ত ত্রিভাগোনং কনিষ্ঠং ছাদশাস্থলস্থ। বস্বস্থলবিহানস্ত ন পাত্রং কার্যমেৎ কচিং। নাভীবিবর-ব্লোনি পুণ্ডীকার্যভীনি চা দ্রাহ্বানীলোৎপলাদীনি পাত্রাণি পরিক্লায়েদিতি। আমলমপ্রকং শ্যামলবৎ স্বাপে লপ্রত্যাসঃ।

নৈদ্যনে ও গৌতমীরে নবমাধ্যায়ে—তাপ্রপাত্রঞ্চ বিপ্রমে বিশেরতিপ্রিক্তবেং। তথৈব সর্ববপাত্রাণাং মুখ্যং শুখ্রা প্রকাতিত্ব। মুৎপাত্রঞ্চ তথা প্রোক্তং স্বর্ণং বা রাজতং তথা। পঞ্চপাত্রং হরেঃ শুদ্ধন নাহাত্ত্র নিযোজয়েদিতি। জ্যাপি মুৎপাত্রং স্বহস্তগঠিতমেব জ্যোং পূক্রচনৈক-যোগাং॥ শঙ্কো বিশেশস্কেবঃ। তন্ত্রসারে—সর্বাত্রের প্রশারেভার শিবসুরাজ্যনিং বিনেতি। জ্বজ্ঞঃ শিবসুরাজ্যনিং বিনেতি। জ্বজ্ঞঃ তথা দুর্গান্তির্কৃত্য বিশ্বসারে—ন শজ্যের্য্যপাত্রং স্থাৎ ক্ষিতং শল্যোনিনেতি।

ত্র বিষ্টাল পাত্রসহ।। একং পূজাদৌ খাপনীয়া তদেব

দামান্তর্থ্য । দে পাত্রে এতৎসময়ে। ততুক্তং শ্রামার্চনচন্দ্রিকারাম্—অর্থ্যস্থ ত্রীণি পাত্রাণি কুর্য্যাদেবং সমাহিতঃ।
পূজাদাবেকমেব স্যাৎ পাত্রে দে অর্থ্যকালকে ইতি॥ এবং
পাত্রব্রম্য কর্ত্তব্যত্বমূক্তং গৌতমীয়ে নবমাধ্যায়ে—অর্থ্যস্থ ত্রিণি পাত্রাণি পাদ্যস্থাপি ত্রস্তরেৎ। তথা চাচমনীরানি
পাত্রাণি চ বিভাগশঃ। তথা ক্রণদেক্রিল্যাদেকমেকং প্রশস্থতে ইতি।

যতু একপাত্রং ন কর্ত্তব্যং যদি সাজান্মহেশরঃ। মন্ত্রাঃ পরাধ্যুখা যান্তি আপদশ্চ পদে পদে। ইহ লোকে দরিদ্রঃ দ্রং মতে চ পশুতাং ব্রজেদিতি রহত্তপ্রসারগ্নতনবরত্বেশর-বচনং তৎ পালাদিসকলানামেকপাত্রকরণনিমেধকম্। অর্ঘান্দার্লারার্থি মধুপর্কাপনপাথ। তথৈবাচমনার্থণ অস্থেৎ পাত্রচতুন্টর্যানিতি সন্ত্রোহনতন্ত্রপঞ্চমপটলাগন্ত্যসংহিতাব্রয়োনশাধ্যার্থীয়বচনেন প্রত্যেকমেকৈকপাত্রশু পৃথক্ পৃথিধানাৎ। সম্ভবে ত্রাণি পাত্রাণি চাত্যপা দ্বে সরচ্চরেৎ। পাদ্যাদিয়্ মহেশানি নৈকপাত্রণ কদাচনেতি শ্রামান্চ নচন্দ্রকাপ্পত্তপ্রত্রভ্রন্থানি নৈকপাত্রণ কদাচনেতি শ্রামান্চ নচন্দ্রকাপ্পত্তপ্রভ্রন্থানিকজাতীয়পাত্রনিদেধকর্য। তলুক্তং মহানীলতন্ত্রে সপ্তর্ণপটলৈ—পাদ্যপাত্রগ্রহণ তথাচমনপূর্বক্ষ্। তাত্রং শহাংসপাত্রং ক্রেণে বিনিবেদ্যেদিতি।

যদপি, ভগ্নং বস্তমুলিন্যনং ক্ষণিং সচ্ছিদ্রমেব চ। বিজা-তীয়ঞ্চ দেবেশি বজয়েৎ সর্বাথা প্রিয়ে ইতি শ্যামাচ্চন-চন্দ্রিকাধৃতবচনং তদেকপাদ্যস্য পাত্রত্তরাণাং বিজাতীয়ত্ব-হাতিদেধপারমু! এবস্থ্যাদিবু। বস্তুতস্তু শক্তো সত্যামেতানি ভিন্নানি ভিন্নানি কার্য্যাণি। অশক্তোতু একেন সর্ব্বম্। তছুক্তং রাঘবভট্টেন—একস্মিন্নথবা পাত্রে পাদ্যার্ঘ্যাদীনি কল্পয়েদিতি।

অথার্ঘ্যদ্রব্যাণি। শিবাচ্চ নচন্দ্রিকাগ্গতপ্রপঞ্চশারে—
গন্ধপুষ্পাক্ষত্যবাঃ কুশাগুতিলসর্যপাঃ। দূর্ববা চেতি ক্রমাদর্ঘ্যদ্রব্যাষ্টকমুদীরিতম্॥ তথা রাঘবভট্টগ্গতমহাকপিলপঞ্রাত্রে—সিদ্ধার্থমক্ষতক্ষৈব দূর্ববা চ তিলমেব চ। যবং
গন্ধং ফলং পুষ্পমন্তঃঙ্গং স্বর্ঘ্যমুচ্যতে ইত্যপরবচনে কুশস্থানে
ফলপ্রতিপাদনাত্যাের্বিকল্লো বেদিতব্যঃ।

নকু ন তুলস্যা যজেৎ কালীং নাক্ষতৈর্বিস্থুমচ্চ য়েদিতি পিচ্ছিলাতন্ত্রীয়েকাদশপটলবচনা দক্ষতেনবিষ্ণুপূজাপ্রতি ষেধাদর্ঘ্যেহক্ষতদানমকুপপন্নম্। নচ তদর্ঘ্যপাত্রে দাতব্যা গন্ধপুপ্সথবাক্ষতাঃ। কুশাপ্রতিলদুর্ব্বাশ্চ সর্যপাশ্চার্য্য সিদ্ধন্নে ইতি শ্রীকৃষ্ণমাত্রপূজাপ্রতিপাদক-সন্মোহনতন্ত্রপঞ্চমপটলীয়ন্বচনেনার্ঘ্যেহক্ষতদানমুপপন্নমিতি বাচ্যম্। যবাক্ষতা ইত্যুপাদানেন তৎসম্বন্ধীয়াক্ষতস্য প্রাহ্মমের তম্ম সঙ্গননীয়ভাৎ। নচ গন্ধপুপ্পাক্ষত্যবকুশাপুতিলসর্যপান্। দূর্ব্বাভির্দেবশির্দ্ধি শিরোমন্ত্রেণ চার্পমেদিতি গৌত্রমায়তন্ত্রদশনাধ্যায়বচনেনার্ঘ্যহক্ষতদানস্য স্পেষ্টবিধানমিতি বাচ্যম্ গৌতমোক্তক্ষেশ্ শ্রীকৃষ্ণপূজাপরস্থাৎ।

উচ্যতে নিরুক্তবচনম্ উক্তান্থকৈন্তথা পুল্পৈর্জনিরিঃ স্থলজৈরপি। পত্রৈ সর্কৈর্যথালাভং ভক্তিমান্ সততং যজেৎ। পুস্পাভাবে যজেৎ পত্রৈঃ পত্রালাভে চ তৎফলৈঃ। অক্ষতৈর্বা জালৈর্বাশি ন পূজাং ব্যতিলঞ্জয়েদিতি গন্ধর্ব- তন্ত্রচতুর্দ্দশপটলবচনৈন পুষ্পাদ্যভাবে তৎপ্রতিনিধিভূতা-ক্যতেন পূজানিষেধপরমিতি ন কশ্চিদ্বিরোধঃ।

যদ্যপি লাজাঃ পুংভূমি চাক্ষতমিত্যমরকোষে অক্ষতং ন দয়োঃ পণ্ডে লাজেয়ু ত্রিষহিংদিতে। বরেহপি কচিদয়তে হরো স্মরহরে পুমানিতি মেদিগ্রামপ্যক্ষতশব্দশ্য লাজার্থত্বং প্রতীয়তে তথাপ্যনাদিসিদ্ধ-শিক্টব্যবহারাৎ তণ্ডু লবাচকত্বং জ্যেম্। অন্যথা তন্ত্রসারকারয়তশারদাতিলকোক্তভূতাপ্রনাবিকিরেয়ু, লাজচন্দনসিদ্ধার্থভিম্মদূর্বাকুশাক্ষতাঃ। বিকিরাইতি সন্দিক্টাঃ সর্ববিদ্বোঘনাশকা ইত্যত্রাক্ষতশব্দশ্য লাজার্থক্তি সেদিক্টাঃ সর্ববিদ্বোঘনাশকা ইত্যত্রাক্ষতশব্দশ্য লাজার্থক্তি পেনিরুক্ত্যাপত্তেঃ। ক এবং বিচক্ষণো য়ঃ শব্দান্থিপারগমনসমর্থঃ। এতদেবোক্তং ভগবতা ছুর্গসিংহেন—অহঞ্চ ভাষ্যকারশ্চ কুশাগ্রীয়ধীয়ারুজে। নৈব শব্দান্থ্রেং পারং কিমন্যে জড়বুদ্ধয় ইতি।

নমু, নাক্ষতৈরচ্চ য়েদ্বিষ্ণুং ন তুলস্থা গণাধিপম্। ন
দূর্বয়া যজেদ্ গাং বিল্পত্রেদিবাকরমিতি শিবাচ্চ নচন্দ্রকায়তজ্ঞানমালাবচনেন তুর্গায়ে দূর্ববাদাননিষেধাৎ তুর্গায়ে
দূর্বা ন দেয়া। নচ বিনা বৈ দূর্বয়া দেবীপূজা নাস্তি
চ কহিচিৎ। তম্মাৎ দূর্বয় গুহীতবয়া সর্ববিশুপায়য়ী হি সেতি
শাক্তানন্দতরঙ্গিগায়তবচনেন দেবীপূজায়াং দূর্ববাদানাবশ্যকফোন বিরোধ ইতি বাচাম্ এতছচনে সামান্যবিশেষযোজনয়াত্র দেবীপদস্থ তুর্গেতরত্বাং। নচ রক্তমর্ঘ্যং শেতদূর্বয়াং
নীলকণ্ঠং কুরণ্ঠকম্। ন দদ্যাচ্চ মহাদেবের যদীচ্ছেচ্ছুত্তনাম্মন ইতি শাক্তানন্দতরঙ্গিগায়তজামলবচনৈকবাক্যয়াৎ
উক্তবচনং শ্বেতদ্বায় পূজানিষেধকমিতি বাচাম্। দেবীমাত্রে

শ্বেতদুর্কায়া নিষিদ্ধতেশ ছুর্গায়াং সাধারণদূর্কাদাননিষেধ।
বগমাৎ।

উচ্যতে পুষ্পাভাবে জলেনাপি দূর্বরা তণ্ডুলেন বা।
নানসীং তদভাবেংপি পূজাং নো লপ্তায়েৎ কচিদিতি পিচ্ছিলাতন্ত্রধাদশপটলবচনেনোক্তবচনং পুষ্পাঘ্যলাভে তৎপ্রতিনিধাছুতদূর্বরা পূজানিষেধবোধকং নম্বর্ঘ্যবিষয়কম্। তত্ত্তং তত্ত্বৈ
চতুর্দ্দশপটলে—ছুর্গামন্ত্রানিধিক্বত্য—ন দূর্ব্বরা যজেদেনাং
বিনাধ্যং পরমেশ্বরীতি॥

অর্থ্যে দূর্ব্বায়া বিশেষঃ। যথা স্বতন্ত্রতন্ত্রে—সপ্তপত্রা ন্থিতা দূর্ব্বা হোসকর্মাণি শস্ততে। অন্তত্র পঞ্চপত্রা স্থাৎ ত্রিপত্রা চার্য্যকর্মণীতি। পত্রত্রান্থিতা দূর্ব্বা প্রশন্তঃ সর্ব্বকর্মণীতি শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাপ্পত্রেসামশস্তুবচনস্থসর্বশন্দ্র সঙ্গোচঃ স্থীক্রিয়তে অন্যথা সতন্ত্রতন্ত্রবচনবিরোধাপত্তেঃ। যন্ধা সর্ব্বশন্দ্র তালব্যাদিয়েন মহাদেবাভিধায়কং তল্প কর্মণি ত্রিপত্রা প্রশাস্তেত্যর্মঃ। দন্ত্যাদিপাঠেহিপি সএবার্থঃ। সর্ব্বঃ শর্বান্চ শঙ্কর ইতি নানার্থকোষাৎ।

এবং সগর্ভদূর্বিয়া যফব্যম্। তত্ত্তং পিচ্ছিলাতত্ত্রে একাদশপটলে—দূর্ব্বাপি গর্ভযুক্তা চেৎ দেবীতুষ্টিকরী ভবেদিতি। দেবীতুপলক্ষণম্। তথাচ শ্রামাসপর্য্যাবিধিধত-স্মৃত্যে—অগর্ভা পিতৃপূজায়াং মগর্ভা দেবতার্চ্চনে। গর্ভযুক্ত। চ যা দূর্ব্বা দীয়তে হরমস্তকে। শিবদ্রোহী কৃতত্বশ্চ সপ্তজ্মনয়ত্ত্বধ ইতি। এতেন শিবস্থা বিশেষোহিপি দর্শিতং! অত্রাব্যয়িদ্রব্যাক্টকানামেকতমস্থা সর্ব্বোং বা অভাবে তণ্ড্লান্বি নিক্ষিপেৎ। প্রমাণস্ত্রো তাম্ব লদানপ্রকরণাত্তে বক্ষ্যামঃ!

অর্থ্যত্রয়াণাং প্রয়োজনমাহ শ্যামাপ্রদীপয়্ত-পূজাসারে

— সামান্যার্ঘ্যেণ গিরিজে ছারপূজা প্রকীভিতা। দিতীয়েনেৡপূজা চ কৃতীয়েনাপরাচ্চনম্ ॥ বিশেষার্ঘ্যেণ দেবেশি প্রদকিণমূদাহতম্। সামান্যার্ঘ্যেণ চ পুনঃ কুর্য্যাদারসমর্পণমিতি ॥ অপরার্চনমিতি। অত্র যচ্চতুর্ব্যপ্রয়োজনম্ক্রং
তং শ্যামাদিবিল্লাভিপ্রায়েণ তম্যা আবরণপূজানত্তরং পুনঃ
পূজাভিধানাং।

নুক্ তন্ত্রসারকারেণ মহাকালপূজান্তে মূলদেবীং পঞো-পচারেঃ পূজ্যেদিত্যুক্তং তত্র মুর্য্যদানপ্রসঙ্গাভাবাদয়ং দিদ্ধান্তে। ভজ্যেত। মৈবং, ততঃ পুন্দুলিদেবীং মূদ্রাতর্পণ-পূজনৈ:। অচে য়িফা জপং ক্বফা নফা বিদৰ্জ্জয়েদ্ধ দীতি শ্যামা-রহস্থতস্বতন্ত্রতন্ত্রবচনেন প্রেণপচারেটণব পূজিয়েদেতাদৃ**শ**-নিয়ামকপ্রমাণাভাবা<।। নচ পুনর্গন্ধাদিভির্য**ষ্টা পূ**জা**শেষং** সমাচরেদিতি শ্যামাচ্চ নচন্দ্রি কাধ্ত-বীরতন্ত্রচতুর্থপটলবচনেন পঞ্চোপচারেঃ পূজাবিধানমিতি বাচ্যম্। চতুরত্ত্রে চতু-र्णाति किक्लालान् क्रमत्ना यरङ । माয়्रधान् मलतौराताः-ন্ততো দেবীং পুনর্যজেং। যথালাভোপচারৈশ্চ ভক্তিভাবেন শান্তবীতি কালীকু লাম্ত-চতুর্থপটলীয়বচন-বিরোধাপভ্যা খামাচ্চ নচন্দ্রিকার্তবচনস্থাশক্তপরহাৎ। অন্তথা তাণৃশসম-থানাং মূলদেব্যাঃ পুনদিশোপচারৈঃ ষোড়শোপচারৈব্ব। পূক্তনেচ্ছ।য়াং তৎপ্রতিবন্ধকে মহাক্ষোভোপস্থিতিঃ স্থাৎ। এবং সতি তন্ত্রসারকারলিখনমপ্যশক্তপরম্। আগতায় তথা-ষ্ঠায়াং স্নাতুমাসনগায় চ। পূজিতে গন্তকামায় দভাদর্য্যং বিচক্ষণ ইতি রাঘবভট্টগৃতসোমশস্তুবচনে যং স্নানকালৈ ত্ব্যদানবিধানং তদস্মদ্দেশীয়সাম্প্রদায়িকব্যবহারবিয়োধাৎ দাক্ষিণাত্যাদিপরমবধেয়মিতি দিক্।

ততঃ পীঠন্যাসক্রমেণ পীঠপূজাং কুর্য্যাৎ। তত্নকং শারদাতিলকে চতুর্থপটলে—ন্যাসক্রমেণ দেহে স্বে ধর্মাদীন্ পৃজয়েত্ত ইতি॥ তত্ৰ প্ৰথমং গুরুগণপতিপূজনম্। তত্ত্তং রাঘবভটেন—আ বায়ব্যাদীশপর্যান্তমচ্চ গা পীঠক্তোদগ্ গোরবী পঙ্ক্তিরাদৌ। পুজ্যোহন্যত্রাপ্যান্বিকেয়ঃ করাক্তেঃ, পাশং দহং শৃণ্যভীতী দধান ইতি। শৃণিরঙ্কশম্॥ তথা মেরুতন্ত্রে পঞ্চম-প্রকাশে—পূজাপীঠং বিনির্মায় পূজয়েৎ পীঠদেবতাঃ। গুরু-পঙ্ক্তিরুদক্ পূজ্যা মহাগণপতিস্তত ইতি ॥ শিবাচ্চ নচন্দ্রিকা-ধৃতশ্রীরামসংগ্রহে—অর্ঘ্যোদকেন সংপ্রোক্ষ্য মূলমন্ত্রেণ মন্ত্র-বিং। পূজাচক্রং ততস্তত্র পীঠপূজাং সমাচরেং॥ দেব-স্যোত্রতঃ পূজ্য। গুরুপঙ্কিস্ততঃ প্রম্। মহাগণপতিঃ পূজ্যো দক্ষিণে চন্দনাদিভিরিতি। ক্রমদীপিকাতৃতীয়পটলেংপি —অথ মূৰ্দ্ধি, মূলচক্ৰমধ্যে নিজনাথান্ গণনায়কং সমভ্যচ্য। ন্যদনং ক্রমশঃ পীঠমদ্রৈ র্জলগন্ধাক্ষতপুষ্পধূপদীপৈরিত। নিজনাথান্ গুরুনিতি তট্টীকাকারঃ॥ অথ, দত্ত্বা নানাবিধং দ্রব্যং হেতুভিন্তর্পয়েৎ পরাম্। গৃহীঘাজাং মহাদেব্যাঃ পরিবারাংস্ততোহচ্চ মেদিত্যুপক্রম্য ত্রিরত্তে দিব্যসিদ্ধৌদে মানবোঘান্ প্রপূজয়েং। রহং-জ্রীক্রমতন্ত্রে তু শিবেনেগি প্রকীর্ভিতম্। তিথিনিত্যার্চ নাদাহে ত্রিরেখামথবা সুধী:। প্রদক্ষিণক্রমেণেব ত্রিপঙ্ক্যা পূজ্যেদ্গুরুনিভি শ্রীতত্ত্বচিন্তা-মণ্যস্তাদশপ্রকাশবচনেনাবরণপূজায়াং গুরুপঙ্ক্তিপূজাবিধা-নাৎ মহাবিরোধ:। নচৈত্বচনং ত্রিপুরস্থন্দরীপ জাপ্রতি-

পাদকশ্রীতত্ত্বচিন্তামণ্যুক্তত্বাৎ তৎপূজাপরমিতি বাচ্যম্। বিজ্ঞাপ্য চ ততো দেব্যাঃ পরিবারানথার্চ্চয়েং। ততঃ ষড়ঙ্গং সংপূজ্য গুরুপঙ্কিং প্রপূজ্যেদিতি তারাভক্তিসুধা-র্ববধৃতশক্তিজামলবচনাং॥ ন চেদং বচনং কালীপূজাপ্রসঙ্গে নিগদিতত্বেন তৎপরমিতি বাচ্যম্। পঞ্চ পুস্পাঞ্জনীন্ দত্ত্বা প্রার্থয়েচ্চ ক্বতাঞ্চলিঃ। তবাবরণদেবাংশ্চ পূজয়ামি নমঃপদম্। ষট্কোণে চ ষড়ঙ্গানি গুরুপঙ্কিং গুরুং যজেদিতি শাস্তবী-তন্ত্রত্রয়োদশপটলবচনাৎ ক্রতাঞ্জলিপুটো ভূত্বা প্রার্থয়ে-দিস্টদেবতাম্। তবাবরণদেবাংশ্চ পূজয়ামি <mark>নমঃপদম্।</mark> অগ্নিনিশ্ব তিবায়ীশপুরতো দিক্ষু চ ক্রমাৎ। বড়ঙ্গানি চ সংপূজ্য গুরুপঙ্ক্তীঃ সমচ্চ মেদিত্যনদাকল ব্রয়োদশপটলবচ-নাচ্চ। ন চেমে বচনে অন্নপূর্ণাপ্রকরণীয়ত্ত্বন তৎপরে ইতি বাচ্যম্। তত্তদ্গ্রন্থীয়দেবতাপ্রকরণানুসারেণান্যাস্থ ভাবে২পি তত্তদ্দেবতাপরে ইত্যুক্তে একত্র নির্ণীতঃ শাস্ত্রার্থো বাধকমন্ত্ররেণান্যত্রাপি তথেতি ন্যায়স্ফোচ্ছেদাপত্তেঃ। তারা-রহস্মরত্তি-শাক্তানন্দতরঙ্গিণীকারাদীনাম্ আবরণপূজান্তও রু-পঙ্ক্তিপুজাকর্ত্তব্যত্তে মতত্বাচ্চ॥ নচোভয়ত্র গুরুপঙ্ক্তি-পূজানিষেধাভাবদর্শনেনোভয়বৈত্রব পূজা কার্য্যেতি কুত্রাপি মূলগ্রন্থে কশ্মিংশ্চিৎ সংগ্রহেহপি বা এতাদৃশবিধে-রদ**র্শনাৎ যে**য়ু যেয়ু গ্রন্থেয়ু আবরণপূজায়াং গুরুপঙ্**ক্তিপূজা** নিরূপিতা তত্র তত্রাপি পীঠপূজাদৌ তৎপূজানাদৃত**ত্বাচ্চ**।

উচ্যতে পীঠপূজাদৌ গুরুপঙ্ ক্তিপূজাপ্রতিপাদকবচনানি পুংদেবতাপূজাপ্রতিপাদকগ্রন্থীয়ত্বেন পুংদেবতাপরাণি। যানি তু আবরণদেবতাপূজান্তর্বন্তি-গুরুপঙ্ ক্তিপূজা-বোধকবচনানি তানি শক্তিদেবতাপূজাপ্রতিপাদকগ্রন্থীয়**ত্বেন শক্তিদেবতা**-পূজাপরাণীত্যবিরোধঃ।

ভৈরবীবিদ্যায়ান্ত পীঠপূজানন্তরং পীঠস্থোভরভাগে তু গুরুপঙ্ক্তিং প্রপূজয়েদিতি রাঘবভট্টঃ। তত্তুকং শারদায়াম্— অনেন বিধিনা দদ্যাদাসনং শ্রীগুরুক্রমম্। প্রাঙ্মধ্যয়ো-রন্তরালে পূজ্যেৎ কল্পয়েত্তত ইতি॥ যতু প্রথমোক্তবচনেযু গণপতিপূজাবিধানং তদপি প্রকরণবশাৎ পুংদেবতাভিপ্রায়েণ বোদ্ধব্যম্। শক্তিদেবতায়াং কুল্রাপ্যেতাদৃশবিধেরদর্শনাদিতি দিক্।

পীঠপুজাস্থানসাহ গোতসীয়ে নবসাধ্যায়ে—ততো ধর্মা-দিভির্মন্ত্রী গাত্তে পীঠানি পুজয়েদিতি। গাত্তে পীঠগাত্তে ইত্যর্থঃ॥ যত্ত্র ন্যাসক্রমেণ দেহে স্বে ধর্মাদীন্ পুজয়েত্তঃ। পুষ্পাদ্যৈঃ পাঁঠমৰন্তং তশ্মিংশ্চ পরদেবতাম্। পঞ্কত্তঃ পুনঃ কুর্য্যাৎ পুষ্পাঞ্জলিমনন্যধীরিতি শারদাতিলকচতুর্থ-পটলীয়বচনেন স্বদেহে পীঠপূজা দৃশ্যতে তত্তস্থ টীকায়াং গূঢ়ার্থদীপিকাকারব্যাখ্যানেন মীমাংস্ততে। তদ্যথা স্থাস-ক্রমেণ পূর্ববং স্বদেহে ধর্মাদিপীঠান্তানেব স্বকল্পিতে তস্মিন্ পীঠে পূজয়েদিতি পূর্ব্বমেব সম্বন্ধঃ। তমেব পূজাপ্রকারং দর্শয়তি পঞ্জত্ব ইত্যাদিনেতি যুক্তঞ্চৈতৎ অম্যথা বক্ষ্যমাণ-বচনেম্বতিশয়বিরোধাপত্তিঃ। যথা সম্মোহনতন্ত্রে যষ্ঠপটলে—-আধারশক্তিমারভ্য পীঠশক্ত্যন্তমর্চয়েৎ। যন্ত্রে তশ্মিংস্ততো ধ্যাত্বা পুর্ববঙজগদীশ্বরমিতি। মূর্ত্তিং মূলেন কল্পয়েদিতি শেষঃ॥ কঙ্কালমালিনীতন্ত্রে চতুর্থপটলে চ—দশপঞ্চারপদ্মেরু পাঠপ্রাং সমাচরেদিতি। শ্রামাপ্রদীপধৃত-ভৈরবতন্ত্রে-

ংপি পীঠন্তাসমুক্ত্বা—এবং দেহময়ে পীঠে চিন্তয়েদিউ-দেবতাম্। এবং যক্ত্রেংপি পীঠন্ত পূজা কার্য্যা বিচক্ষণৈ-রিত্যাদি বহুলমান্তে।

পীঠদেবতা তু স্বস্বকল্লোক্তা বেদিতব্যা। তত্রাসুক্তায়াং যদেবাচরণীয়ং তদাহ সিদ্ধবিদ্যাদীপিকাপ্নতমানসাল্লাসে— মাতৃকাজপমাত্রেণ মন্ত্রাণাং কোটিকোটয়ঃ। জপিতাঃ স্থার্ন সন্দেহো মূলমন্ত্রস্ত মাতৃকা॥ শাক্তে চ বৈশুবে শৈবে সোরে গাণপতে তথা। যত্র পীঠমকুক্তন্ত তত্র তৎপীঠ-মর্চয়েৎ। সামান্তং সর্ববদেবানাং মাতৃকাযন্ত্রমীরিতম্। আধারশক্তিমারত্য পীঠমন্ত্রময়ং যজেদিতি। এতেনাস্ক্ত-যন্ত্রকাণাং কর্ত্রব্যহমপি দশিতম্।

ততঃ পুনর্ধ্যানম্। তৎক্রমো যথা কালাতদ্রে—ততো ফ্রদয়পদ্মান্তঃস্ফুরন্তীং বিদ্যাদাক্তিন্। স্থান্নাবত্রনা নীম্বা শিরংস্থানে মহেশরি। দেবেশীতি চ মদ্রেণ বিন্দাবাবাহয়েৎ স্থানিরিত। বিন্দো যন্ত্রমধ্যস্থবিন্দো॥ সন্মোহনতদ্রে যঠপটলেইপি—কামবীজং পরং ব্রহ্মরূপং ধ্যাত্বা স্মুর্দ্ধনি। কুলকুগুলিনীং মূলাধারাত্রখাপ্য স্থান্ধর। পরামতেন সংপ্রাব্য মূলমূর্ভিং প্রকল্পরেও। পুষ্পাঞ্জলো বিনিঃন্যার্য বহনাসাপুটাধনা। ব্রহ্মরন্ত্রেণ বা দেবীমূর্ভাবাবাহয়েদ্রিরিতি॥ এবং গোতর্মায়ে দশমাধ্যায়ে—অথ পুষ্পাঞ্জলিকরঃ সমায়াতং নভস্বতঃ। হুৎপদ্মশস্থিতং তেজঃ ক্রুলিন্তা সহানয়েও। চিদানন্দ্রনং শুদ্ধং সর্বতেজাময়ং শ্রন্। যট্চক্রভেদনেনের উন্মন্তা সহ যোজয়েও। জীবানশ্দময়ং তত্ত্ব প্রাপ্তমেখর্য্যমন্তুতম্। আবাহ্য মানসৈর্দ্রবৈদ

ব্বহন্নাগণুটে ক্রমাৎ। করন্থমাতৃকান্তোজে চৈত্ত্তং যোজয়েত্ত্ব তৎ। কুস্তমধ্যে মন্ত্রমূর্ত্তাবাবাহ্য পরিপূজয়ে-দিতি॥ তথা মহানির্ব্বাণতন্ত্বে ষষ্ঠোল্লাসে—চন্দনাগুরু-কস্তৃরীবাসিতং স্থমনোহরম্। পুষ্পাং গৃহীত্বা পাণিভ্যাং করকক্ষপমুদ্রয়া। নীষা স্বহৃদয়ান্তোজে ধ্যায়েদাভাং পরাং-পরাম্। সহস্রারে মহাপদ্মে স্ব্রম্মাব্রহ্মবন্ধনা। নীহা সানন্দিতাং কৃত্বা বহনিশ্বাসবন্ধনা। দীপাদ্দীপান্তর্মিন তত্ত্ব পুষ্পে নিযোজ্য চ। যত্ত্বে নিধাপয়েন্দ্রন্তী দৃঢ়ভক্তি-সমন্বিতঃ। কৃতাঞ্জলিপুটো ভূত্বা প্রার্থয়েনিন্টদেবতাম্। দেবেশি ভক্তিস্থলতে ইত্যাদি।

অত্র হৃদয়পদাৎ সূর্যমণ্ডলাদ্বা স্বেষ্টদেবতাবাহনস্তেজাবিকল্পঃ। ততুক্তং ভট্টপ্লতবৈহায়সীমন্ত্রকোষে—অথার্কতো বা
হৃদয়ারবিন্দাদাবাহয়েনন্দস্ততং স্থবেশমিতি। তথা তদ্ধৃতেহয়ত্রাপি—আবাহয়েন্মহাদেবীং হৃদয়ানুজগহ্বরাৎ। সূর্য্যমণ্ডলতো বাপি স্বীয়াদ্বা দ্বাদশান্তত ইতি।

যতু ধ্যানং কুর্যাততো মন্ত্রী মুদ্রয়া তু ত্রিখণ্ডয়া। ততে হাদরপদ্ধান্তঃক্ষুরন্তীং পরমেধরীম্। স্থ্যমাবর্মনা নাল শিরংস্থানে মহেধরীম্। ততো বৈ হাদরাসমে পূর্বক্ষানে সমানরেং। নাসরাদক্ষরা দেবি বায়ুবীজেন মন্ত্রবিং। দেবেশীতি চ মন্ত্রেণ স্থাপরেদাসনোপরীতি তন্ত্রকৌমুদীধ্তক্ষজামলবচনেন দক্ষনাসরা বিনিঃসারণমুক্তং তদত্র লুপ্তো-হ্রমকারঃ অদক্ষয়েতি পাঠঃ। অন্তথা বহুভির্বিরোধাপত্তেঃ। এবাং নিক্ষর্বপ্রয়োগো বথা। করকলিতচক্ষনচর্চিত-পুষ্পাঞ্জলিকঃ সাধকঃ করকছেপিকাং ক্রিধণ্ডমুদ্রাং বা বদ্ধা-

পুনর্ধ্যাত্বা স্বহ্নদরাৎ সূর্ধ্যমণ্ডলাত্বা ধ্যানেন হৃৎপদ্মান্তঃপ্রত্যক্ষীকৃতাং মূলমন্ত্ররূপাং পরব্রদ্ধান্তর্ভাতস্থায়ীং তড়িদিব দেদীপ্যমানাং তেজারাশিষিউদেবতাং মূলাধারাৎ কুলকুণ্ডলিনীমূখাপ্য তয়া ষট্চক্রভেদক্রমেণ শিরোবস্থিতসহস্রদলকমলকর্ণিকান্তর্গতপরমশিবং প্রাপয্য তেন কুলকুণ্ডলিনীক্রিয়াসমভিব্যাহারজনিতপরাম্বতেনেউদেবতাং সংপ্লাব্য যমিতি
বায়ুবীজমুচ্চরন্ প্রবহদ্বামনাসাপুটমার্গেণাতিদীপ্তাং তাং
বিনিঃসার্য্য মাতৃকান্তোজত্বেন ধ্যাতের্ করম্বপুল্পের্ বোজয়ন্
মূলমন্ত্রকল্পিতমূর্ত্তী তৎ পুষ্পাং নিধায়াবাহয়েৎ।

ততঃ ক্বতাঞ্জলিঃ পঠেং। তদ্যথা শক্তিবিষয়ে। দেবেশি ভক্তিস্থলভে পরিবারসমন্বিতে। যাবত্তাং পূজ্যিয্যামি তাবত্তং স্থিরা ভবেতি ॥ পুংদেবতায়াস্ত রাঘবভট্টঃ—তবেয়ং মহিমান্যভিস্তস্থাং ত্বাং সর্ববর্গং প্রভো। ভক্তিক্রেহসমাকৃষ্টং দীপবং স্থাপ্যাম্যহমিতি।

অত্র শাক্তি রক্তপুষ্পেণ ধ্যানং কার্য্য। ততুক্তং কালীকুলায়ততন্ত্রে চতুর্থপটলে—করস্থারুণপুষ্পাণাসঞ্জলো হৃদয়াবুজাৎ। মূলমন্ত্রেণ তেজাময়ীং শুদ্ধচৈতগ্যরূপিণীম্। তাং
দেবীং প্রবহন্নাসাপুটেনানীয় পীঠকে। পূর্ব্বকল্পিতমূর্তাবাবাহয়েন্মন্ত্রপূর্ব্বকমিতি। মূলমন্ত্রেণেত্যভেদে তৃতীয়া অশ্বমেধেন যজেতেত্যাদিবং।

দেবতার্পণাৎ প্রাক্ স্বাঞ্জলিস্থ্যানার্থপুষ্পাস্থ স্বহস্তেন

বিয়োগং নিষেধয়তি গান্ধর্কে ত্রয়োদশীপটলং—ততো ধ্যায়েমহাদেবীং যথোক্তাং পরমেশ্বরীম্। প্রত্যক্ষীকৃত্য হৃদয়ে

জিতপ্রাণোহথ সাধকঃ। ঐক্যং সঞ্চিন্তয়েদ্ব্যো বাহ্যান্ত-

মৃ ভিযুগ্ময়োঃ ॥ ততস্ত বায়ুবীজেন বহম্মাশাশুটেন তু।
তচ্চৈতন্তং বিনিঃসার্য্য পুষ্পাঞ্জলৌ নিবেশয়েৎ ॥ নাসিকা
বায়ুনিঃসারাৎ পুষ্পাস্থা দেবতা ভবেৎ। যাবৎ সংস্থাপয়েদেবীং স্বহস্তং ন বিযোজয়েং ॥ ক্বতে বিয়োগে হস্তম্ম
পুষ্পাভ্রমান্মহেশরি। গন্ধবৈঃ পূজ্যতে দেবী পূজকৈর্নাপ্যতে
ফলমিতি।

অথাবাহনাদিকম্। ততুক্তং শিবার্চ্চনচন্দ্রকাপ্নতসার-সংগ্রহে—আবাহনং স্থাপনঞ্চ সন্নিবাপনমেব চ। সন্ধিরোধন-মিত্যুক্তং সংমুখাকরণং তথা। অথাবগুঠনং প্রোক্তং সফলী-করণং তথেতি। তন্ত্রকোম্দীপ্লতকালীহৃদয়ে চ দেবীং ধ্যায়া সমাবাহ্য স্বস্থা প্রদর্শয়েং। জীবন্যাসং ততঃ কৃষা উপ-চারৈঃ প্রপূজ্যেদিতি।

তত্রাপ্যয়ং বিশেষঃ কুলার্শবে যঠোল্লাসে—আবাফ দেবতামেকামর্জয়েচ্চান্তদেবতাম্। উভাভ্যাং লভতে শাপং মন্ত্রী চঞ্চলমান্স ইতি।

আধারবিশেষে আবাহনস্য কর্ত্তব্যাক্তব্যন্ত্রমাহ রাঘ্যভট্টঃ—উদ্বোধাবাহনে ন তঃ স্থিরায়ামূদ্ধবার্চনে। অস্থিরায়াঃ
বিকল্পঃ স্থাৎ স্থণ্ডিলে তু ভবেদ্বয়ন্। শালগ্রামার্চনে নৈব
হ্যাবাহনবিসর্জ্জনে ইতি॥ তথা রামানন্দতীর্থস্বামিশোধিতবৃহত্তন্ত্রসারে—শালগ্রামে শিবে চাপ্স্ বহ্নে মনসি পুষ্পাকে।
এবু চাবাহনং নাস্তি দেবতানাং সদা স্থিতিরিতি।

যত্ত্ ততস্ত প্ৰতিমায়াঞ্চ শালগ্ৰামে বিশেষতঃ। ক্ৰমেণ্চ ততঃ পশ্চাৎ কুৰ্য্যাদাবাহনাদিকমিত্যভিধানাচ্ছালগ্ৰামে আবাহনাদিকমায়াতি তৎ শালগ্ৰামে স্থাবরে বা বাহনং ন

বিসর্জনম্। শালগ্রামশিলাদো যিন্নত্যং সন্নিহিতো হরিরিতি রাঘবভট্টপ্রতবচনবিরোবেনাবাহনপদেন নাসতো হরেরপূর্ব্বা-বির্ভাবো জ্বেয়ঃ। কিন্তুত্র স্বতএব সদাবির্ভূতক্ষ হরেঃ সংমুখী-ভাবো বিবক্ষাতে। অতএবোক্তং ভট্টপ্রতিসিদ্ধান্তসারে— স্বতএবাভিপূর্ণস্থ তত্ত্বক্রেহার্কনাদির্। সাদরং সংমুখীভাব-স্তদাবাহনমূচ্যত ইতি।

সংম্থীকরণমন্ত্রাবাহ তত্ত্রন—অজ্ঞানাদ্ধুর্মনন্ত্রা দ্বা বৈকল্যাৎ সাধনস্ত চ। যথা পূর্ণং ভবেৎ কৃত্যং তথাপ্যভিমুখো
ভব। দৃশা পীয়ুয়বর্ষিণ্যা পূরয়ন্ যজ্ঞবিক্টয়ম্। পূর্জা বা
যজ্ঞসংপূর্ট্রেং স্থিতো ভব মহেশ্বর ইতি॥ শিবে ইতি বাণলঙ্গাদিস্বয়ম্বুলিঙ্গে। তত্ত্তং ভবিষ্যে—বাণলিঙ্গানি রাজেন্দ্র
স্থিতানি ভুবনত্রয়ে। ন প্রতিষ্ঠা ন সংস্কারস্বেষামাবাহনং
নচেতি॥ বহুলবিতি অগ্লিক্টোমাদিস্বমাজ্ঞিকাগ্যো চন্দ্রশেখরপর্বতাদ্যগ্রো বা তত্র পূজায়াং নাবাহনম্ অভ্যাগ্যো তদস্থোব অভ্যথা ততা দেবীং সমাবাহ্য মূলেন যোড়শাহুতিম্।
হত্বা স্তত্ত্বা নমস্কৃত্য বিস্জেদিশুম্ওলে ইতি তন্ত্রসারধৃতনিত্যহোমবিধায়কনীলতন্ত্রীয়বচনবিরোধাপত্তিং।

অপিনৃতি গঙ্গাজনে ইতি তাৎপর্যার্থঃ। অত্রাবাহনং ন কার্য্যং সামান্সজনে তু তৎ কর্ত্ত্রামেব। তত্তুক্তং শ্যামান রহস্তধৃত্তবিমলাতন্ত্রে—মত্রে যত্রে সূর্য্যবিদ্ধে শস্তে চ শিব-লিঙ্গকে। পূজ্যা চৈব সদা দেবী নীরে চাবাহ্য চাপরাম্। গঙ্গোদকে বিশেনেণ শিবং তুর্গাং হরিং বিধিম্। পূজ্রেদত্র-দেবাংশ্চ সর্ব্বানেব শিবাজ্ঞ্যা। নাত্রাবাহনচিন্তান্তি নাত্রা-ভদ্যাদিচিন্তনম্। সর্ব্বদেবাশ্রয়ং তত্তু সর্ব্বদেবময়ং পরমিতি।

হরতত্ত্বদীধিতিঃ।

পূষ্পকে ইতি যন্ত্ৰপুষ্পে যদ্যপ্যত্ৰাবাহনং নোচিতং তথাপি প্ৰাণপ্ৰতিষ্ঠা কৰ্তব্যব। তদাহ পিচ্ছিলাতন্ত্ৰচতুৰ্দ্দশপটলঃ—শালগ্ৰামেহবিকফলা জবাপুষ্পেৰু তাদৃশী। অপরাজিতায়াং দেবেশি তথৈব করবারয়োঃ। দ্রোণপুষ্পে মহাদেবীং পুজ্জ্ব সর্বাস্করে। প্রাণপ্রতিষ্ঠা কর্ত্তব্যা তত্ৰ তত্ৰ মহেশ্বরীতি॥ যদ্যপ্যনেন শালগ্রামে প্রাণপ্রতিষ্ঠামাশঙ্কতে তথা-প্যেত্ছবচনং কেবলজবাপুষ্পেন সহ ফলসাদৃশ্যবোধকং ন ३৯ তস্ত্র প্রণপ্রতিষ্ঠাপ্রতিপাদকম্ অন্তথা বহুভির্বিরোধাপত্তেরনাদিসিদ্ধশিক্টসম্প্রদায়ব্যবহারবিরোধাপত্তেশ্চ।

প্রাণপ্রতিষ্ঠামন্ত্রস্ত তন্ত্রসারাদানকুসন্ধেয়ঃ। নকু কালী কুলামততন্ত্রতীয়পটলে মন্ত্রমহোদ্ধিপ্রথমতরঙ্গে চ ভূত-শুদ্ধাবাল্পপ্রতিষ্ঠায়াম্ আং হীনিত্যাদি-মন্ত্রস্থ খন্যাদি-দর্শনেন দেবতাপ্রাণপ্রতিষ্ঠায়াং তৎকর্তব্য ২ং প্রতি গতি নচে ষ্টাপতিরিতি বাচ্যম্। তম্ম ভূতশুদ্ধো বিধেয়দ্ধেন তাত্রেব কর্ত্তব্যত্মাৎ। নচৈকত্র নির্ণীতঃ শাস্ত্রার্থো বাধকসন্তরেণাত্য-ত্রাপি তথেতি স্থায়াৎ দেবতাপ্রাণপ্রতিষ্ঠায়ার্মাপ তৎ কার্মা-মিতি বাচ্যম। সত্যেবং তৎপ্রকরণে প্রাণশক্ত্যাঃ করাঙ্গ-ন্যাসমন্ত্রন্থানাদিকর্মণামন্তর্বন্তি-ঋ্যাদিন্যাসম্ভাত্র কর্ত্ত-ব্যত্বে করাঙ্গন্তাসাদিকস্থাপি কর্ত্তব্যস্থাপতেঃ। ন চেক্টা পত্তিরিতি বাচ্যং নূণাং দেহনাশে তম্ম পুনরুৎপত্তো চ পুনঃ প্রাণাধিষ্ঠানায় প্রাণশক্তেরুপাসনারূপকর্ম্মণঃ কর্ত্তব্যব্দে করা-স্ব্যাসাদীনামাবশ্যকত্বং নৈতাদৃগ্দেবতায়াং তস্থা উৎপত্তি-বিনাশাভাবেন প্রতিমাদে কেবলাবিভাবজনকপ্রাণপ্রতিষ্ঠা-পক্ষপ্রমাত্রস্থাবশ্যকত্বাৎ।

ন চ ঋষিচ্ছন্দেহিপরিজ্ঞানাৎ মন্ত্রস্ত ফলভাগ্ ভবেৎ।
দৌর্ববল্যং যাতি মন্ত্রাণাং বিনিয়োগমজানতামিতি রুদ্রজ্ঞামলদপ্তচন্বারিংশপটলবচনাদ্য্যাদেরজ্ঞানেন মন্ত্রাণাং দৌর্ববল্যপ্রতিপাদনাদবশ্যম্য্যাদিকং কর্ত্তব্যমিতি বাচ্যম্। নিরুক্তবচনস্থোপাস্থাদেবতামন্ত্রমাত্রপরত্বাৎ। ন চাদনশুদ্ধিমন্ত্রস্থোপাস্যন্বাভাবেহিপি ঋণ্যাদিকবিধানদর্শনেন ভবহুক্তনিয়মভঙ্গং
প্রতিভাতীতি বাচ্যম্। তত্রোক্তন্ত্রব্যক্তবিশেষবিধ্যবলোকনাভথা কর্ত্বব্যলং।

ন চাত্মপ্রাণপ্রতিষ্ঠায়ায়্য্যাদিকস্তা কর্ত্র্রাত্ত্বপি দেবতায়াঃ প্রাণপ্রতিষ্ঠায়াং নিবেরাভাবাৎ, প্রভুতে সামাত্তঃ
ধ্যাত্মকরণে দোলভাতেশ্চ তদাদরণীয়মিতি বাচ্যম্। আবরণপ্রসামিত্রাদিলোকপাল।নাম্য্যাদিত্যাসমন্তরেণাপি কেবলতত্ত্বাল্রৈঃ পুজাসিরিপ্রবণাং॥

ন চেন্দ্রনিং যদ্যনান্ত্রে ঋণ্যাদিকমন্তি তত্তনান্ত্রোবরণ-মেন পূজাভাবাদত্র যেন মন্ত্রেণেজ্ঞাদিঃ পূজ্যতে তন্মন্ত্রশ্ব ঋণ্যাদিবিরহাচ্চ স্ত্রাং তেষাং পূজা সিধ্যতীতি বাচ্যম্। দেবতানাং ম্থ্যমন্ত্রশ্ব ঋণ্যাদিমত্বেহ্লমন্ত্রাণাং তদমত্ত্বেহিপি এতিবোরভাবাৎ তেনৈব ঋণ্যাদিনা তদ্বেতাসর্ক্রমন্ত্রাণা-মৃণ্যাদিসাহিত্যশ্ব বজুং শক্যমাৎ।

উচ্যতে দেবতাপ্রণিপ্রতিষ্ঠা তু ঋন্যাদিকং বিনৈব কর্ত্তব্যা সম্মোহনগৌতমায়শান্তবাকসলাবিলাসান্ধদাকল্পকালীকুলায়ত -নিবন্ধতন্ত্রাদিবু দেবতাপ্রাণপ্রতিষ্ঠায়ামূদ্যাদিকমপ্রহায় কেবলং আং ক্লীমিত্যাদিমন্ত্রেণ তৎকর্ম্মণঃ পর্য্যবসিতত্বাৎ শারদা-টাকাকার্যাব্যভট্ট-গোবিন্দভট্ট - শ্রামার্চনচন্দ্রিকা - শ্রামার্হস্ত গ্যামাপ্রদীপ-শাক্তানন্দতরঙ্গিণীকারাদিভিস্তদ্বদাচরিতক্বাচ্চ । এবঞ্চ পাশাঙ্গুশপুটা শক্তিঃ স্বাহান্তা পুরতো ভবেদিতি শান্তবীতন্ত্রান্দাকল্পত্রয়োদশপটলবচনে আঁ হ্রীঁ ক্রোঁ স্বাহেতি পঞ্চবীজপূর্ব্বকেণ যৎ প্রাণপ্রতিষ্ঠাপনমূক্তং তদশক্তপরং সংক্ষেপপূজাপরং বেত্যবিরোধঃ।

প্রাণপ্রতিষ্ঠায়াং শৃদ্রস্থ স্বাহোচ্চারণেইধিকারমাহ পৈঠা-নসিং। স্বাহাং নৈব স্মরেচ্ছ্যুদ্রো সনসাপি কথঞ্চন। বিনা প্রাণপ্রতিষ্ঠাঞ্চ অশুথা নিরয়ং ব্রজেদিতি।

অথোপচারাঃ। তত্ত্তং রাঘবভট্টপ্রতজ্ঞানমালায়াম্। অস্টুব্রিংশৎ-বোড়শার্ক-দশ-পঞ্চোপচারকাঃ। তান্ বিভক্ত প্রবক্ষ্যামি কে কে তে তৈঃ ক্রতৈশ্চ কিম্ ॥ আসনং প্রথনং তেগামাবাহনমুপস্থিতিঃ। সালিধ্যনাভিমুখ্যক স্থিরীকৃতি-প্রাদানম্। অগ্যক পালাচমনে মধুপর্কমুপস্পশম্। স্নানং নীরাজনং বস্তুমাচামকোপ্রতিকম্। পুনরাচামভূবে চ দর্পণালাকনং ততঃ। গন্ধপুর্কেশী পূপদাপো নৈবেল্যক্ষ ততঃ ক্রমাৎ। পানীয়ং তোগ্যমাচামং হন্তবাসস্ততঃ পরম্। তাম্বূলমনুলেপক প্রসাদানং পুনঃ পুনঃ। গীতং বালং তথা নৃত্যং স্তুতিশ্চিব প্রদিক্ষিণম্। পুস্ণাঞ্জিলনমন্থারাবক্তিরিংশৎ স্থারিতা ইতি।

ষট্ ত্রিংশত্রপচার। যথা। নিবন্ধে পঞ্চপঞ্চাশত্রস্টলে—
আসনাদৌ দন্তক ষ্ঠিমুন্বভিনবিজ্ঞানে। সম্মার্জনং সপিরানিস্থাপনাবাহনে ততঃ। পালাব্যাচমনীয়ানি স্থানীয়মধুপককো।
পূনরাচমনীয়ঞ্জ নমস্কারোহণ নত্র্নম্। গীতবাদ্যে চ দানানি
স্তাতিহোমপ্রদিজিণম্। আদশ্দশ্নকৈব চামরব্যজনং তথা।
শ্যাকুলেণনং শস্মলক্ষারোপবীতকে। গন্ধপুষ্পে ধুপদীপৌ

বলিদানঞ্চ তর্পণম্। স্বাভীপ্তাত্মার্পণঞ্চৈব ততো দেবীবিস-র্জনম্। উপচারা ইমে জ্ঞেরাঃ ষট্ত্রিংশচ্চণ্ডিকার্চ্চনে ইতি।

অন্টাদশোপচার। যথা। শ্যামারহস্তপ্নতফেৎকারিণীয়ে তৃতীয়পটলে—আসনাবাহনে চার্য্যং পাদ্যমাচমনীয়কম্। স্নানং বাসোপৰীতঞ্চ ভূষণানি চ সর্বশঃ। গদ্ধপুষ্পে ধূপদীপাবমঞ্চ তর্পণং ততঃ। মাল্যাকুলেপনে চৈব নমস্কারবিসর্জ নে। অন্টাদশোপচারেস্ত মন্ত্র্যা পূজাং সমাচরেদিতি। অত্র যদগণনায়া-মূনবিংশত্যুপচারা দৃশ্যন্তে তৎ পঞ্চাত্রবৎ সংজ্ঞাশক্ষাদিত্য-দোষঃ। যদ্ধা বিসর্জনন্ত নান্টাদশোপচারান্তর্বতি কিন্তু পূজানন্তরং কর্ত্ব্যকর্ম্ম, পঞ্চোপচারাদিকরণকপূজানন্তর্মপি তম্ম কর্ত্ব্যক্ষর্শনাং। অন্তথা স্থিরপ্রতিমায়াং বিসর্জ্জনাভাবে এতত্বপচারম্ম ভঙ্গাপতেঃ। অত্যাবাহনন্ত স্থাগতরূপং নম্থি-হাগচ্ছেত্যাদিনা তথ কর্ত্ব্যং নিরুক্তদোষপ্রসঙ্গাদাবাহনম্ম দিত্বাপতেংচ।

বোড়শোপচারা যথা। শিবার্চনচন্দ্রকায়াম্—আসনং বাগতং পাদ্যমর্ঘ্যাচমনীয়কম্। মধুপকাচমন্ধ্রানবসনাভরণানি চ। গদ্ধপুলে ধূপদীপো নৈবেজং বন্দনং তথা। প্রবাজয়েদর্চনায়াম্পচারাংস্ত বোড়শেতি॥ প্রকারান্তর-গোড়শোপচারা মথা। কৃষ্ণার্চনচন্দ্রিকাধ্বতমন্তরক্সাবল্যাম্—পাদ্যার্ঘ্যাচমনীয়ঞ্জ স্লানং বসনভূষণে। গদ্ধপুষ্পে ধূপদীপো নৈবেজাচমনং ততঃ। তান্দুলমর্চনাস্তেরং তর্পণঞ্চ নম-ক্ষিয়াম্। প্রযোজয়েদর্চনায়ামুপচারাংস্ক সোড়শ ইতি।

দাদশোপচারা যথা। স্বতন্ত্রতন্ত্রে—অর্য্যং পাদ্যং নিবে-দ্যাথ তথৈবাচমনায়কম্। মধুপর্কাচমঞ্চৈব গন্ধপ্রসূনকে ততঃ। ধূপদীপো চ নৈবেদ্যং প্রদক্ষিণনমস্কৃতী। দ্বাদশৈ-রুপচারৈস্ত মন্ত্রী পূজাং সমাচরেদিতি।

দশোপচারাশ্চ শ্যামারহস্যধৃতকালীতন্ত্রে—অর্ঘ্যং পাদাং নিবেদ্যাথ তথৈবাচমনীয়কম্। মধুপর্কাচমঞ্চৈব গদ্ধপূপে ততঃ পরম্। ধূপদীপো চ নৈবেদ্যং দশোপচারকাঃ স্মৃতা ইতি।

সপ্তোপচারাস্ত রাঘবভট্টপ্পতপ্রয়োগসারে—অর্ঘ্যং গদ্ধ তথা পুষ্প মক্ষতং ধূপমেব চ। দীপো নৈবেন্যং সপ্তার্থা সপর্যোত্যপরে জগুরিতি।

পঞ্চোপচারা যথা। কেংকারিণীয়ে তৃতীয়পটলে—
গন্ধাদিকা নৈবেদ্যান্তা পূজা পঞ্চোপচারিকেতি। স্পন্টমান্ত
নিবন্ধতন্ত্রে পঞ্চপঞাশত্তমপটলে—গন্ধপুষ্পধূপদাপনৈবেদ্যান্তি।
পঞ্চকম্। নিবেদয়েৎ সদার্চ্চায়াং পূজাঃ পঞ্চোপচারিক।
উপচারত্রিকা জ্বেয়া ধূপদাপো বিনা যদাতি। একে

অত্র সোড়শোপচারেব্ পাদ্যদানানন্তরমর্ঘ্যদানবিধানের তত্ত্বৈবায়ং ক্রমো জ্ঞেয়ঃ অন্তর তু তদ্বিপরাতদর্শনাং— ১ব. পাঠক্রমাজ্যক্রক্রমন্তর বলবত্ত্বাৎ সর্কাত্রেব পাদ্যদানানন্তরমন্তর দান্য। তথাহি রহনীলতক্ত্রে গ্র্চপটলে—প্রথমঞ্জাসনং দল্লা পাদ্যং দদ্যাভ্রতঃ পরন্। অর্যাং দদ্যান্মহেশানি যথোক্তবিবিনা শিবে ইতি। এবমেব সম্প্রদায়ঃ॥

উপচারদানপ্রকালমাহ। শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাপ্পত্যোগিনী-তন্ত্রে—গন্ধপুষ্পে তথা ধূপো দীপো নৈবেদ্যপঞ্চমঃ। যদ্দী-যতে ফলং বত্রনাক্ষালাদিকাঞ্চনম্। তেবাং দৈবতমুদ্দশ কুলা প্রোক্ষণপূজনে। উৎস্ক্রা মূলমন্ত্রেণ প্রতিনায়া নিবেদয়েৎ। বরুণস্থা চ বীজেন তেযাং দেচনমাচরেৎ॥ অন্নস্থা দেবতা লক্ষ্মীরংশুকেইপি রহস্পতিঃ। স্থবর্ণমিয়িদেবঞ্চ রক্ষ তঞ্চন্দ্রেক্তন্। হারকং বারুণং ক্রেয়-মাসনে পৃথিবী তথা। জলস্থা বরুণো দেবঃ পেয়ানাং বরুণস্তথা। রুশরস্থা রমা দেবী পরমান্নস্থা চৈব হি। য়ত-প্রদীপকে বিষ্ণুস্তৈলানোণে বনস্পতিঃ। গন্ধার্শক তথা ধূপে বাজে বৈশ্বালিনিকতম্। মধু বারুণকং ক্রেয়ং দিবি ক্ষীরঞ্চ বৈশ্ববম্। বানস্পত্যং তথা পুস্পং গান্ধর্কো গন্ধদৈবতঃ। মালায়াশ্রচ হথা জুগা সার্বং বা বিষ্ণুদৈবতমিতি। বাজে স্থাতে। বাজো নিম্বনপক্ষয়েঃ, মুনো পুশানথ ক্লীবে ছত্যজান্নবারিছিতি মেদিনীকরঃ।

গোক্ষণ স্বর্য্য জলেন তত্ত্বকং কালিকাপুরাণে— যদ্দেয়মর্য্য-পারস্থ জলৈরেব নিবেদয়েং। অন্যতোয়ৈর্য জুংস্প্তমর্য্য-গানিস্থিতেতরৈঃ। তন্ন গৃহাতি বৈ দেবো দত্তং বিধিশতৈ-ব্যাতি। অর্য্যং সামান্যার্য্যমিতি সম্প্রদায়বিদঃ।

প্রোক্ষণাদিলক্ষণস্ত একাদশীতত্ত্ব—উভানেন তু হস্তেন প্রোক্ষণং সমুদাহত্মিতি।

এবং দেয়দ্রব্যাণি বামহস্তযুতদক্ষিণহস্তেন দন্তাং। তত্তকং কালিকাপুরাণে—পত্রং পুষ্পং ফলং তোয়ং দেবে দেয়ং মহে-খরি। একহস্তেন তদ্দত্তা স্করতং নাশয়েং স্বকম্। তন্মাছাম-বুতেনৈব দক্ষিণেন নিবেদয়েদিতি।

জব্যদানে পঞ্চনখদর্শননিষেধমাহ শাক্তানন্দতরঙ্গিণীগ্নত-জামলে—নার্চ্চয়েদেকহস্তেন ন পঞ্চনখদর্শনম্। নিদ্ফল্য কীর্ভিতা সা হি সর্ব্বাপি ন শোভত ইতি। এতেনোভানপাণিনা দানং দর্শিতম্। তথা পিচ্ছিলাতত্ত্বে চতুর্দশপটলে—
পুষ্পাদিসর্ব্বস্তাণি অঙ্গুল্যথেণ দাপয়েং। সর্ব্বভ্রেষ্টে রেন্থমুদ্রাং গালিনীঞ্চ প্রদর্শয়েদিতি॥ গুপ্তসাধনতত্ত্বে নবমপটলে
চ—মূলমন্ত্রং সমুচ্চার্য্য ততো দ্রব্যং সমুচ্চরেং। দেবতারৈ
ততঃ পশ্চাং ত্যাগালকমনুং স্মরেং। পাজাজৈঃ পূজ্যেদেবীং যথাবিভববিস্তরেরিতি। দেবীমিত্যুপলক্ষণম্।

তদয়ং নিগলিতপ্রয়োগঃ। যথা স্বর্ণাজ্ঞাসনং পুরতঃ
সংস্থাপ্য বমিতি সামান্যার্যোদকেন সংপ্রোক্ষ্য ধেন্তগালিনীমুদ্রে প্রদর্শ্য অমুকদেবতাকামুকাসনায় নম ইতি সংপূজ্য
এতংসম্প্রদানামুকদেবতায়ে নম ইত্যুৎস্ক্য মূলমুচ্চার্য্য
এতং স্বর্ণাসনম্ অমুকদেবতায়ে নম ইতি বামহস্তমুতদক্ষিণহস্তাঙ্গুল্যগেণ যথা নখদর্শনং ন ভবেত্থা নিবেদয়েং।

দেবতাঙ্গে পাজাদিদানস্থাননিয়মমাহ ফেৎকারিণীয়ে তৃতীয়পটলে—স্বদেহবদ্দেবদেহে ততঃ পাজাদি কল্পয়েং। পাজ্ঞঞ্চ পাদয়োর্দ্দজাদর্য্যং শিরদি দীয়তে। মুথে চাচমনীয়ং স্থান্মধুপর্কন্ত তত্র বৈ। পুনরাচমনং বক্ত্রে দ্জান্মন্ত্রবিশা-রদ ইতি।

পান্তাদীনাং ত্যাগার্থকমন্ত্রো যথা। গান্ধর্কে ত্রয়েদশপটলে—নমোহন্তমাদনং দক্তাং স্বাগতং দর্শনং ভবেং।
নমোহন্তং পাদয়োঃ পান্ত মর্গ্রং শিরোহন্তমেব চ। স্বধেত্যাচমনং প্রাক্তে মধুপর্কং তথৈব চ। তেনেব মনুনাচামং
নমোহন্তং স্নানমেব চ। নমোহন্তে বাসদী প্রোক্তে তথাঙ্গাভরণানি চ। নমোহন্তমর্পয়েদান্তং পুশুঞ্চ বৌষভ্তাকম্।

পূল্পং সমপ্রেদেব্যৈ মুদ্রা জ্ঞানসংজ্ঞা। অঙ্গুন্ত জনী-বোগাজ জ্ঞানমুদ্রেরমীরিতা। নমোহন্তঞ্চ তথা ধূপং দীপনালাং তথৈব চ। নৈবেল্পঞ্চ তভো দদ্যাদ্ যথোক্তং বৈ চত্তিধন্। পানার্থং মধুরং বারি দদ্যাদ্যিমনং পুনঃ। কপ্রসহিতং দেব্যৈ ভাষালঞ্চ নিবেদ্যেদিতি।

যভু পাদ্যং সম্পাদরাম্যক্তে হাত পাদ্যাদ ত্রতার প্রবাদিনমোহন্তেন মন্ত্রেণানের সংঘতঃ। পাদ্যাঘ্যাচননীয়ানি দদ্যাদেতানি দেশিক ইতি গ্রেমনারিশীতপ্রতৃতীয়
পটলবচনেন ওঁ পাদ্যং সম্পাদ্যাদি নাম ইতি প্রবাদিশতে পাদ্যং কর্যামি নাম দাফিনাতানতে সমপ্রাদিশতে প্রগেশত ভতদেশভেদপ্রারহ্বিপিডেল্ড।

দেরাসনানি যথা নিব্যক্ত প্রপ্রথানাত্য নিব্যক্ত আপ্রথমং পৌষ্পাণ দারব্যের বা। শন্ত শেচতাত্যতা হসত্ত চতুক্ষং বা দিহস্তক্য। ত্রিহস্তমেকহস্তা বা বিত্তিনিত্যের বা। চতুরঙ্গুলতো হ্রসান ন ক্লাচিরিলোজরেও॥ সৌবর্ণান্তমং প্রোক্তং মধ্যমং রাজতং তথা। অধ্যাণ দারবাং জ্রেরাং ফাল্যও কল্পসাধনম। ত্রিকোণাং বাথ সট্কোণাং বস্তকোণাঞ্চ বর্তিনাণাং বা স্থানাত্যাত্য দার্কানিনাং হস্তমাত্রাও ন্যুনাং তচ্চ প্রকল্পয়েও। বাস্ত্রং বা চাম্মণাং কোশাং মণ্ডলম্মোভরে স্থানেও। প্রস্তাদিসাংযুত্য। সকল্টকং ক্ষারযুত্থ দারুসার—বিব্রজিত্য। চিত্যং শাশানসন্তুতং বর্জরিহা বিভীতক্ষিতি॥ শিবার্চন্তিত্রকায়্য নাত্রিয়া নিভাতক্ষিতি॥ শিবার্চন্তিত্রকায়্য স্থাসনাং কোম্বাং তৈজসানাংবা প্যাসনাং শ্রেষ্ঠমুচ্যতে। বর্জরিয়া লোহময়ং কাংস্থাসীসক্ষেব্য চেতি॥ মাতৃকাভেদং

তদ্রে পঞ্চমপটলে চ—চতুরঙ্গুলবিস্তারং রৌপ্যনির্মাণপীঠক-মিতি। রোপ্যমিত্যুপলক্ষণম্। নিবেদয়েদিতি পরেণান্বিতম্। উৎস্ক্ত্য দেবতাবামভাগে আসনং দদ্যাৎ। তছক্তং সার-সংগ্রহে—দেবস্থ বামভাগে তুদ্দ্যান্ম লেন চাসনমিতি॥

স্বাগতমূক্তং স্বতন্ত্রতন্ত্রে—করে। তু সংপুটীকৃত্য দেবি স্বাগতমিত্যথ। পৃচ্ছেন্তক্তিগ্রীতিযুক্ত স্তথোক্তঞ্চ ততঃ পুনঃ। স্থস্বাগতমিতি প্রহ্ল শ্চিন্তয়েদ্ধ উমানস ইতি। প্রহাং প্রণতঃ।

অত্র বিশেষো যথা রাঘ্বভট্টে—যক্ত দর্শনমিচ্ছন্তি দেবাঃ স্বাভীন্টসিদ্ধয়ে। তথ্যৈ তে পরমেশায় স্বাগত গোতঞ্চ মে। এতদনন্তরং স্ক্রাগতমপি। কুতার্থোহনুগৃহীতোহিন্মি সকলং জীবিতং মম। আগতো দেবদেবেশ স্ক্রাগতমিদং বপুরিতি॥ দেবীবিষয়ে তু উহুমূহুং কৃত্ব। পঠেৎ। ততুক্তং শ্যামার্চন-চন্দ্রিকাগ্গতভিরবসংহিতায়াম্—যহুক্তমন্যতন্ত্রেয়ু পরিহারপ্রসাদনম্। কুবর্বীত তদপি প্রোহ্ম নির্বিকল্পেন চেতসেতি॥ তথা মন্ত্রমহোদিবিত্রয়োবিংশতরঙ্গে। কেশবেতি পদস্থানে কার্য্য উহোহন্যদৈবতে। ভগবত্যাঃ পদেষত্র লিঙ্গোহোন্যন্ত্রিকারিত।

পাল্যদ্রব্যমাহ রাঘবভট্টধ্বতমহাকপিলপঞ্চরাত্রম্—দূর্কা চ বিষ্ণুপত্মী চ শ্রামাকং পদ্মমেব চ। পাদ্যাঙ্গানি চ চত্মারি কথিতানি সমাসত ইতি। বিষ্ণুপত্মী অপরাজিতা॥ প্রকারান্তরমাহ ফেংকারিণীয়ে ভৃতীয়পটলে—উধীরং চন্দনঞ্চিব পাল্যপাত্রে তু কল্পয়েদিতি। উধীরং বীরণমূলম্ (বেণার্ মূল্ ইতি যক্ত ভাষা॥) অস্ত দানকালনিয়মস্ত—আগতে স্থানকালে চ নৈবেজ্যোপক্রমে তথা। পাল্যস্থাপি সমুদ্দিউঃ

সময়স্ত্রিবিধো বুধৈরিতি। আগতে স্বাগতপ্রশ্নানন্তরমিত্যর্থঃ। তত্ত্তং শ্যামাপ্রদীপধৃতপূজাদারে—পাগন্ত স্বাগতপ্রশ্না-দুত্তরং প্রথমং স্মৃতমিতি। অর্ঘ্যন্তব্যাণি তু তৎস্থানপ্রসঙ্গে বিরতানি।

আচমনীয়-দ্রব্যাণি যথাগস্ত্যসংহিতায়াম্—তথাচমনপাত্রে-২পি দত্যাজ্জাতীফলং মুনে। লবঙ্গমপি ককোলং শস্ত-মাচমনীয়কমিতি ॥ রাঘবভট্টধৃতমহাকপিলপঞ্রাত্তেঽপি— কর্পুর মগুরুং পুষ্পং দ্রব্যাণ্যাচমনীয়কমিতি। অত্রাচমনীয়-দ্রব্যাণি অন্তথোপদিষ্টানি তানিহিচ্ছাবৈকল্পিকানি জ্ঞাত-ব্যানি॥ এতানি চূর্ণরিত্বা দহ্যাৎ। তত্তুক্তং ফেৎকারিণীয়ে তৃতীয়পটলে। আচমনীয়দ্রব্যাণুদে -চূর্ণয়িত্বা যথান্সায়ং ক্ষিপেদাচমনীয়কে ইতি॥ এতদানকালো যথা রাঘবভট্ট-ধৃতজ্ঞানমালাগ্রাম্—পালে চ মধুপকে চ স্নানে বস্ত্রোপবী-তয়োঃ। ভোজনে চাচমনং দেয়মিতি।

অত্র কেচিৎ স্থানুনা ততঃ কুর্য্যান্মধুপর্কং মুখাসুজে। তেনৈব মনুনা কুর্য্যাদদ্রিরাচমনীয়কমিতি শারদাতিলকবচনে ম্বধেতি দর্শনেন প্রব্যেক্তগন্ধব্যতন্ত্রে স্বধেত্যাচমনং প্রাক্তে মধুপর্কং তথৈব চেত্যাদিবচনে স্বধেত্যত্র স্থাপাঠং কুর্ববন্তঃ মুধ|শব্দস্থামতবাচকত্বাদমতশব্দস্থ চ জলবাচকত্বাদিদমাচম-নীয়ং বমিতি বদন্তি, তদসং ত্যাগার্থকশব্দেনাসনাদীনামর্পণ-বিধানাৎ বমিত্যস্থ বৰুণবীজম্ম ত্যাগাৰ্থকত্বাভাবেন দানা-নিদ্ধে:। তস্থাব্যয়ত্ত্বেন কথঞ্চি ভ্রম্ম ত্যাগার্থকত্বস্বীকারে নমঃ স্বাহা স্বধা চৈব নমো বৌষড়্ যথাক্রমাৎ। পাভার্য্যা-চমনীয়ানি গদ্ধপুষ্পাণি চার্পয়েদিতি গুপ্তার্ণবতন্ত্রবচনে নম ইত্যাদীনাং স্বরূপগ্রহণাৎ স্বধেত্যস্থ বক্তব্যন্থাৎ। বজ্পতারিল প্রধিতি পাঠকল্পনয়া স্বধাতিরিক্তানাং স্বরূপগ্রহণেন চ তথা বক্তুং শক্যতে তথাপি একবচনোপান্তনমঃপ্রভৃতিষূদ্দেও্যস্থ সঙ্কেতগ্রহণস্থানুচিতত্বাৎ। স্বধেত্যস্থ সাঙ্কেতিকরে সর্বেষামের সাঙ্কেতিকরাপত্তেশ্চ। নিরুক্তশারদাতিলকবচনে স্বধেত্যত্র স্বধেতি পাঠঃ। বস্তুতস্ত্র পূর্ব্বোক্তস্থপদেঘটিতবচনং স্ত্রাশ্রদ্বিদয়কন্ তয়োঃ স্বধোচ্চারণে অন্বিকারাদিতি দিক্॥

মধুপর্কে যথা শ্রামার্চনচক্রিকায়াম্—কাংস্তপাত্রে মহে-শানি মধ্বাজ্যসূহিতং দ্বি। কাংস্থেন পিহিতদৈচ্য মধুপুৰ্কঃ প্রকীত্তিত ইতি॥ তথা দেবীবিনয়ে বিশেষ**নাহ গন্ধর্বতন্ত্রে** চতুর্কশপ্রটলে—দ্বি স্পিজলং ক্ষেদ্রিং সিতাভিঃ পঞ্জি সহ। প্রোচাতে মুপ্পর্কস্ত দেবী প্রীতিপ্রদায়ক ইতি। জল নারিকেলজলনিতাপঃ। অত্র কাম্পোতে নারিকেলো-দকলানে দেশেভারং। নারিকেলোদকং স্বল্পং সিতা দ্ধি প্রতং সমন্। সর্কোগম্যিকং ক্ষেত্রিং মধুপর্কে প্রযোজয়েং। তদ্ব্যাৎ কা°স্মপাত্রেণ শোভনেন বিশেষতঃ। বস্কুলবিহাঁ-নন্ত ন পাত্রং কার্যের্ধ ইতি জীক্রনবচনাথ। কাংস্থপাত্রে মধুপুর্কে নারিকেলোদক্দানে দোবাভাবঃ, যথা তাত্রপাত্রে কীরেণ চরুপাকে দোবভাবঃ, তথাচোক্তং ততঃ স্ক্রসংস্কৃত বফৌ গোর্ফারেণ চরু° পচেৎ। অস্ত্রেণ কালিতে পাত্রে নবে তা**এন**য়াদিকে। পয়ো২কুদ্তসারঞ্ <mark>তাএপাত্রে</mark> ন ছুন্যতাতি বচনাদিতি শাক্তানন্দতরঙ্গিণীলিখনাৎ। অয়ং ভাগ-জ্ম: সর্কাসাধারণো বেদিতব্যঃ অহাত্র বিশেষান্বলোকনাং।

থত্র তু শৈবানাং কাংস্থপাত্ররজতপাত্রয়োর্মধুপর্কদানং নিষে-গ্যতি শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাপ্পতোত্তরতন্ত্রঃ—ন দ্যাৎ কাংস্থপাত্রেণ শৈবে শ্বেতভবেন বা। শ্বেতভবং রূপ্যম্।

পুনরাচমনীয়ং কেবলজ্বলেন দেয়ম্। তছুক্তং শারদাতিলক-চতুর্থপটলে—তেনৈব মকুনা কুর্য্যাদদ্ভিরাচমনীয়কমিতি॥ যতু বং স্বধেতি সমুচার্য্য পুনরাচমনং মুথে ইতি
শাস্তবীতন্ত্রত্রয়োদশপটলবচনে বংস্বধেতি মন্ত্রেণ পুনরাচমনীয়দানমুক্তং তৎ বমিতি স্ত্রীশূদ্রয়োঃ, স্বধেতি দ্বিজাতীনামিতি জ্যেম্।

স্পানীয়দ্রব্যাণি যথা রাঘরভট্রগৃতমহাকপিলপঞ্চরাত্রে—
অক্ষতং গন্ধপূষ্পাণি স্পানপাত্রে তথা ত্রয়মিতি॥ অ্রাপি
বিশেষস্তত্রের শুদ্ধতোয়াদলন্ধতোয়ং শ্রেষ্ঠং শতগুণোভরম্। গঙ্গাদিতীর্থতোয়ানাং কলং শাস্ত্রপ্রণাদিতম্। তত্র
তত্রাবিগন্তব্যমিতি॥ তথা তত্রৈর—নাহরেমালিনং তোয়ং
কেশকীটাদিদূর্মিতম্। মলিনেনাপি ভাঙেন ব্যঙ্গেনাশুচিনা
তথেতি॥ স্পানীয়ং সর্বগাত্রেয়ু তত্ত্তং শাস্তবীতত্ত্রে ত্রয়োদশপটলে—স্পানীয়ং সর্বগাত্রেয়ু বসনং ভূষণানি চ। নিবেদল্লামি মন্ত্রনা দল্ভাদেতানি দেশিক ইতি। অত্র নিবেদল্লামি মন্ত্রনা দল্ভাদেতানি দেশিক ইতি। অত্র নিবেদল্লামি বিদ্যান নাইনাইং স্থানমের চেতি গন্ধর্বতন্ত্রেরোাদশপটলবচনস্থ-নমংশব্দক্রাপীচ্ছাবিকল্পো বেদিতব্যঃ। এবমন্তর্গাপি স্পাধ্রেয়ঃ।

যত্ত্ব স্থগন্ধতিলৈরভ্যঙ্গস্থগন্ধামলকাদিভিঃ। উদ্ধৃতেন জলেনাথ স্নাপরিত্বোঞ্চবারিণা। গন্ধাদিকৈশ্চ মূলেন যথা-শক্তি নিষেচয়েও॥ মহাভিষেকং সর্ববস্থ শত্যেনাপি প্রকল্পয়েৎ। সর্ববৈত্রব প্রশস্তোহজ্ঞঃ শিবসূর্য্যার্চ্চনং বিনেতি শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাধৃতভূর্ণাযাগবচনং তন্মহাভিষেকপরম্।

বস্তুমাহ রাঘবভট্টপ্রতমন্ত্রতন্ত্রপ্রকাশে—পীতকোষেরবদনং বিষ্ণুপ্রীত্যৈ প্রকীভিতম্। রক্তং শক্ত্যকবিষ্ণেষ্ ঈশ্বরস্থ সিতং প্রিয়ম্। মলহীনং তথাচ্ছিদ্রং ক্ষোমং কার্পাদমেব চ॥ তৈলাদিদূষিতাৎ রোগঃ, সচ্ছিদ্রাম্মরণং ভবেৎ। জীর্ণাদ্রিদ্রতা কর্ত্তু, শ্মলিনাৎকান্তিহীনতেতি॥ তৎপরিমাণমাহ বরদাতক্রে চতুর্থপটলে—যট্ত্রিংশদঙ্গুলায়াম-নূ্যাং বন্ত্রং ন চার্পয়েদিতি। আয়াম আয়তনমিত্যর্থঃ॥ রামানন্দতীর্থ-স্বামিশোধিতরহত্ত্রদারপ্রতগৌতমীয়ে চ—বিতন্তিমাত্রাদ্রধিকং বাসোম্বাঞ্চ নৃতনমিতি॥ অত্র শক্তন্দেহৎ পরিধেয়াদিভেদেন বন্ত্রাণি দত্যাৎ দত্ত্বাপ্যাচমনীয়ঞ্চ বাদসী পরিধাপয়েৎ। ততাে ভূষণদানঞ্চ সোভ্রীয়েণ বাসসা। যজ্ঞোপবীতদানঞ্চ দত্যাচ্চলনমাদরাদিতি সম্মোহনতন্ত্রপঞ্চমপটলবচনাৎ।

তত্র যদ্যপ্যেত্ৰচনে ভূষণদানানন্তরং যজ্ঞোপবীতদানমভিহিতং তথাপি বক্ষ্যমাণ-শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাপ্পত-সারসংগ্রহবচনে
শাব্দক্রমোপন্মস্তত্বেন পাঠক্রমাচ্ছাব্দক্রমস্থ বলবত্ত্বাৎ যজ্ঞোপবীতং নিবেম্ম স্ত্রীপুংভেদেনাভরণান্মপ্রেং। তথাহি
শিবার্চনচন্দ্রিকাপ্পত্যারসংগ্রহে—যজ্ঞোপবীতং দত্ত্বাথ ভূষপানি সমর্পয়েং। তানি নানাবিধানি স্থার্ম্মুকুটাদিপ্রভেদতং।
স্ত্রীণাং প্রভেদতশ্চাপি বিজ্ঞেয়ানি বিচক্ষণৈরিতি॥ অত্রায়ং
বিশেষো যথা বরদাতত্ত্রে চতুর্থপটলে—অফীবর্ষকন্মকায়া
নোপয়ুক্তং ভবেতু যৎ। অলঙ্কারং ন দল্লাচ্চ বিক্তশাঠ্যং
বিবর্জয়েং। হীনে হানফলং দেবি প্রেষ্ঠে শ্রেষ্ঠকলং লভে-

দিতি। কন্যকেত্যুপলক্ষণম্॥ এতদনন্তরমুপভূষণং দক্ষাং। তত্ত্বং শাস্তবীতন্ত্রে ত্রয়োদশপটলে—উপভূষণদ্রব্যাণি ভূষণান্তে প্রদাপয়েদিতি। উপভূষণন্ত, চন্দ্রাংশুনির্মালং ছত্রমিত্যাদি।

অত্ত ভূষণদানাসমর্থানাং কর্ত্তব্যমাহ শ্যামাকল্পলতাগতজামলে—হৈমং বা রাজতং বাপি মুক্তামাণিক্যমিশ্রিতম্।
অন্যদাভরণধ্বৈ যদঙ্গং যেন রাজতে। প্রদদ্যাং ভূষণং ভক্ত্যা
স্ক্রাভাবেহপি মানস্মিতি।

গন্ধে যথা গৌতমীয়ে দশমাধ্যায়ে—চন্দনাগুরুকপূরমিশ্রো গন্ধ ইহোচ্যতে। সর্বাঙ্গং লেপয়েতেন তাপত্রয়প্রশান্তয়ে ইতি॥ শ্যামাসপর্য্যাগ্নতজ্ञামলেহপি—চন্দ্রচন্দ্রনকন্তুরীরোচনাগুরুকুঙ্কুনিঃ। প্রত্যেকং মিশ্রিতং কৃত্বা গন্ধং
দক্ষাদ্ধ্যানা। পাদে নিবেদয়েলান্ধং রক্তচন্দনমেব চেতি॥
তথা গন্ধবিতক্ত্রে চতুর্দ্দশপটলে—চূর্ণীকৃতো বা ঘৃষ্টো বা
দাহাকর্ষিত্রব বা। রসঃ সম্মাদ্জো বাপি প্রাণ্যস্যোদ্তব এব
বা। গন্ধঃ পঞ্চবিধঃ প্রোক্তো দেবীপ্রীতিপ্রদায়ক ইতি।

এবাং লক্ষণানি যথা তত্ত্বৈ—প্রশন্তগদ্ধযুক্তানি গদ্ধচূর্ণানি যানি চ। তানি গদ্ধাহ্বয়ানি স্থ্যঃ নগদ্ধঃ প্রথমঃ
স্মৃতঃ ॥ দ্বপ্তো মলয়জো গদ্ধঃ সরলাচলমেরুণা। অগুরুপ্রভৃতিশ্চাপি যস্থ পদ্ধঃ প্রদীয়তে ॥ অগুরুর্দেবদার্ব্বাদিঃ
যোদধা গৃহুতে রসঃ। স দাহাকর্বিতো গদ্ধস্ভতীয়ঃ পরিকীর্ত্তিতঃ ॥ সুগদ্ধগদ্ধিনীং বিল্বতিলকং শতপত্রিকাম্। নিস্পীত্য গৃহুতে যোহসোঁ স সম্মৃদিজ উচ্যতে ॥ মৃগনাভিসমুদ্ধ তন্তংকোষোত্তব এব বা। গদ্ধঃ প্রাণ্যক্ষজঃ প্রোক্তঃ

পঞ্চমস্ত স উচ্যতে ॥ গদ্ধস্থ বিস্তরো ভেদে। দিও মান্ত্র সমুদাহতমিতি ॥ তথাত্বেহপি সর্ব্বদা মলয়জো গদ্ধো দেয়ঃ। তত্ত্বং তত্ত্বৈ—সর্ব্বেষু গদ্ধজাতেযু প্রশস্তো মলয়োত্তবঃ। তম্মাৎ সর্ব্বপ্রয়েন দ্ঞান্মলয়জং সদেতি ॥ গদ্ধাপ্তকত্ত্ব তন্ত্রসারাদাবকুসন্ধ্রেয়ন্।

গন্ধদানস্থানমাহ মহানির্ন্দাণতত্ত্রে যষ্ঠোল্লাসে—মধ্যমানামিকাভ্যাঞ্চ গন্ধং দন্তা দ্ধুদম্বজে ইতি। তথা তত্ত্রকৌমুদী-ধৃত-বামকেশ্বরতত্ত্রে—ললাটে চন্দনং দন্তাং পুষ্পং দন্তাং শিরোপরীতি।

অত্র যদ্যোত্মীয়তন্ত্রে গন্ধেন সর্বাঙ্গনেপনং শ্যামা-সপর্ব্যাপ্তজামলবচনে পাদপন্ত্রে গন্ধদানং মহানির্ব্বাণতন্ত্র-বচনে হৃদয়ে তন্ত্রকৌমুদীপ্তবামকেশ্বরতন্ত্রবচনে ললাটে চন্দনদানমূক্তং তৎসর্কোষাং শান্তপ্রতিপাদিতত্বাদিচ্ছাবিকল্লে। জ্ঞাতব্যঃ।

গন্ধদানপ্রকারস্ততন্ত্রসারগৃততন্ত্রান্তরে—মধ্যমানামিকাঙ্গুঠিরঙ্গুল্যথেণ পার্ক্তি। দভাচ্চ বিমলং গন্ধং মূলমন্ত্রেং
সাধক ইতি ॥ শান্তবীতন্ত্রে ত্রয়োদশপটলেহিপি—মধ্যমানামিকাভ্যাঞ্চ গন্ধং দভাদ্দ্দ্র ইতি ॥ রাঘবভট্টে চ—শন্ধপাত্রস্থিতং গন্ধং মন্ত্রৈর্দ্দ্যাং কনিষ্ঠয়েতি ॥ ইহ ক্লচিন্মধ্যমানামিকাঙ্গুঠিঃ কেয়ুচিন্মধ্যমানামিকাভ্যাং কুত্রচিং কনিষ্ঠয়া
যালান্ধদানমুক্তং তদপীচ্ছাবৈকল্লিকত্বন নমাধ্যেম্। এবমেব বক্তচন্দনং দেয়ম।

রক্তচন্দনাক্তরক্ততুলস্থা শ্রীকৃষ্ণপূজনমাহ তন্ত্রদারধ্ত-গোতমীয়ে—দক্ষিণং বাসুদেবাখ্যং শ্বচ্ছং চৈতন্তমব্যয়ম্। বামে চ রুক্মিণী নিত্যা রক্তা রজোগুণান্বিতা। তুলসীযুগলং পাদছয়ে দকিণবামকে ইতি॥ অত্র তন্ত্রসারকারপ্রয়োগো বথা—শুক্লচন্দনপঞ্জিলাং শ্বেততুলসীং রক্তচন্দনপঞ্জিলাং রক্ত-তুলসীং মূলেন দক্ষিণবামপার্শবোদ্দ্যাদিতি॥

যত ন রক্তচন্দনং জাতু গৃহ্বীয়াদ্রক্তপূম্পাকম্। বিল্প-পত্রৈস্তৎপ্রস্থানর্নার্চ্চায়েদেবকাস্থভিমিতি গোতনীয়ভদ্রবচনেন রক্তচন্দনাদিনা শ্রীকৃষ্পুজানিবেশেখ্ডিহিতঃ বক্ষ্য-মাণক্রমদীপিকাতৃতীয়পটলীয়--পুস্পাঞ্জিনিতলাদি - টাকানি-রুক্ত-তন্ত্রসারপ্রয়োগদর্শনেন বচনান্তরৈকবাক্যায়েন চ রক্ত-চন্দনাক্তরক্ত*তুল*সাবিশেষবিহিতপুপ্রেতরবিষয়কণ্। ক্রমর্না-পিকাবচনং যথা—পুষ্পাঞ্জলিং বিতন্তুয়াদগপঞ্জনে মূলেন পাদবুগলে তুলসাদ্বয়েন। মধ্যে হয়।বিষ্ণুগলেন চ মুদ্ধি পদ্ম-দয়েন ষড়্ভিরপি সর্বতনো চ সব্ব ইত্যাদি। তটাকা চ অধুনা পুষ্পাঞ্জলিবিধিং দর্শয়তি পৃষ্পাঞ্জলিমিত্যাদিনা। অথা-নন্তরং পঞ্জুত্বঃ পঞ্বারান্ পুস্পাঞ্জলিং বিত্তুসাৎ, তৎপ্রকারং দ্শন্তি স্বপাদযুগো শেতকৃষ্ণভুলদীভ্যাং মূলমন্ত্রেণ এবং পুষ্পাঞ্জলিং দদ্যাম লেনৈব, সহৃদয়ে শ্বেতরক্তকরবীরাভ্যা-মপরমঞ্জলিং দদ্যামালেনৈব, স্বমূর্কিন শ্বেতরক্তপরাভ্যামপরম-ঞ্লিং দদ্যান্ম লেনৈব, পুনঃ স্বমৃদ্ধি মড়ভিন্তলদীদ্যকরবীরদ্য-পদ্মদ্বয়েরেব পুষ্পাঞ্জলিং দদ্যান্মূলেনৈব, স্বীয়তনৌ সর্কৈ-রেবা**ন্যৈঃ পুল্পের**পীতি ত্রিপাঠিনঃ। এভিঃ ষড়্ভিরি**তি** বিদ্যাধরাচার্য্যঃ অপরং পুষ্পাঞ্জলিং দদ্যাৎ॥ শ্বেতানি দক্ষিণ-ভাগে সিতচন্দনপঙ্কিলানি কুস্থুমানি। রক্তানি বামভাগেহরুণ-চন্দ্ৰসঙ্কসিক্তানি। অস্থাৰ্থঃ। অধুনা শ্বেতরক্ততুলসীনাং

প্রদানবিভাগং দর্শয়তি খেতানীতি। খেতানি তুলস্থাদীনি পুষ্পাণি খেতচন্দনপঙ্কযুক্তানি দক্ষিণভাগে দেয়ানি রক্তানি তুলস্থাদীনি পুষ্পাণি রক্তচন্দনযুতানি বামভাগে দেয়ানীতি।

নিষিদ্ধপুষ্পাণ্যাহ শ্রামাপ্রদীপধৃততন্ত্ররাজে—ক্লিফাং পর্যুষিতঞ্চ ভূমিপতিতং সচ্ছিদ্রকীটান্বিতং যৎ কেশোপহতঞ্চ
গন্ধরহিতং যচোগ্রগন্ধান্বিতম্। হস্তে যদ্বিধৃতং প্রণামসময়ে
যদ্বামহন্তে কৃতং যচ্চান্তর্জলধোতমর্চনবিধা পুষ্পঞ্চ তদ্বর্জয়েৎ। ভঙ্ক্ত্রা যদিটপাদিকং ক্লিতিরুহ্পোৎপাট্য যচ্চাহতং যচ্চাক্রম্য বলাদ্ধ তং তদখিলং পুষ্পাং ভবত্যান্তরম্।
চৌর্যানীতমশস্তত্বন্তমশুচিম্পৃক্টং যদপ্রোক্ষিতং যচ্চান্তাতমধোহন্বরে বিনিহিতং ক্রীতঞ্চ তদ্বর্জ্জয়েদিতি।

ক্লিফ্টং শুক্ষমিত্যর্থঃ। শুক্ষৈ র্ন পূজয়েদিফুং পত্রৈঃ পুল্পৈঃ ফলৈরপীতি রাঘবভট্টগ্নতজ্ঞানমালাবচনাৎ।

পর্যু ষিতমিতি বিশেষবিহিতেতর বিষয়ম্। তদ্যথা গোতমীয়ে—তিষ্ঠেদিনত্রং শুদ্ধং পদ্মমামলকং তথা। তুলদী
দর্বদা শুদ্ধা তথা বিল্পদানি চ। দিনৈকং করবীরাণি
যোগ্যানি চ তপোধনেতি॥ তথা গদ্ধবিতস্ত্রে চতুর্দশপটলে—পদ্মানি দিতরক্তানি কুমুদাস্যুৎপলানি চ। এষাং
পর্যু ষিতাশঙ্কা কার্য্যা পঞ্চদিনোর্দ্ধতঃ। অত্যেষাং কুরুমানাঞ্চ যাবদ্গদ্ধবিপর্যুয় ইতি॥ অত্যচ্চ বিল্পত্রঞ্চ মাঘ্যঞ্চ
তমালামলকীদলম্। কহলারং তুলদীক্ষৈব পদ্মঞ্চ মুনিপুষ্পকম্। এতৎ পর্যু ষিতং ন স্থাৎ যচ্চান্থৎ কলিকাত্মকমিতি। মাঘ্যং কুন্দং মুনিপুষ্পকং বকপুষ্পং কলিকাত্মকমিতি
কলিকাশ্বভাবং যৎ কদাচিদিপি ন বিক্সতীত্যর্থঃ। অত্যথা

কলিকাভিন্তথা নার্চ্যং বিনা চম্পকপদ্মকৈরিতি তন্ত্রসারধৃত-বচনে সামান্যতঃ কলিকাত্মকপুল্পৈঃ পূজানিষেধাৎ বিরোধঃ স্থাৎ। যদা এতদ্বচনৈকবাক্যাৎ পূর্ব্বোক্তকলিকাত্মকপদং পদ্মচম্পকপুষ্পপরম্। এবং শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাধৃতভবিষ্যপুরাণে-হপি—তুলস্থাং বিল্পপত্রে চ ফলেষু চৈব সর্ব্বশঃ। ন পর্যু-বিত-দোষোহন্তি মালাকারগৃহেষু চেতি।

ভূমিপতিতমিতি সেফালিকাবকুলভিন্নমিতি বোধ্যম্। তথাচ তন্ত্রসারে—ভূগতং বর্জ্জয়েৎ পুষ্পং সেফালিবকুলং বিনেতি। অত্র সেফালিকায়াং বিশেষঃ শ্রীতত্ত্বচিন্তামণো—সেফালিকাং কহলারঞ্চ শরৎকালং বিনা ত্যজেদিতি। তথা তারা-রহস্মস্বৃত্তিকায়াং—সেফালিকা চ কহলারং শরৎকালে প্রশ-স্মতে। অন্যত্র ন স্পুশেদ্বেবি প্রায়শ্চিত্তী চ পূজনাদিতি।

যদাসহস্তে কৃত্যিত্যনেনৈত্যুক্তং ভবতি। ন পুষ্প-চ্ছেদনং কুর্য্যাদেবার্থং বামহস্ততঃ। ন দদ্যাভানি দেবেভ্যঃ সংস্থাপ্য বামহস্ততঃ ইতি। বামহস্ততঃ বামহস্তেনেত্যর্থঃ। আদ্যাদিত্বাত্তভয়ত্র তপ্ প্রত্যয়ঃ। তথা শারদাটীকাকার-গোবিন্দভট্টঃ—দেবোপরিপ্পতং যচ্চ বামহস্তপ্পতঞ্চ যৎ। অধো বস্ত্রপ্পতং যচ্চ জলেহস্তঃক্ষালিতঞ্চ যৎ। দেবতা স্তম্ন গৃহুন্তি পুষ্পং নিশ্মাল্যতাং গতমিতি।

চৌর্য্যানীতমিতি তস্ম গ্রহণে দোষমাহ শিবার্চ্চনচন্দ্রিকা-ধ্বতসারসংগ্রহঃ—পররোপিতরক্ষেভ্যঃ পুস্পাণ্যানীয় চার্চ্চ-য়েৎ। অবিজ্ঞায় ন গৃহ্বীয়ান্নিক্ষলং তস্ম পূজনমিতি। যত্তু দেবার্থে কুস্থমস্তেয় মস্তেয়ং ননুরব্রবাদিতি শাক্তানন্দতর-

ঙ্গিণীধৃতবচনং তদতিচুৰ্জ্জনস্বামিকত্বেনাত্যন্তাপ্ৰাপ্যপুষ্পবিষয়ম্।

অশস্তত্ননিতাত্র সমাহারঃ, অশস্তমপ্রশস্তং যদ্যদেবতায়া বিদিশ্যতো নিষিদ্ধন্। তত্নুক্তং বরদাতত্ত্রে চতুর্থপটলে—শিথাযুক্তজবাপুলৈপর্নার্চয়েই পরমেশরীমিত্যাদিবং অক্যান্তন্ত্রিব্যানি। যদা সামান্ততোহশস্তং ত্রিপত্রন্যুক্ত্রেমর্নার্চয়েই কদাচনেতি বরদাতন্ত্রীয়-কলশূন্যর্ক্ষজাতৈর্কিল্পত্রেনার্চয়েদিত্যাদিবিষয়ন্। তুইন্, ভূগতঞ্চাঙ্গসংস্পৃষ্টং কেশকীটাদিদ্যিত্যিতি রাঘবভটীয়—স্নান্থানীতৈঃ পর্যাবিতৈর্যাচিতঃ কৃষ্বর্গ কৈঃ। স্বয়ং বিক্সিতৈঃ পুল্পেঃ স্বয়ঞ্চ প্তিতৈভূবী-ত্যাদি বিশ্যান্।

অঙ্গসংস্পৃক্তনিত্যলস্কারত্বেন গাত্রে প্রতমিত্যর্থঃ। পতিতৈভূবীতি ন পূজ্যেদিতি শেষঃ। অত্র প্রকৃতবচননিষিদ্ধভূগতাদীনাং যথ পুনরুপাদানং তৎ সম্প্রবচনলিখনানুরোধেন নহু
তেবাং দুক্টাভঃপাতঃ।

সাগণিতৈরিতি মধ্যাহ্মনাবিষয়ং প্রতিঃসানাদি-প্রতিঃকালপুজান্তং প্রথমপ্রহরক ত্যমৃত্যা ততঃ পুষ্পাদলাদীনামুখায়া চর্চনারতেতেতি দ্বিতীর প্রহারকত্যাহেন পঞ্চরাত্রে পুনঃ পুষ্পাহ-রণবিধানাং। আহা মধ্যাহ্রদময়েন ছিন্দ্যাৎ কুস্তমং নরঃ। তং-পুষ্পান্তান্টানে দেবি নিরয়ে পরিপচ্যত ইতি মৎস্থাস্ত্রে স্পান্টবিধানাক।

স্বয়°বিকসিতৈরিতি স্বয়ং পুরুষেণ বিসতৈরিত্যর্থঃ।

যচাজাত্যিতি কামত আত্রাত্মিত্যর্থঃ। তথাচ শাক্তা-নন্দতরঙ্গিণ্যান্—পূপেঞ্চ পঞ্গব্যঞ্চ উপচারাংস্তথাপরান্। আত্বা নিবেল দেবেশি নরো নরকমাগুয়াদিতি। অত নর ইত্যুপাদানাধক্ষ্যনাশৈরাজাতে দোষাভাবঃ ততুক্তং রাঘ্য- ভটুধৃততন্ত্রসারসংহিতায়াম্—জাতমাত্রাণি পুষ্পাণি ঘ্রাতা-য়েব নিসর্গতঃ। পঞ্চভিশ্চ মহাভূতৈ ভান্তনা শশিনা তথা। প্রাণিভিশ্চ দ্বিরেফাল্যেঃ পোইষ্পারেব ন সংশয়ঃ। অতো নিশ্মাল্যমিত্যুক্তমিতি। নিশ্মাল্যনিবেদনেন ফলং কথমিত্যা-শঙ্ক্য তত্রৈবাক্তম্। ঘ্রাতপুষ্পাৎ ফলং সিধ্যেদল্লং নো মানসাদ্যথা। তম্মাদপরিহার্য্যন্নাদ্যথা চানুপায়ত ইতি।

ক্রীতমিত্যস্থায়মভিপ্রায়: কৃশপুষ্পাসমিদ্বারি ব্রাহ্মণ: স্বয়মাহরেৎ। শূদ্রানীতৈ: ক্রয়ক্রীতে: কন্ম কুর্বন্ ব্রজত্যধ ইতি।
অন্নমূল্যক্রীতৈরিতি শারদাটীকাকারগোবিন্দভট্টঃ। শূদ্রানীতৈরিত্যস্থ ভৃত্যাতিরিক্তশুদ্রানীতৈরিত্যথ: শিক্টব্যবহারদর্শনাৎ। গোবিন্দভট্টস্থাপি মতমেত্ৎ।

পত্রপুষ্পবিশেষাণাং ছিন্নভিন্নে দোষাভাবো যথা নিবন্ধে পঞ্চাশত্তমপটলে—বিশ্বস্থা জাতিপুষ্পাদ্য তথা ধাত্রীদলস্য চ। তমালদ্য চ পদ্মস্য ছিন্নভিন্নং ন তুষ্যতীতি।

নির তিসর্তপুলৈ পূজনসাহ শ্যামাপ্রদীপে—বকুলস্য ছশোকস্থ চার্জ্বনন্থ মহেশ্বরি। (কুটজর্ক্ষন্থেতি রাজনির্ঘণ্টঃ) পূজরেৎ র্ত্তবর্জেন সরতেন বিসর্জ্জারেৎ। বিফুক্রান্তা জবা নাগকেশরং নাগবল্লভ্য। বন্ধূ কঞ্চৈব কহলারং সর্ত্তং শস্ত-মর্জনে ইতি। নাগবল্লভং নাগচম্পক্ষিতি শাক্তানন্দতর্ক্ষণী-কারঃ। রন্তং প্রসববন্ধন্মিত্যর্থঃ।

জলজপুপ্পে বিশেষমাহ শ্যামাপ্রদীপে। অন্ত্যজানীত-জলজং শুদ্ধমিত্যাহ নারদ ইতি। অত্রাস্ত্যজ আনায়ীতি কেচিৎ, আনায়িহস্তাজ্জনজন্ত শুদ্ধমিতি জামলে।ক্তত্বাৎ। দেবতাভেদে বিহিতনিধিদ্ধপুপান্ত স্বস্বকল্পে বেদিতব্যম্। কিন্তু সর্কিঃ পুলৈপন্তথা পূজা বিহিতাবিহিতৈরপি। কর্ত্তবান সর্বদেবানাং ভক্তিযোগোহত্র কারণমিতি রাঘবভট্টগ্নতবচন-মপ্যালোচনীয়ম্।

গন্ধযুক্তপুষ্পদানমাহ রহন্ধীলতন্ত্রে পঞ্চমপটলে। গন্ধং দন্তান্মহেশানি গন্ধানামন্টকং তথা। পুষ্পং দদ্যাদ্বারোহে গন্ধযুক্তং মনোহরমিতি।

পুষ্পদানস্থানমাই সম্মোহনতন্ত্রে ষষ্ঠপটলে নিবন্ধতন্ত্রত্রয়োদশপটলে চ—দেবস্য মস্তকং কুর্য্যাৎ বুস্থমোপহিতং
সদেতি। তথা তন্ত্রকৌমুদীধৃতবামকেশ্বরতন্ত্রে—ললাটে চন্দনং
দল্ভাৎ পুষ্পং দল্ভাচ্ছিরোপরীতি। এতদ্বচনাভ্যাং যন্মস্তকোপরি পুষ্পদানং নির্ণীতং তদ্বক্ষ্যমাণবচনৈকযোগাৎ পদ্মপুষ্পবিষয়ম্। তত্ত্বং তন্ত্রকৌমুদীধৃতবারাহীয়ে—সর্বাং পুষ্পং
তনৌ দল্ভাৎ পঙ্কজং শিরউপরীতি।

যত্ত্ব, নিবেদয়েৎ পুরোভাগে গদ্ধং পুষ্পঞ্চ ভূষণমিতি তন্ত্রসারধৃতজামলবচনেন পুরতঃ পুষ্পদানমূক্তং তদিচ্ছাবি-কল্পেন পরিষ্করণীয়ম্। পুষ্পদানমূদ্রা তু পাত্যাদীনাং ত্যাগার্থকমন্ত্রপ্রকরণে প্রতিপাদিতা।

পত্রাণি যথা। শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাধৃতমন্ত্রতন্ত্রপ্রকাশে—পত্রেষু তুলদী শ্রেষ্ঠা বিশ্বঞ্চানলকী তথা। মরুকোদেবকহলারী বিষ্ণুক্রান্তং তথৈব চ। অপামাগোহথ গান্তারী পত্রং স্থরভিগদ্ধকম্। নাগবলীদলং দূর্কা শতপত্রং তথা মতম্। তমাল-পত্রঞ্চানস্ত্রপত্রং ধাত্রীদলং তথেতি। অগস্ত্যপত্রং বকপত্র-মিত্যর্থঃ। প্রমাণন্ত্রধ্যাত্মরামায়ণেহকুসক্ষেরম্।

বিশ্বপত্রে বিশেষমাহ বরদাতদ্রে চতুর্থপটলে—ফলশূলৈ

বৃক্ষিজাতৈবিল্পতিত্র ন চার্চ্চয়েদিতি। তথা ভবিষ্যপুরাণে উপবিভাগে মধ্যমথণ্ডে বিংশাধ্যায়ে—বিল্পত্রস্থ প্লবনং বৃত্তং হিদ্বা তু প্লাবয়েৎ। বৃত্তসংপ্লবনাদেব ফলং হরতি রাক্ষদ ইতি।

> ইতি সতত্যহামহীশচক্রচুড়ামণিচর্চিত্ররণনলিন শ্রীমদ্গোপী-মোহনপাদপদ্মামন্দ্রমকরন্দসন্দোহানন্দিত্যনোসন্কর-শ্রীহরকুমার দেবশর্ম-স্বীয়চিন্তামণিমন্ত্রচিন্তোদক-হরতত্ত্বীধিতৌ দশমকলাপ্রকাশঃ।

অথ ততো গন্ধা দৈরেভ্যর্চ্য পুনরনন্তরমঙ্গাদীন্যচ্চ য়েদিতি ক্রমবিধায়কং গন্ধাতৈরিত্যাদিশব্দেন পুষ্পায় অঙ্গাদীনিতি তত্তৎকল্লোক্রাঙ্গস্বত্যাদীন্ অস্যোক্তস্থায়মাশয়ঃ মুখ্যদেবে গন্ধপুষ্পে দত্তা অঙ্গাদিলোকপালান্তং সংপূজ্য ধূপাদি
দক্ষাদিতি রাঘবভট্টলিখনস্বরসাৎ পঞ্চপুষ্পাঞ্জলিং দত্তা পরিবারাচ্চ নঞ্চরেদিতি বচনাচ্চ॥ তন্ত্রসারকারমতে গন্ধপুষ্পাদামানন্তরমাবরণপূজা, ততাে ধূপদীপদাননিতি চেম জীবন্থাসং ততঃ কৃত্বা পূজ্যেৎ পরদেবতাম্। অঙ্গপূজাঞ্চ কাল্যাদীন্ ব্রাক্ষ্যাদীং শ্চাপ্টভৈরবান্ ইতি তােড়লতন্ত্রীয়পূজা—
স্ত্রে তিদ্বিক্ষদ্ধশনাং।

ন চৈতদ্বচনস্থ কালীপ্রকরণে লিথিতত্বাৎ তন্মাত্রবিষ-য়কতেতি বাচ্যম্। জীবস্থাসং ততঃ কৃত্বা উপচারৈঃ প্রপুজয়েৎ। ষড়ঙ্গানি চ সংপূজ্য অক্ষোভ্যং পূজয়েত্ততঃ। ইতি তোড়লতন্ত্রচতুর্থপটলবচনেহপি সর্বোপচারদানানন্তর-মাবরণপূজাবিধানাৎ।

ন চোক্তবচনস্থ তারাপ্রকরণীয়ত্বেন তন্মাত্রবিষয়কমিতি বাচ্যম্। নৈবেজ্ঞদানান্তমুক্তা তত্ত্বাচমনং দত্যান্ম ল-মন্ত্রেণ পূজকঃ। গুরুপঙ্কিং প্রপূজ্যাদৌ তত আবরণং যজেদিতি কমলাতন্ত্রপঞ্চমপটলবচনে নৈবেদ্যদানাৎ পর-মাবরণপূজাদর্শনাং।

ন চ, স্নানঞ্চ বাসশ্চ বিভূষণানি সাঙ্গায় তাম্ম বিনিযোজ্য মন্ত্রী। গাত্রে পবিত্রৈ রথ গন্ধপুপ্রঃ পূর্বাং যজেন্যাসবিধান-তোহস্থেতি ক্রমন্বাপিকা-বচনেন গন্ধপুপ্রদানানন্তরমাবরণ-পূজা সাধীয়সীতি বাচ্যন্। এতদ্বচনস্থ দীক্ষাপ্রকরণীয়ক্ষেন তৎপরস্থাৎ।

ন চ ধূপাত্তৈরুপচারেশ্চ সংপূজ্য সধুসূদনম্। অঙ্গানি পূজয়েদেবি বাণাংশ্চ পূর্ববদ্যজেদিতি সম্মোহনতন্ত্রসপ্তম-পটলে দীক্ষাপ্রকরণমন্তরেণাপি গন্ধপুপ্পদানানন্তরমাবরণ-পূজায়াতীতি বাচ্যম্। অত্র ধূপাত্তৈরিত্যস্থ ধূপস্থান্তানি ধূপান্তানি তানি ধূপদীপনৈবেত্যতাম্বৃলানীতি তৎপুরুষসমাদেন তাম্বৃলান্তেন পূজানন্তরমাবরণপূজাবিধানাং। অতথা তত্র দীপাদিতাম্বূলান্তানামনুক্তত্বেন পূজাভঙ্গাপতেঃ।

উচ্যতে আসনামোক্ষনাপ্রোতি পাদ্যং ধর্মার্থসাধন-মিত্যাত্যপক্রম্য উপসংহারে তাম্বলং পরমং রম্যং দানাদা-জীবনং স্থা। তর্পণাম্মোক্ষনাপ্রোতি স্থধ্যা তন্ময়ো ভবেং। মালয়া লভতে প্রীতিং রোগশোকবিবর্জিতঃ। উপভূষণ-দ্রব্যাণি ভূমণান্তে প্রদাপয়েং। এতদেব সমুচ্চার্য্য পূজ্যিয়া

নিবেদয়েৎ। পঞ্চপুষ্পাঞ্জলিং দত্ত্বা প্রার্থয়েচ্চ কৃতাঞ্জলিঃ। তবাবরণদেবাংশ্চ পুজয়ামি নমঃ পদমিতি শাস্তবীতন্ত্র-ত্রয়োদশপটলবচনাৎ। নৈবেলদানাত্ব্যক্ত্রা উত্তমাঙ্গলদা-ধারপাদসর্কাঙ্গকেরু চ। পঞ্চপুস্পাঞ্জলিং দত্ত্বা মূলম**ন্ত্রেণ** দেশিকঃ । ক্কতাঞ্জলিপুটো ভূত্বা প্রার্থয়েদিষ্টদেবতাম্। তবা-বরণদেবাংশ্চ পূজয়ামি নমো বদেদিতি মহানির্ব্বাণতন্ত্রষষ্ঠ-প্টলবচনাৎ। তদ্যাং গণেশমাবাহ্য প্রজ্যেদাসনাদিভিঃ। অভ্যৰ্চ্চ্য কুস্থমৈরীশং কুর্ব্যাদাবরণার্চ্চনমিতি মন্ত্রমহোদধি-ৰিতীয়**তরঙ্গ**বচনাথ। নৈবেলদানান্তমূক্ত্বা ব**র্ণের্মপুঞ্জিতি**ঃ ক্রমশঃ শতার্ট্রেন্যাসক্রমাদভিয়জেৎ সকলাস্ত্র মন্ত্রী। গন্ধা-দিভিঃ প্রথমতো মনুদেবতাস্থ ত্রেলোক্যমোহন ইতি প্রথিতঃ প্রয়োগ ইতি প্রপঞ্চমার্য্রগ্রপটলবচনেনাবরণপুজাবিধানাৎ। খামা**র্চনচন্দ্রিকা-শ্রীতভু**চিন্তামণি-খ্যামারহস্যাদিযু সর্বত্ত তামূলদানান্তে আবরণপূজাবিধানাৎ পঞ্চোপচারাদিদানে ক্রমভঙ্গত্বাপতেঃ অনাদিসিদ্ধশিকব্যবহারাচ্চ। তাম্বদানা-নন্তরমাবরণপূজা সাধীয়সীতি ন কোহপি দোষলেশঃ। অত-এব পঞ্চপুষ্পাঞ্জলিং দত্যু পরিবারার্চ্চনঞ্চরেদিতি তন্ত্রসারকার-ধৃত-রাঘবভট্টধৃত-বচনন্ত[ি]নিকক্তশাস্ত্রবামহানির্ব্বাণ**তন্ত্রবচনৈক**-বক্যত্য়া তাম্বুলদানাত্তে পঞ্পুষ্পাঞ্জিদানানন্তর্মাবরণপূজা-বিধায়কম্। তথাসভ্যেতছিরুদ্ধবচনানি শিস্টব্যবহারবিরুদ্ধ-ষাদ্রাদরণীয়ানি।

অথ ধূপদানম্। তন্ত্রসারে—মধ্যমানামিকাঙ্গুষ্ঠেরঙ্গুল্য-গ্রেণ পার্ব্বতি। দঢ়াচ্চ বিমলং গন্ধং মূলমন্ত্রেণ সাধকঃ। অঙ্গুতৰ্জ্জনীভ্যান্ত চক্তে পূষ্পং নিবেদয়েৎ। যথা গন্ধং তথা দেবি ধূপং দছাদ্বিচক্ষণঃ। মধ্যমানামিকাভ্যান্ত মধ্যপর্কিণি দেশিকঃ। অঙ্কুষ্ঠাত্রেণ দেবেশি ধুত্বা ধূপং নিবেদ্রেৎ। ধূপভাজনমন্ত্রেণ প্রোক্ষ্যাভ্যর্চ্য হৃদানুনা। অস্ত্রেণ পূজিতাং ঘণ্টাং বাদয়ন্ গুণ্গুলং দহেৎ। ততঃ সমর্পয়েজ্ পং ঘণ্টাবাছ্যজয়ন্ত্রনঃ জয়ধ্বনিং ততো মন্ত্রং মাতঃ স্বাহেত্যু-দীর্ঘ্য চ। অভ্যর্চ্য বাদয়ন্ ঘণ্টাং স্থ্পুপর্প্রেভতঃ। তথা তদ্বতন্ত্রে—ন ভূমো বিতরেদ্ধূপং নাসনে ন ঘটে তথেতি। তথা তদ্বতন্ত্রান্তরে—ধূপস্থানং সমভ্যর্চ্য তর্জ্জন্যা বাময়া স্পৃশন্। ধূপভাজনমন্ত্রেণ প্রোক্ষ্যাভ্যর্চ্য হৃদানুনেতি। ধূপভাজনমন্ত্র ফট্কার ইতি রাঘ্বভট্টঃ। তথা গৌতমীয়ে—উত্তার্ঘ্য দৃষ্টিপর্যান্তং ঘণ্টাং বামদিশি স্থিতাম্। বাদয়ন্ বামহস্তেন, দক্ষহস্তেন চার্পয়েদিতি।

অথ দীপদানম্। নিবন্ধতন্ত্রে উনষ্টিতমপটলে—
য়তপ্রদীপঃপ্রথম স্তিলভিবেত্ত । সার্যপো ফলনির্যাদজাতো বা রাজিকোদ্ভবঃ। লভ্যতে যস্থ তাপস্ত দীপস্থ
চতুরঙ্গুলাৎ। ন দ দীপ ইতি খ্যাতো ব্যোমবহ্সিন্ত দ
স্মৃতঃ। নিদ্রাহ্লাদকরঃ স্বর্চি দূরতস্তাপবর্জিতঃ। সশিথঃ
শব্দরহিতো নিধূমো নাতিহ্রস্বকঃ। দক্ষিণে দীপর্ক্ষয়ঃ
প্রদীপঃ শ্রীবির্দ্ধয়ে। রক্ষে প্রদীপো দাতব্যো নতু ভূমো
কদাচন। সর্বাংশহা বস্থমতী সহতে ন ম্বিদং দ্বয়ম্। অকার্যাদ্রাতক্ষ দীপতাপং তথৈব চ॥ ন মিশ্রীক্বত্য দদ্যাধূ
দীপে স্নেহয়্বতাদিকান্। দন্ত্বা মিশ্রীক্বতং স্নেহং তামিশ্রং
নরকং ব্রজেৎ। দীপং তথা স্থাপয়েচ্চ যথা চহায়াং নচাশ্রেহেং। শণং বা বাদরং বস্ত্রং জীর্ণং মলিনমেব বা।

জলযুক্তং ন দন্তাভূ বর্ত্তিকার্থে কথঞ্চনেতি । রাজিকা রাজসর্বপঃ (রাইসরিষা ইতি ভাষা) তস্থামুদ্ভবঃ, রাজিকাপি চ কেদারে রাজসর্বপরেথয়োরিতি মেদিনীকরঃ।

দক্ষিণ ইতি বামদক্ষিণভাগস্ত দেবতায়াএব নতু সাধকস্ত ইতি তন্ত্রসারকারঃ। ধূপদীপো স্লভোক্ত্যঞ্চ দেবতাথ্রে নিবেদয়েদিতি বচনাৎ। বামদক্ষিণস্ত সাধকস্থ নতু দেবতায়া ইতি শ্যামার্চ্চনচন্দ্রিকাকারঃ। বস্তুতস্তু দীপং স্ববামে দক্ষিণে বা স্থাপয়েদিতীচ্ছাবিকল্পঃ। ধূপন্ত স্বদক্ষিণএব নতু বামে। তত্ত্তং গৌতমীয়ে২ন্টমাধ্যায়ে—গন্ধপুষ্পাদিপাত্রাণি স্বদক্ষে চ নিবেশয়েৎ। দীপাবলিং যথৈবেচ্ছা নৈবেদ্যং পুরতো ন্যদেদিতি। অত্রাদিপদেন ধূপপরিগ্রহঃ অগ্রে দীপ-বিন্যাদে বিশেষাতিবানাং। এবঞ্চ সতি দীপং দক্ষিণতো দ্যাৎ দেব্যা বা বামতোহপি বা। বামতস্ত তথা ধূপমথ্ৰে বা নতু দক্ষিণে ইতি নিবন্ধতন্ত্রোনষষ্টিতমপটলবচনে বাম-দক্ষিণো দেবতায়া নতু সাধকস্ম নিরুক্তগোতমীয়তস্ত্র-বচনৈকবাক্যস্বাৎ। তথা নিবঙ্গে ঊনষ্ঠিতমপটলে—ঘ্নতদীপান্ দক্ষিণে তু তৈলদীপাংস্ত বামত ইতি॥ বাদরমিতি বদরা কার্পাদী, বদরাগৃষ্টিকার্পাস্থোরেলাপর্ণ্যাং ব্রিয়াং পুমানিতি মেদিনীকরঃ। তত্নদ্রং বাদরং বস্ত্রং, বাদরং ন দ্র্যাৎ, জীর্ণং गलिनः न मञ्जानिकार्थः।

দীপমালাদানং যথা জ্ঞানার্ণবে ত্রয়োদশপটলে—দশাঙ্গা-গ্লৈধূপময়ৈধূপিয়েৎ পরমেশ্বরীম্। অভিতো বেদিকাচক্রং দীপমালাং স্বতপ্লুতাম্। কর্পুররচিতাঞাপি তৈলপূর্ণাস্ত বা দীপনির্কাপণে দোষসাহ—শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাপ্বতজামলে— নৈব নির্বাপয়েদ্দীপং সাধকস্ত কদাচন। যস্ত নির্বাপয়েদ্দীপং তস্ত লক্ষ্মীর্ব্বিনশ্যতি। কৃষ্মাণ্ডচ্ছেদকী নারী দীপনির্বা-পকঃ পুমান্। বিধবা চ দরিদ্রশ্চ ভবেৎ সপ্তস্ত জন্মহিতি।

অথ নৈবেল্য। গোত্যায়ে দশমাধায়ে—স্বর্ণে বা তান্ত্র-পাত্রে বা রৌপ্যে বা পঙ্কজে বলে। সিতোপদংশং শাল্যনং সপ্তড়ং মধুনা বুতম্। দ্বিত্তপ্তরতোপেং কদ্ল্যাদিকক মিতি॥ তথা নিবন্ধে উনবহিত্যপটলে—নৈবেদ্যন্ত মহাদেৱা। যথালাভং নিবেদয়েং। ওদাফটিকসফাশং চন্দ্রনীহারসন্নিভয়। পুণ্যদেশোদ্ভবং শত্যং ভ্রম্ভানক নানাফলসমা-যুক্তং ক্ষীরাজাপয়দায়িতম্। খণ্ডাজানগুভিমিশ্রাকৃতং শর্কর য়ান্বিতমিতি॥ তথা তারাপ্রদীপে দ্বিতীয়প**টলে—পঞ্**ায়ত তথা খণ্ডং শাল্যনং পিষ্টকন্তথা। ব্যৱগোধুমজৈর্ন দৈগঃ প্রকানং পরিকর্ন্তরে । ব্যঞ্জনং ষড়্রদোপেতং স্বতাক্তং স্থমনোহরম্। ফলং নানাবিধং রম্যাং পরমান্নং তথৈব চ। এবং সাভিব্ন-দ্রব্যেণ ব্রা**ন্ধা**ণঃ পুজয়েচ্ছিবামিতি॥ নিষিদ্ধন্ত কালিকা-পুরাণে—যৎপৃতিগদ্ধসংযুক্ত দশ্ধং ভোগ্যবহিষ্কৃতম্। তত্ত্ত মপি নো দদ্যা মহাদেবৈয় কল্চনেতি। মহাদেবীত্যপ-লক্ষণম। তিন্তামেৰ সময়েই মব্যঞ্জনাদিকমিপি দেয়ম। একন বহুষু প্রকাশকনৈবেদ্যনিবেদনবিধানাৎ।

নিবেদনপ্রকারমাহ—শিবার্ক্তনচন্দ্রিকাপ্পতসারসংগ্রহে— বিধায় স্বর্ণজে পাত্রে সাধারে চৈব মণ্ডলে। সংস্থাপা চতুরব্বে ৮ সংস্কৃ ব্যাক্ষাস্ত্রমার্গতঃ। অস্ত্রমন্ত্রেণ সংপ্রোক্ষা চক্রমন্ত্রাভিরন্ধিতন্। বায়ুবীজেন সংশোধ্য বহিবীজেন

সন্দহেৎ। স্পৃশন্ দক্ষকরাগ্রেণ স্থাবীজেন মন্ত্রবিৎ। অমৃতীকৃত্য তৎ সর্কাং মূলমন্ত্রেণ মন্ত্রাভ্যাং বিধিবদফ্টধা চাভিমন্ত্রয়েৎ। ধেকুমূদ্রাং প্রদর্শ্যাথ গন্ধপুল্পৈঃ সমর্চ্চয়েৎ। দেবমভ্যর্ক্য কুর্য্যাচ্চ পুষ্পাঞ্জলিমনশুধীঃ। হেমপাত্রস্থিতং দিব্যং প্রমান্নং স্থসংস্কৃত্য্। পঞ্চা ষড়্-রসোপেতং গৃহাণ পরমেশ্বর। মূলমন্ত্রং সমুচ্চার্য্য স্বাহান্তং জলমপ্রেছ। করাভ্যাং তৎ সমৃদ্ধৃত্য পুজিতং তৎ স্থা-ত্মকম্। নিবেদয়ামি ভবতে সাকুগায় গৃহাণ তৎ। সর্ব্ব-পূজাস্থ তরায়া নৈবেঞ্জ মনুর্ম্মতঃ। প্রাণসংজ্ঞতথাপানো-ব্যানোদানমতঃ পরম্। সমানো ঙেযুতাঃ সর্কে দ্বিঠান্তাঃ পরিকীর্ত্তিত। ইতি। অত্র পরমেশ্বরেতি পদস্থানে শাক্তিঃ পরমেশ্বরীত্যহুম্।। অন্নদাকন্তে ত্রোদশপটলে চ—বামেন গ্রাসমুদ্রাঞ্ বিকচোৎপলসন্নিভাম্। দর্শয়েন্য_ূলমন্ত্রেণ পানার্থং তীর্থপুরিতমিতি। দ্যাদিতি শেনঃ॥ তথা রাঘবভট্টপ্রতম্— প্রাসমূদ্রাং বামদোষণ বিকচোৎপলসন্নিভাম। প্রদর্শয়ন্ দক্ষিণেন প্রাণাদীনাঞ্চ দর্শয়েদিতি॥ গোতসীয়েহপি—ক্ষণং বিলম্ব্য মতিমান্দ্লাক। ভূষকং ততঃ। অয়তাপিধানমসি স্বাহেতি মন্ত্রনামুনেতি॥ তিত্রেব—আচমনজলং **দত্যাদস্ত**-ধাবনমেব চ। হস্তলেপং ততো দভ্যা পুনঃ পানীয়মর্পয়েদিতি॥ বৈষ্ণবে নৈবেদ্যদানন্ত ক্রমদাপিকাদাবনুসন্ধেয়ম্॥ শাক্তা-নামপি নৈবেভেহ্টধ। মূলমন্ত্রপং, তত্ত্তং শাক্তানন্তর-ঙ্গিণীপ্নতজামলে—আনীয় দেবীপুরতঃ সংপ্রোক্ষ্য চার্ঘ্যবারিণা। অস্ত্রমন্ত্রেণ সংপ্রোক্ষ্য ধেনুমুদ্রাং প্রদর্শয়েৎ। তস্ত্রোপরি মূলমন্ত্রমফবারং জপেৎ স্থারিতি।

যত্ত্ব দশ্য়িষা চক্রমুদ্রাং দশধাপ্রজপেশ্বনুমিতি কালীকুলামৃততন্ত্রচতুর্থপটলবচনং তৎ কালীপূজাপরং তৎপ্রকরণীয়বাৎ। যদপি মূলেন সপ্তধামন্ত্র্য অর্ব্যান্তির্বিনিবেদয়েও।
মূলমেতত্ত্ব সিদ্ধান্ধং সর্ব্বোপকরণাশ্বিতমিতি মহানির্ব্বাণতন্ত্রযত্তোল্লাসবচনং তৎ কুলপূজাপরম্। বং ধেয়া চামৃতীকৃত্য
স্বমূলং সপ্তধা জপেও। ইতি শুদ্ধ্যাদি সংস্কৃত্য ঋচা বা
শোধনঞ্চরেদিত্যন্ধদাকল্পদশমপটলবচনে পঞ্চতন্ত্রশোধনে তথা
দশ্নাও।

নৈবেতাদীনামাচ্ছাদনস্থাবশ্যকত্বমাহ শাক্তানন্দতরঙ্গিণধৃতগান্ধর্কে—স্থনৈবেতাদিকংযত্ত্ব গদ্ধপুষ্পাদিকস্ত যৎ।
সর্ববিদ্যাচ্ছাদনং কার্য্যং যাবদাবাহয়েৎ পরাম্। রাক্ষদাঃ
প্রতিগৃহন্তি নিরাচ্ছাদনকং যত ইতি। আচ্ছাদনস্ত পুষ্পোণ
পত্রেণ বেতি সম্প্রদায়বিদঃ।

নৈবেদ্যস্থাপনস্থানমাহ গোতমীয়ে নবমাধ্যায়ে—নৈবেদ্যং
দক্ষিণে বামে পুরতো নতু পৃষ্ঠত ইতি। তথা জামলে—
দক্ষিণে চ সিতা বর্ত্তি র্বামতো রক্তবর্ত্তিকাম্। পকাপকবিভাগেন নৈবেদ্যস্যাপি তৎস্থিতিরিতি॥ এবং সিদ্ধান্নস্য
বামভাগে স্থাপনে দোষমাহ তন্ত্রসারকারঃ। দক্ষিণস্ত পরিত্যঙ্গ্য বামে চৈব নিধাপয়েৎ। অভোজ্যং তন্তবেদন্নং পানীযুস্ত স্থরোপমমিতি। এতেন পানার্থজলস্যাপি তথা। তথা
পুরতো নিয়মো নাস্তি দীপনৈবেদ্যয়োঃ কচিদিতি।

তাস্বৃলমাহ শিবাচ্চ নচন্দ্রিকাপ্তাগন্ত্যে—কর্পুরশকলোমিশ্রং নাগবল্লীদলৈযু তিম্। স্থাবিন্দুসমাযুক্তং পূগীফলমনোহরম্। তাস্বলং নিজনাথায় দত্ত্বা কামানবাপ্লুয়াদিতি।

ততঃ প্রণামঃ। তত্তকং তারাভক্তিসুধার্ণবধ্তশক্তি-জামলে—ভোজনান্তে চ গণ্ডু যং দদ্যাদাচমনং ততঃ। তাম্বূলং সলিলং দজ্বা নত্বা যোনিং প্রদর্শয়েদিতি। যোনিং যোনিমূদ্রা-মিতি তু শাক্তাভিপ্রায়েণেতি।

পাদ্যাদিদ্রব্যালাভে কর্ত্ব্যনিয়মমাহ—রাঘবভট্টধৃতমন্ত্রতন্ত্রপ্রকাশঃ—দ্রব্যাভাবে প্রদাতব্যাঃ ক্ষালিতান্তভুলাঃ শুভাইতি । তথা তদ্ধু তেহন্যত্রাপি—তভুলান্ প্রক্ষিপেত্বেষু দ্রব্যালাভে তু তৎ স্মরন্নিতি ॥ শ্যামাদ্র্যনিক্রাধৃতস্বতন্ত্রভন্ত্রমপি—সর্ব্বেযামুপচারাণামভাবে গদ্ধপুষ্পকম্ । অভাবে গদ্ধপুষ্পাস্ত স্নানীয়ং কল্পয়েৎ পুনরিতি ॥ তদ্ধৃততন্ত্রান্তরঞ্চ—
পুষ্পাভাবে তু দেবেশি পত্রাণি চ প্রদাপয়েৎ । সর্ব্বাভাবে
দ্রন্ধং দেয়ং তেন পুণ্যমবাপ্যত ইতি ॥ তত্রাপি শাভ্যেষু
কশ্চিদ্বিশেষঃ গান্ধর্বে চতুর্দশপটলে—বন্ত্রাভাবে তত্যে
দদ্যাদ্রক্রপদ্ধং তথা জ্বামিতি ।

७र्थनकानमार ज्ञानार्थर खरमानग्यहेटन। उपहारेतः

ষোড়শভিঃ সংপূজ্য পরদেবতাম্। তর্পণানি পুনর্দভ্বা ত্রিবারং মূলবিগ্রন্থে। আবরণং পূজ্যেদিতি শেষঃ॥ তথা তারা-ভিক্সুধার্ণবিধৃতকুমারীতন্ত্রে—পাঞ্চাদিভিমূর্লদেবীং সংপূজ্য তর্পয়েত্তত ইতি। অন্ধাকরে ত্রয়োদশপটলে চ—ততঃ শ্রীপাত্রসংস্থেনামতেন ত্রিঃ প্রতর্পয়েদিতি। শ্রীপাত্রসংস্থেনার্যাপাত্রস্থেন অমতেন জলেন সামান্যার্য্যোদকেনেত্যর্থঃ॥
বৈষ্ণবানাং তর্পণং জপানন্তরমেব তত্ত্তং সন্মোহনতন্তে সপ্তম-পটলে—এবমভার্চ্য দেবেশং জপ্ত্বা মন্ত্রমন্যধীঃ। তর্পয়েদিবিদ্দেবং তোরিঃ প্রাতদ্দিনে দিনে ইতি॥ শেবসোরয়োঃ
শক্তিতুল্যত্বং গাণপত্যস্য তু বৈষ্ণববং, প্রমাণন্ত প্রাগেবোক্তং
তর্পণবাক্যং পুরশ্চরণবোধিয়াং প্রকটীকৃত্য্।

ততো মাল্যানুলেপনপঞ্গপুষ্পাঞ্জলিদানমাহ নিরুত্তরতন্ত্রে দিতীয়পটলে—মূলমুচ্চার্য্য দাতব্যং তর্পণঞ্চ ততঃ পরম্। মাল্যানুলেপনকৈব পঞ্চপুষ্পাঞ্জলিং ততঃ।

তত আবরণপূজা। তহুক্তং মহানির্বাণতন্ত্রে যঠোলাসে—উভমাঙ্গহুদাধারপাদসব্বাঙ্গকেষু চ। পঞ্চপুষ্পাঞ্জলিং
দভ্যা মূলমন্ত্রেণ দেশিকঃ। কতাঞ্জলিপুটো ভূছা প্রার্থবেদিষ্টদেবতাম্। তবাবরণদেবাংশ্চ পূজয়ামি নমঃ পদমিতি॥
এতেন পঞ্চপুষ্পাঞ্জলিদানস্থানাগ্যপি প্রদর্শিতানি॥ তত্র স্বেষ্টদেবতায়াং সূর্যুমরীচিরূপং তস্যা বিনিঃস্ত্য স্থিরীভূতং
পরিবারং চিন্তয়িলা পূজয়েং। তহুক্তং শিবাচ্চ নচন্দ্রিকায়্বতদিদ্ধেশ্বরীতন্ত্রে—অধ্বশ্রমদমর্থস্থ মার্ভগুম্থ মরীচিভিঃ। তত্তদক্তৈনিজৈর্দেবো ধ্যাতব্যশ্চ মরীচিভিরিতি। তদ্কৃতত্র্ণাযাগেহপি—ধ্যাত্বা তত্র রবেরাল্যময়্থনিকরং বহিঃ। বিনিঃ-

স্ত্য স্থিরীস্থৃতং পরিবারং বিচিন্তয়েৎ। অভ্য**চ্চ**্যাবরণন্ত্বাত্যং ষড়ঙ্গং তত্র মন্ত্রবিদিতি। প্রণমেদিতি পরেণান্বয়ঃ।

আবরণদেবতানাং পীঠস্থদেবতানাঞ্চাবাহনমন্তরেণেব পূজা কার্য্যা তাসাং মূলদেবতয়া সহাঙ্গাঙ্গিভাবেন মূলদেবতা-বাহনেনৈব তদাবাহনস্য স্কৃতরাং সিদ্ধজাৎ আসামাবাহনপূর্বক-পূজাপ্রতিপাদকবচনাভাবাচ্চ॥ যদ্যদেবতায়া আবাহনং বাচনিকং তৎ কর্ত্তব্যমেব। যথা বৈদিকতর্পণে পিত্রাবাহনস্থ বাচনিকত্বাত্তৎ কর্ত্তব্যং নহন্যাবাহনস্থ তম্ম তদভাবাদিতি।

তত্রাদৌ বড়ঙ্গানি সংপূজ্য গুরুপঙ্র্কীঃ পূজ্য়েৎ। ততুক্তং তারাভক্তিস্থার্ণবিপ্ততশক্তিজামলে—ততঃ বড়ঙ্গং সংপূজ্য গুরুপঙ্ক্তিং প্রপূজ্যেদিতি। অত্র গুরুপঙ্ক্তিপূজ্নং শাক্তানামেব বৈশ্বাদীনান্ত পীঠপূজাদাবিতি প্রাক্ প্রপ-ঞ্চিতম্।

অথ ষড়ঙ্গপূজা তত্ত্তং রাঘবভট্টেন—বহ্যাদীশান্তমঙ্গানি হৃদাদিকবচান্তিকম্। অচ্চ য়েৎ পুরতো নেত্রমন্ত্রং
দিক্ষু বহিঃ পুনরিতি॥ তথা ক্রমদীপিকায়াং চহুর্থপটলে—
হৃতবহনিশ্ব তিসমারণশিবদিক্ষু হৃদাদিবশ্বপর্যান্তম্। পূর্ববাদিদিক্ষুথান্ত্রং ক্রমেণ গদ্ধাদিভিঃ হ্রমনা ইতি॥ অন্যে ভু আয়েয়েশাননৈশ্ব তবায়ুকোণেম্বিতি ব্যাচক্ষতে। যদাহুগোঁ তমীয়ে
দশমাধ্যায়ে—আয়েয়াং শিবকোণে চ রাক্ষসে বায়ুকোণকে।
মধ্যে দিক্ষু চ পূর্ববাদিষঙ্গষট্কং সমন্ত য়েদিতি॥ তথা শিবাচর্বান্তকাধৃতম্। হৃদয়ঞ্চায়িদিগ্ভাগে ঈশানে ভু শিরো
যজেৎ। শিখাং নৈশ্ব তিদিগ্ভাগে বায়ব্যে কবচং তথা।
অস্ত্রমন্ত্রং তথা দিক্ষু নেত্রমথ্রে প্রপূজয়েদিতি॥ তথা তদ্বৃত-

নারদবচনঞ্চ—হাদ্যঞ্চায়িকোণে চ ঐশান্যান্ত শিরোযজেং।
শিখাঞ্চ পূজ্যেদিফোন্তথা পশ্চিম-দক্ষিণে। পশ্চিমোন্তরদিশ্বধ্যে কবচং বিশুদেদরেঃ। অগ্রতঃ কেশরোদেশে নেত্রং
দিশ্বস্তুরাট্ তথেতি॥ তথা নৃসিংহকল্পে—অথাবরণপূজায়াং
পুরঃ প্রাচীং প্রকল্পয়েং। তদাদিপরিবারাণাং প্রাদ্দিণ্যেন
পূজনমিতি॥ শাক্তানন্দতরঙ্গিণ্যামপি—ইন্ট্রা হাদয়মাগ্রেয়া।
মেশান্যান্ত শিরো যজেং। নৈশ্বত্যান্ত শিথা পূজ্যা বায়ব্যাং
কবচং যজেং। অভ্যর্চ্য পুরতো নেত্রং দিশ্ব শস্ত্রমথাচ্চ য়েং।
প্রধানতনুরূপাণি ষড়ঙ্গানি প্রপূজ্যেদিতি। এতেষামূভ্য়পক্ষম্ভ শাস্ত্রসিদ্ধাণিচ্ছাবিকল্পো বেদিতব্যঃ।

পূর্বাদিদেঙ্নিয়মো যথা শিবাচ্চনিচক্রিকাধৃতভৈরবতল্তে—যত্রৈব ভাষাকুদয়ং প্রয়াতি প্রাচীমিমাং বেদবিদো
বদন্তি। মধ্যে তু সা পূজকপূজ্যয়োশ্চ সদাগমজ্যৈ সততং
বিচিন্ত্যেতি॥ তথা রাঘবভট্টঃ—হোতুঃ পূর্ববং পূর্বভাগং
প্রদিষ্টং সব্যং ভাগং দক্ষিণস্থাগমজ্যৈ। দক্ষং বিভাত্তরং
ভাগমগ্রাং প্রজ্ঞাবন্তিঃ পশ্চিমং ভাগমূক্তমিতি। শাক্তানন্দতরঙ্গিণ্যামপি—ঈশানমগ্রিকোণং স্থাদ্বাম্থ্যকোণং তথৈশকম্।
রাক্ষসং বায়ুকোণং স্থাদক্ষিণং রাক্ষসং ভবেদিতি।

শ্রীবিদ্যায়াং বিশেষো যথা। শ্রামারহস্তথ্যপ্তিওপ্তার্থবিত্তে—পুরন্দরমুখো মন্ত্রী পূজ্যে জ্রিপুরাং পরাম্। দেবী-পশ্চাত্তদা প্রাচী প্রত্তিটী ত্রিপুরাপুর ইতি॥ স্বেইদেবতায়া-স্তত্তদঙ্গে বা ষড়ঙ্গানি পূল্যেৎ। তত্ত্তং গৌতমীয়ে দশ্মা-ধ্যায়ে—তত্ত্বক্র ষড়ঙ্গানি বক্ষ্যমাণেন বা যজেদিতি। তথা একবীরাকল্লে—ষড়ঙ্গমচ্চ য়েদেব্যা দেহে বা কেশরেষু বেতি।

শাক্তানন্দতরাপণ্যাঞ্চ ষড়ঙ্গং পূজয়েত্তত্ত্ব দেব্যা দেহে২থবা পুনঃ। হৃদয়ে হৃদয়াঙ্গন্ত শিরো২ঙ্গং শিরসন্তথা। শিথা-য়ান্ত শিথা প্রোক্তা কবচং সর্বদেহকে। নেত্রে নেত্রত্ত্রয়ং প্রোক্তং দিশামন্ত্রসূদীরয়েৎ। নমঃ স্বাহা ব্যট্ ভ্ঞ্প বৌষট্ ফট্ জাতিসংযুতা। ষড়ঙ্গযুবতী নিত্যং দেব্যা দেহে ব্যব-স্থিতা ইতি। শিরসন্তথেতি স্পাং স্থবি,ত সপ্তম্যর্থে ষষ্ঠী ছন্দোহনুরোধাৎ।

পূজাপ্রকারো যথা রুদ্রজামলে সপ্তমষ্টিতমপটলে—প্রণবং শাং হৃদয়ায় নমশ্চায়ে প্রপূজয়ে । প্রণবঞ্চ শীং শিরুদে স্বাহয়া নৈয় তৈ যজেদিত্যাদি। এতদেব বিশেষামুক্তেঃ॥ অত্র শিরঃপ্রভৃতিমন্ত্রেল্ পূজায়াং নমোহন্ততা জ্ঞেয়া হোমে তু হৃদয়াদীনাং স্বাহান্ততা আঞ্চিন্তিয়য়োস্তজ্জাতিয়ুক্তয়াদেব ন তৎপ্রয়োগঃ। অধিকরণসিদ্ধশ্চায়য়র্যঃ।
তথাই মত্রে স্ববাকয়শেষয়ং গুণোপদেশাৎ স্থাদিত্যত্রাধিকরণে স্বাহাকারেণ: বনট্কারেণ বা দেবেভ্যো হবির্দ্দিদাতীতি
সামান্তেন বিহিত্তয়া স্বাহাকারান্তয়া পৃথিবৈর স্বাহা
অন্তরীক্ষায় স্বাহা ইত্যাদির্ মত্রেয়ু ন পুনস্তম্থাবাপঃ। সামিধেনীসপ্তদশবত্বপদংহারাভাবান্ধান্তমন্ত্রয়্ বাধশ্চেতি স্থিতমিতি
রাঘবভটঃ।

তত্ত্ব পূজাপ্রকারঃ। ওঁ শাং হৃদরায় নমঃ ওঁ শীং শিরসে স্বাহা ওঁ শৃং শিথায়ৈ ব্যট্ নম ইত্যাদিঃ। হোমপ্রকারস্ত ওঁ শাং হৃদরায় নমঃ স্বাহা শীং শিরসে স্বাহা ওঁ শৃং শিথায়ৈ ব্যট্ স্বাহেত্যাদিঃ। তত্ত্তং রাব্বভট্টগৃতগণেশ্বর-বিম্বিণ্যাং—জুভ্য়াদঙ্গমন্ত্রাক্তেস্তারাত্যেশ্চ সকুৎ সকুৎ। তত্তৎ- স্থানেষ্ শিতধীঃ স্বাহাত্তৈশ্চ যথাক্রমমিতি ॥ তদ্ধৃতপ্রযোগনারেহপি—সর্কে মন্ত্রাঃ প্রয়োক্তব্যাঃ স্বাহান্তা হোমকর্মস্বিতি। এতদেব স্পন্টমাহ শিবাচ্চনিচক্রিকাপ্পতমহাকপিলপঞ্জাত্রে—শিরঃপ্রভৃতিমন্ত্রেষু পূজায়ান্ত নমোহন্ততা। শিরোভিমেষু মন্ত্রেষু হোমে স্বাহান্ততা ভবেদিতি।

ওরুপঙ্ ক্রিপূজা যথা রান্বভট্টঃ—নায়ব্যাদীশপর্যন্তং গুরুপঙ্ ক্রিং সমচ্চ মেদিতি। তথা তারাভক্তিস্থধার্ণবিপ্নত-কুলচ্ড়ামণো—বেষু বেসু চ মস্ত্রেষু যে যে ঋষিগণাঃ স্মৃতাঃ। তে তে পূজ্যাঃ সপর্যাদে সংক্ষেপাদ্ গদিতং ময়া। অজ্ঞাজা গুরুনালাং বৈ গুরুত্রিত্রমান্চ মেং। চতুক্টয়ং বা সঙ্কোচোনচ কার্যন্ততঃ পরম্। গুরুন্ পরমগুরংশ্চ পরাপর-গুরুত্রখা। পরমেষ্টিগুরুং শৈচব কথিতা গুরুবন্তথেতি। গুরুনামানিতি দিব্যোঘ-সিদ্ধোঘ-মানবোঘানামিত্যর্থঃ। এতে সম্বন্ধানিতি দিব্যোঘ-সিদ্ধোঘ-মানবোঘানামিত্যর্থঃ। এতে সম্বন্ধানিতি দিব্যোঘ-সিদ্ধোঘ-মানবোঘানামিত্যর্থঃ। এতে সম্বন্ধানিতি দিব্যোঘ-সিদ্ধোঘ-মানবোঘানামিত্যর্থঃ। এতে সম্বন্ধানিতা দিব্যোঘ-সিদ্ধানিতা প্রমাণমাহ বীরতন্ত্রে প্রথম-প্রত্তেশ্বিত দিবেশ সম্বদঃ পরমো গুরুঃ। পরাপর-গুরুত্বং হি পরমেষ্টিফ্ হিং গুরুরিতি।

ততঃ স্বস্বকল্পোক্তবিশোলবরণদেবতাঃ সংপূজ্য ইন্দ্রাদি-লোকপালান্ পূজ্য়েৎ। ততুক্তং নিবন্ধে ত্রয়োদশপটলে— পশ্চাদভার্চনীয়াঃ স্থাঃ কল্পোভারতয়ঃ ক্রমাৎ। অন্তে যজে-লোকপালামূলপারিন্দান্বিতানিতি। তথা শিবার্চনচন্দ্রিকা-গ্লুতর্থাবাণে—ইখ্যাবরণং ভক্ত্যা অভ্যর্চ্য মনুবিভ্নঃ অন্তে যজেলোকপালাংস্থোমস্ত্রাণি চ ক্রমাৎ॥ ইন্দ্রং স্থ্যাধিপং গাঁতং বজ্ঞহস্তং গজাধিপম্। অগ্লিং তেজোহ্ধিপং রক্তং শক্তি-হতঃ স্থভূণম্। য্যা প্রতাধিপং কৃষণং দণ্ডহস্তং সমর্চ- য়েৎ। রক্ষোহধিপঞ্চ নৈশ্ব ত্যাং থড় গহস্তং স্থ্যকম্। পাশহস্তং স্থা আঙ্গং বরুণং যাদসাম্পতিম্। বায়ুং প্রাণাধিপং
ধূমমঙ্কুশাঢ্যকরং যজেৎ। যক্ষপতিং কুবেরঞ্চ শুকুবর্ণং
গদাধরম্। বিদ্যাধরং তথেশানং মন্ত্রী শূলকরং যজেৎ।
নাপাধিপং তথানন্তং গোরং চক্রায়ুধং যজেৎ। লোকাধিপঞ্চ ব্রহ্মাণং রক্তপদ্মকরং যজেদিতি।

অত্র হরিহব্যবাট্তরণিজ-ক্ষপাটাপ্পতি-বায়্-সোমশিব-শেষ-পদ্মজান্। প্রযজেৎ স্বদিক্ষ্মলধীঃ স্বজাত্যধীশ্বরহেতি-পত্রপরিবারসংযুতানিতি ক্রমদীপিকাচভূর্থপটলবচনীয়-সোম-শব্দদর্শনাত্তরস্থাং দিশি চক্রস্থৈব পূজনমিতি কেচিম্বদন্তি কর্ম। সোমস্তহিনদাধিতো বানরে চ কুবেরে চেত্যাদি মেদিক্যক্ত্যা সোমশব্দস্থাপি কুবেরবাচকত্বাৎ। অতএব শরদিক্সমাভাসং ক্রপয়া শশলাস্ক্রম্। সোমং সোমদিশো-হর্দীশং নরারূত্থ সমর্চয়েদিতি গৌতমায়দশমাধ্যায়বচনস্থনরারূত্পদম্পি স্থাসন্তমেব। এবঞ্চ দিক্পালপূজায়াং যত্র যত্র চক্রবাচকশব্দা দৃশ্যতে তক্ষৈব কুবেরার্থন্থং পরিগৃষ্থ কুবেরায় নম ইতি প্রয়োক্রব্যম্।

বস্তুতস্তু কুত্রচিদ্ যক্ষাধিপতিত্বং কুত্রচিত্রারকাপতিত্বমিত্যুভয়োবিশেষণত্বেনোপশুস্তত্বাৎ কুবেরচন্দ্রমসোঃ পূজনস্পেচ্ছাবিকল্পো মন্তব্যঃ। তদ্যথা শিবাচ্চনচন্দ্রিকাপ্পতভূর্ণাযাগে—
ফক্ষপতিং কুবেরঞ্চ শুক্লবর্ণং গদাধরমিতি। তথা মন্ত্রমহোদধৌ দ্বাবিংশতরঙ্গে—স্থরতেজঃ প্রেত্রক্ষঃ সলিলপ্রাণভারকাঃ। ভূতা হি লোকা বিজ্ঞেরা অংশপা লোকজাত্য়ইতি। প্রাক্প্রত্যগ্যমশশিনাং দিগাদিশ্রিতা মূর্ত্রয় ইতি

প্রাপঞ্চনারপঞ্চবিংশপটলবচনাচ্চন্দ্রমসোহপুতেরদিশোহধিপতিত্বং ব্যক্তম্। এবঞ্চ যদা কুবেরস্থা পূজনং তদা যক্ষাধিপতিত্বং চন্দ্রমসম্ভ তারাধিপতিত্বমিতি বিশেষঃ।

ক্রমদাপিকাবচনার্থস্ত হরিরিন্দ্রঃ, হব্যং বহতীতি হব্য-বাড়গ্লিঃ, তরণিঃ সূর্য্যস্তমাজ্জাতো যমঃ, ক্ষপায়ামটতীতি ক্ষপাটো রাক্ষদঃ নৈঋতঃ, অপ্পতির্বারুণঃ, সোমশ্চন্দ্রঃ শিবঃ ঈশানঃ, শেষোহনন্তঃ, পদ্মজো ব্রহ্মা, এতান্ প্রযজেৎ। স্বদিন্দিতি, অত্র প্রদিদ্ধা এব পূর্ববাদয়ো গ্রাহ্বাঃ, দিক্-পালারুক্ত্রা স্থকুস্থমৈর্যজেদ্গন্ধিঃ ধূপেঃ স্বদিশি লসদাকল্ল-মপি চেতি ত্রিপুরাসারসমুচ্চয়াস্টমপটলবচনাৎ। ই<u>ব্</u>দাদীং*চ স্বদিন্থিতি রাঘবভট্গুতনারায়ণীয়াং। ইব্রাদিকান্ লোক-পালান্ স্বস্বদিকু সমচ্চ য়েদিতি শারদাতিলকবচনাচ্চ। নতু হোতুঃ পূর্ববং পূর্বভাগং প্রদিঊমিত্যাদি কল্পিতদিক্। এতদেব স্পষ্টমুক্তং মন্ত্রমহোদধে প্রথমতরঙ্গে—দেবতাপূজনে প্রাচী মধ্যে পূজকপূজ্যয়োঃ। ইন্দ্রাদয়ঃ স্বদিক্ষেব পূজনীয়া দিগীশ্বরা ইতি। অত্র নৈখাতিবরুণয়োর্মধ্যে ২নস্ত, মিন্দুেশা-নয়োর্মধ্যে ব্রহ্মাণ্যিতি। তছুক্তং তম্প্রৈব দাবিংশতরঙ্গে— যাতুতোয়পয়োমধ্যেহনন্তং পূর্বেশয়োম্ভ কমিতি, কং ব্রহ্মাণম্। যত্ত্ব, ঈশানে তত্র ব্রহ্মাণং নৈঋ্তে সর্পরাজকমিতি বিশ্বসার-তন্ত্রদ্বিতীয়পটলবচনং তৎ সামীপ্যনক্ষণয়া জ্ঞেয়ম্।

কীদৃশানেতান্, স্বজাতিঃ স্থরাদিঃ, অধীশ্বরোহধিপতিঃ, হেতিরস্ত্রং, পত্রং বাহনং, পরিবারো গণঃ, এতৈঃ সংযুতানিতি। কিঞ্চ ব্রহ্মাণং পূজয়িত্বানন্তংপূজ্যেদিত্যস্মদ্দেশীয়াঃ কেটি-ন্নিবন্ধকারা বদন্তি তন্ন সর্গাচীনঃ পন্থাঃ, আনুপূর্ব্যোদ্ধৃতং বীজং ব্রহ্মান্তং বাসবাদিমমিতি। রাঘবভট্টপ্রতমহাকপিলপঞ্চরাত্রবচনাৎ। ইন্দ্রাগ্রিযমনিশাচরবরুণানিল-শশি-কোগ্রাহিশ্পতি-বিধরঃ। জাত্যধিপ-হেতি-পরিবারান্তাঃ ক্রমেণ যইব্যাইতি প্রপঞ্চসারবষ্ঠপটলবচনে শাব্দক্রমদর্শনাৎ। অত্র ক্লচিদ্রহ্মাণং পূজ্যিত্বানন্তঃ পূজ্যেদিতি ক্রমঃ স পৌরাণিশ্বিতি ক্রেয়ঃ, ন তান্ত্রিকঃ মহাকপিলপঞ্চরাত্রহয়শীর্ষপঞ্চরাত্র-প্রপঞ্চসারাদিবহুতন্ত্রবিলাধাৎ তথাচাচার্যঃ অনন্তরহ্মপর্যান্তঃ পঞ্চমীন্দ্রাদিবিহুতন্ত্রবিলাধাৎ তথাচাচার্যঃ অনন্তরহ্মপর্যান্তঃ পঞ্চমীন্দ্রাদিভির্মতা। চক্রপদ্যান্তিকৈঃ ষষ্ঠীং বজ্রাক্রৈতি মহামহোপাধ্যাররাঘ্রভট্টিনি শ্বর্বাচ্চ।

যতু ব্রহ্মাণমূর্দ্ধেংনন্ত • অবং সত্যং প্রাণ্ডরেনিতি শ্যামাচর্চনচন্দ্রিকাকারধ্তবচনং তত্তত্ত পাঠক্র বিধায়করেনাবিরোধঃ।
বদপি ব্রহ্মাণজৈব বিষ্ণুঞ্গ উদ্ধাধঃক্রমতো বজেদিতি জ্ঞানাপ্রনিত্যাতল্পচতুর্থপটলবচনং তদুদ্ধাধঃক্রমমাত্রবিধায়কং নতু
পূজাক্রমপ্রতিপাদকম্। যক্ত ব্রহ্মাণং রক্তবর্ণঞ্গ স্করবর্গং
ততঃ পরম্। অনন্তঞ্জিন্তরেদ্ধামান্ বহ্নেন্চেব চতুদ্দিশীতি
বিশ্বসারতল্পদিতীয়পটলবচনে ব্রহ্মাচিন্তনানন্তরানন্তচিন্তনমূক্তং
তত্ত্র বক্তেশ্চেব চতুদ্দিশীত্যুপাদানাৎ হোমাঙ্গকর্মবিশেষপরম্।

অথ দিক্পালমন্ত্রাঃ। রাঘবভট্গগতমহাকপিলপঞ্রাত্রে—
যাত্মলামতৃতীয়ন্ত্র দিতীয়ন্ত্রবিলোমতঃ। চতুর্থং ফান্মলোমেন রান্মলোমেন চাই্টমন্। তৃতীয়ং রান্মলোমেন লবিলোমাৎ তৃতীয়কম্। চতুর্থং সপ্তমং বর্ণং রান্মলোমেন সংস্থিতম্। চতুর্থং থান্মলোমেন তৃতীয়ং গবিলোমতঃ। স্বরোপান্ত্যস্থনাদাত্যাং ভেদিতং সর্বমেব তৎ। আনুপূর্ক্র্যাদ্ধতৃং

বীজং ব্রহ্মান্তং বাসবাদিমমিতি। অস্থার্থঃ যকারমারত্যাকু-লোমপাঠে তৃতীয়বর্ণো লকারঃ এবং দ্বিতীয়ো রেফঃ। ফকারস্থ চতুর্থো মকারঃ রেফস্থাস্টমঃ ক্ষকারঃ, রেফস্থ তৃতীয়ো বকার ইতি। লবিলোমাৎ তৃতীয়কমিতি লকারাবধি-বিলোমপাঠাৎ তৃতীয়বর্ণো যকারঃ, রেফস্থান্থলোমক্রমেণ চতুর্থবর্ণঃ শকারঃ, সপ্তমো হকারঃ, থকারস্থান্থলোমপাঠাৎ চতুর্থবর্ণো নকারঃ, গকারস্থ বিলোমপাঠেন তৃতীয়ঃ ককারঃ। স্বরোপান্ড্যস্থেত্যাদি স্বরাণামুপান্ড্যস্থো বিন্দুঃ সচ শাদশ্চ তাভ্যাং ভেদিতং যুক্তমিতি। তেন লঁ রঁ মঁ ফে বঁ যঁ শঁ হু নঁ কঁ ইতি।

প্রকারান্তরেণ মন্ত্রানাহ রহতন্ত্রসারপ্পতমন্ত্রদর্পণে—পৃথ্যগ্রিপবনালন্তবরুণানিলশেষরৈঃ। অনন্তবিন্দুসংযুক্তরের্চ্যাঃ
পাশেন মায়য়েতি। পৃথ্যী লকারঃ, অগ্নিঃ রেফঃ, পবনোযকারস্তম্লাদির্মকারঃ, অন্তঃ ক্ষকারঃ, বরুণো বকারঃ, অনিলো
যকারঃ, শস্বরূপ ঈশ্বরো হকারঃ, অনস্ত একজো বক্ত্রো দীর্ঘচহায়াভিধানক ইতি বর্ণ ভৈরবকোষাদনন্ত আকারঃ বিন্দুরস্থস্বারস্তাভ্যাং যুক্তর্লকারাদিহকারান্তবর্ণেরির্চ্যাঃ পূজ্যাঃ
পাশেন আং ইতি বীজেন, মায়য়া ব্রাঁকারেণেত্যর্থঃ। তেন
লাং রাং মাং ক্ষাং বাং যাং শাং হাং আং ব্রাঁইতি। সর্বত্র
দিক্পালমন্ত্রেম্বয়ঃ বিশেষঃ। তথাচ তন্ত্রসারে—ইন্দ্রাদিলোকপালানাং যে মন্ত্রান্তে প্রকাদিকাঃ। স্বস্ববীজান্বিতাঃ
সর্ব্বে সচত্র্থী নমোহন্তিকা ইতি। যস্ত মন্তকাদিজলরাশিগং
সকং মন্তকাদনলগং বকান্তযুক্। দৃক্ষ্যপূর্ব্বস্থপূর্ব্বসংযুতং
লোকপালমনুরেষ ঈরিত ইতি ত্রিপুরাসারসমুচ্যান্টমপটল-

বচনেন ঞাং ক্ষামিতি লোকপালমন্ত্র উদ্কৃতঃ, সতু ত্রিপুরা-পূজায়াং জ্ঞাতব্যঃ। এবমন্তাসাং দেবতানামপি বিশেষাহন্ত্র-সন্ধেয়ঃ। এতদ্বচনার্থস্ত মস্তকং বিন্দুঃ তদাদি জলরাশিগং বিলোমেন চতুর্থমক্ষরম্ ঐকারঃ, সকং কেন মস্তকেন সহ বর্ত্তমানং সবিন্দুকমিত্যর্থঃ। মস্তকাদিত্যাদি মস্তকং বিন্দু-স্থাদনলগং তৃতীয়ে। বর্ণঃ ককারঃ বকস্তালব্যশকারস্তম্ভান্তো মূর্দ্বন্তকারস্তদ্যুক্ত স্তেন ক্ষ ইতি। সূক্ষম ইকারস্তৎ-পূর্ব্ব আকারঃ, মুখং বিসর্জ্জনীয়স্তৎপূর্ব্বোহনুস্থারস্তাভ্যাং সংযুতং তেন সমুদায়েন ঐং ক্ষামিতি সর্ব্বোং লোকপালানাং মস্ত্রঃ।

পূজাপ্রকারমাহ রাঘবভট্টপুতবৈহায়দীমন্ত্রকোয়ে—লোকে-খরান্ পার্থিবমণ্ডলে সশস্ত্রান্ সশস্ত্রান্ সহবাহনা শ্চ। সপার্ষদাংশ্চন্দনপুষ্পধূপৈ র্যক্রেৎ স মন্ত্রা নিজক জিতায়েতি। তথা শারদায়াঞ্চর্থপটলে—অন্তে যজেল্লোকপালাম্মূলপারি-বদান্বিতান্। হেতিজাত্যধিপোপেতান্ দিক্ষু পূর্ব্বাদিতঃ ক্রমাদিতি। এতদেব স্পন্তয়তি মন্ত্রমহোদধৌ দ্বাবিংশতরঙ্গে—স্বদিক্ষু প্রযজেদ্দিক্পান্ জাতিহেত্যাদিসংযুতান্। তারাদিনিজবীজাত্যাংস্তৎপ্রয়োগোহধুনোচ্যতে। তারং বীজন্মথেক্রায়ামুকার্বিপতয়ে ততঃ। ঙেইন্তং সায়ুধমুচ্চার্য্য ততঃ সবাহনায় চ। সপরিবারায় সশক্তিকায়ামুকস্থ তৎপরম্। পার্ষদায় নমোহন্তোহয়ং দিক্পালানাং মন্তঃ স্মৃতঃ। ইক্রা-মেতি পদস্থানে বহ্যাদিপদমুচ্চয়েও। আতামুকপদস্থানে ক্রমাজ্ঞাতীর্বদেৎ স্থধীরিতি॥ যদা শক্ত্যাবরণে ইন্দ্রাদিশ্জা তদা প্রত্যকং শক্তিপারিষদায়েতি। এবং শিবপূজায়াং

শিবপারিষদায়েতি। গণেশপূজায়াং গণেশপারিষদায়েতি। সূর্য্যপূজায়াং সূর্য্যপারিষদায়েতি। বিষ্ণুপূজায়াং প্রত্যেকং বিষ্ণুপারিষদায়েতি জ্ঞেয়ম্।

প্রয়োগস্ত ওঁলাং ইন্দ্রায় স্থরাধিপতয়ে সায়ুধায় সবাহনায়
সপরিবারায় সশক্তিকায়ামুকদেবতাপারিষদায় নম ইতি।
এবং ওঁ রাং অগ্নয়ে তেজােহধিপতয়ে ইত্যাদিঃ। রাঘবভট্রয়তপ্রয়োগােহপ্যবম্॥ যলপাব্রায়ৢধসহিতলােকপালপূজয়ায়ৢধপূজা সিধ্যতি তথাপি তত ইন্দ্রাদিকাষ্ঠাস্থ পূজ্যা দিক্পালহেতয় ইতি মন্ত্রমহােদধিপ্রথমতরঙ্গবচনাৎ অন্তে যজেলােকপালাংক্রেষামস্ত্রাণি চ ক্রমাদিতি পূর্বেবাক্তশিবার্চনচন্দ্রিকায়্বত্তর্ণাযাগবচনাচ্চ পুনস্তেষামস্ত্রাণাং পৃথক্ পূজা কর্ত্ব্যা।

তত্র প্রকারঃ ওঁ বজ্ঞায় নম ইত্যাদিঃ ॥ রাঘবভট্টস্ত অর্চ্যাবহিনিজস্থলক্ষিতমোলিযুক্তাঃ স্বস্ধায়ুধাভয়সমূক্ততপাণিপদ্মাইতি বচনাৎ ওঁ বং বজ্ঞায় বজ্ঞলাঞ্ছিতমোলয়ে সায়ুধায় সবাহনায় সপরিবারায় সশক্তিকায়ামুকদেবতাপারিষদায় নম ইতি
প্রয়োগং বদতি । তদ্বচনন্ত ক্রমদীপিকায়াঞ্চতুর্থপটলে—
দন্তোলি-শক্তাভিধদণ্ড-কুপাণপাশচণ্ডাঙ্কুশাহ্বয় — গদাত্রিশিখারিপদ্মাঃ । অর্চ্যা বহিনিজস্থলক্ষিতমোলিযুক্তাঃ স্বস্ধায়ুধাভয়স্থলক্ষিতপাণিপদ্মা ইতি । সপ্তাবরণমাহ দন্তোলীতি দন্তোলির্বজ্ঞং, শক্ত্যভিধং শক্তিনামকম্ অস্ত্রং দণ্ডঃ, কুপাণঃ থড়গঃ, পাশঃ
চণ্ডাঙ্কুশাখ্যঃ, গদা ত্রিশিখা ত্রিশূলম্, অরিশ্চক্রং, পদ্মঞ্চ এতানি
বহিঃ বাসবাদিতো বহিঃ পূজ্যানি । দন্তোলিপ্রভৃত্যঃ কীদৃশাঃ
নিজস্থলক্ষিতমোলিযুক্তাঃ, বজ্ঞাদীনাং নিজমুকুটানি । পুনঃ
কীদৃশাঃ স্বীয়েঃ স্বীয়েরায়ুধেরস্ত্রেরভ্রেন চ স্থলক্ষিতং হস্তপদ্মং

যেষাং তে তথা ইতি তট্টীকাকারব্যাখ্যানম্। কিন্তু ক্রমদীপিকাবচনতাৎপর্য্যং তত্তদায়ুধানাং তত্তদিশেষণতারূপেণ চিন্তননাত্রং নতু তত্তদিশেষণশব্দসহক্তপূজাবাক্যং কল্পনীয়ং দিক্পালপূজাব দেষাং তত্তিশেষণসমভিব্যাহৃতপূজাবিধেরদর্শনাৎ। তথাত্বে মহাকালপূজায়াং, মহাকালং যজেদেব্যা দক্ষিণে ধ্রবর্ণকম্। বিভ্রতং দণ্ডখট্টাঙ্গং দংষ্ট্রাভীমমুখং শিশুম্। ব্যাঘ্রচর্মার্তকটিং তুন্দিলং রক্তবাসসম্। ত্রিনেত্রমূর্দ্ধকেশঞ্চ মুগুমালাবিভূষিতম্। জটাভারলসচ্চন্দ্রখণ্ডমূগ্রং জ্বান্ধভিমিতি ধ্যানাকুরূপবিশেষণ সমবহিতপূজাপ্রয়োগো যুজ্যতে।

অথ নীরাজনকালনিয়মঃ। শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাধৃত-কাত্যায়নীতন্ত্রে—ইথমারাত্রিকং কৃত্বা প্রণম্য পরদেবতাম্। পৌরাণিকৈর্কিদিকৈর্কা মূলমন্ত্রেণ বা ততঃ। প্রাণায়ামত্রয়ং
কৃত্বা মূলমন্ত্রেণ সাধকঃ। স্থাসং কৃত্বা যথাপূর্ব্বং ধ্যাত্বা
দেবীং মূখাত্মুজে। মূলমন্ত্রং যথাশক্তি জপেত্তদ্গতমানস
ইতি॥ তথা কুমারীতন্ত্রে তৃতীয়পটলে—লোকপালাংস্ততোবাহে তদন্ত্রাণি চ তদ্বহিঃ। ততো নীরাজনং কুর্ব্যাদ্দশবারস্ত দীপকৈঃ। অক্টোত্রসহন্ত্রেণ জপং কুর্য্যাৎ সমাহিত ইতি॥

বৈঞ্চবাস্ত তামূলদানাৎ পরমারাত্রিকমিচ্ছন্তি। তথাচ ভগবদ্ধক্তিবিলাসধৃতপঞ্রাত্রে—পুনরাচমনং দদ্যাৎ করো-ঘর্ত্তনমেব চ। সকপূর্বঞ্চ তাম্বূলং কুধ্যান্নীরাজনং তথেতি।

নীরাজনপ্রকারো যথা শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাধৃতজ্ঞানার্ণবে— আরাত্রিকং ততঃ কুর্য্যাৎ সর্বকামার্থসিদ্ধয়ে। সৌবর্ণে রাজতে কাংস্থ্যে স্থালকে প্রমেশ্বরি কুষ্কুমেন লিখেৎ

পদ্মং বস্থপত্রং বরাননে। দীপমেকং কর্ণিকায়াং বস্থপত্তে-২% দীপকান্। যবগোধুমমুদ্গাদিরচিতান্ কর্করাযুতান্। বলয়াঞ্চিতশোভাভিঃ শোভিতান্ ঘৃতপূরিতান্। অভিমন্ত্র্য ততো মন্ত্রী রক্ত্রেথর্যাস্ততঃ পরম্। মূলমন্ত্রেণ চাভাচ্য ততশ্চারাত্রিকঞ্রেং। তৎপাত্রস্ত সমুদ্দৃত্য মস্তকান্তং পুনঃ নববারং মহাদেব্যা**স্ততো** নীরাজনং আরাত্রিকে মহাদেব্যাশ্চক্রমুদ্রাং প্রদর্শয়েৎ।। শ্রীবীজঞ্চ পরাবীজং সংলিখেমন্ত্রবিত্তমঃ। গর্সে চ মপলাঃ পশ্চাদি-ন্দ্রখঃ ক্রমতঃ প্রিয়ে। বামকর্ণসমাযুক্তা বিন্দুনাদ্বিভূষিতাঃ। বীজপঞ্চমতদ্ধি পঞ্রত্নমূদীরিতম্। পূর্ববীজবিলোমেন বাণেশীয়ং নবাক্ষরীতি। অস্থার্থঃ পরাবীজং হ্রী গদো চ মপলাঃ গকার-সকার-মকার-পকার-লকারাঃ, চকারঃ পাদপূরণে এতে গদমপলা ইন্দ্রস্থাঃ লকারোপরি স্থিতাঃ। বামকর্ণে-ত্যাদিনা উকারবিন্দুনাদযুক্তাঃ পঞ্রত্মবীজানি ভবন্তি তানি ডু গ্লুঁ সুঁ সুঁ লুঁ ইতি। পূৰ্ববীজবিলোমেন মায়াপ্ৰীক্রমেণ। নত্রো বথা আই হাঁ গ্লু সুঁ লুঁ হাঁ শ্ৰাঁ ইতি মত্তেণা-ভিমন্ত্র্য মূলমন্ত্রেণাভ্যর্চ্য ওঁ সমস্তচক্রচক্রেশি শুভে দেবি নবাগ্নিকে। আরাত্রিকমিদং দেবি গৃহাণ মম সিদ্ধয়ে ইতি মন্ত্রং পঠন্ পাদাদিমন্তকান্তং, মন্তকাদিপাদান্তং, নবধা কুমারীতন্ত্র-বচনাৎ দশধা বা নীরাজয়েৎ। ততশ্চক্রমুদ্রাং দর্শয়েৎ।

প্রকারান্তরং যথা। পঞ্চনীরাজনং কুর্য্যাৎ প্রথমং দীপ-মালয়া। দ্বিতীয়ং সোদকাব্জেন তৃতীয়ং ধৌতবাসসা। চৃতা-শ্বথাদিপত্রেণ চতুর্থং পরিকীত্তিতম্।পঞ্চমং প্রণিপাতেন সাফী-ক্ষেন যথাবিধি॥ আদৌ চতুম্পাদতলে চ পশ্চাদ্ধিনাভিদেশে মুখমগুলে ত্রীন্। সর্বাঙ্গদেশেষু চ সপ্তবারানারাত্রিকং তন্মুনয়ো বদন্তীতি॥ ইহআরাত্রো বিষমা বর্ত্তিসংখ্যা গ্রাহ্যা। যদাহভট্টপাদাঃ—আরাত্রিকঞ্চ বিষমবহুবর্ত্তিসমন্থিভমিতি। ভদ্ধৃতবহ্ব্চপরিশিষ্টে—নীরাজনেষু সর্বেষু দেবনামাদি কীর্ত্তয়ন্।
জয়ঘোষং প্রকৃবর্বীত কারুণ্যঞ্চাপি কীর্ত্তয়েং। তথা
মঙ্গলঘোষঞ্চ জগদীজস্ম চ স্ততিমিতি। জগদীজস্যেষ্টদেবস্মেত্যর্থঃ।

ইতি সতত্যহামহীশচক্র ভাষণিচর্চিত্ররণনলিন শ্রীমদ্গোপী-মোহনপাদপদ্মামন্দমকরন্দসন্দোহানন্দিত্যনোমধ্কর-শ্রীহরকুমার দেবশর্ম-সীয়চিস্তামণিমন্ত্রচিস্তোদক-হরত্ত্বদীধিতাবেকাদশকলাপ্রকাশঃ।

অথ নিত্যহোমং, তন্ত্রপ্রমোদে পঞ্চমপটলে—অর্চ্ডামাচর্য্য পূর্বং বলিবিহিতবিধেরর্ঘ্যশিষ্টোদকেন প্রোক্ষ্য স্থানং ত্রিরেখাং প্রথমনিগদিতাস্তত্র ক্বত্বা ত্যজেয়ঃ। ক্রব্যাদেভ্যো বিস্তাতি চ বিহিতবদোর্ভাগমেষাং তদন্তে কণ্ডে বা স্থভিলে বা শুভধরণিতলে স্থাপয়েয়্লুলতোহয়িম্॥ ত্ত্বা ব্যাহ্রতিভিঃ ষড়ঙ্গমন্থভিশ্চাবাহ্য দেবং স্বকং মূলেনান্ত্বরেণ যোড়শমিতং হুত্বা প্রকৃত্য স্তবম্। নত্যন্তে বিধুমগুলে মতিমতামুদাসয়েয়ুর্বরাঃ শ্যামাদে তু বিশেষমত্র কথয়েং-সানাং হুতানস্তরে ॥ প্রক্রিপাটফ্র ভৈরবেষু সম্বতৈর্নায়া তিলৈরাহুতীঃ প্রাগাশাদিতএব মূলহবনং ত্বাপাদয়েয়ুস্তরা।

শ্রীবিফাবিষয়ে পুনর্শ্নমুখপ্রাণাদিপঞ্চাহতীর্দ্দন্ত্যন্মন্ত্রবিদঃ বড়ঙ্গহবনং নৈবেছদানাদনু ইতি ॥ বড়হোমে বিশেষস্ক তৎপূজাপ্রকরণে দর্শিতঃ। তথা শিবাচ্চনচন্দ্রিকাগ্বতবশিষ্ঠঃ। অগ্নাধানাদিকং কর্মা নিত্যহোমে ন বিছ্যতইতি।

পুংদেবতাবিষয়ে তু শিবাচ্চ নচন্দ্রিকাগ্বত-সারসংগ্রহে—
ইথস্ত সংস্কৃতে বক্ষো দেবমাবাহ্য মন্ত্রবিং। সংপূজ্য
মূলমনুনা পঞ্চবিংশতিমাহতীঃ। হুতেনাজ্যেন হবিষা
তিলৈব্বা পায়সৈঃ শুভৈঃ। তণুলৈশ্বিশ্রিতির্ব্বাপি কেবলৈব্বাথ পুষ্পকৈঃ। অঙ্গাবরণদেবানামেকৈকামাহতিং হুনেং।
উদ্বাস্থ্য দেবং বহুনন্ত পূজাস্থানং ব্রজ্ঞেত ইতি। অশ্বিরেধ
সময়ে ভূতবলিং দ্যাং।

তত্রাপি শ্রীক্বফে বিশেষো যথা গোতনীয়ে একাদশা-ধ্যায়ে—কুণ্ডে বা স্থণ্ডিলে মন্ত্রী স্থলে বা শোধিতে তথা। একহস্তমিতে দেশে কুশপুষ্পাস্থুদেবিতে। বহিং তত্র সমাধায় জাতবেদমনুং জপেং। ব্যাহ্যতিভিস্ততো হুছা কুফামাবাহ্য ভক্তিতঃ। গন্ধাদিভিঃ সমভ্যর্চ্য মূলেন পঞ্চ-বিংশতিম্। আহ্তীজুহ্যামন্ত্রী ষড়ঙ্গং হোমমাচরেং। লয়াঙ্গঞ্চ ততো হুছা নমস্কৃত্য চ মন্ত্রবিং। বিস্তজেদিলুগে ধান্ধি নিত্যহোমোহয়মীরিত ইতি।

জাতবেদমন্ত্রস্ত সর্বত্র হোমে বিশেষস্বেষঃ। হেতি সম্পাতয়েদ্রাগে ইত্যাদিবচনাৎ স্বাহান্তহোমং বিধায় স্বাহা ইত্যস্থান্তে যম্মাদ্রাগাদাজ্যাহুতিগৃহীতা তম্মিন্নেব ভাগে তস্ম সম্পাতং কুর্য্যাদিতি কেচিদ্বদন্তি সাম্প্রদায়িকাস্থিমমেব প্রকারমিন্দ্রন্তি। তহুক্তং রাঘবভট্টগুতশৈবাগমে—শ্রুবে ণাদায় হোময়েং। স্বেত্যগ্নো হেতি তদ্ভাগে শেষমাজ্যং ক্ষিপেং ক্রমাদিতি।

তত্র সমিদ্ধেংগ্নো হোতব্যন্। তদাহ রাঘবভট্টগ্রচ্ছন্দোগ-পরিশিষ্টে—বোহনর্কিষি জুহোত্যগ্নো ব্যঙ্গারিণি চ মানবঃ। মন্দাগ্নিরাময়াবী চ দরিদ্রন্দোপজায়তে। তঙ্গাং সমিদ্ধে হোতব্যং নাসমিদ্ধে কথঞ্চন। আরোগ্যমিচ্ছতা যশ্চ শ্রিয়-মাত্যন্তিকীং তথেতি।

অথ জ্বপঃ। তত্রাদৌ তম্মেতিকর্ত্তব্যতামাহ পিচ্ছিলা-তন্ত্রে একবিংশপটলে—প্রাণায়ামত্রয়ং কুছা ঋষ্যাদি-গ্যাসমাচরেং। ষড়ঙ্গগ্যাসমাচর্য্য কুল্লুকাং প্রজপেভতঃ। মহাসেতুঞ্চ সেতুঞ্চ জপ্তা মূলং জপেত্ততঃ। পুনঃ সেতুং মহাসেতুং জপ্তা সমর্পয়েজ্জপম্॥ প্রাণায়ামত্রয়ং কৃষা প্রণমেং পরমেশ্বরীম্। অস্ট্রাঙ্গাদিবিধানেন ভূশীর্বযোগতো-২্থবেতি॥ মহাসেতুঞ্চ সেতুঞ্চেতি চকারদয়োদাহরণাৎ মুখশোধনসূতকদয়ভঙ্গে প্রাহো তদকরণে দোষশ্রবণাৎ। তন্তুক্তং সরস্বতীতন্ত্রে পঞ্চমপটলে—অপরৈকং প্রবক্ষ্যামি মুখশোধনমুত্তমম্। যন্ন কৃষা বরারোহে জপপূজা রথা ভবেৎ। অশুদ্ধজিহ্বয়া দেবি যো জপেৎ সতু পাপকৃৎ। তম্মাৎ দর্বপ্রথত্নেন মুখশোধনমাচরেদিতি॥ তথা কুলার্ণবে— জাতসূতকমাদৌ স্থাদন্তে চ মৃতসূতকম্। সংযুক্তো যো মন্ত্রঃ স ন সিধ্যতি। আছন্তরহিতং রুখা মন্ত্রমাবর্ত্তয়েদ্ধিয়া। সূতকদয়নিম্মুক্তঃ স মন্ত্রঃ সর্ববিদ্ধিদঃ। তস্মাদেবি প্রযন্ত্রেন ধ্রুবেণ পুটিতং মনুম্। অস্টোতরশতং বাপি সপ্তবারং জ্বপাদিতঃ। জ্বপান্তে চ ততো দ্যাচ্ছতু- র্ব্বর্গফলাপ্তয়ে ইতি। ধ্রুবেণ প্রণবেনেত্যর্থঃ॥ জপস্থান্তে-তিকর্ত্বসূতা তু পুরশ্চরণবোধিস্থামনুসন্ধেয়া॥

কিঞ্চ, নিত্যং জপং করে কুর্য্যায়তু কাম্যমবোধনাং। কাম্যমপি করে কুর্য্যায়ালাভাবে মহেশ্বরীতি যোগিনীতন্ত্র-দিতীয়পটলবচনাং করমালয়ের নিত্যজপঃ॥ কাম্যজপস্ত সত্যাং মালায়াংন করে, মালাভাবে করেইপি। তত্বকং মুগুমালায়াম্—সর্কেযামক্ষমালানাং জপে যং ফলমুচ্যতে। তং ফলং শতসাহস্র্যং জপে চাঙ্গুলপর্কাণি ভত্মাদঙ্গুল-পর্কাণি জপার্থং প্রবলানি চেতি। জপার্থং নিত্যজপার্থম্॥ নিত্য-জপস্ত যোগিনীতন্ত্রে দিতীয়পটলে—নিত্যকর্মাচিতে জাপো নিত্যজাপঃ স ঈরিত ইতি॥ পরস্ত সর্কত্র মালাবিধানং নিত্যার্থং ন শ্রয়তে কিন্তু নৈমিত্তিককাম্যার্থমেব।

যত্তু তারাসহস্রনামস্তোত্তে মহাশঙ্খেন দেবেশি সর্কং কার্য্যং জপাদিকমিতি ততু কাম্যনৈমিত্তিকপরম্। এক-বাক্যতা-লাঘ্বাদিতি সমীচীনঃ পস্থাঃ।

কেচিতু মালাভাবে করমালয়া নিত্যজ্পঃ কার্য্য ইত্যাহ-স্তন্ন করমালোভরমেব কাম্যার্থং মণ্যাদিমালানাং তন্ত্রেষু বিধানাদিতি। অতএব কাম্যজপস্থক্ষমালয়া কর্ত্ব্যঃ॥ সা স্বক্ষমালা দিবিধা। তন্ত্রহং কুলার্ণবে পঞ্চমোল্লাসে—অক্ষ-মালা বিধা প্রোক্তা কল্লিতাহকল্লিতাপি চ। কল্লিতা মণিভিঃ প্রোক্তা মাতৃকা স্থাদকল্লিতেতি।

তত্র মণিমালায়াং দ্ধীশূদ্রয়োর্বিশেষমাহ তন্ত্রদীপিকাধৃত-স্বচ্ছন্দমাহেশ্বরতন্ত্রে—ক্রাক্ষস্য মণেঃ শ্রেষ্ঠঃ প্রবালস্থ তথৈব চ। তথৈবাস্তোক্তহাক্ষম্ম কুশগ্রস্থৈন্ট স্কুত্রতে। এতন্মণিকৃতা মালা ত্রৈবর্ণিকস্থপপ্রদা। দ্রীশূদ্রাণাং বরা-রোহে প্রত্যবায়শ্চ কেবলম্। এতদন্মণিকৃতা মালা তেষাং ফলপ্রদেতি।

দিবা রুদ্রাক্ষমালয়া জপে নিষেধমাহ তন্ত্রদীপিকাপ্পতোদরাকরপদ্ধতাং—প্রাক্ষং জীবপুত্রাক্ষং রুদ্রাক্ষং বা প্রকল্পন য়েং। কিঞ্চ রাজ্রো, দিবা নৈব রুদ্রাক্ষমালয়া জপেদিতি॥
তথা বারতন্ত্রে—রুদ্রাক্ষমালয়া জাপং রাজ্রো কুর্যাৎ প্রযন্ততঃ।
কিঞ্চ ভদ্রে দিবা নৈব রুদ্রাক্ষমালয়া জপেদিতি॥ তত্রাপারং
বিশেষো যথা শাক্তানন্দতরঙ্গিণীপতরুদ্রজামলে—দিবা নৈব চ
জপ্তব্যং রুদ্রাক্ষমালয়া কচিং। পুরশ্চর্যামতে চাত্র দূষণঞ্চ
বরাননে ইতি। এতেন বারতস্ত্রোক্ত-দিবা-রুদ্রাক্ষমালাজপনিষ্বেধঃ পুরশ্চরণাদ্যাত্র বেদিতবাঃ।

অথ ন কাষ্ঠমালিকাং কুর্য্যাদ্গৃহস্থো মন্ত্রসাধনে ইতি
শিখরিণীতন্ত্রবচনাদৈঞ্চবগৃহিণাং তুলস্থামলক-কাষ্ঠনির্মিতমালয়া জপে নিমেধ ইতি তন্ত্রদীপিকাকারো বদতি তন্ধ
বৈক্ষবে তুলসী-মালা গজদন্তৈর্গণেশ্বরে ইতি যোগিনীতন্ত্রদ্বিতীয়পটলবচনেন বৈক্ষবেতুলসীকাষ্টের্গজদন্তর্গণেশ্বরে
ইতি মায়াতন্ত্রচতুর্থপটলবচনেন চ বৈশ্ববানাং তুলসীমালয়া
জপদ্য নির্দ্ধারিতত্বাৎ ॥ নচ তুলসীসম্ভবা যা তু মোক্ষং
বিতন্তুব্তেইচিরাদিতি গৌতমীয়তন্ত্রচতুর্দশাধ্যায়বচনস্থ কেবলমোক্ষফলোপধায়কতয়া শিখরিণীতন্ত্রবচনকবাক্যতয়া চ
গৃহস্থাতিরিক্তবৈষ্ণবিপরমিতি বাচ্যম্। তুলসীকাষ্ঠবর্টিতশ্বণিভির্জপমালিকা। সর্ব্বকর্মণি সর্ব্বেধামীপিতার্থফলপ্রদেতি
সনৎকুমারতন্ত্রদশমপটলবচনে ঈপ্লিতার্থফলদান-শ্রবণেন গো-

তমীয়তন্ত্রবচনস্থ কেবলমোক্ষফলাভিধায়কত্বানুপগমাৎ।
নচ যোগিনীতন্ত্রবচনং শিখরিণীতন্ত্রবচনৈকবাক্যতয়া গৃহস্থাতিরিক্তবৈশ্ববপরমিতি বাচ্যম্। শিবে রুদ্রাক্ষভদ্রাক্ষেঃ
কাঠের্বাপি স্থনির্মিতেতি মায়াতন্ত্রবিতীয়পটলবচনস্থরুদ্রাক্ষাদীনাং প্রশস্ততমপ্রশস্ততরপ্রশস্তমালয়া শৈবানাং জপাভিধানাতিদিন্টশিখরিণীতন্ত্রবচনস্থ সামান্যেন পঞ্চোপাসকেয়
কাঠমালায়া নিষিদ্ধতয়া প্রশস্ততমাতিরিক্তকাঠমালাপরয়াৎ॥
নচ বৈশ্ববে তুলসীমালায়াঃ প্রশস্ততমত্বে কিং মানমিতি বাচ্যঃ
বৈশ্ববে তুলসীমালেত্যক্তেঃ সর্বত্র প্রবণাৎ সাম্প্রদায়িকবৈশ্ববৈর্যবহৃতত্বাচ্চ। অতএব শিখরিণীতন্ত্রবচনং রক্তচন্দনাদিকাঠনির্ম্মিতমালাপরম্। তথাচ তন্ত্রকৌমুদীয়্বত-যোগিনীতন্ত্রে—শোণ-চন্দনকার্চঞ্চ ধাত্রীফলপ্রমাণতঃ। বিল্বকার্চসমুদ্ভূতং মধ্যং বদরকং তথেতি। শোণচন্দনং রক্তচন্দনমিত্যর্থঃ। শোণঃ কোকনদচ্ছবিরিত্যমরকোষাং।

অথ মণ্যাদিমালানাং গ্রন্থিবন্ধনস্থাবশ্যকত্বমাহ। তন্ত্র-দীপিকাধৃতস্বচ্ছন্দমাহেশ্বরতন্ত্রে—সর্ব্বেষামন্তরে গ্রন্থিং কর্ত্তব্যো লক্ষণান্বিতঃ। অন্যোগ্যঘর্ষাসিদ্ধ্যর্থং ঘর্ষো জপবিনাশ-কৃদিতি। তথা কৃদ্রজামলে—গ্রন্থিহীনা ন কর্ত্তব্যা স্পৃষ্টা-স্পৃষ্টে ন তুষ্যতীতি।

যত্ত্ব কালিকা স্বরিতা দেবী চন্দ্রাক্ষী বনবাসিনী। বারাহী তোতলা চৈব গ্রন্থিহীনাশ্চ দেবতাঃ। এতাসাং মালিকা-য়াস্ক গ্রন্থিমাত্রং ন কারয়েদিতি তীর্থস্বামি-শোধিতর্হতন্ত্র-সারধৃতবচনং তদ্রুদ্রাক্ষমালাভিপ্রায়েণ। তত্ত্তং তন্ত্র-দীপিকাধৃতযোগিনীতক্ত্রে—ক্ষদ্রাক্ষঃ শক্তিমন্ত্রঞ্চ গ্রন্থিষ্ট্র- র্জপেন্তু যঃ। স তুর্গতিমবাপ্নোতি নিক্ষলস্তম্য তজ্জপ ইতি। অতএব তীর্থসামিশোধিতকুমারীকল্পে—কালিকা ছিন্নমস্তা চাত্রপুরা তারিণী তথা। এতাঃ সর্বান ভুষ্যন্তি জপাদ্রুলাক্ষ-মালয়েতি। বস্তুতস্তু সংসম্প্রদায়প্রবলব্যবহারবিরোধিস্থা-দেতাদৃশবচনমনাদরণীয়ম্।

এবং মালাক্ছেদনমাত্রেণ ব্রহ্মহত্যা ভবেৎ দদা। নফে প্রকম্পনে চৈব হস্তাচ্চ্যুতে তথৈব ছ। ব্রহ্মহত্যা ভবেদ্দেবি শতং বাপি সহস্রকম্। তম্মান্মালা ন কর্ত্তব্যা কর্ত্তব্যা কর-মালিকেতি মহানীলতন্ত্রসপ্তদশপটলবচনেন মণিমালায়াং জপস্থ কতিপয়দোধানভিধায় করমালয়া যো জপোহভিহিতঃ-দোপি ন সঙ্গছতে। অঙ্গুল্যথেণ যজ্জপ্তং যজ্জপ্তং মেরু-লজ্মনে। পর্বব্যদ্ধিষু যজ্জপ্তং তজ্জপ্তং নিম্ফলং ভবেদিতি তন্ত্রসারধুত্তবচনেন করমালায়ামপি দোধদর্শনাৎ। অতএবৈ-তাদৃশবচনানি সাবধানস্থাবস্থকত্বে ভয়প্রদর্শকানি, ন তু বিধি-বাক্যত্বেন গ্রাহ্থাণি। অন্থথা সিদ্ধসংসম্প্রদায়ব্যবহারবৈপ-রীত্যাপত্তিঃ স্থাৎ।

নকু মালা পঞ্চাশিকা প্রোক্তা সূত্রং শক্তিশিবাত্মকম্।
এত্থিঃ স্থাৎ কুণ্ডলী শক্তিনাদান্তে মেরুসংস্থিতিঃ। সবিন্দুং
বর্গমূচার্য্য মূলমন্ত্রং সমূচ্চরেৎ। অকারাদিক্ষকারান্তমন্তুলোমইতি স্মৃতঃ। পুনলকারমারভ্য শ্রীকণ্ঠান্তং মকুং জপেৎ।
বিলোম ইতি বিখ্যাতং ক্ষকারং কেবলং জপেৎ। অইবর্গাদ্যান্তবর্গেঃ সহ মূলমথান্তকম্। অফৌতরশতং জপ্ত্যা সমর্প্য
প্রণমেদ্ধিয়েত্যমদাকল্পসপ্তমপ্টলবচনেন বর্ণমালয়া মন্ত্রজপাভিবানাদকুলোমবিলোমেনাফৌতরশতসংখ্যানিগদিত্তয়া তদ-

ধিকজপে কুত্র সংখ্যা কর্ত্তব্য।। নচ নিরুক্তবচনেনান্টোভরশতজ্বপানন্তরং তৎসমর্পণিবিধানাৎ বর্ণমালয়া কেবলাটোত্তরশতজ্বপএব কার্য্য ইতি বাচ্যম্ অটোত্তরশতসংখ্যয়া
কম্মা অপি দেবতায়াঃ পুরশ্চরণাসিদ্ধ্যা তদসমন্ত্রজপিচিকীর্যুণাং সংখ্যাপূর্ত্তেরভাবাৎ॥ নচ পুরশ্চরণাস্কজপো বর্ণমালাতিরিক্তমালয়া কর্ত্তব্য ইতি বাচ্যম্ অন্তর্যাগেহন্টোভরশতাধিকজপেক্ষ্ নাং তদনিষ্পাভাবভীন্টসিদ্ধিবিরোধাপত্তেঃ॥
নচেন্টাপত্তিরিতি বাচ্যং মানসজ্পমাত্রপরাণাং কেবল্।সংখ্যাস্থাপনভাবান্মরোধেনান্টোভরশতাধিকজপে স্পত্রামেবানধিকারান্মহানর্থাপত্তেঃ।

উচাতে, বিশুদ্ধে ষোড়শদলে স্বরান্ ধ্যায়েৎ সবিন্দুকান্। হ্বদয়ে ঘাদশদলে কাদিচান্তান্ সবিন্দুকান্। মণিপুরে ডাদিকান্তামান্তে। দশদলে স্মরেৎ। স্বাধিষ্ঠানে বাদিলান্তান্ ষট্পত্রের্ বিচিন্তয়েৎ। মূলাধারে শুন্তিদলে বাদিলান্তাংশ্চ বিন্দুন্তিঃ। আজ্ঞাচক্রে জপেৎ ই ক্লঁ বর্ণমালেয়মীরিতা॥ একবর্ণং সমুচ্চার্য্য সংখ্যা তেনৈব জায়তে। কণ্ঠাদ্জ্রমধ্যপর্যন্তং পঞ্চাশৎ ক্রমতো ভবেৎ। ব্যুৎক্রমাট্চেব পূর্ণা স্থাৎশতং তেনৈব জায়তে॥ শতে শতে বাহ্যসংখ্যাং কুর্যামিয়তামানসঃ। লক্ষাবধি জপেদেবং সিদ্ধিরত্র স্থিরা মতা॥ স্বরাদিকাদিবর্গাশ্চ যাত্যাং সান্তান্তথান্তথা । পূর্বং তদ্বর্গকান্তান্তির্দেশ্যান্থাপনবিধানাৎ লক্ষাদিকজপে বিরোধলেশাভাবঃ॥ শ্রুকিং তদ্বর্গকান্তাভিরতি, পূর্বং জপ্তে ত্যুর্থঃ।

মণিমালয়া পথি গচ্ছতো জপং দূয়য়তি, গায়ত্রীতন্ত্রে
পঞ্চমপটলে—মালয়া ন জপেন্দুল্যং পথি গচ্ছন্ কদাচন।
জপ্তা মন্ত্রং যথা মূঢ়ঃ সর্বযোনিষু জায়তে॥ করমালাস্থ
জপ্তব্যং গচ্ছতা পথি সন্তম। মালয়া পথি জপ্তা বৈ তথা
হানিঃ প্রজায়তে। বেদমন্ত্রবিহীনশ্চ যথা যাতি পরাভবম্।
উপবিশ্য জপেন্দ্রেং মালয়া নৃপনন্দনেতি।

ইহ তুমালাসংস্কারে পাশাঙ্কুশপুটাং শক্তিং যঁ রঁ লঁ বঁ ততো বদেৎ। শঁ যঁ সঁ ছোঁ ততঃ পশ্চাদেবি হংসমসুং ততঃ। শ্রীমদমুকমালায়াঃ প্রাণা ইতি বদেৎ পুনঃ। ইহ প্রাণাশ্চ মালায়াঃ পুনর্জীব ইহ স্থিতঃ। তত্যাঃ সর্বেবিদ্রয়া-ণ্যেবিমহাগত্য তথোচ্চরেৎ। বাগ্মনশ্চক্ষুংশ্রোত্রভাণপ্রাণা-স্ততঃ পরম্। ইহাগত্য হৃথং চিরং তিষ্ঠন্ত স্বাহয়ান্বিতঃ। অয়ং প্রাণমনুঃ প্রোক্তঃ সর্ব্বজীবপ্রদায়কঃ। ইন্টদেবং সমা-বাহ্য পূজয়েত্তদনন্তরমিত্যাগমকল্পক্রমবচনাৎ প্রাণপ্রতিষ্ঠা তু মালায়া এব ন তু দেবতায়াঃ॥ দেবতায়াস্ত তত্রাবাহেতি পরার্দ্ধেনায়াতীতি শ্যামার্চ্চনচন্দ্রিকাকারো বদতি তন্ন সালায়াঃ প্রাণপ্রতিষ্ঠাপুজানন্তরং স্বেষ্টদেবতাপ্রতিষ্ঠাপুজনে চ কর্ত্তব্যে। তহুক্তং মায়াতন্ত্রে চতুর্থপটলে—সংস্কৃত্যৈবং ততো মালাং তংপ্রাণাংস্কত্র যোজয়েও। মূলমন্ত্রেণ তাং মালাং পূজয়েও সাধকোত্তমঃ। দেবপ্রাণাংস্ত তত্ত্বৈব প্রতিষ্ঠাপ্য যজেচ্চ-তামিতি। মূলমস্ত্রেণেতি মালায়া মূলমন্ত্রেণেত্যর্থঃ। স্ ত্ব বৈষ্ণবাদ্যপাদকভেদেন পুরশ্চরণবোধিভামবগন্তব্যঃ। নিক্লক্তাগমকল্পজ্জমাদিবচনেন মালায়াং স্বেষ্টদেবতাবাহনমপি কার্যায়। এবঞ্চ সংস্কৃতমালায়াং পূজা জপ*চ নিত্য এব। তথাহি শ্যামার্চ্চনচন্দ্রিকাগ্নতজামলে—প্রত্যহং পূজ্যেন্মালাং প্রত্যহং জপমাচরেৎ। উপোষিতায়াং মালায়াং বিপদঃ সম্ভবন্তি চেতি।

নিত্যপূজায়াং জপসংখ্যানিয়মমাহ। কন্ধালমালিনীতন্ত্রে পঞ্চমপটলে—প্রজপেন্নিত্যপূজায়ামটোতরসহস্রকম্।
অটোতরশতং বাপি অন্তপঞ্চাশতঞ্চরেৎ। অন্তাত্রিংশংসংখ্যকং বা অন্তাবিংশতিমেব বা। অন্তাদশং দাদশঞ্চ দশান্তো
চ বিধানতঃ॥ হোমঞ্চৈম মহেশানি এতৎসংখ্যাবিধানতঃ।
এবং সর্বত্র দেবেশি নিত্যকশ্ম-মহোৎসবে ইতি॥ অত্র
শক্তাশক্তভেদেন জপসংখ্যা মন্তব্যা॥ যত্ত্বু সহস্রং প্রজপেমান্ত্রং শতং প্রতিদিনন্ত বা। বিংশত্যা বা জপেন্মন্ত্রী ততাে
নুনং জপেন্ন চেতি শ্যামার্চনচন্দ্রিকাধ্বত্রচনং ত্রিত্যপূজান্ত্রজপেতরপরং তদােধকাভাবাৎ।

জপসমর্পণমাহ যোগিনীতন্ত্রে দ্বিতীয়পটলে—জপাত্তে চ ততো মালাং শিরস্থাধায় যত্বতঃ। রক্তপুস্পার্য্যজীবেন ঘণ্টাবাজপুরঃসরম্। দেবৈয় সমর্পয়েদ্ধীমান্ ফলং তজ্জপকর্মণ ইতি॥ অর্য্যজীবেন সামান্যার্য্যজলেনেত্যর্থঃ॥ গোত-সাঁরে চ—এবং জপং পুরা কৃত্ব। তেজোরূপং সমর্পয়েৎ। দেবস্থা দক্ষিণে হস্তে কুশপুস্পার্য্যবারিভিরিতি॥ তথা ফেংকারিণ্যাং—ততশ্চার্য্যোদকেনৈব দেব্যাস্ত বামহস্তকে বামহস্তকে বাম্যানিমুদ্রয়া ধ্যাত্বা তেজোরূপং সমুজ্জলং। জপংসমর্পরেদ্ধীমান্ গুহাতিগুহ্মন্ত্রকৈরিতি॥ কুশপুম্পার্য্যজলৈঃ সমর্পরেদ্ধান্যতেজারূপং জপফলং দেবস্থা দক্ষিণাধাহত্বে সমর্পরেধ্। শক্তিবিষয়ে তু বামাধোহস্তে ইতি॥ ব্যোমান

রত্নে চ—অর্ঘ্যাম্বুনাসর্ব্বসমূদ্ধিদায়কং মহোময়ং জাপফলং ফলাং। সমর্পয়েদর্কসমৈকভাম্বরং সব্যে কপালান্বিতপাণি-পদ্ম হৈতি কপালস্থ স্থিতির্বামাধোহস্তে প্রমাণস্ত শ্রীশঙ্করা-চার্য্যকৃতস্তবে—যথা, করেসব্যউচ্চৈরধস্তাদ্দ্ধানাং শিতাং কর্ত্তরীং বামপাণোঁ কপালমিতি॥ এতদেব স্পষ্টয়তি নীলতন্ত্রীয়পঞ্চমপটলঃ—প্রণবং পূর্ববসূকার্য্য গুহাতিপদ-মুচ্চরেং। মন্ত্রেণানেন দেবেশি বামাধঃপাণিনা ততঃ। তেজো-ময়ং জপং দেবি সমর্প্য ভক্তিযোগত ইতি। পাণিনেতি সপ্তমীস্থানে তৃতীয়া, ছন্দসি ব্যত্যয়ো বহুলমিতি পাণিনি-দূত্রাৎ॥ যুক্তঞ্দেং স্ত্রীদেবতায়া বামাঙ্গপ্রাধান্তেন তদধো-হস্তস্থাধারত্বেন বিহিত্তয়া পুংদেবতায়া দক্ষিণাঙ্গপ্রাধান্তেন যুক্তেস্তোল্যাদ্দক্ষিণাধোহস্তএব জপদমর্পণাধারো যুক্যত ইতি। দেবতাহত্তে তেজোময়জপফলসমর্পণে সাধকস্থ নিস্কেজ-স্কত্বভিয়া দেবীশ্বয়োঃ কথোপকথনং যথা তন্ত্ৰকৌমুদীধ্বত-সিংহবাহিনীতন্ত্র। শ্রীদেব্যবাচ—জপস্ত চার্পণং তত্ত্বং কথ্যতাং দেবপূজিত। কম্মৈ সমর্পয়েন্মন্ত্রং তন্মে বদ জগদ্গুরো॥ অর্প-য়েদ্যদি দেবেষু সাধকস্ম তদা তু কিং। অর্পয়েনান্ত্রতেজাংসি দেবেষু যদি শূলভূৎ। নিস্তেজাঃ সাধকো দেব তদৈব সহসা ভবেৎ। কিং জপেন চ পূজায়াং পুরশ্চর্য্যেব কিং পুনঃ। তমে বদ মহাভাগ যদি স্নেহোহস্তি মাং প্রতি। শ্রীঈশ্বর-উবাচ। সাধু পৃষ্টং ত্বয়া ভদ্রে অধুনা কথয়ামি তে। জপ্ত্যা চ চঞ্চলাপাঙ্গি ধ্যারেৎ পরমকামিনীম্। মন্ত্রবর্ণং বরারোছে কামিনীগর্ভগহ্বরে। চন্দ্রবিন্দুযুত্ই ক্বন্থা একৈকং দশধা জপেৎ। অনুলোমে যথা দেবি বিলোমেন তথা কুরু।

কামিনীগর্ভমধ্যেষু জ্যোতিস্তত্ত্বং জপং কুরু। জ্যোতিস্তত্ত্বং বরারোহে স্বরং জীবঃ সনাতনঃ॥ কামিনীজীবতত্ত্বঞ্জ কুত্বা বৈ সাধকঃ স্থাঃ। সহস্রারে মহাপদ্মে সংস্থাপ্য কামিনীং পরাম্। গুহাতিগুহুগোপ্ত্রীত্ব মিতি মন্ত্রেণ মন্ত্রবিৎ। দেবস্থা দক্ষিণে হস্তে বাহ্যপূজাং সমর্পয়েৎ। দেব্যা বামে বরারোহে সমর্প্য ফলভাগভবেৎ। জপস্থ সর্বতেজাংসি দেবহুন্তে যদি প্রিয়ে। সমর্প্য পরমেশানি নিস্তেজাঃ সাধকো ভবেৎ। কিং তস্ম পূজনে ভদ্রে কিং জপেন বরাননে। যৎকিঞ্চিদীয়তে দেবি সর্ব্বং ব্রহ্মণি লীয়তে। বিস্থামন্ত্র-জপে দেবি যত্তেজ উপজায়তে। জীবতত্ত্বং বিনা দেবি দেবহস্তে কদাচন। নাপ য়েচ্চঞ্চলাপাঙ্গি দেব্যা হস্তে বিশেষত ইতি॥ জ্যোতিস্তভ্নমিতি জ্যোতির্মন্তঃ সতু সংক্ষেপভূত-শুদ্ধাবুক্তঃ। কামিনীন্ধীবতত্ত্বমিত্যাদি কলা সংযোজ্য ধাতৃনা মনেকার্থস্বাৎ কামিন্সা সহ জীবতত্ত্বং সংযোজ্যেতি তু ফলি-তার্থঃ॥ ইদং দেবতাহত্তে জপফলসমর্পণং বাহ্যপূজাসমর্পণ-রূপং নতু তেজোরূপজপফলসমর্পণম্। তদপ্ণস্ত কামিনী-গর্ভগহ্বরে অতএব স্বশির্দি সহস্রারপ্রাপিতকামিনীগর্ভে তেজোরপজপফলসমর্পণেন সাধকঃ সতেজা ভবতীতি সমুদায়ার্থঃ।

অথ স্তবকবচাদিপাঠক্রমঃ। তত্নুক্তং মুগুমালাতন্ত্রে সপ্তম-পটলে—পূজয়িত্বা তু প্রণমেৎ পার্ব্বতীং তন্ত্রকৈঃ স্তবৈঃ। স্তোত্রস্থ কবচস্থাপি পঠনাজ্জগদন্বিকা। ভূক্তিমুক্তিপ্রদা চণ্ডী ভূক্তিদা সর্ববিস্থলৈতি। পার্ব্বতীভ্যুপলক্ষণম্॥ ক্রদ্র-জামলে ষট্যষ্টিতমপটলে—স্তোত্রঞ্চ কবচং নিত্যং সহস্রনাম- মঙ্গলম্। পঠেন্ডক্টোত্যাদি। তথা শাক্তক্রমে—স্তোত্তিঃ স্তত্ত্বা পঠেদেবি কবচং সর্ব্বকামদম্। পঠেৎ সহস্রনামাখ্যং স্তোত্রং মোক্ষস্থ সাধনমিতি।

যত্ব পূজাদৌ বা চরেৎ স্তোত্রং পূজান্তে কবচং পঠেদিতি বারাহীতন্ত্রবচনং তৎ কাম্যস্তব্পাঠপরং পূজাঙ্গস্তোত্রস্থা-বাহনাদিকমন্তরেণ তৎপাঠাবোগ্যজাৎ। যদ্বা পূর্ব্রবচনৈক-বাক্যতয়া পূজাদৌ বা ইত্যাদিবচনে পূজাদাবিত্যত্র বহুত্রীহি-মনাদেন বাশব্দস্থ এবকারার্থতার্স্বাকারেণ চ ন কশ্চিদিরোধঃ। বা স্থাদ্বিকল্লোপময়োরেবার্থে চ সমুচ্চয়ে ইতি কোষাৎ।

নমু ততন্ত কবচং দেবি স্তবঞ্চ প্রপঠেতত ইতি নিরুত্তরতন্ত্রদিতীয়পটলবচনেন স্তবপঠেং পূর্বাং কবচপাঠদর্শনামহবৈনম্যং স্থাৎ। নৈবং এত্রদন্য কার্লাপুজায়ামক্তত্বেন
ভংপরত্বাং। নচ স্তৃতিঞ্চ কবচং স্মৃত্য বিশেষাঘ্যং প্রদাপয়েদিতি কার্লীপূজাত্বক-তোড়লতন্ত্রদিতীয়পটলবচনে স্তোত্তপাঠস্ঠাত্রে বিধানেনৈতত্ত্বজনাদরণীয়নিতি বাচ্যম্। তোড়লতন্ত্রবচনস্থপাঠক্রমান্নিরুত্রতন্ত্রোক্তশাব্দক্রমস্থবলবত্ত্রা কার্লীপূজায়াং কবচপাঠস্থাগ্রিমত্বাং। স্তবন্ প্রদক্ষিণীকৃত্য দশুবং প্রণমেজুবি। ত্রীজগন্মঙ্গলং নাম কবচং প্রপঠেততঃ।
পশ্চাৎ সহস্রনামানং কর্পূর্ঞ্গ ততঃ পঠেদিতি তারাভক্তিস্থার্ণবিধৃত-ভৈরবতন্ত্রবচনে স্পক্টবিধানাচ্চ।

ক্বতাঞ্জলিঃ স্তোত্রাদিকং পঠেৎ। তত্তুক্তং শাস্তবীত**ত্ত্রে** চতুর্দ্দশপটলে—ক্বতাঞ্জলিপুটো ভূত্বা স্তোত্রঞ্চ কবচং পঠে-দিতি।

তদিতিকর্ত্তব্যতামাহ বারাহীতন্ত্রে দিতীয়পটলে—প্রণব-ঞাদিমে দত্তা স্তোত্রং বা সংহিতাং পঠেছ। অত্তে চ প্রণবং দ্যাদিতিপ্রাহাদিপুরুষঃ স্তোত্রে চ সংহিতায়াঞ্চ শ্লোক-মন্ত্যং দ্বিরুচ্চরেৎ। মনসা ন স্মরেৎস্তোত্রং পঠেদেকাগ্র-মানসঃ। প্রত্যক্ষরমবিস্প্রতং কলস্বরসমাযুত্য। নচ মধ্যে বিরম্যেত যথাবৎ ক্রমযোগতঃ। শুদ্ধেনাচলচিত্তেন পঠি-তব্যং প্রযত্নতঃ। ন কার্য্যাসক্তমনসা কার্য্যং স্ভোত্রস্থ বাচনম। নচ স্বয়ং কৃতং স্তোত্রমন্মেনাপি কুডংন চ। যশ্মাৎ কলো ন প্রশস্তমূষিভির্ভাষিতং পঠেৎ। ঋষিচ্ছন্দা-দিকং অস্থ পঠেৎ স্তোত্রং বিচক্ষণঃ। স্তোত্রে ন দৃশ্যতে **যত্র প্রণবন্যাসমাচরেদিতি॥ নচ স্ব**য়ং কৃতমিত্যাদি যদি স্বয়ং কুত্মিতরকুতঞ্চ ন পঠেতদা কিং পঠেদিত্যাকাজ্যায়া-মাহ ঋষিভিরিতি।। শিবোক্তস্তোত্রপাঠস্ত দণ্ডাপূপস্থায়াৎ সিদ্ধঃ। কলাবন্যোদিতৈশ্মার্গৈঃ সিদ্ধিমিচ্ছতি যো নরঃ। তৃষিতো জাহ্নবীতীরে কৃপং খনতি তুর্মতি িতি মহানির্বাণ-তন্ত্রদিতীয়োলাসবচনে, ক্বতে শ্রুত্যক্তমার্গেণ ত্রেতায়াং স্মৃতি-সম্ভবঃ। দ্বাপরে চ পুরাণোক্তঃ কলাবাগমসম্মত ইতি তন্ত্র-সারকারধ্বতবচনে, আগমোক্তবিধানেন কলো দেবান্ যজেৎ স্থবীঃ। নহি দেবাঃ প্রসীদন্তি কলো চান্সবিধানত ইতি তারাপ্রদীপবচনে চ ঋয়ুক্তাপেক্ষয়া তান্ত্রিককর্ম্মণঃ প্রাশ-স্ত্যাভিধানাৎ। যদা ঋষিভিরিতি তত্তন্মপ্রাণাম্ ঋষিভি-রিত্যর্থঃ তেন ক্বতং বহুবচনং গুরুত্বাপেক্ষয়া॥ শূদ্রমধিক্বতা **সিদ্ধলহ**রীতন্ত্রে—প্রণবস্থ স্থলে বিপ্র বহুজায়াস্থলে তণা। চতুর্দশস্বরং দত্ত্বা মায়াং দত্ত্বা পঠেতত ইতি।

অথ প্রদক্ষিণম্। কালীকুলামৃততন্ত্রে চতুর্থপটলে—ততঃ
প্রদক্ষিণীকুর্বন্ দক্ষহন্তেইজ্বমূত্তমম্। বামে ঘণ্টাং বাদয়ংশ্চ
অফাঙ্গপ্রণতঃ স্তবেদিতি। অজ্ঞঃ বিশেষার্য্যরূপঃ শদ্ধঃ।
বিশেষার্য্যেণ প্রদক্ষিণন্ত্বিত্যর্যাদানকালনিরপণে প্রাক্ প্রপঞ্চিত্র্যাদানকালনিরপণে প্রাক্ প্রপঞ্চিত্র্যাদানকালনিরপণে প্রাক্ প্রপঞ্চিত্র্যাদানকালনিরপণে প্রাক্ত্র্যাদানকালনিরপণে প্রাক্ত্র্যাদ্দিনার কর্মাণি চ দক্ষিণম্।
বিধা চ বেই্টরেৎ সম্যক্ দেবতায়াঃ প্রদক্ষিণম্। একং চণ্ড্যাং
রবৌ সপ্ত ত্রীণি কুর্যাদ্দিনায়কে। চন্থারি কেশবে দন্তাচ্ছিবে
চার্মপ্রদক্ষিণমিতি। অত্র "সার্মপ্রদক্ষিণ"মিতি কেচিৎ প্রাক্ত্র্যাদ্দিনায়ক একং বাপি প্রদক্ষিণম্। অকালে
দর্শনং বিফোর্হন্তি পুণ্যং পুরাক্ত্রমিতি জামলবচনং তং
প্রদক্ষিণমাত্রপরম্। তেন নমস্বারাঙ্গপ্রদক্ষিণং ন দূষণা
বহমিতি।

শ্যানার্চনচন্দ্রিকাধ্ত-ভাবচ্ড়ামণে চ—ত্রিকোণমথ ষট্কোণমর্দ্ধচন্দ্রপ্রদিশিশ্য। দণ্ডনফাঙ্গমুগ্রঞ্চ ত্রিধা চ নতিলক্ষণম্ ॥ ত্রিকোণাদিব্যবস্থা তু যদি পূর্ব্বমুখো যজেৎ।
পশ্চিনাচ্ছান্তবীং গন্ধা ব্যবস্থাং নির্দিশেন্ততঃ ॥ যদোত্তরমুখং কুর্যাৎ সাধকো দেবপূজনম্ । তদা গচ্ছেতু বায়ব্যাং
গন্ধা কুর্যান্ত সংস্থিতিম্ ॥ দক্ষিণাদায়বীং গন্ধা তস্থা ব্যাহ্বত্য
দক্ষিণম্ । গন্ধা যোহসৌ নমস্কারঃ সোহর্দ্ধচন্দ্রংপ্রকীত্তিতঃ ॥
সক্রৎ প্রদক্ষিণং কৃষা বর্ত্তুলাক্ষতি সাধকঃ । নমস্কারঃ
কথাতেহসৌ প্রদক্ষিণ ইতি দিজৈঃ ॥ প্রদক্ষিণং বিনা যস্তা
নিপত্য ভূবি দণ্ডবং । দণ্ড ইত্যুচ্যতে দেবৈঃ সর্বদেবৌষমোদদ ইতি ।

শিবপ্রদক্ষিণে বিশেষমাহ তন্ত্রসারকারঃ—শিবপ্রদক্ষিণে মন্ত্রী সোমসূত্রং ন লজ্ময়েদিতি। সোমসূত্রং জলনিঃসরণস্থানম্। পশ্চাৎ কৃত্বা প্রদক্ষিণকরণে দোষমাহ শাক্তানন্দতরঙ্গি-ণ্যাম্। পশ্চাৎ কৃত্বা তু যো দেবীং ভ্রমিত্বা প্রণমেন্নরঃ। তন্ত্র চৈবৈহিকং নাস্তি ন পরত্র ভ্রাত্মন ইতি। দেবীমিত্যুপলক্ষণং দেবমিতি বা পাঠঃ।

ততঃ প্রদক্ষিণীকৃত্য বিশেষার্ঘ্যসমর্পণং যথা। ততঃ প্রদক্ষিণীকৃত্য বিশেষার্ঘ্যসমর্পণং যথা। শুতভুচিন্তা-মণাবন্টাদশপ্রকাশে—মূলমন্ত্রং সমুক্তার্য্য ত্রিপুরাস্থনরীতি চ। পরাগ্য্থার্য্যং স্বাহেতি পরাগ্ন্থার্ঘ্যমীরিভমিতি॥ এতভু শিরসি দেয়ম্। তত্ত্তং কঙ্কালমালিনীতন্ত্রে চহুর্থপটলে— বিশেষার্ঘ্যং শিরে দভুণ দেব্যাঃ প্রিয়তরো ভবেদিতি।

প্রণামকালনিয়য়য়াহ বারাহীতন্ত্রে পঞ্চমপটলে পূজাদে চ জপাদে চ পূজান্তে চ তথৈব চ। ত্রিবিধেন নতিং কুর্য্যাচ্ছেয়েইজাঙ্গবিধানত ইতি ॥ পূজাদাবিতি আবরণপূজাদে নৈবেল্যদানান্তে প্রণামঃ কার্য্যঃ। তান্সূলং দলিলং দত্ত্বানিং প্রদর্শয়েদিতি তারাভক্তিস্থধার্ণবিশ্বতশক্তিজামলবচনাং। জপাদাবিতি জপএবাদির্যস্থা কালস্থ তিম্মিন্ ॥ জপান্তে প্রণামো বিহিতঃ পূনঃসেতুং মহাসেতুং জপ্ত্বা সমর্পয়েজ্জলম্। প্রাণায়ামত্রয়ং কৃত্বা প্রণমেৎ পরমেশ্বরীমিতি পিচ্ছিলাতলৈক বিংশপটলবচনাৎ ॥ পূজান্তইতি সর্ব্বোপহারদানান্তে তেল রাত্রিকস্থ চরমোপহারত্বাৎ তদন্তে ইত্যর্থঃ। ইত্থমারাত্রিকং কৃত্বা প্রণম্য পরদেতামিতি শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাগ্বতকাত্যায়নীতন্ত্রবচনাৎ। যন্বা পূজাদাবিতি প্রতিষ্ঠিতদেবতাভিপ্রায়েণ তত্রাদৌ প্রণম্য পূজামারভেদিতি তাৎপর্য্যার্থঃ।

অন্টাঙ্গানিপ্রণামো যথা—সনৎকুমারতন্ত্রেষ্ঠ্যপটলে—পদ্যাং করাভ্যাং জানুভ্যা-মুরসা শিরসা দৃশা। বচসা মনসা চেতি প্রণামোষ্ঠাঙ্গ ঈরিতঃ। দণ্ডবৎ প্রণিপত্যাথ গণ্ডাভ্যাং চিবুকেন চ। নাসয়া চ কপোলাভ্যাং মনসা বচসা তথা। অন্টা-ঙ্গন্থ প্রণামোষ্যং হরেঃ প্রীতিপ্রানারকঃ॥ পদ্ভ্যাং করাভ্যাং শিরসা পঞ্চাঙ্গপ্রণতিঃ স্মৃতা। অন্টাঙ্গ উত্তমো জ্বেয়ঃ ষট্ পঞ্চ মধ্যমঃ স্মৃত ইতি॥ তথা যোগিনীতন্ত্রে দ্বিতীয়ভাগে নবমপটলে—পাত্রান্তরে চ প্রণমেনা, র্ক্না নচ ফিতিং স্প্শেৎ। শপন্তি দেবতাস্তম্ম বিফলং পরিকীতিত্যিতি॥

তত উথায় পুরতন্তিষ্ঠন্ কৃতাঞ্জনিং পঠেছ। যথা কালীকুলায়ততন্ত্রে চতুর্থপিটলে—উথায় পুরতন্তিষ্ঠন্ পরিন্ধত্য
নিবেদয়েছ। যদভং ভক্তিভাবেন পত্রং পূপ্পং ফলং জলম্।
আবেদিতঞ্চ নৈবেচ্চং তদ্ গৃহাণানুকম্পয়া। ভক্তিহীনং
ক্রিয়াহীনং মন্ত্রহীনং যদর্চিত্র্য। ময়া নিবেদিতং ভক্ত্যা
পরিপূর্ণং তদস্ত মে ইতি॥ শিবার্চিনচন্দ্রিকায়াং—কর্মণা
মনসা বাচা ঘত্তো নালা গতিশ্মম। অন্তশ্চারেণ ভূতানাং দ্রুন্টা
ছং পরমেশ্বর। নাথ যোনিসহত্রেলু যেয়ু যেয়ু ব্রজাম্যহম্।
তেয়ু তেয়চুত্যতা ভক্তিরব্যয়াস্ত সদা দ্বিয়ি॥ শক্তিবিষয়ে তু মাতর্বোনিসহত্রেম্বিত্যহঃ। তত্ত্রুং শ্রামার্চিনচন্দ্রিকাপ্তভেরবসংহিতায়াং—যত্ত্রুমন্তন্ত্রেমু পরিহারপ্রসাদনম্। কুর্বীত
তদপি প্রোহ্ব নির্বিকল্পেন চেত্রসেতি। স্ত্রীপুংরপাদূর্ছ উহং
কুত্বেত্যর্থঃ।

অথ কর্মার্পণম। রামার্চনচন্দ্রিকায়াং—কায়েন বাচা মনসেন্দ্রিয়ৈর্ববা বুদ্ধ্যাত্মনা বা স্বনৃতস্বভাবাৎ। করোমি যদ্যৎ সকলং পরস্মৈ নারায়ণায়েই সমর্পয়ামি॥ সাধু বাসাধু বা কর্ম যদ্যদাচরিতং ময়া। তৎসর্ববং ভগবন্ বিষ্ণো গৃহাণারাধনং মম॥ গজাস্তাদিত্য-পঞ্চাস্ত-শক্তি-সিংহাস্ত-রূপবান্। মম ক্তেরন সর্বাত্মা রামঃ প্রীণাতু চিদ্নপুঃ। ইতি শন্তাজলং দক্তাদ্দেবস্তা দক্ষিণে করে ইতি॥ তথা শিবার্চন-চন্দ্রিকাধৃতশৈবাগমে—অর্থ্যপাত্রং সমুদ্ধৃত্য মূলমূচ্চার্য্য মন্ত্র-বিৎ। সাধু বা সাধু বা কর্ম যদ্যদাচরিতং ময়া। তৎ সর্বং ভগবন্ শস্তো গৃহাণারাধনং পরম্। ইত্যর্যোদকমাদায় কিঞ্চিদ্দেবস্তা দক্ষিণে। করে সমর্পয়েদিদ্বান্ কৃত্যারাধনং শিবে ইতি। এতৎকর্মার্পনং পুংদেবতাবিষয়ে জ্বেয়ং শক্তা-বেতাদৃগদর্শনাৎ।

তত আত্মার্পণং কুর্যুৎ। ততুক্তং শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাধৃতশ্রীকুলার্ণবে সপ্তমোল্লাসে—কৃতার্চ্চনাদিকং সর্বমর্যোদকপুরঃসরম্। ইতঃ পূর্ব্বাদিমনুনা দেবতায়ৈ সমর্পয়েদিতি॥ অর্য্যোদকপুরঃসরমিতি অর্য্যঞ্চ উদকঞ্চ অর্য্যোদকে
তয়োঃ পুরঃসরং সমর্পয়েদিত্যর্থঃ॥ অর্য্যং সামান্যার্য্যং
তথাচ কঙ্কালমালিনীতন্ত্রে চতুর্থপটলে—সর্ব্বশেষে চ দেবেশি
সামান্যার্য্যং পদেহপর্বয়েৎ। সাঙ্গক্রিয়াং পদে দত্ত্বা সামান্যার্য্যং
শিবো ভবেদিতি। অন্ত্যসামান্যার্যমিতি তৃতীয়াস্থানে
প্রথমা ছন্দদি ব্যত্যয়ো বহুলমিতি পাণিনিস্ত্রাৎ। তথা
ক্রমদীপিকায়াং চতুর্থপটলে—গন্ধাদিভিঃ সপরিবারমথার্য্যমন্যৈ দত্ত্বা বিধায় কুস্থমাঞ্জলিমাদরেণ। স্তম্বা প্রণম্য শিরসা
চুলুকোদকেন স্বাত্মানমর্পয়তু তচ্চরণারবিন্দে ইতি।

আত্মাপ ণমন্ত্রো যথা—সনৎকুমাবতন্ত্রে২প্টমপটলে—ও

ইতঃ পূর্বিং পদং দত্ত্বা প্রাণবুদ্ধিপদং ততঃ। দেহধর্মাধিকারতো জাগ্রংস্বপদান্তথ। স্বযুপ্ত্যবস্থাস্থ মনদা বাচা চ কর্মণা তথা। হস্তাভ্যাঞ্চ তথা পদ্ভ্যামুদরেণ পদং ততঃ। শিশ্মেন যং স্মৃতিকোব যত্নকং যং কৃতং তথা। তং সর্কাং ব্রহ্মার্পণমস্থত্তে বহ্নিস্থান্দরী। মাং মদীয়ঞ্চ সকলং হরয়ে তং সমর্পয়ে। ওঁতং সদিতি চ প্রোক্তো মন্ত্রঃ স্বাগ্থসমর্পণে ইতি। হরয়ে ইত্যুপলক্ষণম্।

উত্তরকর্মাহ কুলার্ণবে সপ্তমোল্লাসে—জানতোহজানতো বাপি যন্ময়া ক্রিয়তে শিবে। তব ক্বত্যমিদং সর্ব্বমিতি জ্ঞাত্বা ক্ষমন্ব মে॥ এবং সংপ্রার্থ্য দেবেশি স্তত্বা নত্বাতি-ভক্তিতঃ। প্রধানদেবতামূর্ত্তো পরিবারান্ সমুন্নয়েং। ততঃ সাবরণাং দেবীমুদ্বহেৎ স্বহৃদস্কুজে ইতি॥ শিবার্চ্চনচক্রিকা-ধৃতশিবরহস্যে চ—রশ্মিরূপা মহেশস্য পূজিতা যাশ্চ দেবতাঃ। শ্রীশিবাঙ্গে বিলীনাস্তাঃ সন্তু সর্ব্বণ্ডভাবহাঃ॥ ততঃ পুষ্পা-ঞ্জলিং দত্ত্ব। প্রণম্য পরিভাবয়ন্। দেবস্যাঙ্গে বিলীনং তদ্রশ্মি-**(७४९ वित्यवंड) (७८क्राक्रभर निवर श्राक्ष क्रमस्त्रिक** পুনঃ পুনঃ। ক্ষমোহপ্যারোপয়েদ্বীরো হৃদস্তোজে মহেশ্বরম্। গচ্ছ গচ্ছ পরং স্থানং স্বস্থানং পরমেশ্বর। যত্র ব্রহ্মাদয়ো দেবা লভেয়ুঃ পরমং পদম্॥ বিস্জ্যানেন মন্ত্রেণ ততঃ পূরকবায়্না। ধ্যায়নুকক্রমেণেব হৃদি কৃষা তুষাপয়েং॥ ওঁ তিষ্ঠ তিষ্ঠ পরে স্থানে স্বস্থানে পরমেশ্ব। যত্র ক্রক্ষাদয়ঃ সর্কে সুরান্তিষ্ঠন্তি মে হৃদীতি॥ বিস্বজ্যেতি সংহারমুদ্রয়া। তহুকং তদ্বৃতহংস্পারমেশ্বে—সংহারমুদ্রাং বদ্ধাথ তেজো-রূপাং মহেশ্বরীম্। বিভাব্য পুষ্পেণাক্ত্য নাসাধ্ববায়না শিবে। নিবেশ্য ত্রক্ষরন্ধুসহস্রারে সরোক্তে। বিশ্রাম্য মধ্যনাভ্যান্তামানীয় হৃদয়ামুজে। সংস্থাপ্য সম্যক্ সংপূজ্য স্বান্থানং তন্ময়ং স্মরেদিতি। অত্র মহেশ্বীমিত্যুপলক্ষণম্।

তত ঈশানকোণে যথাবিহিতমণ্ডলং নির্মায় তত্তদ্বেতা-চ্ছিষ্টপুষ্পাদিনা তত্তদ্বেবতোচ্ছিষ্টভোজিনঃ পূজ্যেং। তত্ত্রাদো শক্তিবিষয়ে যথা শ্যামার্চনচন্দ্রিকায়াম্—ঈশানভাগে যোগ্যর্ক-মণ্ডলে ত্রিদশেশ্বরীম্। গন্ধপুষ্পাদিভির্দ্দেবীং শেষিকাং স্থন্দরীং যজেদিতি।

যতু ততোহধোমগুলে দেবীং ত্রিকোণে পূজ্যেচ্ছিবাম্।
উচ্ছিপ্তপূর্ববিচা গুলীমৃচ্ছিপ্তপুচন্দনৈরিতি কালীকুলাম্ততন্ত্রীয়চতুর্থপটলবচনেন বক্ষ্যমাণাল্লদাকল্পবচনেন চ কেবলকিকোণমগুলমুপপাদিতং তদধিকন্ত ন দোষায়েতি বুক্ত্যা
ক্রিকোণস্থ তদন্তগতখেনাবিরোধঃ।

শক্তিবিষয়ে সর্ব্যাধােমুখতিকােণমেব ততুক্তং বিশ্বসারে

কুণ্ডে বা স্থান্তলে বাপি মণ্ডলে যন্ত্রকেষু চ। তিকােণং
শক্তিমন্ত্রেষু সর্ব্যাধােমুখং স্মৃত্য। অন্তরার্দ্ধমুখং জেয়ং
ষট্কােণং তন্দ্রাত্মকমিতি।

শ্রীবিজ্ঞানওলে ত্বয়ং বিশেষঃ যথা পাদ্ধর্বেন স্টাদশপটলে— ঐশান্তাং মণ্ডলং কৃষা দারপদ্মবিবজ্জিতম্। শেষিকাং
স্থান্দরীং তত্র নিশ্মাল্যেন প্রপূজ্যেদিতি॥ অস্তা বিশেযার্থো হয়ে প্রকটীভবিষ্যতি। শেষিকোচ্ছিপ্টচাণ্ডালিনীত্যর্থঃ।
স্থাদাপ্তবং ক্লছ্ছিপ্টচাণ্ডালিনি ততঃপরম্। বদেনাতিদি
সর্বান্তেবশ্যং কৃক যুগং ততঃ। একবিংশতিভির্বার্থাঃ
শেষিকানসুরীরিতঃ। মন্ত্রেণানেন নির্মাল্যং শেষিকারে

সমপ্রেং। দেবীমুছিষ্ঠিগাতঙ্গীং ধ্যায়েকৈত্রলোক্যমোহিনীমিতি ক্লার্শবায়-সপ্তমোলাস্বচনাৎ।

যভু সূর্য্যে গণপতারুত্রে শাক্তে শৈবেহথ বৈঞ্বে। তেজ**-চও**মথোচ্ছিষ্টগোজগুচ্ছিষ্টপূৰ্কিকান্। চাণ্ডাৰ্লাং শে-সিকাং চঙং বিশ্বকৃদেনং জ্মাদ্যজেদিতি বিভানন্দিবন্ধ-বচনেন তন্ত্রসারকারঃ শক্তো ও শেষিকায়ৈ নমঃ, কালিকাদৌ ওঁ উচ্ছিষ্টচাণ্ডালিগ্ৰৈ নম ইতি প্ৰয়োগং বদতি তন্ন স্থ্যসূত্য। তাদৃশপ্রমাণং দর্শয়িতুমশক্তত্বাৎ। শক্তের-ক্সিপ্ট্রাণ্ডালীতি কাল্যাদিসর্ব্বশক্তিদেবতাপজাপ্রতিপাদক-মন্ত্রমহোদবিদ্বাবিংশতরঙ্গবচনেন তদ্বিরোধাপত্তঃ। কাল্যাদি-ত্রিশক্তিপূজাপ্রসঙ্গলেশাভাববং শারদাতিলকটীকাকাররাণব-ভট্টগ্নত-শক্তাবৃচ্ছিষ্টচাণ্ডাল্যে ইতি শক্তিদেবতায়ামুচ্ছিষ্টচা-ভালীপূজামাত্রকথনস্থাপাঙ্গকোক্যাপত্তেশ্চ প্রভূতি যাসাং পূজা বিহিতা তাদামুদ্ছিষ্টভোক্ত্রীণাং নামোল্লেখস্থাবশ্যস্তা-বেহপি তৎকথনাভাবাৎ। অতএব তদ্বচনস্থোচ্ছিষ্টচাণ্ডালী শেষিকেতি বিশেষ্যবিশেষণভাবেনান্বয়ঃ। এবং সতি শেষি-কোচ্ছিষ্টচাণ্ডাল্যোরেকত্বেহপি উচ্ছিষ্টচাণ্ডালীতি প্রধানী-ভূতনামেব পূজা কর্ত্তব্যা, কুলার্ণবাদিসর্বতন্ত্রেয়্ তন্মন্ত্রে উচ্ছিষ্টচাণ্ডালীতি নামসম্ভিব্যাহৃত্ত্বদৰ্শনেন শেষিকেতিনাল্লঃ সহক্তত্বভাবদর্শনেন চাপ্রাধান্যাৎ।

মন্ত্রান্তরমাহ—শাক্তানন্দতরনিণীধৃতভৈরবতত্ত্রে—সংহার-মুদ্রয়া দেবি ক্ষমস্বৈতি বিদর্জ্জয়েৎ। তরিবেগুণতাংশং বা সহস্রাংশঞ্চ ভৈরবি। দগ্যান্ত্রচ্ছিষ্টচাণ্ডাল্যৈ স্বাহেতি মন্থুনা তত ইতি। তথা তারাভজিস্থার্ণবিধৃতভৈরবীতত্ত্বে—দেবি ক্ষমস্ব মন্ত্রেণ সংহারেণ বিসর্জয়েৎ। হ্নতারোপ্য চ তত্তেজঃ
পুল্পেণ সহ নাসয়।। কিঞ্জিলৈবেত্যশেষক্ষ দত্তাদীশানকোণতঃ। প্রণবোচ্ছিউচালালৈয় হাদেতি মন্তুনামুনেতি। অত্র
নমঃশব্দেন মন্ত্রোদ্ধারঃ প্রাশুদ্রাভিপ্রায়কঃ। স্বাহাস্থানে নমো
দত্তাৎ প্রশিদ্ধাণামুপাসনে। ইত্যাদিদীক্ষাপ্রকরণোক্তশাসনাৎ। নিরুক্তভৈরবভৈরবীতন্ত্রবচনাভ্যাং নিবেদিতনৈবেদ্যস্থোনকোণাৎ শতাংশং সহস্রাংশং বা—দায় তত্তদেবতোচিন্তুভোজিত্যো দত্তাৎ। তদপি প্রধাননৈবেত্যাৎ। তত্ত্তং
রামার্চনিচন্দ্রিকাকাররাঘবভট্টপ্রতবচনম্। মুখ্যাদীশানতঃ
পাত্রান্ধৈবেত্যাংশং সমাহরেৎ। সর্বদেবস্বরূপায় পরায় পরমেঠিনে। শ্রীরামদেবাযুক্তায় বিম্বক্ষেনায় তে নমঃ। শতাংশং
বা সহস্রং বা অত্যথা নিম্ফলং ভবেৎ। গণেশে বক্রতুণ্ডায়
সূর্ব্যে চণ্ডাংশবেহপর্যার । শক্তাবুচ্ছিপ্টচাণ্ডাল্যৈ শিবে
চণ্ডেশ্বরায় চেতি।

যত্ত্বনেন সার্দ্ধং প্রাপ্তক্তত্ত্বসারকারপ্প্তবিচ্যানন্দনিবন্ধীয়-বচনাৎ গণেশে উচ্চিপ্তগণেশায়, সূর্য্যে তেজশ্চণ্ডায়েতি বৈষম্যং দৃশ্যতে তদিজ্ঞাবৈকল্লিকেন সমাধেয়ম্। যদপি নিম্মাল্যভোক্ত্যঃ পূজার্থং পঞ্চায়তনপূজনে। কর্ত্তব্যানাতি পঞ্চৈব ঈশা—দামধ্যমেহচ্চ য়েৎ। লম্বোদরে গণেশস্থ তেজশ্চণ্ডো বিবস্বতঃ। বিস্বক্সেনো হরেঃ প্রোক্তশ্চণ্ডেম্বরা মহেশিত্যঃ। চণ্ডেম্বরী ভবাত্যাশ্চ মন্ত্রোহয়ং তাদৃশং চরেৎ। ইতি নৈবেত্যশেষস্ত দন্তা নত্না বিসর্জয়েদিতি মেরু-তন্ত্রীয়বচনে শক্তিবিষয়ে চণ্ডেম্বরীপূজনমূক্তং তৎপ্রকরণ-বশাৎ পঞ্চায়তনদীক্ষাঙ্গপূজাপরমবগন্তব্যম্। তন্ত্রসারকার

ধৃতবচনার্থস্ত, সোজং, উনা শস্তু নাসহবর্তত ইতি সোঃ হুর্গা, তজ্জো গণেশঃ, তেন উচ্ছিপ্টগণেশায় নম ইতি প্রয়োগঃ। চণ্ডং চণ্ডেশম্ একদেশে সমুদায়ব্যপদেশঃ, ভীমো ভীমসেন ইত্যাদিবং। উক্তঞ্চ শৈবাগমে—পূর্কোত্তরদিশি প্রোক্তঞ্চণ্ডেশং মণ্ডলেহর্চয়েং। দেবদেবস্থ নির্মাল্যেধ্যায়ন্তং চক্রশেখর-মিতি। এবঞ্চ নির্মাল্যেন যজেদ্দেবীমীশে নির্মাল্যবাসিনীমিতি শাক্তানন্দতরঙ্গিধিতজামলবচনেন শক্তিদেবতায়াং বিশ্মাল্যবাসিনীপূজাদ্পতে তং, সংহারমুদ্রমা পূষ্পান্যায় স্থাপবেদ্ধৃ দি। এশান্যাং মণ্ডলং কৃত্যা ত্রিকোণং স্থারিষ্কৃত্য। তত্র সংপূজ্যেদ্দেবীং নির্মাল্যপুশবারিণা। হ্রী নির্মাল্যপদক্ষোক্রা বাসিন্তো নম ইত্যপীত্যরদাকর্লচতুক্রশপটলবচনেনক্রেয়াগাদরপূর্ণাপূজামাত্রপরমবধ্যেম্।

বস্তুতস্তু শক্তিদেবতামাত্রেরৈশান্যাং নিশ্মাল্যবাদিনীং বামে উচ্ছিষ্টচাণ্ডালিনীমর্চ্চয়েং। তত্তুকং শ্যামার্চ্চনচন্দ্রিকা-রতপুরশ্চরণচন্দ্রিকায়াম্। সুষুমাবর্গ্না পুষ্পমাঘ্রায়োছাসয়েং সুধীঃ। নিশ্মাল্যং মস্তকে ধার্য্যং সর্ব্বাঙ্গেষত্বলপনম্।
ক্রশান্যাং মণ্ডলং রুছা নিশ্মাল্যবাদিনীং যজেং। নিশ্মাল্যপুষ্পানৈবেদ্যৈবামে চাণ্ডালিনীং তথেতি। বামে নিশ্মাল্যবাদিন্যা বামে, নতু পুজ্পয়োঃ। অন্যথা নানাবচনেষু
ক্রশান্যামুক্তিষ্টচাণ্ডালিনীপুজাবিধেকিরোধাপতিঃ।

অথ বৈষ্ণবের, সম্পাদ্য পানীয়স্থাং সমপ্য দভ্যান্ত উদ্বাস্থ্য মুথান্চিরান্তে। নৈবেদ্যমৃদ্ধ্ত্য নিবেদ্য বিধক্সেনায় পৃখী-মুপলিপ্য ভূয়ঃ। গগুষদন্তবপনাচমনস্ত হস্তম্জ্জানুলেপমুখ-বাসকমাল্যভূষাঃ। ভাগুলমপ্যভিদমপ্য স্থবাদ্যন্ত্যগীজৈঃ সুতৃপ্তমভিপূজয়তাৎ পুরৈবেতি ক্রমদীপিকাচতুর্থপটলবচনেন যদ্ধোমাদ্যনন্তরং বিষুক্সেনার্চনং দৃশ্যতে ততু প্রকরণবশাৎ দীক্ষাঙ্গপূজাপরমবধেয়ম্। অন্যত্র বিদর্জনানন্তরমেব। ততুকং সনংকুমারতন্ত্রেইস্টমপটলে—দেবং বিস্বজ্য হৃদয়ে বিম্বক্দেনং প্রপূজয়েদিতি।

তত্রাপি দর্কাপুংদেবতোচ্ছিষ্টভোক্তৃণাং পূজার্থমণ্ডলম।ই শিবাক্ত নচন্দ্রিকাগ্তকুলমূলাবতারে—ঐশান্যাং মণ্ডলং কুর্য্যাৎ ছারপদ্ববিজিত্ম। বিসজনার্থ নিমাল্যবাসিনঃ পুজনায় বৈ। নিক্ষিপ্য তম্মিলির্মাল্যং মন্ত্রেণ তু সমর্পয়েদিতি। মণ্ডলং সর্বতোভদ্রাদি, তৎ দারপদ্মরহিতং কুর্য্যাৎ, তথাচ চতুরস্রমণ্ডলং লিখেদিতি তাৎপর্য্যম্। নতু, বিম্বোহস্ত্রী মণ্ডলং ত্রিবিতামরোক্রেঃ প্রশক্তিস্তম্ম দারপদ্মাভাবাং। সমগ্রতদ্ব-চনার্থস্ত ঐশান্যামিতি ঐশান্যাং দিশি চতুরক্রমণ্ডলং ক্রম। বিসর্জ্জনার্থং যন্নিম্মাল্যবাসিনঃ পূজনং তন্নিষিত্তম্ তন্মিন্ মণ্ডলে ওঁ চণ্ডেশ্বায় নম ইত্যাদিক্রমেণ নিম্মাল্যং পুষ্প বারি নিক্ষিপ্য বক্ষ্যমাণমন্ত্রেণ সমর্পয়েৎ নৈবেজ্ঞাংশং দভা-দিতি। মন্ত্রো যথা তত্ত্রিব। ওঁ লেহ্চুস্যাল্লপানাদি তায়ল-স্রথিলেপনম্। নিম্মাল্যভোজিনে তুভ্যং দদামি শ্রীশিবা-জ্ঞয়েতি॥ সৌরশাক্তয়োরপ্যেবং শৈবস্থ বিশেষাভুক্তৌ শাক্ততুল্যঘাভিধানেন শাক্তস্ত তাদৃশস্থলে শৈবতুল্যখৌ-চিত্যাং। সৌরস্ত ভূ শাক্তানুগামিছেন স্থুতরাং শৈ**ব**-ত্ল্যহাচ্চ।

বৈশংবানাং বথা রামাচ্চনিচন্দ্রিকায়াং—সর্ববদেবস্বরূপায প্রায় প্রবেচ্চিনে। শ্রীরামদেবাযুক্তায় বিশ্বক্ষেনায় তে ন্ম ইতি। শ্রীকৃষ্ণাত্মপাদকে শ্রীকৃষ্ণাদিপদমূহাং গণেশস্থা-প্যয়ং ক্রম ইতি॥ বিশেষাস্কুজ্বাচ্চণ্ডেশ্বরাদীনাং প্রণবাদি-নমোহন্তেন পূজা কর্ত্তব্যা। তত্বক্তং যোগিনীতন্ত্রে পঞ্চম-পটলে—প্রণবাছা ঙেনমোহন্তা পূজা বল্যাদিনা স্মৃতেতি।

অথ নির্মাল্যধারণাদি। শিবার্চ্চনচন্দ্রকাপ্পতমালিনীতন্ত্রে—অর্যতোয়েন দেবেশি গন্ধং পৃজাবশেষিতম্। আলোড্য কিঞ্চিন্দুলেন মন্ত্রেণ স্বস্টকং শিবে। প্রোক্ষয়েত্রেন
তোয়েন স্বাল্থানং মূলমন্ত্রতঃ। নির্মাল্যং মস্তকে ধার্যং মূলগক্রেণ মন্ত্রিণা। প্রাশ্য পাদোদকং দেবি নৈবেদ্যং বিভজেৎ
প্রিয়ে। তদ্তভ্যেঃ স্বয়ং ভুক্ত্রা তন্ময়ো বিহরেৎ স্থমিতি॥
নির্মাল্যং দেবতানিবেদিতপুল্পাদি। তত্রায়ং বিশেষো
যথা। পিচ্ছিলাতন্ত্রে একাদশপটলে—জবাপুল্পং মহেশানি
দল্লাৎ ন ধারয়েৎ ক্ষচিদিতি॥ তথা যোগিনীতন্ত্রে পঞ্চমপটলে—বিল্বরক্ষোৎপত্তিমূক্ত্রা, তৎকাষ্ঠচন্দনং ভালে যো
ধারয়তি সম্ভ্রমাৎ। তত্তুকং শিববৃদ্ধ্যা সা নমেদ্দেবি মুদাবিতা। অতস্তচন্দনং দেবি ধারয়েন্ন কদাচন। তৎপত্রং
তৎপ্রস্ক্রশাৎ।

পাদোদকপানে বিশেষমাহ গৌতমীয়তন্ত্রে সপ্তমাগায়ে—-বিফুপাদোদকাৎ পূর্বাং বিপ্রপাদোদকং পিবেৎ।

কিন্দ্রমাচরন্মোহাদাত্মহা স নিগগত ইতি। বিফুরিত্যুপক্রন্দায় নৈবেদ্যং বিভজেদিত্যাদি নৈবেদ্যং ভক্তেভ্যো

কিভজেৎ, বিভজ্য দলা স্বয়ং ভূক্ত্যা তন্ময়ো কিহরেৎ।

ভিক্তেভ্য ইতি অদ্বেক্ট ভ্যো বিভজেদিত্যর্থঃ। অশুথা উপাস্থ-

দেবতানাং গোপননিয়মেন তম্ভজানামজ্ঞানাদলাভাপত্তে: দেকীরস্ত নাস্তিকা মূর্থাশ্চ, তথাহি শিবার্চনচন্দ্রিকাধ্ত-বরাহপুরাণং—বিফুরুদ্রান্তরং তত্র শ্রীগোর্য্যোরন্তরং তথা। নাস্তিকানাং হি মূর্থাণাং বাক্যাচ্ছাস্ত্রবিগ**হিতমিতি॥ কে**চিভূ ততঃ পাদোদকং পীত্বা নৈবেল্যং স্বীকৃত্য অন্তদ্যথাযোগ্যায় দত্ত্বা যথাস্থং বিহরেদিতি বদস্তি, তন্ন স্বয়ং নৈবেদ্যস্বীকারা-নন্তরং ভক্তেভ্যো দানস্থ বচনানভিধানাৎ। নিরুক্তশিবার্চ্চন-চন্দ্রিকাপ্পত্রমালিনীতন্ত্রবচনস্থ কথঞ্চিত্রৎসাধকত্বেহপি তেনৈব নৈবেদ্যং শিবভক্তেভ্যো বিভজ্য দত্ত্বা স্বয়মপি ভুক্ত্বা শিক রূপঃ স্রথং বিহরেদিতি ব্যাখ্যাত্তয়া তৎসাধকত্বাভাবাং। স্বয়ং ভুক্তা অবশিকজ্যান্যেভ্যো দানস্থাত্যন্তাবোগ্যন্ধাং 🛭 নিশ্মাল্যং মস্তকে ধার্যাং সর্কাঙ্গেষত্বলেপনম্। নৈবেছাঞে পভুঞ্জীত দত্ত্য তদ্ধক্তিশালিনে ইত্যাহ্নিকতত্ত্বপুরশ্রশ্রণ চন্দ্রিকাবচনেন তদ্বিপরাত্ত স্পক্টাভিধানাচ্চ। শিবপ্রসাদ-ভক্ষণকর্ত্তব্যত। তু শিবলিঙ্গপূজাপ্রসঙ্গেহভিহিতা।

অথ কথমুক্তং দর্কেবাং স্বস্বোপাস্থাদেবতাপ্রসাদভেত্ত কুলং, পবিত্রং বিফুনৈবেদ্যং স্থানমিনিভিঃ স্মৃতম্। অগ্যাদেবতা নৈবেগুং ভুক্ত্বা চান্দ্রায়ণঞ্চরেদিতি রাঘবভট্টয়তবহু চপরিশিক্টবচনেন বিফুভিন্নদেবতাপ্রসাদভোজনে প্রায়াদিভাভিধানাং॥ ন চৈত্বচনং বৈষ্ণবপর্মিতি বাচঃ বিশেষানভিধানেন তৎপরত্বে মানাভাবাং॥ নচ বিষ্ণুপ্রশাস্তিদেবতাপর মন্ত্রথা যদ্যন্নিবেদিতং দেব্যৈ তম্পাণাভিকারেং ব্রমিতি স্থামাচ্চনিচন্দ্রকায়তবচনেন বিরোধাপতি বিতি বাচ্যন্। এত্বচনম্ম রহম্মপূজায়ায়ক্তত্বেন তংগি

গরত্বাৎ বিষ্ণুপদস্থ সমোপাস্থাদেবতাপরত্বে মানাভাবাক ॥
নচৈত্বচনে সামান্তশব্দক্ষ বিশেষপরত্যান্তপদেন শক্রাদিদেবতাভিধীয়তে তৎপ্রসাদভক্ষণে প্রায়শ্চিভ্রমিতি বাচ্যম্
লক্ষণাং বিনা সামান্তশব্দক্ষ বিশেষপরত্বাভাবাৎ। লক্ষণাযাশ্চ শক্যান্তয়ানুপপত্যাদিরপরীজাভাবাৎ। মৈবং, শিবদত্তং
বিষ্ণুদত্তং গিরিজাদত্তমেব চ। নৈবেদ্যমূদ্রে কৃত্বা নরঃ
সাযুজ্যমাপ্নু য়াদিতি তন্ত্রকৌমুদীপ্পতবচনেন যো যদ্দেবাচ্চ নরতঃ স তরৈবেগ্যভক্ষক ইতি কালীপুরাণবচনেন চ সর্বেবামুপাস্থানুপাস্থাদেবতাপূজাবিধা সর্বাদেবতাচ্ছিপ্তভোজনাভিধানাৎ ॥ বহ্ব চপরিশিপ্তীয়বচনন্ত হে বিষ্ণো অগ্যপ্রভৃতি
যাবজ্জীবং তবৈবোচ্ছিন্টনেব ভক্ষণীয়নিত্যাদি প্রতিজ্ঞাশালিপরং, প্রতিজ্ঞা কৃতা ভগবদ্ধক্তিবিলাসপ্পত্কাশীথণ্ডে
দ্বারকামাহাত্ম্যে চন্দ্রশর্মণা, সা তু তদ্গ্রন্থেহ্নুসন্ধ্রেরেতি
শিবমস্ত্ব।

নির্মাল্যনিক্ষেপস্থানমাহ শ্যামার্চ্চনচন্দ্রিকারাং—নির্মাল্যং লজ্ঞয়েন্নৈব ক্ষিপেৎ পৃতস্থলেহিপি বা। উদকে তরুমূলে বা গর্ভে বা চতুরস্রকইতি।

ততো গন্ধপুস্পাভ্যাং শব্ধং পূজ্জেরেং। ততুক্তং পুরশ্চরণচন্দ্রিকায়াম্—পূজ্রেদ্গন্ধপুস্পাদ্যৈং শব্ধং বৈ দেববং প্রিয়ে।
প্রিয়ে ইত্যত্ত বুধ ইতি রাঘবভট্টপ্রতমন্ত্রতন্ত্রপ্রকাশে পাঠঃ।
তক্ষ বীজমাহ রাঘবভট্টপ্রতম্। ত্রৈলোক্যে যানি তীর্থানি
বাহ্নদেবস্থ চাজ্ঞয়া। শব্মে তিষ্ঠন্তি বিপ্রেক্ত তম্মাচ্ছয়াং
সমচ্চ য়েদিতি।

ইতি সতত্যথানহীশচক্রচুড়ামণিচচ্চিত্চরণনলিন শ্রীমদ্গোপী-নোহনপাদপদামক্ষমকরক্ষসন্দোহনেক্তিমনোমধুকর-শ্রীহরকুমার দেবশর্ম-স্বীয়চিস্তামণিমন্ত্রচিন্তাদর্ক-হরতত্ত্বদীধিতে) দাদশকলাপ্রকাশঃ।

নিত্যনৈমিত্তিককর্মালোপপ্রায়শ্চিত্তমাহ শিবাচ্চনিচন্দ্রিকাধৃততন্ত্ররাজে—স্নানসন্ধ্যান্ত নালোপে জপেদিত্যাং শতংশিবে ইতি। তথা তার্থবামিশোধিততন্ত্রসারপ্ততন্ত্ররাজে—নিত্যেইতিক্রমদোধাণাং শাক্ত্যৈ বিদ্যাশতং জপেৎ। নৈমিতিকাতিক্রমণে সহস্রং প্রজপেন্মসুমিতি। ইতি হুন্নদিনকর্মলোপবিষয়কং প্রায়শ্চিত্তম্য লাঘবদর্শনাৎ বক্ষ্যমাণ ক্রদ্রজামলগোত্যীয়বচনাভ্যাং তক্মৈব গৌরবাচ্চ। তথাছি ক্রদ্রজামলে দ্বিতীয়পটলে—পশ্নাং ব্রতভঙ্গাদৌ বিধিং প্রথমতঃ প্রভো। ব্রতভঙ্গে নিত্যপুজাদিকর্মণি। সহস্রং প্রজপেন্মন্ত্রী ব্রতদোযোপশান্তয়ে ইতি। তথা গোত্মীয়ে—যদ্যৎ কর্ম্মণি বৈগুণ্যং নিত্যনৈমিত্তিকে তথা সহস্রং প্রজপেন্মন্ত্রং মূলঞ্চাযুত্যেব চে। নিত্যে সহস্রং প্রজপেন্যন্ত্রং মূলঞ্চাযুত্যেব চে। নিত্যে সহস্রং প্রজপেন্যন্ত্রং মূলঞ্চাযুত্যেব চ। নিত্যে সহস্রং

যতু, একাহপূজাবিহতো কুর্য্যাদ্দিগুণমচ্চ নমিতি রাঘবভট্ট-ধূতবচনস্থাপরাণি সংগোপ্য কেচিভক্রোপজীবিনো ব্যবস্থাং পরিকল্পয়ন্তি তদবিচারিতমনোরমন্। এত্বচনস্থোভরস্থিন প্রতিষ্ঠিতদেবতাপূজালোপনিমিত্তকপ্রায়ন্চিভস্ত স্পাফীবিধানাং। তদণি প্রদর্শতে যথা রাঘবভট্টঃ। একাহপূজাবিহতো কুর্য্যাদ্দিগুণমচ্চ নন্। দ্বিরাত্তেয়ু মহাপজাং সংপ্রোক্ষণমতঃ পরন্। মাসাদ্দ্রমনেকাহং পূজা যদি বিহন্ততে। প্রতি বোচাতে কৈন্চিং কৈন্চিং সংপ্রোক্ষণক্রমইতি ॥ যদপি প্রমান্দ্রা মহেশানি কম্মালোপো ভবেদ্যদি। পূর্বাহ্নে এব কুর্বীত দৈববিয়াদিনৈব বা। দিবসে তদসম্পত্তো ন ভুঞ্জীতাপরে হরনি। দিনদ্রয়পাণ সর্বাং ক্রয়া ভোজনমাচরেদিতি নিবন্ধতির্বাড়শপটলীয়বচনং তৎকাম্যজপপরং পুরশ্চরণাঙ্গজপপরং বা। অত্র কম্মালোপপদং জপকম্মালোপপরম্ উত্তরম্মিন্ জপদক্ষ স্পান্তবাণাং ॥ প্রাম্ভিকেন তক্ষ শুর্মিনাই ক্লার্থবি একাদশোল্লাসে—জাম্ব নদক্ষ কলুনং পরিশুদ্ধং যথাবিনা। অনাচারক্ত মালিক্যং প্রায়ন্চিভাগ্রিনা দহেদিতি।

অথ পূজায়া অকরণে দোঘাভাবকালাঃ প্রদর্শন্তে।
শিবাচ্চনচন্দ্রিকাপ্পতোত্রতন্ত্রে—প্রবাদে বাপি তুর্গে বা
ন্থানাপ্রাপ্তেটা জলেহিপি বা। কারাগারনিবন্ধো বা প্রায়াবেশগতোহিপি বা। মনোভাবে সমুৎপন্নে সিংহব্যান্ত্রসমান্ত্রণে; পরচক্রাগমে চৈব কুর্ন্যান্ত্রান্তমান্ত্রমান্ত্রণাদি অভ্যথ সর্কাং সমাচরেও। ততা দেবীস্ত
মনসা ধ্যাত্বা কুর্যাৎ প্রপূজনম্। যথা পুষ্পাদিভিঃ পূজাবহির্দেশে বিধায়তে। তথা হল্পপি কর্ত্তব্যা সর্বাশ্চপ্রতিপত্রাইতি। জলে ইতি তীক্ষপ্রবহনাদে প্রায়াবেশগতইতি গৃহীতানশনব্রতঃ। মনোভাবে সমুৎপর্মইতি মনস্ট্রণান্ত্রাবিদ্যকাত্যন্তরতৌ সত্যামিত্যর্থঃ। পরচক্রাগ্রে শক্রভিরাক্রান্তে। অভ্যথ সর্ব্বমিতি মৃত্রপুরীষত্যাগ্দন্ত্রধাবনব্যতিরিক্তমিত্যর্থঃ। তেবাং মানসাসম্ভবাও। দেবীদিত্যপলক্ষণম।।

তথা রাঘবভট্টপ্নতম্—আতুরী সৌতকী চৈব ত্রাগী দৌর্ব্বোধকী তথা। সাধনাভাবিনী চেতি পঞ্চধা ভিন্নতে পুনঃ॥ আদিত্যোদয়পর্য্যন্তং ব্যাধিরাত্মনি দৃশ্যতে। তদা পূজান কর্ত্ব্যা স্থণ্ডিলে প্রতিমাস্থ চ। ন স্নানং দন্তকার্চং বা ক্র্য্যান্ধোমমথাপি বা। রবিমণ্ডলমালোক্য প্রতিমামথবা পুনঃ॥ মূলমন্ত্রং সক্তজ্জপুণ পুষ্পং সাক্ষতম্থিকিপেৎ। আন্তো ব্যাধিভিরত্যুথাঃ ক্লান্তশৈচবোপবাসকৈঃ। নিজসাময়িক-র্বাপি স্বকর্ত্ব্যং সমাপয়েৎ। স্নান্ধা দেবমথায়্মাংশ্চ গুরুন্ বিপ্রান্ প্রপূজ্য তু। এতাবৎ-কালবিচ্ছিন্না পূজা মুল্লং-প্রসাদতঃ। ন দোষো মেইস্থিতি প্রার্থ্য পুনঃ পূর্ববদাচরেৎ।

অথ সূত্কিনঃ পূজাং বক্ষ্যাম্যাগমবোধিকাম্। স্নান্ধানিত্যঞ্চ নির্ব্বপ্ত মানস্থা ক্রিয়য়া তু বৈ। বাহ্যপূজাক্রমেণৈব ধ্যানযোগেন পূজ্যেং। যদি কামী ন চেংকামী নিত্যং পূর্ববদাচরেং॥ ত্রাসিনো বক্ষ্যতে পূজাযথবাগমচোদিতা। লব্ধং বা যদি বালক্ষর্য্যপাত্রাদিনাধনম্। পূজোদকেন কর্ত্তব্যা ন চেত্তোয়ঞ্চ বিদ্যতে। তথা সম্ভাবয়েদ্দেবং ভাবনা-কুস্তমাদিভিঃ॥ দৌর্ব্বোধকীঃ প্রকামাগমচোদিতাম্। মূর্যন্ত্রীবালর্দ্ধাদ্যা ছার্বোধা ইতি ভাষিতাঃ। মূলমূর্ত্তেস্থাঙ্গানি তেষাং পূজাবিধীয়তে। অন্যেযামপি সর্বেবাং প্রোক্তা সংক্ষেপকর্ম্মান্ত সাধনাভাবিনীং পূজাং বক্ষ্যে স্থাগমনোদিতাম্। সর্ব্বোপ্তার্ম্বানাভাবিনীং পূজাং বক্ষ্যে স্থাগমনোদিতাম্। সর্ব্বোপ্তার্ম্বানাভাবিনীং পূজাং বক্ষ্যে স্থাগমনোদিতাম্। সর্ব্বোপ্তার্ম্বানাভে ভাবনৈব হি। নির্মালেনোদকেনাথ প্রান্তিত্যাহ নারদ ইতি।

ন দেষো মেহস্ত্রিতি প্রার্থ্যেত্যাদি জপহোমাদিক

কার্য্য। যস্ত রোগবশান্মোহবশাদোষ উপাগতঃ। জপেন কালনীয়ঃ স্থাৎ ধ্যানেনেহার্চনেন চেতি শিবার্চনচন্দ্রিকা ধ্তনারদপঞ্চরাত্রবচনাং॥ তথা পিচ্ছিলাতত্রে চতুর্দিশ-পটলে—সূতকে মৃতকে চৈব নার্চ্চয়েৎ পরমেশ্বরীম্। ন জপেচ্চ মহাবিজ্ঞাং ন সন্ধ্যাবিধিমাচরেৎ। মানসং প্রজপেনাব্রং যদি স্থাদশুচির্নরঃ। বাহ্যপূজাক্রমেণৈব ধ্যানযোগেন পূজ্যেদিতি।

নকু, সূতকে মৃতকে চৈব ধুমোদগারাদিকে তথা। জপকার্য্যং তথা ক্র্যান্মন্ত্র্যাসপুরংসরমিতি জয়সিংহকল্পক্রমধৃতমৃড়ানীতন্ত্রবচনেন সূতকাদো পূজা প্রতীয়তে॥ নচ, মহাগুরুনিপাতাদো ন পূজায়াং বিকল্পনা। মোহাদ্বা যদি বা
দিবাৎ পূজ্যেন্নচ্চ সাধকং। তস্তু সর্বাং বিনশ্যাথ মারয়েৎ
তং সদাশিবং॥ অশুচো বা শুচো বাপি সর্বাকাদেহপি
সর্বা। পূজ্যেৎ পরয়া ভক্ত্যা সর্বাকন্ম স্থাসিদ্ধয়ে। কোলবেশং সদা কুর্যাদেব্যাং পূজাবিধানত ইতি বিশ্বসারতন্ত্র - বিতীয়পটলবচনেনৈকবাক্যতয়োদাহত- মৃড়ানীতন্ত্রবচনং
কোলপরমিতি বাচ্যম্। শিববিষ্ণুর্চনে দীক্ষা যস্তু চায়িপরিগ্রহঃ। ব্রক্ষচারিযতীনাঞ্চ শরীরে নাস্তি সূতকমিতি
জয়িসংহকল্পক্রমধৃত-বিষ্ণুজামলবচনেন শৈবাদীনামপ্যর্চনে
অশোদাভাবশ্রবণাৎ।

উচ্যতে কালিকায়াশ্চ তারায়াস্ত্রিপুরায়াশ্চ স্থন্দরি। বাহ্যপূজাজপৌ কার্য্যো সূতকে মৃতকেহপি চ। তত্রাপি নাচরেৎ সন্ধ্যাবিধানং হরবল্লভে ইতি পিচ্ছিলাতন্ত্রচতুর্দ্দশ-পট্টালকযোগাৎ মৃড়ানীতন্ত্রবচনমেতৎপরমেব জ্ঞেয়ম্। বিষ্ণুজামলবচনন্ত মুমুক্ষুসাধকপরম্। বাহ্যপূজাক্রমেণির ধ্যানযোগেন পূজয়েৎ। যদি কামী ন চেৎ কামী নিত্যং পূর্ব্ববদাচরেদিতি রাঘবভট্টগ্লতোক্রবচনাদিতি দিক্॥

স্ত্রীণাং রজোযোগে কালীতারাত্রিপুরোপাসিকাভিবিন। পূজনে নাধিকারঃ রজস্বলায়া অশোচতুল্যত্বাভিধানাৎ।

বিশূ ত্রোৎসর্গশিক্ষাদিয়ুক্তকদ্ম করণে দোষমাহ কুলাপ্রি—বিশ্ব ত্রোৎসর্গশিক্ষাদিয়ুক্তঃ কদ্ম করোতি যঃ। জপাচ্চনাদিকং সর্বন্সপবিত্রং ভবেৎ প্রিয়ে ইতি।। তত্রাপি
কিয়ৎপূজনে কৃতে বিশ্ব ত্রোৎসর্গোপস্থিতে নিরুক্তবচনে
তদ্যুক্তকদ্ম করণে দোষশ্রবণেন তত্ত্ত্যাগস্থাবশ্যকত্যা
উত্থানমন্তরেণ তদনিম্পত্তী পূজামধ্যে উথিতস্থা যৎ কর্ত্রব্যা
তদাহ রাঘবভট্টঃ—বিক্ষেপাদথবালস্থাজ্জপহোমার্চ্চনান্তরা।
উত্তিষ্ঠতি তদা স্থাসং ষড়ঙ্কং বিহাসেৎ পুনরিতি।

পূজামধ্যে গুর্কাভাগনে যৎ কর্ত্তব্যং তদাহ। কুলাপিবে একাদশোল্লাসে—পূজামধ্যে গুরো জ্যেষ্ঠে পূজ্যে বাশি
সমাগতে। নত্না ক্রয়াৎ স্থিতিং শিন্টমাচরেত্তদমুজ্যা।
জ্যেষ্ঠস্য চ কনিষ্ঠস্য শিম্যাবেকত্র সংস্থিতো। তত্র পূর্বাব বদাচারঃ কথিতঃ কুলনাগ্রিকে ইতি। অস্তার্থঃ পূজামধ্যে গুরো সমাগতে সতি জ্যেষ্ঠ তক্ষ্যেষ্ঠে পূজ্যে গুরুবৎ পূজ্যে শিক্টমাচরেদিতি শিন্টম্ অবশিক্টং পূজাবশিষ্টমিতি বাবৎ।

যতু, গুরোরতো পৃথক্ পূজামৌরত্যঞ্চ বিবর্জ্জয়েদিতি বর-দাতন্ত্রীয়সপ্তপটলবচনং তদনারস্বপূজাপর্ম্ এবং মহিদ-মর্দ্দিনীতন্ত্রদশমপটলবচনমপি—তদ্যথা পূজাকালে চ চার্ক্সি সাগচ্ছেচ্ছিয়ামন্দিরম্। গুরুর্কা শুরুপু্ত্রো বা প্রী বা বরবর্ণিনি। তদা পূজাং পরিত্যজ্য পূজয়েৎ স্বগুরুং প্রিয়ে। দেবতাপূজনার্থং যৎ দ্রব্যং গন্ধাদিকং প্রিয়ে। ত\$ সর্ববং গুরবে দ্যাৎ পূজয়েন্নগনন্দিনি। তদৈব সহসা দেবি দেবতা প্রীতিমাপ্নু য়াদিতি।

অথ নৈমিত্তিকার্চনম্। তল্লক্ষণং যথা বরদাতন্ত্রে দ্বিতীয়-পটলে—নৈমিত্তিকন্ত কল্পোক্তকালোখং পরমেশ্বরীতি। নিবক্ষে ঊনবিংশপটলেহপি—নিত্যং নৈমিত্তিকং কাম্যং সাপেক্ষং পূর্ব্বপূর্বত ইতি। তথা বহনীলতত্ত্তে পঞ্চমপটলে —নিত্যার্চ্চনরতো মর্ত্রী কুর্ধ্যান্মৈমিত্তিকাচ্চনম্। নৈমিত্তি-কাচ্চ নে সিদ্ধিঃ, কুর্য্যাৎ কাম্যমখণ্ডিতমিতি॥ প্রতিমায়াং বিশেষো যথা কুলার্ণবে ঘষ্ঠোল্লাদে—অরূপং রূপিণং কৃষা কম্ম কাণ্ডরতা নরাঃ। গবাং সর্ববাঙ্গজং ক্ষীরং ভ্রবেৎ স্তনমুখাৎ যথা। তথা সর্ব্বগতো দেবঃ প্রতিমাদিষু রাজতে ইতি॥ তথা তত্ত্বৈ—আভিরূপ্যাচ্চ বিশ্বস্থ পূজায়াশ্চ বিশে-ষতঃ। সাধকস্ম চ বিশাসাৎ সান্নিধ্যং দৈবতং ভবেদিতি সর্বত্র। ফলতস্তু যোগিনীতন্ত্রেংষ্ট্রমপটলে—মন এব ভু বৈ নিত্যং মন এবাত্মকারণম্। মনএব মনুষ্যাণাং কারণং বন্ধমো-ক্ষয়োঃ। তনিষ্ঠন্তৎপরং জাতং তন্ম্থ্যং ছুংথকারণম্। চিত্ত-মন্তর্গতং কুষ্টং তীর্থস্নানে ন শুধ্যতি। শতশোহপি জলৈ-ধৌতং স্থরাভাগুমিবাশুচি॥ যদি বসতি গুহায়াং পর্বতাগ্রে চিরং বা যদি পঠতি পুরাণং বেদসিদ্ধান্ততত্ত্বম্। যদি হৃদয়-মশুদ্ধং সর্ব্বমেতদ্বিক্রদ্ধমিতি।

প্রতিমাযন্ত্রয়োরেকত্র পূজানিদেধমাহ। মাতৃকাভেদ-তত্ত্বে ছাদশপটলে—জন্মস্থানং মহাযত্ত্রং যদি কুর্য্যান্ত, সাধ- কঃ। অত্র মৃতিং ন কুর্যান্ত, কদাচিদপি মোহতঃ। যদি
মুর্ভিং প্রকুর্যান্ত তত্র যন্ত্রং ন কারয়েৎ। যদি কুর্যান্ত,
মোহেন যজেদ্বারদ্বয়ং প্রিয়ে। দ্বিগুণং পূজনং তত্র দ্বিগুণং
বলিদানকম্। দ্বিগুণং প্রজপেনাত্রং দ্বিগুণং হোময়েৎ স্থবীঃ।
অক্তথা বিফলা পূজা বিফলং বলিদানকম্। সর্বাং হি বিফলং
যন্ত্রাজন্মাদ্যন্ত্রং ন কারয়েদিতি॥ যন্তু, সংস্থাপ্য পূজয়েত্রঞ্চ
যন্ত্ররাজং ঘটোপরি। দেবাথো চ ঘটং দিব্যং স্থান্ট্রং লক্ষণাদ্বিতম্। তত্র যন্ত্রং সমারোপ্য পূজয়েদ্বিভবাবধীতি শাস্তবীতন্ত্রীয়চতুর্দ্দশপটলবচনং তদমপূর্ণাপূজাপরং প্রকরণবলাৎ
দ্বিগুণপূজাভিপ্রায়েণ বেত্যবিরোধঃ।

প্রতিমাথে ঘটস্থাপনমাহ। মাতৃকাভেদতন্ত্রে দ্বাদশপটলে—প্রতিমায়াশ্চ পুরতো ঘটং সংস্থাপ্য যত্নতঃ। পরিবারান্ যজেত্ত্র ঘটে তু পরমেশ্বরি। যন্ত্রাধিষ্ঠাতৃদেবাংশ্চ
ঘটবক্ত্রে প্রপূজয়েং। সমস্তদেবতারূপং ঘটস্ত পরিচিন্তয়েং।
স্রক্রমস্বরূপোহয়ং ঘটোহি পরমেশ্বরীতি। যত্র ঘটস্থাপনস্থ
নাবশ্যকতা তত্র শালগ্রামেহপি সর্বদেবতাপূজা সিধ্যতীতি পূর্ব্বে এব দশিতত্বেন তদধিকরণকাবরণপূজানির্ব্বাহে
দোববিরহাং শ্রীকৃষ্ণাদিপ্রতিমাসমিধ্যে তথা শিষ্টব্যবহারদর্শনাচ্চ।

অথ ধ্যানানুরূপনিশ্মিতমূর্ভিপূজেতিকর্ত্তব্যতা। যথা গুপুসাধনতন্ত্রে ষষ্ঠপটলে—ধ্যানানুরূপিণীং মূর্ত্তিং যদি পজাদিকঞ্চরেৎ। আচারঃ কীদৃশস্তত্র কোবা তত্র প্রপূ-জয়েদিতি দেবীপ্রশ্নানন্তরং শ্রীশিবউবাচ। শৃণু বক্ষ্যামি দেবেশি যন্মাং ছং পবিপৃচ্ছদি। এতৎ সর্বাং প্রবক্ষ্যামি भावधानावधात्रमः। পূজায়ाः পূর্ব্বদিবসে আদে কোরাদি-কঞ্জে । হবিষ্যালং মহেশানি ভোজনং বা নিরামিষম্। ততঃ পরশ্মিন্ দিবসে প্রাতঃ স্লাত্বা তু সাধকঃ। নিত্য-পূজাং সমাপ্যাদে। দেববচ্ছুদ্ধমানসং। গুরুব্বা গুরুপুত্রো বা গুরুপত্নী চ স্কুবতে। আগমোক্তাসু পূজান্ত অধিকারী গুরু: স্বয়ম্। গুরোরভাবে দেবেশি স্বয়ং পূজাদিকঞ্রেৎ। এভির্বিনা মহেশানি তান্ত্রিকৈর্দেশিকৈর্ঘদি॥ পূজাদিকং সর্বাং ভূজ্যতে যক্ষরাক্ষপৈ:। অতএব মহেশানি গুরু: কর্তা বিধীয়তে। ব্রহ্মরূপো গুরু: সাক্ষাদ্যদি পূজাদি-কঞ্চরেৎ। এতৎ সর্ব্বং মহেশানি শতকোটিগুণং ভবেৎ॥ অথবা পরমেশানি স্বয়ং পূজাদিকঞ্চরেং। স্বয়ং পূজাদিকং ক্বত্বা পূজাদ্রব্যাদিকঞ্চ যৎ। তৎসর্কাং পরমেশানি গুরোরগ্রে निरवषरे । खरतो षरख मरहमानि मर्काः कार्षिक नः ভरवः। **७ क्र भन्नो मरङ्गानि** यनि পृकानिक श्वरतः। वनिनानानिकः কার্য্যং তত্র হোমং বিবর্জ্জয়েৎ। হোমীয়দ্রব্যমানীয় দেব্যগ্রে ञाभरः मृत्रदेशः। मृत्रमञ्जः नमूकार्यः महार्परेवा निर्वेषरः । তেন হোমফলং জাতং ন বহেগ হোময়েদ্বুধঃ। গুরুং বিলজ্য্য শাস্ত্রেহস্মিনাধিকার: সুরৈরপি। গুরুণা যৎ রুতং দেবি তৎ সর্ব্যক্ষয়ং ভবেং। ঋত্বিক্পুত্রাদয়ো দেবি শাস্ত্রোক্তা বহবঃ প্রিয়ে। তন্ত্রোক্তায়াং মহেশানি পূজায়াং নৈব তে ক্ষমা n পুরোহিতং সমানীয় যদি পুজাদি কারয়েং। তস্ম সর্বার্থ-হানিঃ স্থাৎ ক্রুদ্ধা ভবতি চণ্ডিকেতি॥ ধ্যানানুরূপিণীং মূর্ত্তি-মিতি অত্র বিধাণেভূাহাম্ অভাগা মূর্ত্তিমিত্যভা দিতীয়াস্ত-তাত্পপতে:। অথবা কচিদপবাদবিষয়েহপ্যুৎসর্গোহভি- নিবিশতে ইতি শ্যায়াং পূজেত্যতো-যোগে নো ষষ্ঠা। অত্ত পুরোহিতাদিদারা যভান্ত্রিকপূজানিষেধাে দৃশ্যতে তছুপা-দিতদেবতাপ্রতিমূর্ত্তিপূজাপরম্। স্বস্বোপাদিতদেবতাপূজায়াং দামান্যতাে গুরুতংপত্নীতংপুলৈব্বিনা অন্যেষামনধিকার-শ্রবণেন তদৈক্যযোগাপ্রচুরতরব্যবহারবিরোধাপভেঃ।

অথ কাত্তিকামাবস্থানিমিত্তক-শ্যামাপূজাকালো নির্দ্রপ্যতে। মুণ্ডমালাতস্ত্রে—তুলাদিত্যে নিশার্দ্ধে তু পঞ্চদ্যাং
নগার্গ্রে। পূজ্যেৎ কালিকাং তত্র প্রচণ্ডাং মৃণ্ডমালিনীমিতি॥ তীর্থমামিশোধিতরহতন্ত্রসারধৃতকামাখ্যাতন্ত্রে চ—
প্রতিসংবৎসরক্ষৈব কুর্য্যাৎ কালীমহোৎসবম্। কার্ত্তিকে
ছু বিশেষেণ অমাবস্থা—নিশার্দ্ধকে। তস্যাং সংপূজ্যেদেবীং ভোগমোক্ষপ্রদায়িনীমিতি। এতেন পূজায়া নিত্যত্বং
কাম্যত্বঞ্চ সংযোগপৃথক্ষ্যায়াৎ॥ তথা তন্ত্রকোমুদীধৃতকালীকুলসর্ব্বস্থে—কার্ত্তিকস্থাপ্যমাবস্যা তস্যাং কালীপ্রপূজনম্। কুলরক্ষেয়ু যং কুর্য্যাৎ স গচ্ছেচ্ছিবসির্নিধিম্।
অথবা পূজ্যেৎ কালীং কৃষা মূর্ত্তিং মহীময়ীম্। পূজয়িষা মহারাত্রো সর্ব্বসিদ্ধীশরো ভবেদিতি। অত্র যৎ কুলরক্ষে পূজা
দৃশ্যতে তৎ কৌলিকানামেব। কুলরক্ষাস্ত্রশোকাদয়ঃ।

অত্র শৈবাদীনামপ্যধিকারমাহ তন্ত্রকৌমুদীধৃতজামলবচনং—শৈবো বা বৈঞ্চবো বাপি বোহর্জয়েচানুষঙ্গতঃ
একবিংশকুলোপেতো বদেদ্বিস্থুপুরং নরঃ। প্রান্তরে নর্বাথা
কার্য্যা যত্নাদপি চ স্থাত্রতে। প্রতিসংবংসরং কুর্য্যাৎ কালিকায়া মহোৎসব্যতি। অপিশকাদ্যাণপত্যসৌরয়োর্গ্রহণম্।
পূজা ঘর্দ্ধরাত্রএব যথ কর্ত্র্যা তৎপূর্বব্যনেষক্রম্। কালী-

কুলসন্তাবেহপি—প্রতিসংবৎসরং কুর্য্যাৎ কালিকায়ামহোৎসবম্। কার্ত্তিকে তু বিশেষেণ অমাবাস্থা—নিশার্দ্ধকে।
তত্র সংপূজ্যেদেবীং ভোগমোক্ষপ্রদায়িনীমিতি॥ তথা রহত্যেতলাতন্ত্রে—অমাবস্থার্দ্ধরাত্রেহি দক্ষিণাং পূজ্যেৎ পরামিতি। তীর্থস্বামিপ্পতস্বতন্ত্রতন্ত্রে চ—তুলাদিত্যে নিশার্দ্ধে চামাবস্থায়াং নগাত্মজে। কালিকাং পূজ্যেত্ত্র প্রচণ্ডাং মৃগুমালিনীমিতি। তন্ধ্তিহন্যত্রাপি—নিশার্দ্ধে পূজ্যেদেনাং
শ্রশানালয়বাসিনীমিতি। অপিচ ব্যোমকেশসংহিতায়াং—
তুলার্কে যস্ত্বমাবাস্থা—নিশার্দ্ধে ঘোরদক্ষিণাম্। পূজ্যেদ্বিধিবন্ধক্র্যা সর্ব্বসিন্ধীশ্বরা ভবেদিতি।

অথ নিশার্দ্ধে পূজাবিধানম্। তত্র নিশায়া অর্দ্ধং নিশার্দ্ধমিতি ষষ্ঠীদমাদেন নিশার্দ্ধশকো রাত্রেঃ পূর্ব্বার্দ্ধমপরার্দ্ধশু বন্ধু হু
শক্ষোতি তথা দতি পূজাকালস্থানিয়তত্বাপত্তিঃ। মৈবং শরৎকালে চ দেবেশি দীপযাত্রাদিনেহপি চ। অমাবস্থাং দমাদাস্ত মধ্যরাত্রো বিচক্ষণঃ। মুগ্ময়ীং পুত্তলীং কৃষা দীপাদিভিরলঙ্কতাম্। বলিং নানাবিধং দভাদাক্সভাশুসমন্বিতম্।
নৃত্যগীতকোত্বক্ষ যাবৎ দূর্য্যাদয়ো ভবেৎ। প্রাত্তকালে
ভদ্ধতোয়ে স্থাপয়েদরিনাশিনীমিতি রামানন্দতীর্থস্বামিশোধিতরহতন্ত্রদারধ্বতাত্তরকামাখ্যাতন্ত্রবচনেন চতুর্দ্দশী
দিনীবালী দন্ধিবেলার্দ্ধরাত্রকে। তত্র সংপূজ্বয়ৎ কালীং যথাশক্ত্ব্যপচারত ইতি তারাখণ্ডবচনেন চ নিরুক্তবচনানামেকবাক্যতয়ার্দ্ধরাত্রশক্ষম্থ মধ্যমপ্রহরদয়সন্ধিকালপরত্বাৎ তত্ম
তথাচকত্বাচ্চ।

অত্র সন্ধিকালস্থাতীব দৃক্ষত্বাৎ পরিভাষয়া তদ্ঘটিভ-

মুহূর্ত্তাত্মককালএব গৃহতে ৰথা অফস্যাঃ শেষদত্তে ভু নবম্যাঃ পূর্বব এব চ। অদ্ধরাত্তে মহাঘোরা আবিভূতা মহীতলে। তস্মান্ত দক্ষিণা কালী দক্ষযজ্ঞবিনাশিনী। পূজনীয়া সাধ-কেন্দ্রৈর্মহাবিভববিস্তরৈরিতি পিচ্ছিলাতন্ত্রচতুর্দ্দশপটলবচন-প্রাপ্তশারদীয়দদ্ধিপূজায়াং সন্ধিক্ষণঘটিতমুহূর্ত্তাত্মককাল এব গৃহতে। এতদেবোক্তং কন্ধালমালিনীতন্ত্রে—বিভক্তা পঞ্চ-দশধা যো মুহূর্তাষ্টমো নিশি। অন্ধরাত্রসিদং প্রোক্তং কালীতারাপ্রিয়ং শিবে ইতি তুলার্কে বহুলে পক্ষে পঞ্চদশ্যাং মহেশ্বর। যথোপচারেঃ সংপূজ্য মহানিশি নৃপে। ভবেদিতি কালীকল্পোক্তবচনে তুলার্কে যস্ত্রমাবাস্থা—নিশার্দ্ধে ঘোর-দক্ষিণাম্। পূজয়েদিধিবস্তক্ত্যা সর্ববিদন্ধীশ্বরো হি সঃ। কুছু-মহানিশায়াঞ্চ মহাপুজেতি কীত্তিতেত্যাদি ব্যোমরত্বতস্ত্রোক্ত-বচনেযু চ মহানিশাপদং নিরুক্তসন্ধিসময়ঘটিতকালবোধকম্। এতদেবোক্তং যোগিনীতন্ত্রে দ্বিতীয়পটলে—শ্লিষ্টে দ্বে ঘটিকে বে তু রাত্রের্মধ্যমযাময়োঃ। সা মহারাত্রিরুদ্দিষ্টা তৎকৃতং হাক্ষাং ফলম্। যদ্যৎ জপ্তং ভ্তং যদ্যৎ কৃতঞ্চ মোক্ষ-সাধনম্। তৎ সর্ব্বমক্ষয়ং যাতি তথানস্ত্যায় কল্পতে ইতি। অত্র দিতীয়প্রহরীয়শেষদগুদ্ধর-তৃতীয়প্রহ্রীয়াদ্যদগুদ্ধাত্মক-কালস্থ মহারাত্রিষমভিহিতম্ ৷ এবঞ্চ সতি সন্ধিক্ষণঘটিত-তাদৃশদশুচতুষ্টয়মেব শ্যামাপূজায়া মুখ্যঃ কালঃ। কন্ধাল-মালিনীতন্ত্রেহপি পূর্ব্বাপরদণ্ডসহিতাষ্টমমূহুর্ত্তা গৃহতে এত ছচনৈকবাক্যত্বাৎ তবৈশ্যব সাঙ্গপূজানিৰ্ব্বাহকত্বাচ্চ।

নিরুক্তকালে পূজায়া বীজন্ত তদা দেব্যা আবির্ভাবএব পূর্ববৃষ্টান্তিতশারদীয়সন্ধিপূজাবং। তত্তকং বিশ্বসারতক্ষে—

কার্ত্তিকে কৃষ্ণপক্ষে ভূ পঞ্চদশ্যাং মহানিশি। আবিভূতা মহাকালী যোগিনীকোটিভিঃ সহ। অতোহত্র পূজনীয়া সা তস্মিন্নহনি মানবৈরিতি॥ ভৈরবতন্ত্রেহপি—কার্ত্তিকে কৃষ্ণপক্ষে তু পঞ্চনশ্যাং মহানিশি। আবিরাসীন্মহাকালী কলো শীত্রফলপ্রদেতি॥ জামলে—অবশ্যং পূজনং দেব্যা অমাবস্থাং সমাচরেৎ। কার্ত্তিকে তু বিশেষেণ আবিভূতা জগন্ময়ী। নিশীথে পূজিতা তত্র নরাণাং ভুক্তিমুক্তিদেতি॥ রহদ্ধর্মপুরাণীয়দ্বাবিংশাধ্যায়ে তীর্থকথনরাবণবধপ্রদক্ষেহপি— রাত্রো নিশীধব্যাপ্তায়ানমাবাস্থামিহৈব তু। পৃথীতলং সমায়াতা কালী দিগুসনাগ্নিকা। অতস্তামত্র বৈ ভক্ত্যা দেব-দেবাং দ্বিজাতয়ঃ। পূজয়েয়ুমুদা শ্যামাং পশুপুষ্পার্ঘ্য-সম্পদ। বাসোভিভূ গণৈরদ্মৈঃ পায়দৈর্বিবিধৈরপি। গীতৈ-ৰ্বালৈশ্চ নৃত্যৈশ্চ দীপযাত্রাসমন্বিতৈরিতি।

যত্ত অর্করাত্রাৎ পরং যচ্চ মুহূর্ত্বয়মেব চ। সা মহা-রাত্রিরুদ্দিষ্টা তত্র কৃষাক্ষয়ো ভবেদিতি স্বতস্ত্রতন্ত্রবচনেন তুলার্কে যন্ত্রমাবাস্তা—নিশার্ট্রে ঘোরদর্শনাম্। পূজ্ঞাং বিধিবস্তক্ত্যা সর্ব্যসিদ্ধীশ্বরো হি সঃ। কুহুমহানিশায়াঞ্ছ মহা-পূজেতি কীত্তিতা। মহানিশাত্র বিজ্ঞেয়া অর্দ্ধরাত্রাৎ পরং শিবে। নাড়ীচতুষ্টয়ং শস্তং তত্র পূজা বহাফলেতি বচনেন মহার ত্রামমাবাস্থাং দক্ষিণায়াঃ প্রপূজনম্। কাত্তিকে মাদি তত্রাপি কালীপ্রীতিকরং পরমৃ। তত্ত্রাপি চ নিশীথে তৎ মহাসিদ্ধিপ্রদং নৃণাম্। নিশীথাৎ পরতো দেবি যতু নাড়ী-চ্ছুফায়ম্। সামহার¦ত্রিরুদ্ধিষ্টা তত্র পূজা মহাফলা। তার-তম্যেন দেবেশি পূজায়াঃ ফলকল্পনমিতি জ্ঞানার্ণবীয়বচনেন চ

অন্ধরাত্রাৎ পরদণ্ডচতুষ্টয়াত্মককালস্থ পূজায়াং মুখ্যত্বমভিহিতং তন্ধ নিরুক্তবচনানাং গৌণকালবিধায়কত্বাৎ ॥ নচ ভবদুক্তকালএব গৌণকালঃ অন্ধরাত্রাৎ পরদণ্ডচতুষ্টয়াত্মককালো মুখ্যকাল এবেতি বাচ্যম্। সর্ব্বত্যোভরকালস্থৈব গৌণস্বশ্রবণেন পূর্বকালস্থ গৌণস্বাসন্তবাৎ। অতএব
জ্ঞানার্ববন্দন নিশীথে পূজায়া মহাসিদ্ধিপ্রদন্তমুক্ত্বা অন্ধরাত্রাৎ পরকালকৃতপূজায়া মহাফলত্বমুক্তং মহাফলাপেকয়া
মহাসিদ্ধেগরীয়স্থাৎ।

বস্তুতস্তু অর্দ্ধরাত্রাৎ পরমূহূর্ত্তাত্মককালঃ প্রশস্তকালঃ
যোগিনীতস্ত্রোক্তদণ্ডচতৃষ্টয়াত্মকমূথ্যকালান্তর্গতন্থাৎ। তৎপরমূহূর্তাত্মককালস্ত বিহিতকাল এব। যথা একোদিষ্টে
একোদিষ্টস্তু মধ্যাহ্লে ইত্যানেন মধ্যাহ্নকালস্ত সামান্যতো
বিহিতত্বমভিধায় তদন্তর্কান্তিকুতুপরৌহিণয়োঃ প্রশস্তত্বমূক্তম্।
শেষদণ্ডময়ে পূজায়া মহাফলত্বং পূর্ববদণ্ডময়স্তাপি সিদ্ধিপ্রদন্তং নিশাথপূজায়াঃ সিদ্ধিপ্রদন্তস্থোক্তত্বাৎ নিশীথশব্দেন
উক্তযুক্ত্যা মধ্যমপ্রহরদ্বয়সন্ধিসময়ঘটিতদণ্ডচতৃষ্টয়ং প্রতিপাগ্রতে তিস্তব্ব সন্ধিপূজানিস্পাদকত্বাৎ।

অত্র যদ্যপি সন্ধিকালপরদগুদ্ধয়শু মহাসিদ্ধিমহাফলোভয়প্রশ্নোজকত্বমভিহ্তিং তথাপি তশু সিদ্ধিপ্রয়োজকত্বমেব
যথা স্বর্গসাধনাশ্বমেধে মুক্তিসাধনপুরুষোভমমুখদর্শনে
হতে স্বর্গং পরিভূয় মুক্তিরেব জায়তে তথাত্রাপি
কএবমাহ গুরুলপুপ্রয়োজক-দ্যোগুরুফলমেব নভূভয়ঞ্চ প্রয়োজকৈক্সিন্। এবঞ্চার্দ্ধরাত্রাৎ পরদগুচতুষ্ট্রমশু প্রথমদণ্ডদ্বয়ং প্রদণ্ডদ্বয়ং বিহিত্মিতি॥ যদ্য কায়বৃত্ত- ছারা ঝটিতি স্বর্গাতাত্মকমহাফলভোগানস্তরমেব মহাসিদ্ধ্যা-ত্মকপরমমুক্তির্জায়তে।

কেচিভু নিশা তু পরমেশানি সূর্য্যে চান্তমুপাগতে। প্রহরে চ গতে রাত্রো ঘটিকে ছে পরে চযে। মহা-নিশা সমাখ্যাতা ততশ্চাতিমহানিশা। অৰ্দ্ধরাত্রগতে দেবি পশুভাবেন পূজয়েৎ। দশদণ্ডে তু যা পূজা তৎ সর্বনক্ষয়ং ভবেৎ॥ ষষ্ঠক্রোশে মহেশানি তৎ সর্ববময়তোপমম্। সপ্তমক্রোশকে দেবি সর্ববং ক্ষীরোপমমূ ভবেৎ। অষ্টম-ক্রোশকে দেবি দ্রব্যতুল্যং ন সংশয়ঃ। অতঃ পরং মহে-শানি বিষতুল্যং ন সংশয়ঃ॥ এতৎ সর্বাং মহেশানি পশুভাবে ময়োদিতম্। দিব্যবীরমতে দেবি তত্ত্বক্ষানে প্রপূজয়েং। পঞ্চতত্ত্বং সমানীয় যদি পূজাপরো ভবেং। কালাকালবিচারস্তু দেবি তত্র বিবর্জয়েৎ। অন্ধরাত্রগতে দেবি কুলপূজা প্রকীতিতা। তত্ততন্ত্রামুসারেণ সর্বাং পূজাদিকঞ্চরেং। অতি স্নেহেন দেবেশি তব স্থানে প্রকা-শিতমিতি গুপ্তসাধনতন্ত্রষষ্ঠপটলীয়বচনজাতেন পঞ্চমমুহূর্তা-বধ্যষ্টমমুহূর্ন্ত পর্যন্তং পশূনাং কালীপূজাকালঃ। বীরাণাস্ত তৎপরমেব।

নচ মহানিশায়াং দেব্যা আবির্ভাবাদতোহত্ত সা পৃজনীযেতি বাচ্যম্। আবির্ভাবপ্রতিপাদকবচনস্থ-মহানিশাপদস্য গুপুসাধনোক্তমহানিশাপরত্বাৎ॥ যগুপ্যবশ্যং পূজনং
দেব্যা অমাবস্থাং সমাচরেৎ। কার্ত্তিকে তু বিশেষেণ আবিভূতা জগন্ময়ী। নিশীথে পূজিতা তত্র নরাণাং ভুক্তিমুক্তিদেতি জামলবচনে রাত্রো নিশীথব্যাপ্রায়ামমাবাস্থামিহৈব তু।

পৃথীতলং সমায়াতা কালী দিখসনাত্মিকা। অতস্তামত্র বৈ ভক্ত্যা দেবদেবীং দ্বিজাতয় ইত্যাদি বৃহদ্ধর্মপুরাণবচনে চ নিশীথে আবির্ভাবঃ শ্রেয়তে তথাপি নিশীথশব্দস্থাপি গুপু-সাধনোক্তমহানিশাপরত্বেন সমাধাতব্যম্।

নচ ভবন্মতে দেব্যা আবির্ভাবঃ পশুমতিসিদ্ধনহানিশায়াণ্
অতিমহানিশায়াং বা। নাছঃ তত্রাবির্ভাবে যদ্বর্য উভয়দিনে পঞ্চমমুহুর্ত্তে দর্শালাভঃ অতিমহানিশায়াং দর্শলাভস্তত্র
পূজায়া অসিদ্ধ্যাপত্তেঃ। শারদীয়সদ্ধিপূজাবদাবির্ভাবাধিকরণক্ষণঘটিতমুহূর্ত্তএব পূজায়াং বিহিতস্বাৎ। ন দিতীয়ঃ তত্র
প্রথমে দিতীয়ে তৃতীয়ে বা নাহ্যতমেয়ু একস্মিন্ দর্শলাভে
অহ্যস্মিন্ তদলাভে উক্তদোষতাদবস্থ্যাৎ। ন তৃতীয়ঃ পশুমতিসদ্ধমহানিশায়াং পূজায়া অসিদ্ধ্যাপত্তেরিতি বাচ্যম্।
অতিমহানিশাঘটকাফমমুহূর্ত্তএবাবির্ভাবাৎ। তত্রাবির্ভাবস্থ
সর্বব্রচনপ্রতিপাছস্থাৎ।

যত্তু অন্টমমূহুর্ত্তএবাবির্ভাবে বীরপূজায়া অসিদ্ধ্যাপতিঃ
অর্দ্ধরাত্রপরকালস্থাবির্ভাবাধিকরণক্ষণাঘটিতত্বাৎ। ন চান্টমমূহুর্ত্তপর্য্যন্তং পশূনাং পূজাকালো নির্নাপিতঃ বীরাণান্ত
বিশেষো নোক্ত ইতি বাচ্যমৃ। অর্দ্ধরাত্রগতে দেবি কুলপূজা
প্রকীত্তিতেতি শুপুসাধনীয়তন্ত্রএবোক্তত্বাদিত্যুচ্যতে। তন্ন
বীরাস্ত্র আবির্ভাবাধিকরণক্ষণঘটিতকালে পূজয়ন্ত তদ্যত্র
বা তয়া তম্ম দোষাভাবাৎ। অতএবোক্তং তত্ত্বৈ—পঞ্চত্বং
সমানীয় যদি পূজাপরো ভবেৎ। কালাকালবিচারস্ত দেবি
তত্র বিবর্জ্জয়েদিতি॥ নচ যম্বর্ষে উভয়দিনে উৎপত্তাধিকরণক্ষণঘটিততাদৃশকালালাভস্তম্বর্ষে পূজায়া অসিদ্ধিপ্রসঙ্গঃ

ইতি বাচাম্। উভয়দিনে প্রশস্তকালালাভে পূর্বদিনে কর্ত্তব্যক্ত শাস্ত্রদিদ্ধরাৎ। তত্মাৎ পশুভাবাবলন্ধিভিরপ্তমন্মুর্ত্তিএব পূজনীয়ং তত্যেব প্রশস্ততমহাৎ। অতিমহানিশাঘটকতৎপূর্বব্যহূর্ত্তম্য যথাক্রমং প্রশস্ততরপ্রশস্তহাৎ নানাব্দনেমু অপ্তমমূহূর্ত্তম্য প্রশস্ততমন্ধেনাভিহিতহাৎ তত্তিবাবিভাবদর্শনাচ্চ। মহানিশাত্মকপঞ্চমমূহূর্ত্তম তু বিহিতকালত্বং প্রশস্তহ্বং বা।

নচৈতদদঙ্গতং পঞ্মমুহূর্ত্তব প্রশস্ত্তমঃ কালস্তত্ত্র-মুহূর্তত্তরস্থ প্রশস্ততরপ্রশস্তত্ত্বাৎ উত্তরোত্তরমুপকরণদানস্থ ফলন্যনত্ত্রবণাদিতি বাচ্যম্। মহানিশাপেক্ষয়া অতিমহানিশা-ঘটকমুহূর্ত্তপ্রশস্তত্বস্থান্যাথাৎ সর্বতন্ত্রেষু অতিমহানিশায়-কাঊমমুহূর্ত্তএব পূজাবিধানাচ্চ। উপকরণদানস্ত ফলকথনস্ত কাম্যন্বপ্রতিপাদনায় দীপান্বিতামাবাস্থানিমিত্তকপূজায়া নি-ত্যত্বং নৈমিত্তিকত্বং কাম্যত্বঞ্চ তস্ত্য পূৰ্ব্বমেব প্ৰতিপাদিতত্বাৎ। শ্লিষ্টে ছে ঘটিকে ছে তু রাত্রের্মধ্যমযাময়োঃ। সা মহারাত্রি-রুদ্দিষ্টা তৎকৃতং ছক্ষয়ং ফলমিতি যোগিনীতন্ত্রীয়দ্বিতীয়পটল-বচনেন যদ্ঘটিকাচভুষ্ঠয়স্ত মহারাত্রিত্বযুক্তং তৎ সপ্তমযুহ,ত্র্ং গৃহীবৈৰ নত্বস্থা তথা সতি অন্তম্মুহুত্ৰিৎ পরং পূজা-প্রসক্তেঃ। যুক্তকৈতৎ পশুবীরভেদেনৈতৎপূজা কুত্রাপি নোক্তা কুত্রচিম্মহানিশায়াং পূজোক্তা কুত্রচিন্মধ্যরাত্তে কুত্র-চিদৰ্দ্ধরাত্ত্রে সর্ব্ববচনানামেকবাক্যতয়াবির্ভাবাধিকরণসন্ধি-কণঘটিত মধ্যমপ্রহর্দ্যশ্লিষ্টবটিকাদ্যমেব পূজাকালঃ। ভাব-ভেদেন সা কা ইতি জিজাসায়কদেবীপ্রশ্নঃ। যথা নিশা বা কীদৃশী নাথ কীদৃশী বা মহানিশা। ভাবভেদে মহাদেব তম্বদস্ব দয়ানিধে ইতি। নিশা তু পরমেশানীত্যাদিনা মহাদেব-স্তত্তুত্তরং বিদধাতিস্ম।

এবঞ্চ যত্র যত্র মহানিশাপদেন মধ্যমপ্রছরম্বয়প্লিষ্টবাটিকা-দ্বামচ্যতে তৎপশূন্ প্রতি অদ্ধরাত্রাৎ পরং যত্ত ইত্যাদিবচনা-ভ্যাং দ্বিতীয়প্রহরাৎ পরং দণ্ডচতুষ্টয়ং মহানিশেতি যত্নচ্যতে তদীরান্ প্রতি ন কুত্রাপ্যসুপপত্তিরিত্যাহস্তন্ন যতো গুপ্তসাধনতন্ত্রবচনেনাষ্ঠমমূহুর্ভ স্থ ন পূজাপ্রশস্তকালছমূকং তথা সতি অৰ্ধ্বাত্ৰগতে দেবি পশুভাবেন পূজ্যেদিত্যস্থ অৰ্বৱাত্ৰগতে দেবি কুলপূজা প্ৰকীত্তিতেত্যস্থ চানঙ্গত-ত্বাপত্তেঃ। বস্তুতস্তু গুপুসাধনতন্ত্রবচনানি পঞ্চমমুহূর্ত্তে পূজাবিধায়কানি যতন্তত্ত্ৰ তাস্খৈব মহানিশাত্বকীত নাভং-পর্মুহুর্ভ ত্রয়স্থাতিমহানিশাত্বকীর্ত নাচ্চ। অতিমহানিশায়াং ন কুত্রাপি দীপাশ্বিতামাবাস্থানিমিত্তকপূজাবিহিতা প্রত্যুত তত্ৰ পশুপূজানিষেধশ্চ যথা অতিমহানিশান্তমূক্ত্বা তত্ৰ ন পূজয়েদ্দেবীং পশুভাবঃ কদাচনেতি। নিশা তু পরমেশা-নীত্যাদিবচনানি তু চতুর্দশ্যাং মহামায়াং কুৎস্নাং সংপূজ-য়েদ্যদি। মহানিশাস্থ দেবেশি তস্ত সিদ্ধিঃ করে স্থিতেতি কাম্য -প্রকরণীরশ্যামার্চ্চনচন্দ্রিকাগ্বতবচনবিহিত - মহানিশাপ্রক-কাম্যপূজাকালপরাণ্যেব ধ্যানাসুরূপিণীং মূর্ত্তিং যদি পূজা-দিকং চরেদিতি গুপ্তসাধনতন্ত্রীয়দেবীপ্রশ্নবচনে শ্ৰবণাৎ। যত্ৰ যদ্যাদি শ্ৰায়তে তত্ৰ কাম্যন্থমেব তত্ত্ শাস্ত্রদীপিকায়ামার্যমেচ্ছাধিকরণে পার্থসার্থিমিশ্রেণ ^{যদি} ্বৈবাদি-শব্দানাং নিত্যবিধিবোধ্যত্ববিরোধিতেতি। **অ**তএ^ব শ্রামার্চনচক্রিকার তকাম্যপূজাপ্রকরণীয়নিরুক্তবচনে কাম্যস্থ

প্রতিপাদনায় যদীতি প্রযুক্তম্। অতএব তত্ত্র বীরাণাং পঞ্চতত্ত্বসমবহিতপূজায়াং কালনিয়মো নাভিহিতঃ বীরাণাং পঞ্চতত্ত্বং বিনা পূজায়া অসিদ্ধেঃ। এতদ্বচনানি যদি দীপা- বিতাপূজাপরাণি স্থ্যস্তদা বীরাণামপুত্রপত্যধিকরণসন্ধিক্ষণ- ঘটিতকালস্থা বিধেয়স্থং স্থাৎ দীপান্বিতানিমিত্তকশ্যামা- পূজায়াস্তদাবিভাবনিমিত্তকশ্বাৎ।

আধুনিকৈন্ত নিশা তু পরমেশানীত্যাদি গুপ্তসাধনতন্ত্রবচনৈঃ পঞ্চমসূত্রন্ত দীপান্বিতামাবাস্থানিমিত্রকলাপিজাপ্রশস্তকালত্বমূক্তং তৎপরমূত্র্ব্তরয়ন্ত বিহিত্ত্বম্ অতিমহানিশায়াং পূজানিধেন্তপ্রপ্রশস্তকলার্থইতি লিখনাং। তদসং
রাত্রো নিশীথব্যাপ্রায়ামমাবাস্থাতিথোকিল। পৃথীতলং সমায়াতা
কালী দিখসনাগ্রিকেত্যাদি-বচনে নিশীথে আবির্ভাবশ্রেণাং
পঞ্চমমূত্র্বস্থোৎপত্তিক্ষণাঘটিতত্বাৎ দীপান্বিতামাবস্থানিমিত্তকপূজায়া এতাদৃশভাবভেদকবচনাভাবাৎ পূর্ব্বোক্তবচনবিরোধাচ্চ। ন চেদমেব ভাবভেদকবচনং তথা সতি
বারপূজায়াং কালনিয়মস্ত বক্তব্যত্বাং। নিশা ন্বিত্যাদিবচনানি
তু পূর্ব্বেব সমাহিতানি।

ঋজবন্ত গুপ্তদাবনতন্ত্ৰবচনজাতেন পঞ্চমমুহূর্ত্তাবধ্যন্তমমূহূর্ত্তএব পূজাকালঃ। ন চানেকবচনেযু অর্দ্ধরাত্রে পূজা জামতে গুপ্তদাধনোক্তকালস্থার্দ্ধরাত্রাঘটিতত্বাৎ কথং তত্র পূজাবিধানম্ অর্দ্ধরাত্রশব্দস্থ মধ্যমপ্রহর্দ্ধয়ন্দ্রক্ষণবাচকত্বাদিতি
বাচ্যম্। অর্দ্ধরাত্রনিশীথো ছাবিত্যমরকোষাদর্দ্ধরাত্রশব্দস্থ
পূর্বপ্রহর্দ্ধয়বাচকত্বাৎ সন্ধিক্ষণবাচকত্বেহপি গুপ্তদাধনোক্তাধ্রমমুহূর্ত্বস্থ তৎক্ষণঘটিতত্বাচ্চ। ন চ তত্বক্তাই্টমমুহূর্ত্বসমুদায়স্থ

ন গ্রাহ্মতা কিন্তু তদ্যটকপূর্ব্বদণ্ডস্থ, পরদণ্ডস্থার্দ্ধরাত্রান্তর্গত-ত্বাৎ অর্দ্ধরাত্রে গতে দেবি পশুভাবেন পূজয়েদিতি গুপ্তসাধন-এবোক্তত্বাৎ। এবঞ্চ সতি ততুক্তকালোন সন্ধিক্ষণঘটিত-ইতি বাচ্যম্। পূর্ব্বোক্তামরকোষাদর্জরাত্রশব্দস্থ রাত্রি-পূর্ব্বাৰ্দ্ধবাচকত্বাৎ। এতেন নিশীথে দেব্যা আবিৰ্ভাবাত্ত-ন্নিমিভকপূজায়াস্তদ্ঘটিতকালো গৃহতে নক্ষ্ম ইতি নিশীথ-শব্দস্য সন্ধিক্ষণবাচকত্বমেব নিরস্তং নিশীথশব্দস্য রাত্রিপূর্ব্বা-ৰ্দ্ধবাচকত্বাৎ। ন চাৰ্দ্ধরাত্রশব্দেন সন্ধিক্ষণএব।ভিধীয়তে অশ্বথা অৰ্দ্ধরাত্রাদধশ্চোৰ্দ্ধমেকাৰ্দ্ধঘটিকা ভবেৎ। রোহিণী-চাষ্টমী গ্রাহ্মা উপবাসত্রতাদিম্বিতি জন্মান্টমীপ্রকরণীয়তিথি-তত্ত্বপ্নতবচনেন রাত্রিপ্রথমার্দ্ধস্তাধঃসন্ধ্যায়াং রোহিণ্যা অষ্ট্রমী-যোগে জয়ন্তীযোগাপতেরিতি বাচ্যম্। বৈদিকে যথা তথাস্থ তান্ত্রিককর্মণি অর্দ্ধরাত্রশব্দস্থ রাত্রিপূর্ব্বার্দ্ধবাচকত্বাবশ্যক-ছাৎ। নচৈকত্ৰ নিৰ্ণীতঃ শাস্ত্ৰাৰ্থ ইত্যাদিন্যায়েন বাধক-বিরহস্থলে বৈদিকবভাস্ত্রিকে২পীতি বাচ্যং রাত্রেরর্দ্ধমর্দ্ধরাত্র-মিতি ষষ্ঠীসমাসেনার্দ্ধরাত্রশব্দো রাত্রিপূর্ব্বার্দ্ধবাচকঃ লক্ষণয়া তু সন্ধিক্ষণমভিদধাতি এবঞ্চ মুখ্যার্থে নৈবোপপত্তৌ লক্ষ্যার্থ-স্থাগ্রাহ্যাৎ যত্র মুখ্যার্থেহম্বয়ানুপপত্তিস্তত্তিব লক্ষণা-স্বীকারাৎ।

যম্পণি গুপ্তসাধনোক্তকালে দেব্যা আবির্ভাবাত্তমিনিজনপূজায়াস্তত্র করণে পশ্নামেব পূজাসিদ্ধি র্নভুবীরাণামিতি বক্তুং শক্যতে তথাপি বীরাণাং পঞ্চতত্ত্বসমবহিতপূজায়াং কালনিয়মাভাবোক্তেঃ তেষাং সর্ববদৈব পূজাসিদ্ধিঃ
তত্মাদ্গুপ্তসাধনোক্তদশদগুজ্মকমহানিশা এব পশূনাং পূজা-

প্রশক্তকালঃ। অর্দ্ধরাত্রপরঘটিকাচতুষ্টয়স্ত যন্মহানিশাত্বমুক্তং তন্ন পশ্নাং সর্বব্যব্ধিরাত্রাদিপদমপ্যেতৎপরমেব
আবির্ভাবস্থেতৎকাল এবেত্যাহুস্তদতীব মন্দম্। যতোহ্বিরাত্রশব্দস্ত মধ্যমপ্রহরদয়সন্ধিকালঃ শক্যার্থো লক্ষ্যার্থো বা
অস্ত মহামহোপাধ্যায়জ্ঞানিভির্ভবন্তিঃ কুত্রাপি তন্ত্রে কাব্যে
পুরাণাদো বার্দ্ধরাত্রাদিশব্দস্ত রাত্রিপূর্বান্ধিবোধকত্বং দর্শযিতুং শক্যতে যেন ভবতাং পক্ষো দৃঢ়ঃ দ্যাৎ প্রত্যুত তাদৃশক্ষণবোধকত্বং বয়ং দর্শয়িতুং শক্ষুমঃ।

যথা নিশীথে তমউদ্ভূতে জায়মানে জনার্দ্দন ইত্যাদি বহনজ্বসারধতোত্তরকামাথ্যাতন্ত্রীয়ম্ অমাবাস্থাং সমাসাগ্র মধ্রেয়ত্রে বিচক্ষণ ইত্যাদি বচনং তারার্থপ্রীয়ং চতুর্দেশী দিনীবালী সন্ধিবেলার্দ্ধরাত্রকে ইত্যাদি বচনঞ্চ সমাধাতুং শক্যতে এতদ্বচনদ্বয়ং পশুপূজাপরং বীরপূজাপরং নিত্যপূজাপরং কাম্যপূজাপরং বা। নাগ্রঃ পশুনাং পয়ুর্দস্তপরপ্রহর্মর কাম্যপূজাপরং বা। নাগ্রঃ পশুনাং পয়ুর্দস্তপরপ্রহর্মর দ্রান্তর্বর্ত্ত্যেকদণ্ডবটিতত্বাৎ। ন দ্বিতীয়ঃ বীরাণাং পঞ্চতত্ত্বসমব- ধানেনৈব পূজাবিধানাৎ। তৃতীয়ে পশুপরং বীরপরং বা নাগ্রঃ পশুনাং পূর্ব্বাহ্নে নিত্যপূজায়া বিহিতত্বাৎ। ন দ্বিতীয়ঃ বীরাণাং কালানিয়মাৎ তেষাং পঞ্চতত্ত্বং বিনা পূজায়া অসিদ্ধেঃ। নান্তঃ দ্বিতীয়বচনস্থ কথঞ্চিৎ সমাধানেহিপ প্রথমবচনস্থাসমাধানাত্ত্র তুলারাশিঙ্গতে সূর্য্যে দীপ্যাত্রা- দিনেহিপি চেত্যাদিঘটিতত্বন নৈমিত্তিকপূজাপরত্বাবগমাৎ।

যগুপি লক্ষণয়া মধ্যরাত্রাদিশব্দশ্য পঞ্চমমুহূর্ত্তপ্রতিপাদক-ঝেনৈত্বচনদ্বয়ং সঙ্গময়িতুং শক্যতে তহি সর্বৈরপি সর্ববপক্ষঃ স্থাপয়িতৃং শক্যতে যত্তস্বয়ানুপপতিং বিনা লক্ষণা স্থাৎ তস্মা-দ্দেব্যাবির্ভাবাধিকরণ- মধ্যমপ্রহরদ্বয়সন্ধিক্ষণঘটিত- রাত্তিপ্রথমা-র্দ্ধশেষদণ্ডদ্বয়-রাত্রিপরার্দ্ধপ্রথমদণ্ডদ্বয়াত্মক-দণ্ডচতুন্টয়মেব শ্যা-মাপূজায়াঃ প্রশস্তকালস্তৎপরদণ্ডদ্বয়ন্ত বিহিতং শুপ্তসাধন-তন্ত্রোক্তবচনানি তুকাম্যপূজাকালবিধায়কানি।

অয়স্ত পরমার্থএব শিক্টাভ্যুপগমযোগ্যঃ যতন্তত্ত্রের্ কুত্রচিন্ধিশীথে কুত্রচিন্মধ্যরাত্তে কচিৎ সন্ধিবেলায়াং পূজাবিধানং দৃশ্যতে তদ্বীজাবিভাবস্ত নিশীথএব সর্ববদনৈরেকবাক্যতয়া পূজাবিধানং তদ্বীজাবিভাবন্চ সন্ধিক্ষণএব উক্তবচনেন
পূজানির্ববাহায় চ সন্ধিক্ষণঘটিতদণ্ডচতুক্টয়মাদৃতম্। এতদিরুদ্ধবচনানি যথাযোগ্যং সমাহিতানীতি ন কশ্চিদ্বিপ্রতিপতিলেশঃ।

ইহ তু সাম্প্রতং তন্ত্রশান্ত্রমপশ্যতাং বৃদ্ধিয়াত্ত্রবশ্যতাং গতানাং তাল্তিকানভিমতানাং পশ্নাং বিচারলক্ষেণ পপক্ষরক্ষাপণীকৃতাসূনাং হৃদয়ে হৃদয়সমাধ্নিকগ্রন্থপায়ালোচনা জনিতাস্মন্থক্তমহানিশাত্যহানিশাপূজাব্যবস্থাস্গালীং পরিভ্য় জগন্মাত্যাগণ্যতন্ত্রারণ্যক্ত্রতিপক্ষোথিতদোনশৃত্যাবিভাবক্ষণঘটিত মহানিশাপূজাব্যবস্থা-কেশরিণী প্রত্যাগ্যনপ্রত্যাশাশূতং প্রবিশ্বতিত্রলং প্লবিতেন।

ইহ নিগদিতবচনেভ্যো ভগবত্যাঃ শ্রীমদ্দক্ষিণকালিকার। কার্ভিকামাবস্থার্দ্ধরাত্রাবিভাব-রূপোৎপত্তিনিমিত্তকপূজায়া যোদিনীতক্ত্রোক্তমূহূর্ভদ্বরাত্মকএব মুখ্যঃ কালঃ। সচ কার্ণো যত্যুভ্যদিনে অসয়া ব্যাপ্তস্তদা পূর্ণবিদিনে সর্কৈঃ পশুর্বীর দিব্যভাববলম্বিভিঃ পূজা কার্যা। তত্তক্তং কার্ণী

করে—তত্তোভয়দিনেভূত-যুক্তকুহ্বাং মহানিশি। ইমাং
যাত্রাং কারয়িয়া চক্রবর্তী ভবেন্ধুপ ইতি॥ কুলার্গবে চ—
ভূতযুক্তা মহেশানি মহারাত্রে যদা কুহুঃ। সা কালরাত্রিক্রদ্ধিটা কালীতারাপ্রিয়য়রী। তত্র পূজা তয়োঃ কার্যাা
নানাপশুবিহিংসনম্। বলিদানং বলিতিথাবায়নাশকরং
পরমিতি॥ বেরামকেশসংহিতায়ামপি—যত্রোভয়দিনে শস্তকালে ভূতযুতা যদা। উমা মাহেশ্বর্রী সাচ তিথিঃ সিদ্ধিপ্রদা সতাম্। বলিদানং বলিতিথাবায়নাশকরং পরম্।
অতস্ত্রত ন কর্তব্য বলিদানবিস্ক্রানে ইতি।

নতু কাত্তিকস্থাপ্যমাবাস্থা তস্থাং কাল্যপ্রভ্রম্। কুল-রক্ষেষু যঃ কুর্যাৎ স গচ্ছেচ্ছিবসন্নিধিম্। তুলায়াং ভৌম-বারে চ অমাবাস্থা যদা ভবেৎ। তিথিঃ সাপি মহা-পুণ্যা শিবেন পরিকীর্ত্তিতা॥ বর্টেশ্চতুর্ভির্যৎ পুণ্যং বিধিনা পূজ্য চণ্ডিকাম্। তৎফলং লভতে বীরঃ অমাবাস্থানিশা-ৰ্দ্ধকে। কাত্তিকে গুরুবারে বা অমাবাস্থা যদা ভবেৎ। অর্চ্চয়েদ্যস্ত মাং তত্র তম্ম পুণ্যফলং শৃণু। প্রতি-সংবৎসরং কুর্য্যাৎ কালিকায়া মহোৎসবম্। কাত্তিকে তু বিশেষেণ অমাবাস্থানিশাৰ্দ্ধকে। তত্ৰ সংপূজয়েদ্দেবীং ভোগ-মোক্ষপ্রদায়িনীমিতি তীর্থস্বামিশোধিতর্হতন্ত্রসারগ্নতদেব্যা-গমবচনেন তুলার্কে বহুলে পক্ষে পঞ্চশ্যাং মহেশ্বরীম্। যথোপচারৈঃ সম্পূজ্য মহানিশি নৃপো ভবেং। শনিভৌম-দিনে চেৎ স্থাত্তঃ শতগুণং ফলমিতি সারস্বততন্ত্রবচনেন চ যদ্দিনে কাত্তিকাসাবাস্থা কুজবারাদিযুতা তদ্দিনে পূজা-বিধানমায়াতি তন্ন। তুলার্কে বহুলে পক্ষে পঞ্চদশ্যাং মহেশরীম্। যথোপচারৈঃ সম্পূজ্য মহানিশি নৃপো ভবেং।
শনিভৌমদিনে চেৎ স্থান্ততঃ শতগুণং ভবেং। তত্রোভয়দিনে ভূতযুক্তকুহ্বাং মহানিশি। ইমাং যাত্রাং কারয়িত্বা
চক্রবর্তী ভবেন্নপ ইতি কালীকল্পবচনেন চতুর্ব্বর্গপ্রদং
দর্শে কাত্তিকে কালিকার্জনম্। অনন্তফলদং তত্র পূর্ব্বযুক্তে
চ পর্ববণীতি শ্যামারহস্তধ্বত্বচনেন চ কুজবারাদেগুণফলত্বা
চতুর্দিশীযুক্তামাবাস্থায়া যুগ্যাদরত্বেন বলবত্বাং।

যলপুভেয়দিনেহমাবাস্তয়া অর্দ্ধরাত্রকালো ন ব্যাপ্ত তথাপি পূর্বেল্ডারেব পূজা কর্ত্রয়া, সর্বেট্রব যুগ্মাদরস্তা নিয়ামকত্বাৎ। যথা শক্তিসঙ্গমতক্ত্রে ত্রয়োদশপটলে—দীপোৎসবচকুর্দিশ্যাস্থমায়া যোগ এব চেৎ। কালরাত্রির্মহেশানি কালীতারাপ্রিয়য়রীতি॥ অপিচ স্মৃতিসারসংগ্রহয়তব্রামকেশসংহিতায়াং—দীপান্বিতা পার্ব্রনায় স্মৃতা কালার্চ্চনায় চ। মহানিশি দিতীয়ং স্থাৎ পর্বেল্ডারেব দিতীয়ং কাল্যর্চনং স্থাদিত্যর্থঃ। প্রথমং পার্বরণং দিতীয়ং কাল্যর্চনং কাল্যর্চনং স্থাদিত্যর্থঃ। শুথমং পার্বরণং দিতীয়ং কাল্যর্চনং কাল্যর্চনং কাল্যর্ডনং কাল্যর্ডনং কাল্যর্ডা তাৎপর্য্যর্থঃ। তত্রাপ্তরেহপি—নিশার্দ্ধে সা তিথিনান্তি উদ্ধ্বক্তিত্ব সংযুতা। তত্রাপি পূজ্য়েৎ কালীং ভূতযোগং ন লজ্ময়েদিতি। অত্র মাসঃ সৌর্বের্নাব্রবাং।

যত্ত্ব কার্ত্তিকস্থাপ্যমাবাস্থা গৌণচান্দ্রপ্রমাণতঃ। নিশী^থ-ব্যাপিনী যা তু পূজাং তস্থাং সমাচরেদিতি গৌণচান্দ্র-বিধায়কং বিজোৎপত্তিতন্ত্রবচনং তৎ কালীতরপরম্। চান্দ্রঃ সৌরশ্চ সর্বত্র চান্দ্রঃ স্থাত্তিথিচোদনে। তথাপি মুখ্যচান্দ্রস্থ গৌণস্ত ক্রুরকর্মণি॥ স্নানে দানে তথাদানে প্রোষ্ঠপদ্যাদিষু প্রিয়ে। মাসো নাক্ষত্রিকঃ প্রোক্তঃ সাবনো বর্ষপর্ব্বণি। এবং যুগে যুগে প্রোক্তঃ কলো সৌরশ্চ সর্ব্বত ইতি যোগিনীতন্ত্রদিতীয়পটলবচনেন কলো তান্ত্রিক-সর্ব্বকর্মণি সৌরস্যাদরণীয়ত্বাৎ।

नरू मनमान छ द्व (ज्याजिष्य-- मनानाः का खनामीनाः প্রায়ো মাঘস্ত চ কচিং। নপুংসকত্বং ভবতি, ন পৌষস্ত কদাচন।। নপুংসকত্বং মলমাসত্বং তথাচ, অসংক্রান্তো হি যো মাসঃ কদাচিভিথিরদ্ধিতঃ। কালান্তরাৎ সমায়াতি স নপুংসক ইষ্যতে। ইতি বচনাৎ তুলার্কে মলমাসপাতে দর্শ-ঘয়োপস্থিতে তত্র কা গতিরিতিচেৎ সত্যং তুলার্কে পূৰ্ব্বদৰ্শে বিহিতকালপ্ৰাপ্তো তত্ত্বৈব কৰ্ত্ব্যং শুদ্ধছাৎ তত্ত্ৰ বিহিতকালালাভে তন্মলমাসেহপি কর্ত্তব্যং তুলার্কে বিধানেন নিরবকাশাৎ পূর্বেবাক্তবচনজাতে তুলার্কপদস্থ প্নঃপুনঃ-শ্রবণাৎ তুলার্কং নৈব লজ্ঞায়েদিত্যাদিবচনাৎ মলমাসতত্ত্ব গৃহপরিশিষ্টাদিবচনাচচ। তথাচ গৃহপরিশিষ্ট্য্—মলং বদস্তি কালস্থ মাসং কালবিদোহধিকম। নেহেতাত্র বিশেষেজ্যা-মন্ত্রাবশ্যকাদিধে:। বিশেষেজ্যাং বৈশাখাছ্যল্লেখেন বিহিত্যা**গ**ম্ **আবশ্যকান্নিরবকাশা**ও॥ কালমাধবীয়ে কাঠক-গৃহুপরিশিষ্টং —মহালয়াষ্টকাশ্রাদ্ধমুপাকর্মাদি কর্ম স্পষ্টমাদবিশেষাথ্যবিহিতং বর্জ্জয়েমলে। স্পষ্টমাদবিশে-ষেতি চৈত্রবৈশাখাদিমাসোল্লেখেন বিহিত্মিত্যর্থঃ। ভীম-পরাক্রমে—অধিমাদে বিবাহং যাত্রাং চূড়াং তথোপনয়নাদি। क्रांत्र नावकानः भाकनाः नष्ट्र वित्नरबङ्गाम् ॥ नावकानकः সম্ভবংকালান্তরং কর্ম। অতো নিরবকাশস্থানন্তগতি-কস্ম প্রতিপ্রসবোহর্থাৎ সূচিতঃ। তথাচ কাঠকগৃহং—কালে ২নন্তগতিং নিত্যাং কুর্য্যামৈমিত্তিকীং ক্রিয়াম্। কালে মলমাসে॥ রহস্পতিরপি—নিত্যনৈমিত্তিকে কুর্য্যাৎ প্রয়তঃ সন্মলিম্ব চে। তীর্থস্নানং গজচ্ছায়াং প্রেতশ্রাদ্ধং তথৈব চ।

অথ কদাচিং তুলার্কে ক্ষয়মাদপাতে তুলার্কে অমা-বদ্যায়াং তত্তবিহিতকালাপ্রাপ্তে কা গতিরিতি চেং সত্যং তত্রামাবদ্যায়াং পূজাযোগ্যকালে তুলার্কাভাবেগপি শঙ্খ-বেলান্থায়েন প্রতিপদি সংক্রমণস্বীকারাৎ ওঠিত্রবামাবাস্থায়াং শ্যামাপূজা কার্য্যেতি ন কাচিদনুপপত্তিঃ। ইত্যলমনল্ল-জল্পনেন্তি।

তত্রায়ং সংক্ষেপঃ। পশুবীরদিব্যভাবাবলম্বিনাং তুলার্কান্যাবাস্যায়াং মধ্যরাত্রিচতুর্দ্ধগ্রাক্রমহানিশায়াং দীপাম্বিতা-শ্যামাপূজায়া মুখ্যঃ কালঃ। যহ্যভয়দিনে তস্ত লাভোহলাভো বা তদা পূর্ব্বদিনে। এবমস্থাঃ পূজাকালে দীপ্যাত্রা বোধ্যা। মুন্ময়ীং পুভলীং কৃত্বা দীপাদিভিরলয়ভামিত্যু-ভরকামাখ্যাতন্ত্রবচনাদিতি।

ইতি দীপায়িতাশ্যামাপূজাব্যবস্থা।

অথ রটস্তীপূজা। ব্যোমরত্নে দশমপটলে—মাঘে মাদি চতুর্দশ্যাং রটস্ত্যাং কালিকাং যজেং। প্রাপ্নোতি ভোগানত্ত কালীপুরং ব্রজেদিতি।

অথৈতৎকালনিয়ন:। মাঘে মাশুসিতে পক্ষে রটস্ত্যাখ্যা চতুর্দিশী। তন্তাং প্রদোষসময়ে পূজ্মেন্মুগুমালিনীমিতি। পূজ্যান্ত প্রদোষ এব মুখ্য: কাল:। পূজাজাগরণাদীনি প্রতঞ্চ প্রদোদব্যাপিন্যামিতি রায়মুক্টেন স্মৃতিসমুচ্চয়ে নিদ্ধবল্লিখিতখাদিতি।

যত্নভারদিনে প্রদোষব্যাপিনী চতুর্দ্দশী তদ। পূর্বদিনে পূজাকালঃ। তথাহি তীর্থসামিশোধিতরহত্তস্ত্রদারধৃতবিষ্ণুঃ
—মাঘে মাস্যসিতে পক্ষে খ্যাতা রাসচতুর্দ্দশী। কামবিদ্ধা
তু কর্ত্রব্যা শিবরাত্রিবিধানতইতি। রাসচতুর্দ্দশীতি রাস্থ শব্দে
ইত্যস্য প্রয়োগঃ রটন্তীচ হুদ্দশীতি যাবং। পূজাজাগরণাদি
কালীত্রতঞ্চ প্রদোষব্যাপিন্যামৃভয়ত্র তদ্যাপ্তাবব্যাপ্তে চ
ত্রয়োদশীবিদ্ধৈব গ্রাহেতি কৃত্যতন্ত্রার্ণবক্ষং। অতএবৈতংকঃ হ্যক্তপূজাপরঃ।

তান্ত্রিকে তু বর্দাতন্ত্র দিতীয়পটলে—রটন্ত্যাশ্যচত্ত্র্ দিগ্যাং রাত্রিপূজ্যা জগন্ময়ীতি। মূর্গহাধৃতস্মৃতিসমূচ্চয়ে চ— মকরাবন্ধিতে ভানো বা তু রুফা চতুর্দশী। তদ্রাত্রো কালিকা পূজ্যা সর্ববিদ্মোপশান্তয়ে॥ তদ্রাক্রো জাগরং রুফা পূজ্য়িছা হরপ্রিয়াম্। ঈপ্সিতান্ লভতে কামান্ প্রিয়পুল্রধনানি চেতি॥ তদ্রাত্রো অর্করাত্রাবিতি রহস্যার্থঃ। ততুক্ত-মূভরকামাধ্যাতন্ত্রে একাদশপটলে—মকরম্থে রবৌ রুষ্ণ-চতুর্দিশ্যা নিশার্ককে। পূজ্য়েদ্দিশাং কালীং ধর্মকামার্থ-সভুর্দশ্যা নিশার্ককে। পূজ্য়েদ্দিশাং কালীং ধর্মকামার্থ-সিদ্বরে ইতি। তথা মায়াতন্ত্রে সপ্তদশপটলে—মাঘে মাস্য-সিত্রে প্রেল্প্রমালিনীমিতি।

তদয়ং সংক্ষেপঃ। স্মৃত্যুক্তপূজায়াঃ প্রদোষ এব মুখাকালঃ। আগমোক্তপূজায়াস্ত দীপান্বিতাপূজা মুখ্যকাল এব।

অত পূর্বাদিনে নিরুক্তকালোত্তরং মুহুর্তান্মকচতুর্দশীলাভে

পরদিনে মুখ্যকালালাভে পূর্বদিনে পূজা কার্য্যা গোঁণকালা-সুরোধাৎ পূর্ববাপরদিনয়োর্যথাক্রমং গোঁণমুখ্যকালালাভে উভয়দিনে মুখ্যকাললাভে চ পরদিনে দীপান্বিভাপূজায়াং চতুদ্দ শীযুক্তামাবাস্যায়া গ্রাহুছেন তদ্যুক্তচতুদ্দ শাগ্রাহ্যম্বস্য স্থাযাত্বাদিতি।

বক্ষ্যমাণ-ফলহারিণীপূজায়াং দীপান্বিতাপূজাবদ্যবন্থা।

অথ ফলহারিণীপূজা। তত্র প্রমাণম্। উত্রকামাখ্যাতত্ত্বে একাদশপটলে—জৈষ্ঠে মাসি তথামাসাং সফলং
কালিকার্চ্চনমিতি। অর্চ্চনমিত্যনন্তরং কুর্য্যাদিত্যধ্যাহার্য্যং
তত্র সফলশন্দস্য ফলেন সহ বর্ত্তমানং সফলং ফলদারা পূজনমিত্যর্থং বচনান্তরে ফলদারার্চ্চনস্য ব্যক্তাভিধানাং। তদ্যথা
কালিকার্চ্চনচন্দ্রিকাগ্গত - শ্যামারহস্যে — ফলোপচারের্বহুলৈজ্যৈষ্ঠে সূর্য্যেন্দুসঙ্গমে। পূজ্যিদ্বা মহাকালীং নরো নির্ব্বাণমুচ্ছতীতি ॥ মায়াতন্ত্রে পঞ্চদশপটলে—জ্যৈষ্ঠে মাসি দ্বমায়াং
বৈ মধ্যরাত্রে মহেশ্বরি। পূজ্যেৎ কালিকাং দেবীং
নানাজব্যোপহারকৈরিতি। তত্রৈব সিতপক্ষেত্র পঞ্চদশ্যাং
নিশার্দ্ধকে। পূজ্যেচ্চ ফলৈর্ল ক্ষৈঃ শক্তিতো বাপি কালিকামিতি। এতদ্বচনাদর্দ্ধরাত্রস্য মুখ্যকালত্বপ্রাপ্তিরপি।

তত্র মাসঃ সৌর এব তত্তকং যোগিনীতন্ত্রে দ্বিতীয়-পটলে—চাক্রঃ সৌলশ্চ সর্বত্র চাক্রঃ স্যাতিথিচোদনে: তথাপি মুখ্যচাক্রস্ত গোণস্ত ক্রুবকর্মণি। স্নানে হোমে তথা দানে প্রোষ্ঠপত্যাদিরু প্রিয়ে। মাসো নাক্ষত্রিকঃ প্রোক্তঃ সাবনো বর্ষপর্বণি। এবং মুগে মুগে প্রোক্তঃ কলো সৌরশ্চ সর্ব্বতইতি। অত্র উক্ত-নির্ববাণমুচ্ছতীত্যন্তার্থবাদরূপবচনে ফলপ্রব-ণেহপি উক্তবচনপ্রাপ্তবিধিবাক্যে ফলাপ্রবণাৎ তৎপূজায়া-নিত্যত্বমিতি স্থিতং, যথা সন্ধ্যামুপাসতে যে চেত্যাম্মর্থ-বাদবাক্যে ফলপ্রবণেহপি সন্ধ্যাপ্রতিপাদকবিধিবাক্যে তদ-প্রবণামিত্যত্বমিতি।

নচ মহাক্টনীতিথো পূজা নবম্যাঞ্চ বিশেষতঃ। দীপা যিতা রাত্রিপূজা কার্ডিকে নবমীদিনে। র**টন্ত্যাথ্যচতুর্দি**শ্যাং রাত্রো পূজা জগন্ময়ী। জৈঠোমাবাস্থকে চৈব অউম্যাং রোহিণীদিনে। এষু পূজা প্রকর্ত্তব্যা রাজ্যার্থে পরমেশ্বরি। দশবর্ষমিদং কুলাহ্বশ্যং রাজ্যমবাপু্য়াদিতি <mark>বরদাতন্ত্র-</mark> বচনাৎ জৈষ্ঠামাবাষ্ঠাপুজায়াঃ কাম্যন্তমেবেতি বাচ্যং তদ্ধ-চনপ্রাপ্তবিধে রাজ্যকামদশবর্ষপ্রতিপাদকশব্দবটিতত্ত্বন যাব-ৰ্জ্জীবমগ্নিহোত্ৰং জুহোতীতি বিধিপ্ৰাপ্তাগ্নিহোত্ৰাৎ **উপস**দ্ভি-শ্চরিকা মাসমেকমগ্নিহোত্রং জুহোতীতি বিধেরগ্নিহোত্রান্তর-প্রতিপাদকত্ববৎ পূর্ব্বোক্তবচনপ্রাপ্ত-নিত্যপূজাতো কামকর্ত্তক - দশবর্ষসাধ্য - জ্যৈষ্ঠামাবস্থাশ্যামাপ্জান্তর**প্রতিপাদ-**করাৎ অন্যথা পূর্কোক্তস্থ নির্কাণমূচ্ছতীত্যস্তাগ্রথবাদস্থা-শঙ্গতিরিতি। অনন্যগতি যমিত্যং কুর্য্যামৈমিত্তিকং তথেতি যখনিত্যস্থ মুখ্যকালাতিক্রমে জ্বন্যস্য কালান্তর্স্যানভ্য-মুজ্ঞাতত্বাদত্যন্তলোপে প্রায়শ্চিত্তং প্রসজ্জতে তৎক**র্মা-**নঅগতিকহান্মলমাদেহপি কার্য্যমিতি হেমাদ্রিগ্রন্থলিথিতং মলমাদাধিকারে কাঠকগৃহ্ণ, কালেহনগুগতিং ক্র্যান্ত্রেমিত্তিকাং ক্রিয়ামিতি মলমাসতত্ত্বসূত্রচনক।

অথ অনাবাদ্যানিমিত্তক-প্রতিমাদীয়-স্থামাপূজা। যথা

কালিকার্চনচন্দ্রকাপ্পত-বীরতন্ত্রে—নিত্যং প্রপূজ্যেদেবীং দর্শমাত্রে বিশেষতঃ। ভূতযুক্তা তু সা জ্বেয়া উমামাহেশ্বরী-তিথিঃ। অমাবাস্যা হি কল্যাণি কালীতারাপ্রিয়ঙ্করাঁ। অমা নামী মহামায়া যস্যামেব বিশিয়তে ইতি॥ অত্রাপি বিশেষরতি তত্রৈব—রাত্রাবেব মহামায়াং কালিকাং কালক্রপিণীম্। পূজ্যেন্তক্তিভাবেন মহাবিভববিস্তবৈঃ। গুহাদ্-গুহতরাং দেবীং দিবা নৈব প্রপূজ্যেৎ। রাত্রাবেব সমাবাহ্য রাত্রাবেব সমর্চ্চয়েৎ। বলিহোমাদিকং কৃত্বা রাত্রাবেব বিসর্জ্জানিকাং বিশুরঃ।

অথ নৈমিত্তিক জগন্ধাত্রীপূজা। তদ্যা নিত্যসমাহ মায়াতত্ত্বে সপ্তদশপটলে—প্রপূজ্য়েজ্জগন্ধাত্রীং কাত্তিকে শুক্রপক্ষকে। দিনোদয়ে চ মধ্যাক্ষে সায়াক্ষে নবমেহহনীতি॥
কাম্যবৃঞ্চ কুজিকাতত্ত্বে—কাত্তিকে শুক্রপক্ষে তু নবম্যাং জগদ্বিকাম্। তুর্গাং প্রপূজ্যেজ্জ্ত্যা ধর্মকামার্থদিন্ধয়ে ইতি॥
পূজা তু ত্রিসন্ধ্যমেব কার্য্যা তত্ত্তং বহন্মায়াতত্ত্বে—ত্রিসন্ধ্যাং
পূজ্যেদ্ গাং মন্থানকান্ধরেণ চ। নানাবলিপ্রদানেন গীতবাত্যপুরঃসরম্। কাত্তিকদ্য সিতে পক্ষে নবম্যাঞ্চ বিশেষতঃ।
কুজ্বৈং সাধকক্রেণ্ডো লভেদ্রাজ্যমকণ্টক্মিতি। অত্র
ত্রিসন্ধ্যমিতি প্রবণাং ত্রিসন্ধ্যং পূজা কার্য্য।

যত্ত্ব কাভিকস্য সিতে পক্ষে নবস্যাং জগদীশরীম্।
ত্রিকালমেককালং বা বর্ষে বর্ষে প্রপূজয়েৎ। নির্মায় প্রতিনাং
শক্ত্যা জগদ্ধাত্র্যা বিধানতঃ। পূজরিত্বা পর্নিনে প্রতিমাং
তাং বিসর্জ্জয়েদিতি শক্তিসঙ্গমতন্ত্রবচনে ত্রিকালমেককালঞ্চ পূজা দৃশ্যতে তং শক্তাশক্তভেদেন। ইহ তু নবমী পূর্ববিদ্ধৈব গ্রাহ্ম। গ্রাবণী দৌর্গনবর্মী দূর্ববা চৈব হুতাশনী। পূর্ববিদ্ধিব কর্ত্তব্যা শিবরাত্রিব্বলে-দিনমিতি তিথিতত্ত্বপূত্রহস্পতিবচনাৎ।

অথ নবদী নির্ণীয়তে সা চ বিধিনিবেধরূপাভ্যামন্বয়ব্যতিরেকাভ্যাং পূর্ববিদ্ধৈব গ্রাহ্থা তদিধিশ্চ যুথাদিবচনে
বস্তুরন্ত্রারিতি পদ্মপুরাণে—অপ্ট্রম্যা নবদী বিদ্ধা নবম্যা
চাপ্ট্রমী যুতা। অর্দ্ধনার্নীশ্বরপ্রায়া উমানাহেশ্বরীতিথিরিতি।
ভবিষ্যপুরাণে—নবম্যা সহ কার্য্যা স্যাদপ্ট্রমী নবদী তথেতি।
নিবেধস্ত স্কন্দপুরাণেহভিহিতঃ—নকার্য্যা নবদী তাত
দশম্যা তু কদাচনেতি। ব্রহ্মবৈবর্তে—অপ্ট্রম্যা নবদ্যাবিদ্ধা
কর্ত্রব্যা স্থস্মাহিতেঃ। ন কার্য্যা নবদী তাত দশম্যা চ
কদাচনেত্যাদি কাল্মাধ্রায়লিখনস্বর্গাচ্চ।

নসু পুরাণোক্তবচনৈঃ কথং তান্ত্রিককর্মণাং ব্যবস্থা
নির্ণীয়তে ইতি চেন্ন একত্র নির্ণীতঃ শাস্ত্রার্থা বাধকমন্তরেণান্তত্রাপি তথেতি ন্যায়াং॥ নচ কান্তিকে শুক্রপক্ষে
হি ভৌমবারে জগৎপ্রসূঃ। সর্কাদেবহিতার্থায় তুর্বতশমনায় চ। আবিরাসীক্ষগক্ষান্তৈয় যুগাদৌ পরমেখরীতি
হুর্গাকল্পপ্রত-বিজ্ঞাৎপত্তিতন্ত্রবচনেন কান্তিকশুক্রনবম্যাং
যুগাল্যায়ামুংপতিদর্শনাৎ তন্মিমিত্রীভৃতপূক্ষায়াঃ কর্ত্ব্যন্থাস্থাল্যায়ামুংপতিদর্শনাৎ তন্মিমিত্রীভৃতপূক্ষায়াঃ কর্ত্ব্যন্থাস্থাল্যায়ামুংপতিদর্শনাৎ তন্মিমিত্রীভৃতপূক্ষায়াঃ কর্ত্ব্যন্থাস্থাল্যায়ামুংপতিদর্শনাৎ তন্মিমিত্রিভিত্যাদিবচনলক্ষোদয়গামিতিথাবেব তৎপূক্তা কার্য্যেতি বাচ্যম্ উৎপত্তিনিমিত্তপূক্ষাবিধেরভাবাৎ॥ নচ, কান্তিকে শুক্রপক্ষে তু ত্রেতায়াঃ
প্রথমেহহনি। ত্রিসন্ধ্যং পূক্ষয়েদ্বেনীং হুর্গাং সম্পৎপ্রস্কায়ে
ইত্যুত্তরকামাখ্যাতন্ত্রবচনেন যুগাল্যানিমিত্ত্বপূজ্যয়াঃ পরি-

প্রাপ্তিতয়া অত্রাপি যুগান্তাবর্ষয়ন্ধিশ্চেত্যাদি-বচনেনােদয়গামিন্সাং তিথাে সৈব কর্তব্যতি বাচ্যম্ যুগান্সাশব্দতিবিধিবাক্যাভাবাৎ। যত্র যুগান্সারপ-সংজ্ঞাশব্দতিতিবিধিঃ
তদিধিলভ্যক্রিয়ায়া এব যুগান্সানিমিত্তকত্বাৎ। প্রকৃতে তু
যদি ত্রেতায়াঃ প্রথমেহ্হনীত্যাদি শব্দতিতিবিধি-প্রবণেন
তৎপূজায়া যুগান্সানিমিত্তকত্বমূচ্যতে তদা তৎপূজায়াঃ
যুগান্সাপদ্বটিতসঙ্কল্লাভিলাপাদিকং স্যাৎ। তাদৃষ্যবহারে
সম্প্রদায়বিরোধাচ্চ। নচোত্তরকামাখ্যাতন্ত্রবচনস্য বিজ্ঞোৎপত্তিতন্ত্রবচনেনৈকবাক্যতয়া যুগান্সায়াং তুর্গাং পূজয়েদিতি
বিধিঃ কল্পনীয় ইতি বাচ্যম্ উভয়বচনে সমানজাতীয়বিধেরভাবেনৈকবাক্যত্বস্য কর্ত্ব্যশক্যত্বাৎ।

অন্যে তু ত্রিসন্ধাব্যাপিনী সা তু যদিস্যান্ধবনী তিথিং।
ত্রিকালে ত্রিবিধা পূজা কথং দেব্যা জগদায়ীতি শ্রীমন্মহাদেবপ্রশ্নানন্তরং সা প্রাতব্যাপিনী যত্র বাসরে নবনী তিথিং।
ত্রিসন্ধ্যং পূজয়েত্ত্র বাসরে জগদন্বিকাম্। মূহূর্ত্ব্যাপিনী
চাপি তত্র গ্রাহ্যা ত্রিলোচনেতি শ্রীপার্ববহুত্তরম্বরূপ নিগন্দর্মারবচনে প্রাতম্মধ্যাহ্ণসময়ে তত্র পূজনমিতি
তত্রত্যবচনান্তরে, প্রপূজয়েজ্জগদ্ধাত্রীং কার্তিকে শুক্রপক্ষকে।
দিনোদয়ে চ মধ্যাহ্ণে সায়াহ্ণে নবমহহনীতি রহম্মায়াতন্ত্রবচনে চ প্রাতঃপদদিনোদয়পদদর্শনান্ত্রস্থলে পঞ্চধাবিভক্তাদনপ্রথমভাগমূহূর্ত্ ত্রয়ায়কপ্রাতর্ব্যাপিন্থাং নবন্যাং শ্রীমজ্জগদ্ধাত্রী হুর্গাপূজায়াঃ কর্ত্বব্যতাবধারণেন পূর্ব্বদিনে তাদৃশরহিতায়াং পরদিনএব, তাদৃশ্যাং পরদিনে পূজা কর্ত্বব্যত্যাহ্নস্তন্ম। প্রাতরাবাহ্যেদেবীং প্রাতরেব প্রবেশয়েদিত্যাদি

বচনঘটক-প্রাত্তরাদিপদানাং পূর্ব্বাহ্নবোধকতাবৎ পূর্ব্বাহ্নে
দেবতায়াশ্চ পূজাং কুর্য্যাদিশেষত ইতি ফেৎকারিণাতন্ত্রীয়দ্বিতীয়পটলবচনেন পূর্ব্বাহ্লো বৈ দেবানামিত্যাদিশান্ত্রৈকৰাক্যতয়া মুহূর্ত্ত্রেয়াত্মককালবোধক-প্রাতঃপদঘটিতস্থ বিধিবাক্যত্বে পূর্ব্বদিবদীয়পঞ্চদশুনন্তরপ্রক্ত-পর্দিবদীয়োদয়পূর্ব্বকালাবধিমাত্রস্থায়ি-নবমীঘটিতবর্ষে ক্বত্যলোপাপত্তিভিয়া চ
উক্তবচনস্থপ্রাতঃপ্রভূতিপদানামপি পূর্ব্বাহ্পপ্রতিপাদকত্বাৎ।
প্রকৃতপূজাঙ্গীভূত-শাস্ত্রবিহিত-কালবোধকেন প্রাহ্লাপরাহ্নমধ্যাহ্লাব্রিসদ্ধ্যমিত্যমরকোষ-গৃহীতশক্তিকেন ত্রিদদ্ধ্যপদেন
পূর্ব্বাহ্লাত্মককালত্রয়স্থৈব প্রতিপাদিততয়া প্রাতরাদিপদানাং পূর্ব্বাহ্লপরতায়া স্থাযাত্বাচ্চ।

নচ, কুম্বরাশিঙ্গতে সোমে নবম্যাং কার্ত্তিকস্ম চ। উষস্থ-ধ্বোদিতে ভানোছগামারাধ্য যত্মবান্। পুত্রারোগ্যবরং লেভে লোকসাক্ষিত্মমে চ॥ ডাং তিথিং প্রাপ্য মনুজঃ শনিভৌমদিনে যদি। প্রপূজ্যেন্মহাত্মগাং ধর্মকামার্থমান্ধদা-মিতি কাত্যায়নীতন্ত্রাপ্টসপ্ততিতমপটলবচনে উষঃপদার্দ্ধা-দিতপদশ্রবণাত্মঃকালএব বিহিত্তয়া তত্র পূজা কার্য্যেতি বাচ্যম্ কেন কেন জগদম্বার্চ্চয়া কিং কিং ফলং প্রাপ্তমিতি প্রশোত্তরম্বরূপোদাহরণবাক্যমাত্রঘটকত্বাৎ বিধিবাক্যানস্ত-ভাবাক্ত তৎকালএব পূজা কর্তব্যেতি বক্ত্র্ মশক্যত্বাৎ।

অম্মাকং মতে তু উষস্মর্কোদিতেভানাবিতি বচনস্থ যশ্মিন্ বর্ষে পূর্ব্বদিনএব নবম্যাঃ প্রশস্তকাললাভস্তদ্বর্ষবিষয়-কম্বেন বিরোধবিরহঃ।

কার্ভিকে শুক্লপক্ষে তু যুগাছা নবমী স্মৃতা। পূর্বাহু-

সময়ে কাষ্ঠাত্মিকা পরদিনে যদি। তত্ত্র পূজাদিকং কুর্ব্যাৎ পিণ্ডনিৰ্ব্বাপণাদৃতে। ইতি তিথিতত্ত্বটীকায়াং কাশী-রামবাচস্পতিপ্পত-ভবিষ্যপুরাণবচনেন পরদিবসীয়াল্লকাল-স্থায়িত্যামপি নবম্যামেব পূজায়া বিহিত্তয়া তত্ত্রৈব শ্রীম-জ্জগদ্ধাত্রী ছুর্গাপূজা কর্ত্তব্যেতি যহুক্তং তন্ন সম্যক্ তদ্বচনস্থ ভবিষ্যপুরাণেহদর্শনেনাপ্রামাণ্যাৎ কক্মিংশ্চিৎ পুস্তকে দৃষ্টত্বে-২পি কল্লিতস্বাচ্চ। অম্যথা মাসৈশ্চত্রভির্যৎ পুণ্যং বিধি-নাভার্চ্য চণ্ডিকাম্। তৎ ফলং লভতে বীরে' নবম্যাং কার্ত্তিকস্থ চেতি বচনাব্যবহিতোত্তরমিয়মেব দৌর্গনবর্মাতি লিখনানস্তর-ভবিষ্যপুরাণীয়তদ্বচনলিখনস্স, শ্রাবণী দৌর্গনবনী দূর্ব্বা চৈব হুতাশনী। পূর্ব্ববিদ্ধৈব কর্ত্তব্যা শিবরাত্রিব্বলেদিন-মিতি বচনবিরোধেনাকুচিতত্বাৎ। তদ্বচনস্থ প্রামাণিকত্বে তু নিগমকল্পসারবচনদৃষ্ট্যা পূর্ব্বদিনে পূর্ব্বাহ্লাদিত্রিসন্ধ্য-ব্যাপিত্বে প্রদিনে পূজাবিধায়কত্বমবগন্তব্যম্। বস্তুতস্ত অন্টমীযুতনবম্যাং কর্মার্চত্বমভিধায় সেয়ং নবমী ভবিষ্য-পুরাণোক্তত্রগাত্রতাদে দ্রষ্টব্যেতি কালমাধবীয়লিখনস্বরসাৎ তদ্বচনস্থামূলকত্বমেব প্রতিভাতি।

যত্ত্ব নভস্ম শুক্লপক্ষে তু নবমী দৌর্গসংজ্ঞিতা। তম্মাং প্রপূর্জয়েৎ তুর্গাং শতপত্রৈর্মহেশ্বরীমিতি মায়াতন্ত্রীয়বচনেন শ্রাবণী দৌর্গনবমীত্যত্ত্ব দৌর্গনবমীপদেন ভাদ্রশুক্রনবমীত্যু-চ্যতে ইতি তন্ন বহুরন্ধ্রয়োরিতি যুগ্মবচনেন পূর্ববিখণ্ডস্ম কর্মাইত্বপ্রাপ্তে তদ্বচনে দৌর্গপদবৈয়র্থ্যাপত্তেঃ।

অস্মাকন্ত কার্ত্তিকশুক্রনবম্যা যুগাদিত্বেন পরশুগুস্থ কর্মা-ইতাপ্রাপ্তো তদ্মাবর্ত্তকতয়া দৌর্গপদস্থ দার্থকতা দুমায়াতা। অতএব মায়াতন্ত্রোক্ত-ভাজস্তুক্লনবম্য। দেগিন্বমীসংজ্ঞাছে-নোক্তয়া অন্তত্র তাদৃশসংজ্ঞায়া নিয়মপ্রতিষেধবিরহঃ।

নচ ত্রিসন্ধ্যব্যাপিনী—ত্যাদি-নিগমকল্পসারপ্রশ্নবাক্যন্থত্রিসন্ধ্যপদেন অরুণোদয়মারভ্য যাবদস্তং গভো রবিঃ।
তৎকালব্যাপিনী যা তু ত্রিসন্ধ্যব্যাপিনী স্মৃতেতি কাত্যায়নীতন্ত্রোক্তবচন-লন্ধোদয়াবধ্যস্তপর্যস্ত-কাললাভেন যস্মিন্ বর্ষে
সপ্তদগুষ্টম্যনন্তরনবমীলাভে তস্পা উদয়ান্তব্যাপ্তত্ববিরহস্তম্মিন্ বর্ষে কৃত্যলোপাপভিরিতি বাচ্যং পূর্ব্বোক্তানাং
ত্রিসন্ধ্যং পূজ্য়েভত্রেত্যাদি-পূজাবিধায়কবিধিবাক্যানাং ত্রিকালে ত্রিবিধপূজাবিধায়কতয়া তদ্বিধিবাক্যশ্রবণাধীনশিবপ্রশ্নবাক্যন্থ - ত্রিসন্ধ্যপদস্যোদয়াবধ্যস্তপর্যান্ত-কালবাচকত্বাসন্তবেন ত্রিসন্ধ্যপদস্যাদয়াবধ্যস্তপর্যান্ত-কালবাচকত্বাসন্তবেন ত্রিসন্ধ্যপদস্য পূর্বায়্র-মধ্যায়াপরায়্র-রূপ-ত্রিসন্ধ্যবাচকত্বস্থৈব যুক্তত্বাং।

নকু যশ্মিন্ বর্ষে পূর্ব্বদিনে পূর্ব্বাহাৎ পরং নবমী পরদিনে ত্রয়োদশদণ্ডাত্মিকা নবমী চেন্ডদা তম্বর্ষে ত্রিকাল-পূজাযোগ্যনবম্যলাভে তন্তিগাবেকদৈব ত্রিধা পূজা কর্ত্ব্যা। আহোস্বিৎ ত্রিকালএব ত্রিধা পূজেতি। উচ্যতে, সা প্রাতর্ব্যাপিনী যত্র বাসরে নবমী তিথিং। ত্রিসন্ধ্যং পূজ্যেন্ত্র বাসরে জগদস্বিকাম্। মৃহুর্ত্ব্যাপিনী চাপি তত্র গ্রাহা মহেশ্রর। এককালে ত্রিধা পূজাং সাধকো নৈব কারয়েদিতি নিগ্মকল্পসারবচনেন এককালে ত্রিধাপূজান্ত্রিয়াতানিষেধনে ত্রিকালএব ত্রিধা পূজা কর্ত্ব্যাতি।

নচ, দশম্যাং দীরতে যত্র বলিদানন্ত মানবৈ:। ওদ্রাজ্যং নাশমায়াতি মরকোপদ্রবৈ: ক্টমিতি তিপিতত্ত্বগুডভবিষ্য পুরাণীয়বচনেন দশম্যাং বলিদান-নিষেধদর্শনেন কথমত্র বলিদানমন্তরেণ পূজানিষ্পভিরিতি বাচ্যম্ বলিদানমন্তরে-ণেহ পূজানিষেধে প্রমাণাভাবাৎ ত্রিকালং পূজ্যেদ্দুর্গাং মন্থনৈকাক্ষরেণ চেতি রহন্মায়াতন্ত্রবচনেন ত্রিকালপূজা রূপৈককর্মণ: প্রতিপাদনাভিস্থাং পূজানামেকস্যাং বলি-দানেন পূজানিষ্পতিসন্তবাচ্চ ॥ এতং পূজামধিরত্য নিগম-কল্পসারে জ্ঞানসারস্বতে চ—দশম্যাং বলিদানন্ত নিষিদ্ধন্ত শ্রুতং ময়া। অতস্তত্র মহেশানি ত্রিবিধং পূজনং কণমিতি শ্রীমন্মহাদেবপ্রশ্নানন্তরং শ্রীদেব্যুবাচ—নবমীতিথিমাশ্রিত্য যত্র পূজা প্রকীভিতা। দশম্যাং বলিদানন্ত তত্ত্রব চ বি-বর্জ্জয়েৎ। নবমীদিনমাশ্রিত্য যত্র পূজা ময়োদিতা। বলি-দানং মহেশান নচ তত্র বিবর্জ্জয়েদিত্যাদিনোক্তমেব সাধীয়ঃ। তত্ত্রায়াং সংক্ষেপঃ। ত্রিসন্ধ্যব্যাপিন্তাং নবম্যামেব শ্রীমজ্জগদ্ধাত্ত্রীপূজা কার্য্যা। তদলাভে মুহূর্জায়্যনপূর্ব্বাহু-

ইতি জগদ্ধাত্রীপূজাব্যবস্থা।

गाञ्चर्श्वविश्वनवभारः छम्नाट्ड शत्रिमत्।

অথান্নপূর্ণাপূজাব্যবস্থা। মায়াতন্ত্রে সপ্তমপটলে— চৈত্রে
মাসি সিতে পক্ষে সপ্তম্যাদিদিনত্রয়ে। প্রাতঃ প্রাতর্গ্রহাদেবীং তুর্গাং ভক্ত্যা প্রপূজ্যেং॥ ইয়মেব বাসন্তী পূজা।
তত্রান্তম্যামন্নপূর্ণাং পূর্ববাহে সাধকোত্তমঃ। রক্তবন্তৈরকপূল্পৈর্বলিভিঃ পূজ্যেচ্ছিবামিতি॥ এতদেব স্পন্টয়তি শান্তবীতন্তে চতুর্দশপটলে প্রজগদন্তা স্বয়মেব—বিশেষাটেত্রমাস্স্য বা তিথিঃ স্যাং সিতান্তমী। তস্যাং যাং পূজ্যেন্তক্ত্যা
প্রসাদ্যতি মাং গ্রুবম্। তস্থাং তিথো মহাদেব শূলপাণে

ক্রধাংশুধূক্। কৃষা তু বেদিকাং দিব্যাং দর্শণোদরসন্মিভাম। তত্রারোপ্যাশোকতরুং করভূমিরুহপ্রভম্। পঞ্চাশল্লিপি-পত্রঞ্চ জ্যোতীরূপং মহাপ্রভম্। বিচিন্ত্য বেষ্টিতং তঞ্চ কদলীধরণীরুইং। তন্মূলে স্থাপয়েচ্ছান্তঃ প্রতিমাং কাঞ্চনী-ময়ীম্। সর্বাবয়বসংযুক্তাং বিচিত্রবসনোক্ষ্লাম্। রাজসীং তদভাবেন তাত্রীং বা মুগ্ময়ীং তথা। যথাবিভবতঃ কার্য্যা কারুকেন স্থিল্লিনা। সংস্থাপ্য পূজয়েত্তঞ্চ যন্ত্ররাজং **ঘটো**-পরি। দেব্যথ্যে চ ঘটং দিব্যং স্থদৃঢ়ং লক্ষণাশ্বিতম্। তত্ত্র যন্ত্রণ সমারোপ্য পূজয়েদিভবাবধি। রক্তপদ্রৈঃ কোকনদৈ-*চম্পকৈ*চারুগর্দ্ধিভিঃ। বিশ্বপত্রৈরামলকী-পত্রে*চ বদরী-नरेनः। बरेग्रम्ह विविरेषः श्रूरेल्शव्वरेख्यम्ह शृहेमृजरेषः। देनरवरिमार्विविदेशस्मिवः करेलर्नानाविदेशत्रि । ছारेशस्मिरेशन्छ বহুভিমাহিষৈশ্চ স্থধংশুধূক্। অবৈ্যনানারসোপেতৈস্তান্ধ লৈশ্চ স্থবাসিতিঃ। নানাবিধস্ত্তক্ষেনশ্চ গীতবাদ্যাদিভিস্তথা। দিবৈব পূজয়িষা ভূ জপ্তা মন্ত্রং সহস্রকম্। হুত্বা চান্নং সিতা-কোদ্রেতাক্তং আসদন্যিত্য্ ৷৷ অন্তাধিক-শতক্ষৈব যোগি-নীক্ষ স্থবাসিতাম্। সংপূজ্য ভোজয়িত্বা চ নরঃ সিদ্ধীশ্বে: ভবেং। ধনবান্ পুত্রবান্ ধীমান্ গুণবান্ জায়তে নর: ইতি। ইহাপি জগদ্ধাত্রীপ্রকরণীয়োক্তযুগ্মাদরক্রমেণ পর-বিদ্বৈবাদর্ণীয়া। অত্র যৎ প্রতিমাযন্ত্রয়োরেকক্র পূজা-বিধানং ত্ৎ পূর্ব্বমেব সমাহিতম্।

ইত্যনপূর্ণাপূজাব্যবস্থা।

অথ তারাদিবিদ্যানাং নৈমিতিকানুষ্ঠানম্ রহন্দীলতন্ত্রে শর্চপটলে—সাবে মাহ্যদিতে পক্ষে রটস্ত্যাখ্যা চতুর্দশী।

তন্তাং সম্পূজয়েন্তারাং মহাবিভববিস্তরৈঃ। মার্গে মাসি সিতে পক্ষে সপ্তমী রবিবল্লভা। অন্ধনাং পূজয়েদ্ভক্ত্যা পুত্র-পৌত্রসমন্বিতঃ। কার্ভিকে শুক্রপক্ষস্ত নবমী যা সিতা ভবেৎ। তন্তাং পূজ্যা মহেশানি স্থন্দরী পরদেবতা॥ স্থন্দরী ত্রিপুর-স্থন্দরীতি।

ইতি সতত্যহামহীশচক্রচুড়ামণিচর্চিত্রচবণনলিন শ্রীমদ্গোপীমোহনপাদপদ্মামন্দনকরন্দসন্দোহানন্দিত্যনোমধুকরশ্রীহরকুমার দেবশন্দ-স্বীয়চিন্তামণিমস্তাচন্ডোদকহবত্ত্বদীধিতে ত্রোদশক্রাপ্রকাপ্রকাপ্রকাশ

অথ বৈধহিংসা। মাতৃকাভেদতন্ত্রে দশমপ্টলে—বিধিনা পরমেশানি যদি পূজাদিকঞ্চরেং। বৎসরাত্তে প্রদাতব্যা বলিরেকঃ স্থরেশ্বরি। অন্যথা নৈব সিদ্ধিঃ স্থাদাজন্মপূজনাদিপ। বলিদানং মহাযজ্ঞং কলিকালে চ চণ্ডিকে। অশ্বন্ধাদিকং যজ্ঞং কলৌ নাস্তি স্থরেশ্বরি। কেবলং বলিদানেন চাশ্বমেবফলং ভবেদিতি॥ তথা নিবন্ধে পঞ্চমপটলে ভগবত্যক্তৌ—সর্ব্বত্রিকোটিতীর্থেশ্ব স্বাত্বা যৎ ফলমন্মুতে। তৎফলং লভতে ভক্ত্যা বলিভিঃ পূজনান্মমেতি॥ বহর্মালতন্ত্রে ষষ্ঠপটলেচ—ভূতহিংসা ন কর্ত্তব্যা পশুহিংসা বিশেষতঃ। বলিদানং বিনা দেব্যা হিংসাং সর্ব্বত্ত বর্জারেং। বলিদানায় যা হিংসাং ন দেব্যার প্রব্ধাতিতা। বেদসম্মত্রিদ্ধান্তঃ প্রা

মমাপি চ সম্মতঃ। পশুযাগে মহেশানি পশুং হস্তান্ন সংশয়ঃ। সা হিংসা নিন্দিতা বেদৈ যা চ বৈধেতরা ভবেৎ। বৈধহিংসা চ কর্ত্তব্যা সংশয়ো নাস্তি কশ্চনেতি।

নকু, হিংসা চৈব ন কর্ত্তব্যা বৈধহিংসা চ রাজ্বসী। ব্রাক্ষাণৈক্ত
সা ন কর্ত্তব্যা যতক্তে সান্ত্রিকা মতা ইত্যাদিবচনৈর্ত্রাক্ষাণৈক্ত
বৈধহিংসাপি ন কর্ত্তব্যেতি কশ্চিৎ জল্পতি তন্ধাদরণীয়ম্।
যত্র যত্র পুরাণেষু নিযিদ্ধং কুরুতে বলিম্। ততু বৌদ্ধমতং
রাজন্নচ বেদেষু সম্মত্য্। যতু পুরঞ্জয়াখ্যানে বলিদানং নিষিধ্যতে। ততু বৌদ্ধমতং রাজ ন্নচ বেদেষু সম্মত্মিতি
গায়ত্রীতন্ত্র-পঞ্চমপটলবচনাৎ।

নচ ব্রাহ্মণানাং সভাবতঃ সাত্ত্বিকভাবত্বান্ধিরুক্তবচনং ব্রাহ্মণেতরবর্ণপরং ব্যাখ্যেয়মিতি বাচ্যম্ ক্বতাদিষু যুগে বিশ্রো বলিং দত্যাদশাংশতঃ। কলিকালে মহারাজ্ঞ দত্যা- দ্বিশ্রুক্তর্ত্তর্ণম্। ক্ষণ্ডছাগদ্বয়ং রাজংস্তথাচ মহিষদ্বমন্। সকুদ্বলিরয়ং প্রোক্তো দরিদ্রীকরণংসকুৎ। যথা কিঞ্চনমাত্ত্রেণ বিক্তশাঠ্যং ন কারয়েদিতি গায়ত্রীতন্ত্রীয়-পঞ্চমপটলবচনাৎ। প্রভাত শক্তিদেবতাপূজায়া বলিদানমন্তরেণ নিষেধাচ্চ। তহুক্তং মাতৃকাভেদতন্ত্রে দশমপটলে—পশুদানং বিনা দেবীং পূজয়েয় কদাচনেতি। তথা নিবদ্ধে তৃতীয়পটলে—বলিদানং বিনা যস্ত পূজয়েজারিশীং নরঃ। ন জ্ঞানং নচ মোক্ষঃ স্থাত্তেষাং পশুধিয়াং প্রিয় ইতি। তারিণীত্যুপলক্ষণম্। যথা কালী তথা ছিল্লা যথা ছিল্লা তথাশ্বুখী। যথা তুগা তথা ধুমা তথা মহিষমদ্দিনী। যথা কালী তথা তারা সর্ব্বান্ডারা- প্রভাব ইতি ভৎপটলাস্থৈব বচনাৎ স্বন্দরী ৮ তথা ছিল্লা

কালী-তারাদিকাশ্চ যাঃ। মহাবিতাশ্চ যাশ্চান্ডাঃ সর্বা-স্তারাবদাচরেদিতি মহানীলতন্ত্রীয়ষষ্ঠপটলবচনাচ্চ।

যত্ত্রপশুযাগং প্রকুর্বাণঃ কলে বেদবিদাংবরঃ। পশা-কৃতিং যবাছাজ্যৈঃ কারয়িত্বা স্বমন্ত্রতঃ। তত্ত্র প্রাণান্ প্রতি-ষ্ঠাপ্য তত্ত্রন্মন্ত্রৈর্ব্বপাঞ্চরেৎ। তেন বিষ্ণুঃ প্রসন্ধঃ সন্ দদাতী-ফ্রাম্মনোর্থানিতি পরাশরসংহিতাবচনেন কলো পশুযাগে পিষ্টময়পশুনা যাগবিধানমূপপাদিতং তদিফুবিষয়ক্যাগে বোধ্যম। তেন বিষ্ণুঃ প্রসন্ধান দদাতীষ্টান্মনোরগানিত্যত্ত विकृपरमापामाना । यमि माधरका कीवश्ठाक कमािट देवव কারয়েং। ইক্ষুদগুঞ্চ কুমাত্তং তথা রম্যফলানি চ। পিত্ত-कौरेतः भानिहरेर्नः পশুः कृषा मरमम्यनिम्। जल्दश्यन-বিশেষেণ তৎপশুং কল্পয়েৎ সদেতি তারাপ্রদীপদ্বিতীয়-পটলবচনং তং, ন শস্তং মারণং কণ্ম ব্রহ্মাপ্তেরী ব্রহ্মসাধকে। যদা সর্ব্বাণি ভূতানি স্বাইয়েব পরিপশ্যতি। সর্ব্বভূতমিবা-স্থানং ব্রহ্ম সম্পন্ততে তদেতি গন্ধর্বতন্ত্র-চতৃত্তিংশপটন-বলিদানপ্রসঙ্গীয়বচনৈকবাক্যতয়া সর্ব্বভূতসালসমদর্শি-ত্রক্ষা-নিষ্ঠপাধকপরম্।

নসু বৃদ্ধনিষ্ঠ সাধকস্য বহিষা গাদির পকর্মণাং প্রয়োজনাভাবাং কুতো ভবতঃ সিদ্ধান্তঃ সঙ্গচ্ছত ইতি চেলৈবম্।
তেষামপি নিদ্ধানেণ যজদানাদিক মণাং কর্ত্ব্যত্তাং।
তথাচ ভগবদ্গীতা সু ভগবদাক্যং—যজ্ঞো দানং তপঃ কন্ম
ন ত্যাজ্ঞাং কার্য্যমেব তং। যজ্ঞো দানং তপকৈব পাবনানি
মনীবিণাম্। এতা শুপি ভু কন্মাণি সঙ্গং ত্যক্ত্বা ফলানি চ।
কর্ত্ব্যানীতি মে পার্ম্থ নিশ্চিতঃ মতম্ভম্মিতি ॥ তথা নিবংক

ত্রিসপ্ততিতমপটলে—জ্ঞানিনোহজানিনো বাপি যাবদ্দেহস্ত ধারণম্। তাবদ্বৰ্ণাশ্রমাচারঃ কর্ত্তব্যঃ কর্মমুক্তয়ে ইতি।

বলিস্ত ত্রিবিধঃ। তদুক্তং গায়ত্রীতন্ত্রে পঞ্চমপটলে— ত্রিবিধা বলয়ঃ প্রোক্তা উত্তমাধমমধ্যমাঃ। উত্তমশ্চো-ত্তমং দত্যান্মধ্যমো মধ্যমং তথা। অধ্যোহপ্যধ্মং দত্তা-দিত্যুক্তস্ত্ৰিবিধো বলিঃ॥ কৃষ্ণচ্ছাগদ্বয়ং রাজন্মহিষদিতয়ং তথা। শুক্লাষ্টম্যাঞ্চ শরদি ন দাতব্যং কদাচন॥ একোবা-২প্যথবানেকঃ কুত্মাণ্ডোদীয়ত্তে যদি। সোহধমঃ কথাতে রাজন্নধ্মেহপ্যধমা গতিঃ॥ দশসংখ্যবলির্ঘত্র মধ্যমন্তেন কথাতে। সান্ত্ৰিকী চোত্তমা পূজা যদি দলামহাবলিম্। অঊমী-নবমী সন্ধে দ্ঞাদ্য়ত্বান্সহাবলিম্ শতং সহস্রং লক্ষং বা অযুতং কোটিকোটিশঃ। শস্ত্ৰতে নৃপতিশ্ৰেষ্ঠ সান্ধিকে পূজনে বলিঃ॥ একেন বলিদানেন চতুর্ব্বর্গমবা-পু য়াৎ। বহুভিবলিদানৈস্ত পরম্বক্ষময়ো ভবেৎ। ব্ছভিৰ্বলিদানৈস্ত জপযজ্ঞৈস্ত ভূপতে। ক্ৰিয়তে সান্তি_ৰকী পূজা সান্তিকী তেন কীৰ্ত্তিতা। দশভিঃ পঞ্চভঃ পূজা জপয**ৈজস্ত**থৈব চ। যা ক্বতা শারদী পূজা রাজদী তেন কীৰ্ত্তিতা॥ বলিভিঃ পঞ্চভিঃ পূজা তামদী তেন কীৰ্ত্তিতা। শান্তি,কপৃজনফলাচ্ছুদ্ধদন্ত, বিকাভ ভবেৎ। বেদে বহু-বিবা-দোহস্তি বেদোক্তং প্রতিপালয়েৎ। বৌদ্ধোক্তং রাজশার্দ্ধ ল দূরতঃ পরিবর্জমেদিতি॥ বহুভিরিত্যাদিবচনং যৎ সাত্ত্রিক-পূজায়াং বহুবলিদানবোধকং তৎ বহুবলিদানপ্রশংসা-পরম্। একেন করবীরেণ সিতেনাপ্যসিতেন বা। হরিং বা হরমভ্যষ্ঠ্য ত্রিকোটিকুলমুদ্ধরেদিত্যাদিবং। অত্যথা সম্পত্ত্য-

ভাববতাং প্রকৃতসাত্ত্বিকানাং বহুবলিদানাসমর্থক্বেন তেষাং সাত্তিকপূজাব্যাঘাতাপত্তিঃ।

নত্ন সর্বেবা বীরজনঃ প্রোক্তঃ পশুর্ত্তাহ্বাল উচ্যত ইতি শ্যামাপ্রদীপ-ধতোমাজামল-বচনেন ব্রাহ্মণানাং সর্ববিদ্ব পশুত্বসিন্ধো, মহিষাদি প্রদাতব্যং দিব্যবীরমতস্থিতৈঃ। স্ব এব সিদ্ধিমাপ্নোতি ফলং সম্যক্ প্রিয়ংবদে ইতি মাতৃকা-ভেদতন্ত্র-দশমপটলীয়বচনেন দিব্যবীরাণামের মহিম-বলিদানস্থ বিহিত্তয়া গায়ত্রীতন্ত্রীয়বচনবলতো বিপ্রাণাণ ভবন্ধি-রূপিতমহিম্বলিদানং কথং সঙ্গছতে ইতি চেন্ন। পশুভাব-স্থিতো মন্ত্রী প্রদল্ভামহিষং যদি। বলিদানং প্রকর্ত্তবাং ন মাংসং ভক্ষয়েম্বর ইতি মাতৃকাভেদতন্ত্র-দশমপটলবচনেন পশুভাবিনামপি তদ্বলিদানস্থ বিহিত্ত্বাৎ।

তত্রাপ্যয়ং বিশেষঃ। সর্বভাবাবলম্বিভির্মহিষাদি দাতব্যং, যদ্যমিবেদিতং দেব্যৈ তস্থাংশং ভক্ষয়েৎ স্বয়মিতি শ্যামার্চন-চন্দ্রিকাপ্পত্রচনাৎ দিব্যবীরৈস্তন্মাংসং ভোক্তব্যঞ্চ নতু পশুভিঃ, তেষামুক্তবচনেন বিশেষতো নিষেধাৎ।

বলীনাংবিশেষো যথা নিবন্ধে তৃতীয়পটলে—অজাবিকানাং রুধিরৈঃ পঞ্চবিংশতিবার্দিকী। সিংহস্ম শরভস্মাথ স্বগাত্রস্ম চ শোণিতৈঃ। শাদূলরুধিরৈশ্চেব সহস্রঃ পরিবৎসরান্। রোহিতস্ম চ মৎস্মস্ম তথা বার্দ্রীণস্স্ম চ। তৃপ্তিমাপ্রোতি বর্ষাগাং শতানি ত্রীণি চণ্ডিকা। মাংসৈরপি তথা তৃপ্তীরুধিরৈর্ষাদৃশী ভবেৎ। অজস্ম দশবর্ষাণি রুধিরেণ স্কর্জ পিতা। মাহিষেণ শতং দেবি তব তৃপ্তিঃ প্রজায়তে; কুল্লাণ্ডমিকুদণ্ডশ্চ মন্ত্রমাসবমেব চ। এতে

বলিদনাঃ জেয়ান্তপ্তে ছাগদনাঃ দনাঃ॥ রুতে বলির্নরঃ
শন্তপ্রেতায়ানুষ্ট এব চ। ঘাপরে ঘোটকঃ শন্তঃ কলো
মহিষ এব চ॥ দিপাদাশ্চ চতুম্পাদাঃ বট্পাদাজান্তথাপরে। জলজাঃ স্থলজাঃ দর্বে থেচরাশ্চাপি স্পত্রতে। মহাদেব্যাঃ পূজনে তু জেয়াস্তে বলয়ঃ প্রিয়ে॥ অজশ্চ মহিষশ্চিব
নরশ্চেতি বথাক্রমন্। বলির্মহাবলিশ্চাতিবলিশ্চাপি প্রকীত্তিত
ইতি। মত্রমাসব ইতি মত্রং মাদকদ্রব্যং সমিদাদি,
আসবঃ স্থরেতি। ছাগদনাঃ দনা ইতি দনাঃ সংবংসরাঃ,
হায়নোহস্ত্রী শরং দনা ইত্যমরকোষাং। তৃপ্তো, তৃপ্রিবিষয়ে,
ছাগদনাঃ দনাইতি ছাগতুল্য বংসরাঃ; জেয়া ইত্যর্থঃ।

অত্র স্ত্রীপশুদানং নিষেধয়তি মহানির্বাণতন্ত্রীয়য়৳।লাদঃ—বলিদানবিধৌ দেবি বিহিতঃ পুরুষঃ পশুঃ। স্ত্রীপশুর্চ হন্তব্যক্তর শান্তবশাসনাদিতি॥ অন্তরাপি—শক্তিমাংসং
ন গৃহীয়াদগুজং জলজং বিনেতি।

ভার্মণেষ্ বিশেষস্থেষণ নিবন্ধে তৃতীয়পটলে—সিংহং
ব্যাঘ্রং নরঞ্চাপি স্বগাত্রকনিরং তথা। মদ্যঞ্চাপি দদদ্বিপ্রা ভার্মণ্যাদেব হীয়তইতি। তথা ভারাপ্রদীপে দিভীয়পটলে
—মূষং মার্জ্জারকং কাম্যং শূদ্রস্য নাপরস্য চেতি॥ যজু
এবং বিপ্রো দেবতায়ৈ স্বগাত্রকবিরং দদেদিতি যোগিনীতন্ত্রযাপটলবচনং তভাদৃশাধিকারিপরম্। পূর্ববিচনে স্বগাত্রক্ষিরদানস্য মদ্যতুল্যনিক্ষাপ্রবণাং।

পশুশব্দপ্রয়োগস্থানমাহ মাতৃকাভেদতন্ত্রে দশমপটলে। শ্রীদেব্যবাচ—পশুপ্রদানে বাক্যন্ত কীদৃশং বদ শহর। কেন বাক্যেন প্রাণেশ দেবী তুষ্টা ভবত্যপি। শ্রীশিব উবাচ। মৃগে মহিষে চোষ্ট্রে চ পশুশব্দং ন যোজয়েং। ছাগলে চ তথা সিংহে ব্যাত্রে চ পরমেশ্বরি। পশুশব্দং যোজয়িত্বা মহাদেব্যৈ নিবেদয়েদিতি।

ছেদন প্রকারমাহ মহানীলত দ্রেই প্টাদশপটলে—উত্থায় হননং কুর্য্যান্নোপবিশ্য কদাচন। সহস্তেন পশুং হত্বা বীরোইপি নরকং ব্রজেদিতি। পশুযোনিমবাপুয়াদিতি পাঠান্তরম্ ॥ তথা নিবকে তৃতীয়পটলে। খড়্গলক্ষণমুক্ত্বা-—ছেদয়েজন খড়েগন বলিং পূর্ব্বমুখস্থিতম্। অথবোতর কল্প স্বয়ং পূর্ব্বাননস্তত ইতি।

বলিমস্তকস্থাপনপ্রকারে। যথা। বারাহীতন্ত্রে নবমপটলৈ—দ্ঞাদ্রাক্ষদিণ্ভাগে মন্ত্রী বলিশিরোদয়ম্। তদ্দক্ষিণে রক্তপাত্রং বিপরীতং ন সংদদেং॥ মহাবলীনাং
বায়ব্যে প্রদায়ং সাবকোত্তমঃ। বলীনামভিসংজানাং
শিরাংসি পুরতো দদেং। দেবতাসংমুখং কৃত্যা ছিল্লভাগং
প্রকল্পয়েং। তদেব শস্তং জানীয়াদধমং বিপরীতকমিতি।

বিহিতবলীনাং মাংসদানস্থাবশ্যকত্বমাহ শ্রামার্চ্চনচন্দ্রিক।

য়তকুমারীতন্ত্রে—বলিদানেহপি বিহিতা যএব মুগপক্ষিণঃ।
এষাং মাংসানি মৎস্থানাং মাংসানি চ নিবেদয়েদিতি।

পশূনাং সক্চছেদনব্যাঘাতে প্রায়শ্চিভমাহ নিবং ।
তৃতীয়পটলৈ—হন্তাদেকপ্রহারেণ অন্তুগা দোষমাবহে ।
তচ্ছান্তয়ে জপেদিছাং তারাদেবীং সহস্রকম্। সহস্রং জুত্যান্মাংসৈর্দছাদা স্বর্ণমাযতঃ। ক্রবিরস্ত ন পার্ববৈত্য তস্তু দেয়ং কদাচন। বলিমন্তং সমাদায় ভগবতৈয় নিবেদ্যাদিতি॥ তারাদেবীত্যুপলক্ষণম্। ততুৎপূজ্যদেবতা-

মন্ত্রজ্পঃ কার্য্যঃ। মাংগৈরিতি তন্মাংগৈরিতি তাৎপর্য্যার্থঃ ইতি সাম্প্রদায়িকাঃ। স্বর্ণমানত ইতি মান্ত্রমাণং স্বর্ণম্। মান্তর পঞ্চপ্রগাপরিমিতঃ, গুঞাঃ পঞ্চাল্তমান্তকা ইতি তিথি-তত্ত্বে স্মার্ভঃ॥ বলাবলেতিকভব্যতা তু সর্কৈনিবন্ধকারৈ-রুদাহতা অতোহত্র ন প্রপঞ্চিতা।

অথ পুরশ্চরণম্। তদ্যেতিকত্ত ব্যতা পুরশ্চরণবোধিয়াং সঙ্গলিতা। তত্র, ন পুরশ্চরণং বিপ্র নাস্তি হোমঃ কলো দিজ। অভিষেকো নান্তি বিপ্র তর্পণং নান্তি নান্তি বৈ ইতি কালীবিলাপতন্ত্রীয়-নবমপটলবচনেন কলো পুর-*চরণাভাব ইতি কেচিৎ সংশয়মাপস্তন্তে তয় তত্ত্রৈ-কাত্তগুরুনিষ্ঠজানিপরমিতি ক্রমঃ। অথবান্যপ্রকারেণ পুর-শ্চর্য্যাবিধিঃ স্মৃতঃ। গুরোশ্ছায়ানুসারী স্থাতদ্ধ্যাননিরতঃ সদা। ভুপ্টেন গুরুণা যাবলভেদাজাং স্থসিদ্দিদাম্। গুরু-মন্ত্রং জপেত্তাবদিত্যাদি সিদ্ধলহরীতন্ত্রবচনম্বরসাৎ জম্বু-দ্বীপস্ম বর্ষে চ কলিকালে চ ভারতে। দশাংশং বর্জ**য়েন্ডডে** নাস্তি হোমঃ কদাচন। দশাংশক্রমতো দেবি পঞাঙ্গবিধিনা करलो। नाहरतः कृतिमञ्जी शृतम्हर्यग्रविधिः एट । ज्यान्-यि মহাদেবি কারয়েৎ সাধকোত্তমঃ। সিদ্ধিহানির্যহানিষ্টং জায়তে ভারতে**২ন**ঘে। দশাংশং জায়তে পূর্ণং গুরুদেবস্য পূজনাৎ। অতএব মহেশানি ভক্ত্যা গুরুপদং যজেৎ। দক্ষিণাং গুরবে দ্যাৎ সুবর্ণং বাসসায়িতম্। ধান্যং তিলং তথা দদ্যাদ্ধেনুং ৰাপি পয়স্বিনীম্। অন্যথা বিফলং সর্বং কোটি-পুরশ্চরণেন কিমিতি কঙ্কালমালিনীতন্ত্রপঞ্চমপটলবচনাচ্চ। যদা গুর্বাজয়া পুরশ্চরণং কুর্য্যাৎ, আজা **গু**রণাং **হুবি**- চারণীয়া ইতি বচনাৎ পূজামূলং গুরোর্ধ্যানং মন্ত্রমূলং গুরো-র্বচ ইত্যাদিশাসনাচ্চ।

যন্ধ। ক্ষুধানিজাতুরাণামনধিকারঃ। পুরশ্চর্য্যা কলো নাস্তি ক্ষুধানিজাতুরো নরঃ। কলো হোমো মহেশানি নাস্তি নাস্তি কদাচনেতি সিদ্ধলহরীতন্ত্রবচনাৎ কলো নাস্তি পুরশ্চর্য্যা ক্ষুধানিজাতুরো যত ইতি কালীবিলাসতন্ত্রচতুর্থপটলবচনাচ্চ।

যদা পুর*চরণাঙ্গহোমাদিনিধেধস্ত জপস্যাবশ্যাদিকতায়াঃ কর্ত্তব্যত্তাভিপ্রায়েণ পুরশ্চরণাদৌ জপস্থ সর্কাদৈব ব্যাপ-কত্বং হোমাদীনান্ত ব্যাপ্যত্বং তথা মন্ত্রসিদ্ধেঃ সাক্ষাৎ প্রযো-জকো জপঃ। তহুক্তং পিহিলাতত্ত্বে একাদশপটলে—বিনা হোমৈর্ন চৈম্বর্য্যং ন সিদ্ধিজ্পনং বিনেতি॥ তথা কঙ্কাল-মালিনীতক্ত্রে পঞ্চমপটলে—জম্বুদ্বীপস্য বর্ষে চ কলো ভারত-সংজ্ঞকে। যথেচ্ছয়াপি গিরিজে জপাৎ সিদ্ধর্ম সংশয়ইতি॥ অপিচ মুঙ্মালাতন্ত্রে পঞ্চমপটলে—সুপ্রদল্লা মহাবিভা জপাৎ সিদ্ধিভবিষ্যতি। জপাদ্ভক্তির্জপাদ্কির্জপান্সকির্ন তৎক্রিয়া। জপাতন্ত্রং জপান্মন্ত্রং জপাদ্যন্ত্রং স্থরেশ্বরি জপাৎ কান্তির্জপাচ্ছান্তির্জপাৎ শ্রদ্ধা জপাদয়া। জপাৎ তুষ্টির্জপাৎ পুষ্টির্জপাদ্গতির্জপানতিঃ। জপাদ্রুদ্ধির্জপা-লক্ষীর্জপাজ্জাতিজ্জপাৎ স্থিতিঃ। জপাচ্ছান্তির্জপাচ্ছান্তি-র্জপাচছান্তি ন সংশয়ইতি॥ শিবার্চনচন্দ্রিকায়ামপি—যাবন্তঃ কর্ম্মযজ্ঞাঃ স্থ্যঃ প্রদিষ্টানি তপাংসি চ। নর্কে তে জপ-যক্তম্য কলাং নাইন্তি ষোড়শীম্ । জপেন দেবতা নিত্যং স্তুয়মানা প্রস্বীদতি। প্রসন্না বিপুলান্ ভোগান্ দভামুকিঞ্

শাশ্বতীমিতি॥ অতএব ত্রিলোকারাধ্যচরণশ্রীমচ্ছঙ্করেণ কলো ক্ষুধানিদ্রাভুরসকললোকেরু কুপাবলোকনং বিস্তার্থ্যা নারাসসাধ্যকেবলজপেনৈব তেষাং মন্ত্রসিদ্ধির্ভবিদ্বিত্যভিপ্রায়েণোক্তং। নতু তত্তৎকর্মসমর্থানাম্। গৃহীয়া চ মহাবিচ্যাং জপেজ্জীবাবিধি প্রিয়ে। প্রত্যহং পরমেশানি দিবসং ন রথা নয়েং। পূজাদো যত্তশক্তং স্থান্তগাপি প্রজপেশাসুমিতি পিচ্ছিলাতক্ত্রৈকবিংশপটলীয়বচনেন যথা পূজাদাবশক্তাবিপি জপং ন ত্যজেত্তদ্বদিহ হোমাদীনামপি। বস্তুণ্যক্তাবিপি জপং ন ত্যজেত্তদ্বদিহ হোমাদীনামপি। বস্তুণ্যক্তাবিপাত্যনালোচনযোগ্যানি অনাদিসিদ্ধসংস্প্রক্তাব্যবহারবিরোধাং। অতএবোক্তং কুজিকাতত্ত্বে প্রথম প্রত্তাব্যবহারবিরোধাংন কর্ত্বরঞ্জ মহেশ্বরি। সম্প্রদায়বিধানেন কর্ত্বরঞ্জ মহেশ্বরি। সম্প্রদায়বহারবিরোধিবচনানি পরিহার্য্যাণীতি দিক্।

অথ যুগভেদে জপসংখ্যাভেদঃ। তত্র বৈশস্পায়নঃ—

জপাদৌ সর্বতিন্ত্রেষু যথা সংখ্যা বিধীয়তে। তত্র সর্বত্ত

সন্ত্রাণাং সংখ্যাবৃদ্ধির্গক্রমাৎ। প্রজপেছকুসংখ্যায়াশ্চতুভূণজপং কলাবিতি।

অত্র কেচিৎ এতেনপ্রপঞ্চসার-শারদাতিলকাত্যক্তজ্ঞপস্থাপি চতুগুণাদিনা কলো পুরশ্চরণমিতি বদন্তি তন্ন যতঃ
তত্র নারদপঞ্চরাত্রাদিদর্শনাৎ প্রপঞ্চসারাত্মক্তজ্ঞপশ্চতুগুণ
এব। তথা নারদপঞ্চরাত্রে—মার্গশীর্ষস্থ মাসস্থ ত্রীণ্যহাস্থেকমেব বা। উপোষ্য শুরশ্চরণকৃদ্দিজঃ। শুদ্ধাচারঃ শুচিঃ
মাতো বাগ্যতো বিজিতেক্রিয়ঃ। সন্ত্রসিদ্ধিস্ত তত্ত্বৈব লক্ষ-

দ্বয়জপাদ্ধবেৎ। ততোহপি দিগুণাভ্যাসাদৈহিক্যাম শ্লিকী তথা। এবমেবাত্মসিদ্ধিঃ স্থাদেতাবং প্রথমে যুগে। ত্রেতায়াং দিগুণঃ প্রোক্তো ছাপরে ত্রিগুণস্তথা। কলো চতু-গুণঃ প্রোক্তো দ্বাত্রিংশল্লকণঃ শুভঃ ইতি॥ অদৃষ্টার্থমদ্রাভি-মুখ্যকরী ঐহিকীহলোকে স্থখন। আমুষ্মিকী স্বর্গলোকে স্থখন। আত্মসিদ্ধিস্তভ্ৰুজ্ঞানসাধনভূতসিদ্ধিরিতি । এবং দ্বাতিংশল্লক-ণম্। অতএব দ্বাত্রিংশল্লক্ষমানে চ তস্তু মন্ত্রং জপেৎ প্নরিতি প্রপঞ্চারবিংশপটলে আচার্যাচরণৈরপ্যক্তম্। তথা জ্ঞানা-র্ণবে বালাপ্রকরণে—বর্ণলক্ষং জপেন্মন্ত্রং তদ্দশাংশং কলৌ প্রিয়ে ইতি বালায়ামভিধায় আদপূজাদিকং সর্কমস্তাঃ পূর্ববদাচরেদিতি ভৈরব্যামতিদিপ্টলক্ষত্রয়জপং চতুগুণীক্নতা, দীক্ষাং প্রাপ্য জপেনস্ত্রং তত্ত্বলক্ষং জিতেন্দ্রিয় ইতি সত্য-নিত্যভিগায় বালায়াস্তাবদেব, এমা বালেতি বিখ্যাতা ত্রৈ-লোক্যবশকারিণা। জপপূজাদিকং সর্ববমস্যাঃ পূর্ববদা-চরেদিতি শারদাতিলককৃতাতিদিপ্তম্। তত্ত্বলক্ষং দাদশ-লক্ষ্। অতো ছাদশলক্ষাণি বদস্ত্যেকে বিপশ্চিত ইতি প্রয়োগসারবচনাদিতি। তথাচ প্রপঞ্চসারে নবমপটলে ভৈরবীপ্রকরণে—দীক্ষাং প্রাপ্য বিশিষ্টলক্ষণযুক্তঃ সৎসক্ত দায়াদ্ওরোল্কু । মন্ত্রমিমং জপেদ্বিমলধীস্তভা্দ্রলক্ষং বশীতি দাদশলক্ষ্ক্রম্। তথা লক্ষত্রয়ং জপেনান্ত্রমিতি দক্ষিণামূতি-সংহিতায়ানুক্তদ্য ত্রিপুটামন্ত্রদ্য জপেচ্চ মন্ত্রমাদিত্যলক্ষ্মিতি ভাকুলক্ষং জপেদেত্যিতি চ। প্রপঞ্চার-শারদাতিলক্ষো-শ্চত্বপ্ত প্র বিভিন্ন : তেনৈকত্র নির্ণীত ইতি আয়েন সৰ্ব্যত্ত চতুর্ভ পএবাভিহিত ইতি নির্ণীতম্।

নচ তদৰ্দ্ধসংখ্যকং বাপি শুদ্ধাচারে। জিতেন্দ্রিয় ইতি প্রপক্ষপারে জপাভিধানবিরোধ ইতি বাচ্যম্ তস্মৈহিক-সিদ্ধিপরস্বাদামুশ্মিকপরত্বাদ্বা বিরোধাভাবাদিতি।

যতু মহাবিতা অধিকৃত্য শ্রামার্চনচন্দ্রিকাপ্পত-মালিনীবিজয়ে—ইত্যাতাঃ সকলা বিদ্যাঃ কলো পূর্ণফলপ্রদাঃ।
সিদ্ধমন্ত্রতয়া নাত্র যুগসেবাপরিশ্রমঃ। তথা চৈতা মহাবিতাঃ
কলিদোষান্ন বাধিতা ইতি তত্তাসাং প্রশংসাপরন্। অভ্যথা
বালায়াঃ সিদ্ধবিতাত্বেহপি জ্ঞানার্ণব-দক্ষিণামৃত্তিকল্লাদি-মূলএন্থোক্ত-ত্রিলক্ষপুরশ্চরণজপত্ম প্রপঞ্চার-শারদাতিলক।দিপ্রামাণিকনিবন্ধকারাণাং তচ্চতুগুর্ণাক্তের্বিরোধাপত্তিঃ।

বস্তুতস্ত তাদৃশানধিকারিণাং শূদ্রাণামেব চতুর্গুণজপঃ।
ততুক্তং শ্যামার্চ্চনচন্দ্রকাপ্পতৈকবারাকল্পে—ভাবনারহিতানান্ত শদ্রাণাং কুদ্রচেতসাম্। চতুর্গুণজপঃ প্রোক্তঃ সিদ্ধয়ে নান্তথা কলাবিতি॥ এবং সতি, ক্বতে চোক্তজপাৎ দিধ্যেৎ ত্রেতায়াং দিগুণাজ্জপাৎ। দ্বাপরে ত্রিগুণাচ্চেব কলো সংখ্যাচতুর্গুণাৎ। কৃষ্ণমন্ত্রেমু সর্বেরু যুগসংখ্যা ন বিহ্যতে। জপতপণসেবাকৈঃ সিধ্যন্তে কৃতসংখ্যয়া। সিদ্ধযন্ত্রতারা নাত্র যুগদেবাপরিশ্রম ইতি গোতমীয়ত্রিংশাধ্যায়বচনমপি সঙ্গুল্পতে।

অথ কেচিৎ, যদি হোমেহপ্যশক্তঃ স্থাৎ পূজায়াং
তর্পণেহপি বা। তাবৎসংখ্যজপেনৈব ব্রাহ্মণারাধনেন চ।
ভবেদঙ্গদ্বয়েনৈব পুরশ্চরণমাধ্য বৈ ইত্যগস্ত্যসংহিতাবচনেন কেবলদ্ব্যঙ্গেন পুরশ্চরণমিতি॥ অপরে তু নাজপাৎ দিধ্যতে মন্ত্রো নাহুতশ্চ ফলপ্রদঃ। অন্তিতো

হরেৎ কাসাংস্তস্মাত্রিতয়সাচরেদিতি শিবার্চ্চনচন্দ্রিকাপ্পত-কুলপ্রকাশবচনাত্রিতয়াত্মকপুরশ্চরণমিতি। অত্যে তু, সংসারে তুঃখভূয়িঠে যদীচ্ছেচ্ছে য় আত্মনঃ। পঞ্চাঙ্গোপাসনে-নৈব মন্ত্রজাপী স্থং ব্রজেদিতি কুলমূলাবতারবচনাৎ জপাদীনাং দশাংশেন কর্ত্ব্যঃ সিদ্ধিমিচ্ছতেতি বায়বীয়সং-হিতাবচনাচ্চ তত্র পঞ্চাঙ্গমিতি॥ ইতরে তু, জপো হোমস্তর্পণঞ্চ স্বাভিষেকো বিভাবনম্। সূর্য্যার্য্যং জলদানঞ্চ প্রণামে! দেবপূজনম্। ত্রাহ্মণানাং ভোজনঞ্ পূর্বপূর্বক্রমে। তু। দশাঙ্গোপাসনং ভক্ত্যা পুরশ্চরণমৃচ্যত ইতি সারসংএহবচনা-দ্দশাঙ্গং বদন্তি। তৎ কুত্রচিদ্দেবতাভেদেন ৰুচিন্মন্ত্র[্] ভেদেন বেত্যবগন্তব্যম্। তদাহ রামানন্দতীর্থস্বামিশোধিত-রুহতন্ত্রসারে রাঘবভট্টপ্লতবচনম্—ব্রাহ্মণান্ ভোজয়েমাঞ মঞ্জুঘোষে ষড়ক্ষরে। চতুরঙ্গস্ত তৎ প্রোক্তং সপ্তাসং কালিকাদিম্বিতি। সপ্তাঙ্গং যথা তত্ত্বৈবাভিষেকান্তে—তদ্দ-শাংশেন বিপ্রেন্তা যুবতীঃ কুলকন্সকাঃ। শিবাখ্যং ভোজয়েৎ সম্যক্ পুরশ্চরণমাঁদৃশমিতি।

অথ গ্রহণপুরশ্চরণম্। তত্র দীক্ষিতানাং জপদ্যাবশ্যকত্বং পুরশ্চরণবোধিন্যাং বিবৃতং পুনজ্লনেনালম্। তত্র
কালীতন্ত্রে সপ্তমপটলে—অথবান্যপ্রকারেণ পুরশ্চরণমুচ্যতে। সূর্য্যাচন্দ্রগ্রহে চৈব গ্রামাবধিবিমুক্তিতঃ। যাবৎসংখ্যং মন্মং জপ্ত্রা তাবদ্ধোমাদিকঞ্চরেদিতি বচনেন কালীবিভায়াং গ্রহণপুরশ্চরণে জপদমসংখ্যকহোমাদীনাং কর্ত্ব্য
দ্বিতি কেচিৎ তম্ন স্মীচীনম্। যথাক্রতার্থগ্রহণে কাল্যপাসকেষ্ একাক্ষর্য্যাদিমন্ত্রোপাসক্ষ্য নবদণ্ডাত্মককালস্থায়িনি

ত্রহণে প্রায়শোহন্টাদশসহস্রাদিসংখ্যক-জপসম্ভাবনায়াং তংসংখ্যকহোমতর্পণাভিষেকব্রাহ্মণভোজনকর্মনির্বাহায় কতি
কতি দিনানি যাস্মন্তি। বিশেষস্ত দীক্ষিতাস্টাদশসহস্রসংখ্যকব্রাহ্মণানাং সঙ্কলনমতীব তুঃসাধ্যং তত্রাপি, কালীমন্ত্রবিদাে
বিদ্বান্ ভোজয়েত্তদশাংশত ইত্যাত্যক্তবিধিপালনে রাজ্ঞামপ্যসম্ভবাদন্মেনাং স্কতরাং স্থদ্রপরাহতত্বম্ ॥ এবঞ্চ যস্থা
লক্ষসংখ্যক-জপরপ-ম্থ্যপুরশ্চরণাঙ্গ-দশসংখ্যকব্রাহ্মণভোজনেনৈতৎকর্ম্মসম্পূর্ত্তিঃ তস্থা এব থগুপুরশ্চরণে অস্টাদশসহস্রসংখ্যকাদিব্রাহ্মণভোজনবিধিপ্রাপ্তে বিষ্যাশিক্টাপতিঃ।

অতন্তপ্রায়মর্থঃ সূর্য্যাচন্দ্রয়োর্ত্রণে প্রাসাবধি বিমুক্তিং
যাবৎ তাবৎ কালং ব্যাপ্য, সংখ্যং সংখ্যাবিশিষ্টং যথা
প্রান্তথা, মন্থং জপ্তা হোমাদিকঞ্চরেদিত্যর্থঃ তাবদ্বাক্যালকারে ॥ সংখ্যাশব্দশ্য ক্রিয়াবিশেষণত্বে হেতুমাহ। বিশ্বসারতন্ত্রে দিতীয়পটলে—জপসংখ্যা প্রকর্ত্তব্যা নাসংখ্যা চ
কথঞ্চন। অসংখ্যাকারকস্থাপি সর্ববং ভবতি নিম্ফলমিতি।
হোমাদিকন্ত দশাংশক্রমেণ জ্বেয়ং বহুভিরেকবাক্যম্বাৎ।

অথ গ্রহণে মেঘাচ্ছন্নে যৎ কর্ত্তব্যং তৎ প্রদর্শতে। যথা কামধেত্তন্ত্রে সপ্তবিংশপটলে। শ্রীদেব্যবাচ—দেবদেব মহা-দেব কুপয়া পরমেশ্বর । চক্রদূর্য্যোপরাগশ্চ মেঘাচ্ছন্নো ভবেদ্বদি । কিং কর্ত্তব্যং তদা দেব জপহোমাদিকর্ম্মণঃ। নিশ্চরং দেবদেবেশ কথ্যতাং পরমেশ্বর । শ্রীমহাদেব উবাচ । শৃণু দেবি প্রবক্ষ্যামি রহস্তমতিগোপনম্। চক্রদূর্য্ত্রাছে দেবি ছুদ্নিং যদি জায়তে। তথাপি পরমেশানি জপহোন্যাদিকক্ষরেৎ। চক্রদূর্য্যাপরাগশ্চ ন তু ত্যাজ্যঃ কদাচন।

চব্দ্রপর্ব্বে সূর্য্যপর্ব্বে ক্রিয়াসিদ্ধির্যথা ভবেৎ। তস্ম তৎ তুদ্দিনং मृख्ना नञ्च ত্যাজ্যः कमाठन। निशीराय विषवूका। जू अमृजः यमि মানবঃ। অমৃতস্থ ফলং দেবি তস্থাপিজায়তে ধ্রুবম্। অমৃতস্ম ফলং দেবি তদেব নাগ্ৰথা কচিৎ। তৎক্ষণাচ্চঞ্চলা-পাঙ্গি চন্দ্রপর্বাফলং লভেৎ॥ যদি নো দৃশ্যতে দেবি তদ্বিশ্বং বরবর্ণিনি। তথাপ্যবশ্যং কর্ত্তব্যা দীক্ষাফোমাদিকাঃ ক্রিয়াঃ। মোহাদজ্ঞানতো বাপি আলস্যাদ্বরবর্ণিনি। অকৃত্বা যাতি নরকং পুনরার্ত্তিত্র্লভম্। তৎকালং চঞ্লাপাঙ্গি সূক্ষাং সনাতনং স্বয়ম্। গ্রাসকালং বরারোহে ব্রহ্মাদীনামগোচরম্। তথৈব শুদ্ধকালঞ্চ হৃদি ভাবয় পার্ব্বতি। ক্ততে গ্রাসে বরারোহে সর্বেষাং গোচরে। ভবেৎ। এবং ত্যাগে মহেশানি সর্বেষাং গোচরো ভবেৎ। জপযজ্ঞাদিকং সর্ববং তুর্দ্দিন্মহপি প্রশ-**স্থতইতি জ্বপহোমা**দীত্যাদি-শব্দেন তর্পণ দিপরিগ্রহঃ॥ অত্র পুনঃপুনর্জপহোমানিকঞ্বেদিতি প্রবণাৎ মেঘাচ্ছন্নেহপি সাঙ্গপুরশ্চরণং কর্তব্যম্॥ বস্তুতস্ত মেঘাচ্ছন্নে জপমাত্রং কর্ত্তব্যং নতু হোমাদি। এতদেবোক্তং শক্তিসঙ্গমতন্ত্রে এক-বিংশপটলে—অন্তাদৃষ্টে নিশাং দাবে মধ্যগ্রাসে মহেশ্বরি। মেঘাচ্ছমে মুক্তিহীনে স্নানদানাদিকঞ্চরেৎ। জপমাত্রং বিধাতব্যমিত্যাদি-হোমাদিবিধায়কোক্তবচনানি গ্রহণপ্রশংসা-পরাণীতি ন কশ্চিদ্বিরোধঃ।

গ্রহণে আসনোপবেশননিষেধমাহ কামধে সূতন্ত্রে দ্বাত্রিংশ-পটলে—গ্রহণে চন্দ্রসূর্য্যস্থ আসনে ন বসেত্তলা। কাশী-ক্ষেত্রসমা ভূমিগ্রহণে চন্দ্রসূর্য্যয়োরিতি। ইতি সত্তমহামহীশচক্রচূড়ামণিচর্চিত্তরণনলিন শ্রীমদ্গোপী-মোহনপাদপদ্মামন্দমকরন্দসন্দোহানন্দিত্যনোমধ্কর-শ্রীহরকুমার দেবশর্ম-স্বীয়চিন্তামণিমন্ত্রচিন্তাদর্ক-হরতত্ত্বীধিতৌ চতুর্দশকলাপ্রকাশঃ।

অথাচারো নির্ণীয়তে। সচ সপ্তবিধঃ তছুক্তং কুলার্ধবৈ বিত্তীয়োল্লাসে—সর্বেভাদেচাত্তমা বেদা বেদেভ্যো বৈষ্ণবং পরম্। বৈষ্ণবাতুতমং শৈবং শৈবাদ্দক্ষিণমূত্তমম্। দক্ষিণা-ছুত্তমং বামং বামাৎ সিদ্ধান্তমুত্তমম্ সিদ্ধান্তাতুত্তমং কৌলং কৌলাৎ পরতরং নহীতি।

এবাং লক্ষণানি যথা বিশ্বসারতন্ত্রে চতুর্বিংশপটলে—
দেবদেব মহাদেব মৎপ্রিয়ার্থং মহেশ্বর। চীনাচারক্রমো
নাথ ভবতা প্রকটীক্রতঃ॥ আচারাঃ সপ্ত বেদাছাঃ কৌলাস্তাঃ কথিতা বিভো। ভাবাস্ত্রয়স্তথা দেব দিব্যবীরপশুক্রমাং। এতেবাং বদ মে ভেনং যহাহং তব বল্লভেতি
দেব্যাঃ প্রশানন্তরং শ্রীঈশ্বরউবাচ। সাধু পৃষ্টং ত্বয়া ভদ্রে
লোকানাং হিতকাম্যয়া। আচারাঃ সপ্ত বেদাছান্তেমু ভাবেমু
সংশ্বিতাঃ। চঙ্গারো দেবি বেদাছাঃ পশুভাবে প্রতিষ্ঠিতাঃ। বামাছার্য্য আচারা দিব্যে বীরে প্রতিষ্ঠিতাঃ।

বেদাচারং প্রবক্ষ্যামি শৃখু সর্বাঙ্গস্থলরি। ব্রাক্ষ্যে মুহুর্তে উপায় গুরুং নত্বা তু নামভিঃ। আনন্দনাথশব্দাক্তঃ পূজয়ে-দ্ব দেশিকঃ। সহস্রাস্থ্যে ধ্যাত্বা উপচারেস্ক পঞ্চিঃ। প্রজপ্য বাগ্তবং বাঁজণ চিন্তুয়েৎ প্রমাণ কলাম্। সূব্য মন্ত্রং প্রজপ্যাথ বহির্গত্বা বরাননে। মলমূত্রং পরিত্যজ্ঞা স্রাত্বা তু পরমেশ্বরি। সন্ধ্যামুপাস্থ্য বিধিবৎ কুর্যাদাবশ্যকং ততঃ। অপারতশরীরঃ সংস্ত্রিসন্ধ্যং স্থানমাচরেৎ। রাত্রো নৈব যজেদ্দেবান সন্ধ্যায়াং বাহপরাহ্লকে। ঋতুকালং বিনাদেবি স্বভার্যারমণং ত্যজেৎ। মৎস্যং মাংসং মহেশানি ত্যজেৎ পঞ্চস্থ পর্বস্থ। যদস্থাদেবিহিতং কুর্যানিয়ত-তৎপরঃ। ১॥

অথ বক্ষ্যে মহেশানি বৈশ্ববাচারয়ন্তমম্। বস্তা বিজ্ঞানমাত্রেণ কালান্ডীতির্ন বর্ততে। বেদাচারক্রমেণের সদা
নিয়ততৎপরঃ। নৈথুন তৎকথালাপ কদাচিষ্ণের কারয়েং।
হিংসাং নিন্দাঞ্চ কোটিল্যং বর্জ্জয়েন্মাংসভোজনম্। রাত্রৌ
পূজাং তথা মালাং ন কুর্য্যান্ধের সংস্পৃশেং। বিষ্ণু সমর্চ্চয়েদ্বেবি বিষ্ণে কর্ম্ম নিবেদয়েং। ভাবয়েং সর্ব্বদা দেবি
সর্ব্বং বিষ্ণুময়ং জগং। তপঃকন্তাতিশয্যেন স্ব্র্রাচ্যুতচিন্তায়া। বৈশ্ববাচার ঈশানি বৈদিকেভ্যো বিশিষ্যতে। ২॥

শৃণু চার্বাঙ্গি শুভণে শৈবাচারং স্তর্লভ্য। বেদাচারক্রমো দেবি শৈবাচারে ব্যবস্থিতঃ। তদিশেষো মহেশানি
পশুহিংসাবিবর্জনম্। শিবং মহেশ্বরং শান্তং চিন্তয়েৎ সর্বাব কর্মস্থা তোষয়েদজ্বাছেন চতুর্ববর্গপ্রদং হরম। তমেব শরণং গচ্ছেমনোবাক্কায়কর্মজিং। সিন্ত্যাশু মহেশানি শৈবাচারনিধেবণাৎ। অতস্তাভ্যাং পরো ধর্মঃ শৈবাচারঃ প্রকীতিতঃ। ৩॥

ইদানীং পৃণু বক্ষামি দক্ষিণাচারমন্ত্রিক্তে। যস্য স্মর্থ-মাত্রেণ সংসার মৃচ্যতে নরঃ। দক্ষিণামূরিশ্বমিণামুষ্ঠিতো হসো মতঃ প্রিয়ে। অতএব মহেশানি দক্ষিণাচার উচ্যতে। প্রবর্ত্তকোহ্যমাচারঃ প্রথমং দিব্যবীরয়োঃ। অতস্তেভ্যঃ কুলেশানি শ্রেষ্ঠোহসৌ দক্ষিণঃ স্মৃতঃ। বেদাচারক্রমেণেব পূজয়েৎ পরমেশ্বরীম্। স্বীকৃত্য বিজ্ঞয়াং রাত্রো জপেমান্ত্র-মনশ্রধীঃ। চতুষ্পথে শাশানে বা শূন্যাগারে নদীতটে। পাতালভবনে বাপি গিরো বা দীর্ঘিকাতটে। শক্তিক্ষেত্রে মহাপীঠে বিশ্বমূলে শিবালয়ে। ধাত্রীরক্ষতলেহশ্বথমূলে চৈব তরোস্তলে। সমাপ্রিত্য মহাশন্তমালাং দিদ্ধিপদং ব্রজেৎ। ৪॥

বামাচারং প্রবক্ষ্যামি সন্মতং দিব্যবীরয়োঃ। যং গ্রু-হৈব মহেশানি সর্ব্বসিদ্ধীশ্বরো ভবেৎ। দিবসে পরমেশানি ব্রহ্মচারী সমাহিতঃ। পঞ্চতত্ত্বক্রমেণেব রাজ্রো দেবীং প্রশৃ-জয়েং। চক্রান্স্পানবিধিনা মূলমন্ত্রং জপন্ স্বধীঃ। ধ্যায়ন্ দেবীপদাস্তোজং সাধয়েদ্বীরসাধনম্। স এব ধল্যো লোকে-হস্মিন্ পূজ্যো মান্তঃ স্থাররপি। কিমন্তৈঃ সাধকৈর্দেবি স বীরো ভুবি তুর্লভঃ। প্রকাশাং সিদ্ধিহানিঃ স্যাদ্বামাচার-গতৌ প্রিয়ে। অতো বামপথং দেবি গোপয়েশ্বাভ্জার-বং।৫.॥

অপরং শৃণু বক্ষ্যামি সিদ্ধান্তাচারলক্ষণম্। ব্রহ্মানন্দময়ং জ্ঞানং যন্মাদ্দেবি প্রপাসতে। বেদশাস্ত্রপুরাণেয়ু গৃঢ়ং
জ্ঞানসিদং প্রিয়ে। কাষ্ঠমধ্যে যথা বহ্নিস্তথা তেয়ু প্রতিষ্ঠিতম্। দেব্যাঃ প্রীতিকরং পঞ্চতত্ত্বং মন্ত্রৈবিশোধিতম্।
সেবেত সাধকো দেবি পশুশক্ষাবিবর্জিতঃ। সৌত্রামণ্যাং
যথা ব্যক্তপানদোষো ন বিভাতে। সিদ্ধান্তেহিস্মংস্তথাচারে
স্প্রপ্রাং পিবেং। অশ্বনেধক্রতো বাজিহত্যাদোষো

ন জায়তে। অস্মিন্ ধর্মে তথেশানি পশূন্ হিংসন্ধ ছুষ্যতি। কপালপাত্রং রুদ্রাক্ষমন্থিমালাঞ্চ ধার্য়ন্। বিহরেডুবি দে-বেশি সাক্ষাদ্রৈরবরূপধৃক্। শঙ্কাত্যাগাদ্যক্তভাবাত্তথৈব সত্য-সেবনাৎ। বামাদপি কুলেশানি সিদ্ধান্তঃ প্রমঃ স্মৃতঃ। ৬॥

কৌলাচারবিবিং বক্ষ্যে সাবধানাবধারয়। যস্ত বিজ্ঞান-মাত্রেণ শিবে। ভবতি নান্তথা। দিক্কালনিয়মো নাস্তি তথা বিধিনিষেধয়োঃ। ন কোহপি নিয়মো দেবি কুলধৰ্মস্য সাধনে। কৌল এব গুরুঃ সাক্ষাৎ কৌল এব সদাশিবঃ। কোলঃ পূজ্যতমো লোকে কোলাৎ পরতরো নহি॥ কর্দ্ধমে চন্দনে দেবি পুত্রে শত্রো প্রিয়াপ্রিয়ে। শাশানে ভবনে **ए**निव छरेशेव कोश्नरन छर्। न एछर्ना येख एनरिवी म এव কৌলিকোত্তমঃ। চিন্তয়েদালনালানং সর্বত্ত সমদৃষ্টিমান্। দয়াধৃতিক্ষমাযুক্তঃ স জ্ঞোঃ কৌলিকোত্তমঃ॥ সর্বভূতেযু যঃ পশ্যেদারানং বিভূমব্যয়ম্। ভূতাতাত্মনি দেবেশি স জ্ঞেয়ঃ কৌলিকোত্তমঃ॥ যস্ত্র ধ্যানপরো দেবি জ্ঞাননিষ্ঠঃ সমাহিতঃ। সাধয়েৎ পঞ্চত্ত্বেন স কোলো মধ্যমঃ স্মৃতঃ॥ জপপূজাহোমরতো বীরাচারপরায়ণঃ। আরুরুকুজুর্মভূমিং স কৌলঃ প্রাক্তো মতঃ॥ করিপাদে নিমজ্জন্তি সর্কে প্রাণিপদা যথা। কুলধর্ম্মে নিমজ্জন্তি সর্কেব ধর্মান্তথা প্রিয়ে ইতি। १॥ দক্ষিণাচারিণাং যৎ শাণানমহাশন্থানালা-দ্রাক্তং তন্মস্রাণাং ছিন্নাগুষ্টদোষশান্তিপ্রকরণে প্রকটীক্বতং পুনরপ্যতাে ভবিষ্যতি।

তস্থাচারস্থ সপ্তবিধত্বেইপি সচ ত্রিবিধভাবেন পর্যাব-সিতঃ। তথাহি তারেন—ইদানী॰ শুণু বক্ষ্যাপনি ত্রিবিধ"

ভাবলক্ষণম্। আদে পশুস্ততো বীরশ্চরমো দিব্য উচ্যতে॥ জ্ঞানেন পশুকর্মাণি জ্ঞানেন বীরভাবনম্। জ্ঞানেন দিব্য-ভাবোহপি জ্ঞানান্তাবো বিশিষ্যতে। জ্ঞানং পবিত্রং সর্বব্র জ্ঞানাদেবাপবিত্রতা। তয়োরাফ্রং ভেদশূন্যং দ্বিতীয়ং ভেদ-সংযুত্য। যথাগ্রিৰ্দহতে সর্বং কাষ্ঠগুল্মলতাদিকম্। তথা জ্ঞানেন দহ্যস্তে দর্কাকর্মাণি পার্কাতি।। জ্ঞানন্ত দ্বিবিধং প্রোক্তং ভেদাভেদবিভেদতঃ। ভেদজানং বহুবিধমভেদ-স্থেকমেব হি। ভেদজ্ঞানেন যৎ কুর্য্যাৎ পুণ্যপাপং যুগে যুগে। অভেদজানমাত্রেণ তৎসর্বাং পরিদহতে। ভেদঃ পশোরভেদো হি দিব্যভাবে উদাহ্বতঃ। ভেদাভেদবিদো বীরাঃ সর্ববৈত্তবং ক্রমঃ প্রিয়ে॥ পশুভাবঃ সোপরমো বীর-ভাবাববোধকঃ। দিব্যাববোধকো বীরভাবঃ সোপরমন্তথা।। যথা বাল্যং যৌবনঞ্চ ব্লদ্ধভাবঃ ক্রমাৎ প্রিয়ে। যথা পুষ্পং ফলকৈব বাজকেতি কুলেশ্বর। যথা ত্বশং নবনীতং য়তঞ্চেত মহেশরি। যথা সঙ্গল্পকার্য্যে চ দক্ষিণা চেতি স্বন্দরি। তথা ভাবত্রয়ং ক্রেয়মুত্রারস্তদাধনম। অতএব মহেশানি বীরাণাং কারণং পশুঃ। দিব্যানাং বীরভাবশ্চ যম্মাৎ কিঞ্চিৎ ন তুষ্যতি ॥ পূৰ্ব্বামায়োদিতং কর্মা পাশবং ় পরিকীভিত্য। যত্নকং দক্ষিণাল্লায়ে তদিব্যপাশবং স্মৃত্য্। পশ্চিমাস্খোদিতং কম্মবীরপাশবসংজ্ঞিতম্। উদ্মুখোদিতং কম্ম দিব্যবীরাঞ্জিতং শিবে। উদ্ধায়ায়োদিতং কম্ম দি-ব্যভাবাশ্রিতং প্রিয়ে। ন দিবা পূজয়েদ্বীরো ন পশো-রাত্রিপূজনম্। বিপর্য্যঃ কুলেশানি অভিচারায় কল্পতে॥ বৈদিকং বৈষ্ণবং শৈবং দাক্ষিণং পাশবং স্মৃতম্। সিদ্ধান্তে বামে বীরে তু দিব্যং সংকোলমুচ্যতে। ভাবত্রয়গতান্ দেবি সপ্তাচারাংস্ত বেভি যঃ। স ধন্মং সকলং বেভি জীবনুক্তো ন সংশয় ইতি।

পঞ্চন্ত্ৰং যশা কালীকুলার্গবে শ্রীক্রমসংহিতায়াঞ্চ—
মন্ত্রং মাসং তথা মৎস্ত্রং মুদ্রা মৈথুনমেব চ। পঞ্চমান্ত্র্ পরং নাস্তি শাক্তানাং ভোগমোক্ষয়োরিতি॥ কামাখ্যা-তন্ত্রেহপি—শিলায়াং শস্যবাপে চ যথা নৈবাঙ্কুরোদ্গমঃ।
মন্ত্রং বিনা তথা দেব্যাঃ পূজনং নিক্ষলং মতমিতি।

নৰু মন্তমপেয়মগ্রাহ্যমিত্যাদি শ্রুত্যা মন্তপানাদ্বিজা-তীনাং গহিতং পাতকং নহি। প্রায়শ্চিত্তী ভবেৎ স্পৃষ্ট্রা পীত্বা চ নরকং ব্রজেদিতি দেব্যপুরাণোক্ত্যা চ দ্বিজাতীনাং মগ্য-পানে দোষোহভিধীয়তে । নচ ক্বতে শ্রুত্যক্তমার্গঃ স্যাৎ ত্রেতায়াং স্মৃতিসম্ভব:। দ্বাপরে তু পুরাণোক্রঃ কলা-বাগমসম্ভব ইতি তারাপ্রদীপপ্রথমপটলবচনেন প্রুতিস্মৃত্যু-ক্তবিধেরনাদরণীয়ন্বমিতি বাচ্যম্। বেদত্যাপাশ্যস্তপানাৎ শূদ্র-দারনিষেবণাৎ। তৎক্ষণাজ্জায়তে বিপ্রশ্চণ্ডালাদপি গহিতঃ ইতি রুদ্রজামলীয়বচনেন, স্থরা বৈ মলমন্নানাং পুরীষং মলমুচ্যতে। তক্ষাৎ ব্রাহ্মণরাজ্যে বৈশ্যশ্চ ন হরাং পিবেং॥ স্থরাদর্শনমাত্রেপ কুর্য্যাৎ সূর্য্যাবলোকনম্। তৎ-সমাস্ত্রাণমাত্রেণ প্রাণায়ামত্রয়ঞ্চরেদিতি কালীকুলার্ণববচনেন ব্রাহ্মণস্ত হ্রাং দভূ। ব্রাহ্মণ্যাদেব হীয়তে। ব্রাহ্মণঃ পশুরাখ্যাতঃ পাশবং কল্পমাচরেদিতি কালীকুলামৃতচতুর্থ-পটলবচনেন, ভুক্ত্ব মৎস্যঞ্সাংসঞ্চ স্পৃষ্ট্য হেতুঞ্চ ভৈরবি। ত্রিরাত্রোপোষিতো ভূষা পঞ্চাব্যেন শুধ্যতীতি কুজিকা

তন্ত্রবচনেন, মতাং মাংসং তথা মৎস্তাং সৈথুনং পরমেশ্বরি। মানুষেণ বলিং পঞ্চ ব্রাহ্মণোন স্মারেৎ কচিদিতি বারাহী-তন্ত্রনবমপটলবচনেন চ তন্ত্রেম্বপি দ্বিজাতীনাং স্থ্রাপান-নিমেধাৎ।

ে নচ, সোঁত্রামণ্যাং কুলাচারে ত্রাক্ষণঃ প্রাপিবেৎ স্থরাম্। অন্তত্র কামতঃ পীকা পততোর ন সংশয় ইতি নিবন্ধ-তন্ত্রীয়বচনেন, অভিদেকং বিনা বিপ্রো মছপানং য আ-চরেৎ। স মহাপাতকী তম্মান্ন স্প্রশেতং কদাচনেতি कालीकुलम्खावनहरूनन अभिरम्कः निमा रेहन खामारणा न পিবেৎ স্থরাম। ন পিবেন্মাদকদ্রব্যং নামিবঞাপি ভক্ষয়েৎ। অভিষেককতে বিপ্রে স্তরাপানং বিধীয়তে। অভিযেককতো বিপ্রঃ স্থরাং দক্ষাদ্ যুগে যুগে। বিজয়াঞ্চানুকরঞ্চ স্থরাভাবে নিবেদয়েদিতি নিরুত্তরতন্ত্রবচনেন চ সকলনিযেধপ্রতিপাদক-বচনানি অনভিধিক্তব্রাহ্মণপরাণীতি বাচ্যম। ন দহ্যাৎ ব্রাহ্মণো মঞ্জং মহাদেব্যৈ কদাচন। বামকামো ব্রাহ্মণোহপি মৃত্যুং মাংসং ন ভক্ষয়েদিতি তীর্থস্বামিশোধিত-রুহতন্ত্রসার-তন্ত্রদীপিকাধত-শ্রীক্রমবচনেন, পরযোষাং স্বযোষাং বা নাকুষ্য ব্রাহ্মণো যজেৎ। লোভাদ্যদি চরেদেবমধো যাতি দ্বিজঃ সদা। বেদত্যাগান্মজ্ঞপানাৎ শুদ্রভার্য্যাপ্রয়োগতঃ। তৎক্ষণা-জ্জায়তে বামো ব্রাহ্মণো নাত্র সংশয়ঃ। যশ্মিংস্ত সাধকো বামঃ সৌম্যাচারবিবর্জ্জিতঃ। ইহাসূত্র ফলং নাস্তি হীনা-য়ুরপি জায়তে। ইতি তারাপ্রদীপন্বিতীয়প্ট্লবচনেন, বামমার্গেণ তচ্চান্ত বর্ণং হিন্তা প্রশক্ততে। ব্রাহ্মণস্ত হ্রবাং পীত্বা রোরবং নরকং ত্রজেৎ। বামমার্গী ত্রাক্সণোহপি মস্তং মাংসং ন ভক্ষয়েদিতি মেরুতন্ত্রপ্রথমপটলবচনেন চাভি-ষিক্তব্রাহ্মণানামপি স্থরাপাননিষেধাৎ ব্রাহ্মণানাং স্থরাপানবিধা-য়কনিরুক্তবচনানি কলীতরপরাণি।

নচ, অসংস্কৃতং পিবেদ্রব্যং বলাৎকারেণ মৈথুন্য। স্বপ্রিয়েণ হতং মাংসং রোরবং নরকং ব্রজেদিতি কুলার্ণবীয়পঞ্চমোল্লাস-বচনেন, শোধিতঞ্চ তথা মজং মাংসং মৎস্তঞ্চ মৈথুন্য। মুদ্রাঞ্চ শোধিতাং কৃষা দেবানামপি তুর্লভায়। অশোধিতঞ্চ মজাদি মহাপাপকরং হর। পঞ্চতন্ত্বং বিনা দেবি শক্তিমন্ত্রং রথা ভবেদিতি নিগমতত্ত্বসারচভূর্থপটলবচনেন অসংস্কৃতাং স্থরাং পীত্বা ব্রাহ্মণো ব্রহ্মহা ভবেৎ। সংস্কৃতান্ত স্থরাং পীত্বা ব্রাহ্মণো জ্বলদ্যিবদিত্যুৎপত্তিতন্ত্রবচনেন চ ভবত্তত্তমেক্তন্ত্রীয়াদিবাম-মার্গিব্রাহ্মণানাং স্থরাপাননিষ্বেধপ্রতিপাদকবচনমসংস্কৃতস্থরাপর-মিতি বাচ্যম্। যত্রাসবমবশ্যন্ত ব্রাহ্মণন্ত বিশেষতঃ। তত্র গুড়ার্দ্রকং দ্যাৎ তক্রং বা গুড়মিপ্রিতমিতি নিবন্ধতন্ত্রীয়োন-বিংশপটলবচনেন ব্রাহ্মণানামবশ্যং স্থরাদানস্থলে প্রতিনিধিদ্বারেব ত্রিম্বাহাৎ।

নচ মুখ্যাভাবে প্রতিনিধিং শান্ত্রার্থ ইতি ন্থারেন, দ্রব্যাভাবে চানুকল্পৈঃ পূজয়েৎ পরদেবতামিতি নিরুত্তরতন্ত্র-পক্ষমপটলবচনেন চ স্থরাভাববতাং বিপ্রাণামনুকর্পরিধান-মিতি বাচ্যম্। স্থরাভাববিদ্প্রেম্ব গুড়ার্দ্রকাদীনাং স্থরায়াঃ প্রাতিনিধ্যে, ভবতঃ দিদ্ধান্তো নতু গুড়ার্দ্রকরসম্ভ, বক্ষ্যমাণ-বচনে প্রতিনিধিপ্রসঙ্গাভাবেহিপি তেষাং গুড়ার্দ্রকরসম্ভৈব স্থরাত্বেন কীর্ত্তনাৎ। তদ্যথা যোগিনীতন্ত্রে ষষ্ঠপটলে—গুড়ার্দ্রকরসেনৈব স্থরা তু ব্রাক্ষণস্থ চ। নারিকেলোদকং

কাংস্তে ক্ষত্রিয়স্ত বরাননে। বৈশ্যস্ত মাক্ষিকং প্রোক্তং কাংস্তস্থং বরবর্ণিনি। মাংসং মৎস্তস্ত সর্কেষাং লবণার্ক্ত ক-সীরিতম্। ভৃষ্টধান্যাদিকং যদ্যচ্চর্বণীয়ং প্রচক্ষতে। সা মুদ্রা কথিতা দেবি সর্বেষাং নগনন্দিনি। ব্রাহ্মণী ব্রাহ্মণস্থৈব ক্ষত্রিয়া ক্ষত্রিয়স্ত চ। বৈশ্যা বৈশ্যস্ত দেবেশি মৈণুনে যদিধিঃ শ্বৃতঃ। বৈশ্যা বা ব্ৰাহ্মণক্ষজ্ৰত্ৰিবৰ্ণানাং মহেশ্বরি। ক্ষত্রিয়া ব্রাহ্মণস্থাপি কথিতা বরবর্ণিনি। শূদ্রা বা ব্রাহ্মণাদীনাং ত্রিবর্ণানামভাবতঃ। ব্রহ্মক্ষত্রবিশাথৈক আশ্রমাণামিদং স্মৃতম্। ত্রিবর্ণবিহিতানাঞ্চ যতীনাং শুণু সংপ্রতি। সহস্রারোপরি বিন্দৌ কুগুল্যা মেলনং শিবে। মৈথুনং পরমং দ্রব্যং যতীনাং পরিকীর্ত্তিত্য্॥ অবধৃতাশ্রমী যোহি তম্ম বক্ষ্যে বিধিং শুণু। পৈষ্টিকাদীনি সৰ্ববাণি মদ্যানি তস্ত্র শাস্তবি। মৎস্ত্রং মাংসং তস্ত্র দেবি জলভূ-চরখেচরম্। পূর্ব্বোক্তা চ ভবেনুদ্রা দেবতা সাদরান্ধি-তেতি।

নচ, যো বীরভাবো দেবেশি সোহবধূতো মহীতলে ইতি শ্যামার্চনচন্দ্রিকাপ্পতভৈরবসংহিতাবদনেন অভিধিক্তো গৃহস্থশ্চ সদাবধূতকশ্চ সং। কর্ত্তা পাতা চ সংহর্তা শিবছুল্যো ন সংশয় ইতি বামকেশ্বরতদ্রৈকপঞ্চাশপটলবচনেন
চাবধূতস্ত ন কেবলং ছাটাজ্টবানেব বীরভাবাপমগৃহস্থব্রাহ্মণস্থাবধূতত্বাবগমেন পৈন্ট্যাদিস্করাগ্রহণে নো কন্চিছিরোধ ইতি বাচ্যন্। দিব্যবারময়ো ভাবং কলো নাস্তি
ক্লাচনেতি ক্রুল্লামলস্ড্রিংশপটলবচনেন এতত্তে
কথিতং দেবি নানাভাবং পুণ্যিধম্। কিস্ত্বকং শৃণু

চার্কাঙ্গি কথয়ামি সমাসতঃ। মৎস্তং মাংসঞ্চ মতঞ্চ মুদ্রা মৈথুনমেব চ। দিব্যানাঞ্চৈব বীরাণাং সাধনং ভবসাধনম্॥ ন মদ্যং প্রাপিবেদিপ্রো ন মুদ্রাং ভক্ষয়েররঃ। ন মৈথুনমগম্যাস্থ কর্ত্তব্যং সিদ্ধিনাশনম্॥ অবপূতঃ শিবঃ সাক্ষাদবপূতঃ সদাশিবঃ। অবপূতী শিবা দেবী অবপূতাশ্রমং শৃণু। চতুরাশ্রমিণাং মধ্যে অবপূতাশ্রমো মহান্। অবপূতশ্চ দিবিধা গৃহস্থশ্চ চিতামুগঃ। সচেলশ্চাপি দিয়াসা বিধিযোমিবিহারবান্। সদারঃ সর্বেদারস্থশচাউহাসোদিগন্বরঃ। গৃতাবপূতো দেবেশি দিতীয়স্ত সদাশিবঃ॥ ন কলো সাধনং মদ্যং প্রত্যক্ষং বরবর্ণনি। গৃহাবপূতেনো কৈশ্চিৎ কর্ত্বস্থা দিগন্থরৈরিতি মুগুমালাতন্ত্রীয়িরিতীয়পটলবচনেন চ কোলাচারস্থ কলীতরপরহাৎ।

নচ, পশুভাবং কলো নাত্তি দিব্যভাবোহপি তুর্লভঃ। বীরসাধনকশ্মাণি প্রত্যক্ষাণি কলো যুগে। কুলাচারং বিনা দেবি
কলো সিন্ধির্ন জায়তে। তস্মাৎ সর্বপ্রয়ন্ত্রন সাধয়েৎ কুলসাধনম্। কুলাচারেণ দেবেশি ব্রহ্মজ্ঞানং প্রজায়তে। ব্রহ্মজ্ঞানযুতো মতে গাঁ জীবন্যুক্তো ন সংশয়ং ইতি মহানির্ব্বাণতন্ত্রচতুর্থোল্লাসবচনেন কলাবপি দিব্যবীরভাবস্থাবশ্যকত্বেন বিরোধ
ইতি বাচ্যম্। এত্র্ছচনানাং সামান্যত্য়া পূর্ব্বোক্তবচনজাতেন বিপ্রাণাং কুলাচারস্থ নিষিদ্ধহেন বিপ্রেতরপ্রপ্রেম
বিরোধাভাবাৎ।

নচ, শৃদ্রে। দদ্যাৎ ক্বতে মদ্যং ত্রেতায়াং বৈশ্য এব চ। দাপরে ফ্রিয়ো দদ্যাৎ কলো বিপ্রঃ সদৈবহীতি গোগিনীতন্ত্রবচনেন কলো তু সর্ববশাক্তানাং ব্রহ্মণানাং বিশেষতঃ। মদ্যং বিনা সাধনন্ত মহাহাস্থায় কল্পতে॥ যথা দীক্ষাং বিনা দেবি সাধনং হাস্তমেব হি। তথা পূজা সাধ-কানাং জ্ঞেয়া তত্ত্বং বিনা সদা। শিলায়াং শস্থবাপে চ ন ভবেদস্কুরো যথা। অনার্ফ্ট্যা ক্ষিতো দেবি শস্তুঞ্বৈ যথা নহি। ঋতুং বিনা স্ত্রিয়া দেবি যথাপত্যং ন জায়তে। তথা দেব্যাঃ সাধনেষু পঞ্চতভুং বিনা প্রিয়ে। পঞ্চতৈতুঃ माधरकद्यः माधरप्रविधिनासूना। सरेन्यर्भाश्टेमख्या स्टर्फ-মুঁদ্রোভিমৈথুনৈরপি। দ্রিয়া সার্দ্ধং সদা সাধুরচ্চয়েজ্জগ-দম্বিকাম্। অন্তথা তু মহানিন্দা গীয়তে ত্রিদশৈরপি। কায়েন মনসা বাচা তত্মাতত্ত্বপরো ভবেৎ। জন্মুর্ঘাপে কলো দেবি ব্ৰাহ্মণস্ত বিশেষতঃ। পশুৰ্ন স্থাৎ পশুৰ্ন স্থাৎ পশুন স্থান্মমাজ্ঞয়েতি কামাখ্যাতন্ত্রবচনেন চ কলে৷ জন্মুদ্বীপে ব্রাহ্মণানামপি পঞ্তভুং বিনা দেবাপূজনস্থ বৈফল্যেন ব্রাহ্মণানাং কুলাচারনিষেধকপূর্কোক্তবচনানি দ্বীপান্তর্রীয়-ব্রাহ্মণপরাণীতি বাচ্যম্। চতুর্ণামাশ্রমাণাং হি চাবধূতা-শ্রমো মহান্। অবধৃতাশ্রমং গচ্ছেৎ সাধকঃ স্থিরমানসঃ কাম-ক্রোধ-লোভ-মোহ-মদ-মাৎসর্য্য-বর্জ্জিতঃ। অবধৃতঃ শিবঃ সাক্ষাৎ মম প্রাণসমঃ প্রিয়ে॥ অবধূতশ্চ দ্বিবিধো গৃহস্থশ্চ দিগম্বরঃ। সচেলশ্চ সদারশ্চ ভাবুকঃ সাধকঃ শুচিঃ। গুরুভক্তিরতো জ্ঞানী বাহ্যাভ্যন্তরকশ্মকৃৎ। অফীঙ্গাভ্যাস-নিরতঃ প্রাণায়ামপরায়ণঃ। নিফামী জ্ঞানশুদ্ধাত্মা শিবার্চন-পরায়ণঃ। গৃহাবধূতো দেবেশি দিতীয়স্ত সদাশিবঃ। দিগ-ম্বরাবধূতো হি পঞ্[†]চারপরায়ণঃ। সক্তভোগী স**র্ব্বজা**তি-ধর্মকমারতঃ সদা। ন কলো সাধনং মদ্যমগ্রম্যাগমনং নহি। গৃহাবধূতৈর্নাকার্য্যং কর্ত্তব্যঞ্চ দিগন্ধরৈঃ। সম্বিদাসবয়োর্মধ্যে সন্ধিদৈব গরীয়সী। সম্বিদাপানমাত্রেণ স বীরঃ স চ সাধকঃ। এবং বিধিবিধানজ্ঞঃ কুলীনো ভবতি প্রিয়ে ইতি বামকেশ্বর-তদ্রৈকপঞ্চাশপটলবচনেন গৃহাবধূতানাং সম্বিদয়া সাধন-কর্ত্তব্যত্বেন দিগন্ধরাবধূতানাং মদ্যাদিভিস্তিঘিধানেন চ কামাখ্যাতন্ত্রীয়বচনেনৈ তদ্বচনস্থৈক্যোগাৎ কামাখ্যাতন্ত্রীয়বিধেশ্চতুর্থাশ্রমিবিধয়কত্বাৎ।

যদ্বা, যশ্মিন্ তন্ত্রে মদ্যপানং তত্তন্ত্রং সত্যসম্মতম্ ৷ কলো ন সম্মতং মদ্যং মৈথ্নঞ্জ ন সম্মতম। পরস্ত্রীয়ু কুমারীয়ু রেতঃপাতং করোতি যঃ। পূজাকোটির্ভবেদ্ব্যর্থা কেবলং পরভওনম্। সত্যং সত্যং পুনঃ সত্যং সত্যং নিশ্চয়-মীরিতম্। পশুভাবাৎ পরো ভাবো নাস্তি নাস্তি কলেশ্বত ইতি তীর্থস্বামি-শোধিত বৃহত্তন্ত্রসারধ্বত-জ্ঞানতন্ত্রীয়বচনেন পশুভাবং মহাভাবং যে জানন্তি মহীতলে। কিমসাধ্যং ভবেত্তেষাং শ্রমাভ্যাদেন যাতি তৎ। শ্রমাধীনং জগৎ সর্ব্বং অমাধীনাশ্চ দেবতাঃ। অমাধীনং মহামন্ত্রং অমাধীনং পরস্তপঃ॥ বেদার্থজ্ঞানমাত্রেণ পশুভাবঃ কুলপ্রিয়ং। স্মৃত্যাগমপুরাণানি বেদার্থবিবিধানি চ। অভ্যস্ত সর্ববশাস্ত্রাণি তত্ত্ত জাত্বা তু বুদ্ধিমান্। পলালমিব ধান্তার্থী সর্বশাস্ত্রাণি সংত্যজেদিতি রুদ্রজামলীয়ৈকাদশপটলবচনেন চ পাশবকর স্থোৎকর্ষাভিধানেন, ভাবঃ কো বা মহাদেব বীরঃ কো বা মহেশ্বর। দিব্য এব কথং দেব বদ মে শঙ্কর স্বয়মিতি ভগবতীপ্রশ্নানন্তরং শ্রীমহাদেব উবাচ। ভাবস্ত মানুসো ধর্মঃ স ভূ সাঙ্গঃ কথং ভবেৎ। নির্বিকল্প: মহেশানি পরং

ব্রহ্মনয়ে। ভবেৎ। মনসঃ কারণং দেবি শিবএব ন সংশয়ঃ। কলোঁ ছু ভারতে বর্ষে লোকা ভারতবাসিনঃ। গৃহে গৃহে স্থরাং পীত্বা বলভ্রমী ভবন্তি হি ইত্যুৎপত্তিতন্ত্রচতুঃষষ্টিতমপটল-বচনে ভারতবর্ষে স্থরাপাননিন্দাশ্রবণেন, কলিকালে মহাভাগ জমুখীপে চ ভারতে। সর্বেষাং সম্মতং তন্ত্রং রূপয়া বদ সাম্প্রতমিতি দেবীপ্রশ্নানন্তরং শ্রীসদ্যোজাত উবাচ। সাধু পৃষ্টং শিবারাধ্যে ধত্যাসি প্রাণবল্লভে। যমোক্তং সর্ববিত্রেষু অধুনা কথয়ামি তে ইত্যাদি জমুদ্বীপান্তর্বর্তিভারতবর্ষেতিকর্ত্বরতানিয়ামক-কালাবিলাসতন্ত্রে স্থরাপাননিষেধ্প্রবর্ণেন চ ভবত্বক্রকামাধ্যাতন্ত্রীয়বচনানামত্যবর্ষপরত্বাং।

যন্ত কৈশ্চিমূ চৃতিমৈরেতন্তন্ত্রস্থ কাল্পনিকত্বমূচ্যতে ত-ভেষাং প্রলাপ এব অন্থা দর্কাতন্ত্রাণামপি তথাত্বং স্থাৎ। নির্কাণং সময়াচারং বীরতন্ত্রং শ্রুতং পুরা। ডামরং ডমরুং ডীনং শ্রুতং কালীবিলাসকম্। সপ্তকোটিমহাগ্রন্থা মম বন্ত্রাদ্বিনির্গতা ইতি মুগুমালাতন্ত্রদ্বিতীয়পটলে গণনা-২সঙ্গতিশ্চ।

নচ, জমুদীপস্থ বর্ষে চ কলিকালে চ ভারতে। গৃহেম্বের ভবিষ্যস্তি মক্সপা ব্রাহ্মণং বিনা॥ পীতা মদ্যং ব্রাহ্মণস্ত্র সভবেদ্ধ ক্ষরপধাণিত পুরশ্চরণরসোলাসচতুর্থপটলবচনে গৃহস্থ-ব্রাহ্মণস্থাপি কলো ভারতবর্ষে মদ্যপানস্থ প্রাপ্ততয়া কালী-বিলাসাদো সামান্থেনোক্তবচনানি ব্রাহ্মণেতরপরাণীতি বাচ্যম্। ব্রাহ্মণেঃ পীয়তে মহাং ন মহাং দ্বিজপুস্বৈরিতি নিরুত্রতন্ত্রপঞ্চনপটলীয়বচনে ব্রাহ্মণানাং মদ্যপানস্থ বিধেষ্থ-ত্বেন দ্বিজাতীনাং নিষেধেন চ ব্রাহ্মণশব্দস্থ ব্রহ্মবিদর্থকত্বাবশ্য-

কত্বেন নিরুক্তবচনৈকবাক্যতয়া পুরুষ্চরণরসোল্লাসবচনস্থ-ব্রাহ্মণ-পদস্য তদর্থকত্বেন বিষ্ঠাকাঞ্চনলোষ্ট্রাদিসমদর্শ্যাত্মতত্ত্বুজ্ঞানিনাং স্থরাগ্রহণে বিরোধাভাবাৎ ব্রাহ্মণশব্দদ্বিজাতিশব্দয়োঃ সমানার্থকত্বে স্ববচোব্যাঘাতঃ স্থাৎ।

ব্রাহ্মণশব্দস্থ ব্রহ্মবিদর্থকত্বে প্রমাণমাহ। ভৈরবতন্ত্রে— বেদমাতৃজপেনৈব ব্রাহ্মণো নহি শৈলজে। ব্রহ্মজ্ঞানং যদা দেবি তদা ব্রাহ্মণ উচ্যত ইতি।

আত্মবিলক্ষণমাহ। কুলার্ণবে নবমোল্লাদে—যো নিন্দা-স্তুতিশীতোঞ্চপ্রথত্বঃখারিবন্ধুরু। সমশ্চেৎ স্থথযোগীন্দ্রোহর্ধা-হর্ষবিবর্জ্জিতঃ। নিস্পৃহো নিত্যসন্তুক্তঃ সমদর্শী জিতেন্দ্রিয়ঃ। অন্তে দেহপ্রবাসী চল যোগী পরতত্বিদিতি।

যন্ধা, জন্মনীপে মহেশানি মদ্যাৎ সিদ্ধির্ন সংশয়ঃ। অঙ্গবঙ্গ-কলিঙ্গেরু স্ত্রিয়া সিদ্ধিবিজায়তে। গৌড়শাল্পদশার্ণেরু পশু-ভাবাদ্ধি জায়ত ইতি নিগমতত্ত্ব্ব্যারকাদশপটলবচনেন গৌড়া-দিদেশে পশুভাবো হি সিদ্ধেঃকারণমিতি, ইহ পশুভাবস্থৈৰ সর্বাদা স্বীকর্ত্তব্যহাৎ। তত্মান্মদ্যপানে দোষোহস্ত্যেবেতি বিপক্ষা নিরস্তাঃ।

অব্রাম্মাভিঃ সমাধীয়তে। সিদ্ধমন্ত্রী ভবেদ্বীরো ন বীরো মদ্যপানত ইতি নিরুত্তরতন্ত্রদশমপটলবচনেন সিদ্ধমন্ত্রিণাং বীর-ভাবস্থা বিহিতত্বেন মদ্যপানে দোযাভাবঃ, তদিতরাণাস্ত ভবত্যেব দোষ ইতি।

নকু দীক্ষাপ্রকরণোক্তত্তিবিধিদিদ্ধযন্ত্রেম্বেকতমমহাবিদ্যো-পাসকানাং দিদ্ধমন্ত্রতয়া তেষাং কুলসাধনিদিদ্ধাবস্মাভিঃ সার্দ্ধং ন বিরোধ ইতি-মৈবম্। যদি বিদ্যাঃ প্রদীদন্তি বারভাবং তদা লভেদিতি রুদ্রজামলষষ্ঠপটলীয়বচনেন কুলাচারং মন্ত্রাচারং সময়াচারমেব চ। সিদ্ধে মনৌ সদা কুর্য্যাৎ সাধকঃ
সিদ্ধিহেতবে। কালিকাপটলে পূর্ব্বং যত্নুক্তং তন্ত্রসম্মতম্।
তৎ সর্ববং নাচরেল্লোকঃ সিদ্ধির্যাব র দৃশ্যতে ॥ সিদ্ধে মনৌ
সদা কার্য্যং তন্ত্রে তথ্র তু যং কৃতম্। বিনা সিদ্ধে মনৌ
মন্ত্রী যদা কর্মাণি নিদ্দিশেং। সিদ্ধির্ন জায়তে তম্ম যাবচচন্দ্রার্কতারকম্। নিত্যং তম্ম ভবেদ্ধানির্ধর্মাণাং ক্ষয়এব
চেতি মহানীলতন্ত্রীয়ত্রিংশপটলবচনেন চ মন্ত্রম্ম সিদ্ধো সত্যাং
কুলাচারস্য বিধেয়তয়া ভবন্ধকের্হেয়ত্বাং।

ন চায়মাশ্চর্য্যদিদ্ধান্তঃ দিদ্ধে মনৌ কুলাচারেণ কিং প্রয়োজনমিতি বাচ্যম। যতঃ শ্রীআনন্দভৈরব উবাচ। ত্রৈলোক্য-পূজিতে কান্তে ইদানীং দিদ্ধিহেতবে। মন্ত্রসিদ্ধের্লক্ষণন্ত যোগিনামিপি তুর্লভম্॥ ত্বনুখান্তোক্রহোল্লাসনিঃস্তং পরযায়তম্। পীত্বা চকার তন্ত্রাণি তত্র যল্লান্তি তত্বদ ॥

আনন্দভৈরব্যুবাচ। নিশ্চয়ন্তে প্রবক্ষ্যামি আনন্দ-ভৈরবেশ্বর। মন্ত্রসিদ্ধিলক্ষণন্ত যোগমার্গানুকূলতঃ—

নিত্যক্ষেত্রিন স্থান্থরে স্থিতিপথে ক্লেশাদিদোষক্ষয়ং
সর্ব্যক্ষেত্রমন্ত্রনিদ্ধিকলিকাসংলক্ষণং শোভনম্।
মৃত্যুনাং হরণং জগৎ পতিসতীসন্দর্শনক্ষোত্তমং
যোগাকেশবিবর্দ্ধনং সমৃদয়াক্রেশপ্রয়োগেপ্টভাক্॥
নরেন্দ্রাণাং কায়ে প্রবিশতি হঠাৎ ক্ষোভয়তি তং
পুরে তেষামূর্দ্ধোৎক্রমণমচরস্থাবরপুরে।
অধন্দ্রিং পশ্যেৎ ধচরবনিতামেলনমলং
শৃণোতি প্রধ্বানং জগতি জগতাং কীত্তিরতুলা॥

ইতীহ সিদ্ধ্যাদিস্থলক্ষণেন প্রয়াতি বৈকুণ্ঠপুরীং মনোরমাম্। হিতাহিতং পশ্যতি সত্ত্বভূভ্তাং জগদিপক্ষো নিজপক্ষমাশ্রয়েৎ॥

কীতিভূ ষণমাদিভক্তিসকলামুক্তিক্রিয়াসংযুতা
দেবানামতিভক্তিযুক্তহাদয়ং সর্বাক্রিয়াদক্ষতা।
ক্রৈলোক্যং নিজদাস্যকর্মনিপুণং জিত্বা চিরঞ্জীবতি
অপ্তাঙ্গাভ্যসনং জগদশকরং চৈতন্যতামুক্তমম্ ॥
ভোগেচ্ছারহিতং জগজ্জনচমংকারামুকস্পান্বিতম্
রোগাণাং হরণং বিরক্তহাদয়ং বৈরাগ্যমুক্তিপ্রিয়ম্ ।
ভ্যাগং সংসরণং তথা সমদয়ামায়ার্কিজালামকং
ক্রের্য্যং কবিতারসং ধনজনং লক্ষ্মীগলং জাপনম্ ।
উল্লাসং হাদয়াবুজে হাভধনং সন্মাননং সম্পদং
বাঞ্ছাসাগররত্বপূর্ণঘটিতং কান্তাগণামোদিত্য ।
সক্ষেতাদিমনুপ্রিয়ং হরিহরত্রক্ষৈকভাবান্বিতং
লোকানাং গুরুতানিরস্তরশিবানন্দকমুদ্রাধরম্ ॥

এতন্ত্রকং মহাদেবোত্তরতন্ত্রনিরূপিতম্। মন্ত্রসিদ্ধিলক্ষণন্ত মুন্তমাধমমধ্যমম্। ইতি ক্রন্ত্রজামলীয়াস্টাবিংশপটলবচনেন যথা উত্তমমধ্যমাধমভেদেন সিদ্ধিন্ত্রিবিধা তদ্বদ্দিব্যবীর-শশু-ভেদেনাচারোহপি ত্রিবিধা। তেম্বধমসিদ্ধাং সাক্ষাং-প্রয়োজকঃ পাশবকল্পঃ। এবং মধ্যমোত্রময়োবীরদিব্যো। তত্র পশু-বীর-দিব্য-ভাবানাং ক্রমেণাপেক্ষণীয়ত্বং স্কুতরা-মেবায়াতম্।

নতু মন্ত্রগ্রহণমাত্রমেব কুলাচারঃ স্বীকর্ত্ব্যঃ। তদেব-

বাচষ্টে জগদস্বা স্বয়মেব তত্ত্বৈকাদশপটলে—দিব্যভাবং বিনা নাথ মৎপদাস্তোজদর্শনম্। য ইচ্ছতি মহাদেব স-মূঢ়ঃ সাধকঃ কথম্ ।। পশুভাবং প্রথমতো দ্বিতীয়ে বীর-ভাবকম্। তৃতীয়ে দিব্যভাবঞ্চ এতদ্ভাবত্রয়ং ক্রমাদিতি। আশ্রয়েদিতি পূর্ব্বেণাশ্বয়ঃ॥ যুক্তঞ্চেদ্য অধ্যদিদ্ধো সত্যাং সাধকস্থ শিবভুল্যখমায়াতং তদানীং প্রত্যক্ষদর্শনস্যা-বশ্যস্তাবিতয়া কুলাচারাবলম্বনে নো কশ্চিদপি দোষলেশঃ। অন্তথা সর্ববা লোকবিরুদ্ধমন্তাদীনাং স্বীকারঃ কেবল-হাস্যায়। তহুক্তং নিগমতত্ত্বসারে চতুর্থপটলে—পানে ভ্রান্তি-র্ভবেদ্যস্য ঘূণা স্যাক্রক্তরেতসোঃ। শুদ্ধো চাশুদ্ধতাভ্রান্তিঃ পাপশল্পা চ মৈথুনে। স পাপিষ্ঠঃ কথং ক্রয়াৎ পূজ্য়ামি জগন্ময়ীমিতি ॥ তথা কুলার্ণবে দিতীয়োল্লাদে—কুপাণ-ধারাগমনাৎ ব্যাঘ্রকণ্ঠাবলম্বনাৎ ॥ ভুজঙ্গধারণান্যুন-মশক্যং কুলবর্ত্তনমিতি ॥ অপিচ যোগিনীতন্ত্রে উনবিংশ-পটলে কুলাচারপ্রসঙ্গে—ব্রহ্মবিষ্ণুশিবাদীনাং গুরুর্জাত-ন্ততঃ শিবঃ। সোহপি শান্তো মহাযোগী আচারক্ষম এব সঃ। নান্তঃ কশ্চিৎ ক্ষমঃ কাপি তদাচারে কদাচনেতি॥ এবং সময়াচারতন্ত্রে নবমপটলে কুলাচারপ্রসঙ্গে—যদি চ ছৎসমা লোকে নারী ভবতি নিশ্চিতা। মৎসমঃ পুরুষে। লোকে সাধকো দেবি চেন্তবেং। ভ্রান্তিমায়া**দি**-রহিতন্তদা সাধ্য়িতুং প্রিয়ে। শক্তশ্চেৎ সাধকো দেবি অশ্রথা হাস্যতাং ব্রজেদিতি।

যন্ধা প্রাণায়ামাদিযোগসিদ্ধন্যাপি কুলাচারেম্বধিকারঃ। ত্তুকং রুদ্রজামলে সপ্তদশপটলে—বশিষ্ঠো ব্রহ্মপুত্রোহপি

চিরকালং স্থসাধনম্। চকার নির্জ্জনে দেশে ক্লছে ৭ তপসা বশী। শতং সহত্রং বর্ষঞ্চ ব্যাপ্য যোগাদিসাধনম্। তথাপি সাক্ষান্সিরিজান বভূব মহীতলে॥ ততো জগাম ক্রুদ্ধো-হসো তাতস্য নিকটে প্রভু:। সর্বাং তৎ কথয়ামাস স্বীয়াচারক্রমং প্রভো। অন্যমন্ত্রং দেহি নাথ এষা বিছা ন সিধ্যতি। অন্তথা সুদৃঢ়ং শাপং তবাত্রে প্রদদামি হি॥ ততন্তং বারয়ামাদ এবং ন কুরু ভোঃ স্থত। পুনস্তাং ভজ ভাবেন যোগমার্গেণ পণ্ডিত। ততঃ সা বরদা ভূষা আগ-মিষ্যতি তেহগ্রতঃ। সা দেবী পরমা শক্তিঃ সর্কসঙ্কট-তারিণী। কোটিসূর্য্যপ্রভা নীলা চক্রকোটিস্শীতলা। স্থির-বিষ্ণ্যল্লতাকোটিসদৃশী কালকামিনী। সর্ব্বস্ক্রপা সর্ব্বাঞ্চা-ধর্মাধর্মবিবর্জ্জিতা। শুদ্ধচীনাচাররতা শক্তিচক্রপ্রবর্ত্তিকা। অনন্তানন্তমহিমা সংসারাণ্বতারিণী। বুদ্ধেধরী বুদ্ধমাতা অথর্ববেদশাথিনী। সা পাতি জগতাং লোকাংস্তস্যাঃ কর্ম চরাচরম্। ভজ পুত্র স্থিরানন্দ কথং শপ্তুং সমুগ্রতঃ। একান্তচেতসা নিত্যং ভদ্ধ পুত্র দয়ানিধে। তস্য দর্শনমেবং হি অবশৃং সমবাপ্স্যসি।

এতচ্ছু ছা গুরোর্কাক্যং প্রণম্য চ পুনংপুনং। জগাম জলধেন্তীরে পরমং মন্ত্রবিদ্ধু চিং। সহস্রবৎসরং সম্যুগ্জজাপ পরমং জপম্। আদেশোংপি ন বভূব ততঃ ক্রোধপরো মুনিং। ব্যাকুলালা মহাবিত্যাং বশিষ্ঠঃ শপ্তু মূজতং। দিরাচম্য মহাশাপঃ প্রদত্ত স্থ দারুণঃ। তেনৈব মুনিনা নাথ মুনেরত্রে কুলেশ্রী। আজগাম মহাবিত্যা যোগিনা-মভয়প্রদা। অকারণ মরেবিপ্র শাপো দত্তঃ স্থ দারুণঃ।

মম সেবাং ন জানাসি মৎকুলাগমচিন্তনম্। কথং যোগা-ভ্যাসবশান্মৎপাদাস্ভোজদর্শনম্। প্রাপ্রোভি মানুষো দেবো মম ধ্যানমত্বংপদন্। যঃ কুলার্থী সিদ্ধমন্ত্রী মদ্বেদাচার-নির্ম্মলঃ। মমৈব সাধনং পুণ্যং দেবানামপ্যগোচরম্॥ বৌদ্ধদেশেহথর্ববেদে মহাচীনং তদা ব্রজ। তত্র গল্পা মহাভাবং বিলোক্য মৎপদান্মজম্। মৎকুলজ্যে মহর্ষে ত্বং মহাসিদ্ধো ভবিষ্যসি॥ এতদ্বাক্যং কথয়িলা বায়ব্যাকাশগামিনী। নিরা-কারাভবচ্ছীদ্রং ততঃ সাকাশবাহিনী।

ততো মুনিবরঃ শ্রুত্বা মহাবিদ্যাং সরস্বতীম্। জগাম চীনভূমো চ যত্র বুদ্ধঃ প্রতিষ্ঠতি॥ পুনঃ পুনঃ প্রণম্যাদো বশিষ্ঠঃ ক্ষিতিমণ্ডলে। রক্ষ রক্ষ মহাদেব বুদ্ধরূপধরাব্যয়। অতিদীনং বশিষ্ঠং মাং সদা ব্যাকুলচেতসম্। ব্রহ্মপুত্রং মহাদেবী-দাধনায়াজগাম চ॥ সিদ্ধিমার্গং ন জানামি দেব-মার্গপরো হর। তবাচারং সমালোক্য ভ্য়ানি সন্তি মে হুদি। তন্নাশয় মম ক্ষিপ্ৰং ছুবু কিং বেদগামিনীম্। বেদবহিষ্কৃতং কর্ম্ম দদা তে চালয়ে প্রভো। কথমেতৎপ্রকারঞ্চ মদ্যং মাংসং তথাঙ্গনাম্। দর্কো দিগন্ধরাঃ শিষ্যা বহুপানোদ্যতা বরাঃ। মুত্মু তঃ প্রপিবন্তি প্রচুম্বন্তি বরাঙ্গনাম্। দদা মাংসাসবৈঃ মতা রক্তবিলোচনাঃ। নিগ্রহানুথছে শক্তাঃ পূর্ণান্তঃকরণোগ্যতাঃ। বেদস্থাগোচরাঃ সর্ক্বে মগ্যস্ত্রীসেবনে রতাঃ॥ ইত্যুবাচ মহাযোগী দৃষ্ট্যা বেদবহিচ্চৃতম্। প্রাঞ্জলির্বিনয়াবিষ্টো বদ চৈতৎ কুলং প্রভো। মনঃপ্রবৃত্তি-রেতেষাং কথং ভবতি পাবন। কথং বা জায়তে সিদ্ধির্বেদ-কার্ঘাং বিনা প্রভো।

বুদ্ধ উবাচ। বশিষ্ঠ শৃণু বক্ষ্যামি কুলমার্গমসুত্তমম্। যেন বিজ্ঞানমাত্রেণ রুদ্ররূপী ভবেৎ ক্ষণাৎ। সংক্ষেপেণ সর্ব্ব-সারং কুলসিদ্ধ্যর্থমাগমম্। আদৌ শুচির্ভবেদ্বীরো বিবেকা-ক্রান্তমানসঃ। পশুভাবস্থিরচেতাঃ পশুসঙ্গবিবর্জিতঃ। একাকী নির্জনে স্থিত্বা কামক্রোধাদিবর্জিতঃ। সদা যোগাভ্যাসরতো যোগশিক্ষাদৃঢ়ব্ৰতঃ। বেদমার্গাজিতো নিত্যং বেদার্থনিপুণো মহান। এবং ক্রমেণ ধর্মাত্মা শীলোদার্ঘ্যগুণাধিতঃ। ধারুয়েনারুতং নিত্যং শ্বাসমার্গে মনোলয়মু ॥ ৫ ৴ মভ্যাস-যোগেন বুশী যোগী দিনে দিনে। শুনিঃশুনৈঃ ক্রমাভ্যাসাদ্দেহে স্বেদোদামোহধমঃ। মধ্যমঃ কম্পসংযুক্তো ভূমিত্যাগঃ পরে। মতঃ। প্রাণায়ামেন সিদ্ধঃ স্থান্নরো যোগেশ্বরো ভবেৎ। যোগী ভূত্বা কুম্ভকজ্ঞো মোনী ভক্তো দিবানিশম্। শিবে কুষ্ণে ব্রহ্মপদে একাম্ভভক্তিসংযুক্তঃ। ব্রহ্মবিষ্ণুশিবা এতে বায়বী-গতিচঞ্চলাঃ। এবং বিভাব্য মনসা কর্মণা বচসা শুচিঃ। শক্তো চিত্তং সমাধায় চিদ্রাপায়াং স্থিরাশয়ঃ। ততো মহাবীর-ভাবং কুলমার্গমহোদয়ম। শক্তিচক্রং সন্তুচক্রং বৈষ্ণবং নববিগ্রহম্। সমাঞ্জিত্য ভজেন্মন্ত্রী কুলকাত্যায়নীং পরাম্। প্রত্যক্ষদেবতাং শ্রীদাং চণ্ডোদেগনিকৃন্তনীম্। জ্ঞাননিলয়াং চৈত্যানন্দবিগ্রহাম। কোটিসোদামিনীভাসং সর্বতত্ত্বস্করপিণীম্। অন্টাদশভুজাং রৌদ্রীং মাংদাচলপ্রিয়াম্। আশ্রিত্য প্রজপেন্মন্ত্রং কুলমার্গাশ্রয়ো নরঃ। কুলমার্গাৎ পরং মার্গং কো জানাতি জগত্রয়ে। এতনাৰ্গপ্ৰদাদেন ব্ৰহ্মা স্ৰফা স্বয়ং মহান্। পালনে শক্তোনিম্মলঃ সত্ত্বরূপধুক্। সর্ব্বদেব্যো মহাপুজ্যো यक्ट्र विषिट्या মহান। হরঃ সংহারকর্তা চ বীরেশোমত্ত-মানসং। সর্কেষামন্তকঃ ক্রোধী ক্রোধরাজো মহাবলী। বীরভাবপ্রসাদেন দিক্পালা রুদ্ররূপিণঃ বীরাধীনমিদং বিশ্বং কুলাধীনঞ্চ বীরকম্। অতঃ কুলং সমাশ্রিত্য সর্ব্ব-**সিদ্ধীশ্বরো জড়ঃ ॥ মাদেনাকর্ষণং সিদ্ধিদ্বিমাদে বাক্পতি-র্ভবেৎ। মাসত্র**য়েণ সংসর্গাজ্জায়তে রুদ্ররূপধ্বক্। এবঞ্চ-তুষ্টয়ে মাসি ভবেদ্দিক্পালগোচরঃ। পঞ্চমে পঞ্চবাণঃ স্থাৎ ষষ্ঠে চ স্থরবল্লভঃ। এতন্মনাচারদারং দর্কেব্যামপ্যুগোচরম্। এতস্মার্গং কোলমার্গং কোলমার্গাৎ পরং নহি॥ যোগিনাং দৃঢ়চিত্তানাং ভক্তানামেকমাসতঃ। কার্য্যসিদ্ধির্ভ-বেমারীকুলমার্গপ্রসাদতঃ। পূর্ণযোগী ভবেদিপ্রঃ যগ্মাস!-ভ্যাসযোগতঃ। শক্তিং বিনা শিবোহশক্তঃ কিমন্মে জড়বুদ্ধয়ঃ॥ ইত্যুক্ত্য বুদ্ধরূপী চ কারয়ামাস সাধনম্। কুরু বিপ্র মহাশক্তিদেবনং মভদাধনম্। মহাবিভাপদাভোজদর্শনং সমবাপ্সাসি।

এবং শ্রুছা গুরোর্বাক্যং স্মৃত্বা দেবীং সরস্বতীম্।
মদিরাসাধনং কর্ত্ত্ব্ জগাম কুলমগুলে। মন্ত্রং মাংসং
তথা মহস্তং মুদ্রাং মৈথুনমেব চ। পুনঃ পুনঃ সাধয়িছা
পূর্ণযোগী বভুব সঃ॥ যোগমার্গং কৌলন্দার্গমেকাচারক্রমং
প্রভো। যোগী ভূছা কুলং ধ্যাত্বা সর্ব্বসিদ্ধীশ্বরো ভবেহ।
সন্ধিকালং কুলপথং যোগেন জড়িতং সদা। ভগসংযোগমাত্রেণ সর্ব্বসিদ্ধীশ্বরো ভবেহ। এতদ্যোগং বিজানীয়াজ্জীবাত্মপরমাত্মনোরিতি।

অতএব সর্ব্বাদৌ পাশবকল্পাশ্রয়ণমেব শ্রেয়ঃ। উক্তঞ্চ

তত্রৈকপঞ্চাশপটলে—পশোরধীনং দেবেশ বীরভাবং মনো-হরম্। বীরাধীনং দিব্যভাবং বীরো যোগী ভবেদ্ধবম্। যোগাধীনং দিব্যভাবং দিব্যেন রুদ্রদর্শনমিতি।

যত্ত্ব কালী তারা ছিল্লমস্তা স্থন্দরী ভৈরবী তথা। মাতঙ্গী চ তথা বিল্লা বিল্লা ধূমাবতী তথা। এতাসাং সাধকাচারঃ অবধ্তসমঃ স্মৃতঃ। সর্বাশ্রমে সর্ববর্ণে সর্বযোগে তথা শিবে। সর্বস্থানেয়ু সর্বত্র ন বিশেষঃ কচিন্তবেদিতি যোগিনীতন্ত্র-ষ্ঠপটলবচনাৎ কাল্যাদিবিল্লোপাসকানাং সর্বাদাবধূতা-চারতুল্যন্থং শ্রেয়তে তদপি পাশ্বকল্লেনাধমসিদ্ধানন্তরমেব। অন্তথা কালীবিল্লাপুরশ্চরণে বক্ষ্যমাণবচনেয়ু পাশ্বকল্পানন্তরং বীরকল্পবিধানস্থ বৈয়র্থ্যাপত্তিঃ॥ তথাহি তারাভক্তিস্থার্ণবিধ্রক্ষতন্ত্রতন্ত্র—দিব্যা লক্ষং শুচিন্তৃত্বা হবিদ্যাশী জপে- রমরঃ। ততম্ভ তদ্শাংশেন হোময়েদ্ধবিষাং প্রিয়ে। তর্পয়ে-তীর্থতােয়েন পয়সা সর্পিষাপি বা। মধুনা বা সিতামিশ্রনতােয়েন পরমেশ্বরি। দেবীক্ষাভিষিচেত্রোয়ৈস্তর্পণস্থ দশাং-শতঃ। তদ্শাংশৈহবিদ্র্ বৈয়র্ভোজ্যেন্ডক্তিতঃ প্রিয়ে। কালী-তন্ত্রবিদাে বিপ্রান্, দক্ষিণাং গুরবে দদেৎ।

পাশবং কথিতং কয়ং শৃণু বৈরং ততঃ প্রিয়ে। রাজো মাংসাসবৈর্দেবীং পৃজয়িদ্বা বিধানতঃ। ততো নগাং স্ত্রিয়ং নগ্নো রমন্ ক্লেমুতোহপি বা। জপেল্লক্ষং ততো দেবি হোময়েৎ জ্বলিতানলে। যোনিকুণ্ডে স্থিতে সর্পিক্সাংসমগ্র-যুতং তথা। দশাংশং তর্পয়েমস্তৈর্মাংসমিশ্রেঃ স্থসাধকঃ। তর্পণস্থ দশাংশেন অভিষিচ্য জগন্ময়ীম্। দশাংশং ভোজ-য়েৎ সাধু সাধকং কালিকাপ্রিয়ম্। মন্তং মাংসঞ্চ মৎস্যঞ্চ চর্বণঞ্চ প্রদাপয়েৎ। ততস্ত্র তোষয়েছক্ত্যা গুরুং স্বরণাদিভিঃ প্রিয়ে। এতৎকল্পদ্বয়াদেবি মন্ত্রঃ দিধ্যতি বৈ ধ্রুবমিতি॥ কালীতক্ত্র:চ—লক্ষমেকং জপেদ্বিদ্যাং হবিষ্যাশী দিবা শুটিঃ। রাজ্রী তান্ধূলপূর্ণাস্তঃ শয্যায়াং লক্ষমানতঃ ইতি॥ তারাভক্তিস্থধার্ণবিশ্বত-ভৈরবজামলেহপি — দীক্ষাবিধানমধিগম্যগুরোঃ দকাশাল্লক্র্যা মন্ত্রং জপতি লক্ষমিতং দিবা যঃ। রাজ্রৌ হবিষ্যভ্রগমৎসরকামকোপ-লোভাদ্যচঞ্চলমনাঃ সতু সাধকেক্রঃ॥ লক্ষং নিশি স্ববনিতান্ত্র রতাবসানে নগ্নো বিমুক্তচিকুরস্ত্রয়ি দত্ত-চেতাঃ। তান্দূলপূর্ণবদনঃ কুস্তমানুলেপভূষো জপন্ ভবতি দিদ্ধনমুর্যনুষ্য ইতি।

নমু একদৈব দিবারাত্রিভেদেন লক্ষম্মজপদর্শনাদেকমেব পুরশ্চরণং প্রতিভাতীতি চেন্মেবম্। নানাচারো ন
কর্ত্তিয়োন চারণমিতস্ততঃ। ভূতহিংসা ন কর্ত্তব্যা পশুহিংসা
বিশেষতঃ। বলিদানং বিনা দেবি হিংসাং সর্বত্র বর্জয়েদিতি
কুমারীতন্ত্রকালীতন্ত্রয়োর্বচনেন নানাচারপ্রতিষেধেন একদৈব ব্রহ্মচর্ব্যহারভোজনাদেকীরকর্মাদেশ্চ বিরুদ্ধস্থেন
নৈককালে তত্ত্রয়ধর্মপরিপালনাসম্ভবাং। স্বাচারনিরতা
নিত্যং দিবা লক্ষং জপেৎ পশুঃ। দিব্যো বাপ্যথবা বীরো
রাত্রৌ লক্ষজপঞ্রেদিতি তারাভক্তিস্থবার্ণবিশ্বত-কালীক্রমবচনে আচারভেদতঃ পৃথক্জেন পুরশ্চরণস্থ কল্পদ্মাবাদ্চ।

নচ, পশুগুরুম্থাল্লক্বা বিদ্যাং কালঘনপ্রভাম্। পাশবেন তু কল্পেন লক্ষং জপ্যাৎ সমাহিতঃ। দিব্যগুরুম্থাল্লক্ব্য কালিকাং দিব্যরূপিণীম্। লক্ষং জপ্যাৎ সদা মন্ত্রী বীরকল্পেন সাধক ইতি কালাকুলার্ণবিবচনেন দিব্যগুরুমুখলন্ধমন্ত্রকশিষ্যৈঃ পাশবকল্পমনাদৃত্য প্রথমতএব বীরকল্পোক্তপুরশ্চরণং কর্ত্তব্যনিতি বাচ্যম্ জগদম্বাপ্রত্যক্ষদর্শনস্থ সাক্ষাৎপ্রয়োজকো দিব্যাচারঃ। তদাচারী দৃষ্টম্বেষ্টদেবতাকস্তদ্দর্শনোন্দুখো বা যঃ শিবতুল্যসাধকো গুরুস্তমাল্লন্ধমন্ত্রকশিষ্যস্থাধমসিদ্ধেঃ স্বতএবাভিপূর্ণতিয়া তস্থ মধ্যমসিদ্ধিপ্রয়োজকবীরকল্পেন পুরশ্চরণস্থ কর্ত্বব্যভায়াঃ সর্ব্বসম্মত্ত্বাৎ।

নচ পাশবকল্পাদীনাং ক্রমশোহ্বলম্বনস্থ সর্ব্বসম্বতত্ত্বে সতি যোগিনীতত্ত্বে কাল্যাদিবিদ্যোপাসকানামবধ্তাপ্রমতুল্যমাভিধানস্থাসঙ্গতিরতি বাচ্যম্ দ্বিজাতীনাঞ্চ সর্বেষাং দিবা বিধিরিহোচ্যতে। শূদ্রাণাঞ্চ তথা প্রোক্তং রাত্রাবিক্তং মহাকলমিতি। ফেৎকারিণীতস্ত্রবচনেন তথাস্থাস্থবচনৈশ্চ দ্বিজাতীনাং সহস্যা স্থরাগ্রহণনিষিদ্ধতয়্মা যোগিনীতস্ত্রীয়সর্ব্বপদস্থ সঙ্কোচং স্বীক্বত্য শূদ্রাদিজাতীনাং তত্তদ্বিদ্যোপাসকানাং সর্ব্বদৈব বীরাচারেণ পুরশ্চরণকর্ত্বব্যতাবগমাৎ। যদ্বা, পূর্বাম্মায়োদিতং কর্মা পাশবং পরিকীত্তিতমিতি পূর্ব্বোক্তবিশ্বারতন্ত্রচত্ত্বিংশপটলীয়বচনেন পূর্বামায়োদিত-বিদ্যানামেব সর্ব্বদা পাশব-কল্পশ্চাপি সিদ্ধাং প্রয়োজকঃ নতু-তরাল্পায়াহ্যক্ত-কাল্যাদি-বিদ্যানাম্। তাম্ব পশুভাবেনাধম-সিদ্ধ্যনন্তরং ক্রমশো বীরাদিভাবস্থ কর্ত্বব্যতেতি তদ্বচনস্থ তাৎ-পর্যাৎ।

আন্নায়ভেদবিদ্যান্ত প্রকীর্ণকে কথয়িষ্যামঃ।

এবঞ্চ ত্রিলোকারাধিতপাদপদ্ম-পরমকারুণিক শ্রীমন্মহ!-দেবপ্রণীতে যদ্যন্তন্ত্রে পশুনিন্দনং শ্রুয়তে তদদীক্ষিতপরম্। তথা হি রুদ্রজামলে—অদীক্ষিতস্ত যদ্ব্রং পূজাকালে স্পৃশেদরঃ। বিনশ্যতি বরারোহে পূজা তদ্দিনজা প্রিয়ে। স্নানকালে চ পূজায়াং হোমকালে বিশেষতঃ। পশুস্পৃষ্টানি
বস্তুনি স্পৃশেষের কদাচন॥ প্রমাদাৎ স্পর্শনং তম্ম জায়তে
যদি হস্পরি। স্নানাচ্ছুদ্ধিভবৈত্তম্ম নাম্যথা তু মহেশ্বরি॥ যৎকুলে নাস্তি দীক্ষা চেৎ পশুশব্দেন তৎ কুলম্। প্রোচ্যতে
দেবদেবেশি বর্জ্যমাগমবেদিভিরিতি।

যত্ত্ব, পশোর্দর্শনমাত্ত্রেণ সূর্য্যদর্শনমাচরেৎ। স এব দিবিধা দেবি দীক্ষিতোহদীক্ষিতঃ পশুঃ। দীক্ষিতো হি ভবেৎ পূর্ব্বোহদীক্ষিতো হি মহাপশুরিতি নিরুত্তরতন্ত্রীয়দাদশপটল-বচনেন দীক্ষিতস্থাপি পশুছেন নিন্দনং তদ্বক্ষ্যমাণবচন-প্রতিপাদ্যাধমপশ্বভিপ্রায়েণ। অন্থথা শ্রুতিস্মৃত্যাদিমত-মপহায় কেবলাগমবচনাবলম্বনেনাপি পরস্পরং মহাবিরোধাপত্তেং, যো দাক্ষিণ্যং বিনা দেবি মহামায়াং সমর্চ্চতি। স পাপঃ সর্বলোকেভ্যন্চ্যুতো ভবতি নান্থথা। ইতি জামলবচন-বিরোধাপত্তেন্ট্য

অধনপশুর্যথা কুজিকাতন্ত্রে সপ্তমপটলে—পশুভাবরতা যে চ কেবলং পশুরূপিণঃ। রাজ্রৌ মন্ত্রঞ্চ মালাঞ্চ ন স্পৃশেন্ত্রু কদাচন॥ সংশয়ো বলিদানে চ তন্ত্রে চ সংশয়ং সদা। মন্ত্রে চাক্ষরবৃদ্ধিশ্চ অবিশ্বাদো গুরো সদা। প্রতিমায়াং শিলাবৃদ্ধি-র্ভেদকো দৈবতে সদা। অজ্ঞানেন সদা স্নানং প্রত্যহং দেহতাড়নম্। সর্কেলাঞ্চৈব নিন্দাঞ্চ যস্ত কুর্য্যান্মহেশ্বরি। স এব পশুভাবেন চাণ্ডমঃ পরিকাত্তিত ইতি। ইত্যলমতি-কৌস্তভেন।

ইহ তু দিব্যবীরাচারঃ প্রায়শঃ সর্বৈর্নিবন্ধকারেঃ প্রপঞ্চিতঃ। অতস্তমুপেক্ষ্য পাশবাচারা নিরূপ্যস্তে। তত্ত্ যদ্যপি দীক্ষাপ্রকরণীয়মন্ত্রাণাং ছিল্লাদ্যউদোষশান্তিপ্রসঙ্গে উমাজামলীয়দক্ষিণাচারো বিরতস্তথাপি পুনরত্র সএব এস্থা-ন্তরীয়ো বিশেষতো নিরূপ্যতে। যথা শ্যামার্চ্চনচন্দ্রিকাপ্পত-ভৈরবসংহিতায়াম্। শ্রীদেব্যবাচ—যত্নক্তং বীরকল্পন্তৎ কার্য্যং বীরবরৈঃ প্রভো। অপ্রাপ্তবীরভাবানাং বিধেয়ন্ত্রত কীদৃশম্॥ জীমহাদেবউবাচ। শৃণু প্রিয়ে প্রবক্ষ্যামি কল্পং পাশক্ষত্তমম্। সাধকানাং হিতায়ৈব তুর্বলানাং বিশেষতঃ। অপ্রকাশ্য-মিদং লোকে তব স্নেহেন কথ্যতে॥ পর্যোষিৎ সতী প্রোক্তা সাপি কুগুলিনী স্বয়ম্। গোলপুষ্পস্ত যত্রোক্তং তত্র গোরোচনাং অদে। কুকুমঞ্চাপি যুঞ্জীত পুংমাত্রেযু চ ভৈরবি। স্বয়ম্ভুকুস্থমং দেধি রক্তচন্দনসংজ্ঞকম্। কপিকপূরি জবয়া যুক্তা চেদপরাজিতা। পূজার্থং ত্রিপুরাদেব্যা মদ্যং তৎ পরিকীত্তিতম্। মথিত্বা যৎ পয়ঃ সদ্যো নবনীতং সমুদ্ধৃতম্। শুক্রং তৎ কথিতং দেবি পুনশ্চৈবাত্র কথ্যতে। বীরাসনং মহেশানি শবাসনমূলাহ্নতম্। ওড়পুষ্পং তদা দেবি দ্দ্যাদঞ্জলিযোগতঃ। মৈথ্নং মত্র বিহিত্যশুচিঃ কথ্যতে২ধুনা। অস্নানন্তগুচিম্নানং শুচিরত্র বিধীয়তে। ভোজনানন্তরং পূজা জশুচিঃ সর্ববদম্মতা। তাংফুলাস্ফো-২শুচির্দ্দেবি শুচিস্তৰ্জিতঃ প্রিয়ে॥ যোনিমন্ত্রং মহেশানি যোনিরত্র বিধীয়তে। উত্তরাভিমুখীভূয় পূজনং প্রদেবয়োং। শব্যাসজ্ঞং সমূদ্দিউং ' সর্বতন্ত্রসমন্বিতম্। শক্তিতন্ত্রেধু শয্য। কাপি ন গহিতা। স্ত্রাসহায়•চরেজ্ঞপ্যংনাক

বৈরং ন পাশবম্। সামাত্তং সর্বতন্ত্রেষু কুমারীপূজনং তথা। করকচ্ছপিকাং রুত্বা দদ্যাৎ পুষ্পাঞ্জলিত্রয়ন্। কথিতং **দেবদেবেশি** পূজা মৈগুনসন্তবা॥ শৃতাগারং মহেশানি। শাশানং সমুদীরিতম্। কেশঞ্চ বিল্পপুষ্পং স্থাক্রকঞ্চ রক্তচন্দনম্। জবাপুষ্পং মহেশানি যোনিপুষ্পং নিগদ্যতে। দধি ছুগ্ধং পায়দঞ্চ নবনীতং তথা মধু। শর্করা-পনদামাদি মৎস্থমাংদ-মুদাহতম্। বীরাসনে যজেদ্বৌং শবস্থ লক্ষণং স্মৃতম্। বজ্রপুষ্পং মহেশানি কুগুপুষ্পানুদীরিতম্। ভগগীতং তব স্তোত্রং লিঙ্গগীতং মম স্তবঃ। নরশভাং মহেশানি শভাং দক্ষিণসংজ-কম্। শন্মালা তু যত্রোক্তা ক্ষাটিকী তত্র কীর্ত্তি।। কুরুটং মহিষং যত্র মংস্থাংসমূদাহতম্। নকুলং মূষিকাদ্যঞ তত্র হুম্বং নিবেদয়েং। রস্তাপুষ্পং যতো দেবি জ্রোণপুষ্পং ততো হিতম্। ঋতুযুক্তং যতঃ প্রোক্তং ষট্চক্রং তত্র বিশ্রসেৎ। শিবাবলিস্ত সর্বত সাম। লং পরিকীর্তিতম। মৈরেয়ং যত্র চোদ্দিষ্টং মাক্ষিকং তত্র দাপয়েং। বিজয়া চাপি যবোক্তা সিতা তত্র হিতা ভবেং। যে:নিক্ষালনতোয়ং যৎ শভ্যোদক-মুদাহতম। সাদকং ভক্ষয়েদিপ্রো বিজয়ামাসবং বিনা। ইতি তে কথিতং সর্কাং সংক্ষেপাৎ পাশবং মতম্। অপ্রাপ্তবীর-ভাবস্ত যদি বৈর্য্যং সমাশ্রয়েং। ইতো ভ্রপ্তস্ততো নষ্টশ্হনো ভবতি তৎক্ষণাৎ ॥ ন নিন্দেদাসবং তাবৎ স্ত্রিয়ং বাসবভোজি-নীম্। অন্তানি বীরকক্মাণি যাবৎ স্থাদধিপঃ পশুরিতি॥ মহিষ-মিতি তন্মাংসাভিপ্রায়েণ বলিদানে তদিধিস্ত বৈধহিংসায়ামব-গন্তব্যঃ। অধিপোহধিকারী। দিতা কপূরিম্, দিতাভং স্থাৎ সিতা শুল্রা কপুরিং হিমবাল্যকেতি ধরণিকোষাৎ মাদকভাচ্চ

বিজয়াতুল্যথম্।

তথা রুদ্রজামলে দিতীয়পটলে—নিত্যশ্রাদ্ধং তথা সন্ধ্যা-বন্দনং পিতৃতর্পনম্। দেবতাদর্শনং তীর্থদর্শনম্ পীঠদর্শনম্। গুরোরাজ্ঞাপালনঞ্চ দেবতানিত্যপূজনম্। পশুভাবস্থিতো মর্ত্যো মন্ত্রসিদ্ধিং লভেং ধ্রুবমিতি। অপিচ নিরুত্তরতন্ত্রে প্রথম-পটলে—দিব্যো বীরো বরারোহে কলাপূজাং প্রকল্পয়েং। পশুভাবাগ্রিতো মন্ত্রী কলাং নৈব প্রপূজ্যেদিতি। কলাপূজাং লতাসাধনম্।

যানি তু, অধুনা সংপ্রবক্ষ্যামি স্থরোৎপতিং মহেশর। যস্যাঃ প্রবণমাত্তেণ দীক্ষাফলমবাপুয়াৎ॥ সমুত্রে মগ্যমানে তু ক্ষীরারে সাগরোভরে। তত্রোৎপন্না স্থরা দেবী কুমারী-রপধারিণী। নগ্না কালাগ্নিসদৃশী কুতহাসোল্লসন্থী। অস্টাদশভুজা দেবী নবকুস্তধর। তথা। নবপাত্রধরা তদমদি-রারুণলোচনা। নানাকুস্থমভূষাচ্যা মুক্তকেশী ত্রিলোচনা। নানারত্বাঙ্গদযুতা মুক্তাহারলতাঞ্চিতা। রত্নাঙ্গুরীয়শোভাচ্যা তুঙ্গপীনস্তনাঞ্চিতা। বিচিত্ররত্নখচিতকাঞ্চীগুণনিত্রিনী। রত্নসিংহাদনগতা পরমানক্দায়িনী ॥ তাং দৃষ্ট্রা ভুষ্টু বুর্দ্বৌং ত্রক্ষবিষ্ণুমহেশ্বরাঃ। সম্ররাম্মরগর্কবাঃ দেশরাঃ সদদাশিবাং॥ তদা প্রসন্নবদনা সুরাদানসমুক্ততা। আদৌ পাত্রং দদৌ দিব্যমানন্দরসপূরিতম্। সদাশিবায় দেবেশি স নতা পাত্র-মগ্রহীং। পাত্রাদিন্দুঃ পপাতোর্ক্যাং জাতা গুড়লতা ততঃ। বিন্দুপাতাৎ কলা জাতাস্তাভ্যো জাতাঃ সহস্রশঃ। ইক্ষুভেদা-*চ খদিরাস্থ*নোন্তাঃ সিতাদয**়। ক্রমুকা নাগবল্লী চ অব**-ছীতি মহেখরি। গোড়ী চৈতদুর্তা প্রোক্তা সর্বার্থফল-

দায়িনী॥ ততো দদে পরং পাত্রমীশ্বরায় স্থবা শিবে। পাত্রাদ্বিদ্যঃ পপাতোর্ব্যাং ততো জাতা হি বল্লরী। বিন্দু-পাতকলাভ্যোহপি ক্রাক্ষাভেদাঃ সহস্রশঃ। মৃতুকাক্রা মহা-দেবি জাতাঃ পরমপাবনাঃ। মাধ্বী প্রোক্তা মহাবিদ্যা-माध्यम मर्विमित्रिना ॥ ততো मर्ता भवः भावः कृ नाग्राम् ७-পুরিতম্। পাত্রাদ্বিন্দু: পপাতোর্ব্যাং জাতা গোধূমজাতয়:। তৎকলাভ্যো মদন্তী চ জাতা বৈ ধান্যজাতয়ং। পৈন্তী প্রোক্তা সুরা দেবী পরমানন্দদায়িনী॥ ততো দদে পরং পাত্রং বিফবে পরমায়ত্য। পাত্রাদ্বিদ্যু পপাতোর্ক্যাং সন্ধি-জ্জাতা ততঃ প্রিয়ে। তৎকলাভ্যোপি দেবেশি তদ্ভেদাঃ कनकाष्यः। व्याना ह वहावा जाठान्छर छना मनवर्षनाः n विक्र स्त्रिक सम्रा त्थाळा देवभवी श्रवमार्थना। मन्निनामवरमा-শ্বধ্যে সম্বিদৈব গরীয়সী। ততো দদৌ পরং পাত্রং এীসুরা পরমেষ্ঠিনে। পাত্রাদিন্দ্: পপাতোর্ক্যাং জাতা শীঘ্রং পুর-ষিকা। তৎকলাভ্যোহপি সংজাতা ভেদাঃ ক্ষোদ্ররসাদয়ঃ। পানকং প্রোক্তমীশানি সর্ব্বসাধারণং পরম্। তৎকলাভ্যো-২পি সংজাতং জাতং জাতীফলং ততঃ। তৎকলাভ্যোহপি সংজাতা ভেদাশ্চামলকাদয়:। পানকং নাম তদ্দ্রব্যং রসা-য়নমুদাহ্রতম্॥ ততো দদো পরং পাত্রং গুরবে গিরিজে সুরা। পাত্রাদ্বিন্দু: পপাতোর্ব্ব্যাং গুড়পুস্পং ততঃ শিবে। জাতান্তৎকালজা ভেদা নারিকেলফলাদয়:। পানকং নাম দেবেশি রসায়নমিদং পরম্॥ ততো দদৌ পরং পাত্রং শুক্রা-য়ামৃতনির্ভরম্। পাতাদিন্দু: পপাতোর্ব্যাং জাতা: থর্জুর-পাদপা:। তৎকলাভ্যোহপি সংজাতা ভেদা বাদরিকাদয়:। পানকং তদিপ প্রোক্তং দিব্যং সন্তোষকারকম্॥ ততো দদৌ পরং পাত্রং সূর্য্যাচন্দ্রমসোঃ সক্তং। পাত্রাদিন্দুঃ পপা-তোর্ব্যাং জাতা সঞ্জীবনৌষধিঃ। তৎকলাভ্যোহিপি সংজ্ঞাতা-বিবিধোষধয়ঃ শিবে। পানকং তদিপি প্রোক্তং সর্ব্বসাধারণং পরম্। সর্ব্বার্থফলদং দেবি সর্ব্বসারস্বতপ্রদম্। দত্ত্বাদিব্যং রসং দেবি স্করা তত্র তিরোদধে ইতি কেনাপি পাশব-কল্পোচ্ছেদাকাজ্ফিণা পূর্ব্বপক্ষছলতঃ পরাদেবীরহসোতিনামত্বনারোপ্য পঠ্যস্তে তান্যমূলকানি সমূলত্বস্বীকাকে কল্প-ভেদাদবিরুদ্ধম্।

যদা, যথা গবাং রক্তমাংসমজ্জাদীনামভক্ষ্যথেইপি তস্যায়্দ্ত্-তগোরসাদীনাং শুদ্ধতয়া সর্বদৈব সকললোকানাং প্রাহারণ ন তেন গোভক্ষণমায়াতি তথা স্থরাং বিহায় তত্রাদ্ভূ তক্ত্রপ্রেদ্র-ব্যাণাং গ্রহণে নো কশ্চিদ্রোষঃ।

এবঞ্চ, মদ্যৈশ্মাং সৈশ্চ রকৈশ্চ গোমাং সৈশ্চাপি শোণ্ডিকৈ:।
প্রত্যহং পূজ্যেদ্দেবীং ত্রাহ্মণাদিঃ শুভাপ্তয়ে ইতি মহানীলতন্ত্রষষ্ঠপটলবচনেন তাদৃশাধিকারিপ্রকৃতকোলানামেব যথা
প্রবাং ছুগ্ধাদীনাং গ্রহণে ন দোষস্তথা তন্মাং সাদীনামিপ উভয়ত্র
বিধেক্তোল্যাৎ নান্যেষাম্। স্থরায়ামিপি তদ্বৎ।

অন্যথা, পশ্নাং প্রথমং ভাবং বীরস্য বীরভাবনম্। দিব্যানাং দিব্যভাবস্ত ভিন্না ভাবাস্ত্রয়ঃ স্মৃতা ইতিরুদ্রজামলীয়দিতীয়-পটলবচনে দিব্যাদিভাবানাং পৃথক্ পৃথক্ কথনস্য বহুষু প্রস্থেষ্ পাশবাদিত্রিবিধকল্পানামাচারভেদনিরূপণস্য চ বৈয়র্থ্যাপত্তেঃ এতং সর্ব্বং বুক্তিমূলকম্।

ষুক্তের দরণীয় বমাহ জগদখা স্বয়মেব রুক্তামলে চ্ছা-

রিংশপটলে—যুক্তিমূলং মহাভাবং যুক্তিমূলং হি সাধনম্। যুক্তিক্রমেণ কালেন সিদ্ধো ভবতি সাধক ইতি।

কিঞ্চ, দক্ষিণে সাধকং সিদ্ধো দিবামানে জপেন্মমুমিতি কঙ্কালমালিনীতন্ত্ৰীয়পঞ্মপটলবচনেন দক্ষিণাচারিণাং যৎ দিবসে জপবিধানং প্রভীয়তে তন্ধ নিয়ামকম্। প্রভাতে চ সমুখায় অরুণোদয়কালতঃ। নিশাইটদণ্ডপর্য্যন্তং পশ্নাং ভাব ঈরিত ইতি রুদ্রজাগলিবিতীয়পটলে পশ্নাং নিত্যকর্ম্ম-প্রস্থা নিশাইট্য ওপর্য্যন্তং তেগাং কর্মাকর্ত্রব্যব্যবিধানাং।

বৈশ্ববাদে বিশেষে যথা। তীর্থস্বামিশোধিতর্হতন্ত্রসারধ্বতর্হদেগাত্র্মীযে—বৈশ্ববো ন জপেদ্রাত্রো মনুং ত্যক্ত্রা
উপপ্লবমিতি। তথা যোগিনীতন্ত্রে দ্বিতীয়পটলে—নো নক্তং
বৈশ্ববে সোরে মহাসোরে চ পৈতৃকে। নামধ্যানং বিনা দেবি
শশাক্ষগ্রহণং বিনেতি॥ যদপি বিশ্বোস্ত বামিকা মূর্ভির্নরিদংহা

হ্বরা ভবেং। রামক্বফো চ গোপালঃ কথিতো বামনায়কঃ ইত্যাদি চীনতন্ত্রকোলাবল্যাদিতন্ত্রীয়বচনে যদ্রামক্ষণদীনাং বামনায়কত্বমভিহিতং ন তেন তত্বপাসকানাং বামাচারছনায়াতি তথা সতি দক্ষিণকালিকায়া উপাসকানাং সর্বাদাদিকণাচারাপত্তিঃ। যজ্ঞপি কুত্রচিদ্গুন্থে বৈঞ্চবাদীনামপি বামাচারঃ ক্রুটমভিহিতস্তথাপি তত্তদ্গুন্থবচনানি কলীতরপরত্বেন সমাধ্যোনি।

বস্তুতস্তু স্বস্বকল্পোক্ত আচার এব কুলাচার:। কছুক্তং নির্ববাণতন্ত্রে একাদশপটলে—যশ্মিন্ দেবে য আচারো নি-क्तिरके। मलुमाध्या । जनानात्रविभिरके। यः कोलिकः म-**প্রকীর্তিত ই**তি॥ স্বস্বকল্লোক্তাচারস্থ কথং কুলাচারত্ব-মুক্তং যতঃ পঞ্চতত্ত্বং বিনা কুলাচারএব ন ভবতীতি বাচ্যম্। অতএব বৈঞ্চবানাং পঞ্চতত্ত্বং বিহ্নগোতি ভস্তৈয়ব দ্বাদশ-পটলঃ। শ্রীচণ্ডিকোবাচ। শৃণু নাথ পরানন্দ মম প্রাণে-শ্বর প্রভো। বৈষ্ণবস্থ চ যত্তত্ত্বং তম্মে ক্রহি জগৎপতে॥ ঞ্জীশঙ্করউবাচ। শৃণু তত্ত্বং বরারোহে বৈষ্ণবস্থ ত্রিলোচনে। গুরুতত্ত্বং মন্ত্রতত্ত্বং বর্ণতত্ত্বং স্থারেশ্বরি। দেবতত্ত্বং ধ্যানতত্ত্বং পঞ্চত্ত্রং বরাননে॥ তত্রাদৌ শ্রীগুরোস্তত্ত্বং স্নেহাদক্ষ্যামি পার্ব্বতি। সতৈলং বর্ত্তিকাযুক্তং দেহস্থং ব্রহ্মতেজসম্। ঞ্চরুণা মন্ত্রদানেন তৎসূত্রং দীপিতং ভবেৎ। দেবোক্তাত্মা শব্বীরং হি বীজাত্বংপগতে ধ্রবম্। অতএব হি তস্থা গ্লা দেবরূপো ন সংশয়ঃ । ঈশ্বরস্ত তু যদীর্ঘ্য তদেব ক্ষ-য়াত্মকম্। তেন বর্ণাত্মকং দেহং জস্তোরেব ন সংশয়ঃ। সর্ববর্ণেন সর্ব্বান্থা নীয়তে পরমেশ্বরি। বর্ণভক্তুমিদং দেবি

মম সর্ববিশ্ববদ্ধবেৎ। স্বয়ং দেবো ন চাচ্ছোহিম্মি নির্মালো দেব-রূপধূক্। সর্বত্র দেবতাং ধ্যায়েদ্গুরুগুল্মলতাদিরু। ধ্যানেন লভতে সর্ববং ধ্যানেন বিষ্ণুরূপকঃ। ধ্যানেন সিদ্ধিমাপ্রোভি বিনা ধ্যানং ন সিধ্যতি॥ ইতি তে কথিতং দেবি বৈশ্ববস্থ স্থরেশরি। যজ্জানাদমরত্বঞ্চ বিষ্ণুরূপো ভবেষরঃ। যদি ভক্তিযুতো মর্ত্রো মনসা চিন্তয়েৎ সদা। তে নরা ন হি গচ্ছন্তি কদাচিদ্ যমমন্দিরম্॥ ইতি তে কথিতং তত্ত্বং বৈষ্ণু-বস্থ স্থরেশরি। যজ্জানাদমরত্বঞ্চ লভতে নাত্র সংশায়ঃ ইত্যাদি-বচনে বৈষ্ণুবাদীনামপি পঞ্চতত্ত্বদর্শনাৎ।

প্রদঙ্গাদত্র গাণপত্যানামাচারোহবধীয়তাম্ যথা রহজেন্দ্র-জামলীয়প্রথমথণ্ডে তৃতীয়াধ্যায়ে। শ্রীভগবানুবাচ—গাণ-পত্যো ভবেদ্যো বৈ মহাযোগী দ এব হি। আচারং তত্ত্র বিপ্রেক্ত্র শৃণু মত্তঃ দমাহিতঃ। পরমং পরমং বিদ্ধি পরমাৎ পরমং তথা। হবিষ্যাশী রক্তবাদী শেতমাল্যবিধারকঃ। চক্রহন্তী দকেশী চ ব্রহ্মবাদী জিতেক্তিয়ঃ। ব্রহ্মজ্ঞানী গুপ্ত-জাপী রক্ষমূলক্বতাপ্রয়ঃ। ব্রহ্মধ্যানার্চনাহহীনো ধর্মশীলো দ্যাময়ঃ। যাবতীং রমণীং দৃষ্ট্যা মাতৃকাভাবমাচরেৎ। অন্ত-জ্ঞানাদ্দি,জপ্রেষ্ঠ নরকে বিশতি ধ্রবমিতি।

অথ সারস্বতাচারাঃ। তন্ত্রদীপিকায়াং—স্থসিতৈঃ কৃন্দকুস্থনৈঃ পূজা সারস্বতে বিধে । দূর্ব্বায়া বাঙ্কুরং পূজাং রাজরক্ষসমূদ্রবম্। উৎপলানি প্রশস্তানি সিন্ধুবারাঙ্কুরাণিচ॥
ভজন্ সরস্বতীং নিত্যমেতানি পরিবর্জ্জয়েৎ। আত্রাতং গৃঞ্জনং
নিস্বং করপুং লশুনং তথা। তৈলং পলাপুং পিণ্যাকং শৃঙ্কাটমপি ভোজনে। শৃঙ্কাটং সিঙ্কাইড্ ইতি খ্যাতমিতি ভট্টঃ।

चिक्र न स्थान स्

ইতি সতত্যহামহীশচক্রচ্ডামণিচর্চিত্চরণনলিন শ্রীমদ্গোপা-মোহনপাদপদ্মামন্দমকবন্দসন্দোহানন্দিভমনোমধুকব-শ্রীহরকুমার দেবশন্দ-শ্বীরচিস্তামণিসপ্রচিত্তাদক-হব্তরদীধিতৌ প্রদেশকলাপ্রকাশঃ।

অথ প্রকীর্ণকম্। কুলার্ণবে দ্বাদশোল্লাদে-ন কুর্য্যা-শ্বাস্তিকৈঃ সার্দ্ধং সম্ভাষণমপীশ্বরি। বিলোক্য দূরতো গচ্ছে-শ্বাসীত সহ তৈঃ কচিদিতি॥ রুদ্রজামলে প্রথমপটলে— সাংসারিকস্থথাসকং ব্রহ্মজোহশ্মীতি বাদিনম্। ত্যজেতং সততং ধীরশ্চণ্ডালমিব দূরত ইতি॥ বরদাতন্ত্রে তৃতীয়-পটলে—দৈবং পুরুষকারশ্চ কালশ্চেতি ত্রয়ো মতাঃ। ফলাপ্তো কারণং দেবি তত্র ক্বেবং কলো বুঁগে ইতি। কুলার্ণবে একাদশোল্লাদে—একাক্ষরপ্রদাতারং যো গুরু-ঞাবমন্ততে। শ্বানং যোনিশতং গলা চণ্ডালম্বনাপুয়াদিতি॥ তত্ত্বৈ দাদশোলাদে—শক্তিচ্ছায়াং গুরুচ্ছায়াং দেব-চ্ছায়াং ন লঞ্জায়েৎ। স্বচ্ছায়াং তেষু নো কুৰ্য্যান্ন স্বপেৎ গুরুসন্নিধো। ন বিশে দাসনে দেবি দেবতাগুরুসন্নিধো। গুরো সিংহাসনং দেয়ং জ্যেষ্ঠানামূত্রমাসনম্। দেয়াসনং কনিষ্ঠানা মিতরেশাং সমাসনম্॥ জাতিবিভাধনাঢ্যো বা দূরে দৃষ্ট্য গুরুং মূদা । দণ্ডপ্রণামং কুদ্রৈকং তিঃপ্রদক্ষিণ-মাচরেৎ। ততব্রিষড়্ছাদশ বা জ্যেষ্ঠাদিষেকমেব বা গুরুস্তদ্গুরুবোগে তু নন্দেত তদ্গুরুং প্রিয়ে। ততে। নমেদ্ওরুং সোহপি ওর্বাজ্ঞাভিনিবারয়েৎ। শ্রীশুরোঃ সন্নিধৌ শিষ্যঃ স্বগুরুং মনসা নমেৎ। গুরুবুদ্ধা নমেৎ সর্ব্বদৈবতং ভূশমেব বা। ন নমেদ্দেববুরুণা ভু প্রতিমাং লৌহমুগ্মরীম্॥ গুরোঃ প্রণামত্রিতয়ঃ জ্যেষ্ঠানামেকমেব চ। পূজ্যানামঞ্জলিস্তম্বদেয়োং বাক্যবন্দনম্॥ দেবান্ ওরুন্ কুলাচার্যান জ্ঞানর্দ্ধান্ তপোধনান্। বিভাধিকান্জ্ঞান-মুখ্যান্ প্রণমেৎ কুলনায়িকে॥ স্ত্রীদ্বিষ্টা গুরুশপ্তঃ বা

পাষণ্ডং পতিতং শঠম। বিকর্মাণং কৃতত্মঞ্চানাশ্রমিণঞ্চ নো বিশেৎ।। অনিবেদ্য গুরোভু ঙ্ক্তে যস্তস্ত গৃহসংস্থিতঃ। তেন ভুক্তমমেধ্যং স্থান্মতো জায়েত শূকরঃ॥ একগ্রামে স্থিতং শিষ্য স্ত্রিদন্ধ্যং প্রণমেদ্গুরুষ্। ক্রোশমাত্রং স্থিতো ভক্তা। প্ররুং প্রতিদিনং নমেৎ। অন্ধযোজনতঃ শিধ্য: প্রণমেৎ পঞ্চপর্বাস্থ । একযোজনমারভ্য যোজনদাদশাবিধ । তত্তৎসংখ্যাগতৈর্মাদেঃ শ্রীগুরুং প্রণমেৎ প্রিয়ে। দূরদেশ-স্থিতঃ শিষ্যো ভক্তা তৎসন্নিধিং গতঃ। এক্যাজন-সম্োক্তিমাদেন প্রণমেদ্গুরুম্। অতিদূরে স্থিতঃ শিষ্যো যদেচ্ছা স্থাতদা ত্রজেৎ। রিক্তহস্তেন নোপেয়াদ্রাজানং দৈবতং গুরুম। ফলপুষ্পান্দরাদীনি যথাশক্ত্যা সমর্পয়ন্। এবং যো নাচরেদ্দেবি ত্রহ্মরাক্ষসতাং ত্রজেৎ।। গুরুশক্তিশ্চ তৎপুলো জ্যেষ্ঠভাতা গুরুশ্মতঃ। আত্মবচ্চ কনীয়াংসং পুত্রবৎ পরিপালয়েৎ। কোলাচার্ঘ্যন্ত দেবেশি গুরুজ্যেষ্ঠ-কনিষ্ঠয়োঃ। গুরুকল্পভ কুবর্বীত প্রণামং স্বগুরোর্যথা॥ যোগজ্যেষ্ঠঃ ক্রমজ্যেষ্ঠঃ কুলজ্যেষ্ঠস্তীয়কঃ। গুরুজ্যেষ্ঠ-হ্রতো দেবি ইতি জ্যেষ্ঠচতুষ্টয়ম্॥ যাবজ্জ্যেষ্ঠাভিবাদেন ক্রমিকোহফীঙ্গযোগতঃ। গুরুশ্চ কুলবৃদ্ধশ্চ বন্দনীয়ো বিধা-নতঃ॥ পিতৃমাত্রাদিসর্কেষু পূজ্যকোটিষু বন্ধুষু। অভ্যুত্থান-প্রণামালৈরব্যক্তো দোষভাঙ্নহি॥ যদা স্থাচার্য্যরূপেণ আগ্নানং সংপ্রকাশয়েং। অভ্যুত্থানপ্রণামাল্ডির্দোষভাক্ স ভবেতদা॥ পতিভূমি পশুভাশ্চ প্রণামং যঃ করিষ্যতি। স মহাপশুরিত্যুক্তো দেবতাশাপমাপুরাৎ।। যো গুরুদ্ধানকং প্রাপ্তঃ পাতুকাপরিসংখ্যয়া। গুরুবৎ সতু মন্তব্যো জ্যেটে

ৰ্ব্বন্দ্যো নচ প্ৰিয়ে ইতি॥ ন বিশেদাসনে ইত্যত্ত যদ্দেবতা-গুৰুসন্নিধাবাসনোপবেশননিষেধোহভিহিতঃ স তু পূজান্ত-কালে বোধ্যঃ পূজায়ামাসনস্ত বৈধত্বাৎ।

শারদাটীকাকারগোবিন্দভট্টঃ—স্বনামা ন গুরুং কুর্য্যা-ভার্যাঞ্চ মাতৃনামিকামিতি॥ জ্ঞানানন্দতরঙ্গিণীপ্ততন্ত্রান্ত-রে—গুরোগুরো সন্নিহিতে গুরুবদ্ ত্তিমাচরেং। ন চান্তৎ শ্রেষ্ঠোগুরুণা স্থান্ গুরুনভিবাদয়েদিতি॥

যোগিনীতন্ত্রে দ্বিতায়পটলে—স্বল্পত্বে তিথিকালত্বে ক্রিয়াকালগতির্ভবেৎ। কালে থলু সমারভ্য অকালেহপি সমাপয়েদিতি॥

শিবার্চনচন্দ্রকায়াম্ সর্বতোভদ্রং নবনাভং পঞ্চাজনমণ্ডলঞ্চারভাদিয়।
এতন্মগুলমধ্যে তু কুর্যাদশুতমং বুধ ইতি॥ তারাপ্রদীপে
প্রথমপটলে। মহানীলতন্ত্রে পঞ্চবিংশপটলেচ—পরে চ
বিলিখেচ্চূর্বাঃ সর্বতোভদ্রমণ্ডলম্। তন্মিন্ ধাল্যাঞ্জলিং
দত্তা কলসং স্থাপয়েদ্বুধ ইতি॥ কামাখ্যাতক্তে সপ্তমপটলে—ততঃ শন্ধাদিভিশ্চৈব মঙ্গলাচরণৈঃ পরিঃ। ঘটস্থাপনকং কুর্যাৎ ক্রমং তক্ত শৃণু প্রিয়ে ইতি। শন্ধাদিভিঃ
শন্ধাদিবালৈরিত্যর্থঃ।

রাঘবভট্টধৃতমহাকপিলপঞ্চরাত্রে—দৌবর্ণং কলসং রম্যং রোপ্যং তাত্রমথাপি বা। নির্দ্দোষং মুগ্ময়ং বাপি চন্দনেন বিলেপিতম্॥ রুজ্জামলেহপ্টচম্বারিংশপটলে—প্রণবাদি-নমোহস্তেন চতুর্থ্যস্তপ্রদেন চ। যোজয়িম্বা মহাপূজাবিধৌ কুর্যাৎ সমাহিত ইতি। বিশেষাকুক্তৌ রাঘবভট্টঃ—লক্ষ- পূজাস্থ সর্বাস্থ পূষ্পামেকৈকমর্পয়েং। সমুদায়েন চেৎ পূজা লক্ষপুষ্পার্পণস্ত তদিতি॥ কুলার্ণবে—মূলমন্ত্রং সমুচ্চার্য্য দেবীমাত্রং প্রতর্পয়েৎ। অভাবে সর্ব্যাবাং জলৈনৈব প্রতর্পয়েদিতি॥

কুজিকাতন্ত্রে নবমপটলে—সর্বাং কার্য্যং মহেশানি দেবতারৈ সমর্পণম্। বাসনাভাবরূপেণ মনসা যৎ প্রতিষ্ঠিতম্। তই সর্বাঞ্চ ভবত্যেব দেবি সত্যং ন সংশয় ইতি॥ শাস্তবীতন্ত্রে চতুর্থপটলে—পাপং বা যদি বা পুণ্যং যদ্যং কর্মা কৃতং শিব। তৎ সর্বাং স্বেক্টদেবে চ সমর্প্য ফলভাগ্ভবেৎ। ক্রমোহয়ং দীক্ষিতস্থৈব সাধনে শশিশেখর। অদিক্ষিতস্থ সর্বাস্থ্য বিষয়বে তৎসমর্পণমিতি॥

শ্যামাপ্রদীপধৃতকুলস্থন্দরে—নিশাচারং দিবাচারং সন্ধ্যাচারমুপেন্নরঃ। এথনং বীজসংযোগং স্তবে সংযোগএব চ।
জ্ঞান্থা প্রবোধয়েন্ধীমান্ গুরুরত্রৈব কারণমিতি॥ অস্থ্য
রহস্থার্থঃ নিশাচারং বামনাড্যাং বায়োরুদয়ং, দিবাচারং
দক্ষনাড্যাং ততুদয়ম্, সন্ধ্যাচারমুভয়নাড়ীপ্রবাহমিতি॥ তথা
মুগুমালায়াং ষষ্ঠপটলে—ন দিবা ন নিশা ভাগে ন সন্ধ্যায়াং
কদাচন । পূজয়েন্ন জগদ্ধাত্রীং হেলায়াং পরিপূজয়েদিতি॥
অস্থোত্তরং তত্রৈব। যথা হাঁড়া পিঙ্গলা চ স্বয়ুন্না ব্রহ্মভেদিনী। নাড়ীভ্রমণসম্পর্কান্মুক্তিং প্রাথোতি সাধক ইতি॥
তত্ত্রদীপিকাধ্বতরুদ্রজামলেহপি—স্বাপকালে তু মন্ত্রস্থ জপো
নচ ফলপ্রদঃ। জাগরে চ জপারস্তো ধনধান্থসমৃদ্ধিদঃ।
স্বাপকালো বামবাহো জাগরো দক্ষিণাবহঃ। ইতি জ্ঞান্থ
মহেশানি জপকর্ম্ম সমারভেদিতি তু কাম্যজ্বপরম্।

স্বন্থা পুর*চরণাদিস্থলে প্রাতঃকালং সমারভ্য জপেন্মধ্য-ন্দিনাবধীত্যত্র দক্ষিণবাহানুপস্থিতো তত্তৎকর্মসম্পাদন-ব্যাঘাতাপত্তিঃ।

যদা বক্ষ্যমাণবচনপ্রাপ্ততয়া বামবাহে সতি অকারাদিলান্তবর্ণান্ সবিন্দুকান্ মূলমন্ত্রেণ সংপুটীকৃত্য জপ্তা পুনস্তান্ সবিসর্গান্তান্ জপ্তা ক্ষকারং কেবলং প্রজপ্য প্রকৃতং কর্ম সম্পাদনীয়ম্। তত্তকং তীর্থস্থামিশোধিতর্বহত্তরসারে—প্রাণাপানসমাযোগাচ্ছিবশক্ত্যান্ত মেলনম্। প্রবোধকালো বিজ্ঞেয়ঃ স্বাপকালন্ততঃ পরম্॥ বামবাহো যদা বায়ুর্জ্ঞানাং যোজনং তদা। দক্ষিণস্তাং যদা বায়ুন্তদা দীর্ঘা নিযোজিতাঃ। উভয়ম্যে যদা বায়ুন্তদা স্থাত্তয়াল্লকঃ। সংপুটীকৃত্য মন্ত্রেণ আদিলান্তান্ সবিন্দুকান্। পুনশ্চ সবিদর্গাংস্তান্ ক্ষকারং কেবলং জপেৎ। এবং জপ্ত্রোপবিষ্টশ্চেৎ প্রবৃদ্ধঃ শীন্ত্রসিদ্ধিদ ইতি॥

সংপুটলক্ষণস্থাই রাঘবভট্টঃ—মন্ত্রমাদৌ বদেৎ সর্ববাধ্যসংজ্ঞামনন্তরম্। বিপরীতং পুনশ্চান্তে মন্ত্রং তৎ সংপুটং
স্মৃতমিতি॥ শারদাতিলককুদপি—ভূতলিপ্যা পুটীকৃত্য যো
মন্ত্রং ভজতে নরঃ। ক্রমোৎক্রমাচ্ছতার্ত্ত্যেতি। অত্রৈকাক্রমন্ত্রাদৌ তদেবাবর্তনীয়ম্। অন্যেহগুথা বদন্তি একাক্ষরস্থৈবাবয়বৈঃ কর্ত্তব্যমিতি তদসৎ একাক্ষরেহপি অনেকাক্ষরস্থাপত্তেঃ॥ কঙ্কালমালিনীতন্ত্রে পঞ্চমপটলে—লক্ষং বাপ্যযুতং
বাপি সহস্রং বা বরাননে। অপ্তাধিকশতং বাপি কাম্যহোমং
প্রকল্পয়েৎ। নিত্যহেশ্মশ্চ কর্ত্তব্যঃ শক্ত্যা চ পরমেশ্বরীতি॥
রাঘবভট্টম্বতমহাকপিলপঞ্চরাত্রে—সংখ্যাকুক্রে) শতং সাপ্তং

সহস্রং বা জপাদিম্বিতি॥ বিশ্বসারতন্ত্রে দ্বিতীয়পটলে— ব্রাহ্মণান্ ভোজয়েজত্র বেদবোধেন বর্ত্মনা। একো বিদ্বান্ সহস্রেমু মূর্থেমু চ বিশিষ্যতে। পণ্ডিতান্ ভোজয়িত্বা চ মহা-দেবীং লভেমর ইতি।

নেরুতন্ত্রে পুরশ্চর্য্যাপ্রকাশে— তুগ্ধং কাঞ্চনবর্ণায়াঃ শ্বেতায়াশ্চৈব গোময়ন্। গোমূত্রং তাত্রবর্ণায়া নীলায়াশ্চ ভবেদ্দি।
য়তন্ত কৃষ্ণবর্ণায়া এবং পঞ্চামতেহপিচ। গবাং বর্ণাস্ত শুলভাঃ
সন্তি দেশেয়ু কুত্রচিং। তত্র বর্ণবিভাগেন পঞ্চ গবশেন চাহরেং॥ বর্ণলাভে ন দোমোহস্তি মাত্রাহীনন্ত বর্জ্জয়েং।
গোশকৃদ্দিগুণং মূত্রং স্পির্দিন্যাচ্চতুগুর্ণম্। ক্ষীরমষ্টগুণং
প্রোক্তং পঞ্চগব্যে তথা দধীতি॥

ত্রিমধুরমাহ রাঘবভট্টধৃতপ্রয়োগসারে—পয়ো মধু ঘৃতঞ্চেতি
সমং ত্রিমধুরং স্মৃতমিতি। কঙ্কালমালিনীতন্ত্রে পঞ্চমপটলে—
কথোপকথনং দেবি ত্যজেদত্র স্থরালয়ে ইতি॥ তত্রৈব চতুর্থপটলে—নিয়মঃ পুরুষে জ্রেয়োন যোষিৎস্থ কথঞ্চন। যদ্বা
তদ্বা যেন কেন সর্বাদ্য সর্বতোহিপি চ। যোষিতাং ধ্যানযোগেন সিধ্যেচ্ছেষং ন সংশয় ইতি।

যন্তপ্যশ্মিন্ সংগ্রহে কাম্যকর্ম্মোপেক্ষিতং তথাপি তৎসারো-হধিকারী নিরূপ্যতে। তথাচ কুলার্ণবে ষোড়শোল্লাসে—সিদ্ধ-মন্ত্রস্থ সিধ্যন্তি ষট্ কর্মাণি ন সংশয়ঃ। নৈব সিধ্যন্ত্যসিদ্ধস্থ দেবতাশাপমাপ্রুয়াৎ। কাম্যপ্রয়োগকর্ত্ত্বণাং পরলোকো ন বিছতে। প্রয়োগৈঃ সিদ্ধিমাপ্রোতি বৈফল্যং ন চ মৎপ্রিয়ে ইতি॥ শক্তিসঙ্গমতন্ত্রে উত্তর্থণ্ডে পঞ্চমপটলে—যদ্বিদ্যা-য়াশ্চ যা যক্ষী সা তস্তাঃ সেবিকা পরা। তস্তাশ্চোপাসকো যো হি তম্ম সা সিধ্যতি ধ্রুবম্ ॥ অসমস্ত্রং জপ্যমানো যাং কাঞ্চিদ্যক্ষিণীং জপেৎ। ন তম্ম ফলসিদ্ধিঃ স্থাদ্যক্ষিণী—কোপ-মাপ্রুয়াদিতি।

শূদ্রাদীনামন্যাশ্রমনিষেধমাহ যোগিনীতন্ত্রে ষষ্ঠপটলে—গৃহ-মেধী ভবেচ্ছুদ্রো নান্যাশ্রমী ভবেৎ কদা। শূদ্রবদন্ত্যজাতী নামাচার এব কার্ভিত ইতি।

অনুকল্পে শাপমোচনাভাবমাহ কালীকুলাম্উতন্ত্রে পঞ্চমপটলে—অনুকল্পে কুলেশানি শোধনং মূলমন্ত্রতঃ। ন শাপমোচনঞ্চাত্র শাপো মাদনমাত্রকে। পৈষ্ঠী তু কেবলং শপ্তা
মোহেন ভার্গবাদিভিঃ। অতস্তমোচনং কার্যাং নতু সর্বত্র ভাবিনীতি॥ রাঘবভট্টগ্রতপিঙ্গলামতে—নাধ্যাতো নার্চিতো মন্ত্রঃ শুদ্ধোহপি ন প্রসীদতি। নাজপ্তঃ সিদ্ধিদানেচ্ছু নাহ্তঃ ফলদো ভবেৎ॥ পূজাং ধ্যানং জপং হোমং তম্মাৎ কর্ম-চতুক্টয়ম্। প্রত্যহং সাধকঃ কুর্য্যাৎ স্বয়্মঞ্চেৎ সিদ্ধি-মিচ্ছতীতি।

অথান্নায়ভেদবিভাঃ। তন্ত্ৰরহস্তধৃতদেব্যাগমে—চতুর্বর্গ-প্রদাত্রীণাং দেবতানাং হি কারণম্। ষড়ান্নায়প্রভেদং হি প্রবক্ষ্যামি শৃণুষ তং॥ যেগামজানতো মন্ত্রহোমার্চাবিফলা মতাঃ। প্রবানমুখমেতদ্ধি মম পূর্ব্বদিশি স্থিতম্। মুক্তাভাসং ত্রিনেত্রঞ্চ পূর্ণেন্দুখণ্ডমণ্ডিতম্। সেবিতং স্থরসজ্যাতাস্থরদেব- দিকিন্নরৈঃ। এতংপূর্বব্যুখেনৈব দেবী শ্রীভুবনেধরী। ত্রিপুটা ললিতা পদ্মা শূলিনী চ সরস্বতী। ত্বরিতা চ তথা নিত্যা বজ্রপ্রারিণী তথা। অন্নপূর্ণা মহালক্ষ্মীর্লক্ষ্মীর্বাধাদিনী তথা। এতাসাং কথিতা মন্ত্রাঃ সোপায়াশ্চ ময়া প্রিয়ে। চতুর্ব্বর্গ-

প্রদাঃ সর্বে সর্বাসিদ্ধিসমন্বিতাঃ। পূর্বান্নায়ঃ স এবোক্তঃ সর্ববিদ্যতসেবিতঃ॥১॥

গীতাভং দক্ষিণমূখং ত্রিনেত্রং স্থরসেবিতম্। যম্মাদক্ষমুখেনৈব প্রসাদাখ্যঃ সদাশিবঃ। মহাপ্রসাদমন্ত্রশ্চ দক্ষিণামূর্ভিরেব চ। বটুকো নীলকণ্ঠশ্চ মঞ্জু ঘোষোহথ ভৈরবঃ। মৃতসঞ্জীবনী বিভা দেবো মৃত্যুঞ্জয়ন্তথা। এতেষাং মন্ত্রবর্গাশ্চ
সোপায়াঃ কথিতাঃ পুরা। স এব দক্ষিণামায়ো দক্ষিণাচারভুষ্টিদঃ॥২॥

নবীনমেঘদক্ষাশং পশ্চিমাস্তাং ত্রিলোচনম্। পশ্চিমেন
মুখেনৈব গোপালঃ কৃষ্ণ এব চ। নারায়ণো বাস্ত্দেবো নৃসিংহো
বামনস্তথা। বরাহো রামচন্দ্রশ্চ বিষ্ণুর্হরিহরস্তথা। গণেশোহ্মির্ঘমঃ সূর্যো বিধুর্গরুড় এব চ। গ্রহাশ্চান্তে চ দিক্পালা
হন্মানপরে হুরাঃ। এতেবাং মন্ত্রবর্গাশ্চ চতুর্বর্গফলপ্রদাঃ।
সোপায়াঃ কথিতা যশ্মাৎ পশ্চিমামায় ঈরিতঃ॥ ৩॥

উত্তরাস্তং নীলবর্গং ত্রিনেত্রং স্থরবন্দিতম্। ময়োভরমুথে-নৈব দেবী দক্ষিণকালিকা। মহাকালী গুহুকালী শ্রাশান-কালিকা তথা। ভদ্রকালী চৈকজটা উগ্রতারা চ তারিণী। কাত্যায়নী ছিম্মস্তা শ্রীমন্নালসরস্বতী। তুর্গা চ জরতুর্গা চ নবছুর্গা চ বাশুলী। ধুমাবতী বিশালাক্ষী গোরী চ বগলামুখা। প্রত্যঙ্গিরা চ মাতঙ্গী তথা মহিষমদ্দিনী। এতালাক্ষৈব বিতানাং মন্ত্রাঃ সর্ব্বসমৃদ্ধিদাঃ। সোপায়াঃ কথিতা যম্মাত্রজ্বা-মায় স্করিতঃ॥৪॥

খেতাভগৃদ্ধবদনং স্থরনারীনিষেবিতম্। ময়া চোর্দ্মম্থে-নৈব শ্রীম্র্রিপুবস্থন্দরী। ত্রিপুরেশী ভৈরবী চ বালা ত্রিপুর- ভৈরবী। শাশানভৈরবী চাপি ভুবনেশী চ ভৈরবী। ষট্কুটা ভৈরবী চৈব অন্নপূর্ণাখ্যভৈরবী। পঞ্চমী ষোড়শী চাপি মালিনী চ বলাবলা। এতাসাং মন্ত্রবর্গাশ্চ চতুর্ব্বর্গপ্রদা মতাঃ। সোপায়াঃ কথিতা যম্মাদূর্দামুায়স্ততঃ স্মৃতঃ॥ ৫॥

ঈশানস্থং মুথং গুপ্তং নানাবর্ণং সমুজ্জ্লম্। ত্রিনেত্রং মোক্ষরাট্ জ্রীভিঃ সেবিতং ধনদাচ্চিত্র্। ঈশানস্থ্যুবেব দেবতাস্থানমাসনম্। যন্ত্রং মালা চ নৈবেদ্যং বলিদানঞ্চ সাধ-নম্। পুরশ্চরণকং মন্ত্রসিদ্ধিং তৎকর্মসাধনম্। উক্তং ময়া পুরা স্থেতদ্যস্থাৎ সর্ববং শুচিস্মিতে। ঈশানান্ধায় উক্তঃ স সমস্তপুরুষার্থদিঃ॥৬॥

ইত্যায়ায়াঃ ষড়াখ্যাতা মন্ত্রাণাং হেতুরূপিণঃ। চতুর্বর্গ-প্রদাত্রাণাং দেবতানাঞ্চ স্থন্দরি। আয়ায়মেনমজ্ঞাত্বা যো মন্মন্ত্রে প্রবর্ত্তত। পদে পদে ভবেদ্ধানি র্ন মন্ত্রঃ সিদ্ধিদায়ক ইতি।

রহর্মালতন্ত্রে দ্বাত্রিংশপটলে—ন শূদ্রপূজিতং লিঙ্গং স্থাপি-তঞ্চ তথৈব চ। আলোকয়ন্ত্রমস্থান্ বা নরকে পরিপচ্যতে ইতি। লিঙ্গমিভ্যুপলক্ষণম্॥

যোগিনীতত্ত্ব ত্রয়োদশপটলে—কর্মণ্যেব ক্তে দেবি বৈদিকে বহুজন্মনি। ততশ্চাগমিকে ধর্মে ধর্মেণেব প্রব-র্ভতে। তত্ত্ব সংপ্রাপ্যতে মুক্তিঃ কন্মবন্ধবিনাশিনী। তত্ত্ব বহুজন্মান্তে জ্ঞানমাসাগ্ত মুচ্যতে। কন্মণা লভতে ভক্তিং ভক্ত্যা জ্ঞানমুপালভেং। জ্ঞানান্মক্তিন্মহাদেবি সত্যং সত্যং ময়োচ্যতে। জ্ঞানভাবে সমৎপন্মে সম্প্রাপ্য জ্ঞানকামিনীম্। তদা যোগী বিমুক্তঃ স্থাদিত্যাই ভগবান্ শিবঃ॥ ন কর্মণা- মনারস্তানিকর্ম্যাং পুরুষোহশ্বতে। তত্মাৎ কর্ম মহামায়ে সর্বদা দমুপাচরেৎ॥ বৈদিকং তান্ত্রিকং বাপি যদি ভাগ্যেন লভ্যতে। ন র্থা গময়েৎ কালং দ্যুতক্রীড়াদিনা স্থবীঃ। গময়েদেবতাপূজাজপযজ্ঞস্তবাদিনা॥ দ্বিবিধক্ষৈক তৎ কর্ম বাহ্যান্তরবিভেদতঃ। বাহ্যঞ্চ নিয়মাসক্তং মানসং ন তথা পুনঃ॥

অশু চির্বাপি যত্ত কুত্র স্থলেংপি বা। গচ্ছন্
তিষ্ঠন্ স্বপন্ বাপি যদ্ধা তদ্ধা বরাননে। কুর্য্যাচ্চ মানসং ধন্মং
ন দোষো মানসে কচিৎ ॥ সর্বেষাং কর্ম্মণাং জ্রোজ্ঞা জপযজ্ঞো
মহেশ্বরি। জপযজ্ঞো মহেশানি মৎস্বরূপো ন সংশয়ঃ॥ জপযজ্ঞে হি তিষ্ঠেদ্যো বাহে বা চান্তরেংপি বা। সর্বাদা পরমেশানি জীবন্মক্রো ন সংশয়ঃ।

বৈদিকান্তান্ত্রিকা যে যে ধর্মাঃ সন্তি মহেশ্বরি। সর্বেতে জপযজ্ঞত্ব কলাং নার্হন্তি ষোড়শীম্॥ গ্রহভূতপিশাচাদ্যা যক্ষ-রক্ষোগণাশ্চ যে। ব্যাঘ্রাদ্যা জন্তবো দেবি তথৈব কুপিতা ন্তরাঃ। ডাকিন্তো গুহুকাশ্চৈব গন্ধর্বাশ্চ সরীস্পাঃ। দানবা ভৈরবা ছপ্তা যে বৈ শ্মশানবাসিনঃ। কেহপি নেক্ষন্তি তং দেবি জাপিনং ভয়বিহ্বলাঃ। ন স্পৃশন্তি চ পাপানি কদাপি সাধকং প্রিয়ে। ফলমেতদ্বাচিকন্ত জপস্ত পরিকার্ত্তিতম্। তত্মাচ্ছতগুণোপাংশুঃ সহন্ত্রো মানসো মতইতি।

মূণ্ডমালাতত্ত্বে দ্বিতীয়পটলে—রুদ্রস্থ চিন্তনাক্রন্তাে বিষ্ণুঃ স্থাদ্বিষ্ণুচিন্তনাৎ। তুর্গায়ান্চিন্তনাদ্বুর্গা ভবত্যেব ন সংশয়ঃ॥ যথা শিবস্তথা তুর্গা যা তুর্গা বিষ্ণুরেব সঃ। অত্র যঃ কুরুতে ভেদং স নরো মূচ্তুম্ম তিঃ॥ দেবীবিষ্ণুশিবাদীনামেকখং পরিটিস্তবেং। ভেদর্করকং যাতি রেগরবং নাত্র সংশয়ঃ ইতি॥ শ্যামাসপর্য্যাত্বতিশবাগমে—পন্থানো বহবঃ প্রোক্তা-মন্ত্রশাস্ত্রমনীষিভিঃ। স্বশুরোর্মতমাগ্রিত্য শুভং কার্য্যং ন চান্যথেতি॥

ক্রিয়াযোগসারীয়দশমাধ্যায়ে—সম্পদি ব্রাহ্মণশ্রেষিত কর্তব্যা নিয়মঃ সদা। বিপত্যাং নিয়মো নাস্তি শাস্ত্রেষিতি স্থানিশ্চিতমিতি॥

ইতি সতত্যহামহীশচক্রচুড়ামণিচর্চ্চিত্রচরণনলিন-খ্রীমদ্গোপীমোহনপাদপদ্মামন্দমকরন্দসন্দোহানন্দিত্যনোমপুকরব্রীহরকুমারদেবশর্ম-স্বীয়চিস্তাণিমন্ত্রচিস্তোদকহরতত্বদীধিতৌ ত্রোদশকলাপ্রকাশঃ।

সমাপ্তা

≱ें यु:

পুন্তিকা।

গ্রন্থকুতঃ

মীমাংসা বিবিধা ময়া প্রকটিতাঃ প্রজাবতাং প্রীতয়ে গ্রন্থেংস্মিন্ জপহোমপূজনবিধাবন্মেয়ু চ প্রজ্ঞা। শস্তো সূর্য্য গণেশ কেশব শিবে যাচে গৃহীতাঞ্জলিঃ দোষশ্চেম্মম কুত্রচিৎ করুণয়া দাসস্থা সাক্ষম্যতাম্॥ ১॥

নো তত্ত্বং পরিলোচ্য বাচ্যমিতরৈস্তর্কৈরতত্ত্বং ন কিম্ কিন্ত্বেতদ্ধরতত্ত্বদীধিতিগতস্তন্ত্রার্থতত্ত্বান্সুগৈঃ। দোষশ্চেৎ রূপয়া ভ্রমাদিরহিতঃ সদ্রিভ্রবিদ্য়ি সমা-ধেয়ো নো পিশুনাঃ কুতর্কনিপুণা যুম্মানহং প্রার্থয়ে॥ ২॥

শাকে চক্রমকারপদ্মভূজগীমানেহত বিশ্বাবসো বর্ষে সিংহদিনেশমাসি বিধুদৃঙ্মানে বুধাহে বুধাঃ। শ্রীরাধাজননোৎসবে হরকুমারাখ্যাগ্রজন্মাননাৎ জাতা শ্রীহরতভূদীধিতিরিয়ং লোকে চিরং নন্দতু॥ ৩॥

আদে ময়া সংগৃহীতা পুরশ্চরণবোধিনী॥ ততো বিহিত্যভ্লেন শিলাচক্রার্থবোধিনী॥ ৪॥

কার্য্যন্ত কার্য্যানতিদক্ষিণার্চ্চনাদিপারিজাতং নিজবোধলর্ময়ে।
বামার্চনাগস্ত্যমুখাননেকশো
বিধাস্থইত্যেব মতির্নিরন্তরম্॥ ৫॥

এতদ্ গ্রন্থোলি ি∛ত∹গ্রন্থকার-গ্রন্থ-নামানি ।

| ১ অগস্তাসংহিতা i | ২৮ কাঠকগৃহ্য। |
|---------------------------------|----------------------------------|
| ঃ অগ্নিপ্রাণম্। | ১৯ কাঠকগৃহপ্ৰিশিষ্ট্য। |
| ০ অধিকৰণ্য। | ৩০ কাত্যায়নসংহিতা। |
| s সরদ।কগতব্ম। | ৩১ কত্যোরনীতুরুষ্। |
| ে অরপুণ।কর তথ্য। | ৩২ কামপেঐতন্ত্রম্। |
| ৬ অমবংকাদঃ। | ৩০ কামাখাতিরম্। |
| ৭ আ গম কগ্র <u>জনঃ।</u> | ৩৪ কালমাধনীযম্। |
| ৮ আগমতভুবিল্নেঃ | ৩৫ কালিক।পুর্ণেম। |
| ৯ আশে নহৈ ত্ৰিপ্লঃ - | ০৮ কালিকার্চ্চনচন্দ্রিকা। |
| ২০ আগ্রেনন্ড [ে] | ৩৭ ক <i>িকের</i> হয় ম্ । |
| ঃ অপ্রিমশবে : | ৩৮ কালীকুলমভাবঃ। |
| >= 'अ[b[सा' । | ৩৯ কালীকুগ্যর্কস্বন্। |
| ২০ আদিতাজনযম্ | ৪০ কালীকুলামৃতত্ত্রম্। |
| ১৪ আবলায়নসংহিতা। | ৪১ কালীকুলাৰ্ব তন্ত্ৰম্। |
| ১৫ আজিকভর্ম। | ৪২ কালীক্রমতন্ত্রম্। |
| ১৬ উত্তরকামাখাতেলম : | ৪০ কালীতস্ত্রম্। |
| ২৭ উ ভরতর স্ । | ৪৪ কাণীবিলাসতথুম্। |
| ১৮ উৎপত্তিখন। | ৪৫ কালীজদ্য য্। |
| ১৯ উদয়াকরপদ্ধতি। | ৪৬ কালোভরম। |
| २० উगाङ्गायनमः। | ৪৭ কাশীখণ্ডম্। |
| २५ . १क वीवांक झः। | ৪৮ কাশীরামবাচপ্রতিঃ। |
| ২২ একাদশীত হুণ্। | (তন্ত্রসারটীকাকারঃ) |
| ২০ কফালমালিনীতয়ম্। | ্ ৪৯ কুন্দিকাতল্ত্য |
| ২৪ কমলাতরম্। | ্ ৫০ কুমারীকয়ঃ। |
| ২৫ কমলাবিল ংসতন্ত্র ম্ : | ৫১ কুমারীতন্ত্র ন্। |
| ০৬ কলসূত্রম্। | ৫২ কুলচ্ডামণিঃ। |
| २१ क्वर्विका। | ৫৩ কুলপ্ৰকাশত সম্। |
| | |

এতদ্গ্রন্থোল্লিখিত-গ্রন্থকার-গ্রন্থ-নামানি

| es কুলম্লাবতারঃ। | ৮৩ বেরুগুসংহিতা । |
|-------------------------------------|---|
| ৫৫ কুল দারঃ। | ৮৪ চক্রবিচার:। |
| ৫৬ কুল হুলা রম্। | ৮৫ চীনভল্লম্। |
| ৫৭ কুলাচারতন্ত্রম্। | ৮৬ ছন্দোগপরিশিষ্টম্। |
| ৫৮ কুলার্থতক্রম্। | ৮ ৭ জ য়সিংহ কর ক্রম:। |
| ৫৯ কুল্পড়ট্ট:। | ৮৮ জামলম্। |
| (মহুসংহিতাটীকাকার:) | ৮৯ জৈমিনিসংহিতা। |
| ৬০ কৃশ্বপ্রাণম্। > | ৯০ জ্ঞানতন্ত্রম্। |
| ৬১ ক্বত্যতত্ত্বাৰ্ণবঃ। | ৯১ জ্ঞানমালা। |
| ৬২ ক্লফানন্দভট্টাচার্য্য:। | ৯২ জ্ঞানসার স্বতম্ । |
| ৬৩ কৃষ্ণার্কনচন্দ্রিকা। | ৯৩ জ্ঞানা নন্দ তর ঙ্গিণী। |
| ৬৪ কৌলার্চ্চনদীপিকা। | ৯৪ জ্ঞানাৰ্থতভ্ৰয়। |
| ৬৫ কোলাবলীত ন্ত্ৰ ম্। | ৯৫ জ্যোতিবতস্বস্। |
| ৬৬ ক্রমচক্রিকা। | ৯৬ ডামরতন্ত্রম্। |
| ৬৭ ক্রমদীপিকা। | ৯৭ তন্ত্ৰকৌমূদী। |
| ৬৮ ক্রমদীপিকা টীক ।। | ৯৮ ত ন্ত্ৰ চূড়ামণিঃ। |
| ৬৯ ক্রিয়াবোগসার:। | ৯৯ তম্বদীপিকা। |
| १ • ক্রিয়াসার:। | >•• তম্বদীপিকাকার:। |
| ৭> গণেশ্বরবিমর্বিশী। | ১০১ তন্ত্রপ্রমোদঃ। |
| ৭২ গন্ধক্তিভ্ৰম্। | ১০২ তন্ত্ররত্বস্থ |
| 90 5' l | ১•৩ তন্ত্রহাব্দ:। |
| ৭৪ শুগুদীক্ষাতন্ত্ৰন্। | >•৪ তদ্রসাগরসংহিতা। |
| ৭৫ গুপ্তসাধনতন্ত্রম্। | ১০৫ তদ্ধসারঃ। |
| ৭৬ গুপ্তার্থতন্ত্রম্। | ১০৬ ভন্তসারকারপ্রয়োগঃ। |
| ৭৭ প্রকৃতিইম্। | ১০৭ ভন্নসারটীকা। |
| ৭৮ গূঢ়ার্থদীপিকা। | ১০৮ তন্ত্ৰাদৰ্শঃ। |
| ৭৯ গৃহ্পরিশিষ্টম্। | ় ১০৯ তান্ত্ৰিকদৰ্শণঃ। |
| ৮ ০ গৌতমীয়ত ন্ত্র । | ১১০ তারাখণ্ডম্। |
| ৮১ গোবিন্দভট্ট:। | ১১১ তারাগমঃ (তারানি্গমঃ) |
| (শারদাটীকাকার:) | ১ >২ তারাত ত্র ম্। |
| ৮২ গৌরীকামলন্। | ১১০ ভারা ঞ্জীপঃ । |

| ১১ ৪ তারাভক্তিস্থ ধার্ণবঃ | ১৪¢ নিগমক রল তা। |
|-------------------------------------|--|
| ১১৫ তাব্বিহস্তম্ | ১৪৬ নিগমক্লসার:। |
| ্রম্ভ তারারহস্ত : 👵 । | ১৪৭ নিগমতত্বদার:। |
| ১১৭ ভারণেবঃ (ব্রহানস্থিরি ফুডঃ) | ১৪৮ নিভ্যাত্রশ্। |
| ১১৮ তারাসহস্রনামক্তোত্রযু | ১৪৯ নিব দ্ধতন্ত্রম্ । |
| ১১৯ তারাসারঃ। | ১৫০ নিরুত্তর তন্ত্রম্ । |
| ১২০ ভিগিতভ্য ় | ১৫১ নিৰ্বাণ্ডন্ত্ৰম্। |
| ১২১ তিধিত ৰ্টাক া। | ১৫२ नीलङ्क्ष्रं। |
| >২২ তীৰ্ <mark>ষামী</mark> । | এতে নু ^{দ্} ৰংহক র ে। |
| .২০ তুৰ্ণা যাগঃ । | ⊭ না দংহতাপনীয়ম্ ; ৾ |
| ১২৪ তোভলভন্ধন্। | त शक्रवाज्ञम्। |
| ১২৫ ত্রিপ্রাকর ্ | ুও ্দাসসাগ্র্। |
| ১২৬ ত্রিপুরার্ণরঃ। | ·" প্রপুরাণো ভবণ ওম্। |
| >২৭ ত্রিপুরাস্যরেশমক্ষর | ১৫৮ পৰমহংসপটলম্। |
| ১২৮ ত্রৈলোক্যসন্মোগনভর্ম। | ১৫৯ পরদেবীবহস্তম্। |
| ১২৯ দক্ষিণামৃত্তিকল্লঃ। | ১৬০ পার্থ <u>দা</u> ব্ থি মিশঃ। |
| ১৩০ দক্ষিণাৰ্ ভিশংহিতা। | ২৬ পিজ লা-মন্ত্রঃ মতঞ্চ। |
| ২০১ দত্রতৈরজামলম্। | ^ন পিচিত্ল [†] ত ন্তম্ । |
| ১৩২ ছর্গনিংহঃ (সংক্ষিপ্তসাবকক্তা) | াত পুরশ্চরণ্চক্রিকা। |
| ১৩৩ হুৰ্গাকনতন্ত্ৰয়। | : %8 श्रुतम्हवनरवाधिनी । |
| ১৩ ৪ দেবল সংহিতা। | >৬৫ পুর*চরপরসোল্লা সত&্রম্ |
| ३०४ (मरीक्रा मलय । | :৬৬ পুরালসং গ্রহঃ । |
| ५ ०७ (मरीश्दानम् । | ১৬৭ প্রস্পদস্তক্তত্তেতি। |
| ১৩৭ দেব্যাগমঃ। | ১৬৮ প্রাসারঃ। |
| ১৩৮ ধৰ্ণনিকোৰঃ। | ১৬৯ পূর্ণাননঃ। |
| ১৩৯ <i>নন্দিকেশ্বসংহিতা</i> ৷ | ১৭ ০ পৈ ঠীনসিগ [©] ইভ। |
| ১৪ ০ নবরত্বেশ্বতন্ত্রম্ । | :15 প্রপ ঞ্চসারঃ। |
| ১৪১ নারদসংহিতা। | ১१२ अ रस ात्रमातः। |
| ১৪২ নারদপঞ্চরাত্ত্য | ১৭৩ প্রাত্তঃকৃত্যপ্রাগ্রেগঃ ৮০ |
| ১৪ ० मातावनि छन्। | ১৭৪ সেংকারি নীতন্ত্রন্ । |

এতদ্এছোইবিত-গ্রন্থকার-এফ্-নামানি।

| १ १७ क् लापियायहा |
|---|
| ১৭৭ ব্ৰহ্ম শ্ৰন্। |
| ১१৮ बमारेव्ह्रंख्यूतानम्। |
| ১৭৯ ব্রহ্মাও তন্ত্রম্। |
| ১৮০ ব্রনাঞ্পুরাণম। |
| ১৮১ ভদ্মানন্দ্রিরিঃ |
| ১৮২ ভগবদ্গীতা। |
| ১৮ ০ ভগবদভক্তিবিলাসভ ্ৰম্ ৷ |
| ১৮৪ ভবিয়পুরাণ ন্ । |
| ১৮৫ ভবিয়োত্তরপ্রাণম্। |
| ১৮৬ ভাবচুড়ামণিং। |
| ১৮৭ তাসুরানন্দনাথঃ। |
| ১৮৮ ভীনপরাক্রমঃ। |
| ১৮৯ ভূবনেশ্রী তল্প। |
| া ১৯০ ভুবনেশ্বীপাবিজ্ঞাতম্। |
| ১৯১ জালা চিত্তম্ ' |
| ১৯২। ৬ এনংহিত। । |
| ১৯৩ ভৈত্তকোষ্ট ৷ |
| ১৯৪ टेंडद्रवक्षामण्याम् । |
| ১৯৫ ভৈরণতন্ত্রম্ |
| ১৯৬ ভৈরবসংহিতা। |
| ১৯৭ ভৈরবীতন্ত্রন্। |
| ্৯৮ মংশ্রুম্কুম্। |
| ্ত্ৰত মন্ত্ৰ(ছিডা। |
| ২০০ সম্ভুতন্ত্র প্রক ^{্রা} ঃ |
| ২০১ মন্ত্রদর্পণঃ। |
| ২০২ নল্লমকোদ্ধিঃ। |
| २०० मञ्जू कार्यः। |
| ২০৪ মজ বর্গ |
| २०६ मञ्जलकारणी। |

হ-৬ খলমান্ত্রন্।

২০৭ মার্ল কপিলপঞ্জাতাই। ২০৮ মহাকলেমোহিনীতভ্তম্। ২০৯ মহানির্বাণতভ্রষ্। २>० बहानीमञ्जूष । ২১১ মগভারতম। ২১০ ২ জারি চে পরতন্ত্রম্ । ২১৩ মি ধ্নিখন চন্ত্ৰ । ২১৪ মাতৃকালে তল্পা ্>**ে মানসোল্ল**নিঃ। ২১৬ মায়াডেপ্রম : २५१ मानिन। ३४५: २३४ गानिमीरिकः । २७३ मूख्या । उर् [] २२० मृथ्रा ! ২২১ মৃত্নাতল্বন্ २२२ (मिनीकत्राकातः । ২২৩ মেরুত**রম্** । ২২৪ হক্তপার্যঃ। २२६ योख्यतसागःहि । ২২৬ শোগচিস্তার্ন । ২২**৭ যোগিনীত্র**শ্। ১२৮ (याशिनीश्रमश्रम्। ২২৯ রঘুনন্দনভট্টাচার্য্যঃ (স্মার্ড-২৩০ রত্নগর্ভঃ। ২৩১ রত্বাকরঃ। ২৩২ রাঘবভট্টঃ। ২৩৩ রামার্চ্চনচন্দ্রিকা। (রামানকতীর্থবর্গমহত।) ২০৪ শাসকুকটঃ। ২০৫ ক্রজামগাভারম্। ২৩৯ রেবাতস্ত্রশ্।

| ২৩१ व्यक्तमार्गतः। |
|----------------------------------|
| ं अर्थाः विश्वानितः । |
| ২৩০ বলিতাসহলনামভায়াম্ |
| २१० नित्रफिनहिल्ला। |
| २८५ निकार्फः उद्यम् |
| २४२ वदमण्डिम। |
| ২৪৩ বরাজপ্রাণম্। |
| ২৪৪ বর্থসংহিতা। |
| २८६ वर्ष-रेख्यवः । |
| ২৪১ বশিষ্ঠশংকিতা। |
| >৪৭ বংনকেশ্বতর্ম (|
| '৪৮ - বেশ ব <i>হয়ে</i> ম্ ! |
| क कि विकासिक :) · |
| · কবাহী তমু। |
| ১ ১ বিজান-বিধঃ |
| २०२ वि:श्रारशं विठञ्जम् । |
| २०७ विस १७४म् । |
| ১৯৪ বিশ্নারভ্রম্। |
| ২৫৫ বিফুজানল হয়েশ্ |
| ২৫৬ বিষ্পুরাণ য ় |
| ২৫০ বিষ্পংহিতা। |
| ' ८७ वीज् ङ्क्षम् . |
| २०२ तुः व्यमान्। |
| ८७० ह ्यूक्त भागवासम् । |
| ২৬১ বৃহ ্ট্রীক্মসংগ্রহঃ |
| २ ७२ दुङम्(जो छमीत्र: अन |
| ২৬০ বৃহদ্ধশ্বপুণাপন। |
| ১৬৪ বৃহ ছারাবলী |
| २७६ वृध्कानकार्यालम् : |

्र**७५** रक्षक्षानस्क्षम् । ्र**७५** नक्ष्मि**नखस्**रः

| ২৬৮ বৃহয়ায়াতব্র্ম। |
|--|
| ২৬৯ বৃহস্পতিসংহিতা। |
| ২৭০ বেদাস্তপরিভাষা। |
| ২৭১ বেদাস্তবারঃ। |
| २१२ देवङाङमीयमञ्जदकायः। |
|) । त्वाब्द्यः श्रमः । |
| ২৭৪ বেবাইকদ্বস্থ |
| ২৭৫ শক্তিজামণম্। |
| . 👝 এক্তিক্সম্। |
| : ৭৭ শক্তিস্থম ্তন্ত্র |
| ংপদ শ্রহ সংখ্যা কৃতঃ শাই |
| ২৭৯ ভাগনিয়েগ্ প্রক ণ্ড |
| ২৮০ শসুক্ৰিতা। |
| ২৮১ শক্তিক্যেঃ ৷ |
| रक्ष्यः शास्त्रागस्य किया । |
| ২ -০ শংক্তা ংশসং হি তা : |
| रक्ष भाग ीं श्र डम् |
| ে । শাংলাত শ্রম্। |
| ন্দ্র শারপ্ ভন্ন ীক। |
| रज १ ४१५ (डिल क्स्। |
| ্চ৮ × শততর ম্ । |
| ২৮৯ শাস্ক্রদীশিক। |
| ২৯০ শিখনিউভেন্ন |
| ২৯ ১ শি ব্তংগ্রন্ |
| २३: सिर्धाः। |
| হাত শিংগাহল । |
| ইন্ধ শিবংগ্রাং _ল |
| : .ac निवास : १ व्यक्त । |
| 19 July 123 . |
| 289 Man 3: |
| ३७८ शामाक्ष्रणः।। |

| 865 | ভাষাপ্রদীপঃ | ì |
|-----|-------------|---|
| | | |













